वडोदरा–शियापुरामां, खुहाणापित्र स्टीम प्रेप्तमां, विट्टलमाइ आशाराम ठकरे ता. १-१०-१९१९ ना रोन प्रगटकत्ती माटे छापी प्रसिद्ध कर्युं.

वकील मोहनलाल हिमचंद-पादरा (गुजरात.)

आ ग्रंथ मळवानुं ठेकाणुं :---

निवेदन.

श्रीमङ् चुद्धिसागर सृहिजी अंपमाळाना ओगणपद्याशमा मणका तरीके श्रीमङ् देवचन्द्र प्रथम भाग छपाया पर्छा दोड वर्षे आ श्रीमङ् देवचन्द्र प्रथम भाग छपाया पर्छा दोड वर्षे आ श्रीमङ् देवचन्द्र श्री महाराजना तमाम अंची एकत करी छपावामी योजना जिनाचार्य श्रीमङ् बुद्धिसागर सृहिजींग भिरणायी अने वर्षेश्व देवचन्द्र मामा अने केवी रीवे पर्छ, वेमज क्या अंथी क्यांपी केवी रीवे मळ्या वे सेव हक्किक्त श्रीमङ् देवचन्द्र मुष्यम भागनी प्रस्तावनामां विगतवार जणावेळ विश्व होवायी वे फरीबी अने जणावेळ नथी. प्रथम भागनी प्रश्न कर्वा छपात्री हती वेमांयी जैन प्रस्तक भंडारी तथा साहाम्य कर्वार विगेरीने भेट आपत्रमां १९० नक्छी वेमज वेचाणमां २०० नक्छी मर्जा एकंदर ६९० नक्छी वेमज वेचाणमां २०० नक्छी मर्जा एकंदर ६९० नक्छी वेमज वेचाणमां २०० नक्छी मर्जा खाने छे छतां नक्छी श्री हो चो के मागणीओ वर्णीज आने छे छतां नक्छी श्री हो चो के सागणीओ वर्णीज आन्व हो छे छता

श्रीमङ् देवचन्द्र याँजा भागनां एकंदर एष्ट १२०० ना आदारे छे अने तेनी पण ५०० नकटो छपावी छे, यंपछं कद्र भारे यदायी वणातो नकटो वे कडके यांध्वामां आवी छे ते पैकी पहेटा कडकामां विचासतार यंप अने वाक्ताना यंपो यीजा कडकामां आव्या छे. याकीनी २०० नकटो आखी बांध्वामां आवदो ले पुरतकाटयो वगेरेने आपवामां उपयो-गी पदो.

श्रीमद् देवचन्द्र यीजा भागमां जे ले यंथी छपाया छ

शक्तो. श्रीमद् देवचन्द्र प्रथम भागनी पेठे आ वीजो भाग पम जीनो तेमज जीनेतरोने अत्यंत उपयोगी यर्ड पडे तेम हे. युरोपीय विवहना समयमां आ ग्रंथ छपाववामां आवेही होत्रायी सस्त मोववारीना टीचे कामळी-छपामणी-बंबाई वमेरेनो पुरहो बचो सब्बं ययो छे के एक नकलनी पडतर की. ह. ६-९-० ना आशरे थाय छे तेमज कद वर्जा जवायी बे कड़के बांबेल हो छनां तेनी कीमन मात्र क. ३-८-०

श्रीमा देवचन्द्र प्रथम भाग तथा बीजा भागमां मदद कुरनार जैन इहरयोनां नाम नीचे प्रमाणे:--

r.५०१ ह्या. रहोलाल नावामाई-पादस. २०० दा. महोद्राल नरोतमदास-रथ (पादरा)

रासी है, ये कड़का सायेज आपवामां आवशे.

२०० शा. हारेग्भाई भगनानदास-कार्वाटा (मोरसद)

१०१ श्रीपन श्रेष्टी अमरचंदजी योदरा बाखवर (मुर्शिदाबाद)

३१ ऑपन अशे नुधरिहजी शैयरा

६१ , , जगतपतिसिंदजी तगड ,

५१ - , हरम्पवंदनी माहरा ,

२५ , , गुराबदेदती स्म ' ,, १८६ इ.स. हॅगराउ छोटाराउ-पादग

२५० वट स्तन हाः पुरीचाउ कहानदामनी विचया हटोया

(बटोरम) १०१ वर्गतः भोहनतात हीमपंद-गादग

६५ हैं। बहु जनमाँ, बर्राट मोहमरात हीमधेदमां पानी ॥

१०० ज्ञा. एक्सीचंद रालचंद-वडु (पादरा) १०० बाइ चंथल ज्ञा. दामोदर कल्याणदासनी विधवा 🔐 ८९ येन मणी शा. मेमचंद दलग्रुखभाइनी भाणेज. पादरा

८० शा. केशबटाल टालचंद वडीदरा-मामानी पोळ

७५ ज्ञा. केशबराल नरोतमदास बद्ध (पादरा) ७५ याड आधार ज्ञा. गोरवनभाइ हीराचंदनी विधवा अंगु-

टण (डभोड़)

५० ज्ञा. स्तनचंद्र रायाजी. कावीटा (बोरसद) ४१ शा. भाइलाल चुनीलाल. पादरा

२५ वकील नंदलाल लहुभाइ, पादरा

२५ बाड सांकळी ते हा। मणीटाल चुनीटालनी विधवा पादरा २० एक गृहस्य तरकयी पादरा

१० शा. शीकमटाल बजटाल राजली (डभोड़)

३५ शा. मुख्जी पीतांबरदास मुजपुर (पादस)

५ बाइ रुक्ष्मणी झा. दष्टसुखभाइ प्राणजीवनदासनी दीकरी

५ बाइ टाही ते झा. छोटालाल लगनलालनी विधवा. पादरा २०० बाइ आदीत ज्ञा. मथुरभड ईम्रासासनी विधवा. सजपुर

पदिस

१६ शा. माणेकलाल धरजीवनदास. पादरा

१५० गाम वेजलपुरना जैनशाळाना ज्ञान खावेथी हा. शा. छगनरार रक्ष्मीदास

७५ दाहोदना शा. हेमचंद हरजीवनदास.

५० होठ वीरचंदभाइ कृष्णाजी. माणसावाळा १२५ गाम गंमीराना ज्ञानखावेयी

७५ शा. स्वचंद आशाराम. गंभीस

गंभीरा

२५ शा. अंत्रात्म आंशाराम 11 २५ शा. माणेकलाल केशवर्जी 93

५१ शा. हीराचंद केशवजी

१० शा. जेचंदं केशवजी "

११ शा. प्रेमचंद दलसुखभाइ पादरा १० शा. नगीनहाल मोतीलाल

१० शा. हीरालाल ल्लुभाइ १० बाइ परसन ते वकील दलपतभाइ लखभाइनी विचया परनी,

१० बाइ समस्त ते ज्ञा. कस्तुर दीपचंदनां सी. पत्नी " ३३२०

१०१ ज. श्री सुमति सागरजी महाराजना उपदेशयी हा-पीथालाल मुंबड.

१५ श्रीयुत्त सारमचंद गुढेडा वीकानेखाळा, बेंगहोर

श्रीमङ् जेनाचार्य बद्धिसागर सुरिजीए श्रीमङ्गां प्रस्तको संघारवामां-प्रस्तावना छखवामां-तेमज वंने भागत काम पुरु यतां सुची दरेक प्रसंगे उपयोगी सूचनाओ आपवामां जे

आत्मभोग आपेटो छे ते उपकारनो बदहो कोई रीवे वर्जी शके वेम नयी पुरुखंज नहीं पण आ कार्य वेओश्रीना खास उपदेश अने प्रेरणायीज उपस्थित थयुं होबायी आ

कार्यया जैन समाजने तथा मने पोताने जे लाम थयो छे ते सर्वना निमितमृत वेओश्रीज छे वेयी वेओश्रीनो जेटलो उपकार मानीए वेटलो ओलो छे.

श्रीमष्ट् देवचन्द्रजी महाराजनां पुस्तको मेळती आपवामां जे जे जुनि महाराजाओए तथा अन्य ग्रहस्थोए मदद करेळी छे तेमज जे जे ग्रहस्थोए द्वय स्ट्राय करी छे तेमनो अने मारा सहाय्याची चंग्र माणेकटाल वरजीवनदास, मंगलभाइ रुश्मीचंद्र (वह) प्रेमचंद दरुगुखभाइ तथा भाइलाल चुनीटाल वगेरे जेमणे आ कार्यमां चणी मदद करी छे ते सर्वनो प्रथम भागमां उपकार मानवामां आवेलो छे तेमज आ ग्रीजो भागा छपाची पूर्ण करती वस्तते पण परीयी उपकार मानवामां आवे छे.

श्रीमङ् देवचट्ट्रजी महाराजना ग्रंथो वहार पाटनार अमो तेमज आ कार्यना मुख्य उत्पादक श्रीमङ् बुद्धिसागर स्ट्रिजी महाराज ए सर्वे मोटा भागे तपगच्छना छैए छतां श्रीमङ्गा ग्रुणात्रागयी तेमना ग्रंथो छपावत्रामां अहोभाग्य मानीए छीए तेज प्रमाणे खाता गच्छना भ्रानिएजो तथा श्रावको श्री तपागच्छना मुनिओ उपर ग्रुणात्रागी पनी तेमना पनावेटा उत्तम ग्रंथो बहार पाटी थेते गच्छवाळा परएस सहकार्यथी प्रयत्न बत्रहो तो जैन कोमने घणो लाभ पत्री.

सं १९७५ ना वैकाख सुदि ६ ना दीचरे पादतमां भी शांतिनापनी महाराजना देशक्षता चत्रा टंटारोपण महो-स्सबना बचोडामां र्वनापार्य श्रीमद् जुद्धिसागरद्वरिजी स्ट्रा-राजना उपदेशभी श्री करणदुव, महोपाच्याय श्रीयजीविजयती महाराजना श्रेणो तथा श्रीमद् देवण्ट भाग परेले तथा श्री आनंदयनपद भावार्य संबद्ध ए बंभोने हेड् ब्र्मान पुर्वक स्वाम लाल लक्ष्मीचंदे भारे रकमनो चढावो बोली श्रीमद् देवन्च<u>द</u> पहेलो भाग लेड हायीपर बेठेला. आ उपरयी श्रीमद्दना ग्रंयो प्रत्येनो अपूर्व भक्तिभाव जणाड आवे छे. जैन कोममां पूर्वा चार्यांना ग्रंथो खरेखर आगमोनी पेठे मनाय छे. श्रीमद्ना

बन्ने भागो छपावीने बहार पडवायी अमीने घणोज आनंद थयो छे. आ ग्रंथोमां शुद्धि कर्या छतां जे मुखे रही गएडी जणाही ते बीजी आवृतिमां सचारी लेवामां आवही. श्रीअव्यारम ज्ञान प्रसारक मंडळ तरफयी घणां प्रस्तको पड़तर किंमते अने केटलांक पड़तस्यी पण ओछी किंमते बहार पाडवामां आवे छे. माटे आ संस्थानी कटर करनार सखी ब्रह्मस्थो मंडळ तरफयी प्रस्तको छपाववामां सहाय करशे तो मंडळ वचारे उत्साहयी एयी पण वचारे उपयोगी कार्य बजावञे.

यीजी आदृत्ति छपावता पहेलां आ ग्रंथो संबंधी जे जे महाशयो योग्य सूचनाओ करशे तो बीजा प्रसंगे वे उपर

.पूरतु ध्यान आपवामां आवशे. इत्येवं ॐ अर्ह जान्तिः३

मु॰ पादरा-आश्विन } शक्छ २ सं. १९७५ } वकील मोहनलाल हीमचंद

शीमर् देवचंद्र (विभाग	
द स्वचंद्र	भाग >
(विभाग पहे	-3 .
34.	er.)
अनुक्रमणिव	57.
and the same of th	•••
१ विचार	•
114 4115 2000	
1110.007	
राणस्यानीमां मूळ मङ्गतिनंच स्यान.	
मुळ प्रकृतिकंत	
कड महातिनो के महतिकंच.	
" उत्तर पृष्टतिनं व कड पृष्टतिनो केट्टा ग्रणस्पान सुर्घ मित्रमित्र पृष्टतियोगं ग्रणस्पानाकताः, ग्रणस्पानोमां मुळ प्रकार	
प्तामन महतियोगं खणस्यान सर्व	केंग्र ८००
च्य भ्रश्नीतनो केन्ट्रा ग्रणस्थान सर्घ मिनमिन महतियोमां ग्रणस्थानाकतारः, ग्रणस्थानोमां मूळ मङ्गस्यस्य	ाप (अयवा
	2
	₽.
	38
" मूळ महाते स्ता स्यान.	86
" जनस्मानि सत्ता स्थानः " १४	42
	67
र्थ परियान	43
" 19 27	45
" १२ उपलेन	F9
" ६ हेइपा.	ęυ
" ४ पूळतंच हेत्.	9
ग ५७ मध्यम् हेत्.	ဖခု
" ५७ वसर्व हतुः	uş े
•	-

;

δí ş 36 30

२५ ₹Ş 38

បទ្ បទ្

46

٤

-	(१०)	
1;	२५ कपाय.	७९
77	अल्प बहुत्त्वः	< 3
33	५ मूळ मात्र.	€
22	५६ उत्तर भाव.	66
32	२६ साहिपातिक मावना मांगाः	88
55	५६३ जीवमेद.	808
22	७ समुद्वात.	१०७
"	१६ च्यान.	208
22	२४ दंडक.	११५
39	३ वेद.	११५
"	५ चारित्र.	११६
37	८४ हाख जीवयोनिः	१२०
22	कुल कोडि.	१२२
,,	४७ घ्रवबंधि मकृतिः	१२२
25	७३ अधुन्त्रंषि प्रकृतिः	१२४
33	घुवोदयिने अञ्ज्ञोदयि प्रकृतिः	१२९
39	ध्रवसत्ताक ने अध्रवंसत्ताक प्रकृतियो.	१२८
33	सर्वेघाति-देशघाति-ने अवातिप्रकृतिप	१३०
33	पुण्य-पाप-परावर्त्तमान-अने अपरा-	
•	व॰ प्रकृतियो.	१३५
55	क्षेत्रविपाकादि प्रकृतियोः	585
22	आठ कर्मनां बंबादि स्थान अने भांगा.	888
31	४२ आस्रव मेद-	१८३
22	५७ संवर मेद.	१९०
,	१२ निर्जेश मेद.	366

```
( ?? )
               71
                      ४ वंग मेइ.
               27
                     ग्रंचकर्तानी महास्ति.
      २ विचारसार प्रकरण,
                                                 8
                                                3
         वासठ मार्गणानां नाम तथा स्त्ररूप.
        ६२ मार्गणामां गुण स्यान
                                              २०४
                मूळ महाति बंध.
                                              २०७
                 उत्तर मकृति बंच (ओवतः)
           23
                 कया मूळ कर्मनी केटली महाति-
                                             २१३
           22
                                            २१५
                योनो वंच ?
              मूळ महति उदय स्थान.
                                      . 444
              उत्तर प्रकृति उर्प (ओवतः)
                                           २३१
              मूळ मकुत्युदीरणाः
      27
              उत्तर मङ्रस्यदीरणा ( ओयतः )
                                          २३२
      77
                                         269
            ८४ हाख जीवपीनि.
     23
                                         २६२
      29
            ष्ट्रल कोडीनी संस्था.
            जीवपोनि विभजना कुलकोडि विभजना २ ६५
                                        ₹ € ३
     79
                                        २६४
           मळ महाति सत्ता स्थान.
           ज्तर मकृति सत्ता (ओयतः).
    21
                                      २६७
           । १४ जीव मेर.
           र् १४ गुण स्थानः
                                     360
          १५ योगतं स्वरुपः
६२ मार्गणामां १५ योग.
                                     204
 " १२ उपयोगः
                                    353
                                   200
      ६ हेहवा.
 31
                                   797
                                  380
```

	•	
25	४ मूळवंच हेतु ५७ उत्तरवंच हेतु }बंघ तस्व	388
11	५७ उत्तरबंध हेतु 🕽 पर पान	₹00
17	४२ आश्रव तत्त्वना मेदः	ঽ৽৫
17	५७ संवर तत्त्वना मेदः	₹१४
27	१२ निर्ज्ञरा तस्वना मेदः	386
37	अल्प बहुत्व.	₹88
"	५ मूळ भाव.	230
	५३ उत्तर भावः	338
"	२६ सान्निपातिक भांगा (भावना).	
33	५६३ जीव मेद.	284
31		
13	७ समुद्घातः	38€
22	१६ चार ध्यानना पायाः	३४९
77	२४ दंडक.	३५३
11	३ वेद.	३५७
33	४७ द्ववंधि प्रकृतियो.	395
11	७३ अञ्चनपंचि प्रकृतियोः	350
37	२७ घुनोदयि मक्कतियो.	358
77	९५ अञ्चवीदयि प्रकृतियोः	३६२
27	१३० घुत्र सत्ताक प्रकृतियो.	363
21	२८ अध्य सत्ताक प्रकृतियोः	348
"	५ पारित्र-	354
יי מ	२० सर्वचानि प्रकृतिकंत्रः	366
		३६७
77	२५ देशवानि मङ्गनियंवः	
n	७५ अवानि मृहतियंचः	३६८
•	४२ पुण्य प्रकृतितंत्रः	348

```
( ? $' y >
                               ८२ पाप मङ्गितेत्रंघः
                               १२९ अपरावर्तमान मकृतिबंध.
९१ परावर्तमान मकृतिबंध.
                             क्षेत्र विपाकादि (४) मङ्तिपोनो उद्दय.३७
                 कर्ममकृतियोना बंधादि भागानी विधि
                ६२ मार्गणामां कमैंपकृतियोना वंशादि भागा.
               विधारसार मकरणनो उपसंहार.
                                                             $C0
               विचारसार धन्धमां गुणस्थान उपर अवतारेल
                                                           ४२४
                           <sup>९६</sup> बारनी विगत.
       १० वेचद्वार (मळ म० वं०-उत्तर = मळमाव-उत्तरभाव-सिमः
      १० उर्पद्वार (१० संस्पा /
                                      भाव ५-सानिपातिक भार.
                                  २ ५६३ जीवभेद (मूळमेद-
         षंधवत् ).
      २ उदीरणाद्वार (मळ-उत्तर).
                                     उत्तरभेद्)
    १० सताद्वार (१० संस्था
                                     उत्तरमिलने.
       वंधवत् )
                                    समुख्धात (८)
    १ जीवमेद (१४)
                                  दंदक (२४)
   १ ग्रुणस्पान (१४)
                                  वेद (३)
  १ योग (१५).
                                 योनि (८४)
  १ जपयोग (१२).
                              शिक हर १
 १ हेदमा (६).
                             ६ प्रावंधि-जम्बवाधि-प्रवोद्धिः
र मळबंच हेत-उत्तरबंच हेत.
                               ज्याची व्यवसत्ताक-क्राने
४ मित्रपंत हेन घनक (४).
                               अनुव सत्ताक महाविदी
१ अल्प बहुत्य.
                              सर्वेदाति—देशदाति—अदाति
                              मङ्जियो
```

(38);





ॐ अहैनमः प्रस्तावना.

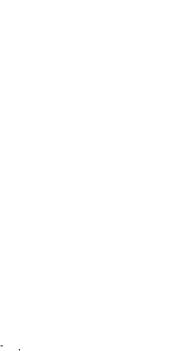
महोपाष्याय श्रीमट् देवचन्द्रमहाराज अने तरकृत पुस्तको.

ज्ञानदर्शनचारिय-व्यक्तस्पाय योगिने भीमते देवचन्द्राय, संयताय नमोनमः ॥ १ ॥ द्रव्यातुयीगर्गानार्था, वनाचारमपालकः देवचन्द्रसमः साध्र स्वांचीनो न दृश्यने ॥ २ ॥ षायकत्य महारामी, सर्वजनीपकारकः संमति परम सङ्ग्रन्थ, स्नह्यपोधः प्रजायते ॥३॥ आत्मोद्वाराष्ट्रनं यस्य, स्तवनेषु घटश्यवे विविधतापनपानां, पूर्णशान्तिपदायकम् ॥ ४ ॥ आनन्द्रधनगीनार्घ-पद्गनवनप्रज्ञकः गरहेरवरतरेतस्य, सम:कोऽपिनयोगिताद् ॥ ५ ॥ आत्मरामाष्ट्रनरवादी, शास्त्रीद्यानविहारवान् पन्तमहास्वपायीची,स्नानंशर्यन्ति सञ्जनाः ॥६॥ मिद्रान्तरास्त्रथा यो, गुणानसंगिरीसाः माध्यरभ्यंपरपनश्चित्तः,तर्म नि यं नमोनयः ॥५॥ गुर्जरीरपाँच भीतर्षेत्, भेदपाटेच मालदे राटरेरोप प्रजाव, महदेशे स्वयादनः ॥ < ॥

विहाराश्चकृतानेके, खेकानां बोबहेतवे ज्ञानिने देवचन्द्रायः पूर्णमेम्या नमोनमः ॥ ९ ॥ संमत अन्तरात्मा य, आत्मानुभववेदकः अप्रमत्तदशायोगी. जिनेन्द्राणां प्रसेवकः ॥ १० ॥ श्रतागमप्रठीनाय, भक्तायबद्धरागिणे चिदानन्दस्वरूपाय, सर्वसंवस्यरागिणे ॥ ११ ॥ च्यानसमाधिरक्तायः विश्ववन्द्यायसायवे श्रीमते देवचन्द्राय, पूर्णश्रीत्या नमोनमः ॥ १२ ॥ जैनसंबरयसेवाये. सर्वस्वार्पणकारिणे श्रीमते देवचन्द्राय, गुद्धान्मने नमोनमः ॥ १३ ॥ भारत जैनसंघे यः, प्राहर्मतो महामृनिः मोहतमोविनाशेन, देवचन्द्रोहिभास्करः ॥ १४ ॥ श्रीतलः सर्वलोकाना-मान्तरशान्तिकारकः क्षमापृथ्वीसमा यस्य,गांमीर्ये सागरोपमम् ॥ १५ ॥ धेर्य मेरुसमं यस्य, गंगावित्रमंहं यनः तस्मे श्रीदेवचन्द्राय पूर्णपीत्या नमोनमः ॥ १६ ॥ कापीधर्ममयोयस्य, वश्धविश्वपावकम् मनआरमनिसंदरन मारमाठीनः प्रभीसदा ॥ १७ ॥ तरमे श्रीदेवचन्द्राय, त्यागिने वर्मरागिणे नमःश्रीविखप्रज्यायः विश्वकल्पाणकारिणे ॥ १८ ॥ भावमेघस्त्ररूपाय विश्वोपग्रहकारिणे नमः श्रीदेवचन्द्राय सिद्धांतपारगामिने ॥ १९॥ सर्वगच्छेषु माव्यस्थ्यं, यस्य सत्यं प्रतिष्टिनम् तर्म श्रीदेवयन्द्राय, पूर्वप्रात्या नमोनमः ॥ २० ॥

श्रीमद् देवचन्द्र मुनिराज.

श्रीमङ् देवचंद्र मुनिराजे खारतराच्छाना श्री दीपचण्डामा साथ पासे दीशा छाँची हती. तेओ श्री जनश्रेतांचर कोममं अतिमसिद्ध महारमा तरीके चर्कणाय छे. तपाण्डदीय विश्वचंद्र कर्षमीताच्य क्षिरीमणि श्री चर्याविजयर्जा उपाच्याय (वाचक) ना तेओ पूर्ण रागी हता, अने तेथी तेमणे श्री झानसार प्रत्यपर ज्ञानमंजरी नामनी टीका करी छे. श्रेतांचर जनवाममं पूर्व चरेराताच्या गण्डी हता. हाल तो पांच छ गण्डी विद्यमान कर्णाय छे. ले गण्डमं ले दीहा छे ते गण्डना आचारीने पांक हे करेता छ अने पर्धने ते सुनि करेताय छे अने पर्धने तथा प्रताना मुर्वजीन प्रसंगे छे छ करेत वे समाचारीने तथा प्रताना मुर्वजीन प्रसंगे छे. श्रीमङ् देवचंद्रजी सहाराजे स्वस्तराच्छी खाता गण्डे



वे रगभग खटास चत्रा आय्यो हो. आ उपायी झीमह देवपंद्रजीनां द्रव्यानुयोगनां प्रस्तकोनी महत्ता सर्व होको जानी शक्तो, श्रीमह देवचंद्रजीनां हत्यानयोगनां पस्तकोयी सक्छ पानवोगने एक सरखो टाग मठे छे तेमज जीनेतर प्रजाओंने पण एक सरखो हाम मंडे हे. अनएर श्रीमर् देवपंत्रज्ञी विश्वमां पोतानाः सङ्गिचारो वडे व्यापक छे. श्रीमङ देवपंद्रजीए खास खरतर गच्छनी भिन्न मान्यताओने स्थापन बरवा कोड़ टेकाणे उझेख कर्यों नयी तेतं कारण ए छे के तेमने आत्मज्ञान थएं हतं. अप्यात्मज्ञानी महात्माओ अमुक गण्डनी अमुक क्रियाचारनी मेदताने वळगी रहेता नयी अने वैयोज खास मुक्ति छे, एम मानजा नयी वेयी वेओ मुख्य आत्मानी सुक्तिना उद्देश माटे ट्ये छे अने बोटे छे. ए प्रमाणे भीमहनी आत्मदृष्टि होवादी वेओ खातर गच्छना छतां निध्यनयनी अपेक्षाए सर्व गच्छोमां रहेनार समभावीओनी मुक्ति माननार हता वेदी आसी जैनकोमने वे प्रिय धड पडे एमां कंड आधर्ष नयी. खरतर गच्छमां आज सधीमां ले जे आचार्ये। मुनियो चया छे तैओए घणा ग्रन्थो छएया छे छतां श्रीमङ देवचंद्रजीनी पेठे दृष्यातयोगना ज्ञान मादे तपा अध्यात्मज्ञान माटे आदशं प्रस्तको सल्यां होए एवी व्यक्ति जणानी नयी तेयी खरनर गच्छमां सर्वेयी प्रथम नंग्रे शीमक देवचंद्रजी आवे छे. श्रीमक देवचंद्रजी महाराजनी पेठे कोइए आत्म संबंधी उद्गारी निकाळ्या नयी वेबी देवचं-इजीए ले काम कर्य है अने जैनकोमनी आगळ ले वास्सी मत्रपो हे तेया जनकोम तैमनी अतृणी छे एम कथ्या विना चारनं नयी, आवा महाप्रस्थना आत्मानी केरही प्रची उन्नति



वे रुगभग खरास थवा आव्यो छे. जा उपायी श्रीमह देवचंद्रजीनां द्रव्यात्रयोगनां प्रस्तकोनी महत्ता सर्व होको जाणी शकरो. श्रीमद् देवचंद्रजीनां द्रव्यातुपीमनां प्रस्तकीयी सकळ जैनकोमने एक सरखो छाभ मळे छे तेमज जैनेतर मजाओने पण एक सरखो टाभ मळे छे. अतएव श्रीमङ् देवचंद्रजी विश्वमां पोताना सङ्गविचारो वडे व्यापक छे. श्रीमङ् देवचंद्रजीए खास खरतर गच्छनी सिन्न मान्यताओने स्थापन करवा कोइ ठेकाणे उन्हेख कर्यों नयी तेतुं कारण ए छे के तेमने आत्मज्ञान थयुं हतुं. अन्यात्मज्ञानी महात्माओ असुक गच्छनी अमुक क्रियाचारनी भेदताने वळगी रहेता नयी अने तैयीज खास मिक्त छे. एम मानता नयी तेयी तेओ मूख्य आत्मानी सुस्तिना उद्देश माटे छखे छे अने बोले छे. ए प्रमाणे श्रीमद्नी आत्मदृष्टि होवायी वेओ खत्तर गच्छना छतां निध्यनयनी अपेक्षाए सर्व गच्छोमां रहेनार समभावीओनी मुक्ति माननार इता तेयी आसी जैनकोमने ते प्रिय धड पढे एमां बंड आश्चर्य नयी. खरतर गच्छमां आज सुचीमां जे जे आचार्ये। मुनियो थया छे तेओए घणा मन्यो एएपा छ छतां श्रीमद देवचंडजीनी पेठे दृश्यात्रयोगना ज्ञान माटे तथा अध्यात्मज्ञान माटे आदटां प्रस्तको स्रूपां होय एवी ध्यक्ति जणानी नयी तेथी खरतर गच्छमां सर्वयी प्रथम नंबरे श्रीमङ् देवचंद्रजी आवे छे. श्रीमङ् देवचंद्रजी महाराजनी पेठे कोइए आत्म संबंधी उद्द्यारी निकाल्या नयी तेयी देवचं-इजीए जे काम कर्य छे अने जैनकोमनी आगळ जे बारसी पत्रयों है तेवी जनकीम तेमनी अनुणी है एम कथ्या विना चाटतुं नंदी. आवा महाग्रहपना आत्मानी केटरी बची उन्नति

जिनआणारंगी वगेरे शब्दोयी वखाण्यो हैं तेनी साथे कहेवुं पडे छे के वेमणे तपागच्छ वगेरे गच्छोनी कोइ पण यन्यमां निन्दा करी नयी. उपोद्द्यात कर्ता छेखकने श्रीमद्दनां पुस्तको पेकी आगमसारनो परिचय थयो. मेहसाणामां सं. १९५४ नी सालमां श्रीमङ् रविसागर गुरुमहाराज साहेबनी सेवामां रहेवाछं थमं हतुं. ते वखते आगमसारतं प्रथम वांचन थमं अने त्यारयी द्रश्यात्रयोगनी रुचि वधी तथा आत्मज्ञाननी रुचि वधी रुगभग सीवार आगमसार ग्रन्थ वांच्यो, तथा नयचक्रसार वांच्यो, तेमज चोवीशी बांची तेयी जैनतस्वज्ञाननी पूर्ण श्रद्धा थइ. अध्यातम-ज्ञाननी श्रद्धामां आनंदवनजी चोवीञ्ची तया श्रीमद् आनंदघननां पदो उपयोगी थयां, तेवी रीते दृश्यानुयोगना ज्ञानमां श्रीमद देवचंद्रजीनां प्रतको उपयोगी ययां तेथी तेमनां प्रस्तको वांचवानी जिज्ञासा यद्यी अने तेयी साधु जीवनमां शोधखीळ करी घणांखरां पुरतको बांच्यां. बाळ जीवोने जैन तत्त्वज्ञान थवामां भीमदूनां पुस्तको अन्यंत उपयोगी छे एम जणायुं, तेमज तेमनां प्रस्तकोने बांचवानी जिजाया धारण करनारा जैनकोममां घणा र्जनो माखुम पट्या तेथी छेवटे स. १९६८ नी सालमां पा-दरामां वैशाख मासमां वहील भोहनलाल हिमचंद यगेरेनी समझ वैमनां सर्वं पुग्तको छपावपानी निश्चय कर्पे, अने ते निधपने वहाल मोहनलाल हिमचंद वगेरेए झीली लीघी-राभावक बरील मोहनलाल हिमचंदे उपादी छीचो. तेमणे देश परदेशमां अनेक सानुओ, सान्तीओ, श्रायक अने शावि-काओपर अनेक पत्रो सर्वा तथा जाते जड़ प्रम्नत्रोगी शोध करीने छपाववा प्रयन्न क्यों हे. श्रीमक् देवचंद्रनी प्रथम माग बहार पट्यो तेना पर जैनोएँ तुराइट वरी पर्मा अने

ते सगभग खरास थवा आच्यो छे. आ उपायी श्रीमद देवचंद्रजीनां द्रव्यानुयोगनां पुस्तकोनी महत्ता सर्व होको जाणी हाकही. श्रीमङ देवचंद्रजीनां द्रव्यानयोगनां प्रस्तकोयी सक्छ जनकोमन एक सरखो हाभ मंद्रे हे तेमज जैनेतर प्रजाओने पण एक सरखो लाभ मळे छे. अतएव श्रीमद देवचंद्रजी विद्यमां पोताना सद्विचारो वहे व्यापक छे. श्रीमद देवचंद्रजीए खास खरतर गच्छनी मिन्न मान्यताओने स्थापन करवा कोड टेकाणे उद्धेख कर्यों नयां तेनं कारण ए छे के रीमने आत्मज्ञान थयं हतं. अध्यात्मज्ञानी महात्माओ असक गच्छनी अमुक क्रियाचारनी मेदताने बळगी रहेता नयी अने वेयीज खास मुक्ति छे. एम मानता नयी तेयी तेओ मुख्य आरमानी मुक्तिना उदेश माटे टखे छे अने बोले छे. ए प्रमाणे ध्रीमद्नी आत्मदृष्टि होवायी वेओ खरतर गच्छना छतां निध्यनपनी अपेक्षाए सर्व गच्छोमां रहेनार समभावीओनी मुक्ति माननार हता तेथी आर्री जैनकोमने वे प्रिय थड पटे एमां कंड आश्चर्य नथी. खरतर गच्छमां आज सचीमां जे जे आचारों मुनियो बया छे तेओए बणा ग्रन्थो छएया छ छतां श्रीमर् देवचंद्रजीनी पेठे द्रव्यात्रयोगना ज्ञान माटे तथा अन्यात्मज्ञान माटे आटडां प्रस्तको उरुषां होय एवी व्यक्ति जणाती नयी तेथी खरतर गच्छमां सर्वयी प्रथम नंबरे श्रीमद देवचंडजी आवे छे. श्रीमद देवचंडजी महाराजनी पेठे कोइए आत्म संबंधी उद्गारी निकाळ्या नयी देवी देवचं-ट्रजीए ले काम कर्ड छे अने जैनकोमनी आगळ ले बारसो मुक्यों हे तैया जनकोम तेमनी अनुणी हे एम कथ्या विना चाटनुं नंबी. आवा महापुरुषना आत्मानी केटळी वधी उन्नति

थर्ं छे तेनो रूपाछ ते दंशाने प्राप्त करनारने आवी शकें तेम छे. तेमना जेवी जेओनी दशा न होय तेओ भछे पिरंताछीश आगमना ज्ञाता होय तोपण तेओ तेमने पिछाणी शके नहीं. आवा महान् महात्मातुं जीवनचरित्र जाणवानी जरुर छे.

श्रीमद् देवचंद्रना बाह्यजीवन चरित माटे देशपरदेशमां अनेक पत्रो टरवावी घणी शोघो करावी परंतु हुछ धुपी तेमद्रं जीवनचरित्र प्राप्त ययुं नवी एटछे हुवे तेमना संवर्षी किंदरन्तीओं वगेरेयी तेमना जीवन पर अजवार्कु पाडवा नीचे प्रमाणे प्रयत्न करवामां आवे छे.

श्रीमद् देवचंद्रमहाराजनी जन्ममृमि, गृहस्थावास.

केटलाक यृद्ध पुरुषोना कहेवा प्रमाणे श्लीमयू देवचंद्रजीनी जनमृति ग्रुजंशा (ग्रुजंशत) छे एम जणाय छे. श्लीमद् देवचंद्रजीनी मुपममां प्रथम कृति सं. १७४३ नी सालमां बनेली अग्रमकारी पूजा जने एकतीश प्रकारी पूजा ए बे छे. ए बे कृतियो ते बखतनी गळन्यु ग्रुज्याती भाषामां छे. ग्रुजंश मापाना साक्षरों जो बरावर लश्च रास्तीन शांघरो तो तेमने गळन्यु शान्द्रवाली ग्रुज्याती भाषा समजाया विना रहेरी नहीं. श्लीमद्द महान्मा देवचंद्रजीनी शाद्धणना लुळमां अगर यणि-कमां उम्र छ्ळमां जन्म यपुटो होतो जोइए. अग्रमकारी अने एक्वीश मुकारी प्रजा ग्रुजरातमां रहेली जापाय छे. लनपुत्र श्लीमद्दी जन्म ग्रुजरातमां हो. तेमले गुजरानमां श्लीमद्द ज्ञानसागर्जी जपात्याप पासे अध्यस वरेटो होती द्वी ज्ञानसागर्जी जपात्याप पासे अध्यस वरेटो होती होतानसागर्जी प्रापः अध्यस्त्रकां थया होय एग जणाय छे. तेमी सं. १७४३ नी साल्यां प्रथम अश्यकारी प्रजा रची वे बस्तवे वैमनी ओडामां ओडा बीश बाबीश वर्षनी जमर होषी जोड्स, एटडे तेमनी जन्म सं. १०२० मी साठ रुगभग होवों जोड्स, अने दीक्षा सं. १०२२ रुगमगमां होवी जोड्स, पूपमणे होय तो वे जमानामां वेदीशा टीवा बाद अपियार क्यें जने जन्मकी बेवीश वेर्ष ग्रन्थ रुग्वाने समर्च थएडा होवा जोड्स, वेमनी ग्रहस्थात्रास रुगमग बार वर्षनो होनो जोड्स,

श्रीमद् देवचंडजीमहाराजनी दीक्षा.

श्रीमद् देवपंद्रजीन दक्षित आपनार खरतर गच्छीप श्री दीपपंद्रजी उपारचाय हता. खरतर गच्छमां जिनचंद्रसरि थया वेमना प्रण्याधानोपारचाय थया. वेमना श्री सुमतिसागरे-पारचाय थया. तेमना श्राम धर्मपाटक थया. तेमना श्राम धर्मपाटक थया. तेमना श्राम धर्मपाटक थया. तेमना श्राम धर्मपंदरक थया. तेमना श्रिप्त राजहंत अने दीपपंद घो हिप्त पाटक थया. तेमना श्रीमद् दीवपंद्रना हिप्त भीमद् वेचपंद्रना हिप्त भीमद् वेचपंद्रना हिप्त भीमद् वेचपंद्रना हिप्त भीमद् वेचपंद्रना हिप्त भीमद् वेचपंद्र या. तेमना श्रीम ख्रीमद् वेचपंद्र या. तेमना श्रीम ख्रीमद् वेचपं होय एम जणाय छे. तेयी तेमनो श्रीमदावी भाषा पर सातो काञ्ज जामपे हती. सं. १७६६ मी सालमां तेओप पंजाबमां ग्रीमता पान प्राम्पी स्वाची. तेपण तेन ग्रीमती ग्रीमती ग्रीमती जनम्मप्रीने साट अने ग्रीमती ग्रीमती ग्रीमती जनमप्रीने साट अने ग्रीमती ग्रीमती श्रीमती ग्रीमती ग्रीमत्री कर्मप्रीने साट अने ग्रीमतिसां हैन वर्ष स्वाच्या रहा प्रस्ता करी आपे छै.

विहार-गुजरात, मारवाट, पंजाय.

गुजरातवी विहार करी मारवाइमां तेओए थोमासां कर्या अने व्यांकी जेसल्मेर थह पंजाबदेश तरफ विहार करेले ज्याप छे. पंजाबदेशमां वे बखते जनविषकोनी घणी संस्या होवी जोहरू, पाळ्ळ्या स्यां जैन ट्वेडक साखुओनो मुबेरा परेटो होवो जोइए. तेमणे सं. १७६६ ना वैशाखमां व्यानदीपिका चतुःपदी (मुहतानमां) अने १७६७ ना पोप मासमां हिन्दी मापामां द्रव्यप्रकाश सेवया छंदमां (विकानेरमां) बनाव्योः वे उपायी तेमनी विहार पंजाब अने सरहद सची थएटो होबो जोड्ए. पंजाब तरफर्या विहार करी सिंव वगेरे घड मोटाकोट मरोटमां वेओए चातुमांस करेलुं जणाय छे. मोटाकोटमां तेमणे सं. १७७६ माना फागण मासमा तेमना सहायक मित्र दुर्गादासने माटे आगमसारनी रचना कोली छै. श्रीमद देवचंडना मोटा-कोटमां दर्भादास केवी रीते मित्र इता तेपर अनेक कल्पनाओ थाप छे. ले आवको सावओने मिन तरीके मानी वर्ते छे ते अपेक्षाए कदापि मित्र टरूपा होय वा अन्य कारणयी, तेनी निर्णय हाल भड़ शके तेम नयी. मारवाडमांयी तेओ विहार करीने अनुक्रमे गुजरान नरफ आवेला जणाय हो. सं. १७९६ मां जामनगरमां (नपानगरमां) कार्निक सुदि एकमे विचारसार अने कार्निक सुदि पंचमीए ज्ञानमंत्ररी पूर्ण करी है एउले सं. १७७६ थी पछी १७९६ मां गुजरान तरफ आरेहा अने गुजरानमां रहेला सिद्ध चाय हो. सं. १७७० पछीयी वेओश्री पं. जिनविजयर्जनेभणावता पाटण आध्या बाद सं. १७७५ पद्मानु मोटाकोट मगेटमां गया हुना.

श्रीदेवर्षक्रजीए तपामच्छना पं. जिनविजयजीने तथा उत्तमविजयजीने अभ्यास कराय्यो.

श्रीमर् देवपंदती महागत सिद्धांनना जाता हुताः श्रीस्पीमादेवपर्वाण् पोताना द्विष्य तिनविजयत्रीने विशेषा-ददक धनका माटे पाटणमां बोजाया हुता. (सं. १०७० टी १०७२ ग्रुवीमा) तेती संस्ती नीये मुमागे- श्रीज्ञानविगटम्हिजी कन्हे वांची भगवती खास, महाभाष्य असून टखो देवचन्द्रगणि पास ॥

जिनविजयजीना क्षित्य उत्तमविजयजीए दीक्षा ठीवा माद युरुनी साचे सं. १७९९ मां पादरामां चोमासं कर्षे हुदं, तं. १७९९ ना आवण सुदि १० दशमे पादरामां वेमना सुरु जिनविजयजी देवगत चया, सार बाद बामाद्याम बिहार कृता, तेमणे भावनन्त्रमां चीमसं कर्ष्ण सां कीमद् देवचंद्रजीने अनुसास करवा माटे बोटाच्या हता. वे संबंधी पं. उत्तमविजयजीना निर्वाणसम्मां नीचे प्रमाणे टखेठ छे—

हम अनुष्रमे यथतां यकां रे लोल, हुवा अहादश वर्ष रे खत्तर गच्छमाहि यथा रे नामे श्री देवचंदरे ॥ धेनसिद्धांत हिरोमान रे लोल, धेर्यादिक ग्रुणस्ट रे ॥ ८॥

देशना जास स्वरूपनी रे छोट, वे गुरुना परपद्म रे वेरे अमरावारमां रे छोट, प्रजाशा निःउच रे ॥ ९ ॥

'ते ग्रुरुनी वाणी मुणी, हरस्यो चित्त क्षमार ज्ञानाम्यास करु हवे, तुम्ह पासे निर्धार ॥ १ ॥

ट्रंपित आकारे करी, जाणी वेह सुपाय ज्ञानाम्पास करावका, कीचो वेहने छात ॥ २ ॥ आविका समञ्ज्ञेत विहां, घर्मी अवि युणवंत युरुवचने ते छुत्रने, अविशय सहाय करंत ॥ ३ ॥

हवे कुंबर नित्य २ मणे, प्रकरण चैननां सार, टहना; दंहक ने नवतत्वजी, 'जाण्या जीवविचार, टहना ॥१॥

वणलोकनी दीपिका, संग्रहणी सविचार, टलना भाष्य चैत्य ग्ररु वंदना, वर्ळा पश्चखाण प्रकार, टटना ॥२॥ क्षेत्रसमास सोहामणो, सिद्ध पंचाशिका नाम, छलना सिद्धदंडिका तिम वर्छा, चउसरण अति अमिराम, टरना ॥२॥ ं कर्मग्रन्य अर्थे कर्याः कम्मपयडी मुखपाटः रहना पंचसंग्रह मुख ग्रन्थमां, विवर्षे कर्म जे आठ, रहना ॥४॥ कारुविचार अंग्रुल वली, वनस्पति तिम जाण, रुल्ना दर्शनपाली सित्तरी, कर्ता एहवं नाण, छछना ॥९॥ खंड प्रद्रल तिम बली, निगोद लबीशी जेह, रुलना विष्य विचार पंचाशिका, निज अभिवापरे वेह, लटना ॥६॥ पृत्ति सहित बांचे सवे, ते ग्रुक्ते उपकार, ल्ला भंगजाल मुख बहु भणे, रहस्य ते आगम अपार, ललना ॥७॥ सप्तमंगी नय सात जे, विष्ठय निखेपनी वात, टलना तिनभंगीपणे ब्रहे, केता कहं अवदात, टटना ॥ < ॥ इम करतां हवे अन्यदा, गुरुजी करे विहार, एएना स्रातंबर आविया, साथे तेह कुमार, टलना ॥ ९ ॥

पारण शहेरमा वाणिया, कथरा कीका नाम आबी सुरतमां रह्या, छुंदर जेहले घाम ॥ १ ॥ सुण्य प्राष्ट्रत जोरो थयो, रही क्षेत्रांतर योग मनचिंते सफलो करू, रुक्ष्मीनो संयोग ॥ २ ॥ आबी गुरुने दिनने, करतुं तीरप जात्र पठित पुरुष जो कोइ दियो, तो होय सफली वान ॥३॥ गुरु एण वेह कुमारो, जाणी ध्युत सुजाण . . : तस आग्रहयी आपियो, रुक्षणरूप नियान ॥ ४ ॥

शब्दशास्त्र ते शहेरमां, भणिया यत्न अपार, लल्ना ॥

भी उत्तमविजयीजीए भावनगरमां चोमासुं कर्युं ते वस्तु तेमणे भ्रीमङ् देवचन्द्रजीने बोटावीने अम्पास कर्षे। तेनी साझी रासमां नीचे प्रमाणे छे—

भावनगर आहेंगे रह्या भविदित कर मारा टाल तेहाच्या देवचंद्रजीने हुवे आहरे मृता टाल बांचे श्री देवचंद्रजी पासे भगवती मारा टाल पद्मवणा अनुवोगद्भार, वली द्यमपति मारा टाल प्रवेचा अगुवोगद्भार, वली द्यमपति मारा टाल जागी पोग्य तथा ग्रुणगणना एन्द्रजी मारा टाल जागी पोग्य तथा ग्रुणगणना एन्द्रजी मारा टाल कच्यात्तीका संघ छेड् इण अवसरे मारा टाल क्यात्तीका संघ छेड् इण अवसरे मारा टाल श्री सिद्धापल यात्रा करवा आविया मारा टाल ग्रुग्जी पण सिद्धापल साथे सिद्धाविया मारा टाल

श्रीमद् श्रीदेवर्धद्रजी पाटणमं १७७५ ग्रुणी हता पेशात् वे मोटाकोट मरोट (मारवाड) मां चोषास्तुं रह्या पश्चात् वे से. १०७८ मां पाठा ग्रुजतातमां अम्पदावदमां आव्या हता. वे सखे उत्तमनिजयजी निवाणतासमा आयारे-श्री उत्तम-विजयजीए संसार्धाण्यामां अद्यार वर्षनी उत्तरे एट्डे जन्म १७६० उत्ते १७७८ नी साटमां अमदाबादमां उपर ममाणे-रासमां गणाऱ्या प्रमाणे इत्योगो अम्पतास कर्यों हतो. अमदा-वादमां १७७८-७९-८० ट्यामा चोषासां यमा होष एम संभवे ठ. श्री देवर्चद्रजी पासे प्रमाजान सामां स्था होत प्रमान स्थाविकाए सामी सहाय करी हती. श्रीमद देवर्चद्रजीए अम-वादादमी विहास करी स्वेमात, स्वेहरा, पादस, सच्च पह स्थात

विहार करों। अने वे साथे कुंबर वुंबाशा हनाः ग्रुस्तमां श्रीमद् देवचंद्रजीनी पासे पुंजाशाए व्याकरणादि अम्पास कर्या अने वे वखते पारणयी व्यापार करना आवेला संचर्ना कचरा कीकाप् सुरतयी संच काड्यो त्यारे श्रीमद् देवचंद्रजीनी आज्ञायी **धुंजाञ्चाने साये ठीवा. श्रीमर् देवचंद्रजीए सुरतमां** चार पांच घोमासां क्यां होय एम जाणाय छे. युजाशाहे सं. १७९८ मां श्री जिनविजयजीनी पासे अमदाबादमां दीक्षा छीवी अने तेमदं नाम उत्तमविजयजी पाडयुं. स्यांथी गुरू दिप्ये प्रेमापुरमां चोमासं कर्षं त्यांयी सरत जड सं. १७९९ मां पादरामां चोमास कर्युं. सं. १७९९ नी सालमां पादरामां भगवतीसूत्र बांचतां पं. जिनविजयजीए आवण सुदि दशमे देहोत्सर्ग कर्यो. ज्यां वेमना शरीरने अभिदाह देवामां आव्यो छे त्यां तळावना कांठे देरी करवाभां आवी छे. श्री उत्तमविजयजीए सं. १८०३ मां भावनंगरंगां चोमासु कर्युं. त्यां श्रीमङ् देवचंद्रजी पासे भगवती पन्नवणा अनुयोगद्वार वगेरे सत्रो धार्यो अने श्री देवचंद्रजीए संबंहारामी बांचवानी तेमने आज्ञा करी. सं. १८०३ मां श्रीमद देवंचंद्रजी भावनगरमां हता, पश्चात सुरत गंपा अने कंचरा-कीकाना संवनी साथै शतुंजयनी यात्रा करवा माटे आर्थ्या, वे वंखवे भावनगरयी उत्तमविजयजी पण सिद्धांचलेंनी पात्राए एकं सैयमां मेळा गया. सं. १८०४ मां श्री देवचंद्रजीए सिद्धांचेलनी यात्रा करी ते संबंधीना स्तवनमा नीचे प्रमाणे लखाण छे.

सेवंत अवार विडोतर वरसे, सित मृगसिर तेरसिये -श्री सुरतियों भक्ति हरखवी, संव सहित उद्धसिये ॥ रप्पा कीका क्षित्रार मिक्ति, रुपपेद ग्रुणवंतजीए श्री तंपने प्रमुजी मेटाच्या, जगपति प्रथम जिणेद ॥ ज्ञानानन्दिन विसुवन चेदित, परमेश्वर ग्रुणमीना देवपेद पर पामे अष्ट्रभुत, परम मंगठ रुपछीना ॥

उपर प्रमाणे श्रीमर् कर्पे कर्पे स्थानके विहार कर्पे अने क्यां पया पोधारतां कर्या वे जणात्युं. श्रीमर्नो विहार ग्राजरात, काठिपाबार, साट, मारवार, सिन्ध, पंजाब वगेरे देशोमां पएटो छे: तेमने तापाच्छना सायुओने अभ्यास करायो एम श्री जिनविजयतां अने श्री जनमित्रप्रजी पन्यासना निर्वाणयी शिव्ह थाय छे.

चात्राओ.

भीमट्ट देवचंद्रलीए अनेक वीचेंग्री यात्राओं करी हैं

एम तेंमना द्रान्यों अने स्तवनो परयी जणाव है. द्रान्याद्रयोगी
आत्मत्रानी श्रीमट्ट देवचंद्रली व्यवद्धार अने निश्चयनी श्रद्धा
बाट्या अने वे ममाणे वर्गवावट्टा हता. तेमणे विद्वार्या तीचें

से तो मंद्र वीचें द्वितीमणि करेत्राय है ते तीचेंगे पणीताय पात्र
करी हती. वेओ सं. १८०४ मां सुरतना संवनी क्या को
काना संपमा गण हता. त्यार वार तेमणे विद्वार वा पाप्र
पर एतें हों ने मिनायनी यात्रा करी हती. एम गिरतार पंतर
पर रहेट भी नेमिनायनी यात्रा करी हती. एम गिरतारानी
रत्तिवर्यी जणाय है. गुनसारानी सात्रा करता करता तारांगाती,
सुंसारीया, जायुजी, देटलाडा वगेरे तीचेंगिंगी यात्रा करीट होती
कोइए, वेजी विद्वानी सरहद पर मेटाकीट सरीट सुधी गया
हता तेयी भारवाइ, कष्ट अने सिन्यनी लागुश्युक्तां लिन-

मंदिरोनी पाना करेटी होनी जोड्ए. वेजोश्रीए मुस्तानमां धोमामुं कर्षु हतुं वेषी त्यांना तीर्चानी याना करेटी होनी जोड्ए. सं. १७६६ वं घोमामुं विकानरमां कर्षु हतुं. गुज-सतमां पाटण, अमदाबाद, खंभान, मुम्न, मावनगर, टींबडी, पाठीताणा वगेरे स्थळे घोमासां कर्षा हतां वे ते स्थळोनी प्रतिमाओनी अने आञ्चानुना गामो शहेरोनी जिनप्रतिमाओनां दर्शन करेटां होवां जोड्ए.

उपरेश-प्रतिद्या.

श्रीमङ् देवचंद्रजीनो दीक्षा पर्याय लगभग ७५ पोणोसो वर्षनी होवो जोइए. १७३२ लगभगमां दीक्षा अने सं. १८१० छगभगमां निर्वाण अने बार वर्षनी यहवास, एम आशरे गणतां उसर लगभग नेवुं वर्षनी होय वैम अनुमान याप छे, तेयी तेमनो दीक्षा पर्याय पोणोसो वर्ष लगभगनो गणतां तैटला वर्षमां तेमणे अनेक गाम शहेरोमां उपदेश आपेली जणाय छे. तेओ उपदेश देवामां एका होवा जोड्ए, एम तेमना ग्रन्थो उपस्थी अनुनोधाय छे. मारनाड, पंजाब वगेरे देशोगां उग्र विहार करीने वेमणे ते समयमां जे बोध आ-पीने आरमभोग आप्यो छे तेयी जैनकोमनी जे संरक्षा धइ छे तेनी हाल ख्याल आवशे मुख्तेल छे. तेमणे सं. १७९४ मां शतुंजय पर्वत पर प्रतिष्ठा करी छे. एम शिलानेखयी जणाय छे. पुम श्रीयत मोहनटाल दिलचंद जणावे छे. वेमज वे-मना गुरुनी साथे सं. १७८८ मां शत्रुंजय पर कुंधुनायजीनी प्रतिष्टा वखते वेओ हाजर हता तथा सिद्धाचल पर समव-सरणनी प्रतिष्ठा वसते हाजर हता. तथा अमदाबादमां सह- स्त्रफणानी प्रतिष्टा बखते हाजर हता. तथा टींबडीमां देश सरना मूळ नायकनी चे बाजुए चे देरीओनी पोते प्रतिष्ट करांची हती.

श्रीमर् देवचंद्रजीनी महत्ता-विद्वसा.

श्रीमर् देवचंद्रजी महाराज जनागमोना पारंगामी हता. वैमणे अनेक गामना आवकोए पुछेटा प्रश्लोना उत्तरी आप्या हता. प्रश्लोत्तर नामनो ग्रन्य वे बावतनी साझी पूरे हो. वे समपना विद्वानोमां वेमनी प्रतिष्टा अने विद्वता सारी रीवै प्रदि पामी हती. खरतर गच्छमां वे धरववे वेमना समान कोड विद्वान होय एम ते समयना प्रन्थीयी अवलोकनां अवशोधाउँ नयी. तपामच्छना संवेगी साधुओमां वैमनी महत्ता हवी. पोतानी महत्ता वन्ने एना गुणो तेमनामां हता. तपागच्छना संबेगी युनिओ पेही महानू श्री जिनविजयजी अने पं. श्री उत्तमविजयजी जेवाना वेओ धर्मशास्त्र पाटक ग्रुरु हता. सं-वेगी पश ते समयमां चारित्रमार्ग सुधारक हतो. वेमना दर-यमां श्रीमद् देवचंद्रजीना गुणो रफुर्या अने वेमना गुणो श्रीमद् देवचंद्रजीना इदयमां रफुर्या अने तेथी संदेगी क्रियो-द्धारक सावजीनी पृष्टि घट तेथी श्रीषद देवचंद्रजी महाराजनी घणी प्रतीष्टा वधी तेमना समयमांज तेमनी महत्ता-प्रतिष्टानी आखा भारतमां ख्याति मसरी। तेमनी सर्वे गच्डोमां महत्ता वधवा सागी. श्रीमान् पन्त्यास पद्मविजयजी के लेओ पिस्ताडीश हजार गाथाओना रचनार पबदह तरीके मसिद्ध भया हे तेमचे ह्यी उत्तमविजयजीना निर्वाण रासमां वेमना समानकाटमां

रदस्तर गग्छ मांटे थया रे नामे श्री देवचंद्र रे

जेनसिद्धांत शिरोमणि रे छोल.

धैर्यादिक गुणवृन्द रे, देशना जास स्वरूपनी रे टौट ॥ इत्यादि अञ्चोयी श्रीमद् देवचंद्रनी विद्रतानी अने साबु तरीन केनी महत्तानी स्तुति करी छे. तपागच्छमां संवेगी पञ्चमां श्री पद्मविजयजी पन्न्यासनी घणी प्रतिष्टा छे. श्रीमद देवचंद्र महाराजनी श्री पद्मविजयजीए संसारीयणामां तथा साञ्चयणामां समागम करेलो हतो अने ते समयमां ते महा विद्वान गणाता हता तेनो जाति अनुभव कर्षे हतो तेयी तेमणे श्रीमङ् देवचंद्रने जैनसिद्धांत शिरोमणि एवा पदयी निवाज्या छे, तथा धैर्यादिक गुणना वृन्द तरीके प्रशंदया छे, तथा जेनी -देशनास्वरुपनी अर्थात् आत्मस्वरूपने प्रकाशनारी छे, पुम मतिपादन कर्युं छे ते खरेखर अनुभव करीने कर्य छे. संवेग पुत्री गुणिशेखर श्रीमद् पं.पद्मविजयजी जेवा महा विद्वान अने गुणातुरागीए श्रीमद् देवचंद्रजीनी प्रतिष्ठा, महत्ता अने विद्वत्ता-नी ख्याति करी छे. उपाच्याय श्री देवचंद्रजीने एक पूर्वद्र ज्ञान हत्ं, एम श्री ज्ञानसारजीए आ ग्रन्थना एव १०४३ मां जणान्युं छे, तथा ते आत्मज्ञानी वक्ता हता एम स्पष्ट ज़णाव्युं छे. इत्यादि अनेक रीत्या श्रीमद् देवचंद्रजीनी मह-.तानी सिद्धि थाय छे. तेयी हवे तत्संबंधी विशेष उखवानी 'जरुर ज़णाती नयी-

समकालीन जैन साघुओनं अने श्रीमद् देवचंद्रनं परस्पर मिलन.

अदारमा रीकाना मध्यमागमां आखी जैन कोममां अने भारतदेशमां महाप्रखर विद्वान् तरीके श्रीमद् यशोविजयजी .उपाध्यायजी तपागच्छीय प्रसिद्ध छे. अत्राँचीन कालमां तेमना

जेवा कवि, भक्त, ज्ञानी, कथेयोगी महात्मा अन्य हरो वा नहिः वेजो जैनकोममां सर्वमान्य घर्मञ्जलस्य गी हता. सर्वे अञ्चयोगीना वे गीतार्थे हता. वेसना समागः भीमद्द देवपन्द्रजी आच्या होप पुम जन्मप हे जपात्यापः सं. १७४५ स्थाभम सुची जीवना हता. उपाच्याचना समा गममां आध्यायी वेमतं आण्यज्ञान तरह ट्रास्ट गर्ड होप एम अतमान धाप छे अने तेवी तेमणे ज्ञानसारपर ज्ञानमं जरी दीका देखी भीमद् यसोविजयजीनी विचारमाळानी सिंह कर्ता जन्मय छे. पारणमां श्रीमङ् ज्ञानविमस्वरि तार्वे श्रीमङ् वैत्रपञ्चनो समागम पएसो मनीत पाप छे. एं. जिनविज्ञपः जीने भीज्ञानविमलस्रिए भगवती वंचार्स हते अने वे साठ जान जानामान्य । छाभम् भीजिनविजयनीने भीमद् देवषंद्वनीय विरोपारस्यक वैचार्स हतुं तैयी पारणमां पत्ने विद्वानोनो समागम पएछो होवो जोड्य श्रीमद् देवपादनी अने श्री शाननिमलस् पनिष् मधी आनन्दयन षोषीशीनां छेहां है तहनो हस्त हतां. श्रीमान् आनन्दपनजीना समयमां वैओशी विष्ट मन हता पीतु आनन्द्रवनभीनी साबे तमाग्म यथी होर म मानवाने सवछ कारणी महणां नगी. भीमह सम्बद्ध तीने भीआनंदयनजीनो समागम पयो हतो अने तेटी डान पत्रीनी होट्ट पक्षात् अन्यात्मज्ञान तरफ यन्त्र हर्न की प्रतिसनी कीमत्ना समानहः 🗲 🚓 त्व भित्त गन्छना साधुआतं परस्य निक्र रूटा बादमां तपामध्यना युनिसे अने कुन्तरक्ता दुन्तर परगाराना सनियो पासम पृष्ट होता स्ट्रान्स

साबुओ पासे अम्यास करता हता. सोळमा सेका करना अद्यास सेकाना मध्यकालमां परस्पर मिद्रा गुच्छीय साबुओमां गुणा- तराग इद्धि पाम्यो हतो. अद्यास्म सेकाना मध्यकालमां रारतर गच्छ अने तपागच्छना मूरिप्रज्यो संवसहित ज्यारे सिद्धाचल याचा करवा जता हता त्यारे वेओ धंयुकामां (श्रीमट् किल्काल सर्वेज्ञ हेमयंद्रनी जनममूमिमां) मच्च्या त्यारे क्हे गच्छना आचार्यामां भावतीय हाला सेवा के सेवा मच्छना आचार्यामां भावतीय छुछणां कर्यो वेमां ये लाख रुपैयानी उपज यद्भ महिमा गच्छमां ते वस्त्रते पटनपाटन अस्परस्त चालते हती हती मच्चेमां ये वस्त्रते पटनपाटन अस्परस्त चालते हती हती मच्चेमां ये वस्त्रते पटनपाटन अस्परस्त चालते हती सेवा मंत्राणे यादी आध्यामां आवे छे—

श्रीमद् देवचंद्रजीकृत् कृतियो.

१७४३

रच्यानो संवत्. कया गाममां

पुस्तकतुं नामः

🤋 'अध्यक्तरी प्रजा

,	ALENAULY SAIN	1-04	8010
	पुकवीशप्रकारी पूजा.	99	****
ิ์⊋	ध्यानदीपिका चतुष्पर्द	ो. १७६६ वै.व.१३ मृ	लतान पंजाम
	द्रव्यमकाशः	१७६७ पो.व.१३ वि	कानर,चोमासुं
-		सं.१७६	६ उं कर्पा बाद
ંવ	आगमसार-	१७७६ का.सु. ३ म	ोटाकोट मरोद
ξ	नयचन-		****
		१७९६ का.सु. १ नत्रान	पर (जामनगर)
c	ज्ञानमंजरी टीका.	27 27 G	n
3	विशविहरमानवीशी	****	पालीसाणा.
30	सिद्धायल स्तवनः	१८०४ मा. सु. १३	77

(प्राय: १७४१)वा जीवरी.

MINTERPER.

इटोना करेबा प्रदाय.

११ समग्रणपर्विद्यानी ट्यो. १२ पांच कर्मग्रन्थनो ट्यो.

१३ विद्यासन्त्रमाः (प्रश्लोत्तरस्य)

१४ प्रश्लीनर

१५ समित्राच.

१६ मनिया पुष्पप्रअसिद्धिः

१ण सुगायानह अविदयः १८ दशमामामानाः

१९ वर्गमान चोर्नाजीः

२० अनीत पोवीशी पढी एक विशी.

२१ स्वाप्रकाः

२२ नापाया जगाता. २३ वीरनिर्शणना भारतनी हाली-

६४ पाएकिनम्बदन अने सेनी व्योत २५ भारीपीत्रीकी परा पश्चनावन रत्रक.

२६ सीमास्त्रिन रचान.

२७ द्वारा विते स्वास्त्र रच्य

६८ भग्नानमा आदि जिन्सवान.

दे । १० पर राजा. Lo emperer erral.

देश विभागायाया

\$3 neers 2 \$134.

११ अतिभावतिन होतः

😯 प्रच स्तिहै.

19 82745 19 L

```
1201
३६ गिरनार स्तुति-
३७ वीशस्यानक स्तुतिः
३८ जानबहमान स्तति.
    बडी साबु वन्दनाः
४३ अष्टप्रवचन मातानी सज्जाय.
                                            जामनगर.
                                            हींब्रहीमां.
४४ प्रभंजनानी सज्जाय.
४५ दंदणऋषिनी सज्जाय.
४६ समिकतनी सज्जायः
४७ गजसुकुमालनी सज्जाय.
४८ पंचेन्द्रियविषय त्याग पदः
४९
        त्रण कागर-टखेल पत्रो.
40
48
५२ साबस्वाच्याय तेनापर ज्ञानसारनी ट्यो-
५३ सङ्झाय-
५४ सावमी पंचभावनाः
५५ ( आनंद्धनजीनी चोवीशीमां
      ज्ञानविमलजी अने देवचं-
      दजी बहे मेगा यड बनावेटां
      २३-२४ वे स्तवनो ).
५६ आजको राहो ठीजीपुरे कार
    कोने दीठी छे. ( प्रायः देव-
    चंद्रजीकृत जणाय छे.)
```

परस्परना ग्रन्थोमां साक्षीओ.

श्रीमद् देवचंद्रजीहृत ले ले अन्यो-हृतियो उपरुष्य यह छे ते उपर प्रमाणे जणावी छे. भविष्यमां ले ले उपरुष्य यदो ते ते जणाववामां आरको श्रीमद् देवचंद्रलीए पोताना प्रत्योगां वापक पशोविजयजीना प्रत्यानी साम्नी आर्ग है. तेयां तेओ गुणावतामी हता एम सहेने सिद्ध पाप छे तेमद्र तेयां तेओ गुणावतामी हता एम सहेने सिद्ध पाप छे तेमद्र तेयां तेओ गुणावतामी हता एम सहेने सिद्ध पाप छे तेमद्र तेयां श्रीमद् आनन्द्रयनजी के ले अर्वाचीनकारना अन्य-मक्कानोद्धारक हता, तेमना वपनीनी पण पोताना प्रत्यान मन्द्र आर्पी छे तेयां ते कारमां तपागण्डीय श्रीमद् आनंद्रयनक्ष्य विषयोगे आर्पी जैनकोममां जरुदी प्रसारी गुणावता श्रीमद्ध हेनकोन्द्र श्रीमद्द देवचंद्रजीहा अन्यनी साम्नी आर्पी छै. स्मान्य स्त्याना साम्योग अने साम्नीओ आप्पा विना संदेश स्त्रीन्त

प्रण मुनिओनी एक पुडा,

आ बखते तपागण्य अने खत्नाप्यत अक्तां हैन हती. स्पानस्वासीओ सामे मेंने गण्यत्या हुमेंने हुकी ग्राह्म साम्यताओना मेरीने उपसानक एवं स्पाहन हिन्म माना उप्यापको सामे प्रविक्ता हिन्म हिन्म एक सारती रिवे शुरोपी विकारकोने से स्मिन्स्यों हुन भीमङ् परोविजयंकी उपान्यतहन स्माहन हुन्न नथा विमञ्जूमीसून नथप स्पृति स्में हुन्दु हुन्दि नथा रसंतर तपामाञ्चना सर्व जैनी एक सस्ती रीते पूर साम है अने मिविष्मां संतीने प्रतामां अभेद्रशो वर्ने माटे नदरद पूजा भणादमानी व्याग्या करी हती ते व्याद हाल पण नदरद पूजा नगीते प्रसिद्ध है अने भेतांबर है ज्यारे पूजा भणाते हैं स्थारे एक नदगदनी पूजाने हाल्य भूणाते हैं. हाल्यमां जैटकी पूजाओं भूणाद्यामां आते हैं वे पर्तेत्व प्राप्तामाणी नापद पूजा जैटकी उत्तम अने स

रुधिका जामान हो तेरजी कोट जामानी नवी.

श्रीमदना ग्रन्थान अन्योना दणाती.

धीमप् दे (भड़की हुन अन्यास्तर्गानाती जिनोमां घणी रूप हो. भगवतीना जेम दिन्ह भीमा प्रसिद्ध हो तेम भेन जिनोमा अन्यास्तर्गाना प्रसिद्ध हो. अन्यास्माना प्रस्कृत ए प्रशिवपत्री (अमीर्चर) भी तो हो हो, अने गीजी भ्रास्तर्गानी कर्म हो तथा से बात हो हो ते सुरामां भी में नदादकीना अहारमा हो. याची त्यो बीजा भागमां हा सम्बद्ध हान्यो हो तथा कर्म हुन हो हो से ज्ञाप है सम्बद्ध हुन साहरद साल्याय पर आवद्द आतमास्तरी में रूप कार्यो हो तथा हुन तथा हुन सुन सहस्तर्भाव हो। देखें हुन महार

भी ज्ञानसम्बद्धी बीराध्याना बढाल्या अने गीनायै हुना ते सम्बद्धाः विश्वासन्त द्वदानमा धाना हता. तेसी अन्यवस्माने भीतिशीय को पूर्व छ तसन प्रदेशकी अन्यवस्मान ढटा बदाव बाल्या छ, तेसीभीयु भी दे

एक कोन झान हु। एवं ओवर आनगामीय प्रणापी

इर्जी माटे उत्तम अभिमाय दर्शांच्यो छे अने तेमनी साँध रराष्याय पर ट्यो पूरीने गुणातुराग दर्शांच्यो छे. तेओओ श्री देवचंद्रजीना समागममां आध्या होच तो ना कहेवाय नहीं.

श्रीमद्नी आत्म**द**शाः

श्रीमदना ग्रन्यो परयी तेमनी आत्मदना उच्च प्रकारनी हती एम अनुभवाय छे. तेमणे पोताना कोड अन्यमां कोइना मति क्रेपना उहारी दर्भाच्या नयी. व्यवहारमां स्थिर हता तेमज निश्चयमां विशेष स्थिर हता. तेमणे पोताना स्तवनीमां ममु भक्ति प्रसंगे खास उद्गारो काड्या छे. कोड पण सक्त हृदयना उद्गारी कोइ पण रीते जगत् आगळ रहा करे छै. हद्यना उद्गरोमां कृषिमता होती नयी परंतु नैसर्गिक आत्म-दशाना सभराओ होय छे. कविनी कविता ए कविना हृदयनो आरीसो छे. भक्तनी स्ववना एज भक्ततुं हृदय छे. ज्ञानिना प्रन्यो ए ज्ञानितं अर्भतर जीवन छे. श्रीमर् देवचंद्रजीतं ग्रह्य जीवन तथा आध्यात्मिक लीवन उद्य प्रकारते हते. अप्रमत्त दशामां तेओ वारवार रमण करता हता. प्रमत दशा करतां अप्रमत्त दशामां तेमसं आत्मजीवन रसमय बनी रहेतुं हतुं. अप्रमत्त ग्रुणस्थानकमां शृक्षद्रशानी अनुभव ल्हेरोमां तेओ मग्न रहेना हता. अत्माना गुखनो अनुभन रस पीधायी तेमने बाटा त्रिपपरस वे रस तरीके भारतो नहोतो. आत्मानी शुद्धा-नुभन्न आनंदरस थया विना, बाह्य कामनी रस नष्ट थया विना अन्तर्मुख यत्ति भवी नयी. आत्मा पोताना स्वभावमां देहा-ध्यासना नाहा पूर्वक मश्रति करे छे त्यारे आत्मसुखनो अनुभव आने छे त्यारे क्षिर, वस्त, नामरूपत्रं मान मृह्याय छे. अर्थात्

तेमां अहंगमत्व बुद्धि नष्ट धाय छे अने अप्रमत्त दशामां प्रवेश थाय छे. श्रीमङ् देवचंद्रजीने एवी उत्तम आत्मज्ञान दशा प्रगट थड़ हती, अने एवी दशामां अवद्रत बनेटा हता तेयी ते प्रसंगे जे उद्गार बहार पडेला छे तेमां आत्मदशानी खुमारी नीतरी छे ते तेमना उद्गारनाळां स्तवनोयी वाचको सहेजे समजी शके वेम छे. नामरूपनो अहंमाव टळयो हतो. देह छतां तेमणे विदेह दशानो अत्रमन करों हतो. लींबडीना उपाश्रय पासे देरासरमां एक मींपरामां वैओश्री च्यान धरता हुता एम त्यांना रृद्ध श्रावको जणावे छे. मोटाकोट मरोटमां तेओश्री अपे पण पण वा कलाकोना कलाको पर्यंत आत्माना गुद्रोपयोगमां तस्त्रीन थइ आत्मसमाधिमां मग्न रहेता हता तेमणे सविवरूपच्यान समाधि उपसंत निर्विकरूपक समाधिनी रस ठीयो हतो अने तेओ देह छता देहातीत दशामां अखंध उपयोग पणे रखा हता. तेया वेओषु छद्धोपयोगना तानम स्तरनोमां आत्मतराानो रस रेह्यो छे. जेटला प्रमाणमां आत्म दशा मगर्टी होय छे तेरला ममाणमां उद्गारी मकरे है जेटल आत्मामां प्रगटमुं छे तेटली झांसी शब्दोद्वारा वहा प्रकाशे छे. दरेकना पोताना शस्दोमां तेना विचारी होय छे श्रीमद् देवचंद्रजीनां पुस्तको एज तेमतं आन्तरजीवन है बाद्यजीवननी चेशमां तो मास्य मोगे विचित्रता होप छतां आन्तरजीयनतो तेयी जुदा मकारतं होय छे. बाह्यजीय ते शर्मा, वाणी अने कर्मना भीमयी मिश्रिन होय छे अं आत्यात्क आवननो उपयोग रूप होय छे. धीमद् देवपंदर्जा धूक नाळियेग्ना जेव बालामां राम द्वेषयी अपरिणामी जीव हुन पुन देवना स्तानोया जगाय छे-

श्रीभट्ना प्रमुत्ता स्ववनीमां आत्मद्द्याना उद्दारी छे तेमांयी संद्रोपयी केटलाक नीचे प्रमाणे जणावत्रामां आवे छे-

आरोपित सुरव प्रम टल्पो रे, भारपो अन्याचाय समर्थो अमिलापीएणो रे, कर्ता सावन साध्य ॥अ०॥ माहकता रत्रामिन्वना रे, ध्यापक भोक्ता भाव कारणता कारजदशा रे, सकल ग्रपुं निज भाव ॥अ०॥

प्रमु दरिसण महामेहतणे प्रवेशों रे परमानन्द सुभक्ष ह्यो सुज देशों रे ॥ १ ॥
तिन सुवन नायक शुझातम तत्वामृतरस बृढ़े रे
सकक भविक छीहाणी मारु मन पण तुई रे ॥आ० २॥
मनमोहन जिनवरजी मुजने, अनुभव प्यादोदीवो रे
पूर्णानन्द अञ्चय अविचल्हरस, मिक्त पवित्र यह पांचोरी।आ० है॥
सानसुआ लालीन त्रेरे, अनादि विभाव विसागों रे
सम्यगुझान सहज अनुभवरस, शृचि निजवीच समागेरी।आ.४॥

जिनगुण रागपरागयी रे, वासित मुज परिणाप रे तजरी हुष्ट बिभावना रे, सरही आतम बाम रे ॥ जिन भक्तिरत बित्तने रे, वेधकरस गुण भ्रेम रे सेवक जिनपर पामंत्रे रे, रावेधिन अप जेम रे ॥ नाप भक्तिरस भावगी रे, तृण क्यांप पर रेव रे ॥ विन्तामणि मुस्तरक्यकी रे, अधिकी अरिहंत सेव रे ॥ परमातम गुण गम्हितयकी रे, फदाबी आतमसम रे नियमा कंपनता छहे रे, टोह ज्यं पारस पाम रे ॥



श्रीमद्नी भक्त दशा.

श्रीमान् देवचंद्रजी प्रसात्माना ज्ञानी अक्त हता. तेमणे पोवीश तीर्यकर्तनी पूर्ण प्रमयी स्तवना करी छे. तेमणे ह्ययना पूर्ण भावयी वास्तविक परमात्माना ग्रुणों वर्णन कर्यू छे. तेमणे स्वस्तान अस्तान प्रसातान प्रभुतानं द्रश्य छे. तेमनी भक्तिन प्रपातानानी प्रभुतानं द्रश्य छे. परमात्मानी भक्तिन-प्राप्ताना करती वखते पोते ह्ययने ज्ञार मात्र छप्तस्य राखता नर्था. प्रभुती भक्तिमां नामरुपनी अहंता विसरी जाय छे तेमज प्रभुने मळवा माटे अनेक आशायय ग्रुप्तम भावनाओंने ह्यय आगळ स्वडी करे छे. पोतानी मोहदशा न होवा छता तेने मोडी करीने दास मात्रे प्रभुने पतानाने दोषी तरीके जाणवे छे. पोताना बनावेदां स्तुति पदी-प्रयोग होषी हरीक विसरी पीच प्रसाणे अप्रवास्थं आवे छे:—

तार हो तार प्रभु युज सेवक गणी जगनूमां पृट्छं युजस होजे. दास अवराण भरों जाणी वोतातणो दयानिष दिनपर दया कीजे. तार० ॥ १ ॥ सार्येष भर्षे भोह देरी नत्यो, मोहनी रीतिमां पूर्णए रातो कोयब्य धमवम्यो छ्रद्रगुण नवीरम्यो भरपो भवमाहि हुं विषय मानो. तार० ॥ २ ॥ जार्युं आपरण टोक उपचार्या द्यास्त जम्मास एण कारं, कीघो स्ट्रास अरान्य आरम अन्येच विष्य हेह्सो कार्य होजे को म किद्यपो. तार० ॥ ३ ॥ सहेजे प्रगट्यो निज परमात्र विवेकजो, अन्तर आतम ठहरों। सावन साववे रे छोछ। साध्यारंबी यह ज्ञायकता छेकजी, निज परिणति थिर निज धर्मरसे ठवे रे छोछ ॥ रयागीने सवि परपरिणतिरस रीजजो; जागी छे निज आतम अनुभव इप्टता रे छोछ ॥ सहजे छुटी आस्त्रवभावनी चारु जो, जालम ए प्रगटी संवर शिष्टता रे छोल ॥ बंदना हेतु जे छे पापस्थान जो, ते तुज भक्ते पाम्या पुष्ट प्रशस्ता रे छोल ॥ च्येयगुणे वल्लम्यो पूरण उपयोग जो, तेहयी पामे ध्याता व्येय समस्तता रे छोड ॥ जे अति दस्तर जरुषि समो संसार जो, वै गोपद सम कीवी प्रमु अवरुंबने रे छोल ॥ जाण्यो पूर्णानन्द ते आतमपास जो, अवलंध्यो निर्विकल्प परमातम तस्वने रे छोछ ॥

भारपो आत्मसक्प अनादिनो विसर्पो हो ठाल सक्त विभाव उपाधिपकी मन ओसपो हो ठाल सत्ता साधन मार्गमणी ए संध्यों हो ठाल दानादिक निज भाव हता ले परवशा हो ठाल वे निज सन्मुख भाव बही छही तुज दशा हो ठाल हापोपशमिक ग्रण सर्व पया तुज ग्रणसी हो ठाल सत्ता साधन शक्ति व्यक्तता उद्दर्धी हो ठाल हवे संप्रत्ण सिद्धतथी शी वार छे हो ठाल देवपन्ट जिनसाज जान आधार छे हो ठाल

श्रीमद्नी भक्त दशा.

श्रीमान् देवचंद्रजी परमात्माना ज्ञानी भक्त हता. तेमणे घोषीज्ञ तीर्मकतोनी पूर्ण प्रमर्थी स्तवना करी छे. तेमणे ह्रयमा पूर्ण मावशी वास्तविक परमात्माना ग्रुणोत्र वर्णन कर्य छे. तेमणे ह्रयमा पूर्ण मावशी वास्तविक परमात्माना ग्रुणोत्र वर्णन कर्य छे. तेमणी भक्तिमां ख्यता अने परमात्मानी मञ्जतात्र हरय छे. परमात्मानी भक्तिमां लाक्ष्य कर्या वास्तविक परमात्मानी महत्त्व करा मात्र छक्तिम जात्माम ख्रास्य राखता नवी. मञ्जने मळवा माटे अनेक आज्ञामय ख्रास्य मावनाओने ह्रय जागळ खडी करे छे. पोतानी मोह्यका न होषा छता तेने मोटी करीने दास मावे मञ्जने पीतानी दोधी तरीके जणावे छे. पोताना बनावेटां स्तिति परीमार्गी संक्षेपयी नीचे प्रमाणे आपवामां आवे छे:—

तार हो तार प्रभु ग्रुज सेवक गणी जगन्मां एटखे ग्रुजस छीजे.
हास अवगण भयों जाणी पोतातणो

क्षपया नाच प्रभाण आपवामा आव छ:—

तार हो तार प्रश्न श्रुज सेवक गणी
जगनुमां एटर्ड सुजस ठीज.
दास अवराण भयों जाणी पोतातणो
दयानिष दिनपर दया कीजे. तार० ॥ १ ॥
सम्द्रिपे भयों मोह वैरी नव्यो,
मोहनी रीतिमां पर्षए रातो
कोचवरा घमवस्यो छाद्रगुण नवीरस्यो
भग्यो भवमांदि हुं विषय मातो. तार० ॥ २ ॥
आर्ड् आचरण टोक उपचारवा
छास्त अस्पास पण कांद्र कीयो
छास्त अस्पास पण कांद्र कीयो
छाद्स अदान्वण.आरम् अवरंव विष्
तेहसी कार्य ठीण की न सिद्धमो. तार० ॥ २ ॥

स्वामी ग्रण ओखरी स्वामीने ने मजे दर्शन शृद्धता तेह पामे ज्ञानचारित तप बीचे उद्धासणी कमें जीती बगे श्रुक्ति वामे. तार॰ ॥ ५ ॥ जगत् वरसल महाबीर लिनवर सुणी चित्त मसु चरणने शरण वास्पो तारजो वापजी तिरूद निज रासवा वासनी सेवना स्वे जोगे. तार॰ ॥ ६ ॥

ोवत जो तद्व पांस्वर्डा, आवत नाय हुजूर हाहरे-तो होती चित्त आंखर्डा, देखत नित्य प्रमुक्तूर हाहरें देव जशा दर्शन करों।। तासन भक्त जे सुखरा, विनवुं शीप नगाय हाहरे

हपा करों युज उपरे, तो जिन वन्द्रन थाय खाटरे. (देव) (छुं पूर्व विराधना, शी कीघी एणे जीव लाटरे. अविरित मोह टळे नहीं, दीठे आगम दीव खाटरे. (देव) इत्यादि

ते समयनी स्थिति अने सुधारणानो थोध. श्रीमद् देवधन्द्रना समयमां पण गांडरीया प्रवाह जैनो वर्तता हता. तळावमां पाणी होय छे तो लील छे. तेम कोइ जमानो पूजी नयी होतो के जेमां सर्वे झालीओ होय वा सर्व लोको अज्ञानीओज होय. भोगी साथे अज्ञानीओ होय छे अने अज्ञानीओनी साथे ज्ञानीओ होय छे. भक्ती होय छे त्यां अभक्ती पण होय छे. द्रनियाना जीवो रजीगुण, तमोगुण अने सत्त्वगुण युक्त होग है. जीवोने कर्ममकृति नचावे छे. केटलक जीवी एकांत कियाबादी होय छे. केटलक शुष्क ज्ञानबादी होय छे, ज्ञान कियाभ्यांमोक्षः ज्ञान अने क्रिया ए वेथी मुक्ति छे एम माननारा इनियामां रत्ननी पेठे अल्प मन्ह्यो होय हो. श्रीमद् देवचंद्रजी महाराज उपदेशक हना तेमज जैनोनी धर्म दशाना निरीक्षक हता. जैनोने बोध पमाडीने धर्मना रिथर करनार हुता. ते चखतना जैनोमां ते चखते बाहुल्य क्रियाज्ञहरदाति हते वेदी क्रियाज्ञहमन्त्यो गाहरिया प्रवाहे समज्या विना प्रतिक्रमणादि क्रियाओने मानी पश्चान् आन्मजान तरफ रुचि धरावना नहीता अने आत्मजानी भुनिराजोनी महत्ता अवबोधवा शक्तिमान् थया नहोता सर्व काळमां ए प्रमाणे बने छे. श्रीमट्ट देवचंद्रजी जैनशासन प्रवंतक हता. आसी दुनियाना मनुष्यो जैनतस्वज्ञान प्राप्त करी है तो यह सारु पूर्वा भावनावाट्य हता. ते वखतमां अज्ञानी व्यवहारवादीओनी बाहुल्यता हती. आरमज्ञान रसिक अल्प मनुष्यो ते वखतमां हता तेयी तेओ चंद्रपाद जिनना रतवनमां नीचे प्रमाणे उदारो काढे हैं.

द्रव्य फ़िया रुचि जीवडा रे, याव धर्म रुचि दीन; उपदेशक पण वेहवा रे, छं करे जीव नवीन रे. चन्द्राननजिन. ३

तस्वागम जाणंग तजी रे, यह जन सम्मन जेहः मृद्र हटीजन आदर्षों रे, सुग्रुरु बहावे तेह रे. चन्द्रानन**े ४** 🏸 आणा साध्य विना क्रिया रे, लोके मान्यो रे घर्म;
-दंशणनाण चरीतानो रे, मूल न जाण्यो मर्म रे. चन्द्रानन० ९
गच्छकदाग्रह साचवे रे, माने धर्म प्रसिद्धः
आतमग्रुण अकषायता रे, घर्म न-जाणे शुद्ध रे. चन्द्रानन० ४
तस्व रसिकजन थोडला रे, बहुलो जन संवादः
जाणो लो जिनसज्जी रे, सवलो एह विवाद रे. चन्द्रानन० ७
इत्यादि

ए प्रमाणे तस्काठीन घर्मीओनी दशाउं वर्णन कर्युं छै. छोकोने श्रीपशोदिजयजी उपाध्याये ते वस्ततमां श्रिस्तामण रूप सस्त चामसा छगाव्या छे ते प्रमाणे श्रीमङ् वाचक देवचंद्रजीए सस्त चामसा छगाव्या नयी. तेमणे तो ले कर्युं छैं ते घण्डं मर्यादामां शिस्तामणरूपे कर्युं छे परंतु होको पर तेनी घणी सारी असर यह छे अने अविष्यमां यशे.

श्रीमद कर्मपोगी महात्मा.

आजकाल जे आत्मज्ञानीओ देखाय छे तेमांनी मोटी माग एक ज्ञानीओनो बनेलो होय छे. आत्मानुं सामग्रज्ञान प्राप्त कर्षा विना शुष्कज्ञानिष्णुं प्राप्त थाय छे अने तेयी वापक्ज्ञानी तरीके उपहासने पात्र थाय छे. कोटाईदीना भावना भावनाज्ञाटा शेटनी पेठे वर्गीन लेओ कहेवा प्रमापे वर्गता नयी ठोओ पोते तरी शक्ता नयी अने अस्पोन तर्गत नयी ठोओ पोते तरी शक्ता नयी अने अस्पोन तर्गत शक्ता नयी. किया विनार्ग शुष्कज्ञान केंद्र करी शक्ता नयी. टीफिक शास्त्रों परित भगवद्गगीनामां श्रीकृष्णे अर्हनने कम्पोगी थवा माटे सारी रीते उपदेश आप्यो हतो

कंड कर्ख नहीं अने येसी रहेवुं, हांनी हांनी वाती कर्षा करवी. स्वपरतं क्षेपः धाय एवां कार्यो करवां नहीं एयी स्वपरते कल्याण चतुं नयी ध्यवहारमां रहीने स्वाधिकारे योग्य धर्ममश्रीत कर्या विना आत्मज्ञान, इंडानी पेठे कार्च रहे छे वा काचा पाराना जेवं रहे छे. ग्रम प्रवति. सेवा, प्रसार्य कार्यो वगेरे कार्यो कर्या विना कोइने आत्म-ज्ञाननी परवता थड नयी अने यहाँ नयी. बाती कर्यांथी षडां घतां नयी. तेम शास्त्रीमांयी आत्मज्ञानतुं स्वरूप बांच्यं एटला मात्रयी आत्मज्ञानी चत्रानुं नयीः देव, ग्ररु, धर्मेनी भक्ति करवायी अने स्वाधिकार प्रश्तियी प्रश्त पतां आत्म-ज्ञान परिणाम पार्य के नहीं तेनी अनुभव आवे हो. सेवा कर्पा दिना आत्मजान जे हे ते आत्मामां परिणमतं नदी. देश सेवा, कुटुंब सेवा, गुरुजन सेवा, मसु गुरु भक्ति, स-माज सेवा, जादेर उपदेश मष्टति, अनेक बन्धोनी रचना. बगेरे राभ कर्में। करवाया अध्यात्मशास्त्रोद्वारा वांपेश आत्म-ज्ञान खरेखर आत्मज्ञानकपे परिणाम पामे छे. भीमद देव-चंद्रजीप दीक्षित थया बाद पोताना ग्ररु भी दीपचंद्र महाराजनी मन बागी कायायी सेवा उटावी हती. धर्मविद्या गुरु श्री झानसागाजीनी एणं प्रेमयी सेवा कर्त हती. तेओ गुरुक्ट-मांबी एटा पट्या नहीना, गुरुकुळवासमां रहीने तेमणे पांपरा-सदित ज्ञान माप्त कर्युं हतुं. शास्त्रज्ञांना थतां पोतानी मा-नता पूजा वधारता माटे ग्रहर्या जूदा पड्या नहोता. धर्म-व्यवहारनी द्यभाषरणाओनी विरस्कार कर्यी नहीती. निद्यप-ज्ञानमां परिपूर्ण थया एतां शुष्टजानी बन्या नहीता. प्रतिमा स्तवनस्पभावपूजा, वीर्ययात्रा, विहार, मृतिनमणादि सुभ

धर्म क्रियाओनो त्याग कर्ये। नहोतो गामोगाम फरीने तया देशोदेश फरीने धर्मोपटेश आपीने तया :ग्रन्थो छखीने कर्म-योगीनी पदवीने तेमणे शोभावी छे. साधुओ, साद्वीओ, श्रावको अने श्राविकाओने घर्मशास्त्रोनो अम्यास करावी धर्म प्रश्तिमां जीवन गाळी आदर्श कर्मयोगीनं जीवन पाछळनी द्रनिया माटे मुक्ती गया छे. लगभग ७०-७५ वर्ष सुन्नी ज्ञानी कर्मयोगींड साब जीवन गाळी तैओए जैन धर्मनी पूर्ण सेवा करीने जैन कोमनी अपूर्व सेवा. बजावी छे ते तेमना प्रन्यो रहेशे त्यांसधी जैनोने उपकार कर्या करशे. श्रीमद् जैवा कर्मयोगीओयी जगतुमां धर्मनी जाहोजलाठी वतं छे. श्रीमङ् यञोत्रिजयजी उपाध्याय, श्रीमङ् विनयविज-यजी उपान्याय अने श्री देवचंद्रजी महाराज जेवा ज्ञानी कर्मयोगीओए अद्वारमा सेकानी जाहोजलाली दीपावी छे अने हाल पण देमना शास्त्ररूप अक्षर देहोगी जैन कोममां जा-होजलाली वर्ती रही छे अने भविष्यमां वर्ती.

श्रीमदनो शिष्य समदाय.

श्रीमद् देवचन्द्र महाराजना क्षिप्यमृत सायुओ अने सा-चीओ हती के नहीं तेनो हुउ मुची चोक्कस तिश्चय जणापो नया. महा मुख्यात पुरुषोत्ती पाळळती संतति तेवा मदाराना होती नया. कांनो देवतानी पाळळ कोयटा जेवुं पाय छे. श्रीमद् हेयचंद्र महाराजनी पाळळ तेमनी सतित पंपा वदी नया. श्रीमद् यगोविजयजी उपान्यायना क्षिप्य सायुओ हता पण तेमनी पंपा वही नयी. श्रीमद् आतन्द-पनदीती पाळळ सायु द्वित्यो नहोता. तेओनी पारो उपहेस अत्रण करनारा आत्रक द्विष्यो तो थया होय छे. श्रीमद् देवपंद्रजी प्रति भोषित आत्रक समुदाय अनेक देशोगां हतो तेमना शावकोग् तेमनी जनाविटी अन्यारमरिताने सुवर्णना अक्षरे रुखार्यो हती. तेमना गार्या आत्रकोग् तेमना ग्रन्योनों अक्षरात्म हती. तेमना गार्या आत्रकोग् तेमना ग्रन्योनों अन्यमति हती. श्रीमद्दना आत्रको सिद्धांतीना ओताओ हता अने तेयां तेओ अनुभवी चन्या हता. श्रीमद्द देवचन्द्रना साध हित्य थया होत तो तेओ कोइ ठेकाणे कंड पण रूक्या विना ग्रह्मा हित्य थया होत तो तेओ कोई ठेकाणे कंड पण रूक्या विना ग्रह्मा होया. अत्रवा तेमनी व्ह्याण्य कोइ हित्य करवा तेमनी ह्याण्य कोइ हित्य करवा तेमनी ह्याण्य कोइ हित्य करवा तेमनी हाया कोइ हित्य करवा तेमनी हाया हता. आत्रवा तेमनी हाया हता आहे हित्य करवा तेमनी हाया हता. आत्रवा तेमनी हाया हता हता सहस्ता सहस्ता भी स्रोह हित्य करवा तेमनी हाया हता हता हता सहस्ता सहस्ता सहस्ता सहस्ता नहीं होया हत्यादि अनेक करवनाओपी चोग्रस्त निश्चय करि शकाय नहीं.

श्रीमर्तुं निर्वाण अने निर्वाणस्थान पारीताणा.

संवन् १८०४ सुची तो तेओ हपान हता एवं होमना बनावेटा सिद्धापटना स्तवन परियो माह्य पडे हो. ते परिते तेओ लगभग ८४ धर्मनी उसर स्थामगना होवा जोहए परिया से स्थामना होवा जोहए परिया हो. ते. १८०४ बाद सिद्धाच्य पाळानाणामां स्थित्यास से जोहरूप, पाळानाणामां स्थित्यास से होवी जोहए, पाळानाणामां स्थित्यास सरीने तीर्थरण-ममां समाधिमरण करवाने एवा महापुरुष इच्छे तेमां वेंद्र आक्षर्य न्यी. सिद्धाच्य परंत पर अनेक प्रतियोण अन-सण् कर्मा हुए श्वावस्थामां जेवा बस्त्रीण धाय हो. पाचे इन्दिओनं ज्ञान बळ घटे हो, मननी विचारशास स्तिण थरी जाय हो अने विहार धर्द शक्तों नयी, पुवा-

वरपानी पेठे उपरेश आपी शकातो नयी अने वन्य रचना चरोरेनी प्रवृत्ति बन्द पड़ी जाय छे. श्रीमवनी वदावस्थायी पर्वेत्त रियति याय ए संभवित हो. बद्धावस्थामां होयदे परमात्मानं स्मरण अने आत्माना शुद्रोपपोगनं स्मरणज पड शके है. भीमरे सिद्धक्षेत्रमां परमारमानं श्यान धरवामां तक्ष्म गर्म हुनं, तेओ जरीर, नाम, जाति, आदि सर्व गारा क्टार्टीमां आमृति विनाना चया हुना आत्माना गृहोपयो-गना नागेतामां सफरीन रहेता हता. अंते समाहि मर्ग भागानीया न पार्वति ॥ अभव्यतीयोने बरणहाले समाधि-बाग प्राप्त पर्यु नयी. जेमणे पोणोसी वर्ष समभग आत्म इस्तोपयोग, आरमस्यान, आरमानं चित्रपत, मनन, अने भणम नमापिमां गाळ्यां होय तेने मरण चरको निश्चति-दशामा समाधिमरण (पंडित भरण) चाप धर्मा केंद्र आधार्य नरी. भीषी अनादि अनंत ज्ञानकत आग्यजीवनमां मनने 🗗 र १ १ हो अने बाळ इदय पदावींमां समझेपपरिणामपी मुन्द चया हुना, आरमा अने वरमारमाना उपयोग दिना रोओ ६१एमा अन्य करो विभाग प्रगतास्ता महोता. कर्मपोगी हता तरी मरण दरवरे जारीहरू अल्ला महेतामां जगमात कायर बन्द नहीं है. तेओ सुष्ठकुष्ठ बार्य है हमा अने ने भीए अने इ. मृतिरीनी आद्यीवीर अधि हती वेगी वे भीने आग्रम- न स्टावे प्री पीश वनी नहीती. श्रीमपु शास विभागी हता रण देवने अन्य शुर्वापयीसनी स्थलनायां स्थयना आपती सहीती. र्च परियास असे असून प्रतिसाम पत्र और्धिक मार्गा रित है एवं बार्ग तेजी करू अन्याना, शारीपरीगर्भा मन इस. रजीय बालकारणी परेशों शाहिक प्रश्निपीनी

घणी मन्द्रता करी हुवी. आत्माना शुद्ध परिणाममां रहेतां अने आत्माने भावतां छतां तथा अरिहंतशरण, सिद्धशरण, साधशरण अने केविष्ठ प्रशास धर्मशरण ए शरणने अंतरमां परिणमावी परमेष्टि महामंत्रतं च्यान घरतां छतां बाह्य प्राणीनी स्याग करी वैजी शुभगति भजनास थया. आत्माना अनुभवमां रहीने शरीरनो संयोग दर कयाँ. धन्य छे एवा आत्मज्ञानी महापुरुपने धन्य हे, तेमना जीवनने धन्य हे, तेमना शरीरने आवकोए विधिएवंक अग्नि संस्कार कवा, वेमना मरणना समाचारयी आखा भारतमां जनकोममां घणो खेद प्रगट्यो पण भाविभाव आगळ कोड्नुं कंड चालतुं नयी एम जाणी अंते जैनो तेमना ग्रणोयं स्मरण करवा टाग्पा अने तेमनी पाछळ तेमना चिरंजीव अक्षर देहरूप यन्योतुं अवलंबन क्षेत्रा सारमाः धर्मज शरणभूत छे. पोतानी साये हुनियानी कोइ वस्तु आवती नयी. मोहयी जीवो आत्म-भान मूर्डीने अंते जन्म हारी जाम छे. श्रीमद् श्वेत वस्त्र-धारी हता. ज्ञान बेराग्य भावना भावनामां एका हता. खंडन, मंडन, बादविवाद, विकथा वगेरे जेयी आत्म करपाण वा संघ कल्याण न थाय तेनायी दूर रहेना हता. तपश्चर्या आदियी भीमरे आत्मज्ञाननी परिपक्ता करी हती तेया तेमनं समाधिमरण वयुं हतुं. वेओ कोड्नी कदापि निन्दा करना नहोता. कोइना अवर्णवाद बोल्ना नहोता. देमने स्त्रगच्छ वा परमच्छ संबंधी मन्यस्य दशा हती. तैमणे साधु दशातुं अतुभव गम्य वर्णन कर्युं छे तेमांयी केटलाक उटारो नीचे प्रमाणे आपवामां आवे छे-

जगतुमें सदा सुखी मुनिराज परित्रभाव परिणति के त्यागी,

जागे आत्म स्वभाव निजग्रुण अनुभव के उपयोगीः जोगी ध्यान जहाज ॥

निभेष निभैछ चित्त निराञ्चल, विद्यो ध्यान अभ्यास देहादिक ममता सवि वारी, विचरे सदा उदास ॥ अ॥ भावे साधन जे एक चित्तवी रे, भाव साधन निजभाव भावसिद्ध सामग्री हेतु ठे रे, निस्संगी सुनिभाव ॥ साधक॥

हेय त्यागयी ग्रहण स्त्रधर्मनो रे, ऋरे भोगने साव्य. स्वस्वभावरसिया ते अनुभने रे, निजसुरत अन्यावान ॥ साधक॥

निःस्पृह निर्भय निर्मम निर्मेख रे, करता निज सामाजं देवचन्द्र आणाये विचरता रे, निमये ते सुनिराजः ॥ साधक ॥

हवे वाषको श्रीमद् देशचन्द्र सहाराजंना शरीरने देखी शंके तेम नयी परंतु हाल तो तेमना आत्माना भंतिषियरूप तेमना सद्वायारीनां दर्शन स्पर्शन करी शके तेम छै. तेमंगी संगनमां रहेला समुचियारीनां दर्शन स्पर्शन करी शके तेम छै. तेमंगी मंगनमां रहेला ममुच्योने चय्य छै. तेमा अवधारमञ्जाती वैरागी गीतार्थनो एक घर्डानो वा अर्थ घर्डानो समागम स्वरंदर कोटि अर्थ प्रधानो समागम स्वरंदर कोटि अर्थ प्रधानो सायभा समागम स्वरंदर अर्थनगुण स्थाभकारी छै. पृशं ज्ञानी सायभी तेमना अर्थ अर्थ अर्थनगुण स्थाभकारी छै. पृशं ज्ञानी सायभी ओळरवी शके छै. कारण के ते समयना फेटलाक हर्जनो तेमना समागममां आवनाराओने दीच दृष्टियो विपर्यय दशायळा वर्री पृत्रे छे. हवे तो तेमना आभी तेमना प्रस्ता तेमना आस्मानी ज्ञान वैराग्य सुगंधियी याचकोने हाम अर्थ छै.

श्रीमर् देवचंद्रजीनो महाविदेह क्षेत्रमां फेवली तरीके अपतार.

श्रीमर् अव्यात्मजानी, आत्मशुद्धीपयोगी देवचन्द्रजी महाराज हालमां महाविदेह क्षेत्रमां केवर्डा तरीके विचरे छे एम अनेक मनुष्योना मुखे किनरन्ती नरीके श्रवण कर्ष है. सांभद्धवा प्रमाणे श्रीमद्ना सगी अध्यात्मज्ञानी श्रावके पाट-णमां महान तप कर्षे हतुं. वे नपना प्रभावे भुवनपति देवे रेमने माक्षान् दर्शन आएंध्रु ते बखते ते आवके भवनपति देवने श्रीमद कड गतिमां गया एवं मश्र कर्ष तेना उत्तरमां देवे क्यं के श्रीदेवचंद्रजी महाविदेह क्षेत्रमां जनम्या छे अने हाल केवलजानी नरीके विचरे छे अने अनेक भव्य जीधोने देशना देह नारे छे. अमदाबादमा सारंगपुर तळीयानी पोध्यमां आरमजानी ध्यानी परम वैरागी श्री मणिचंद्रजी नामना यति-साधु हना. तेमणे आतमरामेरे सुनिरमे वगेरे अपूर्व धरान्यमय सहझाओ, पद रच्यां छे तेओ महातपरवी ध्यानी हता. तेमना तप प्रभावे तेमनी पासे घरणेन्द्रे साक्षात् दर्शेन दीयुं अने मणिचंद्रजीने शाना पुरुछी मणिचंद्रजीने कोट, रक्तपीतनो महाभयंत्रर रोग हतो, ते द-र्थ्यो पाडामा हुना. देवे मणिवेद्रजिने बग्दान मागनातं कर्य परंत श्रीमणिचंद्रजीए बंद माग्युं नहीं. तेमनो रोग टाळवा विनंति करी पण वेमणे ना कर्यु अने क्यं के वे गेग मोग-व्या विना छुटको नयी, कर्या कर्म उदयमां आवे छे. तेन रहेणुं रोग भीमवीने आपवृं जोह्णू. प्रास्वकर्ष तो तीर्थकर भगवानने पण भोगववुं पडे छे नो मारे पण भोगववुं जी इषु के लेया परभवमां कर्मतुं हेणुंदेणुं रहे नहीं. श्री^{मान}

चंद्रजीए. परेणेन्द्रदेवने श्रीमद् देवचंद्रजीना गति विषे पुच्छं त्यारे धरणेन्द्र कर्षु के श्रीमान् देवचंद्रजी हालमां विदेहसे-मां केवर्जी तरीके विचरे छे. श्रीमद् आनन्द्यनमां गति विषे पुच्छंपुं त्यारे कर्षु के तेओ एकावतारी छे एम श्रीमद् पशोदित्तपजी उपाध्याय संबंधी पुल्युं हुएं, तेनो उत्तर एका-वतारी तरीके आध्यो हुतो. एक इद्ध श्रीता श्रावके अमने ए प्रमाणे किवदन्ती परंपतायी चालती आवेठी कहीं हुती. आ प्रमाणे किवदन्ती अथ जणावी छे. कलकत्तामां रहे-नार अध्यात्मज्ञानी सुश्रावक हीरजीशदृए एण उपरना भाव बाली एक किवदन्ती वहीं हुती पण तेनो विरतार धाय वैद्यी अय लग्दी नवीं.

श्रीमर्ना चमःकारो.

भीमद् देवणंद्रजीता चमरकार संबंधी अनेक किंत्रत्तिओं सांभळतामां आने छे. काशीवाळा मेडलावार्य भीतालपन्द्र-स्वरि महाविद्वान खड़ गया छे तेमना समयमां तेमनी साये विचरनार पेंसी वर्षना एक बढ़ यतिभी अमने संसारीपणामां विजारत नाखुक आजीन गाममां मध्या हुना तेमणे अनेक बत्तो वर्ष हुनी ने कहेना के मारा गुरु नेथुं वर्षना हुना है बन्तरे में बाल्याक्रणामां शीमद्द देवणंड संबंधी यानी सांमडी हुनी, मं. १९५२ नी साल्यां अमार्क थे पर्य सुधी अपजीत्मां वार्षिक अस्माम क्ष्मवाम मार्ट मंत्रना आग्रहती एरेंग्रान्यं पड़ हुनी ने प्रमंगे भीमद्दी विजेश कंटरी हिंग्रती-करी हुनी, यह यतिकी वृत्यस्थ अजनुषी करेंग्री हिंग्रती-करी तीच प्रमाण करवामां आहे है. भीमहे ज्यारे दीशा लीघी हती त्यारे ते वाल्यावस्थामां हता. ते एक वर्खते काउसरगमां हता त्यारे एक मर्पकर सर्प आच्यो अने झीमह्ना वर्धारपर पद्मा कारायो. अरीर पर पदीन ते झीमह्ना वर्धाळागां चेटो. ते बखते आखुवातुना साधुओ गमराववा लाग्या ते ते भीमह्ना साधुओ गमराववा लाग्या तो पण श्रीमह् जरामात्र चलायमान च्या नहीं, श्रीमदे काउसरग पार्यो त्यारे ते सर्प प्रकार करती खोळामांची उन्त्यों अने सामो बेटो. श्रीमदे तेने समना भावनां घचनो करतां ते तेण मरतक डोल.बीने सांमञ्ज्यां. आवी रियतिन देखीने पीजा साधुओ खरा ह्रदप्यी श्रीमह्ना धर्मती प्रस्ता करता लाग्या प्रमु चन्ने कहेवा लाग्या के श्रीमह्मा भावनां निर्मयद्वा प्रमु चन्न हेत है तेओ वाल्यावरणामां एक दिवसमां यसे श्रीको मृखे करता हता लाग्या करता लाग्या पर्म चन्न होता लाग्या त्यार चन्ने करता लाग्या प्रमु चन्न होता लाग्या विसरी जता नहीना.

थरणेन्द्रनुं स्थाल्यान सांभळवा माटे ब्राह्मणना रूपे आवागमन

श्रीमङ्ग भारबाहमां मोटाकोट मरोटमां चोमाधुं रहेटा हता तेमनी देशना आत्मरकपनी हती. दरशेज ध्याख्यानमां सर्व दर्शनमा होकी आवना हता अने आत्मकान प्राप्त करता हता. तेमना ध्याख्यानमां एक युद्ध बाद्धण जेवो मतुष्प आवनी हती तेनी कोहने खबर पहती नहोती. श्रीमङ्ग महोपाष्याप यशोदिजयजी हत ज्ञानसारतं दरशेज ध्याख्यान करवामां आवर्षु हतुं. श्रीदेवधंदली महाराज तेवा आत्मजीना आत्माओमां ज्ञानस्त छटकाइ जनी हनी. वेदी व्हाजानी आत्माओमां ज्ञानस्त छटकाइ जनी हनी. वेदी व्हाज कादण वेमज व्यास्यान पूर्ण-भया बाद क्यां जती हती तेनी कोइने समजग पड़नी नहोती, एक वसते सत्रीप ते ब्राह्मण उपा-अपमां आत्यो अने श्रीमङ्ने बन्दना करी बेटो ते वखते अन्य साउओ पण जागता हना. वृद्ध बाह्मणे जणाव्युं के हुं धरेपेन्द्र छं. तमारी आत्मस्वरूपनी देशना में चार मास सुची सांभद्धी. आ बखते भरतक्षेत्रमां तीर्वकरनी पेटे आत्मस्यरू-. ग्यान्या ₹मे छो तेयी हुं चणो प्रसत थयो छं. धरणेन्द्रे भीमइने केंद्र मागवार्त कुष्ट स्वारे भीमरे कुष्टुं के अलंत ष्ट्र राजी नाम करनार अने अनंत सखने प्रयटावनार आत्माना गुजीरपोग तिना मारे अन्य कोड बस्तुनी चाहना रही नयी. धरोरेंद्र आर् सांभडीने तेमने धरपाद आध्यो, धरणेरेंद्र सर गाउँभीने योतानी प्रतीत यवा माटे पुकदम उत्तर वैकिय शरीर प्रतर करी दरगाइपं तेवी संत्रेनी आंखी अजाद गंड अने उपा-भवना भजवादे अजवादं यद गुपे. आयी सायुओने श्रीमर् दरभद्र महापुरुष हेर अने तेमनां यथन आगव्य हेर एपी निध्य पयो. महारमाओ देवनाओने आरायना नयी नी पण इश्नाभी देवनी पाने आवे हैंहे. अध्याख श्लानी महात्माओंमाँ जन ह प्रकारनी लिखिओ प्रकार हो तेमां मंद्र आध्यय नयी।

विष्ट दानि घड गो सामो.

ऑन्डर एक व्यवन पंजाप तरण विद्यार करना हता. परिनदी पारे यह जापनी सनी हती, परिनदी सीरी पृष्ठ नित्तु केहेता हती. यती वस्त्रन त्यां यह जनार मत्योंने में स्टार हती हती, ऑसड त्यां विद्यार करना अस्तर, तेमने केडलक सोडीलू बच्चा ती त्या तेनी बच्चा करना गरी। अने कहेवा द्यारपा के मारे सर्व जीवीनी साथे मैत्री भाव-पपो छे माटे भय नदी, तेओ ज्यां सिंह बेटो त्यां घड़-जवा द्यारपा. आं वसते साथे आवी प्रसंग देखी गृहस्पो पण आव्या हता. पेटा सिंह पासे श्रीमान् आवी पहोंच्या. श्रीम-इने देखी सिंह भाडा पाडी उच्चो अने श्रीमह्ती पासे आव्यो अने तेमना पर्ग पर्डी सामो उसी खो. श्रीम्हे वेने शांत क्याँ पर्छा ते चाल्यो गयो. पाछ्ळ आवनाता गृहस्पो तो आयुं देखी आश्चयं पाम्या अहिंद्यायां मिन-द्वारपो ती आयुं देखी आश्चयं पाम्या अहिंद्यायां मिन-द्वारपो ती आयुं देखी आश्चयं पाम्या अहिंद्यायां मिन-

जामनगरमां जैन देरासरनां नाळां नोट्यां.

एक बस्तत जामनगरमां मुसल्मानोटं साम्राज्य यद्यी गयुं
हुंद्रें. एक जैन देरासर हुतुं तेनी मृतियोने भें।यरामां संताहबामां आवी हुती, मुसल्मानोप् जयसह्यी तेनो करवते छेड़
मस्त्रीद सरीके वेनी द्यागा क्यां हुत्ते, केटटाव्य से गुध्यी
केनोप् आ मायत सहन करी छीची पण पाछं तेमहं और
ओछं बतां जेने हिन्ह राज्यदें जीर बच्चां जिनोप् राज्य
आगळ परिपाद करी, पण जैनोद्रे बंद्ध बज्दुं नहीं. बाह्यर्थ
अने अंतरयी ते जैन देरासर हुतुं पुत्र त्यांनी अहार वर्ण
कर्डुङ करती हुती पण चमरकार बिना नमस्कार पाय नहीं
पूर्वी रिपति पद्द पदी. पुत्रामां श्रीमद्द देवपन्द्रजी महाराज
विद्वार करता करता त्यां आवी पहोंच्या. तेमले राजानी समहा जैन देरासर सिद्ध करता मुस्ल कर्यों छेन्दे राजाए प्रो टराइ
कर्यों के देरासर सिद्ध करता मुस्ल कर्यों छेन्दे राजाए एची टराइ
कर्यों के देरासर सिद्ध करता मुस्ल कर्यों छेन्दे राजाए एची टराइ

मंभुना नामे प्रार्थना करी उवाडे अने उवडे तेने तेना के बंजी सीपनामां आनशे, जा प्रमाणे टसन करीने पकीरोने पहेंडी तंत्रं आपीं, फंकीरीएँ खुदांना नामे क्रुरान वांची प्रार्थना करी पण मूळ जैन देरासर हतुं वैयी ताळा चूट्यां नहीं. पछीयीं श्रीमद् देवचंद्रजीनो वारो आच्यो तेमणे जिनेन्द्र परमारमानी स्तित करीके तड़ाक देइने ताळां वृटीने हेठां पड़ियां पश्चात पंच श्रावकीए राजाने भीयर जे ग्राप्त हुत वे देखाइयें अने वेना द्वारनां ताळां पण जिनेन्द्र परमात्मांनी स्तुतियी नूटी गयां अने तेमांयी घणीं मूर्तियो नीकंळी ते पाँछी विधिपूर्वक देरासरमां स्थापन करवामां आवी श्रीमदुना चमत्कारी देखीने जामनगरनो राजा अने प्रजा खुश यह गृह अने जैन धर्मनी प्रंसंशा सर्वत्र प्रसरी. श्री कृपाचंद्रस्र रिजी वगेरे साखुओ अने रुद्ध श्रादकोना मुखयी आवी वात सांमळी हवी वे अत्र छखी है ज्ञानीच्यांनी महारमाओ स्वयं चमत्कार रूप छे. आरमानी अनंत शक्ति छे. आत्मानी जेओ उपासना करे छे वेओ परमारमांनी पेठे शक्तिओ फोरवी बतावे छे॥ अहो अनन्त-षीर्योऽप्रमात्माविश्वप्रकाशकः वैलोक्यंचालपत्पेव ध्पाम-शक्तिप्रभावतः॥ (ज्ञानार्णेव) अनंत वीर्षेक्प आत्मा 🕏 अने विश्वनी प्रकाशक छै. वे ध्यानशक्ति प्रभावे त्रण छोकने घटाववा शक्तिमान् छे.

सिद्धाचंलपर कागडा आवता येघ कर्पो.

श्रीमद् देवचन्द्रजी घणी वखत सर्व वीर्य हिरोमणि सि-दाघछ तीर्यनी यात्रा कह्या जना हता. सिद्धाचछमा वैमणे विद्दरमान विश्वी रवी हती. वेमणे सिद्धाचछनी अनेक यात्राओ

हैरी हुती. भागमनिणंद्यं मीतही. ए स्तर (VR) मिषाने सिद्धाचल आदीश्वर भगवान् आगळ दीपचंद्रजी महाराजनी साथे घणी यानाओ व मालना योगे सिद्धाचलतीर्यपर मागहाओ आव महाप्रभावक हता वैभी धारंतर झांतिनाव व बाजोर्ड वानागमन कंच करना हता. एके सेके प्रक महात्या जैन कोममां प्रगती भीकरे हैं धर्मनी प्रभारना बरे है. श्रीमः देवपःइजीना का बलपर कामहाओं आपना लाग्या हुना. तेनी क छने अन्य बोममां अनीष्ट्रमी भए सार्यो गरुव मतंग आवतानी होच हे, वा हुएकाट पहतानी होच तथा महारोग काडी नीकळराजी होय है। त्यार मध राज्यानी पहनी थवानी मर्सग आने हे त्यारे सिद्धाप बताहाओं आहे हैं. ले भाषीभार बनवानी होय हैन मित्त किन्ही प्रगट्या करे हो. ले बाहे ले कनशान हो त्या वरे हैं. अनिष्ट निमितीयी अनिष्ट पाप है. म मा माह मारामां विज्ञापुर पाते बरसोहा मामना क्षेत्र है। पर शिकानी यही अने मनिया पर पण शिकान पही है एक बातमां न्यांना टाकोर शओदाधी राज्यसम्मी ए पामा, आवा आनिहसच्य विस्तेनी होशी अर एक हैं निमित्तशास्त्र साथ पडे हे. क्षेत्र कोयम सिन्नाएकम् हणाः वाजीना आवागमनना उत्पादनी राजन के दे भेदा करानी हाति, आरोबानीनी परती बरेरे शक्ताओं धन रूपां स्टेस्ट् रेवर्षस्त्री स्वातज्ञ हात्का कथा क्षेत्रकना साम् Cov मां विद्यापत आजा. महेरा पर्यान केन सकी

विनंतियी तेमणे सिद्धाचछ पर्वतपर आदीश्वर मगवाननी इकमां शांतिलाय मणाश्चं अने पर्वतनी चारे तरफ शांति जलनी धारा देवरावी तेथी कागडाओ आवता बंच थया. तेथी जैन कोनमां आनंद शांति प्रसरी अने अनीष्ट उपदवनो नाश थयो. श्रीमद यशोविजयजीए तथा ज्ञानविमळप्रिए प्रसंगीपात अनेक चमत्कारो बताव्या छे. प्रसंग विना अग्रुक महात्सामां अग्रुक शांति छे वर्षानी वेटे खेळ करी बतावता नयी केमा आरमामां जे बंद सिद्धियो उत्पन्न थाय छे तेनी ते जोने पण मालुक पडती नयी परंतु प्रसंग प्राप्त धार छे रायो चेटी परंतु प्रसंग प्राप्त धार छे स्थारे तेओ पण जाणी शके छे.

तेमणे मारवाइमां संय जमण प्रसंगे गीतम स्वामिना ध्यान्यों एक हुजार आवको जमे देटला जमणमां आठ हुजार आवको जमे देटला जमणमां आठ हुजार आवकोने जमाइवानी मेत्रवास्त वापर्य हुनी. तेमने सिद्धांतोनो तीइण उपमोग हुतो. अनेक प्रकारनी अवधान वास्तिओ तेमनामां सीठी हुनी परंतु तेओ ते कोइनी आगळ प्रसंग विना जणावता बहोता. हालनो पेठे ते प्रसंगे महास्माओ अवधानोना खेलो करता नहीता. जिनोमां वा हिन्दुओमां जेटली अवधान कास्ति राशि छे तेटली पाझास्य छोतोमां सीटली नयी. तेओ प्रां पोमासी करता अगर प्रसारता व्या टोकोमां शांति प्रसरती हुनी तेमनामां वचन-सिद्ध प्रमनी हुनी. तेओ वैरी महत्योना सेन्तमं हुनमां उपरेश आर्या नाशिता. तेयी तेयो परवाळाओने तेओ पिम प्यह

परण हता. भीमह् पानित्रवानी ध्यास्माय अने भीमह् धानंत्रपत्रवी भागातानी आसामिक विश्वत भेतितं तैसने धानंत्रपत्रवी भागाता स्थाना आसिक अनुसारी सस्य हता देखी रात कंपास गेशी नार्यातानी प्रधान करानी हासि भाग पदा हता. तेसना प्रतिकता धारिक स्मक्षणी पत्रा नीत होता होत्य, एंस्पाना संग्रा धारिक स्मक्षणी पत्रा नीत होता होत्य, एंस्पाना संग्रा विता श्रुत्यक्ष अने धारिक धारीय स्थानानी नाथी, तेसन् अस्यास्तान पर स्य सामी प्रती आपन हास्य साने ते. तेओने सर्वनी मानि यह साटे हेमला आसीन सम्यक्षा धार्मी.

श्रीयत देवचाद यहाराज्यमा रचित घरवामा सार.

श्रीमह देहपादको उत्तरायादै आगमीशाँची सार्त्यामार सस्य हे ते प्रचाहचीग बरेशय हो तेनी कार आग देववित्र हम्योती एपना बर्ग हो, हम्याहचीनहान, अप्यानशान, शास्त्र हम अने विगायम त्री वेओना हम्योशाँची ग्यां रमां तीनधीं हरे हैं, तेमना हम्योश्यां त्रांश्यो गर्देश्य सरवशानधी छठ-हम्य ह्या हो वेमना हम्योश्या हम्यो पित्र आगमसाह, तप-प्रका अने विचारमार ए स्था हम्यो तो स्वात तर्द्यानामी सर्वे आगमोमां प्रवेश याय हे अने तर्वे आगमोनी सार पार्म शहरा हो, अनेनताननामरनो पार नदी परंतु वेमां प्रदेश पार मार्ट ए त्या हम्यो घ्या उपयोगी है, प्रभीतर नामनी हमनी हम्य गर्दरम अहमदानयी सहार हो वेसे मनतीय हमनी हम्य गर्दरम अहमदानयी सहार हो वेसे मनतीय हमनी हम्य गर्दरम अहमदानयी सहार हो वेसे मनतीय किया बवंतनी तकरारो सेवंची प्रश्न के उत्तर नयी हिंदी र्सर्व गर्छना जेनो माटे प्रश्लोत्तर बन्यनी उपयोगिता एक सराबी रीते सिद्ध ठरे छे. वांचको जो स्थिर चित्तयी प्रश्लोन त्तर अत्यनो अम्यास करने तो वेओ तस्वज्ञानमां उंडा उतरी शक्शे. अध्यातमञ्जानमां उंडा उतरवा माटे श्री ज्ञान-सार ग्रन्थ पर रुखेळी ज्ञानमंजरी टीका अपूर्व छे. आत्म-ज्ञान संपंची जैनोमां भगवर्गीतायी पण कोइ महान् सत्ययी भरेलो ग्रन्य होय तो जानसार ग्रन्थ छे वेना पर श्रीमदे टीका खीने पोताना अन्यात्मज्ञान संबंधी विचारोने जीवता मूती गुपा छे. अर्वाचीनकालमां ज्ञानसारनी महत्ता, उपयोगिता सर्वत्र प्रचार पामी छे. जैनोना सर्वे फीरकाओमां ज्ञानसार ग्रन्थ वंत्राय छे. अन्यात्मज्ञानीओवं ज्ञानसारग्रन्थ खरेखा आनन्दमय हृदय छे तेना पर टीका रचीने श्रीमदे ज्ञान-सारनी महत्तामां वृद्धिनो प्रकाश पाड्यो छे. श्रीमद् उपा-ध्याय द्विरोमणि यशोविजयजी उपारयायना छेल्लामां छेल्ली अत्याहम जीवनरसनी झरी जेमां बळा छे ते ग्रन्य खरेखर ज्ञानसार छे अने श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराजनी छेन्नी जांद-मीनो अध्यारम ज्ञानसानी जीवतो आरो जेमां वस्तो छे ते टीका खरेखर जानसार परनी जानमजर्फ टीका छे. पछी होमां अध्यारमानन्दरस मीटाश संबंधी शु पृष्ठवृत्रे, सर्वे फीर-धाना जैनो एकी अवाजे ज्ञानसार अने ज्ञानमंजरीनी सर्गची माटे माथु भूणावी प्रशंसा करी नाचे धरे है. संस्कृत भाषामां जानमंत्रती टीहा है तेमां शब्द पांडित्य करतां भाव चर्यो भरेलो है ते वाचकोने महेने समजारो. श्रीमद्रनी रचित घोतीचीमां झान अने मितनो 🖪 इनहाइ जाय छे.

वेमनी स्तरनोने दरेक गच्छयाळा मुरो करे छे अने प्रभुंनी प्रतिमा आगळ गाय हे. वीअमी सहीमां गच्छक्दाग्रहोतें ममन्य घीमे धीमे विटय धनुं जाय हे अने ले कोई गच्छनी मागमारी करें हे तेना तरफ जैनो दयानी लागणीयी देखे हैं. देवचन्द्र चोवीज्ञीनो जैनो अस्पात करे छे. तेमना सर्व प्रत्योनो अभ्यास करनार कोई पत्र मनुष्य पक्को जैन बनी क्षके छे अने ते गाटरीया प्रवाहमायी मुक्त थई ज्ञानप्रवाह तरफ ध्रेड छे. तेमना बन्योमां पट्टाय, नवनत्व, कर्मायारूपा, सातनय, सप्तभंगी, अनेकपञ्च, आगम व्याख्यान, आतंमतत्त्व-रबद्ध सरीरे सर्व यावनीनं विवेचन करवामां आय्यं है. एकंट दर रीते वडीए तो तेमना अन्थोमां ज्ञानयोग, कर्मयोग, मक्तियोग, उपासनायोग, बगेरे सर्व योगोतं स्वरूप आन्धं के अर्न सेथी तेमना ग्रन्थो खरेखर वाचकोपर सारी असर कर्पा विना रहेता नयी. वेओ सनातन जैन मार्गोपासक हता. तेमना रान्यो एकंटर रीतिए आगमो, प्रकरणो अने पूर्वान चार्योना ग्रन्थोने अनुसरीने रचायला छे वेया वेओ पूर्व परं-पराना मार्गे गति करीने जैनवर्ग प्रवर्तक हता. वेमणे जिने-श्वर प्रतिमाने १९५ चंद्राववाना पाटोने आगमना आधारे दर्शाच्या छे वैमां ख्वा यू छे के वेमणे मगजनी समतोलता खोड़ नयी. ठेमना बान्दोमां मञ्जला, स्नेहला अने आकर्षता छ तेमणे पोताना बन्धोमां असम्य शब्दो वगेरेयी कटोरता आवदा दीघी नयी. वेमना इदयमां हुं चारित्र हतुं वे वेमना ग्रन्थी बतावी आपे छे. वेमणे ग्रन्थो रचवामां पांडित्यनं अभिमान देखाय एवो एके शब्द वापर्यो नयी. टोकोने जैन-धर्मना तत्त्वोने केम साल रीवे बोघ थाय पूज दृष्टि, ध्यानमां

राखीने बन्धो छरूपा छे तेथी तेमां तेमणे शन्दलाहित्य पांडित्य के मौदता तरफ रुश्च ज दीचे नयी. जैनवर्मते तत्त्वज्ञान शुं छे तेनी दिशा देखवी होय वा तेनी झांखी करवी होय तो वेमना प्रन्थोनो ग्रुरुगम पूर्वक अम्यास करवानी जरुर-छै. देमना बनावेला विचारसार ग्रन्थमां आगमोमां आवेली सर्वे बावतोने अनुक्रमे गोटवी वर्णवी छे तेयी ते कर्मग्रन्थ वगेरेमां आवेळा विषयो उपरांत चणा विषयोयी भरपूर छे. पाकेळी केरीनो कोई रस काडी छे तेवी रीते तेमणे जैन-शास्त्रोमांयी रस काढीने आगमसार, नयचक्र, विचारसार वगेरे बन्धो रच्या छे. पहेला भागमां अने द्वितीय भागमां आवेला-ग्रन्थोने बाचको जो साद्यंत बांची जरो तो पछी अमारुं छखडुं व्याजमी छे एम गुणानुसमी सञ्जनोने बराबर समजारी-जैनचर्म तत्त्वज्ञानयी भरेला तेमना यन्योनी जेटली महाशा-करीए वेटली न्यून छे. वेमां एकंदर रीवे जैनशास्त्रोनो प्रायः घणी 'सार आवी गयी छे.

श्रीमद् देवचंद्रजीनी संस्कृत भाषा तथा गुजर भाषानी विद्यला.

श्रीमद् देवचंद्रजी महाराजे संस्कृत भाषामां अने युर्जर भाषामां जे ले बन्चो टरूपा छे तेपी तेमती भाषा विद्वता केदा प्रकार्ता हती तेनो वायकोने-विद्वानोने सहेजे रूपाठ आर्चा दाके तेम छे. बाळ जीत्रोने समजावता माटे तेमणे संस्कृत भाषामां बहु सर्द्धताप् ट्रस्ताण वर्स्य छे. जेम बने तेम भाषाना हिन्दुता, मीट्या हुत्वगाहता पत्रा दीची नपी-द्रस्यातुषीगना विषयमां सामान्य संस्कृत आषा आणनाराजी पण मा रेष्ट्र हाके तेवी प्रयान करेटी देखाय हो. हायान-धोराना द्रम्यो स्थामां एवांधार्योष् पण क्रिप्टना वापरी नथी तेची तेओना दन्योमां बाळ जीवोने पण सटेले परेश धड शके है तेथी तेमले इत्यानयोगना ग्रन्थोमां तेओनी शहीन अनुकृष कर्ष है. जानमंजरी टीका विचारतार टीकादिया तेमचे संस्कृत भाषामा कृत्यो स्वता माटे हासे प्रधा हासिः धतनीर्धनी प्रशांत करी जनकोमनी भारे सेवा उठावी छे. अने संरक्त साहित्यनी शदि करी छे. अहारमा सेकामां चएल वापक जिरोमणि गीतार्थ यशोविजयजी उपाव्याप तथा श्रीमात् विनय विजयजी उपाच्याय, श्रीमात् मानविजयजी खपारवाय, यगेरे संस्कृत भाषाना महान् पंडितोतं अगुकरण बरीने तेमणे यथाशक्ति प्रशत्ति करी हो. केटलाक आयुनिक संस्थान भाषालामनिवरोनो एवो मन हे के श्रीमद देवच-ब्द्रजी संस्कृत भाषाना माद्र विद्वान नहोता. अमी तेमना विधारोमां सुधारी एटटो मुकीए छीए फे-भीमरे द्रव्यातु-घोगना गद्दन विषयोने सादी संस्कृत भाषामां बालजीयोने समजाववा पर खास टक्ष्य दीधे छे तेथी तेओए प्रीट संस्कृत भाषा वापरी नयी, तेमज भाषाद्वारा जिल्ला देखाइका तरफ वेमनं बिटकुल टर्प नहीतं. आत्मजानिमहात्माओ भापाने शणगार सजाववा तरफ टस्य देता नयी, तेओ तो भाषा द्वारा हृदयनो आत्मिक भाव जणावे छे. कृतिमां अने जानीभक्तमां भाषाना शणगार परुवे तपावन रहा। यरे हे. कवि भाषाने शणगार सजावपानी उपासना करे हे अने जानी भावरसनी भोगी होतायी ते पोतानं वक्तरय सादी भागामां जणानी हाके छे. पोताना निचारीने बाळको पण रामले रांसीने प्रनेयो छल्या छे तेयी तेमां तेमणे शब्दलाहित्य पांडित्य के प्रीवता तरफ रुश ज दीवं नयी. जैनवर्षतं तस्वजान 🗓 छे तेनी दिशा देखवी होय वा तेनी झांखी करवी होय तो तेमना ग्रन्थोनो ग्ररुगम पूर्वक अम्यास करवानी जरुर छे. तेमना बनावेला विचारसार ग्रन्थमां आगमोमां आवेळी सर्वे बावतोने अनुक्रमे गोटवी वर्णवी छे तेयी ते कर्मग्रन्य वगेरेमां आवेला विषयो उपरांत घणा विषयोयी भरपूर छै। पाकेठी केरीनो कोई रस कार्टा है तेवी रीते तेमणे जैन-शास्त्रोमांयी रस कार्डाने आगमसार, नयचक्र, विचारसार वगेरे प्रन्यो रच्या छे. पहेला भागमां अने द्वितीय भागमां आवेला ग्रन्योंने वाचको जो साद्यंत वांची जरो तो पछी जमार्र टरापुं व्याजनी छे एम गुणानुसामी सज्जनोने बराबर समजारी जैनवर्षे तत्त्वज्ञानयां भरेला तेमना ग्रन्योनी जेटली प्रजाशा क्रीए वेडली न्यून छे. तेमां एकंटर रीते जैनशास्त्रोनो प्रायः धगो सार आवी गयो हो.

श्रीमर् देवचंद्रजीनी संस्कृत भाषा तथा गुजर भाषानी विदशी

श्रीमद् देवपंद्रची महाराजे संस्कृत भाषामां अने युर्जेर भाषामां ले ले ब्रन्थो छल्या छ तेथी तेमती मापा विद्वता केवा प्रकारती हुनी तेजी वायकोते-विद्वानीने सहैजे स्थाठ आरी दिरे तेम छे. बाळ जीवोन समगावता माटे तेमते संस्कृत भाषामां बहु संस्कृताष् द्रस्वाण बर्धु छे. जेम बने देव भाषानी द्विष्ट्रता, ब्रीट्रता तुत्वगाहृता यदा दीची नधी. द्वस्तद्वतीन्ता विषयमां सामान्य संस्कृत भाषा जाणनारामी

पण रस हेड जाके तेची प्रयत्न करेटी देखाय है. इत्याव-मोगना प्रयो रचवामां पर्वाचार्योषु पण क्रिप्टता वापरी नर्पा तेथा वेओना प्रन्थोमां बाळ जीवोने पण सटेले प्रदेश थड शके है तेयी तेमणे दृश्यानयोगना बन्योमां तेओनी शहीन अगुकरण कर्ष है. जानमंत्ररी टीका विचारता शंकादियाँ सेमणे संग्रत भाषामां बन्धो रच्या माटे झुभे यथा जातिह चतनीयंनी प्रशन करी जैनकोमनी भारे सेवा उठावी है, अने शंखन साहित्यनी पटि करी है. अटारमा सन्तामां धएल याचक शिरोमणि गीतार्थ यशोविजयजी उपाध्याय तथा श्रीमान् विनय विजयजी उपाध्याय, श्रीमान् मानविजयजी छपाच्याय, यगेरे संस्कृत भाषाना महान् पंडिनीतं अनुकरण करीने तेमणे मधाशक्ति प्रवृत्ति करी छै. केटलारु आयुनिक संस्कृत भाषाज्ञमृनिवरोनो एवो मन छे के श्रीमङ देवच-न्द्रजी संस्कृत भाषाना भीड विद्वान नहीता. अमी वेमना विचारोमां सधारो एउटो मुक्तीए छीए के-भीमरे इध्यानु-योगना गहन विषयोने सादी संस्कृत भाषामां बाटजीवोने समजाववा पर खास रुक्ष्य दीखे छे तेथी वेओए प्रीव संस्कृत भाषा धापरी नयी, तैमज भाषाद्वारा विद्वता देखाडवा तरफ तैमतं बिटकुछ टक्स नहोतं. आत्मज्ञानिमहारमाओ भाषाने शणगार राजाववा तरफ टक्ष्य देता नयी, तेओ तो भाषा द्वारा हृदयनो आस्मिक भाग जणावे छे. क्रीमां अने ज्ञानीभक्तमां भाषाना शणगार परुवे तपावन रहा। करे हे. कवि भाषाने शणगार सजाववानी उपासना करे छे अने जानी भाषसानी भौगी होवायी हे पोताई वक्तरय साही भाषामां जणानी शके छे- पोताना निचारीने बाळको पण रामजे

एवी सादी भाषामां अवताखा तरफ भक्तीवं स्वाभाविक स्थ्य रहे छे. श्रीमद् देवचंद्र महाराज ज्ञानी मक्त हता, वेयी तेमनी पासेयी संस्कृत मीड भाषामां केटलाक आद्युनिक विद्रान नोनी दृष्टि प्रमाणे बनेहा युन्योनी आञा सस्ति शकाप नहीं ते बनवा योग्य छे. तेमना बन्योने पाछळर्या जीववामां नहीं आवेला होवायी तथा अशुद्धिमां वृद्धि करनार लहिया ओ पासे छखावेहा होवायी तेनी शुद्धि करवामां प्रयास पडे ते स्त्रामाविक छे अने तेत्रो प्रयास यतां पण जे जे अछ-द्विओ रही होय ते बीजी वस्तते मुचारीने छपाववानी जरुर छै. संस्कृत भाषाना ग्रन्थोनी पेठे तेमणे प्राकृत भाषामां पण विचारसारादि ग्रन्थो रच्या छे. तेमनी प्राकृत भाषा पण सरल अने सगम अववीचाया पर्छा वाचको अनुभव करतां सहेजे समजी शकरो. संस्कृत अने प्राकृतनी पेठे गुर्जर मा-षामां वेमणे बन्धो रच्या छे. गुर्जर भाषापर वेमनो सारो काबु हतो. द्रव्यानुयोगना गहन विषयोने वेमणे चोनीशी, वीशी वगेरे पद्य अन्थोमां सारी रीते गुंध्या छे के जे वि-षयो पहेलां गुर्जर भाषामां कोइए गुंध्या नहोता. श्रीमदे चौवीशीपर जाते ट्यो भर्यों छे अने तेया तेमणे जैनकोम पर दृश्यातुयोगना ज्ञाननो सरलतायी लाभ आपवा माटे घणो उप-कार करों हे. गति करतां स्खलन थाय ए स्वाभाविक नि-यम छे. ते न्याये श्रीमङ्ना संस्कृत बन्योमां भाषा दोष रही गयो होय तो वैमना आज्ञयो अने उपकारोने ध्यानमां लेड विद्वानो क्षंतच्य गणे एमां कंड आर्थ्यं नयी. दोष दृष्टियी जोतां ज्यां त्यां दोषो देखाय छे अने गुणदृष्टियी देखतां ज्यां त्यां ग्रुणो नजरे आवे छे. सज्जनो ग्रुणोने देखे

छै. ज्ञानियोनी प्रवृत्ति खरेखर सज्जनोना टाभार्षे होय छे ते प्रमाणे श्रीमङ्गी युन्य स्थनानी प्रशत्तिपर टक्स्य राखीने तेमनी भाषा विद्वता संबंधी स्ट्रम धारवं जोडए. आत्मार्थीओ स्त्राभाविक धर्म पर लक्ष्य राखे छे. श्रीमदे गु-र्जर भाषामां गद्यपद्य ग्रन्यो स्वीने भाषा ज्ञाननी विद्वतानी पण महत्ता खरेखर जनसमाज आगळ बनावी आपी हो. याचको भाषानी दृष्टिए पण तेओना ग्रन्थोमांयी धणी साभ उदावी शक्शे. संस्कृत, माकृत अने ग्रर्जरभाषामां रचापटा तेओना बन्धोमांकी सज्जनो घणो लाभ उठावी शकरी. संस्कृत प्राकृत अने गुजरभाषामां ग्रन्थो स्वीने विश्वनी भापा साहित्यनी एडि करवामां पोतानी सरफयी तेमणे सारी फाळी आप्यो छे, तेयी तेमनी सेवा महत्ति तरफ माननी सागणीयी जैनेतर कोम पण देखे पुमां कंड आधर्ष नयी अने जैनो तेमने पूज्य उपकार दृष्टियी देखे अने म-ध्यस्य मनुष्यो तथा जिज्ञामओ तेमना ब्रन्योमांथी धणो सार खेंची शके ए बनवा योग्य छे.

श्रीमद् देवचंद्रजीनी कवित्वशक्ति.

श्रीमद्रे कवित्वहासिन्नो भस्तिमां व्यय कर्यो छे. भस्त होको कवित्वहासिन्ने भस्तिना रूपमां परिणमाने छे. तेओ अनेक रुपकोषी प्रमुद्धं वर्णन करे छे. श्रीमद्रे उपमालेकारोने प्रभुमसिन्ना रुपकोमां परिणमाव्या छे. वेगणे आज्यारिमक दृष्टिए मेघने प्रभुनी रुपकथस्तिमां परिणमाव्यो छे वे नीचे । भुजव-

श्रीनमिजिनवर सेव, धनायन उनम्यो रे ॥ घ० ॥ दीटां सिध्या रीख, भविक चित्तयी गम्यो रे ॥ भ० ॥

शुचि आचरणा रीति ते. अप्र बच्चे बडां रे ॥ अ० ॥ आंतम परिणति शहर ते बीज हात्रकडा रे ॥ यी० ॥१॥ वाजे वायः सवायः ते पावन भावना रे ॥ पा० ॥ इन्द्र धनुष्य त्रिकयोग, ते भक्ति एकमना रे ॥ भ० ॥ निर्मल प्रमुस्तव घोष, ज्युं व्यनि धन गर्जनारे॥ व्य०॥ तृष्णा ग्रीप्मकाल, ते तापनी तर्जना रे॥ ता०॥२॥ शुभ लेश्यानी आछि, ते वग पंकति बनी रे ॥ व० ॥ श्रेणि सरोवर हंस, वसे शुचि ग्रणमुनि रे ॥ व० ॥ चउगति मारग बन्ध, भविक निजयर रह्या रे ॥ भ० ॥ चेतन समता संग, रंगमें उमह्या है॥ रं० ॥३॥ सम्यग्दष्टि मोर, तिहां हरखे घणुं रे ॥ ति० ॥ देखी अङ्गत रूप, परम जिनवरतणुं रे ॥ प० ॥ प्रभु गुणनो उपदेश, ते जलवारा वहीं रे ॥ ज० ॥ धर्मरुचि चित्त मुमि, मांहे निश्चल रही रे ॥ मां॰ ॥४॥ चातक श्रमण सपूह, करे तब पारणो रे ॥ क० ॥ अनुभव रस आस्वाद, सकल द्वःख वारणी रे ॥ स० ॥ अञ्चमाचार निवारण, तुण अंक्रुरता रे ॥ तुण०॥ विरतितणा परिणाम, ते बीजनी पूरता रे ॥ बी० ॥५॥ पञ्च महात्रत धान्य-तर्णा कर्षण वच्यां रे II त० II साव्यभाव निज थापी, सावनताषु सव्यां रे ॥ सा० ॥ क्षायिक दर्शन ज्ञान, चरण ग्रण उपन्या रे ॥ च० ॥ आदिक बहुगुण शस्य, आतम घर नीपना रे ॥ आ० ॥६॥ प्रमु वर्शन महामेह-तणे प्रवेशमें रे॥ ता०॥ ्परमानन्द अभन्न, थयो सज न्देशमें रे ॥ थ० ॥

देवचन्द्र जिनचन्द्र-तणो अनुभव करो रे ॥ त० ॥ सादि अनन्तोकाट, जातम सख अनुसरी है ॥ आ० ॥७॥ श्रीमदुनी उपमा आपवानी आच्यात्मिक काव्यशक्ति वर्ष ारत है. बाह्य भावीने आव्यात्मिक रूपमां गोटवीने जन-माजने दे तरफ वाळवा देमणे काव्यशक्तिनो धर्ममार्गमां हिपपोग कर्पे छे. श्रीमङ् यञोत्रिजयजी उपान्याय, श्रीमङ् वनपविजयजी उपारपाय यगेरेनी कारपशक्ति अर्थत प्रशस्य श्रीमद्रे पण आलंकारिक काव्यशक्तिनो आव्यारिमक भाष गट करी दर्शाय्यो है. तेमनी इत्यात्रयोगनो विषय होतायी गहंकारिक काःयशक्तिनो घणो उपयोग धपुरो जणानो नयी, ोपण जैन समाज आगळ भक्ति स्ववनरुपे जेटटी प्रसादी कि तेयी पूर्ण संतोप मधी शके तेम है. तेमणे आ तवनमां हार्दिक विषयने सारी रीते घटावीने अध्यारमजाननी काश कर्यों है। माटे वेमनी जेटडी स्तरना करीय तेटडी युन हो, श्रीमद् देवधन्द्रजीना आत्मामां गुणोनी समिक्ष-हाळ थयो हतो वे तेमणे सहजोड़ास्या आ स्तवनमां जणात्री

अप्रमत् दशास्य हुतुं वे तेमना आप्याध्यिक आवदी स्पष्ट गणाय हो. ते समयनी अने शासना समयनी परिस्थिनियो विवेश.

चि छे. भीमद् दरपात्रयोगना सर्व विषयोमां कशल हता. प्राप्ता अने परमात्माना गृणोमां आस्पात्मिक रूपशेनी प्रस्तामां परिणाम पामता हता अने वेदी आन्तर सङ्गीवन

भीमर् देवपंद्र महागावना समयमां विननस्वकाल प्रचा-नी स्पनता हती. यतियोगां विताय स्थानमां शिवस्य प्रचार 🛷 🚗

पागतुं 'हतुं. संवेगी साघुओं पण श्रीपूज्य आचारोंनी आज्ञा प्रमाणे चोमासुं करवं वगेरे प्रवृत्ति करीने तेमनी आज्ञामां रहेता हता. वे समयमां ज्ञान मार्ग करतां किया मार्गमां गाडरीया प्रवाहन्ते ज्यां त्यां जैनोमां प्रावान्य प्रवर्ततं हतुं. अन्यारमज्ञान, तत्त्वज्ञान जेवा विषयोगां सावुओ पण विशेष ज्ञानी नहोता तथा बहु जन सम्मत केटलक आचार्यो वगेरेने जैनो जेटला प्रमाणमां मानता हता वेटला प्रमाणमां श्रीमद् देवचंद्रजीने ओळखवा माटे जैनो लायक नहोता. खातर गच्छना आचार्यो, यतियो वगेरेनी साथे श्रीमद् देव-चंद्रजीनी विचार मान्यता मळती आवती होय तेम सर्वोरो जणातुं नयी, छतां वेओ उदार विचाराचारयी स्वपरगच्छीय सायुओनी साथे वर्तता हता. वेओ श्वेत वस्त्रवारी हता. वे जमानाना ते सुधारक संवेगी पश्ची सांधुओने उत्तेजन आप-नारा हता. सर्व जैनोमां अत्रयनु वातावरण फेलाववा तैमणे पपाशक्ति प्रयत्न कर्यें हतो. परस्पर गच्छोनी क्रियामत मेदोपी जपन यती बलेशनी उदीरणाने शमायनार हता. जैनोमां अनेक मनमेदयी धना क्षेत्रोयी जैनोनी पड़ती घाप है. पनी दीर्घ दृष्टिया तेमणे पोताना उद्गारो प्रगट कर्या है. धीमद् देवर्षद्र महाराजना समय करनां हाउना समय कंड विदीप सारी नया. वे वस्तनना तेमणे कादेला उहारी हालनी सरीने पण राणु पडे छे, छनां हाल आयुवायुना शुभ म-गतियद संयोगो घणा अनुकुछ छे, फक्त ते प्रमाणे वर्ता-नाग मुनियो विरोप प्रमाणमां प्रगटनानी जरुर हो. श्रीमर् देशचंद्र महागुत्रे पोताना द्रन्योमां अमुक राग्तर गर्छन। आचार्यना साजाम्यमां इन्यो सहया ए७ स्टाउं नवा तेयी

तेओ ते क्लतना स्वस्तर गच्छीप पट्टधर आचार्ष सावे पूर्ण संबंधी हता के नहीं ते विचारता योग्य छे. तेमणे आत्मानो शांन रस अतुमन्यो हतो, धर्मप्रश्चित वाळा अने संसारमश्चित्या विरुद्ध होचायी तेओ निश्चित मार्गना योगी हता. तेमना पण विरोधीओ हता छतां पण वेमना उत्तम विचारो जिनसमाजमां जल्दी प्रसर्पो हता.

श्रीमान् देवर्थंद्रजी महाराजना ग्रन्थो परथी अने तेमना जीवनपरथी ग्रहवा योग्य शिक्षण.

श्रीमद् देवचन्द्र महाराजना यन्यो अने वेमना धरित्र धरवी प्रत्येक मनुष्ये शिक्षण बहण कर्ख जोडप, एज आ क्षेरवनो मुळ उद्देश छे. वेमना ग्रन्थो अने चरित्र परयी आस्पारिमक शक्तियो सीडववानी जरुर छे. समानभाव अने प्तस्वज्ञाननी प्राप्ति करवा माटे वेमनुं जीवन घणुं उपयोगी है, जैन कोमें आत्मज्ञान तरफ वळवं जोडए अने व्यक्ति स्थातंत्र्य तथा संवस्त्रातंत्र्य प्रमट करवुं जोड्णू अध्यारम ज्ञाननी प्राप्ति विना विशाल विचारो अने मतसहिष्णता प्रा-टवानी नयी. वेमनी पेटे व्यवहारनयतुं अवलंबन यही प्रव-त्तिधर्म पाने सेवाधर्म खीकारी कर्मयोगी बनवं जोहरू, धावि-काओनी मगति करनार घार्मिक केळवणीनो प्रचार करवो जोडए. जड कियाबादी अने शुष्टकानी न बनवुं जोडए. तेमनी पेटे पूर्व पुरुपोना विचाराचारोने मान आपी वर्तवं जोइए अने हैं, असन्य टामे वेनो त्याग करवो जोडए पण कदाग्रही न वनवुं जोड्ए. कर्मपोग अने ज्ञानपोग ए ब्रोने रवीकारी रयाद्वादी बनवं जोड्रए. साजुओए अने सान्वीओए वीशमी

सदीमां तेमनी पेठे प्रगति कर्खा जोडए. गच्छना नामे नकामा **छ्टेशनी** .जदीरणा करनारा विवादो अने झवडाओ करीने जैन कोमनी शक्तियोनो नाश न करवो जोइए. तेमनी पेठे उग्रविहारी बनवं जोइए. अन्य गच्छीयोनी साथे मैत्री, प्रमोद, माध्यस्य बगेरे मादनाओने आचारमां मुद्धी वर्तवं जोइए. ज्ञानरुवि धारण करीने गाडरिया प्रवाहमां तणाता बंध थयुं जोइए. मिन्न मिन्न गच्छीप साञ्जोमां परस्पर गच्छिक्तपादि मतमेद छतां जैन कोमनां सार्वजनिक प्रगतिकर कार्योमां ऐक्य धारण करवं जोइए. समदृष्टिनी साथे परस्पर समद्तीं बनदुं जोइए. गमे **है** गच्छना साथु पासेयी ज्ञान बहुण करबुं अने सस्य है ते मारुं एवी निधय करी प्रवनवं जोडए. सर्व गण्छना सायुओनो संघ एक स्थाने मेगो करीने जैन कोमनी अग्निना रहे एवा उपायो हस्तमां धरवा ओइए. आंतरजीवन विक्सायरामां आत्मभोग आपरातुं ज्ञिक्षण बहुषुं जोइए. तैमनी पेटे वस्ता, छेराक अने ज्ञानी बनयुं जोड्रए. जैन कोमना कोड पण फिरकानी निन्दा न करवी ओड्रप अने • सर्व फिरकाओनी साथे मैत्रीभाव धारण करी मखती यापनीमां पुरुष धार्ग कर्नंग्य कार्षों करना जोडण, हवे तो ग्रहस्य जैनीए दृष्टिगमनी स्याम कराने जैनोनी संख्या यदे अने धर्मनी फेटावी थाय तेवा उपायोमां भोग आपनी जोट्यू जैन तन्त्रज्ञाननी फेलावी थाय एम उपायी हैदानों समय जो चुक्रामां आवशे तो जैन कोमनी अस्ति-रामां हरकत आजानी संग्रा है, मारे सक्त संगे समयनी स्मित आंध्र मंयोगीने अनुहुछ क्षा हैता औद्यु.

उपसंहार.

उपर प्रमाणे श्रीमद् देवधन्द्रजी उपाच्यायना ग्रन्थो अने तेमना घरित संबंधी यनुर्विजित् प्रस्तावना ययाशक्ति जैन समाज आगळ रज करीने जैन संबनी सेवा करतां छद्यस्य दृष्टिभी जे कंड दोप बगेरे थया होय तेनी जैन संघ आगळ क्षमा पाषुं छं. मिष्या हुप्कृत दउं छं. जैन संघमी सेवा करतां जे कंड श्खटन थाय ते जैन संघे क्षमत्रं जोडए. छेखक तपागच्छीय होवा छतां आत्मभावे-जैनवर्म समान भावे भीमद् देवचन्द्रजीना यन्थोनी प्रस्तावना लखी छे. गमे ते गच्छनी मनुष्य पोते जैन होवायी जैनवर्मनी समान भावे आराधना करीने मुक्तिपद पामे छे. डाळां, पांखडां, पतरांने बळगवाना जदा जदा मतमेदोमां मन्यस्थ बनी वृक्षमां बदेता सजीवनरस भणी टक्ष्य आपवानी जरुर छै. सर्व जैनोना हरपमां जनदेव एक छे तो पछी मेदभावयी क्षेत्रा करवानी कंड जरुर नयी. छेखकने (म्हने बुद्धिसागरने) व्यवहारयी मपागच्छीयमान्यतानी श्रद्धा छे अने तपागच्छनी समाचारी मान्य छे परंतु तेथी अन्य गच्छोनी समाचारी पर द्वेप नयी. हुं भारी तपागच्छनी साबु क्रियादिनी समाचारीमां व्यवहारे वर्ती अने निधयनपर्या समभावे शद्धारममां रमी एकावतायी ठीनता पामी मोक्ष पामं तेम अन्य गच्छीय जैनो पण तेमना गच्छनी समाचारीने मननी एकावता, छीनता करवा साथै निश्चपनपयी समगाचे रमे तो मोश पामे एवी मारी सापेशनययुक्त मान्यता हे. जनागमो, प्रकरणो, पूर्वाचार्योना प्रन्यो, परंपरा अने समाचारी वगेरेमां सापेक्षपणे म्हने पूर्ण श्रद्धा है. असं-

रूपयोगो खरेखर मुक्ति पामवाने माटे हेतुओ छे. सापेक्षपणे गमे ते योगनी आराधना करतां मुक्ति छे पूर्वी मारी श्रदा छे अने ए प्रमाणे उपदेश छे, हेखकने सम्यगृहष्टियी जैनागमी अने मिध्याशास्त्रो, सम्यक्तवरूपे परिणमे छे एवी नन्दिसूवनी मान्यता प्रमाणे विचारप्रवृत्ति छे. जैनागमोतं ज्ञान प्राप्त करीने व्यवहारनययी वर्तवामां आवे अने निश्चयने हृदयमां चारवामां आवे तोज मुक्तिनी प्राप्ति थाय छे पुत्रो उपदेश सत्य छे. व्यवहारनयनो उच्छेद करतां जैन संब अने धर्मनी उच्छेद यशे माटे कोइए धर्म व्यवहारनी उत्थापना न करवी जोइए. साव्यविद्व स्थ्यमां राखीने सापेक्षपणे साधनीवदे धर्मनी आ-रायना करवी जोड्ए. श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराजना ग्रन्थो सुधारता घणी शुद्ध मतियो मळी नयी. विचारसार माटे तो मीजी प्रतियो मळो नयी, तेयी हजी तेमां घणी अगुद्धिओ रही गड़ छे ते साधन सामग्री मळनां बीजी आश्तिमां सुवारी करी शकाशे, यथा शक्ति मुलोने सुधारता प्रयत्न कर्षे छे, छतां जे कंड स्वलना रही गड़ होय तेने अन्य पंडिती प्रसं-गोपात सुधारके एवं। प्रार्थना छे. जैन बन्धो खरेखर जैन मंथनी मील्कन छे वेमां गुधारम क्यासक्ति में भाग लीघी छे अने अन्य सञ्जनो पण सुधारवा भाग हेरो पूर्वी पार्यना छे. श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराजना पुग्नको छपापवामां पादरा-वासी सञ्जावक बहाउ मोहनदाल हिमचंदे तनमनधनवी प्रयन्न क्यों है, तेमणे सर्व बन्यों मेगा कत्यामां अनेक पत्री छल्या, तया अनेक स्वटे गमन करी अनेक महाशयो पासेयी ग्रन्थी मेळच्या, भंदारोना माठीकी पासे जाने जद बन्यो मेळच्या, अनेक सुनियों अने आक्को साथे प्रक्रवाहार क्याँ, भीमाउँ

जीवनधरित शोधवा तेमणे साधुओ सान्वीओ पर अनेक प्रयो टरपा. श्रीमद्दना ग्रन्थो छपाववामां छ सात वर्ष ग्राची अखंड अथाग प्रयन्न सेच्यो वेयी वेमने धर्मेटाभपूर्वक अनेकशः धन्यवाद आपत्रामां आये छे. श्रीमद्ना बत्ने भागी छपावीने तेमणे जनशासननी अने जैनोनी सारी सेवा बजावी छे. श्रीमक देवचन्द्र महाराजना को भागो छपात्रवामां मुख्यताप् तेमनी भाग छे एम जैन कोमने जणाववा माटे ये शब्दो अब स्तववामां आच्या हो. डट्रेलाना उपाध्ययमांयी श्रीमद् देवचन्द्र-र्जानां प्रग्नकोने काढी आपनार झवेरी भोगीलाल ताराचंदने धन्यवाद घटे छे. बालुचर (मुर्शिदाबाद निवासी) झवेरी अमरचन्द्रजी बोधराषु श्रीमद्दनां पुस्तकोनी यादी आपवामां तया अन्य प्रस्तको मोकडी आपवामां घणी साहाय्य करी छे. पादरा निवासी सुधावक माणेकटाट, तथा प्रेमचंदभाइ तथा भंगरभाइ स्थ्नीचंद वगेरेषु पुस्तको छपाववामां साहाय्य करी हैं मारे तेओने धन्यवाद घटे हैं. प्रवर्तक कान्तिविजयजी पं. लाभविजयजी पं. दानविजयजी वगेरेने पुस्तको आपवा भाटे घन्यवाद घटे छे. श्रीमङ्ना ग्रन्थो जैन संघना कल्पाण माटे थाओ, एम इच्छी प्रस्तावना समाप्त करवामां आवे छे. अहै ॐ शान्तिः मु. पादरा-नवचरी जैन उपाश्रय ज्ञानमंदिर. संवत् १९७५ आधिन शुक्क द्वितीया.

तपागर्काप सागरज्ञामीय जैनाचार्य बुद्धिसागरमृरिणा प्रमावना लिलिमाः



जैनाचार्य सीमा पश्चिमागरसंदि ग्रन्थमाळामां प्रकट

	धयेला प्रत्यो तथा तेमना अन्यन्त		
	घन्धानी यादी.		
		पृष्ट संख्या	किंम
١	भग्न संग्रह भाग १ स्रो	200	٥-
1	क अस्पानम स्यारुपानमाला	२०६	o
₹	भजन संबद्ध भाग २ जो	355	-0
Ę	भजन संदद्ध भाग ३ जो	219	0-
Å	समाधिशनक (अमराबादबाळा शेड जगाम	าร์	
	दहप्तभा	o8\$()	۰- ۱
۹	জন্তুমৰ पথিন্তী	286	•
Ę	आत्मप्रदीप	३१५	o- '
Ÿ	भजन संद्रह भाग ४ थी	Bog	0- (

७ भजन संद्रह भाग ४ थो

८ परमारम दर्शन ४३२ 0-3 ९ परमान्म ज्योति 400 0-9 १० तस्यविन्द 230

२४ ११ ग्रुणानुरागकुलक विवेचन (आ. २) -१२ भजन संग्रह भाग ५ मो 280 0 ... १६ हीर्ययात्रातं विमान (आ. २) 88

१५ गुरु बीच १६ सन्दर्शानदीपिका 228 0-१७ गदंखीसंबह ? ? ? 0-

१८ झाउक धर्मस्यद्भप भाग १ हो (आ. ३) ४० 0- 1 १९ भावक घर्मस्वरूप भाग २ जो (आ. ३) ४० 0-२० भजनपरसंग्रह भाग ६ हो 205 0-9:

0-280. १४ अस्पारम अजन संग्रह 803 0- 1

२१ वचनाएत (एछ) वकील मोहनूलाल				
् हिमचंद तरफयी मेट				
२२ वचनामृत (मोडं)	306	0-68		
२३ योगदीपक	२६८	0-18		
२४ जैन ऐतिहासिक रासमाळा	800	?-0		
२५ आनन्द्रधनपद भावार्यसंब्रह	606	२−०		
२६ अध्यातमशान्ति (आ. २)	१३२	o- \$		
२७ भजनपर काष्यसंग्रह भाग ७ मी	145	0-6		
२८ जैनगर्मनी प्रामीन अने अर्शाचीन स्थिति	96	o- 3		
२९ वसाग्यान गरित (हिम्दी)	२८७	o- \$		
₹०-₹४ सुरुवागर गुरु गीता श्री मपासागरजी				
चरित्र भी नेमिसागरजी चरित्र. स्टि				
सागम्त्री थ॰ सुग्रसागरती च॰	300	o- 8		
३५ वरहायदिचार (हिनीयाइसि) विकील में) . `			
हि. पादरा]		0- ¥		
३६ विजापुर वृत्तांत	90	0-8		
३७ गानमंत्री काग्य (गुजाती)	294	0- 4		
६८ प्रतिज्ञासायन	330	0- 4		
३९-४०-४१ जैनगण्डमतप्रकंत स्थमगतिः				
वैनगीता.	419	1-0		
४२ जैन धानुप्रतिमा केलगंग्रह	\$2¥	1- 0		
४३ निर्वार्थों '	848	<		
४४ दिल्योपनियद्	40	o- 3		
४५ दिनोपनिषद्	8=	o <		
४६-४३ धार्तिक राज्यम्यह नवा वयगण्योग				
भाग रे सी	९७ इ	3-0		
	4.8	Ē>		

?५-वर्तमानकाल सुधारो (भजन भाग त्रीजामां लपायो छे) १६ परमत्रक्ष निराक्तण (भजनसंग्रह भाग ४ मां) १७ बुह्मिमकात्र गायनसंग्रह भाग १ लो (भणिलाल वाडीलाल सार्णद) १८ बट्टिमकात्र गायन संग्रह भाग २ जो (अमदावाद संभव

. जिन मेडळ) १९ श्रीमन्त सरकार संपाजीराव गायकवाडनी आगळ आपेछे भाषण. २० आनन्दमीक्तिक प्रस्तावना (शुंजप रासनी प्रस्तावना)

[सु. दे. छा. फं. पु. उ.] २१. पोडशक मकरणनी मस्तावना (देवचंद छा. पुस्तोखार फंड). २२. गुडशका करणनी मस्तावना (देवचंद छा. पुस्तोखार फंड).

२२ ग्रुहगीता (संस्कृत) [उपाइ गइ छे.] २३ श्रीमद् देवधन्द्र प्रस्तावना (श्रीमद् देवधन्द्र पीजा भागमां) २४ घोवीशी (साणंद बुद्धिसागर समाज)

२४ चोवीची (साणंद बुद्धिसागर समाज) २५ अन्पारमगीताः २६ (आत्मस्वरुपः (बिजापुर भं.)

२७ तस्वपरीक्षा विचार. - नहीं खपायला. २८ ग्रुरु माहारम्य (अम्शवाद आंग्रडीपोळ ज्ञानभंडारमां)) उपरमा ग्रन्थां मळवानां टेकाणाः—

पारता-चक्रील भोहनलाल हिमचंदभाइ मुंबाइ-अन्यात्मज्ञानप्रसास्त मंडळ. चंपागली हा. शेठ रूल्खभाई कामचंद रहाल.

टल्लुभाई करमपंद दट " मेचर्जा हीरजी चुकसेटर-पाष्युनी पुना—रोठ बीरपदभाद कृष्णाजी

विज्ञापुर (गुजरान)-जैन मित्रमंडळ हा. शा. मोहनभाइ जेशींगभाइ.

सामंद (गुजरान)-ताः आत्माराम सेमचंद

र देवपाट प्रथम भाग 1095 3-0 + क्रदेशेश 2012 2-0 t जाम्बन**्यदर्शन** 112 o- c ६ भारतगहबरादिशय tec outs धामह देवपाट भाग नाती 7200 2- C र वर्षप्रकृति (भाषांतर उपाय है) S CHICK भाषत् पुरस्मागागृहितृत अन्यत्र छत्रायतां प्रमुक्ते. भी रावगामध्यी परित्र अने शोबर्यनाशक द्वन्य (प्रतेशम वंशकतात सावपद, मामानापीत्र) ् नात्रवार्तानाम धारा (ग्रामार्गा) समाधिश रहना नेगी वंगापी हे े आग्यरानि संक्षा (संस्थान एक स्रोक्त १८२) आग्यरांप देती तपापी है ८ झानदापिका (ग्रजाती) भजनसंदह पांचमा भाग मेगी बरायों है-उपायों है. ६ प्रजासदह (अहमकार्ध अने पारतक पूजा) सार्पद—प्रदिसागर REIM. 0-3-0 ्रभा पशोविश्रय निक्व (साहित्य परिपन-प्रहोदय) ००४-० ध्यानावधार (भावनगर-अग्रमानन्द सभा) ं जैन धर्म अने स्मीलि धर्मनी मुकाबटी (भी जैन बेल्ड्डी सोमाहटी भवाड) (विनामणि (साण्य) । बन्पाविक्रम निषेध (साणंद) तस्यविचार } ज्ञानमसारक मंडळ. मुंबाई-झरेरी बजार. । आत्मद्रकाश (द्रायसात्राष्ट्रा दोठ वीरधंदभाइ कृष्याजी) नेट

। पेननहास्ति (भजन भाग बीजामां उपायो छे)

मळे हेरे.

विचारसारग्रन्थस्य.

सुणा । १ । सुणस्थानानि नृतःमुचनातसुनमितिन्यायातपुरेकदेशेन परसम्बरायोपचारादा इहेवं गुणस्यानकनिर्देशोद्रष्ट्यः १ तथायंमिन **ष्यादृष्टिगुणस्थानं, २** सास्त्रादननम्यकृदृष्टिगुणस्थानं, ३ सम्पण्-मिथ्यादाष्ट्रिगुणस्थानं, ४ अविग्नसम्यगृदृष्ट्रिगुणस्थानं, ५ देश-निरतिगुणस्थानं, ६ प्रमत्तसंयनगुणस्थानं, ७ अप्रमतसंयनगुन षरथानं, ८ अपूर्वकरणगुणस्थानं, ९ अनिम्तिचादरसंपरापगुण-रथानं, १० स्थमसंपरायगुणस्थानं, ११ उपशानकपाणीतरागः छद्रस्यगुणस्थानं, १२ शीण ह्याय तिनगरु ग्रह्मगुणस्थान, १३ सयोगि हेपछिगुणस्थानं १४ अधोगि हेपछिगुणस्थानं, त्रयगुणाः अस्त (संनावारि)(क्या जीवरवभा स्विज्ञेषा - स्वानेपनस्वतेषागुकागुः-विषक्षेत्रतः स्थापनेसः विद्वत्यस्मिनगुणाङ्गतिकृत्यागुणानांस्थाने-प्रायस्थानं, मिध्या विषयेनतार्वाष्ट्रांत्रपणीनजीवात्रावादिवनत्वपतिष-ि १ देश्य मद्भितदालुरणुरुषस्य सितेषात्रश्रातिषानिष्यत् ता मिट्याद्वपिरतस्य જ્યાન્યાને સાનાદિમુળાનામાં સમજિય દર્પવિસ્થાય હવે હતા. દરમ્પાફિન દેવા (શ્રુપાર્શકૃષ્ણભાન, નનશિષ્યારણિસ દવસભાદનાને સંવનિ મૌ લાલવામાં મામના નાનાવ્યત્તર પશુમાં વાલવિવૃત્તિમગ્રામાં યુન્યાયાન जो र बचमका १० पदानमः वर इजी अमेरी जाम जर हरस अमेरीने and નિષ્યા હા કે નોલ્યક્ક પ્રક્રાળ મેળાવ આ નાઈઓ નોળના દો નન 20 કન જણ શાર્તાનું જ બનાહ સમૃતનામ કરક તોનુ જાર છેને જીવન દેશન द्वता कर्त प्रवाहर हिंदी है। इस कर्य जाताया, सप्पांत, प्रात्माय क्रिक् दिसम्बन्धंरकम्यकारकमालः इनस्य मुद्रांगद्रमन्दरं होश्यद्रान પાનામુકાની વર્ષના દેવરામાં આવેલા લોકો છે. મહારાષ્ટ્રશા રહાદાવેશન કરા દુર્મિક એક લઈ જાલાકારા દેખીઓજ સ્થાની મોદ તહેર છે કે કે જ્યા

मध्येपमिथ्यादृष्टिरेवोच्यते.नस्य भगवति सर्वज्ञमत्ययनाशातु॥यहुत्तं॥ पमरकरंपिइद्धं, जो न रोएइ सुत्तनिहिटं, सेसंरोपंतीविद्यु, मिच्छ र्ष्ट्राजमाछिबेति॥ क्रियुनर्भगनरहृद्मिद्धितसक्रळजीवाजीवादिवरतु-ास्वविकटइति, अयमुपरामसम्यक्रवटाभटक्षणंसार्**यति अपनय**-रिपासादनं, अनंतानुवंधिकपायवेदनं, अत्रपृषोद्रसिद्धत्वाचशब्दलोपः कृद्रहुछ"मितिकतेर्पेनर् सतिहास्मिन् परमानंदरूपानंतसुखफडदो।नि-पसंतरुपीजमृत्रअपदामिकसम्बद्धन्वराभी जवन्यतः समयमारेणो-क्रपतः पद्भिराविककाभिरपगच्छतीतितत्सहरवादनेनवर्ततइतिसा-गदनः सम्यग्अविपर्यस्तादृष्टिजिनप्रणीतवरतुप्रतिपत्तिर्यस्य संसम्यग् ष्टिः साप्तादनश्चासौसम्यग्दष्टिश्चसासादनसम्यग्दष्टिस्तस्यगुणस्यानं ासाइनसम्पग्दष्टिगुणस्थानं । तत्रसम्पक्त्यव्यक्षणस्सास्वादनेनवर्तत-तिसास्तादनः पथाद्वि अक्तश्चीराज्ञविषयध्यक्षेकचित्तः प्ररूपस्तद्व-नकाले क्षीराज्ञरसमास्यादयति तथ्येपोपिकिय्यात्वासिमुखतपासम्य-त्त्वस्योपरिष्यर्जीकचित्तः सम्यक्त्वमुद्रमन् तद्रसमास्वाद्यति ततःस**-**गसीसम्यग्द्रष्टिश्च तस्यगुणस्थाननं सास्त्रादनसम्यगद्दाष्टिगुणस्थानं । त्रधेत्रंभवति इहुरांभीरापारसंसारमध्यमध्यासीनोजेनुर्मिध्यात्वमद्य-मनंतान् पुद्रष्टपरावर्तान् अनंतदुःख्टश्चणानतुम्यकथमपि तथा व्यत्वपरिपाकवशान् गिरिसरिड्परुघोरुनाक्ल्पेनानाभोगानेवर्तिः ।पथामर्श्विकरणेन करणपरिणामोऽत्रेतिवचनादध्यवसायविशेषरूपे-गयुर्वजानिज्ञानावरणीयादिकर्माणि सर्वाण्यपिपल्योपमासंख्येयभा-न्यूनेकसागरकोटिस्पितिकानि करोति अनांतरे जीवस्यकर्मजनितो-नरागद्वेपपरिणामः कर्कशनिविद्यचित्रप्रसृद्धपुष्टिवक्क्ष्यंथिवद्दुर्भेन ोऽभित्रपूर्वीयंथिभवति, तहुक्तं, वीपूर्वि थोवमित्तो, खबीघेहर्यंतरं

मेजीवरस, हवद्दुअभितपुबो, गंटीपूर्वाजणार्विते॥१॥ गंठितिसुदु-मेजो, करकट्रपणरुद्धिगृहिगंधिष, जीवरसन्द्रम्भजणिजो, घणरागदोस- र्मक्षपयित्वाअनंतराः समागच्छन्ति, उक्तंचावरमङ्टीकायां ॥ अभ

म्परपापिकस्पचिद्ययाप्रवृत्तिकरणतोशंथिमासाद्यअर्हदादिविभातिदर्श-नतः प्रयोजनांतरतोवा पवर्तमानस्य द्रव्यश्रुतसामायिकराभोभव-ति न शेपलाभइति. एतरनंतरंकश्चिदेवमहारमासवपरमनिश्वतिष्ठाः सम्बद्धसितप्रचरदर्जिवारवी बेप्रसरोनिकितक्रटारधारवेवपरमविश्वस्था यथोक्तरवरूपरयवंथेर्भेदंविधाय मिध्यात्वस्थितेरतर्मदुर्त्तमुद्रयशुणा-ष्ट्रपर्यंतिऋग्यापुर्वेकरणानिज्ञतिकरणलक्षणविशक्तिजनितसामध्यांत् अन्तर्भेद्वनै हालम्माणं तत्मदेशवेद्यदलि हाभारूपमंतरकरणंकरोति । अययगायक्तकरणाक्ष्यंकरणानिकृतिकरणानामयं क्रमः । जागंठीताप-वर्ष । गंधिरामयकेओअवेशीयं । अनियाँडकरणंत्रणः । सम्मत्तपुरस्केडे-द्वी रे ॥ १॥ गंदिसमयक्षेत्रोत्ति ॥ ग्रंथिसमतिकामतीर्भवानस्येतिः समत्तपुरर रुपेति । सम्यन्त्यंपुरस्कृतंयेनतरिमञ्जासम्रसम्यन्त्यंजीयेऽनि॰ इति हरणंभवतीरयर्थे पुतस्मिश्रांतरकरणेकृतेसति तस्यमिथ्यास्य हर्मणः स्यिति उपंभवति । अंतरकरणाद्धरतनीम् वमास्यितिरेतर्मु इर्त्तंत्रमाणाः तरमादेशांनरकरणाञ्चभरितनीशेषाद्वितीयास्थापना ।:। तत्रमधमस्यि-Bur abite the spots and face and fine property Selection with a grown of the selection of the first हर्दा हो देना नावातु , प्रवाहि बनद्यालन, प्रादेशधेधनापुर्वस्रिक्षा मरागद्भित्वायतिः नया मिन्यारकादनयनदयोग्यन्तरकरणमपाप्यः जिल्हाचर्टन नवाधवानिनस्वीपदावि ध्रमस्यक्रपाटामः ॥ उत्तरंष ॥ जनमें इं,दबुनिहर्षण, बिन्हाहरणद रोपप्य, ब्रुपमिक्समभग्र (पे. ३४) सम्बन्धनं इड्टूबंदरी ॥१॥ जनसिद्धांनाशये अनिरक्षि हरणाने हर्ता । दु ई: हरणस्यत्र यस सुचीपदामसम्बन्धना भी भाति. तथापिमापीपद्रः र्तः इनोत्र दमीएडामि क्या नान् कामैडीय कानो उपश्चमता प्रस्तरपनः

भमटाभन्यास्या कर्मग्रंवेषि न झ्योपशमनिषेधइति औपशमिकस्यच अंतर्भद्वत्त्रस्यामुपशांताद्वार्यापरमनिषिद्यभन्नस्यायां जघन्यतः समय-शेपायामुन्हृष्टनः पडाविङकाशेषायांसत्यांकस्यचिन्महाविसिपेको-रथानकरपोऽनन्तालुबंश्युदयोभवति तलुद्येचासासारवादनसम्यग्दृष्टिः गुणस्यानेयतंते. उपशमभेणिमतिपतितोवाकभित्सासादनत्वं पाति त-हुत्तरकालेचावरयंमिष्यात्वोदयादर्सं।मिष्यादृष्टिर्भवतिः तथा सम्यदृत्व-मिथ्याद्दाप्टेर्यस्यासौसम्यग्भिथ्याद्दाष्ट्रस्तस्यगुणस्थानंसम्यग्भिथ्याद्ददि-गुणस्यानं, इहानंतरासिद्धितविधिनालन्वीपशमिकत्वेनमदनकोद्रव-रथानीयंनिध्यात्वमोहनीयंकर्मशोधयित्वाविधाकरोति ॥ तद्यया ॥ शुद्धमधेविशुद्धमशुद्धचेतिस्थापना ००० तववपाणांपुंजानांमृत्येय-दार्धविद्याद्यः पुंजउदेति तदातहृदयात्यावज्ञीवस्यार्द्धविद्यदेजिनम-णीततस्वधद्भानं मिधावेमन्यरयेनानिङ्काररूपंभवति वेनतदासीसम्य-ग्मिथ्यादृष्टिगुणस्थानमंतर्भुदूर्तकालं स्पृशति ततकद्वेअवद्यंसम्य-क्त्वंमिथ्यात्वंवावगच्छति ३ तथा विरतिविरतंत्रकीवेक्तमत्ययस्तरपुनः सावधयोगप्रत्याख्यानंतत्रज्ञानातिनाम्यपगच्छति न तत्पालनाय यतवै इतित्रयाणांपदानांअष्टेशंगा एतेपुचतुर्पभंगेपुमिष्यादृष्टिर-शानित्वात्रोपेषु ॥ ऽऽ। सम्यग्दष्टिज्ञानित्वातृसप्तत्य-विरताऽभादित्यमत्ययः चर-सुभंगेषु नार्य विरतंसगरती- इ ॥ मभंगेतुविरतिरस्तीतियद्वाविरमतिस्मताबद्ययोगेभ्योनिवर्त्तवेरमेतिविर-तः कर्त्तरिक्तप्रत्ययेनविस्तोऽविस्तःसचासोसम्यग्दापृश्चअविस्तसम्य• गर्राष्ट्रिरिदमुक्तंभवतियः पूर्ववर्णितीपशमिकसम्यग्राष्टिः शुद्धदर्शनमी-इपुंजोदयक्तींक्षयोपशमिकसम्यग्द्रष्टिर्वोक्षीणदर्शनसप्तकक्षायिकस-म्यगृदृष्टिर्वापरमञ्जनिमणीतांसावचयोगविरतिसिद्धिसोधाव्यारोहणनि-श्रेणिकल्पांजानत्रप्रस्याख्यानकषायोद्यविद्यतस्यात्राम्युपगच्छति न-चतत्पाटनाययततङ्खासात्रविरतिसम्यग्दृष्टिरुच्यते तस्यगुणस्थानं

अविततसम्पग्रहिगुणस्थानं ॥ उक्तंच ॥ वंवेअविग्रहरेउं, जाणंतीन सगरोसदुरकंच विरह्महुं इछंतो, विस्काउंच असमरयो ॥ १ ॥

> प्सअसंजयसम्मो, निंदितीपात्रकम्मकरणंच ॥ अद्विगयजीवाजीवो, अच्छियदिठीच्छियमोहो ॥

तथासर्वसायद्ययोगस्यदेशेषुकातविषयेस्यूटसायद्ययोगारी सर्वेविषयाद्यस्तिवज्ञसायद्ययोगांतेविदर्तविरतिर्वस्यासीदेशाविदतः सर्व-सावध्विरतिः उनस्यमास्ति अत्याख्यानावरणकपायोदयात् सर्वविर-तिक्रपेप्रत्याख्यानेआङ्क्तीतिप्रत्याख्यानावरणाः ॥ उत्कंच ॥

संम्महंसणसहिओ, गिण्हंतीविख्मप्पसत्तीप् ॥ पुगवपाइचरमो, अखन्यमित्ततिदेसजङ्ग ॥ १ ॥

ष्ट्वनमाणाः या ज्ञानावाणीयादिकमस्थितस्तरमाअमवर्तनाकरणेन-खंडनमर्ल्याकरणं स्थितिघानउच्यवे, रसस्यापिमप्रीभूतरयसतोऽपवर्च-नाकरणेनखंडनम्ल्याकरणस्यातउच्यवे, प्रतीदावपिपूर्वग्रणस्यानेष-

नाकरणेनावतारिस्यदंखिकस्यांतर्मुहूर्तयमाणमुदयक्षणाबुपरिक्षिप्रतरक्ष-पणाय प्रतिक्षणमसंस्येयगुणरुद्धाविरचनंगुणश्रेणिःस्थापना एतां च पूर्वगुणस्थानेषु अविशुद्धत्वात्कारतोद्राषीयसीद्दिकर्यनामाभ्रित्य-द्राधीपती च दक्षिकस्यापवर्चनाद्विराचितवान् ॥ इहतुनामच विशु-द्धत्वादप्रवाकालतोहस्वतरांदिककस्पविरचनामाश्रित्यपुनःपृष्ठतरांबहः तरदष्टिकस्पापवर्त्तनाद्विरचयनीतिः तथाबच्यमानग्रभश्कृतिष्वबध्य-मानाराभमकृतिदक्षिकस्पमितञ्जणमसंख्येयसुणवृद्धाविशुद्धिवशानपनं गुणसंक्रमस्तमध्यसाविहापूर्वकरोति, तथास्थितिकर्मणामध्यस्वात्माः गृद्राधीयतीयद्भान् इहतुतामप्रतीविश्रद्भतादेवहस्वीयसीयज्ञाति, अ-यंचापर्व करणोद्धिया अपकायप्रशमकश्चरापणोपशमताहरूनाचेवमुच्यते-राज्यार्हुकुमारराजवनपुनरसीक्षपपति, उपशमयतिवातस्यगुणस्थानं अपूर्वकरणगुणस्थानं. एतचगुणस्थानमपन्नानंतस्वर्तिनोनानाञ्चीवान-पेश्यसामान्यतो ८ संख्येयटोकाकाशपदेशपमाणान्यस्यवसायस्थानाः निभवंति, कयंपुनस्तानिभवंति १ इतिविनेयजनातुयहार्यविशेष-तापिपरूप्येते, इहताबदिदंगुणस्यानकमतर्मेहर्तकालप्रमाणंभवति. तनचन्नथमसम्बेमपन्नाःमपद्येते, मपत्स्येते च तदपेश्चयाज्ञधन्यादी-न्युत्तृ ष्टांतान्यसंस्येयटोकाकाशपदेशप्रमाणान्यस्यतसायस्थानानि**ट**-म्पंते प्रतिपर्गावहत्वादव्यवसायानांचविचित्रत्वादितिभावनीयं. ननुयदिकास्त्रयापेशाकियते तदेवगुणस्थानकं प्रतिपतानामनंताः च्युवसायस्थानानिकस्मान्नभवेति । अनेतर्जीवसस्यमतिपतस्यादनं-

विधासमास्यन्थस्यः

ेरप्रमतिनयमानवानिक सर्व स्याप्ति यक्तिप्रतिकृणांसी बार् सर्वे अप्रेमिक्तानी राज्याना प्रशानानिश्वस्त्रप्रनास्ति, पहनारे रूपा यक्तान होते वा हाति ततीचिनीयसम्बेत स्मान्यपि ह सार्य व्यापायामानिकक्वेते । तुनी रेत्तभतेन स्थानाभि हत राजि - चार्यंसमानि स्थान्यभि स्नागणीयो । ता होयंथा स्थरमा ્રે મહેલું શહેલમ્યાલ્યમાનાનિ દેવમું મુખ્ય હે સ્થાને ધ્યાન १६वे १६७१ 👈 ⋰ जनपन्तममस्य स्मान् स्थापनंत ्षात्राष्ट्रकः सम्बन्धः से स्थमप प्रकायनन्त्रम्थात्रिप्रहर्दे कृतीये 🖰 ્ ૪૦૬૦ મુદ્ર ૧૯૬, ફાલાનમું ક્રમમુશ્ર પ્રતિનામુન્યુઓ સામામથાની पर १८ ४७० ६७० ६७ १५ १५० वान नास १ १४वर वाल नास १ १४६ हे प्रमुख CHAIR GOVERNMENTAL PROPERTY OF THE PROPERTY OF * " F E et ... er neintet Rieb ? 1 Enige abge iben iben fiebu be-• ५ ५ 💯 १ ५ ६ हे । १०६६ स्टूबुणस्थान क्रमनिपताला बहुतामण ६ ५ पाल्य है । बनन्य सामस्यातस्यातामानी सामितास्य हो। ई whom in the first three to be a first to be a first the state of the s 49 、1 4. 5、 电标题,标 核键 - 经知识最高进 计排标程序 The the time of the safety states and addressed to be the party of the first of the safety of the sa Demogram to remove the construction rate in their a dear sidely district リャラー・サー はんしゅうちん いきとわかわきょうおおをなる まればま

is the first of the form in a manager of the end of the energy of the form the energy of the form the energy of the form the energy of the end of the end

the etc. to be a to be not a set a second of the set of the set of

दयरूपो यस्य सोऽयंग्र्क्ष्मसंपरायः। सोपि द्विधाश्चपक्रअपशमकश्चर्ञः पपवि उपशमपति वा टोभमेकमपीतिकृत्वानस्य गुणस्थानं सूक्ष्मसं-परापगुणस्थानं ॥ १० ॥ तथाउम्बवेकेनटज्ञानं केनटदर्शनं-चारमनोऽनेनेविछद्मज्ञानावरणदर्शनावरणमोहनायांतरायकमेरियः। सवितासिन्केवसस्यासुरपादान् । तदपगमानंतरंघोत्पादानुस्रद्रानि-विष्टवीविजदास्यः । सचसरागोपिभवतीत्यतस्तद्वपवच्छेदार्थवीतराः गग्रहणं वीतो विगतो सगोभायाखेभक्याचोदयक्ष्पीयस्यसवीतरागः संचासीछद्वरथध्वनितरागङ्करथः सच्धाणकपायोपिभवति । तः स्यापिययोत्तररागोपरमान्। अनस्तङ्गचपन्धेदार्थउपञ्चान ह्यायग्रहणं कपशिषेत्यादिदंडकथानुहिसार्थः । कपंति चरुपंति च परस्परमन्यिक माणिनइतिकपः संसारः कपमयतेगच्छंत्येभिर्जतवहतिकपायाः य्रो-धादयः उपशांता उपशमिता विद्यमानापुरस्र अणोद्धर्तनादि र रणो-दपायोग्यत्वेन व्यवस्थापिता क्याया येन सउपशांत रूपायः सथार्गा-वीतरागङक्करथक्षेतिउपशांतकपायवीतरागउक्करथः तस्यगुणस्थान-मितिमाग्दत् । तत्राविरतसम्यग्रहेशः प्रभृत्यनेनानुवेधिनः कपापा उपशांताः संभवति उपशमभेण्यारेनेद्धनंतासुवंधि इत्यायानऽविरती-देशविरतः ममतोऽपमतोतासन्त्रपशमय्य दर्शनमोहावित्रपृष्ठशन मयति । तदुपरामानंतरंपमचापमत्तगुणस्थानकपरिएत्तिरानानिह-त्या ततोऽपूर्वकरणगुणस्थानोत्तरकाटमनिशृतिबादरसंपरायगुणस्थाने चारियमोहर्नायस्य प्रथमंनपुंसक्रवेदमुपदाययति तनः स्वीदेदं तनी-द्यारयस्यस्तिशोकभयदृगुष्मारूपेदुगगङ्गपर्कं ननः ततोष्ठगपर्परपाष्यानारस्यव्याक्षाक्षाकार्यानारस्याकोशीननः सञ्बद्धनः न्रोपं । ततोप्रगपदिवीयपृतीयमानीताः सन्दरनमानंततोद्रगः-पद्भितीयनुतीयमादेतनः संस्यटनबायाः तनोष्ट्रगपद्भितीयन्तीयाँहो-

विचारसारयन्यस्यटी हो-

٤o

भाततः स्क्ष्मसंपरायगुणस्थानेसंज्वलनहोभसुपरामयति दृत्युपरा-मञ्जीः ॥ तदेवमन्येष्यपिगुणस्थानकेषुद्धापितियतामपिकपायणा-पुपरातित्वसंभवात् उपरातिकपायन्यपदेशः संभनस्यतस्तद्भाम्छे-राभ तित्तरागद्वज्ञंभीतरागद्वत्येतावतापीष्टसिक्कीत्र सस्यद्वणस्कष्म-कप्मार्थस्यवस्त्रेयाभावान्नव्यत्रग्रस्थरणसांतकपायनितरागः संभ-पति यस्यत्रप्तस्यवस्त्रोनस्यप्रस्थेतः स्वादिति । आस्मन्गुणस्थान-केश्यार्रासार्वस्यवस्त्रोनस्यप्रस्थात् उपराति सावन्याः ॥ उपराति-

हपाय प्रकारमधीन हतमये भगति । उह करियद्वा केत्र महित कित्त कित कित्त कित कित्त कित कित्त कित कित्त कित कित्त कित कित्त कित कित्त कित कित्त कित कित्त कित कित्त कित

દરાપ્તિ ૧૩-૬ના માતિકાનુંથી ''તો દ્વારેષ્ઠામાંથી દિવાદ અંધી નન્નન પરાનદેવન હત અને દીનદિય — તોદુ કૃતિ કામલે દેશા દે દાંછ દ્વારા નન્નક આને દીનદિયા નિર્દેષ પૂર્વ દાર્મિયા દિવાદ પ્રદેશ — તામનાવિવાદી જ દાનિન ને દા હોય કોર્મિયા દિવાદી દિ પ્રદેશ — તામનાવિવાદી જ દાનિન ને દા હોય કોર્મિયા દિવાદી ના ક્લાન કે '' ત્યાર જ દ્વારા કાર્મિયા દેશા કોર્મિયા દેશા ના દાનિન કોર્મિયા ના કાર્મિક '' '' ત્યાર પ્રદેશ' કોર્મિયા કોર્મિયા કર્મિયા કોર્મિયા કાર્મિયા કોર્મિયા કાર્મિયા કોર્મિયા કાર્મિયા કાર્મિ

पुरु भोन्तिक वर्षेत्रर्रक्ते वाद्रन्तिनामुख्यात साक्त्रात्यान्तिकीः

ध्यवसायधारां नारोहाति तेन बाहुल्येन एकामेवश्रेणि करोतिक-श्चिन् मतिपतितोऽपि वीनवीपेविद्यद्वीपयोगान् प्रमःश्लेणमारो इतितेन अस्पतात्वस्पभाष्येनाधिङ्गमिति ॥ ११ ॥ नदा-क्षीणा अभावमापता कपाया यग्य सर्शाणकपायः तत्रानतातुर्विध-कपायानः अध्यममदिशतिसम्यगदृष्ट्याद्यमनतिनगुणस्थानेपुदापयिनु-मारभवे ततोमिष्यात्वेमिधसम्यक्त्वं ततोऽमस्याख्यानावरणानकः पापानप्राक्षपयितुमारभवे वेषुचाईक्षपिवेध्वेजानिविद्यद्विवशादनस्ट एवस्स्यानार्द्धविक, नरकाद्विक, निर्यगृद्धिक जातिचतुरक, आनर्प, उद्योतं, स्थावरं, साधारणीमतिमकृतियोदशकशपर्यान । नरिमधशीणे-कपाचाष्ट्रकरपक्षपितशेषंक्षपर्यात । ततोनपुसक्तदेद, स्त्रीवेदं, हास्या दिपदकं, पंरेदं, ततोसंन्यटनकोधमानमापाःशपर्यान एताध्यक् श-रिनर्शतिबादरस्यः मसंपरायगुणस्थाने शप्यति । सम्बलनहो भेनः म-संपरायगुणस्थाने इतिक्षपक्षश्रीणः । तदेवसन्वेध्यविगुणस्थानेपुर्शन णकपायम्यपदेवाःसंभवति । धापिकियतामपिकपायाणांशीणत्यादः तालक्षपरच्छेत्रार्थं वीतरामग्रहणं। क्षीणक्षपायवीतरागः रेश्वरे विकती-प्पाति। तद्भपन्धेदार्थन्द्रसाथनहणे। स्वार्वे प सहणेकृतेसागः व-यच्छेतार्थवीतरागमहृण सपोपशांतकपायोष्यास्त । रूप्पवर्ध्व रार्थशीन पक्षायद्रहणं । इत्यनेनर्शाणक्षायशीतरागउद्यर्भगुणस्थानिर्धान ॥ १२ ॥ तथायोगोवीर्यशक्तिरुतसाहः परात्रमङ्क्तिपर्पायः सथ-मनीवादापरक्षणगरणनेदाचिस्र संज्ञा उभते । मनोधोगोरधवधो-गः वाययोगधीत तय धोक्तं कर्ममञ्जू र्गण परियामात्रवयगद्वयसाद्व-परेषटप्रनामनिग । काद्यान्मासः श्रद्भव्य वेसावसमारूपएते ॥१॥ तत्रभगवतोषनीयोगोषनः पर्याषदानिविश्वतरमुरादिविद्याः पनसापृष्टस्यस्तीयनंसप्रदेशनाते हि अगस्ययुक्तास्य यनोद्धन्यादेन मनः पूर्याद्यक्षनेनावधिज्ञानेन ग्रप्यधनि ह्या ध वे विवस्त्रि नवस्यावरः

रान्यपाद्यपरम्मालोकस्वरूपादिवाद्यमयँमिमग्ल्यंति। वाग्रमीगोयमैं देशनादी कायमोगोलिमेपोन्नेष्यंक्रमणादी। ततोअनेनयोगनयेणस्व हवस्ते इतिसयोगी सर्वादेरि-ग्रत्ययः केवल्द्यानंकप्रलंहानंवविद्यत्येया स्वादेरि-ग्रत्ययः केवल्द्यानंकप्रलंहानंवविद्यत्येया स्वादेरि-ग्रत्ययः केवल्द्यानंकप्रलंहानंवविद्यत्येया केवल्या स्वादेर्या स्वाद्यानेकप्रलंहानंविद्यत्य स्वाद्यागिकेवलागुणस्थानं ॥१३॥ न विद्यंते योगाः प्रवेतंक्ता यन्यावाद्यागिकेवलागुणस्थानं ॥१३॥ न विद्यंते योगाः प्रवेतंक्ता यन्यावाद्यागिकिवलागुणस्थानं ॥१३॥ न विद्यंते योगान्यक्रित्यव्यक्तियावाद्यानं स्वाद्यानं स्वाद्यानं स्वाद्यानं स्वाद्यानं स्वाद्यानं स्वाद्यानं स्वाद्यानं स्वाद्यानं स्वाद्यानं अन्यस्तुनकरोति यदाद्यः सकासाव्यविक्रमायावादः स्वत्यणायां। सविविकंपनंतिक्वत्यस्यानं स्वाद्यानं स्वाद

अगंतूणसमुग्धाय, भणंताकेवळीजिणा । जरमरणविष्पमुक्का, सिद्धिवरगङ्गया ॥ २ ॥

सम्बद्धाताषिकारेयक्ष्यामः भवोषमाहिकभैक्षपणायके इयातीतं इम्हमस्यंतामकंपपरमिन्वराकारणं व्यातमिरिष्यपें-गितरोवार्थमुपन्नमते । तवपूर्ववादस्काययोगेन बादरमतोयोगे तिरु-याक्षि ततोवारयोगं ततः शुक्ष्मकाययोगेन बादरकाययोगे वेत्ते वर्धस्य-मनीयोगं शुक्षवाययोगं च शुक्ष्मकाययोगेन बादरकाययोगे वेत्ते वर्धस्य-यातं व्याययग्रस्याव्ययेगं च शुक्ष्मकाययोगंन स्वयावश्येमगेयस्य योगांतर-स्यतदासत्वात् तद्वानसामप्यां स्वयन्ते हत्त्रादिविवरसूरणेनरिक्ष्येत्व-देव्हित्रमागर्वार्यमुद्धोग्वादी।तद्वनंतरस्यु व्विवज्ञाक्ष्ममातियाति स्व

यदासर्वसंबर: जीलेक्ट्रेंक: जीलेक्ट्रेंक: क्षेत्रेंक: कार्यसंबर्धकी अज्ञानकार्व हे जीन तस्यो बरणपर्वेदिर्शवर्वेद्वर्शकातम्यमणनगुणक्रेतिकस्य वेदनायनः मगोतार याचाति । सैवित्यर यासर वेयगुण्या अध्या अध्या सम्बद्धाः रप्रपरिचनपाद्रोण्यानि तेरण्डीहे श्रीकृष्ण नद्यानी प्रदिशेष्ट्रवर्धी स्वयन मारित होच क्रयोगीकेत है। है। है जो इस क्रम्यम्मयम्बर्गन सम्बन्ध विवयमेकानन्यादरपुणिकारेयां हमानेविनमहार मापनी नदालिक रूप **ज्ञादमस्योदीर्थमात्री** संपारिका सङ्ग्रहन्तिस्य स्टापन्तर्थन न पर मीपिमन प्रशास कराक प्रमुख अमेरिन शायाचा अप्र करा के राज्य un desputation out entitle despite entitlement de la constitución de l रम्प्रमाष्ट्रमानेदिशीक्षा समयाकासम्प्रानस्थन्तपुरन्तनः उ दार नः च भाग्यभागी । असंग्रामी समाधिन है । जनस्य १५ ५ चौरचप्रदर्शिमध्यक्ष भवन्त्रामध्यक्षकालम् स्टब्स् १ ८ दवन १६०० वर्ष શ્રાંત્રિનવચનપ્રદાયમાં નુમાં હૈતીએનમહાતીલપ્ટન્યાન હતું કા પ્રદુષ પશ્ચિમાં તેમ કે જિલ્લાટુ અદ્ભવસાયમાં દુષ્ટિયા છે. તેન્દ્ર તેન્દ્ર કરો ચર્જાદામાની દર્શન હાલા લાગા લાગા સમાર સમાર કેન્દ્ર નથા હેના મારા મારા મા રાવાનો છે ! પ્રાપષ્ટ નાતોલાન્ટલામણજ માત્રમ ધન્ટલાલાન નાંડાયા છ आहार रहे भी मध्य द्वारातिक तारक नगण विद्यान के कारत कारण कर भवी वा से वा संवर्ध घोषतीहरू केप्यूटर हेवर, प्रवर्ट व नवीषग्रद्भप्रकृतिक प्रमानको स्वतास भ 🕷 🗷 😅 🖼 र 🧷 👚 Willy of the section of the state of the section THERE I I HAVE ENGLISHED BOOKS I HAVE S तीबादजीनीतिही, संबद्धक दहाई ॥ ६ ॥ , कार ८५, द dutibuserally in morning to we want II V II realization of the extension of the III おけれる かんじゃんごかんきゅん おもく といいはししん

ट्रबार्यः—प्रणम्यशासनाष्ट्रीशं, वीरं स्याद्वारदेशकं विचारसारमंथस्म, ट्यार्थः संप्रतन्यते ॥ १ ॥

ं नमस्कार करीने जिन क० बीतराग प्रत्ये ग्रुणटाणां १४ ने बिषे इतला द्वार कहीस । मूल्यंच ८१०१६११ ए च्यार स्थानक छै। उत्तरसंब १२० एकसोनीस वेड्नी आठ कर्मनी ज्दी ज्दी ६ द्वार एतंछ दशहारसंचना । इम मूल्यद्रय १ उत्तरद्रय २ वर्जी आठ कर्मनी उदय । एवं १० इम मूल्यद्रयणा १ उत्तरस्ता उत्तर्य । स्थान प्रत्ये हम सत्ताना दश हार । मूल्यता १ उत्तरस्ता १ आठ कर्मनी सत्ताप्वं ३४ द्वार पर्छे ग्रुणटाणे जीवनेद ३५ पर्छ ग्रुणटाणे ग्रुणटाणे ग्रुणटाणे ग्रुणटाणे च्वार १५ हार ३५ पर्छ ग्रुणटाणे जीवनेद ३५ पर्छ ग्रुणटाणे जीवनेद ३५ व्हार पर्छ ग्रुणटाणे जीवनेद ३५ व्हार १५ व्हार १६ कहेवा १३ व्हार १६ कहेवा पर्छे

उत्तरहेतुसमुखय पछे च्यार हेतु वेहनांसि ६ द्वार एवं ८५ इत ॥ १॥

अप्पवहुभावजीयभेय, समुग्घायाझाणदंडगा वेआजोणीकुरुकोडीओ, वंधुदयसंतधुवअधुवा ॥२॥

दीका—त्तांऽरुपबहुत्वंगुणस्थानेषु एवं चतुक्षत्वारिकातृततः
मूडभावोत्तरभावमतिभिमस्वभावसामिपाविकभावस्वराणि द्वाराणि
अर्थु।मिल्नेद्विभेषाशहुराणि ततः पंचशतिवपष्टिजीवभेदद्वाराणिमूल-तोउत्तरक्षेत्रद्वेश्वास्तुराणि ततः पंचशतिवपष्टिजीवभेदद्वाराणिमूल-तोउत्तरक्षेत्रद्वेशिस्त्वनेष्यः पंचाशव्यव्यवारिजसमिलने ५८ द्वाराणि ततः ग्रुणस्थानेसमुद्वात्रात्रस्थाप्यानिष्यमद्वारं । त्याचेत्रस्यात्रस्य । मूलोत्तरः एवं निपष्टिततं, ग्रुणस्थानेषुदंवकामियायवंद्वारंपतृरपृष्टितमं ततः स्टबको-दिक्षंसम्बद्धारंपप्पष्टितमं । ततो योनिद्वारप्रपृष्टितमं ततः स्टबको-दिक्षंसमप्रश्चितमं ततः प्रवश्योऽप्रवश्यो भूवोदयोऽप्र्योरपो भूवससा अनुवसनालक्ष्रणानिष्यद्वाराणि प्रवाधायद्वयेनिससितद्वाराणि॥स्या

टवार्यः—पछे शुणटाणानो अल्पवहुत् ४६ पछे शुणटाणे मुख्यात १ उत्तरभाव ९ भाविमाराणे पछे तांत्रिपातिकशावना भांगा पूर्व ८ हार ५४ पछे जीवभेद पांचरतियेसत विह्ना द्वार ६ पूर्व तात ६० द्वार पछे समुद्धपात ७५वे द्वार ६१ पछे शुणटाणे ६ एवं द्वार ६१ पछे शुणटाणे ६ इत २४ द्वार ६४ पछे शुणटाणे वेद एवं द्वार ६५ पछे शुणटाणे वेद एवं द्वार ६५ पछे शुणटाणे क्लाक्ट एवं द्वार ६५ पछे शुणटाणे क्लाक्ट एवं द्वार ६५ पछे शुणटाणे क्लाक्ट एवं ह्वार ६५ पछे शुपटाणे क्लाक्ट एक व्यवद्वार १ पछे शुपटाणे क्लाक्ट एक व्यवद्वार १ पछे शुपटाणे क्लाक्ट एक व्यवद्वार ६५ पछे शुपटाणे क्लाक्ट एकं व्यवद्वार १ पछे शुपटाणे १ पछे द्वार ६५ पछे शुपटाणे १ पहे द्वार ६५ पछे शुपटाणे १ पहे द्वार ५५ ॥ २ ॥

सबदरघाईअघाई, पुन्नपरावत्तइयरिकताई चउरोविवागर्भगा, कम्माणं चेव दाराई॥ ३ ॥

द्याका—सञ्जेति सर्वेधाति १ देशवाति २ अचाति लक्षणानिः द्वाराणिःवीणततः प्रण्यमकृति १ पापमकृति २ पराचर्तमान ३ इतर शब्देन अपराचर्चमानच्क्षणानि सप्तद्वाराणि मिटनेअशीतिद्वाराणि ततः क्षेत्रादिविपाकचतुष्टपरूपाणि चत्वारिद्वाराणिततः कर्मोद्ध-करपाग्रास्थानेभंगमनिपान्कानि अष्टीद्वाराणि पृत्रंमिटनेद्विनवि-द्वाराणि ॥ २ ॥

द्यापै:—पक्षे सर्वेचाति एवंद्रार ७४ पक्षे देशवाति एवंद्रार ७५ पक्षे अधाति एवंद्रार ७६ पक्षे पुण्यमकृति ७७ इतरशब्दे पापमकृति ७७ दिन्दरादे पापमकृति ७७ दिन्दरादे पि स्वेद्रार ७ पक्षे क्षेत्रविचाक ९१ भवविषाक ९२ जीवविषाक ९३ पुद्रहाविषाक एवंद्रार ९० पक्षे गुणदाणे कर्मनाभांगा एवंद्रार ९ पूर्वर ९० विद्यार देश पक्षे गुणदाणे कर्मनाभांगा एवंद्रार ९ एवंद्रार १० विद्यार में ११ संवरावेद ११ तिद्यार में ११ वंद्रार में ११ व

अपमत्तंत्रासत्तठ, मीस अपुत्रवायरे सत्त, बंधइछमुडुमोइग, मुवरिमाअवंधगअयोगी ॥ ४ ॥

होत्रा—पवेति वहारेणगुणस्वानेआस्वपेदाः संवरपेदाः निज्ञग्नेदाः वेवस्ताविधानव्याणानिक्त्यारिद्याणि । पृत्तविभिन्ने नेपण्यादिद्वाणि गुणस्वानेवस्त्यानि । स्वयनिष्यद्वाणस्वानावत् सञ्च्यायस्वाणि स्वप्यव्यने । द्वारावार्यः विद्वार्यसे वत्तर-प्रस्वेत्या-तत्रवयसंक्यानिष्यस्वाण्याद्वाप्यव्यने । नवणस्वाणीस्वप्यवेत्यस्व रणादेर्प्रहणमुपादानंहोळीभावकरणं वंबहृत्युच्यते । तत्रमूहतो बंध-स्पानानिचत्वारि तानि ग्रुणस्पानकेषु निवेद्यते। तत्रमूहतः कर्मण-अष्टकं। तषायुर्वयकोजीवअष्टविषयंयक आयुपस्त्वेकस्मिन्भवे एकः वारमेवांतर्मुहुर्नेप्रमाणंकालंबंबनान्, शेषकालंनुसप्तविधवंधकएनजीवः तथास्यः संपरायगुणस्थानकेष्यानविशुद्धामोहनीयागुपीनवद्गातिः तेनपद्विधंत्रयकप्वसच अकपायीजीवउपशांतादिगुणस्थानिविके वेदनीयस्यएकस्यैत्रबंधकः । अतोबंधस्यानानिमृष्टतश्रत्वारि । तत्रच मिध्यादृष्टिमस्तयोऽप्रमतांताः । सप्ताष्टीनाकर्माणनवाति आयुर्वध-काळेऽद्दीरोपकालंतुसम् । भीसअपुरवायरेइति, मिश्रापूर्वकरणा-निवृत्तिबादराः संप्तेवबद्गंतिवेषामायुर्वधाभावात्, तत्रमिश्रस्यतथास्वा-भाष्यात् इतरयोः पुनरतिविद्यद्वित्वादापुर्ववस्यय घोळनापरिणाम-नियंचनत्वात् बंधको बद्याति। छसुहमति सक्ष्मसंपरायोमोहनीयापुर्व-र्जानिषदकर्माणिकप्राति । मोहनीयवेधस्यवादस्कपायोदपनिमित्त-स्वात् । तत्रचतदभावात् आयुर्ववाभावस्त्वतिविशुद्धित्वादवसेयः । एन्मुवरिमचि । एकंसातवेदनीयंकर्मोपरितनाः सक्ष्मसंपरायाद्वपरि-शाद्वतिन उपशांतमो हक्षीणमो हसयोगी केविलनो वसंति। न शेपकर्मा-णितव्बन्यहेतुत्वाभावात् । अत्रंयकः सर्वकर्मप्रपेचवंयरहितोऽयोगी-चरमगुणस्थानवचीसर्ववंबहेतुत्वाभावादिति ॥ ४ ॥

श्र्वापः —कर्म आठ छे ते एक समे एक जीव आठ कर्म बांचे आपना आठवो न बांचे तो सात कर्म बांचे ते बडी आऊपो मोहतीए वें न बांचे तो ६ बंधांड पछे एकसाता बांचे इंम च्यार बंदाना पातक छे. ते मिष्पात्व १ सास्वादन २ अवितितसम्बत्तत १ देशविरति १ प्रमत १ अप्रमत्त १ ए छ ग्रुणटाणे सीम सात बांचे अने आऊस्तो बांचे तेवारे आठ बांचे तथा बांजे मिश्रगु- णटाणे तया आरमुं अपर्वेकरणमुणटाणे नया नवम्ं अनिमृतिपु-णटाणे आऊरवे न बांचे । तिण सातकमें बांचे तथा दक्षम

णटाण आऊत्वा न वाच । तिज सात्रक्त वाच तथा देशना सुक्ष्मसंपराय गुणटाणे आऊत्को १ मोहनीय विना राप छ कम बांवे. वे न वांचे. उपस्त्यो इस्यारमी वात्र्यो तेरमो ए तिन गुणटाणे एक येदनी कम बांवे. तथा अयोगी गुणटाणे कोई कम बांवे नहीं

जवंपक छे तही ॥ ४ ॥ बीसहियसयंबंधे. ओहेमिन्न्द्रेसत्तरससयं तु ।

सासाणेइगहियसय, मीसे चउसत्तरीयंघो ॥ ५ ॥

टीका - उक्तागुणम्यानेगुमुलकंबस्थानयोजना । सांप्रतंगुण-स्वालेपु उत्तरमकृतिवंधतिकस्पद्धारमुच्यते । वीसदियति ५ वंषे-ओवनः सामस्यनः विशस्यधिकशतवस्यते, नवजानावस्णापपंषकं, दर्शनावरणीयनवकं । विद्ताविद्धित्वयं । सोहतीयंपद्दविश्वतिषेदं । सिक्षमोहनीसस्यक्तमोहनीयस्यवंश्वासवात । वंषे तिस्यात्वमोहन

एकेकप्रहृणे चत्वार्यवपद्माति । तेनपोडशकायहणेशेपानाम्नः स्तर-पिप्टरेवचच्ये । एकजाव्ययकसमयेएकमेवेदवाक्यं । काठांतरेजी-वातरेवणीदिविंशतिरेव वंयतंभवात् ओघेचवणांदीनां चतुर्णाग्रहणे-त्वच्यामोहार्यमितिगोवस्यद्वौ। अंतरायस्यपंचप्वस्वमिळनेओघतो-विंशत्यिकमेकशतं च वंचेभवति। तदेवविंशंकतंतिर्थकराहारकदिक-

वर्ज मिच्छे मिथ्यात्वे, सत्त्रससयंति, सप्तदशाधिकशतं सप्तदशशतंबरे-

1

भवतीति।अयमदाविषायःतीर्वकतनामनादन्तरम्यहरदगुणानुगयोग-रपापगर्रितनिमित्तभेववन्यते । आहारकवर्तरांगीयांगटक्षणद्विकं अप्रमत्त्वविसेवेधिसयमानयायियोगकपायमद्रन्या यध्यते ॥यदुक्तं॥ क्षिपशर्मस्थिरपरिः बनपेत समत्तपुणनिमित्त निन्धपरमञ्जेणआहार-मितिमिध्यार्टाष्टगुणस्यानेउभयाभागात् । एनन्पर्हानवयर्ग्ननंकः नदीरंपनः सप्तरदायनमिध्यान्यादिभित्तेन्त्रियंध्यते । तेनहेतुचतृष्ट-यसद्भावातः विध्यान्येनद्वयःभन्येनाः महदशक्षानमस्यासर्वाअपिवि-ध्याद्दष्टिमायोग्याः क्रिनुमिन्यात्वप्रायोग्याः योदसनाधिमिन्यात्ववि-गमेगप्छतिनाधेमाः १ नरकाति, २ नरकानुपूर्वा, ३ इति नरक-षिकं. १ पुरेर्देय, २ द्वीदिय, भीदिय,चतुरिन्द्रियजातिचतुष्कल-क्षणंज्ञातिपतुष्कं। १ स्थायर, २ मध्य, ३ अपर्याप्त, ४ सावारण, टक्षणस्थावस्थतुष्कं । आनपटुंडछेदपृष्टं नपुंतकरेदःमिध्यात्वमिति-एता.पोडशभग्नयःमिध्याद्दष्टिगुणस्थाने एत्रयंवमायाति मिध्यात्व-प्रत्ययत्वादेतासांनीसस्य। सारपादनादिपुमिध्यात्यदेत्वभावाद् । प्रा-योनस्काद्यस्यंताशभग्याधमिध्यादृष्टिरेवयस्माति । वेनसप्तदृशशतात प्रवेंक्तिपोडशापगमेशेपनेकोत्तरंप्रज्ञानिशनमेवसारगदनेकंधमापाति। सासाणे,सारपादने,एगहियसयं पुत्राधिकंदानंबंधप्रकृतीनांअस्ति,मी॰ सेति। निश्रामियांनगुणस्थानके चतुर्गयकासप्ततिवंधीवंधत्वेनअस्ति १ विषंगाति, २ विषंगालपदी, ३ विषंगाय, रहेशणंनिष्राधिक १ निदानिदा, २ प्रचलप्रचला, ३ स्त्यानद्विलक्षणंस्त्यानद्विन विके। १ हर्भग, २ ह.स्वर, अनादेयटक्षणदेशोग्यविके ३ अनेतानु-बंधिकोच. १ मान, २ मापा, ३ टोभ, ४ टक्षणंअनंतातुर्वेधिच-तप्टर्य । १ न्ययोध, २ सादि, ३ वामन, ४ कुब्ज, ५ ह्झणं-मन्यसंस्थानचतुष्कं, १ ऋषभनाराच, २ नागच, ३ अर्धनाराच, ४ इतिहास, स्थाणेमस्यसहननचतुष्यं, नीचैगौरं । १ उद्योतं, २ ફર



11

टीका-सम्मेति ६ सम्पक्त्वामियानेतूपेगुणस्थाने आयुर्वेयात मनुष्यायुः १ देवायुः २ एतद्वद्विकंसम्यक्त्वानुगग्रशत्याच तीर्थ-करनाम बन्नाति, इत्यनेनपूर्वोक्तचतुःसप्ततिवीर्यकरनामआयुर्वयमे-लनात सम्यग्द्रष्ट्रिगुणस्थानेसप्तसप्ततिप्रकृतीनां बंबीभवति तत्रति-र्पगुमनुष्याःसम्यगुरष्टयःदेवायुरेववद्यन्ति। नारकादेवाश्चससम्यगुरुष्यः मनुष्यापुरेवबधान्ति। देसेत्ति, देशविरतिलक्षणेपंचमेगुणस्थानके वज्र-र्पभनाराचसंहनन १ नरगति १ नरातुपूर्वी २ नरायु ३ लक्षणं-नरिवकं द्वितीयेकपाये अप्रत्याख्यानऋोध १ मान २ मामा ३ होभ ४ चतुष्कं ४ औदारिकशरीरांगोपांगलक्षणऔदारिकडिकं एतासांदशप्रकृतीनामविरतिसम्यगृहशैअंतोभवति । अववन्यंतेनो-त्तरेषेत्यर्थः अयमनामिषायः द्वितीयकपायांस्तावत्तद्वद्याभावात्रवद्याः ति । कपायाद्यनंतानुवंधिवर्जावेद्यमानापूत्रवस्यते । जेवेपुडतेबंधड इतिवचनात्। अनंतात्रवंधिनस्तुचतुर्विशतिसत्कर्गानंतवियोजकोमि-ध्यात्वंगतीयंथाविकामात्रकालंअनुदितानवन्नाति ॥यदादः॥ सप्त-तिटीकायां श्रीमटयगिरिपादाः इहसम्पग्रहिनासताकेनचित्रम-थमतोऽनंतानुगंधिनोविसंगोजिता एतावरोवसविभांतो न मिथ्या-स्वादिश्वयायसञ्चक्तवान् तथाविधसामग्रचभावात् । ततःकारांत-रेणमिथ्यात्वंगतःसन्भिथ्यात्वप्रत्ययतोम्योप्यनंतानुर्वाधनोचन्नाति । ततोत्रं याविकायाः यावताचाप्यतिकामति तावत्वेषामुद्दयंविनाः बंधडति। नरविकंमनुष्यवेद्यं प्रथमसद्दननं औदारिकद्विकं मनुष्यति-र्यगृवेद्यदेशविस्तात्मादिपुदेवगतिवेद्यमेवयन्नाति नान्यतेनासांदश-प्रकृतीनामविस्तसम्पर्ग्हाष्ट्रिप्परथाने अंतः । ततपुतत्पकृतिदश-कंपूर्वोक्तसप्तसप्ततेरपनीयते । ततोदेशविरतेअंतोदेशसप्तपष्टिर्पप्यते । ततस्त्रतीयकपायाणांत्रत्यारूपानात्ररणक्रोध १ मान २ माया ३ ४ सोभानां देशविखेअंतरनदुत्तरेवेषामुदयाभाषान् । अनुदितानांąŧ

चार्वधातः प्तचप्रकृतिचतुष्कंपूर्वेत्तिसप्तपष्टेरपनीयवे । ततः वे-वटिपमचे, इतिप्रमत्तेप्रमत्तसाञ्चरक्षणेपष्टेगुणस्यानकेविपर्श्वियते । इतिततःशोकः अरितः अस्थिरअग्रुभअयशः असार्तामत्येताः पदपकृतयः प्रमत्तांतेउच्छिद्यंते ततःकश्चिज्जीवःपूर्ववद्यायुःअयायुपोऽवंदकोदेवा-युरपिनचन्नाति । तेनसप्तापगमे आहारकद्विकस्पअववंधीभवति । अप्रमत्तपरिणामेनेबाद्धारकस्यबंधात तेन यःप्रमत्तेदेवायुर्वधमारभते सअप्रमत्तेगतोपिदेवायुर्वव्नाति आयुष्कस्यतुवोद्यनापरिणामेनवर्वय-नात्।सबद्धमानायुःअपमत्तेप्यागछेत् सदेवायुयन्नन्प्रकृतिपदक्षमेवो-च्छेदपति।तस्यशेषाःसप्तपंचाशतुभवंति। योदेवायुर्नवन्नातिससप्तकः मुच्छेदयति । तस्यपदकपञ्च।शतुभत्रंति । अस्याहारकद्विकंत्रंवे-भवति अयमत्राहायः अप्रमत्तयतिसंबंधिनासंयमविशेषेणाहारकद्विक-बस्यते । तसेहलम्यते । इतिपूर्वापनीतमप्यत्रक्षिप्यते । ततः सप्तपंचाशत प्रनराहारकद्रिकं क्षेपेएकोनपध्ठिः पर्दपंचाशत आहा-रकञ्जेपे अष्टपंचाशद्भवंति । सप्तमेऽप्रमत्ताख्येगुणस्थानकेइति । अपुष्वे, अपूर्वकरणाभिधानेऽष्टमेगुणस्थानकेभागसप्तकं तत्रप्रथमभान गेअष्टपंचाशत् बद्याति । ततः निद्राद्विकस्यनिद्राप्रचळालक्षणस्यां-तोभवत्यत्रनोबन्यते नोत्तरत्रापिउत्तरत्रवंदाच्यवसायस्थानाभावात् । उत्तरेष्वप्ययमेवहेतुरनुसरणीयः । ततः परंपर्पंचाञ्चत्भवंति । पंचः समागेष्वित्यर्थः । तत्रपंचभागानां समत्वेनात्रेकभागोविवक्षितः । ततः विशत्मकृतीनामंतोभवतिङ्त्याह । देवद्विकंदेवगतिदेवाछपूर्वीन रुक्षणं । पंचेंद्रियजातिः ३ प्रशस्तविहायोगतिः ४ त्रसनवकंत्रस १ बादर २ पर्याप्त ३ मत्येक ४ स्थिर ५ शुभ ६ सुभग ७ सुस्तर < आदेग्लक्षणं ९ वैकियादास्कतेजसकार्मग्रह्मणंशरीरचतुष्ट्यं ४ विकियाहारकांगोपांगळश्रुणंउपांगद्वयंसमचतुरस्रसंस्थानं १ निर्माण १ जिननाम २ अगुरुखवु १ उपदात १ परावात १ श्वासोच्छ्रास. १ 22

ट्सणं वर्ण १ गंघ १ रस १ स्पर्ध १ टक्सणमित्येतासार्विशत्मक्व-वीनांस्वपानेअप्रवक्तणस्य सम्भागेशेषाः यहविशतिमक्त्रपोक्ये-टनारं निया देवायु १ नतायु १ जिननाम १ ए तिन िंड् तेवारे सचोतेर बांचे । तेयांची मनुष्य ३ मीजी चोकडी

मापनी ४ वजरुपभनाराचसंघेण १ जीवारिक २ काढीए तेवारे विराति गुण्डाणे सङसङ चांचे, तेमांयी शाजी चीकडी कपाए-हार्डाए तेचारे प्रमनगुणटाणे तैसठ चांचे तेमांवी सोगमोहनी है ति १ असाता १ अधिर १ अग्रुभ १ अजस १ ए ज हैं अने आहारक मेठीई तेवार अपमत्त गुणटाणे ए गुष्-रागमाठ बांचे अने देवताना आऊखानी वंघ न दांचे ग्रहास्क २ नेलीये त्यारे अटावन पाये ॥ तथा जहरू णाना भाग सान हे ॥ ते पहेंछे भागे अग्रका होने १ र मन्ता १ एवं वे काडीये तेवारे पीले बीले केंद्र हर्दे भारे छप्पन छप्पन शांचे ॥ वैमाना हेन्द्वर इ े ग्रभ हायागीन ? समचलता ? बक्कान ? केन्स तेजत १ कामण १ विकिय उपान १ काहरूक देनक अयरुख्य १ जपपात १ उत्तम १ उत्तम १ माण १ ए तीस शोधे नहीं वैद्यरे अन्य देवाले वीसं, इगेगहीणं च ोगम्मि, वंधानाचे उन्हें द ॥ ३ ।

द्वाविंशतिः सचानिवृत्तिवादरप्रयमभागेभवंति। अनियडाति । अनि-वृत्तिकरणाख्यनवमगुणस्यानकस्य प्रथमभागे पुर्वोक्तद्वाविंशतिवंब एकेकडीनोवाच्यः तत्रप्रथमभागांतेपरुपवेदस्यछेदः ततोद्वितीयभागे पुकविंशतेर्वधः द्वितीयभागांतेसंज्वलनक्रीयस्पळेदःततस्तृतीयभागे-विंशतेर्येवः चतुर्पभागांतेसञ्चलनमायायाः छेदः ततः पंचमभागे-Sप्टादशानांबंधः तदंतेचअनिशृतिबादरस्याप्यंतः ॥ अनिशृतिबादर-चरमसमयेसंज्वलनलोभस्याप्यंतः । ततः दशमेस्क्रमसंपरायकेग्रण-स्थानके सप्तदशप्रकृतीनांचेथोअवति । सुरुमसंपरायस्यांवैज्ञानावरण-पंचकं । दर्शनावरणचतुष्कं । यशोनामउद्येगीत्रंपताः पोडशमकः तयः छिद्यंते । ततः। तिसु । विषु, उपशांतमोह ? क्षीणमोह २ समोगिकेवळी दक्षणे प्रविषुगुणस्थाने पुएकंसातवेदनी यंप्रकृतिवद्गाति । प्रकृतिप्रदेशकपाप्यकपायहेत्वभावात् । नस्थितिरसपोर्वेध । इति-सातस्यकेवलयोगमन्ययस्यद्विसामायिकस्यनृतीयेऽवस्थानाभावान् । इतिभावः । आहचभाष्यग्रयांभोनिषिः । उवसंतलीणमोहा । के-विष्णोपुरविद्ववंथेते। पुणदुसमिठियस्स। बंधगा न उणसंपरायस्सत्ति, अजोगम्मि, अयोगि केत्रळिग्रणस्थानेयोगाभावात् । ततोऽवंयका-अयोगिकेवळिनः ॥ उक्तंच ॥ सेळेसीपडिवन्ना । अवंधगा हुंतिना-यद्या । अयोगिगुणस्थानेर्वयस्याभावः " अणंतोयति । अनंतस्यत्रेघाः भावस्यनअंतोनक्षयइतिबंधाभावः । अंतरहितइतिउत्तरमकृतिबंध-उक्तोग्रणस्थानेषु ॥ ७ ॥

टवार्थ:--तैमांयी हास्य १ रति १ भय १ दुगंछा १ ए च्यार कार्डीड् तेवारे अनिवृचिवादर नवसुं गुणठाणुं वेहने पेहले भागे वावीस बांघे. पछे पुरुषवेद काढीए तेवारे वीजे भागे २१ शांचे. पछे संज्वलनोक्रोध काढीए तेवारे बीजे आगे २० गांचे. 38

पछे संज्वटनोमान कार्टाइं तेवारं चोथे आगे १९ बांचे. पछे संज्वटनीमाया कार्टाइं तेवारं पांचमे आगे १८ बांचे. तेमांगी संज्वटनोटोभ कार्टाइं तेवारं दशमा सहमसंपरायगुणटाणे सत्तर-कृतिनोवेच छे. तेमाया ज्ञानावरणी ९ दर्शनावरणी ४ अंतराय ९ उद्येगीय १ उत्तनायकर्मे १ ए सोठ कार्टाए तेवारे हरणारे उप-शांतमोह गुणटाणे पुकतानावेदनीव अर्थाच यार्गम दिणामोह एक-सातावेदनी बांचे. तेम्मे सपोगीकेवळांगुणटाणे पुकतातावेदनी बांचे. ए तीन गुणटाणे साता पुकत बांचे. चडदमे अपोगी केवळागुणटाणे यंदनी अभाव छे ते अनेन छे ए अवंदपणानी अंत छेहडी नती. ए तींव सहा अथंद होवे हेतुने अभावं बचनी अभाव छे. ॥॥॥

नाणंतरायदसगं, उद्यागोयंचसायजसनामं । इंसणचउसुहुमं जा, वंधइतिवायमंदाय ॥ ८ ॥

टीका-अय ज्ञानावरणादीनां कर्मणां सिद्यसित्रगुणस्थानेषु भेध सज्ञावंदर्शस्त्राह्य । नाणंतायोषि । < ज्ञानावरणीयपेचक अंतराय-पंचकंतिलनेद्रास्त्रां । च्रेन्द्रमोत्रं च पुनः यद्योनाम । दंसणथञ्जि । दर्म दर्शनावरणीयच्युष्कं । एताः मङ्गन्यः। ग्रुङ्गंजन्ति । सुम्मसंपराय-ग्रुणस्थानकंत्रावद्वाति । तन्नर्वन्नतन्तुल्यप्ववं । द्विदेशस्यम्न रार्थमाह्य। तिवारमंद्रायन्ति तद्वंथकाध्यक्तायानां वीवत्वे पृतासांवी-मृप्यमेत्रयावद्युणस्थाने अञ्चन्ध्यक्तायानां वीवत्वनद्वानावरणीया-चशुभमुक्तानांत्रीजोवं । सम्पग्दरमानाविव्यणपुरस्यत्तरस्या-शुभाय्यवतायान् यद्यम्बद्धस्यत्वयः। सातादिनांतृशुभानां-मृक्तानांत्रिय्याव्येशध्यक्तायात्ययंत्रस्यत्वाव्यंत्रप्ववाचे । ततात्वीनांतृशुभाव्याना व रोजनस्योजनस्युभाष्यवस्थायाम् गुभवकृतीनां रीजतीजनस्तिनस्य प्रकारोभयति । प्रसर्वेशसम्बद्धान्यकृतीनांस्तरकं राष्ट्र्यसायानांतीनस्ते-रीजोक्यः सेदेसोभयतिद्वर्द्धाम् । प्रकृतिकंशाभावशनद्वंधक्रम्या-सायभाकते तेषः ॥ ≤ ॥

हता है - इने हमें मानी का गुणहांगे हहे हैं। भा भागा-

स्पति कारण के प्रिप्ताय इश है र उंच भीव है सातारिसी है इक्का यह प्राप्ती तम मुद्दे निपति सती जीवी की । महत्त्व सपति स्वाप्तीयकोती समा मुख्ती कर की रत्या प्रश्ताम है दर्श-न्याय के प्राप्ती काम मुख्ती कर स्वाप्ताय स्वयं काम की है १०व है १४ तपून की । है प्रच्याप्ताय तासमें वार्ति की कि स्वयं काम मान कर की मान की काम सीन मुन्ती है इक्का कुल क्षण करना सार । पक्षी की नाम सी मान इस कुल की साम करना की साम की की नाम सी मान इस

वीमानिम आइद्देशे, निरंदुर्ग जा अपूनपदर्मसे । नोद कामाण जा, असायकेसे प्रमान जा ॥ ९ ॥ ६ छ - १२वन् ४ इनेन्स्सायम नाप्रस्थानसम्पात

क्षा मिन्द्र मिन्द्र है बागता प्रमुख है क्यांना देशका मानदेहमान अर्थेड सम्मुद्ध दिन मिनन्त्र सामाप्रस्तामम्बर्ग मानदेहमें हैने महिन्द्र है जह मार्ग्य क्षांचित्र क्षांचा स्थाप अम्पास क्षां अन्यान्त्र क्षांचित्र है जह मार्ग्य क्षांचित्र क्षांचा स्थाप अम्यास क्षांचा क्षांचा क्षांचा क्षांचा क्षांचा क्षां मान्यान्त्र कार्य कार संपरापंपावत् प्रदेशक्तपुवकपार्यनभिक्तकत्वात् । गोत्रकर्मणिनांधे-गोतंसास्वादनंपावदेवज्ञाति नोत्तरम्, अनंताद्वपंत्युद्याद्यद्वसंद्वेश-जन्यत्वात् । दम्गोतंत्वधःमसंपरापंषावत् प्रदेमुक्तमेववेदनांपद्वये असातवेदनांपंतिस्पात्वतः प्रमांचायत्वात् । प्रमादमस्यपत्वात् तनः परंप्रमादाभावात् सातवेदनांपत्तकपायं सक्ष्मसंपरापंपावद्वप्राति। अक्षपायवेदनांपत्त सपीयिकेविष्ठचरमसम्यातंवदाति योगास्त्रवत्वात् इति ॥ ९॥

ट्यापी:—दश्नावरणो कर्मनी नव प्रकृति छेते मध्ये थीणदी तीन (निक) पिहले पीने प्र आदित्य कहेतां वे ग्रुणटाणे यांचे। निदा? प्रपटा? एवे प्रकृति पहिटापी आटमा पर्यत। आटमाना पिट्टा भाग सूची बांचे। शेष दर्शनावरणो प्यार दशमाना अंत प्रची यांचे। ते पहिटा गापा मध्ये कहो छे. गीत्रकर्मनी प्रकृति २ ते मध्ये नीचगोपसास्वायन प्रचे ग्रुणटाणे यांचे. पछा न वांचे. उंचगोप दशमा सूची बांचे, तया वेदनाना र प्रकृति ते मध्ये असातावेदनी पहिटापी मोडी छट्टा प्रमत्त्रगुणटाणा सूची बांचे पछ न बांचे, सातावेदनीक्ताक्तापदशमा पूची बांचे, अक्षापीसाता तेरमा सूची बांचे, ॥ ९ ॥

मिच्छेआउचउगं, सासाणे निरयहीणतिगवंधो । मीसे न आऊवंधो, समने देवनरवंधो ॥ १० ॥

दीका—आषुः कर्मणिनतुष्पकारे तम् विध्यात्वआयुपधातु-पंत्रज्ञाति एत्, जीवपुक्रिमन्त्रमणेपुक्रमेवाधुर्वज्ञाति। तथापि वदु-जीवापेक्षयातुआयुध्यतुष्टयनेवसद्भवपुक्षत्वसुक्षः द्युप्योपिनिध्या-त्वेद्रव्यक्रियातुआस्त्रकेदयानदाह्यंः भिष्यात्वानंतानुत्रीपिविपाकात् द्र- व्यक्तियाअत्यंतंसमग्राप्वकरोति। तस्पग्रहीतेअसिग्रहीतत्वात् सास्वादने नरकायु नेवत्राति। सिथ्यात्वप्रत्यपत्वात्। तदशावेचतद्वयाभावात्। सिश्चेसिश्चास्थेयुणस्थानेआयुषः चंचप्वनभवति, विश्वेमरणाभावात्।

सम्पर्श्वदेवायुपोमकुष्यायुपश्चवः प्रशस्तपरिणतेर्मुख्यत्वात् उत्स्व स्पतिर्वगादिगतिहेतुत्वात् सम्पर्श्वपामेच आस्त्रवानांमांद्यवातायु-भायुर्वयद्ति ॥ उत्तेच ॥ सम्मदिद्वाजांचो चड्डविड्डपावंसमापरेकिचि, , अप्पोसिहोडवंथो लेणनर्निद्वयसं कुणई ॥ १० ॥

टबार्यः — मिथ्यात्वगुणटाणे च्यारे आऊखानो वंघ छे. जेवा परिणाम होय तेवा वंधाये, अने सास्वादनगुणटाणाने विषे पृक नरकनो आऊखा न वंधाई, अने बीजां तिन आऊखा ते किहा तिर्यच्चो मनुष्यनो अने देवनानो ए वंधाये. मिश्रगुणटाणे कोइ आऊखो न बांचे मिश्रमध्येमस्त्रो नथी. मच्यस्परिणाममाटे अपवा मिश्रनो स्थितिकाल अत्यद्धहुर्तनो छे तेव्यी आऊखानो स्थातकालनोसुहुर्त्ते मोटो छे ते माटे. हवे समक्रितगुणटाणे वेवतानो तथा महुप्पनो आऊखो बांचे बीजा २ आसु न बांचे. ते मध्ये देवता तथा नारका समक्रिता महुप्पना आऊखो बांचे थीजा २ आसु न बांचे. ते मध्ये देवता तथा नारका समक्रिता महुप्पसु बांचे। तिर्यंच तथा महुप्प समक्रिता देवतानो आऊखो बांचे ॥ १० ॥

देसाइतिग देवाउ, वंधई सेसया न वंधंति। मोहे छवीस मिच्छे, नपुंमिच्छविद्दीणसासाणे ॥११॥ इत्यः—देशवितितःसमास्यअपमनंत्रावत् देवापुपप्यंथः

मशस्त्विर्पणमस्यमावन्यत् । अपूर्वक्रणापितु शुक्रपणिणम्यान् त्येननाषुपः वेयद्दति तेनशेषकःअपूर्वक्रणापितेऽयोगिकेशळिपपताः अगुक्कमेरेक्सा न भवति । मोहत्तीयकाशिणकृत्यश्विरातिव्हाणे मिश्रमोहतीयं सम्यवस्यमोहतीयं वेवनाम्नि । यतः मिथ्यात्यरिक

a a agree of the

A STATE OF THE STA

A decomposition of the control of th

and the second of the second o

पाएकादशबच्येते पंबद्धा न बच्येते. अपमत्तङ्गाति—अप्रमतेअपूर्व करणे डुसोगति—अरतिशोकद्विकंतेनविनानवपृक्तांनांक्योभवति । शेषानवप्रकृतयःबच्येते । संज्वटनचतुष्कं ४ हास्यचतुष्कं ४ इ-रुपयेदंएयंनव ॥ १२ ॥

टवार्यः —तथा मीसदुगे कहेतां मिश्रग्रणठाणे समकित ग्रणठाणे अनंतावृबंधी ४ खीवेद न बांचे एटळे बार कपाय, हा-स्पादि ६ पुरुषवेद ए ओगणीस बांचे. मोहनीकर्मनां सात नवांचे देशविरतिग्रणटाणे थीजी चोकळी अप्रत्याख्यांना क्रोघ १ मान २ मापा २ लोभ ४ ए न बांचे. एटळे वे चोकळींनां आठ हा-स्पादि ६ पुरुषवेद १ ए पनर बांचे. मोहनीनी प्रमत ग्रणठाणे वीजी चोकळी प्रस्याख्यांना क्रोघ १ मान २ मापा २ लोभ ४ ए न बांचे. मोहनीकर्मनी तथा अप्रमतद्वयो कहेतां अप्रमत्त तथा अप्रधंकरण एचे ग्रणठाणे शोक १ अरति १ एवे विना संज्वला ४ हास्य १ रति २ भय २ हमंछा ४ पुरुषवेद १ ए नव बांचे वे ग्रणठाणे ॥ १२ ॥

हासचउहीणनवमे, सुहुमाओ अवंधगा उ मोहस्स । नामेमिच्छेचउसहिः सासाणे एगपन्नासा ॥ १३ ॥

टीका — द्वासीत्त द्वास्यवतुष्कं ४ द्वास्यसीत् २ अपजुपसा २ टक्षणाः प्रकृतयः द्वीयंते इतिद्वास्यचतुष्कंदीनवर्षभानिः रात्तिवादरणणस्यानेदोषाः संन्यटक्यतुष्कंतुरुप्तेदक्षपुते पंच वंध्यते। अनिद्वातिवादस्यवंनोसंज्यटक्यतुष्कंतुरुप्येदाभागेष्क्रभूतंतपणस्यप्य-एतः मोहनापस्यवंगो न भवति । वंयद् छ गृद्धभौ एग इति पदिषितिः ध्वात्। नामान् नामकर्वणः विदयात्येयतुःपष्टिम्कृतयोवस्यंते। दी- र्थकरनामाहारकशरीसहारकांगोपांगनयवर्ज्यस्तरकृतिवयसम्पग्द-शनपारिवाइगचेतनावीर्वस्यमशस्तकथाययोगपरिणामेन वंदात् । तद्दशावेचाव न वंधः सासाणे नसस्वादनेदिवीयगुणस्थानेनरकृगति १ नरकातपुर्वा २ एवंदिद्यवाति १ द्वीदिय २ वीदिय ३ चतुर्धिद्य-जातिचतुर्व्य ४ स्थावर १ स्क्रम १ साधारण १ अपर्याप्तक्यं १ स्थावर्यकुर्वः ४ सेवावर १ द्वेडकं १ आतप १ एतब्रयोवशमङ्क्रन वीनांसास्यादनेवंथो न भवति । शेषायुक्षंचाश्चनाममङ्करायो बच्चेत ॥ १३ ॥

टवार्थ:—हास्पादि च्यार विना नवने गुणटाणे पांच प्रकृति संज्यकता च्यार ४ पुरुषवेद १ ए पांच बांचे. सूक्ष्मतंपराययी मांडी उपरहा सर्वे गुणटाणा मोहनीकर्मना अवंचक छे. दशमाधी उपरांत मोहनीकर्म न बांचे. हवे गुणटाणे नामकर्मनी मुकृति कहेछे. मिस्पारवगुणटाणे आहारकद्विक २ जिननामविना चोस-हनो बंच छे. सास्यादवगुणटाणे वेर नामकर्मनी निक्छी पुटछे एकावन रही गति २ जाति पंचेन्द्रिय १ वहीर ४ उपांग २ सं-घरण ५ छेरटाविना संस्थान ५ डुंडकविना, वर्णादि ४ आगुएवी २ नरकविना, विहायोगिति २ पराचातादिक ६ वसादिक १० अ-स्पार ६ ए पुकावत्र बांचे ॥ १३ ॥

छसगदुगदुगइगइग, अहीयातीसाअपुत्रकरणंज्झा । इगइगनवमेदसमे, सेसा नामं न वंधति ॥ १६ ॥

टीका—छ सगति १४ मिश्रनाम्नः पर्टिनेशत्मृहतयो वय्येत । तिर्पेगृद्धिकं २ हुर्मगत्रिकं ३ मय्यसंहननचतुष्टयं ४ मध्यसंस्थान चतुष्टयं ४ अग्रुभविहायोगितः १ उयोतः १ युताः पंचरदापृहत-यःसास्वादनांतेअंतर्माताः वैनशेषाः पर्टिवसन्यकृतयोवस्येते । ताःपद्विदात् जिननामसंपुक्ताः सम्यान्वेसारिग्यत् वस्ये । तथा देशितास्वस्यद्विकं आदारिकद्वित्तम्बन्ध्यस्य वस्ये । तथा देशितास्वस्यद्विकं आदारिकद्वित्तम्बन्ध्यस्य स्वत्तनवर्धाः नामसः द्वार्षिकस्यद्विकं आदारिकद्वित्तम्बन्धयः सम्यान्वस्य स्वत्तनवर्धाः अप्रमतेचअस्यिद्वस्य । अप्रयं स्वयः एनेश्वयः प्रस्तव्यं आहारक्ष्विक्रमिन्द्रके । अप्रवं कर्षाप्य प्रस्तवि । स्वयः । स्व

टबार्थः — मिश्रमुणटाणे नामकर्मनी छत्तीस बांचे. पत्ररानीकक्री ते केही तिरिद्धा २ दुर्भग ३ मध्यसवयण ४ मध्यसंस्थान ४
अद्युभविद्यागिति १ उद्योत १ ए पत्रर न बांचे । तथा समक्रसम्प्रणटाणे जिननाम बांचे. सज्तीस बांचे. देशविरति ग्रुणटाणे
तस्त्रीस बांचे. मन्ध्यदुग २ औद्यारिकद्विक २ बक्रम्रथम-नाराच १
ए पांच नांकळी तथा प्रमत्तरुणटाणे पण बनीस नामकर्मनी बांचे
तथा सातमे ग्रुणटाणे अस्थित १ अग्रुभ २ अजस ३ ए तीन
कार्डाइं आहारकद्विक २ मेळीइं एटके एकतीस प्रकृति बांचे.
आटमे ग्रुणटाणे इकतीस नामकर्मनी बांचे । देश इंग्यारमे,
तवारे नदमे दशमे ग्रुणटाणे एक जसनाम बांचे । शेष इंग्यारमे,
तस्ति, नदमे दशमे ग्रुणटाणे नामकर्मनी प्रकृति बांचे नहीं. हेतु
अगान मार्ट ॥ १४ ॥

आमुहुमं अठण्हं, उवसमखीणिम्म सत्तमोहविणा । चउचरिमदुगवेइईं, अघाइकम्माइ नियआइं ॥१५॥

टीका-डाते देवचंद्रमणि विरचितायांस्वोपज्ञविचारसारशेका-यांत्रेयाधिकारः त्रेयाविकारमेनविज्ञण्यता यन्मयार्जितंपुण्यंइहकर्मत्रं-धमुक्तोरोकःसर्वेपितेनास्तु । सांप्रतमुद्रयाधिकारस्त्रपूरुतः उदय-रयानानि श्रीण अष्टो सप्त चन्चारि तानिगुणस्थानेसंभाव्यते । आग्रहु-मंति । सूक्ष्मतंपरायगुणस्थानकममिन्याप्यउद्येअष्टावेवकर्मप्रकृतयो-भवंति । अयमर्थः मिष्यादृष्टिगुणस्यानकमारम्य मुक्ष्मसंपरायंयावदु-दयेअष्टाविषक्रमाणिप्राप्यंते, उवसम् उपशांतमोद्रलक्षणे । खीणंति क्षीणमोद्धरक्षणेगुणस्याद्वयेमोहंविनामोद्धनीयंवर्जयित्वा सप्तकर्माण उदयेभवंति मोहनीयस्योपशांतन्वावृश्चीणत्वाद्वा, चरमद्विकेसयोगि-केवल्पपोगिकेविकको गुणस्यानद्वये उदये बतस्रोऽवातिकर्मप्रकृतयः माप्यंते चातिकर्मचतुष्टयस्पशीणत्वान् , निअयाइति, निजकानिस्य-कृतानिनान्यनुकृतंकर्म अन्येनमुज्यते ॥ उक्तंच ॥ पंचमांगे से नूणं-भवेते अत्तकडाईकम्माइंबेगंति १ । परकडाइंकम्माइंबेगंति १ गो, असकडाइंबेयंति नोपरकडाइंबेयंति ॥ १५ ॥

टवार्य-च्युक्संतपाय दशमा ग्रुणटाणा ग्रुषी आउक्तमंत्री छूप छे. उपशांतमोहराणटाणे शीणमोहराणटाणे सातकमंत्री छुप छे. मोहनाक्रमंत्री उदय नवी. चौमा छेड्छे तेसी धउदमे ग्रुणटाणे च्यार कर्म अवाती. वेदनी १, आउस्ती २, नाम ३, ग्राप १, प च्यार बेट्टे अन्मितेस्फुकहिंद्र की आस्पाना ज्ञानादिक ग्रुण वे कारणकार्य वे घर्मे छे. वे माटे वे ग्रुणने घात इसे वे चाती कर्म कर्तीई अने अस्यावाचारिक च्यार ग्रुण वे कार्यरूप छे तेहने आयरे वे अवाती कर्हीई ॥ १५ ॥

टीका-अयोत्तरोह्यप्रप्रतयोगुणस्यानेपुचित्यने,(उच्यन्ते)ओ हैमिन्छेड्रत्यादित्तव हमेपुत्रहानांययाम्यास्यित्यन्त्रातां उद्दयसमयप्रामा नां पदिपाकेनानुभवनेनवेदनं 🛭 उदय उध्यते । ओवे सामान्येमिन ध्यात्ये यीजेशिद्वितीयेसाम्बाह्ने द्वितिंशस्यभि हे शतं मिश्यात्ये मसन्द्रात षिकेशतंसास्यादने एकाधिकंशतंत्रदयेत्राप्यते तत्रपंधीक्तमे कशतंत्रिश -स्यधिकप्रकृतीनांसम्यक्त्यमोद्वमिश्रमोद्वमिलने त्राप्रिंशस्याधि कंशनम्-द्रपेप्राप्यते । सम्यक्त्यमोहविपा हस्नुसम्यक्त्यंशुक्रनस्यश्रद्धानस्थन पंमोहपतिशंकाचितिचारेण मोहपनि ईपन्मिखनंकरोतीति सम्पन क्रवमोहः मिश्रमोहःमिश्रमिश्यान्वंसम्यक्योभयरदितं च मोहः मिश्रमोहद्दतिमिध्यात्वेसप्तदशक्षातं अद्येभवति । मिश्रमोहनीय ? सम्यक्त्रमोहनीयं १ जिननाम १ आहारकाद्विक २ एतासांपंचा-नांउद्योमिष्यात्वेनास्ति । इदमबहृद्यंमिश्रोदयस्तावन्तस्यग्मिष्या-दृष्टिगुणस्यानेएवभवति । सम्पक्त्योदयस्तुअविरतसम्पगृदृष्ट्यादीज्य-योभवति । आहारकद्विकोदयः प्रमत्तादी, जिननामोदयः सयोगिकेव-ल्पादीभवति। तदिदंप्रकृतिपंचकंद्वाविश्वतिशतादपनीयवे ततोमिथ्या-<mark>दृष्टिगुणस्थानेसप्तदशशतंभवतीतिसुक्ष्मविकंसुक्ष्मअपर्यातसाधारणरू</mark>-पंअतःपंचिमध्यात्वं च एतत्प्रकृतिपचकस्यमिध्यात्वेअंतोभवति । अयमत्राशयः सूक्ष्मनाम्न उदयः सूक्ष्मिकेदिवेषु अपर्यातनाम्नः सर्वेष्य-पिअपर्याप्तेषु साधारणनाम्नोऽनंतवनस्पतिषु आतपनामोदयस्तु बादर पृथिवीकायिपुएवपर्याप्तेषुएवनचैतेषुस्यितोज्ञीवः सास्वादनत्वंलभते। नापिपूर्वेप्रतिपन्नस्वेपूरपद्यंते । नयापिननस्यातपनामोद्यस्तत्रोत्प-व्रमानस्यासमाप्तशरीरस्यैवसास्वादनत्ववमनात् समाप्ते च शरीरे तन्ना-

ओहेमिच्छेत्रीए, दुवीससत्तरङ्गारअहीयसयं ।

मीसेसपंचसम्मे, चउसयसगसीइ देसम्मि ॥१६॥

तपनामोदयोभवति । निय्यान्त्रोदयः पुनः मिय्यादशवेवतेनेतासांप-चमकृतीनां मिथ्यादृष्टाकृतयम् वातरत इदंशकृतिर्वचकं प्रवीक्तसभूदश शतादपनीयते । नरकानुष्टर्मपनयने च एकादशरातंभवतीत्येनदेवाह " सासाणेडगारसयं नरवाणुत्रज्ञियदयनि " नरकानुपूर्यदयोहि नर-के बक्रेणगच्छतोजीवस्वभवति न च सास्वादनोनरकंगच्छतीति ॥ पद्धतंत ॥ बृहत्कर्मस्तवभाष्ये, नरयाणुपुन्यिआण्, सामणसम्मं-मि होइनहउदयो । नस्यम्मि जनगच्छङ् । अर्जाणज्ञ्ञङ् देनसातम्स ॥ १ ॥ तनोनस्यातुपूर्वीसूक्ष्मित्रतातपमिध्यान्यस्थापंमकृतिपः दक्षं सप्तरशहातारपनीपतेरोपंसास्यार्ने पुकारदाशनंभववीति । मी-स्रीत मिश्रवक्षणेतृतीयगुणस्यानं सनमे बदानप्रकृतीना मुदयः अनं-ताञ्चंधिनध्यत्वारः श्रोधमानमायारोभा स्थायस्नाभएवंद्विपविकः द्याःपंचेंद्रियज्ञात्यपेक्षयाअसंप्रणोः होद्रियज्ञातिविदियज्ञातिचतरिद्धि-यज्ञातयण्तासांनवानांत्रकृतीनांसारपादनांतेवस्यांतः विभेवदयोनाः स्ति । इयमत्रभावता । अनतात् विधनामृद्येष्टिसम्यस्त्वताभएवनः भवति ॥ यदाद्वः ॥ श्रीभद्रवाहरत्रामिपादाः पत्रमिलस्याणउद्देशे, निपमासंजीपणावसायाणं । सम्मंदंसणटानं, भवसिद्धिपात्रि न सः हेति ॥ १ ॥ नापिसम्यग्निध्यास्यं होप्यनंतानुबन्धदवेगम्छितयोः पिपर्वप्रतिपत्रसम्परूरोऽनंताव्यंधिनाभृदयस्रोति सोपिसारयाद्वरू-यभवतीरयुत्तरेष्वासामुदयाभावान् । स्थावरवेदियजातिविवतेदियजान सपरत्यपारवमेकेदियविकलेदियवेद्याएव उत्तरगुणस्थानानिल्साज्ञ-पंचेदियण्यमतिषयते। पूर्वमतिषत्नोषिषंचिद्वेययेवमध्यतियत्तरेष्याताः भुदयाभावः । तिर्थगानुपूर्वीयनुप्यानुपूरीदे गनुपूर्वीपृतदानुपूर्वीउदयः मिन्ने न भर्मत मिन्नेमरणाभारान् । न सम्मनीसो कुण्ड कालमिनिक-चनात् । सारवादनीर्वे हा दशक्षि रक्षातात्र हा दशक्र करोडवर्गा देते । मिभमोहो इयधावभवति । तेन शतबिबेउदरे अस्ति । सम्मेति ।

तेन होपाः नवनवतिः तत्र सम्पात्त्वश्रीहर्नापंचानुपूर्वादन्तृश्रव अत्रउत

येप्राप्यते ततः सर्वजीवापेश्चयासम्यक्त्येचतुर्गव रुगतं उद्येप्राप्यते । तत्रजपदामक्षाविकसम्यान्वेसम्यात्वमोहनीयस्योदवीनभवति।सम्प क्रवमोहरपातिचारहेतुत्वात् प्तयोश्चनिरातिचारत्वात् न राम्पन्त्वेनो

होदयः । श्वयोपशमसम्पन्त्ववतांसम्पन्त्यमोहनीयोदयोभगति प्रति

पन्नसम्परत्वः पूर्वपद्धाराः अभिनयं चा वध्याकारंकरवाचतुर्पुगतिएगः

स्थानेउद्येमाप्यते । सगसीद्दति अप्रत्याख्यानापरणाद्यत्यारः क्रोय-मानमायाटोभाःमञ्जादुर्वेतिर्यगानुष्वी विकियशरीर्देकियांगीपांगं-देवगतिदेवातुपूर्वदिवायुः नरकगतिनरकातुपूर्वीनरकायुः दुर्भगंअ-नादेयंअयशङ्खेतासांसप्तदशपकृतीनांअविरतिसम्यगृदृष्ट्यांतातृउद-यंप्रतीत्पछेदोभवति । तत इगाः सप्तदशप्रकृतयः प्रवेतित्तचतुःश-तारपनीयंते शेपासताञ्जीतिर्देशविरतेउदयेभवति इदमनतात्पर्य द्विती-यकपायोदयेहिदेशविरतिलाभएवनिषिद्धः यदागमः । वीयकसायाणु-दये, अपद्यक्ताणनामघेट्याणं । सम्मदंसणटाभं, विरपाविरयंनहुट-हिति ॥ १ ॥ नामिपूर्वेम्रतिपत्रस्यापिआनुपूर्वीउद्दयस्तपरभवादिसम-येपुत्रिष्वपांतराहगतात्रदयसंभवः सचयथायोगंमनुजितरश्चांवर्षाष्ट-कादुपरिशत्संभविषुदेशविस्त्यादिग्रुणस्थानेषुनसंभवति । देवद्विकं-नरकद्विकंचदेवनारकवेद्यमेवनचतेषुदेशविस्त्यादेः संभवः । वैक्रिय-शरीरवैक्रियांगोपांगनाम्नस्तुदेवनारकेपुर्यस्तिर्यग्मनुष्येतुपानुर्येणा-विरतिसम्यमदृष्ट्यंतेषु यस्तुउत्तरगुणस्थानेष्वपिकेषांचिदागमेविष्णु-कुमारस्थूलमदादीनां विकयद्विकस्योदयः श्रुयते । सचोत्तरवैक्रियत्वाद-त्रनिविषक्षितः गुणस्थानेयोगगणनायां हेतुगणनायातुविवक्षित-

च्छति तस्यानुपूर्वा उन्योअंनराजेभगति । तेनचनुरविकंशतंचनुर्वेगुण

सम्पात्वेजविरतिसम्पात्त्वदञ्चणेगुणस्थानिमधनोहोदपोनभगति।

एउड्डभंगमनादेर्याद्वेकामित्वेतस्तृतिस्रः भकृतयोदेशिसत्यादीगुणप्र-रयमात्रोदयंतद्दर्यतार्भावत्वेव्यविद्यवेदेदित्दगप्तिति ॥ १६ ॥

टवार्यः-हुवे उत्तरप्रकृतिनो उदय चउदमे गुणटाणे कहे छ ते मध्ये ओघे एक्सोवावीस छे. ज्ञानायणी ५ दर्शनावरणी ९ वेदनी २ मोहनी २८ आऊत्वा ४ नामकर्मनीसडसद्दी ६७ गोत्र २ अंतराय ५ ए एकसो ग्रांशसनो उदय छे. मिथ्यात्वगु-णटाणे मिश्रमोहनी १ समकितमोहनी १ जिननामकर्म १ आ-हारक २ ए पांच कार्डाड तेवारे निष्यात्वे एकसो सत्तरनी उदय छे अने सारवादनगुणटाणे सुपम तीन आतप १ मिध्यात्व १ नरकातुपूर्वि १ ए ६ कार्डाइं वेचारे एकसी इग्यारनी उदय छे मिश्रगुणटाणेअनंतातुर्वेची ४ स्थापर १ जाति ४ आतुपूर्वि ३ ए बार काडीइं मिश्रमीहनीभेटीइं वेबारे एकसोनीउदय छे, तथा सम्प्रितग्रणटाणेमिश्रमोहनी ? काडिये अने सम्प्रितमोहनी ? आतुपूर्वि ४ वे नेर्टाइं वेवारे एकसो च्यारनो उदय छे वे मध्येयी देविनक ३ नरकर्शक ३ विकियपुग २ मनुष्यानुपूर्वि तिर्पेचानुपूर्वि १ पीजी घोकडि ४ हुभँग १ अनादेय १ अजस १ ए सत्तर कादीई वेबारे देशिवस्ति ग्रुणटाणे सत्यासी प्रकृतिनो उदय छे. ॥ १६ ॥

इगसीछगदुगसयरी, छसठिसठीयइग्रुणसठीअ उवसंतंताखीणे, सगपणपन्नाउ वेयंति ॥ १७ ॥

टीका—प्रमचान् उपकांतमोहंयान् एकाशीतिः प्रमचे छगसपरित्ति परसप्ततिः अपमचेदुगसपरिति द्वासप्ततिः अपूर्वकरणेङ-सर्टितिपर्पष्टिः । अनिज्ञतीस्तर्दियत्तिपष्टिः । सङ्क्षसंपर्धेएकोन- पष्टिः । उपशानमोद्वेषुत्रंगीजनीयं । इपनत्रभागना । निर्पमातिः तिषैगायः नीचैमेर्वित्रेष्ठयोतेच वतीयाः क्यायाः बरमाञ्चानानः रणाश्चन्त्रारः बोचमानमापाङोभा एते जशैसत्ताक्षीतेर्मेद्रयाद्वपनीपते । तदावमते आहार संशीरआहार संगोपागळ छणपुगळवर्श्वपान् प्रसन श्रीतिरुद्रयेभवति । इदमनदुद्य । तिर्यम्मनितिर्यगामुपीतिर्यग्वे-चेपुवतेपुचदेशपिरतांनान्येपगुणस्थानानिचरंते नीतराणीत्यत्तरेषु तदुर्याभायः । मधिगाविनुनिर्यगतिस्वाभाष्यान् । वृत्रीद्यिकनपरा-वर्तते । तत्रश्चदेशविरनस्यापितिरश्चीनी वेगी बोदयोदस्य प्रमुखेगपरनः सर्वस्यदेशविरतारेगुंणिनोगुणप्रन्ययात्रभृगीतमेत्रीदेति । उत्तरतनीच-र्गोतोदयाभावः उद्योतनामस्यभावस्तिर्यन्वद्यतेष्यदेशविस्तांतान्येय-ग्रुणस्यानानिनोत्तराणि । उत्तरेषुनदुदयाभाषः यद्यपिपतिर्वेदियेप्यु-धोतनामोदेति । उत्तरदेहेश्रदेवजङ्गतिवचनान् नथापिस्वरुपत्वादि-ना केनापिकारणेनपूर्वाचार्यनंविवक्षितं इत्यस्मामिरपिनविवक्षितं-भंगाधिकारेवियक्षितमपितृतीयकपायोदपेदिचारित्रलाभएवनभवित। उक्तंच ॥ श्रीपूर्ण्यः । तङ्गकसायाणुद्रुष् । पश्चक्रवाणावरणनामने-ष्ट्राणं । देसिक्कदेसिनरइं । चरित्तरुंभेनउटहंति ॥१॥ इत्येताअप्टी-मकृतयः पूर्वेक्तसप्तार्शावेरपनीयंतेरीपापकीनार्शातिः। तत आहा-रक्षुगर्रक्षिप्यवेयतप्रमचयतेराहारक्षुग्रहस्योदयोभववि इति एका-शीतिः । ततः निदानिदा १ प्रचलप्रचला २ स्त्यानर्द्धिरूपं-त्रिकं आहारकयुगळं एकाञ्चीतिरिदंपंचकमपनीयते शेषाः ध्रसप्तति-रप्रमत्तेउदयेभवति ।

त्वात् अप्रमत्तेनसंभव प्रमत्तेपृत्रविक्र्यंअप्रमतेपिआहारकोदयीप्यवज्ञति तथापिकेनापि-कारणेनऔदारिकोदयमुख्यत्वेननायीक्रतमिति आहारकापचयीवा-रिकोप्ययीचाममच्हतिवचनात् । कियमाणेक्रतमितिस्प्रोक्तत्वा-

द्याषिङ्तंयोगाधिकारेत्विषकृतमेव । सम्यक्त्वमोद्वनीयं अर्द्धनाराच-कीलिकासेवात्तंब्रञ्जणसंहननत्रिकं पूर्वेत्तायाः षरसप्ततेरपनीयंते-शेषाद्वासप्तिः अपूर्वकरणेउदयेभवति । भावार्यस्तुसम्यक्तवमोहे-क्षपितपुर्वभेणिद्वयमारुइवे इति अपूर्वकरगादौ तदुदयाभावः । अंतिमसंहननत्रयोदयेतुध्रेणिमारोद्वयेवनशक्यवे । तथावियविश्रद्धे-रभावान् परिणामविश्वदिधवीर्यवाहल्याद्रभवतिवीर्यवाहल्यंचसंहन-नकारणेनतस्मान् अतिमसंहननानां मां चात्नतार स्वीपों छासइति । हास्यादिपद्कोदयमाभित्यापूर्वकरलेणुवभवति । तेनापूर्वकरणांते प्वांतः तेनानिश्ति रूरणेहास्यादिषद्ररहीनंभवति । तेनपर्षष्टि-र्गनिश्चिबादरे उदये भवति । वेदत्रिकं र्ह्यावेदनपुंसकते दपुरुपवेद-हमणंसंज्वलनविकं ऋोव १ मान २ मापालक्षणं ३ एतासां-षण्णामनिवृत्तिवादरेछेदोभवति । तत्रश्चियाः श्रेणिमारोहंत्याः स्ती-वेदस्यमथममुच्छेदः ततः ऋमेणपुंवेदस्यनपुंसकस्यसंज्वलनत्रय-स्पच, पुंसस्तु भेनिमारोहतः प्रथमपुंवेदस्योच्छेदः ततः ऋनेणस्त्रीवेद पंडवेदस्य संज्वलनयस्योध्छेदः पंडस्यतुश्रेणिमारोहतः प्रयमं पंड-वेदीच्छेदः तत स्त्रीवेदध्वेदस्यसंज्वटनवयस्योच्छेदः एतस्प्रकृति-षदकंप्रचीक्तपद्पष्टेरपनीयते शेषा षष्टिः सक्ष्मसंपराये उदये भवति अन-चतुर्यहोभांतः इयमेकापकृतिषष्टेरपनीयते शेपाउपशांतमोहेएकोन-पष्टिरुद्रये भवति। ततः ऋषभनाराच १ नाराच २ संहननद्रयंउपशांत-मोद्देभवति । प्रथमसंहननेनैवञ्जपकश्रेण्यारोहान् तेनमृस्तपृवसं-हननद्भयाभावेक्षाणमोहस्यसप्तपंचारात् उदयेभवति ततः निदा १ प्रचटाटक्षणनिदाद्वयाभावे २ क्षीणमोद्धरयचरमसमयेपंचपंचारात उद्येभवति । अपरेपुनराहुः उपशांतमोहेनिदामघळयोरुच्छेदः । पंचानामपिनिद्राणां बोटनापरिणाने भन्तयुद्धः क्षपक्राणांत्वतिविश्रद्धः त्वामनिद्रोदयसंभवःउपशयकानांपुनस्नतिविशुद्धत्वातस्यादशीति १७

दसर्व-प्रवत्तगुणदाणे निवंत्रगति ? निवंगाम ? नाव-र्गीत ? उद्योत ? तीओ चो हुई। इंगु आठ हाटीई अने आहा-ररुदुगनेलिये नेपारे प्रमत्ते द्वैष्टयासीनी उत्त्व छे. अप्रमतगुण-टाणेबी पड़नी है आहारक २ नी उत्य काडीई नेपारे छड़तानी उदय छे. तिहां सातमे गुणटाणे हेनु अनि हारे पौगाधि हारे आ-हारक शरीर कपो छे, अने उदयमें ना कपो छे. ते नपी आहा-रक टिच्च प्रमत्ते करे अप्रमत्ते न करे, निर्ण व्यवहारनये कर-वाने अभावना छे. परंतरवस्त्रनचे आहारक शरीर उदय छे. अपूर्वकरणे समक्तिमोहीनी तीन संघपण काटीये तेवारे बदुत-रनो उदय छे. नचमे गुणटाणे हास्यादिक छ काडिये तेवारे छा-संजीनो उदय छे. नेमांथी संज्वल ३ वेद ३ ए ६ काडीये तेवारे सक्ष्मसंपराये साटनो उदय छे. नेमांथी संज्वलनो लोभ काढीई तेवारे उपशानमोहगुणटागेइगुणसाटनी उदय छे. बारमे गुण-टाणे ऋषभनाराच १ नाराच २ ए कार्डाये नेवारे पहिले भागे सत्तावननो उदय छे पछे नीडा २ कार्डाइं तेवारे पीजे भागे पंचावननो उदय छे. ॥ १७ ॥

वायालसयोगम्मि, वारसपयडी अयोगीचरमंते। , वेयईउईरणाय, अयोगीविणुसवगुणठाणे॥ १८॥

टीका—त्तपाद्गीणमोहांतेज्ञानावरण ५ दर्शनावरणचनुष्टपं ४ अंतरायपंचक ५ मपनीयतेतवादोगेकचव्यारिश्चार्यभवत्वामोदयाद्य तत्वदोपेद्विचव्यारिशत् सयोगिकेविलिनमवित ततः सयोगिकेव-रूपेतेऔदारिकद्विकं २ अस्थिरिहकं २ स्थातिद्विकं २ प्रत्येकिकंवे ३ प्रदर्सस्यानानि अग्रुरुग्रेगुरुक्त अग्रुरुग्रेगुरु १ उपवात २ परा- घात २ उच्छ्वास ४ छम्नणं वर्णेचतुष्कं वर्णे १ गंध २ ॥ ३ स्पर्शे ४ टक्षणं निम्मीणं १ तैजसशरीरं १ कार्मणशरीरं १ वजनायभनाराचसंहननं १ दुःस्वरं १ सुस्वरं १ सातासातयी-रेकरतरत् कस्यचित्सातोच्छेदेऽसातंतिष्टति कस्यचित्असातोच्छे-देसातं च तिराति इति विंशत्यकृतीनां छेदे ततः अयोगिकेविटिनि द्वा-द्यप्रकृतयः उद्येभवंति, त्रसनिकं ३ मनुष्पद्विकं २ पंचेन्द्रियजाति १ जिननाम १ उद्येगींत्रं १ सुभगत्रिकं ३ एकावेदनीयम-कृतिः १ एवं द्वादश अयोगिचरमांते व्यवन्छिद्यंते । इत्यदयाभावे नि प्कर्मेतेति प्रसंगागतमुदीरणास्त्ररूपं टिस्पेते । उद्यावस्थाऽम्प्रसा-नां सत्तागतानां धर्कामृतानां वीषंकरणेनाकृष्य उदयत्वेन मीपते सा उदीरणा ॥ उक्तंच कर्ममकृती "जंकरणेणुक्छुट्टीय। उदये दिण्डाई उ-ईरणापुसा'' इतिवचनात्, सा च ओघतोडाविंशत्यधिकंशतंभवति । त-प्रमिष्यात्वे सप्तरशाधिकंशतं सास्वादने पुकादशाधिकंशतं। मिश्रे शतं-सम्पक्ते चतुरिक्तंशतं देशे सप्तार्शातिः ममत्तेपुकाशीतिः तमाममत्ते चदपे(स्त्यानींद्व) यीण क्रिनिकं ने आहारकदिकं ने छिचते, उदीरणायांतु एतरपंचकं वेदनीयद्विकं मनुजायुः, उदीरणानु संक्षेत्रीन भगति ततः परं संद्वेशाभावान् मकृतिवयं नोदीरयति तेन विसप्तस्थदीरणा-भवति। ततः संदृतनिवकं सम्यक्त्वमोद्दनीयं पृत्ववतुष्कापगमे प्-कोनसप्तिरेवंमक्रयपहारे सयोगिकेविति एकोनचत्वारिशद्वदीरणा-भवति। सयोगिचरमांते सर्ववासोदीरितत्वान् । अयोगिगुणे उद्यप्य नोदीरणा एवं अयोगिनंबिनास्त्रीयः वाने द्वीरणज्ञातस्या । अन्यंच्यीतिसत्कर्मापि स्तियुक्तसंनमेण संक्रमय्यक्षपयति इतिरोपः 11 35 11

ट्यार्थे—ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ४ अंतराय ५ प् चउद कार्डाये वीर्थकरनामनेक्षिये वैवारे सयोगीकेवर्शाग्रणटाणे

ŭ



टवार्थ—गुणटाणे उदीरणा नथी, सता पंच्यासी छै. वेसिन-सुकतंकमे बार मध्ये राक्रमी खिप छै, हवे आटक्समी मिन उदय बिह्ये छै. खींणमोहग्रणटाणा ग्रुखी पांच पांच्यो उदय छै. बातावरणी तथा अंतराध्यो वारमाञ्च्यटाणा ग्रुखी उदय छै. पीजा बरानावरणी कर्मनी ममत्तव्रपटाणा ग्रुखी नवमहातीनो उदय छै. अमत्तवी मांडी बारमाञ्चणटाणाना मध्यमागा ग्रुखी दर्शनावरणी ण मकुतिनो उदय छै, भीणक्रीतीन नदी. बारमाने छेहुछै भारी दर्शनावरणी च्यारनो उदय छै. बेरमे घउदमे दर्शनावरणीनो उदय नती ॥ १९॥

छपणदुगदुगअहिया, वीसाअठारचउदस दुगंम्मि । तरससगङ्गउदयो, सुहमंजा मोहणीजस्स॥ २०॥

अथमोहनीयवृहतीनां उदयो ग्रमस्थानेदिशहाह, उपणत्ति

छद्दति,पडअधिकाविंशतिर्मिथ्यात्वेमोहनीयस्योदयस्तत्रसम्यक्त्वमोह-मिश्रमोहोदयः स्वस्वस्थाने एवभवति तेन मिथ्यात्वेकपायपो उशक्ती-कपायनवकं मिध्यात्वमोहश्चएवंपिङ्गवातिमकृरयुद्यपोऽनेकर्जावापेश-याभवति । एकजीवापेश्चयाज्कर्षतःमकृतिदशकमेवीदेति । पणति, पंचाधिकाविंशतिः पंचविंशतिः सास्वादनैज्दयेभवति । मिध्यात्वो-दमधनिष्यात्वेषुव नोत्तरत्र, हुगहुगत्ति-द्विकद्विकअधिकार्विशतिः । इत्यनेनद्गविंशतिर्भिभेद्गविंशतिरेवअविस्तसम्पक्त्येउद्येभवति तनअनंतानुरंधिचतुष्ट्यं सम्यक्त्यमोहमिय्यामोहं विनादाविंशतिरुदः पेमिश्रेभगति । अनंतालुपंषिचतुष्कंमिध्यात्वमोहमिश्रमोहोदयंवि-नारोपाद्वाविंशनिः सम्पन्त्वेउत्वेभवति । अठारति-देशविरतै। अ-मत्यारुयानचतुष्टयमंतरेण शेषाअष्टादशमोद्वर्नायमकृतयः उदयेभवंति। प्रत्याख्यानसंज्यवनाष्ट्रकं नोकपायनवकंसम्यक्त्वमोहनीयं च एता उर्दे भवेति। प्रमत्ते प्रत्याख्यानावरणचतुष्टवहीनं प्रकृतिचतुर्वशक्य दवेभ रति । आर्त्रेक्स्णास्ये गुणस्याने सम्पक्त्यमोहं विना प्रमोदशपः इतपउदनेभवति । अनियतिनादरे दारयपर्कोत्याभाने होपाःसप्तउ-दरेभवंति । अपर्वकरणविद्वारपोद्यसंभवस्तुनिमित्तालंबनत्वात्स-शिर्मिनशायां हर्षेद्रयः प्रशास्त्रोषहास्यसदावेषुपभवति । प्रा अनि । चित्रादरेनु शुक्तव्यान स्याप प्रस्यान्स्य क पर्कमपिभावनीय पावरंबनम्बयन्वेनर्नदेशायतायांमहानदेष्वं नतु हुर्गः । आनंदहर्गः यो कः प्रतिविद्ययन्त्रवाष्ट्रः, आरमोपयोगयोगोञ्जागकपः हुपैः । अन स्रोपयोगस्त्रभावविश्रांतिगुरतानुभवएशुणआनं रह्ति, हुपैः **हा**स्पन रन्द्रदमद्वाप्यान्, पश्चातापश्चअगतिशोकोदयमद्वापान् । रोपाताः क्रीवः मयोदयमहायान्भयोद्रेगः। महान्तरगुप्तामाद्वापान् सस्प द्यनेप्रदानः अपराग्नेद्वप्रदानः प्रतादेवभावनीपे, द्याति-क ६ननंप्रापत्कवेदशमेणुगस्याने, इगेरि-संज्वयनहोभारपंपेक्शा

पिस्हमसुद्येभवति । इयमवभावना स्क्ष्मसंपराये किट्टीकृतानंत-भार विश्मलो भद्रिकानामुद्रयोऽस्तितद्विपाकाध्यवसायानामत्यंतस्-६मतीत् नव च नगोचरीभवंति । अनुभवगम्पाएवश्रुतज्ञानाधार-ध्यानुँ।वरंबकत्वात् श्रुतज्ञानस्यद्रव्यश्रुताघीनत्वात्द्रव्यश्रुतामिमुख-र्षंच्यादिकार्धानंद्रतिमोहनीयस्योदयः मुश्मसंपरायंपावदेवनपरतः उपंशांतमोहादिषुमोहोदयाभावात् ॥ २०॥

टबार्थः-मोहनीकर्मनी प्रकृतिनो, मिष्यात्वगुणटाणे वीसनो उदय छे. मिश्रमोहनी ? समित्रतमोहनीनो उदय नयी. सास्वादन-गुणडाणे मिष्यात्वमोहनी विना पचवीसनी उदय छे. मिथगुणटाणे अनंतातंत्रंची ४ समकितमोहिनी १ मिध्यात्वमोहिनी ६ ए छ विना वावीसनो उदय छे. समकितगुणटाणे वावीसनो उदय छे. देशविरतिग्रणटाणे अमत्यारूयानी च्यार विना अदारनो उदय छे. प्रमत्तगुणटाणे प्रत्याख्यानी चोकडी विना १४ नो उदय छे. सातमे अप्रमत्तगुणटाणे पण १४ नो उदय छे. आटमे ग्रणटाणे समझितमोहिना विना वेरनो उदय छे. अने नवसे अ-निवृत्तिबादरगुणटाणे हास्य छ विना सातनो उदय छे. सुरूप-संपरायगुणटाणे एक होभसंज्वळननो उदय छे. इग्यारमे बारमे वेरमे मोहनीकर्मनी प्रकृतिनो कांड उदय नयी अमोही छे.॥२०॥

चउ उदओआइचउगे, देसेदुगसेसपंम्मि (सेसएस)

इगउदओं ॥

इगउदआ ॥ चुउस्सवेयणीस्सय, उदओ दुशंतुसदस्य ॥ २१ ॥ वर्षे ही क्ष्य चउउउओ द्विस्तर्भाम आदिच्तुष्के मिण्यातः भारतस्मिर अंशासनी सुर्वेद्यस्म प्रथमगुणस्थानचतुष्के चउ-

दनादिषु इगपणपना इति इगपना एकपंचाशनु मिश्रे नामकर्मप्रकृतयः उद्येसंति,रथावरनामकर्मे जानिचतुष्कंदीपातुपूर्व्वीविकं चिमिश्रेनीदयः कारणभावनाचप्रवंतत् ,सम्पन्त्वे आतुपूर्वीचतुष्कीद्रयरतेनपंचपंचाश-द्धदयः संभाव्यवे,द्रगटाणेति द्विकराणस्यानकेदेशविसतिप्रमत्ताख्ये ग्र-णस्थानद्वयेचत्रधत्वारिश्वामकर्मप्रकृतीनासुदयोभवति तत्रदेवद्विकन-रकद्विकमञ्जाञ्चपूर्वीतिर्यगाञ्चपूर्वी प्रतासांचअविरतीसत्याश्वर्यात् वे-क्रियरयसहजस्याविस्ताध्वोदयात्, उत्तरवीक्वयस्यकारणेनामहीतत्वात ह्यभगिकंगुणमृत्ययानोदयङ्ति ममतेचितिर्यग्गतिअयोतरूपंमकृति-द्वयंतिर्यंगुमुख्यवेद्यंचनापनीतं तथापिआहारकाईकोदपान्चतुः चस्वा-रिंशदेवप्रकृतीनामुदयोज्ञेयः।अपमायेत्ति-अप्रमादस्क्षणेसप्तमेग्रणस्या-नेआहारकदिकडीनानांहिचत्वारिशत्पकृतानामुद्योभवति आहार-कोदपश्चाममत्तपर्यतं देत्वधिकारेटहोऽपिटब्ब्युद्योत्कर्पाभावातुना-षिकृतः तत्कारणंचकेविछनोविदाति, अंतिमसंहननिषकाभावेऽपूर्वक-रणायपशांतमोहांतेषुचतुर्प्रग्रणस्थानकेषुनवसिरिधकार्विशतनवाधि कर्त्रिशद्धदयेभईनि ॥ २२ ॥

द्यार्थः—हवे नामकर्यनी प्रवृतिशुणटांणे कहे छे. मिष्पात्व-ग्रुणटाणे आहारक जिननाम विना घोसटिनो उदय छे, तथा सा-स्वाद्नगुणटाणे सुक्ष्मितिकआतण १ नरकानुपूर्वि १ ए पांच विना ओनणसाटनो उदय छे. सिक्षमुणटाणे स्थावर १ जाति ४ आनुपूर्वी १ नेछी वेवारे प्रवृत्वानो उदय छे. एकावतमां आनुपूर्वी ४ नेछी वेवारे सम्बित्सुणटाणे पंचावत प्रकृति नाम-कर्मनी उदये छे ते मध्येषी वेद २ नत्क २ वैक्तिय २ महस्या-सुपूर्वी १ तियंगातुपूर्वी १ हुभ्म १ अनादेष १ अजस १ इन्यार विना चीवाटीसना उदय छे. पांचमे देशविरति सुणटाणे छे. छठे प्रमत्तप्रणटाणे तिर्वचनागित १ उद्योत १ ए वे नीकरें अने आहारक मेले, इहां पण चीमालीस नामकर्मना प्रकृतिगे उदय छे. सातमे अप्रमत्तप्रणटाणे आहारक २ दुगविना वेतालीस प्रकृतिनो उदय छे, छेहलां संवयण २ काडिये एटले ओग्रणवा-शीस प्रकृतिनो नामकर्मनी आठमे तथा नवमे इंग्यारमे ए व्यार ग्रणटाणे उद्य छे ॥ २२ ॥

सगतीसखीणमोहे, अडतीससयोगि नवअयोगंमि । नामुदयो गोयंम्मि, जादेसिदुगम्मिगमियरे॥ २३॥

द्दीका—सग्तांसान्ने-सप्तअधिकाविंशत्साविंशत् शीणेशीण-मोद्देवद्दयत्वेनभवति । क्षपकश्रेणिप्रारंभश्चप्रचमसंहृननवत एववैन-संहृननद्विकाभावात् । सप्तविंशदुदयःश्लीणमोह्देभवति । वीर्यकर-नामोद्द्दिक्षोअष्टार्मिश्चह्रदयेनामग्रङ्गतयः सयोगिग्रुणस्थानकेञ्चयेभ-वंति । अपरोणेकेविलि चतुर्देशग्रुणस्थानके च नासकर्मग्रङ्गतयोग-संति । अपरोणेकविलि चतुर्देशग्रुणस्थानके च नासकर्मग्रङ्गतयोग-पति तद्विपाकश्चामुक्तीविग्रुणविष्ठव्यणस्थानाद्द्दयेननामन-वनामग्रङ्गतीनां व्यविविधिक्तव्यात् आरमग्रदेशग्रुतत्तद्दवानां सिकिन-पत्ति विष्यक्रश्चमुक्तीविग्रुणविष्ठव्यणस्थानाद्द्वयेननामन्त्र-प्रमृत्वावितिग्रुणस्थानकंतावद्धिकं च्यवन्त्रवेशावित्यविष्यायात् विष्यक्रियम् सम्बत्ति । इत्येपुम्यनाद्दारमञ्जावित्यक्षित्रव्याव्यव्यात् । स्वयंवाद्वये स्वयंविक् श्लाति एकं ज्वेगोगेंश्योद्दयः ग्रुणवतानीयन्यन्त्रवादिकेशिक्यायात्रवेश श्लोपुञ्चिगोगेंश्याद्वयात्रवाद्वानांगुज्यस्थात् । स्वयंवादास्त्रवात् नीरि-ग्रानि स्वीवस्यमेनसंकृत्यविष्यदेवेद्याञ्चाच्येष्मपत्यया न वेपानीवीगें-ग्रीनोन्तीस्वयमेनसंकृत्यविष्यदेवेद्याञ्चाच्येष्मपत्यया न वेपानीवीगें-ग्रीनोन्तीस्वयमेनसंकृत्वविष्यदेवेद्याञ्चाच्येष्यस्यया न वेपानीवीगें- विचारसारयन्थस्यटाकाः उद्याधिकारः यारूयाकरणेविज्ञापितंचश्रीप्रचैः कोजनः ॥ २३ ॥ मत्वे भागभनाराच १, नाराच २, ए वे इर्जात प्रकृतिनो उदय पीणमोह गुणटाणे छे. णराणे तीर्थकरनाम येटीइ तेवारे आडनीसनी अयोगी गुणटाणे यस ने गुभग ने मनुष्य-ाजाति १, जिननाम कर्म ए नवनो उदय छे. उर्प गुणटाणाने विषे क्छो. गोपकर्मनो देश गा सूची वे गोपनो उदय हो. छठावी पछे एइत उर्प छे. एटके उर्पनी अधिकार क्छी. ॥२२॥ त्तंता, सगद्वमी(समी)सहआउवेयविणा ॥ त्ताइ तओ, छपंचसुहुमोपणुवसंतो ॥२४॥ -इर्यमृटोदीरणाग्रुणस्यानेविभजयताह् । तवउदीरणारया-. पचअशिससपर्यचद्वयं तमेष्यते उद्गति इत्यादि २४ श्यांच इसमप्ती जंबरणेण अहिया उद्ध दिल्लेष उद्या-मिलागा है यत्कत्ताप रवेनपउरमात्रक्षिकामाहेषायः ॥ ॥ ॥ उर्गान्हिरायां प्रसिप्यवेषपाउदीरणा उत्तरेष उर्गान्छै॰ रिटाटिं हिंतो कमायसदिएयं असदीएयं वा योगसक्रेय इस्लेय मारुहिपउर्माविधापवेसणं उर्दीरणांत सायपत्रीनेया तदाय युरीरणारिभरपुरीरणाअणभागोदीरयाष्ट्रदेशोदीरयाच पुत्रस्य धामुलम् विविषयायनाम् रविविषयाच अवमङ्ख्यीस्यायनाः



नयी वे माटे आटनी उद्दीरणा छे अने अप्रमत्तादिकवीन गुणटाणे वेदनी कमें तथा आउखानी उद्दीरणा नयी ते ए कपेंने उद्दीरणा संहेडा परिष्णाने छे वे माटे सानमाची आगठे वेदनी कमेंनी उदीरणा नके उदयायाळ बाई आणी गुरूवा छे. ते उदय आने छे. मुश्मसंप्राय गुणटाणे पहिले भागे छनी उदीरणा छे, पछ मोहनी कमेंनी उदय एक आविष्ठ देश रहि वेदारे पांचनी उदीरणा छे. इन्यास्थे गुणटाने पांचनी उदीरणा ॥ पश्मा

पणदोखीणदुजोगी, णुदीरगअयोगीसंतमोहं जा॥ अडंसगखीणअमोहा, चउचरिमदुगेयसंतंसा॥२५॥

टीका—पणदीर्सीणति २% द्वीणमोहीअनंतरोक्तानि एषकं मंण्युद्रीरपतितानिपताब्द्रसंग्रतिया बद्रामानावण्द्रसंना वरणान्तरापाण्याविक राशेषाणिभवंति आविक राशेष्ट्रीय व नामगोय व्हाणेकं मंणिउरीरपति इनोमिनि हेकमंगिनामगो सर्व चेनामनो प्रत्यस्थानियति इनोमिनि हेकमंगिनामगो सर्व चेनामनो प्रत्यस्थानियति व पर्यापिनि हेकमंगिनामगो राज्यस्थानियति पर्यापिनि होनामनो प्रत्यस्थानियति पर्यापिनि होनामने प्रत्यस्थानियति व पर्यापिनि होनामने प्रत्यस्थानियान् व प्रत्यस्थानियानिक प्रत्यस्थानियानिक प्रत्यस्थानियानिक प्रत्यस्थानियानिक प्रत्यस्थानिक प्रत्यस्यस्थानिक प्रत्यस्थानिक प्रत्यस्यस्यस्थानिक प्रत्यस्यस्यस्यस्थानिक प्रत्यस्यस्यस्यस्य स्याप्यस्यस्य स्याप्यस्यस्यस्यस्यस

मेवीभेकरोपेवेचएकोनचत्वारिशत ः उदीरणायांभवति वेसर्वेपामपिउदीरणाभावः सच्यासोदीरितत्त्वेनाकरणवीर्यत्वेनय स्वामित्वतद्वयवदेवभावनीयं वेदनीयमनुजायुषः स्वासित्वंप्रम-त्तपर्यनमेवेति इति श्रीदेवचंद्रगणिविरचितायांस्वीपज्ञ विचारसार दी कायां उदीरणाधिकारः ॥ कम्में।दीरणाच्यारूपाकरणे याथार्ध्यभाव विज्ञानेपरभावातुगवीर्यं स्वभावसंसाधकंभवतात् ॥ अयसचाकमः कर्मगांज्ञानावरणादीनां वीरयपरमाणूनां नंबनसंक्रमणादिकरणेन आरमः प्रदेशावभ्यनानांनोळीभावमापद्मानांगास्थितस्वस्थानंसद्भावः स॰ सायतुर्विधात्र हरपादिभेदैः तत्रमुख्तः सत्तारथानानिअश्वीसप्रयतुः नैक्षणानिर्वाणितत्र संतमोहंजा इतिशांतः उपशांत अनुरपा-पतमोहोयरम शांतमोहः एकादशगुणस्थान कंकपान् अशानामः वि हमेंगा मता अस्र हेच "संते अडपालसयं" जानुसमृविजिण्डिं इअत्रद्ध इनि हर्नेन्य सारवात् "सगर्गाणति"श्रीणमोहेमुणस्यान् केमोह हर्ने-तारात इति हानामचे यात्मम देशायस्थितरभाषात् अमोहामोह हमैरहि॰ तर्वत र स्मेमनायां प्राप्यते "चउचरिमञ्जोति" चरिमी र केसपोगियन थेति उक्षणेगुणस्थानेचउइतिचत्यास्त्रिदनीयायः नामगोत्रलक्षणानिः मनारामीत धार्तिनातुमर्वयाश्चयात् तपसयोगिमुणेऽशितानिभः "दिनान्यविमनास्थानानिसम्यते अयोगिम्बोत्पविनास्ते र अन नप्तात्वातिकक्रमेणः सर्वत्र हृत्युत्रपस्तुविन रहमक्रमेणतेषः सिन्दः इत्य प्रथमवामिन वशम के वितुषात्र प्रतिविद्या व प्रवास प्रतिके शिनः परक्षित्रको कर्नजन्द्रशम क्षेत्रियहरियो दर्गकानि अम (अस्पा-ने र देन्ते तकापता. पंचाद्योनियञ्जनपः पद्माक्षेमीतुः स्वाधिकाय हेन निक्तिनिक्तिसम्बादनने निवस्तिनेन्तरक्षो नांद्रे गाएकः स्य ना स्था राष्ट्र राजियमा र्या ग्राह्मान जनार नामा ग्राह्मा ग्राह्मा स्थानिका कर रहा चेन्द्रांतनक नुष्णाक के का के द्वित है एक विभागीन

क्षपक्रभेणिगतध्यतवपारित्रमोहगतेकविद्याति प्रकृतिउपश्यमनातउप-श्वमभेणिगतः तेषाभेवश्चपणान् क्षपक्षभेणगतः द्वयोरिपजीवयो वेषेतुर्तावर्भर्यरिपतिरस्त्रवेवरूपोमेदोनत् प्रकृतिवेवभेदः उद्योदीर-णायानमेदः सत्तायोप्रकृतिनेदानुमिद्याधिकत्रस्त्रव्यव्यत्वात्प्रध्यम-प्रपशामिक्तनामेवोच्यते ॥ २५ ॥

ट्यार्थ: —्यारमे सीण मोहगुणटांणे पहिले भागे पांच मूछ कर्मेनी उदीरणा छे. पढ़ी ज्ञानावरणी ? दर्शनावरणी ? अंतरार ? ए तीन कर्मेनी आविलका शेष उद्दय थको उर्दरिया नर्मी हे माटे नाम ? तथा गोव ? नी उदीरणा छे । पूर्वरेस स्योमी गुणटाणे नाम ? तथा गोव ? नी उदीरणा है । अयोगी गुणटाणे ज्ञारणा नर्मी, ले क्राप्णे अजोगी गुणटाणे करण बांचेनो अभाव छे अने उदीरणा वे करण वीर्ययी थाये हे माटे उदीरणा नयी । ह्वे सतानी अधिकार कहे छे ॥ इम्पारमा पुण टायणा पर्यत मूल आठ कर्मनी सत्ता छे । सता आठ कर्मनी छे, झीण मोह गुणटाणे मोहनी कर्मनी तता नर्मी, हो साता हो. वेरसे चाउदेने गुणटाणे बेदनी ? तथा नाम ? गोव ? आठपी ? ए प्यार कर्मनी तत्ता ही । २५ ॥

अडचत्तसयंसंता, उवसंतं ताविजिणुवीयतङ्ग् उवसमसमत्त्रीणं, उवसमसंढी पवद्राणं ॥ २६ ॥

शंशतंभवति केरपाह द्विवीयेसास्वादने तृतीयेमिश्रदृष्टी साराणिनस रहिसुकातित्यभिति रचनात् सासाइनामिश्रयोः सप्तचलारिशंशतंभवति इरमञ्हरपं इहमिय्याद्देशप्रचल्वारिंशमपिशलंसत्तायां ॥ यशह । त्रान्नद्भनरकाषुः अयोप्रशमिकेसम्यक्त्वमवाष्यतीर्यं करनामीयंश्रमारः म्पते तहासीनरहेतुत्पद्यमानः सम्यक्तमहरूपामित तेनिमध्यादेषेः स्तोर्यं हरनाप्तोऽपिसत्तासंभवति पुनः गूर्वअप्रमत्तादिषुगनस्यादारहः दि हरुद्रस्तेति । अराषुश्रतुष्ट्यंतुषद्वविद्योतापेक्षया सासादनमिश्रयो-म्हतार्रमोत्राजिननामरवितेसम्बद्धारिंग्रजनंसनामाभानि जिनना-ममतहर्माणीजी प्रस्यतद्भागानगाते स्तद्भंगारंभस्यचमुद्धसम्पातातः वर् इ. इ.वंध्वर रचा वेद्युरह तिरुपयरेणवितीणं सीयालसयसुसन्।पुरोद्या-महत्त्वारिमप्रभूता गरमाभीभेषपयात्रीणं १ अधिरतसम्बग्दश्यादीन ना जी दहर (शैनगण हाना अञ्चयतारिशशतंसत्तायां भवति केपाभिरयाङ ३४.स.च्या हारामगर १४८ । तांजपश्चमञ्जूणिशास्त्रमोहीपशमणा अणि षदान्द्रभोतनेनस्युणागे हरूपां प्रपक्षानाभेत्रेभवति । प्रभेषप्रमनादिः का द्वार काद क्ष्माराना हम्योगश्चामञ्जूषा स्तीभारति ॥ २३ ॥

डार्च - दुई उत्तर कर्वना सत्ता कर्द हैं। पृहसी अने सङ्ग्राह्मक उत्तर प्रहृतिना सत्ता हैं। दुग्यायम सुप्रश्ना पृह्म गाँव नाम्यदन मुख्यांचे अने बीजे निम्न सुप्रश्ना दिन नाम्ना नता नया, नेचे पृह्मोगरमा याना गाँ के प्रश्ना मनस्तरमन ने प्राप्त प्रश्नाम सत्ताम प्रमुख्या है। दुई पृह्मों सहमाह्माना गाँ वालाम प्रमुख्या है। इत्या प्रमुख्या सन्ताहम पाने । तेदन दिन स्त्राह्म है। प्रश्नाम स्त्राहम पाने । तेदन दिन स्त्राहम ते प्रश्नाम स्त्राहम क्ष्मा प्राप्त वर्गा इगचत्तससयसंता, खायगसमत्तसंतसेढीणं ॥

अडतीससयंनवमे, खवगसेढीपवद्माणं ॥ २७ ॥ टीका-अयवानकधिद्विसंगीजितात्रवंधिचतुप्कस्तत्वत्यप -जन्यनरकतियगापुषोरवंधकः यद्भवेषापुर्मन्तजायुपिवर्तमानः क्षयो -पश्चमसम्पक्तवचारिनवशाद्वद्वाहारकादिरुपशमश्रेणिमारोहति तस्य तियगायुनंरकायुरनंतात्रवंषिचतुष्टयंटक्षणमकृतिपर्करहितंशेपंद्विस

त्वारिशशनंसन्तायांत्राप्यवे ॥ यदुक्तं इहत्कर्मस्तवभाष्ये ॥ अणतिरि नारपरहीओ वायास्तरपंत्रपाणसंतम्मि उदसामगरसपुरवा तिपद्धिः

राद्रमोत्रसंतम्मि । १ । यः कश्चिज्ञीतः क्षयोपशमसम्पर्गदृष्टिः

विराडान्यवसायबंबेनकारणायवादमार्गसापेश्लोपियपार्थग्<u>रह</u>्यतस्वभाव धर्मकार्योत्सर्गश्रद्धानुभव्छानः तीनकागतामामनीर्पेणक्षपीकृतानुबं धिचतुष्कमिष्यात्वमिश्रसम्यक्त्वमोहतः शणसप्तकस्तस्योपशमधोणिग

तस्यापि एकच वारिशकातंसचायां भवति यावद्वपशांतमोहरूणस्थानः कता रतक्षा यिक अम्पन्त नोपइ, मध्येणिस्मानां जी नानामे नमवति अभव पूर्वत्रवासः पञ्चानक्षयोपशमीभयकायिकसम्यगदार्थभेवति तस्यसप्तक क्षयेपुकचरवारिंशशतंमेवसचायां यः पुनः मनुष्यः क्षपक्रभण्यारो-हाउक्करतस्पनरकृतिर्पगुदेवायुषः सचाभावान् वेषमाउनग्रयुस्तः

रसत्ताकप्रवतेनअविरातिग्रणस्थानातुदर्शनसम्बायुस्तु (स्तुद्र) याभा-वात अनिवृतिबादरप्रयम्मागंयावत अष्टविंशतशतंसतायांभवति ॥ २७ ॥ ट्यार्थ:---ज़े जीव पहेंद्धां क्षयोपसम्बित होडं ते जीवने परिणामनि विश्रद्धता थाये । अनंतानुबंधी ४ मिध्यात्व मी-

हिनी १ समकित मोहिनी १ मिश्र मोहिनी १ एवं सात प्रकृति क्षय नहे । वेहने एकसो एकताळीसनी सत्ता थाये ते चोयायी मांडी इग्यारमा पर्यंत १४ नी सत्ता होये, ए जीव क्षायिक समकिती उपसमश्रेणि छे तेहने इंग होये. इंग क्षपक श्रेणि पश्चिरज्या जीवने प्रथमयी नास्की १ तिर्पेच १ देवता १ नी गतिना आऊपां टाले. तेवार पटी अने-

१ देवता १ नी गतिना आऊपा टाले, वेवार पंछी अने-ताखंबची ४ दर्शन मोहिनी ३ एवं दश खपावे वेवारे चो-यायी मांडी नवमा ग्रण टाणाना नव भाग छे। वेहने प-हिले भागे एकसी अडतीसनी सत्ता छे। इहां कोइ पूछे जे तीन सत्ता नो कोइ जीवने न होई तो खपाये किहायी १ वेहनी उत्तर जे परिणामे आऊपानो बंध थाये एहवा परि-

छे, चोबे भागे एकतो तेरनी तचा छे, पांचमे भागे ए-एकतोबात्नी तचा छे, छठे भागे एकतोछनी तत्ता छे, तातमे भागे एकतोपांचनी तचा छे,आटमे भागे एकतोचात्नी तचा छे नवमे भागे एकतोतीननी तचा छे ॥२४॥

णामनी योग्यता टाले तेहनी क्षेपणा गवेषी छे, बीजे भागे पुकसो बावीसनी सत्ता छे, तीजे भागे पुकसो चउदनी सता

दुसयंमुहुमेखीणे, इगसयंनवनवर्ड्सत्तपयडीउ ॥ पणसी(ह)मयोगीअयोगी.तेरसखयीउणसिन्हांतिश्८

टीका—द्वितीयभागेतुस्याकः १ सूक्ष्मद्विकं २, तिर्परगति १, निर्परादाद्वीलक्षणेदिकं सन्दर्भातनस्कात्व्वसिक्षणं २, आत-पोद्योनदिकं २, स्यानटिनिकं ३, एवंदियजातिधतुर्वकं ४,

माधारणनामञ्ज्ञणंत्रहृतिपोडक्षर्कानर्यम्बद्धमा निर्नितिन्देसणार्यः भ्रोपते स्टाङ्कार्वेज्ञाननायानग्रान् तृतीयभागे अत्ररयाख्यानम्बर्याः स्यानस्यायाष्ट्रकंजीयने तदाधतुर्देशस्यतायाभगति नतुमस्रोरे शीणेषयोदशंशतंसचाबांतूर्येभागेभत्रति ततः श्वांवेदेशवेपंचमेभा-गेद्वादरांशतंसत्तायांभवति ततोहास्यषद्कक्षयेषष्टे भागेपदधिकंश-तंसतायांभवति ततः प्ररूपवेदक्षयेसप्तमेभागेपंचाधिकंशतंभवति-

सत्तायां ततः संज्वङनऋोषेक्षीणेअष्टमेभागेचतुरिषकंशनंभवति-

विचारसारयन्थस्पटीकाः

संज्वल्यानाभावेनवमेभागे अधिकंशनसत्तायां भ-वृति पुरुषमृतिपचरपंकमः अधर्खामारंभिकातवमधर्मनपुंसकवेदनतः पुरुपवेदंततोडास्पपट्कंततः स्त्रविदंशयनपुंसकः प्रारंशकस्तनोऽसी अद्यदीर्णमपिष्राथमस्त्रीवेदंशपपति ततः प्ररुपवेदंततः परकततोन-पंसकवेदं ततः संज्वलनिकं इत्येवंक्रमतोज्ञेयं अनिवर्द्यतसमये-संज्वटनमायाक्षयेदवामेसक्ष्मसंपरायाख्येखणस्याने द्वायधिकंशतंस-त्तायांभवति क्षपकस्पकादशेअगमनात् श्लीणेश्लीणमोहारूयेग्रणस्था-नेसंज्वलनद्योभस्य**दश्मसंपरायांवेश्चयणा**देकाधिकंशतं प्रथमेभागे-क्षीणमोहेभवति ततोनिदाद्वयंश्चयंगतेशीणमोहस्यद्वितीयेभागेनव-नवतिःसत्तायांभवति क्षीणमोहेचरमसमयेज्ञानावरणीयपंचकमंतराय-पंचकंदर्शनावरणचतुष्टयंश्चपयित्वासयोगिकेवळीगुणस्थानेपंचासीति-सत्कर्माभवंति अयोगिद्धिचरमसमयेयावत् पंचासीतिसत्तायांभवति भयोगी,चरमसमयातपूर्वसमयेदासमतिः श्चपयतिनाप्वदर्शयति देव-दिकंदेवगतिदेवानपूर्व्वाटक्षणस्वगैतिदिकं गुभागभविद्वायोगतिक-पंग्वाहिकस्पर्शाष्ट्रकंवर्णपंचकं रसपंचकंतउपंचकं वंधनपंचकं संघा-तनपंचकं सहननपटकं संस्थानपटकं अस्थिरपटकं अग्ररुखय ? उपयात १ पराधात १ उच्छवास १ निर्माण १ पंचकं अ-पर्याप्तनामम्हरोकांत्रकं पांजमत्रिकं मातासातरूपं एक्टारंबेदनीयं मस्वरंनिचैर्मोत्रमितिद्वासप्ततिक्षीयते ततोऽयोगिचरमसमयेत्रयोदश-सत्तायांभवंति मतांतरेमद्रजादुष्ट्यंपिअनेवश्चायते अत्रमद्रजादुष्ट्यं क्रमणःभिन्नोदयोनास्ति स्तिबुक्तांक्रयस्यापिअत्राभावात् प्रदेशवेद- विचारसारग्रन्थस्यदीका.

مے

नाभावेचाक्षयात् अतः ततोपूर्वमेवमनुजिबकंयशः आदेयंसुभगं-जिननामउच्चेगीत्रंपंचेन्द्रियजातिः सातासातयोरेकतरंवेदनीयंएतास्त्र-योदश मनुष्यानुपूर्व्वीमंतरेणद्वादशचरमसमयेक्षपयित्वासिर्द्धिप्राप्तो-तिजीवः अञ्ययममूर्ताखंडान्यायावारपंतिकैकांतिकनिर्द्धद्वनिरामयल-

क्षणाभिति ॥ २८ ॥ टनार्थ:-- सक्ष्मसंपरायगुणटाणे एकसोवेनी सत्ता छे, खीण-मोहगुणडाणे बारमे पहिले भागे एकसो एकनी सत्ता छे वेहने निदा २ गये नवाणुंनी सत्ता बीजे भागे छे। ज्ञानातरणी ५ दर्शनावरणी ४ अंतराय ५ ए खपे तेवारे तेरमे तथा चउदमे

गुणटाणे पंचासीनी सत्ता छे ते चत्रद्रमाना छेला वे समय रहे तेवारे वीत्तर प्रकृति खपे तेवारे छेहले समये तेर परा-तीनी सता रहे ते तेर प्रकृति अयोगीचरमसमये खपाविने सित्र थाये ॥ २८ ॥

खीणंजासंत्तंसा नाणा, वरणंतरायएपंच।

वेयणीयगोअकम्मे, दुगदुगसंताअयोगिता ॥२९॥

मोहगुणस्थानकंयावन्ज्ञानावरणांनरायपंचकंसत्तायांभवति वेदनीय-गोत्रारुपेद्विकंद्विकंसत्तायांअयोगिगुणस्थानकंयावद्भवति प्रथमभा-गांतपुर्वकस्यसत्ताभवति ॥ २९ ॥

टीका--अथसत्तास्वामित्वमाद् ॥ सीणंजाइति २९ क्षीण-

ट्यार्थ----सीणमोह वारमा गुणटाणासीम ज्ञानापर्णानी पांच प्रकृतिनी सत्ता छे, अंतरायना पांच प्रकृतिनी सत्ता छे, वेदनी कर्मना वे प्रकृतिनी सता छे, गोनकर्मनी ये प्रकृतिनी सता

भा पराम तथा एक गोननी सत्ता रहे छे ॥ २९॥ . . . छ छहल भागे वेर रहे ते. यीएउवसंतता, नवसवमाणंतुवायराओछम् । त्रीणेछचउसंता, मोहेअडवीसउवसते ॥३०**॥** टीका—नीएउसंनंताहति द्वितीवेरर्शनावलीयास्वेक्कीणः तमोहांननशापिम्र हतीनांसत्ताभश्रति अपकानांत्ःअनिशने गपर्यतनवानामपिदरानासगप्रकृतीनांसत्ताभवति भयनः ोडसापरामानसरेरूयानर्द्धियन्त्रभानेततः परंक्षीणमोहमयम् द्दर्शनावरणीयस्पप्रमङ्गीनांसत्ताभवति सीणमोहस्पर् मासर्गायचतुष्ट्येभनसत्तायांभनति "सीमहुचारिनेगसय-ने।" इतिबचनात् ततः परंदर्शनावरणीयसत्तानभवति अथ णः सत्तास्त्रामित्त्रमुच्यतेमोद्दर्भायेकमीणज्यशमसम्पक्त्वोः तः उपरामभ्रेणिगतस्यउपरातिमहिमुणस्यानः क्रेपानत् रत्यः सचायांसभवंति हत्तिवर्षुज्ञपृत्रावद्यातः सह-र् शेवप्रिमेदकाळेमधमञ्जानिषुनीक्षणेपक्षमंगम्यस्त्रं-पुंजीतुउपरामसम्पन्नवंटभते इनिसिद्धांताटाः५ः कर्ष-पुंजीअकृतिनपुंजीजीवोपिप्रथमंउपश्रमंसः यक्तवमे-ोजे दर्शनायरणां कर्म्भे उपरामश्रेणिने उपरांतः नवनी सता है। श्रेपकश्रेणिन नवमा गुण-में सोल प्रकृति स्वपे वैवारे योणची नीन मणतिना गचा रहे छे. दर्शन ४ भिन्न २ पहिले भागे दर्शनात्रणां उनी सना छे

विचारसारग्रन्थस्यटीका.

Ę٥

वीज़े भागे निदा २ क्षय करे तेवारे दर्शनावरणी च्यारनी सत्त छे. बारमाने अंते दर्शनात्ररणी ४ सत्ता खपे छे. मोहर्नाकर्मनी उपसमसमिकत उपसमचारित्रीयाने इग्यारमा गुणटाणा पर्यंत अ-ठावीसनी सत्ता छे. ॥ ३० ॥

अविरईसमत्ताओ, इगवीसंउवसमंम्मिसंतंसा ॥ खवगम्मियइगवीसं, तेरसवारसइगारंच ॥३१॥

टीका-अविखेत्यादि वाइतिपशांतरेइत्यमेनश्चायिकसम्पक्ते उपसम्भ्रेणिस्थस्यअविरतसम्यग्गुणस्थानकात् आरम्यएकादशं-

यावत्दर्शनसप्तकेविनाएकविंशतिमोहमकृतिनांसत्ताभवति खवग-मि शायिकसम्यक्तवक्षपकश्रेणस्यस्यप्रधममनंतात्रवंधिचतुष्कद-

र्शनिविक्शीणेअविस्तसम्यक्त्वगुणस्थानतोऽप्रमत्तंयावत्मोहर्नायस्यै-

कविंशतिः सत्तायांभवति ततोकषायाष्ट्रकेक्षाणेऽनिवृत्तिवादरतृती-यभागेमोहनीयस्यत्रयोदशसत्तायांभवंति ततोनपुंसकेशीणेद्वादश स्त्रीवेदेशीणेएकादश ॥ ३१ ॥

टबार्थः-तथा क्षायिकसमिकती उपसमक्षेणीने चोया अ-

विरति गुणटाणायी मांडीने इग्यारमा उपशांत मोह गुणटाणा पर्यंत बार कपाय नवनो कपाय एकवासनी सत्ता छे. उपसम-भावे मोहनीनी प्रकृतिनो उदय नयी तेवारे परसत्तायी काडी

४ दर्शनमोहिनी तीन खपे तेवारे एकवीसनी सत्ता छे. पछी

नसके प्रति छे। हुवे क्षपकश्रेणिने प्रथमयी अनंतातुर्वेधी

आट क्याय स्वपे तेवारे तेस्ना सत्ता छे, पर्छा नपुंसक्तेद

खपाने तेत्रारे बारनी सत्ता छे, पछी स्त्रीवेद खपाने वेत्रारे

इस्पर प्रकृति मोहीनीनी बत्ता छे. ॥ ३१ ॥

पंचयचउतिदुइगः संतठांणाणिमोहसंतम्मि ॥ मुहुमंजञाउकम्मेः चउसंताञपमत्तंजा ॥३२॥

र्टाश---हास्कररक्षयेषय पुरुषवैद्यवेष्यत्यः सन्वरनशे-भरपक्षपेनिस्यः सन्वरूममानसर्वेद्याः सन्वरनमापाशयेष्काः सं इरतन्त्रोभम्द्रतिन-बुदेमताभावीमीह्यस्वरूमसंपर्गपंपार्त्यः मोद्व-भीयस्वत्याशंपाचीहार्यन्तिनंति सन्तर्यानानानिमोहस्तवार्याद्युमसं-परापंपावदुद्विसय्यःआपुः क्षित्रभ्यान्यपावद् पनुर्णामपिसताभ-यते पूर्वरद्वपेशयंति ॥ ३२ ॥

टरार्थः—पछ द्वास्पादिक ग्वपाने वेवारे मोहिनीने पांच महतिनी सत्ता छै. ते मन्येयी पुरुपने खपाने तेवारे मोहिनीने सत्ता छै. ते मन्येयी पुरुपने खपाने तेवारे मोहिनीने सत्ता छै. ते संन्यत्नो प्रोध विदारे आर्ट्रमें आगे तीन मन्निर्तनी सत्ता छै. ते संन्यत्नोमा में मन्निर्तनी सत्ता छै. व्हानीने मत्ता छै. व्हानीने मत्ता छै. व्हानीने मत्ता छै. व्हानीने अंते ते पिण खपापे ते अगोही यापे ए दशमा गुण्यत्ना पर्यन अपक्षानिकाराने मोहिनी कर्मनी सत्ता छै. व्हानीने अगित स्वापने छै. आजत्या वार्षने अमनत गुण्यत्ना पर्यन अपक्षानिकाराने क्षीनी आजत्या वार्षने होते विभागे द्वानीने व्यापना आजत्यानी सत्ता छै. प्रांचिनी कर्मनी अमनत गुण्यत्ना पर्यन आजत्यानीन सत्ता विद्वानी क्षानी द्वानीने व्यापना आजत्यानीन सत्ता व्हानी विभागे आजत्यानीन सत्ता व्हानीने व्यापना आजत्यानीन सत्ता व्हानीने व्यापने आजत्यानी सत्ता व्हानीने व्यापने आजत्यानी सत्ता वही ते योगपनानी छै, उपशामक्ष्रीनवाला पूर्व आजत्याने वार्षाने पर्यापने आजत्याने वार्षने पर्यापने वार्षने पर्यापने आजत्याने वार्षने पर्यापने आजत्याने वार्षने पर्यापने आजत्याने वार्षने पर्यापने पर्यापने वार्षने वार्षने पर्यापने वार्षने पर्यापने वार्षने पर्यापने वार्षने पर्यापने वार्यने वार्षने वार्षने पर्यापने वार्षने पर्यापने वार्षने पर्यापने वार्षने वार्षने वार्षने वार्षने वार्षने वार्षने वार्षने वार्षने वा

घउदुगइगसंतता, खीणाओएगसंतनामंमि । तिनवईउवसंतता, असीइखबगेनवअयोगि॥३३।

क्षेणि चढे ॥ ३२ ॥

श्रीका—ततःषरंउपगम्श्रेण्यांवर्तमानानांकेपांचि जीवानांप्रवीव व्यापांप्रकादशंयावन् चतुर्णामपिसत्ताभवति सिन्नजीवापेश्रमिदं वाक्ष्यं अपवाकश्रित्तमुद्धाने वाक्षयं अपवाकश्रितमुद्धाने वाक्षयं वा

अर्शातिरेवससायां यानद्रयोगिष्ट्रचरमसम्बेतावद्भवति अयोगिषस्य-सम्येनवनाममञ्ज्ञीनां सताभवति ततस्तासां क्षेत्रे जीवः विष्यतिसक्व-मृदेसपुद्गालकर्गिश्चपिहतपुत्रभवति इति अद्भिवचंद्रगणिविरिषतार्या-स्वोपज्ञविचारसार्य्यकायोसताधिकारः सचाकमेष्यारूपाकरणेजीवस्य-भावविज्ञाने सत्ताकमेषियुक्ताः अवंतुजीवाः सर्राजनाः ॥ ३ ॥ द्वापीर-च्यारे आक्रसानी सत्ता भिक्र जीव अपेक्षपी होये

टमार्थः—चारे आऊखानी सत्ता भिन्न जांव अपेक्षाये होये आऊखा बांच्या विना उपराम श्रेणि मांडे तेहने एक बतमान महत्त्वायु सत्तामां होये ए रीते पण होई क्षपकश्रेणि जीवने चोषाची मांडी चञ्चमा पर्यंत एकज महत्त्वायु सत्तामां होय हते नाम कम्मनी सत्ता गुणटाणे कहे छे उपरामश्रेणिनी अ पेक्षाई सामान्य अनेक जीवने नाम कमनी वाण् महति सतामां

पक्षाइ सामान्य अमक जावन नाम कम्या नाम्य उच्छा तार्यः छै अने क्षपकश्चीणने नवमा ग्रुणटाणाना परिहरा माग परेत माणुनी सत्ता छे पछी वीजे भागे सोट्ख्यमावे तेवारे वेर नाम कर्मनी खन्ने तेवारे तेरामा खुणटाणा पर्यंत ऐंसीनी सत्ता छै पछी चउदमाने छेट्टे भागे तिऊत्तरखपावे तेवारे अयोगी होने छेट्टे भागे नवनी सत्ता रहे छे ॥३३॥

सब्जीयटाणमिच्छे, सगसासाणेपणअपजसन्निदुगं। सम्मेसन्निदुविहो, सेसेसुसंत्रीपञ्चो ॥३४॥

क्षका—अथगुणस्थानेषुजीतस्थानानिकष्पंते इहराहुमवापरे विदीवितिचउअसविपंचेदि अपजतापञ्चता कमेणचउदसजीअ-टाणा १, इहारिमन्जगतिसंदेवन्याल्यापांतीयद्वनयेन एगेआया ह-तिएकएवजीवनेदोमन्यस्याख्यायांविगृद्धनगमआस्यव्यवहारनयेन-चतुर्वश्वातायस्थानानिकेनऋमेणेनिचेदित्याह सःमग्रादेशेकेद्रियदिनि-चत्रसंज्ञितंज्ञिपचेदियाङ्गितसम्प्रेतसम्भपयोमपर्यासमेदा<u>धत</u>्रदेशप्-करप्रश्नेनलक्षणमिद्रिपंचेपातेण्कद्विमाः एष्टापोरजीवायुवनस्पतमः तेच प्रत्येक्षेद्रधासक्त्याः बादराधननदक्षः म नामकर्मोदयातसक्त्याः सकत-क्षेत्रस्यापिनः वादस्नामकर्मेदयाचादरास्तेश्वरोक्तप्रतिनियतदेशय-र्तिनः द्वरपर्शनग्मनदश्येष्ट्रंदियेणुपांतेद्वान्त्रियाः कृमिपुतरकादयः श्रीणिस्पर्शनस्म आणकपान्धे इंदियाणिवेपाते श्रीदिपाः कुंगुमन्द्रणप्रान दयः चल्वारिरपरीनरमनदाणचभुर्वः स्वानिदंदियाणियेपारेचतुरिदिपा प्रमामक्षिकामशकर्भश्रकादयः पंचापर्शनसानवाणच्याः धीषतस-णानिइदिपाणियेषां ते पंचित्रिया मत्यवरूडभसारगुरनारकमनुष्याद्वयः तत्रतियंगमतुष्यपंचेन्द्रियाद्वियामंत्रिनः असंज्ञिनश्चतत्रमंज्ञानंसंज्ञा मतभवज्ञाविभावस्वभावपर्याहोचनंदीवंकाहि विसंज्ञापासासंज्ञावि• शंते वेपांवेसिक्षानः विशिष्ट्रमरणादिरूपमनोविज्ञानभाजद्वातेपावत ताद्विपरीताः सन्दर्शकानीयनोविज्ञानविकटार्त्यर्थः प्रवेचमत्येकेदिः भाषपांत्रकानपर्वात्रकाश पर्वातिनासपुरहोपचयनः पुरस्यहणप-रिणमनहेतुद्यक्तिवेदोषः सान्वीपयमेदान्षोदा आहारपर्याप्तिः शरीरपर्याप्तः उच्छनासपर्यातः भाषापर्याप्तः मनःपर्याप्तिरिविन

त्तत्रययांश्नेगादिआहारमादायस्वस्तक्त्यन्यापरिणामयति साआहारपर्यासिः ययारतीमृत्माहारंदारीरतया परिणामयनि साशरारपर्यातिः
येषपुद्रस्यः इरिरत्यापरिणमस्यईदियाकारसहायन्यापरिणामयतिसा
इरिरपर्यापिः ययाज्ययाज्यजनित्ताविणयपुन्तकस्त्रवासप्रापीय्यगणाद्विकसादाय जन्ध्यताक्रम्यत्या परिणमस्यातंत्र्यः य ग्रंपतिसाजन्ववासपर्याप्तिः ययाजभाषायोग्यवग्णाद्वर्यगृहीस्वाभापार्यम्
मरिणामस्यातंत्रस्यन्यस्यन्यस्यन्यस्यानंत्रस्याप्याप्तिः यपुनर्मनोपौमयवगणाद्विकस्यहान्यस्यन्यस्यन्यस्यम्याप्त्याप्तिः यपुनर्मनोपौमयवगणाद्विकस्यहान्वस्यन्यस्यन्यस्यम्यस्यम्यस्याप्त्याप्तिः यपुनर्मनोपौमयवगणाद्विकस्यहान्वस्यम्यस्यम्यस्यम्यक्रमेकेन्द्रियाणाविकस्यस्विनार्यः

गयनगणादाळकरहात्वामनस्त्वनगरणमप्याळ्यावननवपाराष्ट्रत्या द्यंचित सामनः पर्याक्षिः एनाश्चययाकममेकेन्द्रियाणांविकळासंजिनां त्यासंज्ञिनांचतुः पंचयदासंत्वामकंति स्वसंयोग्यपर्याप्तिपरिसमाप्तीः छच्याकरणेश्चयेचाहारकारोरिन्द्र्यपर्याप्तिनिक्याद्यियेते तेळाच्यिऽप-भीप्तका येचाहारकारोरिन्द्र्यप्यापितिकार्याद्यायेते तेळाच्यिऽप-भीप्तका येचाहारकारोरिन्द्रयाणिनिक्यादित्यानि शेषा स्वयोग्याः पर्याप्तयः निक्याद्विकंतितेकरणापर्याप्तका द्विसम्बर्जावदाणिनिक्छ हत्यादिसर्वानिजीवस्थानानिचतुर्वदाऽपिसिक्यादाष्ट्रगुणस्यानकेगवंति

सगति सप्तजीवस्थानानिसास्वादनेभवति पंचावयांप्ताः वादरेकेन्द्रि याऽपर्याप्ताः द्वंन्द्रियाउपर्याप्ताः अन्द्रियाअपर्याप्ताः ३ चतुरिन्द्रियाअ-पर्याप्ता असंज्ञिपंचेन्द्रियाअपर्याप्ता ५ संज्ञिद्धिकंतंजिअपर्याप्त्रपर्या-सृञ्चसूर्य केत्त्रपर्याप्त्रकाश्चेहकरणापर्याप्त्रकाट्या नद्दृत्विवअपर्या-स्त्रास्त्रप्रभ्येसास्वाद्त्रनादितस्यारपादा पाच्यक्षियेनदेतं-स्त्रपर्याप्त्रास्यक्त्रकंत्रनायार्यास्त्रस्यान्त्राप्ताः परंग्रवियेनदेतं-भवंजपत्रास्त्रसम्बद्धकंत्रनायनारपतासाद्त्रनातनाञ्चः स्वेग्केन्द्रियोग-वित तरयोरपास्त्रकालेसंभाव्यते विकलिन्द्रयासंज्ञानातिर्विग्मव्यय-तस्त्रयवस्त्रस्यसंभाव्यते सम्ये अविरतिसम्यगृदृष्टिगुणस्यानेतर्नाद्वि-

वियोऽपर्याप्तरूपोद्रष्ट्यः इहापर्याप्तकरणापेश्चयात्त्रयो नतुरुच्यप्-

र्याप्तकः सम्पग्दष्टिभवतितेषेणिभदेशविक्याद्ययोगिपर्यतेषुगुण-स्पानकेषुसंद्रापर्यात्रद्वेषुगुण-स्पानकेषुसंद्रापर्यात्रद्वेषुणेकंजीवस्थानंपाप्यते इनिन्धारूयात्रानि ग्राणस्थानकेषुजीवस्थानानि ॥ ३४॥

टबार्थः—हुवे गुणटाणाने विषे आकृता भेद करे हे. दिध्याल गुणटाणे सर्व पउद नेद जीवना हे. गागादन गुणटाणे अपूर्वाता पांच बाद अपूर्वातो है, वंशिजपूर्वातो है, पू पांच अने संक्षांपेर्थश्रभप्वती है, नया संक्षांपंर्थश्रभप्वति एति पू वे पूर्व साम जीवना भेद हे. साम्यादन गुणटाणे ते जा-णवा साहि. थोषे समक्रित गुणटाणे सङ्गी प्रयंश्री प्रयांनी न्या अपूर्वाती पू वे जीव भेद है तथा देशांगित ममते है अ-ममसअपूर्वकरण, अनिश्चित बादरः सुरुमसंग्याय. उपशांतमोह होणानीह सयोगीश्रणटाणे अपोगित्रद्री प्रअस्ता गुणटाणे है पेरिट्यप्यांनी जीवभेद है.

सद्युणठाणमञ्जे, सनामग्रुणठाणगंचनेयः। अञ्जयसायमसंखा, सुहुमंताइगेगचउचरिमे ॥३५॥

दीबर-संप्रतिगुणस्थानवेषुगुणस्थानात्माह् ॥ सम्बगुणश्चानं । सम्बगुणश्चानं । सम्बगुणश्चानं सुध्यानं स्वाचनं । सम्बगुणश्चानं सुध्यानं सुध्यानं । स्वाचनं । स्वचनं । स्वाचनं । स्वचनं । स्वाचनं । स्वचनं । स्वाचनं । स्वचनं । स्वाचनं । स्वचनं । स्

टबार्थः --सर्व चज्र गुणटाणाने विषे पोताना नामनी वेहुल एक गुणटाणो पाप्तीये, ले कारणे मिष्पात्वमां निष्पात्व गुणटाणो, सास्वादनामां सास्वादन गुणटाणो, स्वं सन्त्र्यं लाणवोः अने एक एके गुणटाणे विवसंदर्गदतस्वितदा गुणटाणो पिण मिष्पात्व गुणटाणो पिण मिष्पात्वनी तीवसंदता अने क प्रकारती छै. सास्वादनमे पिण तीव मंदतानी प्रतिसमयीयेछे एक समयना अध्यवसाय असंस्थाता छै. कपायना वीवसंदता क्षायोपशमयी छे ते जाताइ करायनो क्षयोपशम छे तांग्राची अध्यवसायनो पण मेद छै. एत्व दशमा गुणटाणापर्यन अस्वस्ताय असंस्थाता छै. तरावच्याया असंस्थाता स्वच्याया असंस्थाता छै. तरावच्याया असंस्थाता स्वच्याया असंस्थाता प्रति प्रति व्याप्तिया या व्याप्तिया प्रति व्याप्तिया प्तिया प्रति व्याप्तिया प्तिया प्रति व्याप्तिया प्रति व्याप्तिया प्रति व्याप्तिया प्रति व्याप्तिया प्रति व्याप्तिया प्रति व्याप्तिया प्रतिया प्रति व्याप्त

अध्ययसाय छे । निर्ज्ञा थानकमे अनेक मेद छे, परंचारि-बना थानकनो मेद नर्या ॥ ३५ ॥

मिछिदुगिअजय(यि)योगा, हारदुगुणाअपुवपणगेओ। मणवयउरलंसविउबि,मिसिसविउब(वि)दुगदेसे।३६।

टीका--अथगुणस्थानकेषुयोगातिरूपयताह । मिछतुगति ३६॥ योगाः पंचदशया तत्रमनोयोगधनुद्धाः सत्यमनोयोगः असत्यमनी-योगः सत्याभृपामनोपोगः असत्यामृपामनोपोगः तत्रप्ररूपंपेदं "स-श्चाहीयासंतामिह संतोगुणापयउद्यातिश्ववरीयामीसामीसाजानद्वभ-(प)सहावा १ अणहिमयाजाना मृतिमुख्यिया केवलिअसधमीसा ए-षेत्राग्योगोपिचतुर्धाद्रष्ट्यः । काययोगः सप्तया श्रीदारिक श्रीशरिक-मिन्ने, विकियंत्रीकियमिन्नं, आहारकं आहारकमिन्नं, कार्मणं यतनी हारि-ककाययोगस्तिपंगुमनुष्ययोः नपोरंगापर्याप्रयोशस्तिमधकायः योगः विक्रियकाययोगोदे प्रनारकयोश्तिवंग्भन्तप्ययो विक्रियछार्थिमतौः विकियमिश्रकायपोगोऽपर्याप्तयो देवनारकयोग्निषेग्मनुष्ययोर्वा विकि परपारंभकावेपरित्याग कालेचआहार कंचतुर्दशपूर्वविदः आहारकमि-धकाययोगः आहारकस्यवारंभसम्बेपहित्यागकाले धकार्भणकाययो-गोऽप्रमकारकर्मविकारम्यः दार्धरचेद्यस्यपंत्रस्यगतायस्यविम्य-मसमयेके विक्रसमुग्वातसमयेचयोगर वहपं वस्तुतः तस्वार्थरीकातीः छिद्यते. वीर्यातसयधायोपशमजनितेनपर्यायेणात्मनः संबंधीपीगः॥ रापत्रीर्यमाणीत्साद्वपग्रज्ञमचेष्टाशक्तिसाध-र्यादिशब्दवाय्यः अय-षायुननवेर्नवीर्वेतिर्यानसयक्षयोपश्यञ्जनितर्यायभितियोगः सच-कापादिभेदनिविचः तनकायः दारीरमान्मनोत्रानिपासः पुद्रसद्रम्य-घटनः स्यविरस्यदुर्वटरयपा॰याँ हैननयाः क्रादिपद्विष्यपेषुपदा हु रस्त-द्योगाज्जीवस्य शर्यपरिणामशक्तिः सामध्येशस्योगः स्याप्निसयः

द्विस र कार्मण १ शेष १३ छे. आहारक र वे नहीं वे छठे गुणटाणे मुनिने होये, बीजाने न होये, अर्प्वकरण्यी मांडी ९ गुणटाणे खीणमोह पर्यत नवयोग धांमीये. मनना ४ वचनना ४ एक ओदारिक ए नवयोग छे. पछे विश्व गुणटाणे ए नव मध्ये विकिय १ मेळाई तेवारे १० योग छे. इहां वेकियसिश्यनो अभाव छे, जे अपपांक्षो अस्त्याप् सिश्र गुणटाणो न होये अने वेकियस्विच निव करे तेहने एण सिश्र गुणटाणे लब्धि करे ते शेषेपां नयी, विच्यिआहारमें उत्तलिस्ह इतिवचनाल ॥३६॥

साहार(ग)दुगपमत्ते, तेविउद्याहारमीसविणुइयरे ॥ कम्मुरऌदुगंताइम, मयवयणसयोगिनअयोगी॥३७॥

दीका-—साहारगडुपमत्तरयादि ३७ । पुर्वेक्तपंचेकादशयोगा-साहारकद्विकाआहारकाहारकमिश्रयुक्ताः खयोदशमयत्तमर्वति, औ-दारिकमिश्रकार्मणाआवरतुपुर्ववदेवठेपूर्वविकियमिश्राहारकमिश्रीका-

भौदारिकद्विकं आदारिकाशिश्रव्याणं अंतादिममनसीसस्य १ असत्या-अमुपारूपोमनोयोगो एवमेवसस्य १ असत्याअभूपाव्याणोवा-स्पोगोचितिसस्योगाः सयोगकेविक्विभग्वति कार्मणोदारिकामिश्रवु-सम्बद्धातां वस्यायामितिन अयोगिति नतेवप्रकोषियोगः अयोगिके-विनिद्दितिउक्ताग्रुणस्थानेपुयोगाः ॥३७॥

ट्यार्थः—देशविरति गुणठाणे वैक्तिय मिश्र भेळीये तेवारे ११ योग छे, मनना ४ वचनना ४ औदारिक १ वैक्तियद्विक

विचारसारम्न्थरपटीका.

२ ए इंग्यार पीम होने. प्रमृत गुणटाणे आहारत नेळीड वेवारे केर योग पामीचे. ममत गुण्याचे के वैतिय विश्वजाहारक विश्व ए वे कार्डावे तेवारे सानमे युण्याणे इम्पार योग होचे; जे कारणे अग्रमत साउ रुच्ची नदी तेम भगवतीस्त्रमां क्यं छे, मापी विउद्यतिनो असा यवि ए उपन छे अने वेरमें सपीमी गुणटाणे कामण भौरास्क्रिमध्र २ भीरास्क्रि २ मनना २ सप्यमनीयोग असल्याङ्गावनोयोग इम यचनात् २ ए सानयोग पांचीरे भारते कामण है जीदास्त्रिमिश्च है पूर्व सीम समृद्धाः सम्बे त्राम् अस्तर्भः अस्तर्भातः । ४ व पाः, ११७८४मः करतां प्रामीये अने अयोगी गुणदाणे योग नर्था, पोगनोगेर

करपो छे. ॥३७॥

तिअद्माणं दुवंसाइमेदुगे, अजयवेसिनाणदंसतिगं॥ तेमितिमीससमणा, जायाङ्केवलदुर्गतदुर्गे ॥३८॥

द्यस्य—अञ्चलतेचेचीपसीमानसिचानुसम्भाहः " निआसः णि । ३८। यसणामज्ञानानांसमाद्वारं यसानकरमानभूनाज्ञान विभेगज्ञानस्य इयोरसम्बर्धः समाहारोज्ञिस्यानस्य स्थानस्य देशनकपामिन्वेते पंछोपयोगा मिष्णादृष्टिमारतादनपोभवेति न होषाः "बेरियसादीनाणाई रहटाभति भण्यसातायणगर स्वतसान पञ्जतगरसरीनाणाई इतिप्रशापनापेक्षण सामारनेज्ञानग्रेनेस्व मपिकृषदंशाभित्रावेणसामगदनस्यिष्ट्याः गाभित्रस्य गाः नेनान् वेषिः क्याचोर्वेयसार्थोपयोगम्दर्जमहर्त्वन निविधनस्यतानस्यापिकः मत्तवास्त्रामरूपतासृति। वस्पिस्तानामारक्षिक्रमे इतिवित्रकार गणान् वर्गात्वेनसामान्यावतीयर्द्धत्तरगर्न् । जीवानिगर्ने । विशेष्ट-

नां अवधिदर्शनग्रहणेष्यत्रनिपेघस्तेनपंचैवोपयोगाः सम्यक्त्वविरस्य-भावाचनशेपाः तथा अयते अविस्तसम्यगृहश्ची देशे देशविस्ती नाण-दसणतिगंति" मतिश्वतात्रधिकपं ज्ञानितं चशुअचशुअवधिदर्शन-रूपंदर्शनित्रकं एवं पड्डपयोगा नशेषाः सर्वविरत्यभावात् एवेएवप-ह्यपोगामिथे अज्ञानसदितादृष्ट्याः तत्रसम्यगृद्दष्टितःपतितानांआः सन्नाम्यासतः ज्ञानबाहरूपेयेचमिथ्यात्वतोमिथत्वंगतानांआसन्नाम्या-सतो अज्ञानबाहुल्यंडतिवेनज्ञानाज्ञाने यिक्षजीवापेक्षयागृहीवेबस्तृतः स्तासम्पर्देधेरेवज्ञानंप्रमाणंनिःसंशयत्वात्। अधविभगेअवधिदर्शनंतत् जीवासिगमापेक्षया "समणाजयाइइति"इतियत्यादीनांइत्यनेनप्रमत्ताः प्रमपूर्वकरणानिवृत्तिवादरस्थमसंपरायोपशांतमोहश्चाणमोहरुश्चणेप्रस-**एतग्रणस्थानकेष्रमनः पर्यवयक्ताइतिसप्तउपयोगाः ज्ञानचतःकदर्शन**-विकरूपाभवंतिकेवळज्ञानकेवळदर्शनलक्षणोपयोगरूपंउपयोगद्धयंअं तिमद्विकेसयोगिकेवळीअयोगिकेवळीळक्षणचरमगुणस्थानकेद्विकेमः वति नरोषा अत्रमत्यादिज्ञानानांवस्तुस्वरूपात् आत्मनिकेवलज्ञान-कालेपिमत्यावरणादीनांक्षयात् तद्ज्ञानानामपिनिरावरणत्वभवनात् मत्यादीनां मिसरवंतथापि सवित्ररुदयेतारकादीनां सत्वेपितरमभावात् स्येवकेवळज्ञानस्यमकटमत्यादिप्रवृत्त्यभावात् "नष्टुम्मिछाउमत्यिप्-नाणेकेवलनाणेडवज्झङ्" इत्यागमवाक्यात्व्यवहारनयेनछाद्गरिधकः ज्ञानाभावःतत्प्रकृत्यभावात् ॥ ३८ ॥

टमार्प: हवे उपयोग वार ग्रुणठाणे कहे छे. आदिम वे ग्रुणठाणे निष्पात्व सास्तादन् ए वे ग्रुणठाणे तीन अज्ञान वे अच्छाच्छाद्वर्शन ए पांच उपयोग छे. प्रथम वे ग्रुणठाणे अ निरति समित्रतः ? तथा देशनिरति ए वे ग्रुणठाणे ज्ञानित्रक ३ दर्शन ३ पद्विष्ठा ए छ उपयोग छे. मिश्र ग्रुणठाणे मिश्रित

<u>}-</u>

जपयोग छे. हो जीव वेह समक्तितयी पिंड मिम्रे आने वेहने प्रतिम्पास याटे ज्ञान होचे, जे मिष्पात्वयी आवे वेहने अ-शान होने अने यति आदीदेह छहायी बारमा गुणटाणा पर्यत मनः पर्यास्तान भेठीचे एतने स्वार ज्ञान, तीन दर्शन, ए सात जपमेग होचे. अंतद्वम तेरमे पऊदमे गुण्याने केवल्ड्म कहेतां फेनटसान १ केनटस्संन १ ए ने उपयोग होय. ॥३८॥

छत्तुसबातेऊतिगं, इगछत्तु सुकाअयोगिअलेसा। इगचउपणतिगुणेसु, चऊतिदुइगपचओवंधो ॥३९॥

टीका—उपयोगाउक्ता, अ युनागुणस्यान केळीवले स्याअमिषि-त्युराह् ॥ उद्युत्तवाते ॥ ३९ ॥ परसुमिष्यादृष्टिसास्वार्त्तामिथ्रा-विरतदेशविरतममत्तलक्षणेषुसर्वाः पद्मप्रहणाः १ नील २ कापोत है तेज: ४ पद्म ५ शुक्र ६ केरपाभवंति। बंधस्वामि अविस्त-सम्पन्न्तंपावदेवपद् छेड्याउक्ताः साच्यातिपद्यमानकापेक्षया, वैदः-विर्ग वैजापप्रशास्त्रकेदयालक्षणितिकं इगिति प्रकारमानम्मनेभवति विद्यद्वनात्पर्देषुअपूर्वकरणादितयोगिपर्यतेषुद्यक्राप्वभवति अयोगि-चि अयोगिनः योगाहृतत्तेनसिद्धा अध्ययोगिनाकृतितेअवेत्रया-वैदयारहिता वैदयाचयोगप्रभन्ना तेननयोगरहितानां इहवेदयानांप्र-र्षेक्रमतंस्येयानिहो काकाश्रापदेशममाणान्यच्यवसायस्यानानि ततीः भैदाहचनसायापेञ्च पाराङ्कलेश्यादीनामचित्रिय्याहष्टमां कृष्णकेश्यान दीनामपित्रमत्त्राणस्यानकेपिसंमग्रीनविरुच्यते इतितर्वेश्यकाग्राण-स्थानकेड्छेरयाः होत्रतंबवहेतनोवक्तमारभवे मूलहेतनोयत्वारः नि च्यात्वं अविरातिः कपायाःयोगाद्यं तत्रनिष्यात्वं अययार्थान्त्रवीयपूर्वः कतन्त्रनिर्धारकपंत्रमपंचमकारं असिरहरेणेदं एव दर्शनं शोशनं

नान्यदित्यवं रूपेण ऋदर्शनविषयेण निर्वेत्तमा सिग्रहिकं यद्वशाहोति-कारिकुदर्शनानामन्यतमहठेनगृण्हाति तदिपरीतमनमिग्रहिकं य-**ह**शात्सर्वाण्यपिदर्शनानिशोभनानीत्येत्रमीयन्माव्यत्स्यामुपजायवेतन दनसियद्विकम्, अमिनिवेशकंजात्वामिष्याकदायहरूपंपयागोष्टामाः दिलादीनां सांशयिकंपच्छंशयेननिर्श्तेपद्रशाद्धगत्रदर्हद्रपदिशेष्यपि-जीवादितच्येषुसंशयअपजायते तयानजानेकिमिदंभगवदुक्तं धर्मान स्ति रायादिसत्यमुतान्ययेति अनाभोगंयदनाभोगेननिर्वतंशस्यतारूपं तधेकेन्द्रियादीनामितिपंचमकारंमिध्यात्वमिति द्वादशमकाराअवि-रतिः कथभिरपाञ्च मनःस्यांतः करणानिइंद्रियाणिपंचवेषांस्वस्यविपरे-मात्तमानानां अनियमोऽनियंत्रणं इत्यनेन रसने न्द्रियाविस्तीमपापादः हंगडः मनःस्पर्शनेन्द्रियाविस्तीस्तेषोपनानं सक्तलेन्द्रियापिस्तीनेपुन भरपंत्रद्वः मनसअविस्तीपरियहास्त्रनः रसनेन्द्रियाविस्तीरात्रिभोज-भारतः तथापण्णांपृथिग्यमेजीपापुयनस्पतित्रसङ्पाणांवाधाद्विसाङः पानिरातिः पद्यांद्वादशत्रोयाः कषः संसारस्यायः कषायः करायः सङ्घण्यत्तानोकपापाः कपायनुस्याद्वरपर्यः कपाषाः पोडशभनंता-<u> १</u>९४५८५१रपारुपानपरमारूपानसंज्ञाहनकोधमानभाषाहोभारूपासी षां हवायाणां भद्रशाः कपायनी नेतीनामंत्रे मंत्रास्तेनी कपाया हारपर-रपर्रतिज्ञो अभयदुर्गळासी।पुंनपुंसकअपानपद्धयेवं पंचरिशतियोगाः १४(३) र्थ्याक्यानसम्बद्धापूर्वमूलतः वंधरेन रश्चनारः उतातः सन ९४५:द्वति तम्पृदेतुन् गुणस्यानेषुविभजयताद् इगति पर हिन्द्विस्यात्रेगुगस्यात्केवद्वारो रंउदेताः अयमर्थः विस्या**रहि** इपरयानकातीं जेतुः । ज्ञानायरगीयादिकमेथन्यिर्विष्यारगमिर्वत €राय रोगडक्षेत्रेद्धतुर्भिः प्रत्यवैश्वातिचनुर्भुगास्मादनविश्वाधर्मन स्टब्स्सी हेर्ने हा विक्व के कुलियात्यात्य रशिता अस्ति । इसाययोग ३४ ^{मा} 👀 प्राच्याः सरिवाद्यास्थरान्यास्यात्रवपुर्वेद्वेद्वेद्वेत्रास्यः 🛧

द्वाविरतिकपापपोगङ्सणैव्विभिः पत्पपैः ज्ञानाचरणारिकमंबनावि ययापिदेशेरष्ट्रव्यमाणातिपाताविषयाविसितिसारिततयापिस्वरम्बानेहिनः बिस्ता सर्वविस्तावेत्रसर्वं थाऽविस्त्यभावद्दति पंगात पंचसुग्रगणस्थानः वेदुप्रमतापूर्वकरणानि इति ग्राद्धमृत्रमसंपरा वटः सणेपुर्देशमस्वर्धाकराः ययोगामित्योयस्यमाद्विमत्ययोक्गोभवति इतमुक्तभवतिमिच्याः रवाविरातिहेत्त्वयस्थेते प्रभावात् होषेणक्रयापयोगप्रययद्द्येनामीयः मतादयः क्रमंगांतिहनियारम् तथारियुउपशांतसीयमोहगयोरिः केरिक होणेपुराणस्थानकेषुपुकपुरशोगलक्षणः परययोगस्यापुकः माययोभनति एमुनियगुणस्थानेमुपीनप्रस्यपप्यकर्वसमाति सानाः वैदनीपास्त्रेनद्विसामपिकमकृतिनदेशतःशुणीजनिवंबधंक्तीन् । वीमाचराह्नपरतंतिद् अख्यामंकतायाओहतित्रचनन् अपीतिग्रुचे हेत्वभावात्वंधाभावद्दति ॥ ३९ ॥

ट्सार्यः—हवे ग्रणटाणे हेरसा कहे छे. ग्रणटाणे निस्ताः त्वयी मोडी छटा प्रयत्त छ केश्या है. सानमें अपवस प्रयटाणे वेजो । पन्न २ छक्र प् तीन केश्या छे, आदमानी वेस्स पर्यंत उ राणटाणे एक एक हैरण छे. अयोगी राणटाचे वेहपा नवी केहपा है सीगपरिणाम छे हे सोग नवा है सारे अयोगी ने वेश्या नती वे योग विना होने नहीं. हरे थे हेत करे है. विद्रां मूल बंबदेत बनार हो। विश्वास ? ध्य पर का अपने हें सीम श्र ए ब्यार देता है । ते हरे यणप्राचे कहे हैं, एक मिन्सान ग्रमप्राचे ध्यार केन हेन्द्रे पती सारवादन है जिस है अविशति है जुलानेश्वी है ए स्वार युष्पत्राचे शावितात । क्याव २ योग ३ देत यु तीन छ । पति प्रव करेनां पांच गुणटानं समस १ अपमत १ जाई-

करण १ अनिवृत्तिवादर १ सङ्गतस्यतय १ ए पांच गुणठाणे कपाय तथा योग ए वे वंच हेतु छे। पछी तीग्रुणेस कहेता तीन गुणठाणे उपशांतमोह १ क्षीणमोह १ स्योगीकेव्छी १ इणे तीने एक योग प्रत्यवीयो वंच हेतु छे॥ ३९॥

पणपञ्चपञ्चति(य)छहीय, चत्तगुणंचत्तछचउदुगवीसा। सोलस(दस)नवनवसत्त, हेउणोनउअयोगम्मि॥४०॥

ं टीका-अथ ग्रणस्थानेषुउत्तरहेतुनाह ॥ पणपन्नपन्नेत्यादि-मिथ्यादृष्टीआहारकशरीर आहारकमिश्रदृक्षणंमिश्ररहिताः शेषाः पंचपंचाराद्वेतवः संति तेचामीपंचमिध्यात्वंअविरतिद्वादशं कषाय-पंचविशक्तिः योगास्त्रयोदश सास्वादनेपंचमिध्यात्वोनाः पंचाशद्धेः तवीभवंति मिश्रेषिचत्वारिंशद्वंधहेतवीभवंति औदारिकमिश्रवैक्रिय-मिंश्रेचक्षणंमिश्रद्धिकंकार्मणशरीरं अनंतातुर्वधिनस्तैर्विनाइयमत्रभा-वता "नंसम्ममिछोकुणङ्कालमिति" वचनात् सम्यग्मिष्यादृष्टी परलो-कगमनाभावात औदारिकमिश्रं वैक्रियमिश्रंकार्मणंअनंतात्रवंद्यदयाः भावात् अनंताद्ववंधिचतुष्टयंनास्ति । अत्ववतेषुसप्तसुपूर्वोक्तायाः पंचारातोऽपनीतेपुरोषास्त्रिचत्वारिराद्वंधहेतवोभिश्रेभवंति । अविर-तीचपरलोकगमनसंभवात् पूर्वोपनीतमौदारिकामिश्रं वेक्रियमिश्रंकार्म-र्णचपुर्वोक्तांयांत्रिचरवारिंशतुडुनः प्रक्षिप्यते ततोअविस्तेषस्चत्वाः रिंशइंथहेतवीभवंति "गुणचतिति" देशे देशविस्ती एकीनचत्वारिंश-द्वंधहेतचो भवंति, दसासंयमरूपां अविरति औदारिकमिश्रंकार्मणं अपत्या-रूपानचतुष्ट्यंचेति तत्रशसासंयभंतु बृहच्छतकपुर्णोत्वस्यसंकल्पजत्र-साविरतिगमात् यृद्धि गामशस्यपरिहारत्वेनशस्यपरिहारत्वेनस्यप्या-रंभजनसाविरता तथापिनविवक्षिता कार्मणीदारिकमिश्रीत विग्रह ग-

11

रयपर्याप्तावस्थायांचदेशविरत्यभावाजसंभवतः द्वितीयकषायस्याप्य-षानुरपान् उक्तंचावस्यकनिर्धुक्ती पीयकसापापुरए अपधनसा-णावरणनामचेज्ञाणं देसविख्इंनउटइंति १ तदभावेएवतस्प्राद्धभविः ततः प्रवेसप्रपूर्वेक्तप्रयाः परचल्वारिंशतोऽपनीयंवे ततपृकोनचत्वा-रिशद्वंधहेतनः शेषाः देशनिरवेभनंति तथापर्वनिशतिनंधहेतनः प्र-मत्तेभवंति इदमबहृदयं प्रमचगुणस्थाने एकादशधाअविरतिः प्र-रयाख्यानावरणचतुष्ट्यंचनसंभवति आहारकद्विकंचटब्द्युपयुक्तस्य-संभवतिअतःपूर्वोक्तायापुर्वोनचत्वारिंशतः पंचदशकेऽपनीवेद्विकेय-तत्रप्रक्षितेपार्देवशतिर्वयदेतवः प्रमत्तेभवंति, तथाऽप्रमत्तस्यरूव्य-तुपजीवनेनाहारकमिथ्वैकियमिथलक्षणद्विकरहिताश्चतुर्वेशतिश्चेहे-तवो अप्रमादेगुणस्थानकेभवंति, अपूर्वकरणेषुनः सेवचतुर्विशति-विकिपमिथलक्षणद्विकरिहताद्वाविशति वीवहेतवोभवंति एतेपूर्वोन क्ताद्वाविशतिः हास्पल्यस्तिशोकभयत्रगुप्साठञ्जूणारहिताः घोड-श्रामित्रतिवादरेसभवंति वेएवपोडशवेदविकलापुंनपुंसकछञ्चणसं-ज्वलनिकंसंज्वलनकोधमानमायालक्षणंतेनविनादशपंधदेतवः सक्ष्म-संपरायेभवंति वेएवदशहोभरहितानववंबहेतवः उपशांतभोहेसीण-मोहेचभवंति कथायोदयरहितत्वमेवानयोः तथादारिकद्विकंकार्मणं-सत्यमनोयोगअसत्याअमृपामनोरोगः सत्यवचनयोगः असत्याअ-मृपावचनयोगः एवंसप्तहेतवः सयोगिवयोदशमेसंभवंति भावनाच-औदारिकतञ्जर्तमानं औदारिकांमधंतु केवलिसमुद्वातंद्वितीयपष्टसार् मसमये कार्भणंतुसभुद्रभातावसरेतृतीयचतुर्यंभेचमेमनोयोगाव्हंब-नंतुमनःपर्यवज्ञानानांक्षेत्रांतर्रास्यतानां रृतप्रधानां उत्तरदानकालेवा-

. ट्यार्थ:--हवे गुणठाणे उत्तर हेतु छे ते कहे छे, ते मन्ये मिध्यात्व गुणठाणे ते मिध्यात्वना ५, मेद छे, अविरतिना १२ मेद छे, कपायना २५ मेद छे, योगना १५ मेद छे, एवं सर्वे सत्तावन मेद छे. ते मच्ये मिथ्यात्व गुणठाणे आहारक र आहारकमिश्र नयी तेणे पंचावन हेत् छे ॥ ५ मिंग्यात्व । अविराति १२, कषाय २५, योग १३, सास्त्रादन गुणठाणे पंचास हेतु छे, पांच निष्यात्व नयी, बार अविरति, पचनीस कपाय, १३ योग पंचास हेतु छे. मिश्रगुणठाणे अनंतातुर्वधी ४ औदारिकमिश्र १ वैक्रियमिश्र १ कार्मण १ ए सात काढीई वेवारे अविरति १२, कपाय २१, योग १०, ए वेतालीस बंध-हेत् छे. चोये समकित गुणठाणे औदारिकमिश्र १, वैक्रिपमिश्र १, कार्मण १ ए तीन मेडीये एतके अविरति २२, कथाय २५, योग १३, ए छेताळीस बंबहेत छे. पांचमे गुणठाणे अमरपारूयानीया ४, असनिअभिरति १, औदारिकामिश्र १, का-र्मण १, ए सात काढिइं तेवारे ओगुणचालीस हेतु छे. अदि-रति ११, कपाय १२, योग १ छे, छहे प्रमत्तगुणठाणे अवि-रति ११, प्रत्याख्यानीया ४, ए १५ कावीई वैवारे आहारक षे मेजिये वेवारे छवीस हेतु छे. वेर कपाय १३ योग, सातमे गुणटाचे आहारन मिश्र 🕴 प् वे कार्डाये तेवारे चीवीस बंधहेत छे. आटमे गुणटाणे वैकिय १, आहारक १ ए वे काडीपे वैतारे वावीसबंच हेतु छे. नममे गुणटाणे हास्य छ काडीई वैचारे मोछ हेतु छे. पछी दशमे गुणठाणे तीन कपाप तीन वेद कार्जाये तेवारे दश बंबहेतु छे. पर्छा छोभ कार्जाये तेगारे इंग्यारमे बारमे नव वंबहेतु छे, तेरमे गुणठाणे सात योगना हेतु छै, तथा अजोगीगुणटाणाने विषे हेत्तवंच कोक नवी ॥४०॥

मिच्छेपणमिच्छता, अविरइसमत्तवारअविरइओ । देसेतसयहहीणा, योगापुर्विवनेयवा ॥ ४१ ॥

टीका—अम्वीगैस्यसरिरवर्षितः यापावर्षातः मनः पर्पातिः उद्देनगृहीततद्वर्गणावर्लेब्दंकप्रवाग्यम्नोधोगाद्वि येतनावीर्या-दीनांविष्यास्वकपार्थेन्द्रेथविषयोदयस्यामानांत्रन्यया मृष्विः विष्या-स्यादेदेत्वः क्ष्मेपश्यामान्नानां त्रीनां उद्याक्षितपृक्षमान् हित्त्वस्यप्देशः विष्यास्वादी गां मृत्योगां स्वीद्रयावत्रसम्यगृदर्शना-दिक्त्पाणांत्रप्रत्वस्यव्यवेद्याः चारक्षाविष्यस्यवात्राम्यगृदर्शना-दिक्त्पाणांत्रप्रत्वस्यव्यवेद्याः चारक्षाविष्यस्यवात्राम्यविष्यप्यापार्यक्षे प्रवृतिदे अञ्चमानंक्रमायाको द्वित्यस्यवि ॥ उक्तंप ॥ योगापपिक-पद्मिद्धिः अञ्चमानंक्रमायाको द्वित्यस्यवि विष्यात्येच्यकिष्याद्व-मेदाः नोपरितन्त्रप्राणेष्यद्वाः इत्याप्त्रस्याव्यक्षस्यव्यक्षस्यवेत्वस्याव्यक्षस्यव्यक्षम्यवेत्वस्याव्यक्षस्यक्षेत्रस्याव्यक्षित्रस्यः प्राप्यंत्रे नोपरिद्युणे-प्रयोगाः पूर्वेद्यण्यः अञ्चयक्षात्रस्यविद्यस्यस्यमः ॥ ४१ ॥

द्यार्थः — सिन्दा व ग्रणटाणे पांच सिन्दास्त हो, पद्मी सिन्दास्त नती अ र तसमशेत ग्रणटाण्डीम बार आदित हो, हेश्वादिति श्रावरणो मगटे, धृटमाणातिपात विस्तवात द्वीचो तेश्वने मसनी दिंसा नवी इत्यार हो, उद्घायी पद्मी अविरति नवी, पोग ते पूर्व बक्का हो तिम जाणदा ॥ ४१ ॥

'आइदुगेपणवीसं, अणुविणुइगवीसमीससम्मेमि । देसेसचरवियविणु,तिअविणुतेरसगुणतिगंमि॥४२॥

दीका—कषायागुणेपुनिभजवताह् आर्दुगेलि॥४२॥जादि-द्विकेमिण्यात्वसास्तादनव्सुणेगुणस्थानद्ववेषंघन्निस्त्रस्यायाः— राते तथा विभेतस्यक्तोषश्चनंतातुर्वशिषताष्ट्रवाश्चिताप्रविद्यात्तरः कार्याभवति श्रेते देशित्तारुवेतास्वराक्षायाः दितीयाशस्यक्ष्यान क्रोप्यम्बर्गन् व्यान क्रोप्यमनवार्योक्षयेत्वास्वयोद्याक्ष्यायाः प्रशासिक्षये क्ष्यान क्राप्यमानवार्योक्षयाः प्रशासिक्षयः स्थापिक्षयः व्याप्यक्षयः विभावत्याः विद्याप्यक्षयः स्थापिक्षयः विद्याप्यक्षयः स्थापिक्षयः विद्याप्यक्षयः स्थापिक्षयः स्थापिक्ययः स्थापिक्षयः स्थापिक्षयः स्थापिक्ययः स्थापिक्ययः स्थापिक्षयः स्थापिक्ययः स्थापिक्षयः स्थापिक्ययः स्थापिक्

्यार्थः — आदि वे गुणकाणे प्रयक्ति क्याय छै. विश्व पुणकाणे नया सम्बद्धित गुणकाणे अनेतानुंकेषी व्यार विशे प्रकृषित क्यात छै. क्षितिकि गुणकाणे बीजा अवस्थास्थानी भौतको तन्त्र क्याय छै. तीजी भौतकी दिना तेत क्याय कर्षा को जाको तीन गुणकाणे छै। ॥ प्रवेश

अञ्जानाम् सेवम्, वेयसप्तत्स्वति(ह्रीण)इगसुर्मे। यो (कानानीका, संचयुवायनवित्तवेता ॥४३॥ - '

द्री र — अञ्चासद्रीय कार्य असे क्षित्र वार्य समीव पाद्याप्त हर है है है है से स्वार्य कार्य के स्वार्य के स्वर्य के स्वार्य के स्वर

माणान्यांमाप्तास्त्याउत्कर्षतः असंस्वेयाः कभंनभवंतितवे च्यते ने वंयतः मतिपयमानकानांजवन्यतः एकंतमयं उत्कृष्टतः अद्देशमय-प्रवम्तिपयमानकाः प्राप्यते नापरेततः जवन्यत्पृकः उत्कृष्टतः संस्वेयाअसंस्वेयाः सम्पाअंतांभवि "वर्तासा" इत्यादि गापा द्या-स्वानेसिद्धद्भाद्धवि अध्यक्षत्रिक्षण्यत्यादिष्ठसेयं तेनावसंस्वेयाप्-बर्जावानांसंस्वेयद्वि । प्तयोत्कष्टपदार्थप्रमोन्तमन्यपाकराविद्वि पर्ययोपिदष्टच्यः कदाविन्द्रायाच्यत्योदाः कदाविद्वरावात्यव्यत्य-मोहाः कदाविन्द्रायाणीहाप्यनोपदाताः कदाविद्वरावात्यव्यत् स्रीणः अनयोः सांतस्वादितिसेपत्यातेम्यः क्षीणमोद्देग्यः सजा-ह्यातः ॥ ४१ ॥

दशमें गुणटाणे एक कपाप छे. पछी कपायनो हेतु अभाव छे. हवे गुणटाणे अल्प बहुत्व कहे छें। सर्वेदी उपशांतमोह गुणटाणे वर्तमान जीव थोडा छे, जे प गुणठाणे प्रकासपे उत्कृष्टा चोपन जीवनी प्रवेशना छे. नेपाट वेहची शिणमोही जीव संस्थातगुणा छे. जे इहां उत्कृष्ट प्रवेशना पृक्तोआरही छे. वेण गुणवाणे प्राप्त जीव तथा पेसता जीव ए रोते छे. ॥४३॥ छे. वेण गुणवाणे प्राप्त जीव तथा पेसता जीव ए रोते छे. ॥४३॥

टयार्थ:--हास्य पदक विना नवमे अनिवृत्ति बादर ग्रुणठाणे सात कषाय छे. वेद ३ संज्वटन तीन उदयमांयी गया एटले

सुहमानियदिअपुरा, समअहिया सेणियुगलसुविसुद्धा उवसामगाकिळठा, जीवाळभ्भेतितिगुणेसु ॥४१॥

टीका-स्वस्मसंपरायानिकृत्विवादरापर्वकरणवर्तिनोजीवाविको पाद्धि स्वस्थानेषुनश्चिरयमानास्त्रयोपिसमास्त्ररयाद्विकपनित्याद्व-एपुर्जावास्त्रिमकाराज्ययेवे वेचश्रीणपुगटःश्लीपुगटस्यानोपुशम- श्रेणिस्याः क्षपकश्रेणिस्याश्रमुविशुद्धाः इतिश्रेणिमारोहमाणाः नि-मेरिनिमेरतरपरिणामत्वात् सुविद्युद्धाउच्यतेपुनः उपशामकाः क्रियः

संक्रिइयमानाः प्रतिपतन्तोप्यत्रप्राप्यंते, उपशांतमोहतः प्रतिपाती-उपशांताद्वाक्षयात् तच्चप्कादशतः दशमेदशमानवमे-

नवमादृष्टमे एवं यथा छक्त में चतुर्थेततः सारवादने ततः प्रथमेत्र जित यस्तुआयःक्षयात्पततिसएकादशेमृतः चतुर्यमेवस्प्रशति नान्यं ।

इतिप्रतिपन्नेअपिउपशामकाजीवाः स्टब्पंते प्रतेष्ठविप्रगुणस्थानेषु-इतिः नत्रअधिकोक्ताः त्रिप्रकारत्वेनकथंनसंस्थेयग्रणाः यतः अष्टोचर-

शतंक्षपकाः विशुद्धाः चतुः पंचाशदुपशामकाः विशुद्धाः। प्रनः

संक्षिदयमानाउपशामकाअपिभवंतस्तिहिंद्रिगुणत्वेनसंख्येयगुणाः सं-भवंति तत्कथमधिकाइतिउच्यते उपशामकाः पतंतः नसर्वे क्रमे-केचिद्रपशांतेआयुःश्चयेतूर्यंगुणंत्रजातितेएतेएयुनप्राप्यंते

अतोद्विगुणत्याभावात् अधिकवयुक्ता ॥ ४४ ॥ टबार्थः--तेहयी मक्ष्मसंपराय तथा अनिवृत्तिवादर तथा

अपूर्वकरण ए तीन गुणटाणे वर्तमानजीव तेहथी एतळे खीण-मोहथी ए गुणटाणे मांहोमांहे सम छे, अधिकार छे ए गुण-टाणे उपशमश्रेणि चढतां तथा पडतां पामीये छे, मांहोमांहै सम छे बरावर छे उपसमश्रेणि चडतां क्षपकश्रेणि चडतां प

वे ते हुं विशुद्धजीव कहीये जे निर्मलपरिणाम छे, उपशमश्रे-णियी पडतां ए गुणठाणे वर्तमानजीव मिण संक्षेत्री कहींगे जे शक्ति पलटे माटे पू तीन मुणठाणे ए रीते जीव

प्राणा १४ ॥ मीर- प्रामानाइयरे, संखगुणादेससासणामीसा । योगिअवः अहोगीमिच्छा, असंस्वचउरोदुवेणंता ॥४५॥

र्टाका--इतिवेम्यः सक्ष्मादिम्यः सयोगिकेवळिनः संख्यात-ग्रुणास्तेषां कोटिपृथक्त्वेनस्म्यमानत्वात् प्रतिपद्यमानकास्तुअष्टो-त्तरंशतं अस्मित्रेवद्याप्यमाणत्वाव्तेम्योइयरतिप्रातियोगिनः प्रमत्ताः संख्येयगुणाः मनादवंतोनिर्ग्रथाबहुवः कोटिसहस्रपृथक्त्वेनप्राप्यमा-णत्वातु , प्रमत्तंपावतुसंज्ञिकर्ममूमिजमनुष्याणामेवयोग्यत्वातु संख्ये-यगुणत्वंतेम्यः देशविरताजीवाअसंख्येयगुणारितरश्चामप्यसंख्याना-नांदेशविरतिभावात् वेम्यः सास्वादनाअसंख्येयगुणाः अवकदाचि-त्तसास्वादनाः सर्वेथेवनभवंति यदाभवंति तदाजवन्यतः एकोद्वीध-उत्कर्पतन्तुदेशविरतेम्योप्यसंख्येयगुणाः चतमृपुगतिपुमा व्यमाणत्वात् अत्रोपशमक्षेणितः मतिपतितापेक्षयात्वसंख्येयत्वासंभवस्तयापि-मंभिभेदसंभवोपदामात्पतांनोऽसंख्येयाभवंति, इदंकर्ममंपद्हृहीकातो-शेयं वेम्योपिमिश्राअसंख्येयगुणाः सास्वादनाद्वायाउत्कर्पतः पडा-वळिकामात्रतयास्तोकत्वात्मिश्राद्वायाः पुनरंतर्ग्रहर्त्तप्रमाणतयाप्रभु-तत्त्वात् तेम्योप्यसंख्येयगुणाअविस्तसम्यग्दष्टयः तेपांगतिचतप्रये-पिम्भुततपासर्वकाटसंभवात् वेम्योप्ययोग्निकेवळितः भवस्थाभव-स्यभेदमित्राअनंतग्रणाः सिद्धानामनंतत्वात्, भवस्थायोगिनस्तक्षी-णमोद्धतुल्यापुत्रतेम्योऽनंतगुणामिध्यादृष्टयः साधारणत्रनरपर्ताश्चीसः द्वेम्योप्यनंतग्रणत्वात् तेषांचिमध्याद्दश्त्वादिति तदेवममिहितंगु-णस्थानवर्त्तिजीवानामल्पवद्वत्वम् ॥ ४५ ॥

ट्यार्थः—वेद्वर्था योगी वेरमा ग्रुणटाणानाजीत्र संख्यातगुणा छ वेद्वर्या इतर कहेता प्रमत ग्रुणटाणाना जीत्र संख्यातगुणा छ पु सर्च गुणटाण सन्नियापर्याप्ता महत्त्व्य जीत्र पामीपे छे, वे संख्यातगुणा छे वेगाटे वेद्वर्या देशविरति जासंख्यातगुणा छे, विर्णेच महत्त्व पु २ गतिना जीत्र पामीपे छे, वेद्वर्या सारा- दन गुणटाणे जीव असंख्याता छे, पु च्यार गितमे पामीये तहुयी मिश्रगुणटाणे वर्तमान असंख्यातगुणा छे, ते कारणे सारवादनायी मिश्रगुणे रहेवानो काल घणो छे, ते हुयी अविदित्त समित गुणटाणे वर्तमान जीव असंख्यात गुणा छे, जे पहुनी उन्हां अरावादात गुणा छे, जे पहुनी उन्हां अरावादात गुणा छे, जे पहुनी उन्हां अरावादात गुणा छे, ते हुयी अरावादात गुणा छे, ते हुयी भिर्मावाचीव अनंतगुणा छे, जे निगोदीया सर्व निष्पादिन ते सर्व गण्या छे, पु छ मस्ये च्यार संख्यातगुणा छे, अने वे बील अनंता छे. ॥ ४५॥

तिगपणचउतिगभावा, ति अड इग दोष्ठणेसुमुलिङ्घा। अन्नाणस्त्रयउदओ, तिग वार गुणंभिमयभेया॥ध्री॥

टीका--इहेरानीभावानांस्वरूपंकयपत्राह ॥ भावाइतिभव-नछश्रणाः जंतोः परिणतिविशेपारतेमुद्धतः पंच सामिपातकर्तुसंपो-ग्रजन्यत्वात् उत्तरोपिन्यारूपानेदङ्गापनापपष्ठउक्तः उपशमश्चापिकः सामोपश्चिकमीदिक्यपारिणिमकाश्चर्यच यश्चसाङ्गपातिकद्वतिवर्वय-श्चानंउपशमः कर्मणोऽतुदस्यवस्थाभस्यपटळ्ळक्राक्षिवत् मोहती-स्पक्षपाः विचाकप्रदेशरूपताद्विविश्वस्थापिउत्परस्योपश्चर्यन्त्यम् मः द्विविधः, दर्शनप्रणमेदात्त्वानांतात्रज्ञशिक्यत्वस्यप्रभावती-पंचात्रश्चारियमाक्र्यमिर्च्छति तदस्त् अन्तत्त्वचंशुद्धस्यभावती-पंचात्रश्चारियमाक्र्यमिर्च्छति तदस्त् अन्तत्त्वचंशुद्धस्यभावती-पंचात्रश्चारियमाक्र्यमिर्च्छति तदस्त् अन्तत्त्वचंशुद्धस्यभावती-परिविद्यन चारिकंपात्रियोद्धस्यः श्चार्यन्तिक्षात्रियमानुष्यम् स्विष्यार्थन्यस्यार्थन्यस्य स्वयः चारिकंपाङ्गपन्नस्यार्थन्यस्यः स्वयः चारिकंपाङ्गपन्नस्तिन्त्यस्यः

स्तुनः ।वरापयमांग्योचक दर्शनसारकप्तरोदाापिकसम्पन्नतं तस्त-, प्रशानावरणस्यसन्यान्त्रयेकेनस्ज्ञानंजीनादिन**ः** स्तान्युज्युद्धः स झा-रुपिक्पंनिरतिचारकपंचारत्रमोहनीयश्चेयशायिकंपारित निरूपस्यमेक्यवरूपरियस्तास्यभावानुभवट्श्वणममतिपातिचारिवं दानांतरापादिक्षवेक्षायिकदानादिकपंचयकारंदानादिस्वरूपंचाविरोणाः नरपक्तोत्तेयं उरीर्णानांश्चयः अनुरीर्णानानुपरायः वेनिनिर्वतः ज्ञायोपरामः भावनाचयतस्तवाप्पुदितंत्रीणअनुदितंचोपज्ञातमित्रः च्यते क्षयोपरामेषुर्योप्यास्त्मप्रदेशतयाकुर्यणोवेरनातुज्ञानात् म सीगुणविचातायभवातिविचाकवेदनतुनास्वेति, उपज्ञानेतुमवेदाकर्माः गानुभवति क्षयोपरानेतुमदेशवेरनतद्भावः तेनक्षयोपरामेनानिवै क्षापोपरामिको भावः तस्यभेराज्ञाहरू, सालचतुष्टपंजनान्त्र-निययं क्षयोपशमितानादिपचकं क्षयोपशमसम्पक्तः रेशनिरतिः रातिः क्षापोपशामिकाङ्क्यवमहादशः क्षयोपशमसम्यक्तवादयोद्धिः तिकमकातिमदेशोदयेनसातिचास्ताभवति कर्मणामुदयेनिविद्वेत पक्तिकः प्रजिन्नातिमकारं अनामणसिद्धताहसंपमळेसाकृपा-मा मिछमित्यमोच्यते कमणामद्यानां द्वाविशंकातम् इरस्यस्योदद्यः विद्यातिमकारेकथंसपृद्यीतङ्खुच्यते अज्ञानग्रहणान् ज्ञानः णवशनभोहनीयानांसंग्रहः गतिग्रहणान्होपनामगोबवेदनीः क्षिमानि भवधारणकारणत्वादेशांकमणामितिस्थिमहणात्वाः होपोद्दिकस्यासिद्धत्येसयहः, नवुषक्रमयकृतिभेदानाः त्रशतंत्रकृतिगणनयामसिद्रमायनाथेनचतत्रकेदयाः परि तरकथमुच्यतेचश्रयतेनामकर्मणियनः पर्चातिनामपूर्णाप्ति गेषेनमनो योग्यान्यु द्रगटान् आदायित्वयतिवेचमन्यमा-गङ्करणान्मनोयोगउच्यतेमनोयोगपार*धाम‰्ळेड्याः*

ञ्तः मनः पर्याप्तीसगृद्धीनत्यावितिहोयं प्रादिपादीनांभायपोगान पेक्षपाजेरपा जोगप्यभागजेरपाइति पंचमांगाव्यनात् पारिणाभिकः न्त्रिभेरः जीवन्त्रभाषत्वजभाषतत्वभेदान् जीवभावेजीयत् जीव-त्यनुद्वानेनअजीयता ग्रोनांसंबद्धः भग्यासिन्धिर्यस्यासी भग्यः भाष पुत्रभन्यत्वं अभन्यःसिः देशमनायोग्यः हशाधि रूपियोनसेरस्यरयभन ग्यमुक्राभायर ग्रहिति स्प्रेयायाज्ञे हाः उत्तरात्रीयाः । भागानाभिति ति गण्यद्भि भागद्भिपास्यक्षेत्रकोण्यं निगभागः पणभागाणद्भागाः ર્દશ્યાના પ્રાપ્યાને તે કોનમુખેશુપ દેશ વિષોગ્ય નિયુખેશ ક્લ્પનેની ૧૧૫-શ્રુપ્તિક્ષ્માર ક્યાર શક્તાંમ હતું કુર્ણયું કિમના શક્તિસંબંધ કચીના શ્રા स्मानाध्यामी होये क्रांताराणानि काः त्वन संयोपश्यमेगरयज्ञानादि के और द्वये क्रमन्त्र वर्गानीमन् याभी होम जमी हा इत्यापारियामि क्रजी स्वादिय-६.६ ३ जुल्ल 🕶 १५ जा १८ वस स्थान । इ.स. १८ वस मत्ताप है हरणानि होता 🕾 दर द्वानक सम्बोधकात नो द्वाबनम् अपन न प्रतिमधेयाम ना प्राप्त सन पति देश्यतं हता स्वरत्ना कर अन्त है। जी स्थानायि हसस्यक्नीएशम्भाए 4 ક્રેસ્ટ - ઉપલક્ષણ જ્યાના છે. એને મોર્ગ સામ પ્રત્યોન વ્યવસાય છે. 🕶 🖫 કોઇનાં ને ઇન્ 'જુર્નોનું વર્ષામનકોળાનો 🛪 કહાવેમળા બાને 🗷 🗺 માં દાવ્ય દર્શમાં ઇ ઝારાનશરના ન ઈન" ઇમુજા તુવ કુપોર્મુળના મળતે द्विभागान्त्र । ज्याप १०५० १ । अस्ताम ४ विद्याना स्थापना । क्रिकेन्द्र रहे. के रोजा हो। अहार क्रेडिये क्षेत्रीर सामान क्षुनको । ने स्थि मुक्ति हिन्द्रका राज्य नुवाद्यांचे अस्यायन स्थापनाहः अस्यान राजीत ज्ञानिक रहा हो रहाना है। हुन्हें हुन्हें हैं के हैं कहीना है कहीना वीरी इन्दर्भ । १ ५०६० अवस्थात (१५८८) वास विवास हो। Part Same of the reporter a proper of a state of the ALTER LE CONTRA DE LA GRANDE LE MERTEN E E LE PREPARE monor on East the in the second secretarial districted

विचारसारप्रन्थस्यटीका.

स्यजानस्वरोधः अस्वतानमोयरूपंजनावं तत्रभीन्यिकमानेत्त स्थेतनअञ्चाणसाङ्गितअज्ञानस्योत्रमः निगगुणीम नियामेष्यात्तर स्वारनामिभ्रष्टक्षणेषु अस्ति केचिन् पुनः केचिन्यसम्यास्याकरणः शबाः श्रीणमोहपरवे अज्ञानस्योरयभिष्छन्ति ज्ञानावरणादशेनावर प्रकारियास्तं पात्रत्तान्दर्भन्योगनासंतात्रत् अताणेनचकेत्रस्त्राः नमाकळ्येणुनसन्चेतनामम्भानस्मानः राज्याः १ र गाः राज्यः १४ वर्षाः नमाकळ्येणुनसन्चेतनामम्भानस्मानस् गुपदाअनसंबर्भति तस्रवेषामेनबस्युनि मयनेओसे नेगमनयमते-सम्यक्तानेजावेद्वायोपज्ञामक्जानस्याद्वेपर्यासामादात् सम्यक्त्वेनाः शानंदति एवंभूतभवेतुसवयाज्ञानावरहण्टलाभावेपवअञ्चणास्त्र-इतिस्त्रपंऊह्मम् ॥ ४६ ॥

व्यार्थः—हवे भाव कहे छे तिहां पूछ भाव पांच छे उपराम भावना २ भेद छे उपरामसम्बिन, उपरामपारिक सा विकागतमा ९ वेद हे. शाविकामिकन है शाविकामिक है केरवज्ञान १ करणका न १ सायिकस्तावि ५ टाधिस्योष सम भावना नेह हुट, उपयोग हुँ सन्।दिलाविष् ५ संसीप-रामसम्मितः है देशविराति है सरीवरिति है एवं हैं और विका भावना भेट २१ अमाणअसिद्धत १ असंस्थ १ बेटस ६ कपाय ४ गति ४ वेद ३ मिल्यान् १ एवं २१ पारिणानिक भारता भेद हे आकृत है अभासत है जीवन है यू वेपा जत्तर भारता नेंद्र द्या, हुने गुणटाल भूत भाव नदे हे. सिप्सन्त ै तास्ताहन है किया है यू तीन मुण्डाचे अधीपदान है के दय १ पारिणामिक १ ए ने आर छे तम्पतिनको कांद्री है रपारमा पूर्वन जाठ मुख्याचे पांच भाव है. एक श्रीपसीह उपराम बिना स्पार भाव हो. ससीमाँ केवळ असीमाँ केवळ

अनः मनः पर्यामोसगृहीतत्वादितिज्ञेषं एकेदिपादीनांभारपोगाः पेस्चाबेदमा जोगप्पभगावेदपाइति पंचमांगगचनात् पारिणामिकः स्त्रिनेरः जीवताभव्यत्वअभव्यतस्वभेदात् जीवभावेजीवतं जीव-न्वयृद्धजेनअजीवत्वादीनांसंयद्वः भव्यासिद्धिपैस्पासी भव्यः भव्य पुत्रभव्यत्वं अभव्यःसिद्धिगमनायोग्यः हृद्याचिद्रपियोनसेत्स्यरयभः रपप्रकाभाष्यत्वाद्रतिविषेषाद्राद्धाः उत्तराजेयाः । भाषानामिति तिः गरण्डनि भागद्वतिप्रांसनंत्रयोज्य निगभागः पणभागाध्वत्रभागः दिसानाभाषाति व होनमणस्य सम्बन्धीयम् । तिमणसङ्ग्यनेनविष्ण-भेद्रभिष्याः स्थारमा (लामञ्जलकाणेष् विग्रामा ग्राद्रतिसंबंधः त्रयोभागाः शापापराभी राध क्यारिकामि हाः न बस्तयोपश्रमेमस्यज्ञानादि हे औ-९१५ ४,मन्दर-वराहेर्वामन याची जीवकामी जलक्षणपार्धणामि ४५वी म्ह्यादिए-इक्षेत्र नणम् अंग्या नारभनमस्य स्ट एड्डा सिनाप्रमानाय है स्रमानि इति ग्री द्दर ६५ मन्यम नो प्रधानमो इन्ह्यपुर अपण च प्रतिभवेशायिभाषाः संभाति रेप्यन हे की हा र तथा हर यांचन औ स्थ्याताय हमस्य स्ट्रीपश्चमधारे 4%લ ઉદસ્તાભવનાના મનાતિ સુવદાઓમતુવાનામાં ભાગ ઋ દાહાનાના શક્ય જુનાનિષ્યુ હોલ્યનનામાનો ફુટકાયાયુપારવાન પ્રજ માં શું જે કરતો માં શાં જો કે, મનાહના માં મોના "તો મળતા માં" હવા મુખ્યાનો દિવાયો િક્રું જ્વે રહેર જ્વાર કહ્યું શહે. મનામ કે દાંછ તથામ કે દાંછ પ્રાથમિક Formatte gefannt, mitanniannung eine Alle स्वर्ट होन्द्र कारान ने अध्यान अन्यायन स्थापन स्थापन માનું પ્રાથમિક દેશ કે દેશમાં માર્ચ જુના મુનાદેવ્ય દેમણે નવાના પ્રોથમિ Santa Africa I of the profit from Statistical College રેક્ટર જેમ્બર મેટ હતું જ તુનુ ત્ર આવેલાન તતાન નગલા પ્રજ ATHE STORES OF CONTROL CONTROL OF CONTRA

रपञावरणिरोधः अस्पेतावबोधरूपंअवाणं तत् औदिषिकभावेद्वातग्वेतनआगाणसम्दित्वज्ञानस्योदयः तिगमुण्मिम विप्रिमिष्यात्वसास्वादनामिश्रवक्षणेपुजस्ति केणित् पुनः केणित्मुक्षस्यास्याकरणाकुहाटाः क्षीणमोहपपवेजज्ञानस्योदयमिष्ठजित ज्ञानावरणाद्वक्षेत्रावरः
णक्रमेदिरागृतं भावतृज्ञानद्वनिष्यत्वात्वत् ज्ञानावर्षान्यक्षस्यामामक्रव्येण्यसर्वयेतनामाग्भावस्तत्वस्यानक्ष्मपञ्चानसंभवद्वतिमाप्रवाजनसंभवित तथवेषानेवयमद्वति भयभेजति नैगमनयमवेसम्पण्जानज्ञावेद्वायोपञ्जामक्ष्रानस्यविपयेसभावान् सम्बचनाज्ञानंद्वति प्रवेषुत्वविव्यव्याज्ञानास्यविपयेसभावान् सम्बचनाज्ञानंद्वति प्रवेषुत्वविव्ववयाज्ञानावस्त्वपट्टाभावेष्वअन्नाणाभावइतिस्वयंज्ञ्जयः ॥ ४६॥

ट्यार्थः—हवे भाव कहे छे तिहां पूछ भाव पांच हो उपहास भावना २ ने ह छे उपहाससमितन, उपहासपारिष होन्यिकमाना ९ ने ह छे. सायिकसमितन, उपहासपारिष होन्यकमाना ९ ने ह छे. सायिकसमितन, व सायिकपारिष १ केवस्तान १ फेन्स्टर्डन १ सायिकरानादि ९ व्यिक्ष्मपोप- हाम भावना ने १ १८, उपयोग १० दानादिव्यिप ९ सपोप- हाम भावना ने १ दे शाविष १ स्वीदिति १ एवं १८ जीदियक्त- भावना ने १ दे अवाधाव्यविद्धल १ असंपम १ केदपा ६ काया ४ माति ४ वेद १ मिप्पाल १ व्यवस्त १ प्रति भ वेदपा ६ काया ४ माति ४ वेद १ मिप्पाल १ जीवन १ ए वेपल जतार भावना ने १ वेपल इत्त हो एण्टाणे पुछ भाव कहे छे. मिप्पाल १ सारवादन १ मिश्र १ प्रतीन गुणटाणे स्त्रोपाराम १ उ-दप १ पारिणामिक १ ए ३ भाव छे. सम्पित्यां मांडी इ-प्यासम पर्यंत जाठ गुणटाणे पात्र भाव छे. एक शीपणोहे उपदान विना च्यार भाव छे. स्वेपीन केव्रछी अयोगी केव्रछी

सुणदाणे क्षायिक १ जीद्रयिक १ पारिणामिक १ ए तांन भाव छे. औदयिक भावनो भेद ने अज्ञान केंद्र आदार्थ तो तांन गुणदाणा सीम माने छे. केट्टाएक आदार्थ जानावरणी द्वांनावरणीनो उदय वेहने अक्षाण कहे छे. ते माटे वारमा सुणदाणासीम पहनो उदय माने छे. ने श्रीणमोहने अंते ए .खरे. अज्ञान हे लींधा ते अयोपक्रमभावना भेद छे, ते विष-मांससुक्त जाण्या अने जीद्रयिक मन्ये ने अन्नाण ते ने अ-जाण्यो भाव ख्यो ते ज्ञानावरणीना उदय तेहनो भेद औद्रयिक भावमां क्यो छे. ॥ ४६॥

चउदुगदुगपणचउतिग, तीसातीसासगठदुगवीसा। बीसग्रणबीसतेरस, वारसभावा गुणठाणे॥ ४७॥

- टीका--अधगुणस्थानेपुउत्तरिवधादाद्वेदान्ष्यायोगीवभज्ञयनाद्व ॥ चउडुगति अत्रतीसाइनिष्दान्त्य्यायोगीवभज्ञयनाद्व ॥ चउडुगति अत्रतीसाइनिष्दान्त्रस्यः चउतीसाइतिप्रमिषिष्पादोगुणस्थानकेपतुष्ठिकाद्रवेदाभावानांभवेति अत्रक्षयीप्यामस्थअज्ञानविकं च्छदर्रजेनद्वयं इतिषष्ठक अविध्वर्रज्ञनं विभगेअधिकृतमपिकर्मध्ये नाधिकृतं अन्नाणहुदंसाआइनदुगेदृतिवधनात् दानातिकर्त्विष्यंचकं एवं १० दश्चभादिकरिकार्वेद्यातिः
परिणामकस्पत्रयोपिएवंचतुर्क्षिकर्त्वदानिष्यात्वेभवति "इगतीसित्त"
सास्वादनेद्वार्तिश्चर्द्वार्थकं एवं १० वृद्यभाद्वस्यक्रार्वित्रक्षेसास्वादनेद्वार्तिश्चर्द्वार्थकं । अवानाक्षयोपदासस्य वे एवं दश १० औदविकस्यमिप्यात्वरिद्वात्विशतिः २० पारिणामिकस्य अभ्वत्यवित्रित्रीद्वीअभ्वत्यविभियात्वय्वप्रसंभवात् प्रदाविश्वति चुनः इगतिसित्ति
निक्षेत्रस्यत्वप्रवार्षास्यादनेनोक्ता अवकेचित्तिभयन्तस्यवित्रकीः
दवेन वयोद्धिश्चरिद्धन्ति दत्वसिक्षम्यत्वत्यापिगाष्यायांभिश्रमीद्वर्थ-

संप्रहात् नेह व्याख्यात केचित् वे मीसिमीसङ्वि त्रचनमाञ्च्य सन-त्रिंशानेदाः मिश्रे वदंति, तदप्यपेश्यमेव यतः श्वतसम्यग्दर्शनानां-नज्ञानं नारंतिणस्सनाणीयितअत्तराध्ययनवाश्यात्त्रेयं, अतोद्वाधिदान द्भेदाएव अविस्तसम्यण्डर्शनमुणे "पणतासनिण पंचत्रिशद्भेदाः भा• वानां,नत्रोपशमसम्यक्तं १ क्षायिकसम्यक्त्व १ क्षयोपशमेत्रक्षयो-पशामसम्परस्वे १ ज्ञानवर्षदर्शनवर्षे ६ दानादिलस्थिपेधरेडिते-द्वादश १२ अज्ञानमिध्यात्वरहितापृक्षोनविंशविंशदिवकस्य, अभ-व्यक्त्रद्वीनीद्रापारिणामिकस्य, युवंषचविदान्नेदाभवंति. अवीदयिके-मिप्पात्वस्यस्थानेकेषिन्सस्पक्तवमोहोत्रपंक्षिपंति तदपिसस्मतमिनि देशविरतिषुणे "चउतांसनि" चतुःखिदाद्वेदाभग्रंति,नत्रोपदामसम्यूष्-दर्शनं १ क्षायोपशमस्य द्वादश ता पृत्रदेशविरतिमिलनेत्रयोजशाजी-व्यिकरण, देवगतिनरकगत्यपगेमसप्तदशपारिणामिकरण, देविममने "तिगतीसाति" प्रथतेनयस्त्र दाजेदाभावानाभवंति, तत्रपूर्वास्तापाः चतुर्विद्यतः देशविरति रसंपर्गातिर्पगातिक्षापनीयते प्रनः मनः पर्यवज्ञानंसर्वविरतिःश्चिष्येते तदानपत्रिशद्भेदाः प्राप्नंते, अप्रमतेहितः तपाऽप्रमत्तिससमग्रणस्थानेत्रिंशद्भेदा भाषानां, अवकृष्णनीलकापीत-इतिकेदयानपाभावात्वेनर्निशदिति, सग्हउगर्नासनि सप्तत्वपा अध पदान्विंशतिसंबंधः इत्यनेनअपूर्वश्रतोसस्विशतिः भावनेदाइति, अयवेजःपद्मवेदयास्योपशमापगमेसप्तविंशतिः, उपशमधारिवेक्षित्रे अशाविशतिः, कर्मप्रकृतिकारस्तु उपशमचारिषंउपशांतमोद्देपवद्द-प्यति, पारित्रमोद्यनीयप्रकृतीनांवेद्यमानानांनोपशमः हिनुभेणाव-पिउपराम कप्रपृद्धीतह्नि, भारतिभंग्यांतु कडेश्निन्यायान्, जनशा-मकल् उपरातिहतिग्रहृणेनगृहीतंत्रद्विदेशमात्रमिति, दशनेग्रूरमतं-पराध्यणस्थाने " दुगांसति " द्वाविदानिर्वेदाभागनांश्वति, पनध्वेदनिकंसंज्वलनिकत्यावद्वेदीया द्वादिशनि भवंति, तथी-12 æ

परामंदिविधेशायिकंदर्शनं १ श्वयोपञ्चमस्यज्ञानचनुष्ट्यंदर्शनिविकं सर्वितर्गतः ८ दानादिपंचकंडनिजयोदशदीपारिणामिकीमराध्यगति-सञ्चलनलोभगुक्रुलेदया सिद्धत्वरूपाऔदयि हार्डातद्वाविंशतिः, उप-शांतमोद्देत्त्होभकपायक्षायोपशमिकसर्वित्रस्यभावान्विशतिमेदाभ• वंति, क्षीणमोहे " गुणबीसत्ति " एकोनविंशतिः भागानांमेदाम-वंतिः तेचउपशांतोक्ताःविंशतेः उपशमभेदद्विकापगमेशायिकवारिः त्रिक्षितेभवंति, सयोगिगुणस्थानके " तेरसति " वयोदशनेदाः मावानां भवंति, तेचनव क्षायिकोद्भवाः मनुष्यगतिः ? शुक्रुलेदपाऽ सिल्दर्वचीदयिकं जीवत्वंचपारिणानिकमितित्रयो दश यतः प्रज्ञाप-नायांकेविलनः किभन्याः किवाअभन्याइतिमश्चे नोभवानोअभवादः रयक्तत्वादिति, अयोगिग्रणस्यानके वारसत्तिहादशभावाः भवंति गुक्रुलेइपापगमात् अलेइपत्वेनचास्येति, सिद्धानांतुशायिक नेदाः जीवत्वंपारिणामिकमितिदशभावाभवंति यद्यपिक्षायिकभावभेदनव-केतुचातिकर्मक्षयसमुख्यानामेवगुणानांग्रहणं तथाप्यचातिक्षयसम् त्यानांतयारोपसंकरादिगुणानांतुपारिणामिकेएवसंग्रहइतिपंचसंग्रह-दीकाशप इतिन्याख्याताग्रुणेपूत्तरभावमेदाः ॥ ४७ ॥

ट्यार्थः — मिथ्यात्व ग्रुणटाणे चोत्रीस भाव छे. क्ष्योपदा-मना १० औदियकता २१ पारिणामिकता ३ सास्वादन ग्रुण-टाणे वसीस भाव छे. क्षयोपदामना १० औदियकता मिथ्या-स्वना दिना २० पारिणामिकता अभय्यपणा दिना १ एवं ३२ मिश्रग्राटाणे वसीस भाव छे. क्षयोपदामना १० औदियकता २० मिट्यात्व बेना पारिणामिकता २ अभव्य दिना, समकित ग्रुणटाणे पांत्रीस भाव छे. उपन्नम समकित १ झाविक सम-कित १ क्षयोपदाभ समकित १ ज्ञान ३ दर्शन ३ दानादि ९ औदियकता अज्ञान १ मिथ्यात्व १ विना ओग्रुणीस, पारिणामिक २ एवं पांत्रास भाव छे. देशविराति राणटाणे चौत्रीम भाव छे. पु पांजीसमांयी औदयिकती गति २ नीकर्टी क्षयो-पशमनो देशविराति १ मेटवीये पूर्व चीवीस छे. छठे प्रमत्त गुणटाणे तेत्रीस भाव छे. देशविरति १ असंयम १ तिरि-गति १ ए तीन निकल्पा मनःपर्यवज्ञान सर्वविरित ए वे मेल्या वैवारे वेशीस, अमनत गुणटाणे शीस भाव छे. हेझ्या तीन नीकळी, तथा अपूर्वकरण गुणटाणे सनावीस भाव छे, तेजी १ पद्मकेस्या २ नीकत्या क्षयोपसम समकित १ ए एक नीकटी वेबारे सत्तावीस छे. तेमव्ये उपसमचारित्र १ भेटीये तेबारे नवमे ग्रुणटाणे अटावीस भाव छे. इहां कम्मपपदिमध्य उप-शमधारित इम्पारमेज गवेरूपो छे. पछे वेद ३ संज्यलम ३ प छ काड्या तेवारे दशमे वार्वास भाव छे. इम्परमे गुण-टाणे बीस भाव छे. सीणमोह गुणटाणे उपशमना २ काढींये क्षायिकचारित्र ए एक भेटीये तेवारे ओगणीस भाव छे. संयोगि ग्रणटाणे क्षायिकना नव मनुष्यगति १ शुद्धकेस्या १ असिद्धरा ? जीवत्व ए तेर भाव छे. अयोगि चउदमे गुणटाणे एक्क-हेस्या विना १२ भार पामीये, सिक्र श्रीवने क्षायिकता नर, जीवपणी पारिणाभिक्ती ए दश भाव छे. ए दशमे आत्मधर्भ छ ए गुणटाणे भाव वद्धा ॥ ४७ ॥

सम्मत्ताओ पंचसु, उवसमसमितिगेसुचरणयु(चु)अं । सम्माइ(यण)मुसंतेपुण, खायगसमन्त्रणा हंति॥४८॥

टीका—अधगुणस्यानेषुभावानांस्वाभित्वमृध्यते सम्मत्ताओः इति सम्यक्तार्यचमुअधवंकरणपर्यतेषुगुणस्यानेषु उपराम- सम्यग्दर्शनंप्राप्यते " तिगेसु " विकेषु नवमेदशमेप्कादशे "चरणपुतं" उपशमचारित्रशुतं, इत्यनेनउपशमदर्शनं उपशमचारित्र एवंभेदद्वयंप्राप्यते पुनः सम्यग्दर्शनादिउपशममोद्वयावत् क्षायिकं सम्यग्दर्शनंभवति यश्चेकचत्वारिशत्सताकस्तरयक्षायिकंसम्यक्तं-प्राप्यतेइति ॥ ४८ ॥

गुण.	भावाः	उप.	क्षयो.	क्षायि.	औद.	पारि.
मिसमि अके म म Sylfi		o o o mononomonal at at io o o	0 0 17 17 187 20 20 187 187 187 187 187 18 19 0	■ 0 0 ميد ميد ميد ميد ميد ميد ميد ميد ميد دار مي مي	Ch Ch or or or or or or or or or the the	W H H H H H H H H H H H H H H H H

ट्यार्थः—संत कहेतां उपशमधीणवतने समकितया गांडा इग्यासमा गुणटाणा पर्यत नोहंक जीवने क्षायिकसमित्रियणे ते एकसो एकताठास सत्तावाटो जीव श्रेणि उपशमधारित मांडे तेहने झीणमोहगुणटाणे झायिकसमितन, झायिकचारित ए ये भेद झायिकमां पामीये एटले झायिकसमितित झायिवन चारित्र छे ॥ ४८ ॥

खीणेसम्मंचरणं, नवभेदसमेदुगंड्गंभयणा । नवनवचरिमदुगम्मि, खायगभेया समुद्दिहा ॥४९॥

टीका—"सीणेसम्भंपरणंत्ति" क्षीणेक्षीणमोहम्णरपानेक्षायिकं चारिषंप्राप्यते, नवसेअनिवृत्तिवादरे दहामेमूक्ष्मसंपराये आधिकभाव-रमिद्वक्रसम्परत्यचादिन्दराणवदिन केचित्तपृकंक्षायिकंसम्परत्यम्वमेव-वदेति, पृवंभवतिअभागायसाअपेक्षाभेदपृक्षेत्रयः "चरिमदुनाम्म" चर-सद्विक्तस्यीतिफेविक्ठअयोतिकेविद्युणस्यानेनवनवद्शायिकभेदाउन्ताः वीतरासेणेति ॥ ४९॥

ट्यार्थ:—नवमे दशमे गुणटाणे क्षायिकता कोईक आधार्य क्षायिकसमितित १ क्षायिकचारित्र ए वे भेद माने छे । अने कोइक आधार्य क्षायिक समक्ति १ एक भेद माने छे एहवी भजना छे। धरिसङ्ग कटेतां छेड्डके वे गुणटाणे तरेमे तथा च्यादमे गुणटाणे क्षायिकता नव भेद पामीचे ए सर्व क्षायि-कना भेद ब्ह्या ॥ ४९॥

परिणामगस्तभेया, मिच्छे तिगसेसयंमिदुगचेव । अभवत्तविहीणंपुण, चरिमदुगेषगजीवत्तं ॥ ५० ॥

टीका—परिणामगरसेति परिणामस्यभेदासिग्दोद्दि सिप्याचे "तिगति" विकेडीक्त्यभय्यत्वाभय्यत्वरूपस्त्रयोभेदाः भाष्यवेदोवेपुः सारवादनमारायद्रीणमोद्वयपेवेषु "युगति" द्वितसे राजाकवभय्याव- रूपं अभव्यत्वेनद्वीनंरहितंद्विकंपाष्यवे "चरमद्दमत्त" चरमद्विके वर्षो-दशगुणस्थानकेचतुर्दशगुणस्थानकेच जीवत्वमस्तिभव्यत्वंतिसिद्वि-गमनपोग्यत्वं तद्यारिजनिष्यत्वंतेननभव्यत्वं अभव्यंतुपूर्वभवनास्ति अतोर्जावत्वमेव,भव्याभव्यत्वस्वरूपंतुभगवतीमूत्रेजपंतीमक्षेचभव्य-त्वंनकर्मजमिति. ॥ ५० ॥

ट्यार्थ:—पारिणासिकभावना मेद तीन छे ते मन्ये मिध्या-ह्यगुणटाणे पारिणामिकना तीन मेद छे. सास्वादनयी मांडी क्षीणमोह पर्यंत पारिणामिकनाए वे मेद छे। अभ्वयपणो नहीं। अभव्यपणो मिध्यात्वगुणटाणेज हुवे। चरिम छेहले वे ग्रुण-टाणे पुक्तीव्यणो छे भव्यपणो तिहां दल्यो योग्यना नीयन्या पछी कडेवाये नहीं ॥ ५०॥

मीसेपणलद्धीओ, अञ्चाणंदंसणदुगंचपढमदुगे । ओहीदंसणजुत्तं, मीसे नाणाइभयणाए ॥ ५१ ॥

टांका—मीसेपणलिद्धओड्निमिथनाम शायोपशिमिनेभायेपण-लद्धीओपंचल्याः वानलाभभोगोपभोगवीयंक्पाः "अग्नणतिग्य-ज्ञानप्रयं मुख्झानश्रुताझानविभेगलक्षणं "दमदुगति" वर्शनद्विक च-सरच्छर्दरानद्वयंप मध्मद्विकेषिय्याचसास्थारनलक्षणेगुणस्थानद्वय-प्राप्यदे "मीसेति" भिश्चगुणस्थानेनाणाः ज्ञानातिभञ्जानाः अञ्जान-तृमिय्यात्वान् भिश्चगारयाज्ञानं, सम्परत्यान् भिश्नभागस्यानं, अपनेकेचिन्तिभंगेद्रशनिमच्छति, तदायांपदीपश्चाह् "औदीर्शनराम् स्व इति अद्येष्ठ स्वीनस्यक्तिति। अञ्चिद्दर्शनेषयति एनश्चन्यन् मनाव्यक्तिस्यार्थनोत्तिकृत्वानाभिगमाद्वर्शनर्थन् भागाय्यानं, वार्ष्ठभाग्वनीत्तिकृत्वानाभिगमाद्वर्शनर्विकारियानिकार्याव्यक्तिस्यार्थना विरुद्धानामज्ञानं शुद्धथद्धावतामेवज्ञानं, मिश्रोवयस्तुसम्यग्दर्शनगुपरोधकपृवअतोमिश्रेऽज्ञानमेवेति ॥ ५१ ॥

ट्यारं:—मींचे कहेनां क्ष्मोपरामभावना मेर ते मध्ये पांघ स्थित, अज्ञान मण व दर्शन र ए दश भेर विष्यात र नथा साहरादन ए मथन "द्या" वे गुण्याणे पानितः विभागात्र होने अने तिर्देशन कर्मोरं, अने विध्यात्र विभाग केने आवे होने अविष्यांन नहीं, अने विध्यात्र्या विश्वे आवे होने अविष्यांन नहीं, अने विध्यात्र्यात्र विभाग अवना छे। पोयायां बांगे आवे होहने अवाप्यात्र बांगे अवने होहने अवाप्यात्र बांगे अवने होहने अज्ञान कर्मोरं, ए अज्ञानमानि परिपाद्य छे, पंच्याद्य विना भारकार ममुख अज्ञानमानि परिपाद्य छे, पंच्याद्य विना भारकार ममुख अज्ञानमा साने छे। विभानात्र विद्यात्र विद्यात्य विद्यात्र विद्यात्य विद्यात्र विद्यात्र विद्यात्र विद्यात्र विद्यात्र विद्यात्र विद्यात्र विद्यात्र विद्यात्र विद्यात्य विद्यात्य विद्यात्य विद्यात्र विद्यात्र विद्यात्र विद्यात्र विद्यात्य विद्यात्य विद्यात्य व

दंसणनाणतिर्गपण, रुद्धीओमीसगंचसम्मत्तं। षारस्सअविरईसम्मे, देसजुआदेसविरयंमि ॥५२॥

द्येश—"देशनाणितगित्यादि अधिब्हसमे " अदिर्तिसम्यस्ते द्वाद्वाश्चरोपदामभावभेदाः वाष्यंते, तेषामीदर्शनदिश्चपुराविष-दर्शन दश्यणं " नाणितगं " जानविकं यपिपुताविद्यालवश्चर्णं "पणब्द्वाओ" वृत्तिवदानावरगोव्ययः "मीमागंध" मिश्रमं मीश्चान्यंत्रयोपदामग्रमप्यस्तं एवंद्वाद्वाश्चरोपदानमावनेदाः प्राप्यंते, तेष्यद्वाद्वाराभेदादेवपदान्तदेवाविर्तियुक्तादेवाविद्यापयमगुणस्यानके वर्षेद्वादराभेदाः अयोपदानस्याप्यते ॥ ५२ ॥

टबार्यः-चोबे समक्रितगुणटाणे दर्शन तीन चशुरर्शन !

अचाह्यर्रान १ अवधिदर्शन १ ज्ञान ३ दानादिरुच्यि ५ ह्यो-पद्ममसमिकत ए अनिरति समिकत गुणटाणे वार भेद क्ष्मोपद्ममना होने, देशविरति गुणटाणे जे वार कद्या तेमां देशविरति मेठींपे तेवारे १३ तेर भाव पामीचे ॥ ५२ ॥

देसविणुसद्वविरङ्, मणनाणजुआपमत्तजुअलिम। सम्मविणा य अपुद्वे, अनियहिचङम्मिचरणविणा ५३।

टीका—"देसविष्यांत"देशविरतिविनासर्वविरतिमतःपर्यायद्वातः अताः ममतेऽममतेचतुर्देश सयोपशमभावभेताः प्राप्यते, सम्यग्रकीन नद्दतिस्योपशमसम्यगद्दशेनं विनाअपूर्वत्रयोदशस्योपशमभावभेताः प्राप्यते, शित्वविग्रणस्यानतः "चडःक्रिम्गः अतिवृत्तिवाद्गय्दभमेतः परायोपशांतमोहर्साणनोहरुक्षयेपुक्षयोपशमचारियंविनाद्वादशमेताः श्वयोपशमभारस्यप्राप्यते, कर्मयुद्धतीत्त्वयमेदशसेगुणस्यानेक्षयोप-शर्मपदानिमण्डति, ततः श्वयोपशम्यानेनमाप्यतेद्वति ॥ ५२ ॥

ह्यार्थः —देशियति काडीये संविधित मेलिये । वळी मनप्रयेतान भेटविष् तेवारे प्रमत्त गुणटाणे अप्रमत्त गुणटाणे पृ वे गुणटाणे अयोगसम्मत च्यद भेद छे. अपूर्वस्त्या गुण्या टाणे अयोगसम्मतित विना तेर भेद शामीय भनिति गुण्याणायी मांडी च्यार गुणटाणा अयोगसम्मतिय विना यार भेव छे. कम्मप्रदीन्ये दशमा गुणटाणार्थन अयोगसम्मतिय सन्ते छे. ॥ ५३ ॥

मिच्छेद्दगयोसंपुण, सासाणतिगेअमिच्छउदयस्स । सत्तरसदेसविरय, सुरनिरयअक्काणरहिआओ ॥५४॥ र्टीका—अयोदयिकं विभज्ञपताहु ॥ मिछेड्रगर्वामपुणहति ।
भिच्छेष्टिप्यात्वेपृक्षविक्षितिनेद्राः जीदयिकस्य प्राप्यंते, पुनःसामान्दनिक्षेसास्त्रादनिष्धावित्रेद्राः जीदयिकस्य प्राप्यंते, पुनःसामान्दनिक्षेसास्त्रादनिष्धावित्रेत्राम् अतिष्क्ष्यं भावस्यविद्रानिक्ष्यं भावस्यविद्रानिक्ष्यं स्वाप्यं स्व

ट्यार्थ:—हुये औदिविकभावना बेद कहे छे. मिय्यात्व ग्रुणटाणे एकत्रीस मेद छे. औदिविक भावना २१ छे, सारग-स्त्यी तीन ग्रुणटाणे मिथ्यात्व दिना २० बेद पामीचे, सम-कित ग्रुणटाणे जान विना ओगणीस छे, इंग्रज मेद जणाव-वाहं वचन छे. देशविरति ग्रुणटाणे सत्तर भेद पामीचे, देव-माति १ नस्कानि १ अझान १ एतीन मिथ्यात्वे पृ व्यार नवीं, पृ वळी भतनेद देखाव्यो छे. ॥ ५४ ॥

तिरिअविरयाओहीणा, पमत्तिअपमत्तिलेसत्तिगहीणा। अदुलेसापुरदुगे, अवेअतिकसायसुदुमच(उ)ओ॥५५॥

ट्यार्थः—निर्ययनीयानि १ असपम १ ए वे कार्डाये ते-यारे ममसगुणटाणे पत्न भेट औदिविकता छे, अप्रमृत गुण-टाणे उप्णानीत्कापोन केट्या नीन कार्डाये तेवारे आदिविकता १२ मेद छे. ये केट्या, तेजी नवा पत्न कार्डाये तेवारे आदमे नवमे दश मेद छे. औदिविकता वेद ३ क्याय ३ कार्डाये तेवारे सहमसंपाय गुणटाणे औदिविकता व्यार मेद छे. छो-भक्तपाप १ असिद्धपणी १ मतुष्पाति १ शुक्र हेस्था ए च्या छै, ॥ ५५ ॥

उनसंतितिगेअलोभा, लेसनिणादोअयोगीग्रणठाणे। मिच्छतिगेसन्निषाईय, चउइग(इगचउ)वारसऊज-यतिन्नि ॥५६॥

टींका— जन्मतीत् उपज्ञांतिपिके वपकांतमोहसपोपिकेवः किंडेक्षणेग्रुणस्थानितिके अलोभति अलोभालोभरिदिताः मुप्औदिपिकस्पभावभेदीः प्राप्त्येते. केंसविणत्ति डेक्या शुक्केंक्यां विन्ता
तद्विद्वती द्वीपुरुभावभेदी ओदिपिकस्पायोगिग्रुणस्थानेप्राप्येते,
दृत्युक्त्वाओदिपिकभावभेदाश्यास्थानेष्ठ, सांप्रतंसाविषाविकभेदानिकृष्येते, तत्रप्रधीपश्चामकादिभावानांपचानामेकसांयोगिकाः पंचर्भगाभवंति, तेचसंयोगाभावात् नसाविषाविकभावे द्वित्वादिक्षणेगजाभगास्त्रसाविपातिकमावर्सम्भगालभ्यंते, तेचानी १२११११४।१५१२३
२४।२५।३४।३५।४५ क्याः किंकसंगोगिवद्य तेचानी । १२३।
१२४।१२५(१३४)१९५११४ प्राप्तः द्वित्रसंयोगिद्य तेचानी । १२३।
१२४।१२५(१३४)१९५१।१४ प्राप्तः द्वित्रसंयोगिकसंवित्रसंयानिकसंवित्रसंयानिकसंवित्रसंयानिकसंवित्रसंयानिकसंवित्रसंयोगित्रसंवित्रसंयानिकसंवित्रसंवित्रसंयानिकसंवित्रसंयानिकसंवित्रसंयानिकसंवित्रसंयानिकसंवित्रसंयानिकसंवित्रसंवित्रसंयानिकसंवित्रसंयानिकसंवित्रसंयानिकसंवित्रसंवित्

१२३५।१२४५।१३४५। इत्येवंपयतेषाः पंचसंयोगि-कस्त्वेकपृक्ष ।१२३४५। एवंकपः, पूर्वपर्ववातिभंगकेपुपदेवभंगाः जीवेपुमाप्यते नपरे. भेयावीसं असंभविणोइत्यागभवाक्यान् त्वेको-द्विकसंयोगोययाझायिकपारिणामिकलक्षणः द्वीविकसंयोगिकीतवक्ष-

त्वज्यक्षास्त्रचेपकाम ओदिकक्पारिणामिकङक्षणः, प्रथमध्युनौ-तिपुक्षाविकस्ययोपकाम औदिषिक पारिणामिकङक्षणोपि धनुगतिषु, पंचकतंचोपिकत्तुक्षाविकतस्प्यत्वोपक्षम्यारित्रवर्श्वोपक्षमध्यारू इतां तवगायायनुष्कृष्कस्तत्वे चज्यज्ञाद्वस्यीतस्य परिणादुद्यवृद्धः चज्रुख्यवृद्धि ज्वसमज्ञपृद्धिकाच्य केविष्ठपरिणायुद्यव्हर्षः १ त्वय परिणामेसिद्धानराजपण्याय्यसमस्त्रीयं इत्यादित्तेयं, इतिभंगक्रमे-

स्पोपश्मीन्दिकप्रिणागटस्यः सच्चत्स्युगतिपुगप्पते वेतजन सक्षत्भगासेषाः बात्राक्षत्रभागः अविद्याप्यस्यन्द्रश्नीत्स्यये स्व नेक्ट्सः तिर्गित्वयोभगाः अयोपश्मीद्रशियः अय्योप-प्रयसः उपशम्यप्रोपश्मीद्रशिक्षरिणायस्त्रशीद्वितियः अय्योप-

चतुर्गतीनांद्रादशभवंति ॥ ५६ ॥

टरार्थः—उपझांतमोह ग्रुणटाणे खीणमोह सपोगी ग्रुण-टाणे टोभ विना तीन भेद छे. आदिविकता अने गुद्धतेश्या विना वे भेद छे. अयोगी गुणटाणे वे भेद छे, निष्मान्य

والمراب فأنصرتها البهر أأكر ويرواء المشامري ومعاأنه ويرابي

सास्तादनिम्ब ३ ए तिन युण्याने साहियादिक्ता पृत १ ज्यार स्थान भारता पानिने, इत्योपश्य जीद्रविक्रमारेणानेत १ ए तीनने ए भारती दे च्यार गतिमां गण्यता थार भारत थे अविरात युण्याने वार भारता साहिपातिकता छे. इत्योग्धन पारिणालिक २ जीद्रविक ३ एक भारती अव्यत्त इत्योग्धन । जीद्रविक १ व्यार भारती ए तीन भारती अव्यत्त इत्योग्धान । जीद्रविक, पारिणालिक १ जीद्रविक ए व्यार भारती ए तीन भारती अव्यत्त अविरात । विषय स्थापशाम, इत्यतिक, पारिणालिक । जीद्रविक पारिणालिक ।

छमदेसिपमत्तदुगे, तिमअपुत्रचऊरोदो ॥ खीणाइतिगेद्दम संभवि, (व)भंगायविक्षेया ॥५%

सरावदार्थक सर्वे वेलिश्व सन्तरीतुः यन्त्वद्रात्ति । स्तर्यकाराकेष्ट

१२३५।१२४५।१३४५।२३४५। हार्ववंत्रज्जेयाः वंत्रास्योति-कस्वेकप्क।१२३४५। एवंकपः, एवंपरविज्ञानभगवेगुपरीयभंगाः जीवेषुमाप्येते नपरे. मेयावीसं असंभित्रणोद्भयागमतात्रयान् लवेत्रते-द्विकसंयोगोयपाक्षायिकपारिणामिकलक्षणः डीनिकसंयोधि वैश्वयक्षः योपश्मभाइविकपारिणामिकलक्षणः, मिथ्यादशां धनुगैर्नानां शा-यिकीद्यिकपारिणामिकउक्षणः, केउछिनां भवन्यानां श्रीयपुर संयोगी तप्रज्ञपदामक्ष्योपदाम आदयक्षपारिणामिक्षत्रभणः, मयमध्यार्गः तिप्रश्चाविकक्षयोपदाय आदिविक पारिणामिकळदाणोपिचनुर्गानेपु, ्षंचकसंयोगिकस्<u>नक्षायिकसम्यस्त्वोपञ्च</u>मगारित्रमकेनोपशमधेण्यास-इतां तत्रगाथाचनुर्धक्रमेरनवे श्वउच्यउगईसुमासम परिणासुद्रपृद्धिः पउत्रखपृष्टि उत्रसमञ्जूहियाचउ केविहिपरिणामुद्रमग्रदेष् १ स्थप परिणामेसिञ्चानराणपणजोश्चयसमर्वेदांत् इत्यादिशेष, इन्सिंगक्रमे-णञ्चाविकसम्यगृदर्शनस्यचतुर्गेतिन्वंनिवेदितं, विष्टतिगति विष्याः दिविके निष्यास्त्रतास्त्रादनमिश्रदक्षणेग्रुणस्यानिके पृष्टेर्भगएकः **ध्योपश्माद्यिकपरिणामळश्चनः सध्यनमृपुगनिपुधान्यः रानउन्** राश्चतर्भेगाज्ञेयाः बारसीच अयवे आंबरवेसम्यगदर्शनारुतेगुणस्थान नकेम्टाः तिनितित्रयोभगाः क्षयोपग्रमीद्विक्षपारिणामिकःदश्रणः मध्यमः उपश्रमञ्जयोपश्चमीदयिकपरिणामळलकोद्वितीयः अवंधीय-化二磺酚 电压电流 电影

and the same of the state of the same of the same of the

चतुर्गतीनोद्दादशभवंति ॥ ५६ ॥

टबार्थः - उपशांतमीह गुणटाणे यीणमोह सपोनी मृण-टाणे टोभ विना चीन भेद छे. आद्यियता अने एक्कांद्रया विना थे भेद छे. अयोगी गुणठाणे थे भेद छ, मिन्याय टवार्यः—िर्विचनीगति १ असंपम १ ए वे कार्यमे ते-वारे प्रमत्तगुणटाणे पत्तर भेद औदिषिकता छे, अममत गुण-टाणे कृष्णतीलकापील केदमा तीन कार्याये तेवारे ओदिषिकता १२ भेद छे. वे केदमा, तेजो तथा पद्म कार्याये तेवारे आटमे नवमे दहा मेद छे. ओदिषकता वेद ३ कपाप २ कार्याये तेवारे यहमसंपराय गुणटाणे ओदिषकता च्यार भेद छे. तो-भक्तपाय १ असिद्धपणो १ मतुष्पगति १ शुक्र लेदमा ए च्यार छे. ॥ ५५॥

उवसंत्तिगेअलोभा, लेसविणादोअयोगीगुणठाणे। मिच्छनिगेसस्नियाईय, चउड्ग(इगचउ)यारसऊन-यतिस्नि ॥५६॥

देश— उसलेति उपझांतिषिके उपझांतमीक्कृतियोषिकेव ख्रिष्ठशुर्णेगुणस्थानिकि अध्येभति अध्येभाविभाविताः प्रय-श्रीद्रिक्तस्यभावभेतःत्रास्येते. लेसविणाति लेखा गुण्डकेद्यां पिना तद्वदिती द्वाप्त्रभावभेती श्रीद्रिकस्यायोशियुणस्थानेवास्येते, दृष्युक्त्याश्रीद्रश्रीकार्यानायात् स्थानेमातियाति केनेदानिः क्ष्मदेते, तथ्यस्थायानायात् नामात्रियाति केमदे दिशादिगंपोगर्यान् नामात्रियात्तिककार्यस्य क्ष्मप्तिकार्यक्षिते स्थान्ति विभावित्यक्ष्मयोन् नाभावित्यात्रियात्तकस्य क्ष्मप्तिक्ष्मये क्ष्मिये विभावित्यक्ष्मये । नाभावित्यात्रस्य द्वाभिक्षये क्ष्मा विश्वस्य विभावित्यक्ष्मये । देशाद्वाश्याद्वाश्याद्वाश्या द्वाश्यात्वस्य विश्वस्य विभावित्यक्ष्मिये । देशाद्वाश्याद्वाश्याद्वाश्यात्वस्य विश्वस्य स्थानिक विश्वस्य स्थानिक स्थानि १२३५।१२४५।१३४५।२३४५। इत्येवंपचतेयाः पंचसंयोगि-कस्त्वेकएक।१२३४५। एवंरूपः, एवंपहर्विशतिभंगकेषुपडेनभंगाः जीवेषुप्राप्यंते नपरे. मेयावीसं असंभविणोइत्यागमवाक्यात् तरेको-द्विकसंयोगोययाञ्चाविकपारिणामिकलञ्चणः द्वीविकसंयोगिकौतवञ्च-मोपशमओदियकपारिणामिकस्क्षणः, मिथ्पादशां चतुर्गतीनां क्षा-यिकौदयिकपारिणामिकछञ्चणः, केवछिनां भवस्थानांद्री चतुष्कसंयोगी तत्रजपशमञ्चयोपशम औदयिकपारिणामिकसञ्चणः, प्रथमधतुर्ग-तिप्रश्चादिकस्पोपशम औद्यकि पारिणामिकटश्रणोपिचतुर्गतिष्ठ, पंचकसंयोगिकस्त्रभायिकसम्यक्त्वोपशमचारित्रबङेनोपशमभेण्याक-दतां तत्रगाथाचतुर्यकर्मस्तत्रे चउचउगईसुमीसग परिणासुरएहि-धउसुखपृद्धि उनसमञ्जपृहिंनाचउ केनलिपरिणासुदयखर्द्दप् १ खय परिणानेसिद्धानराणपणजोगुवसमसेबीय इत्यादिसेयं, इतिभंगऋमे-णञ्जापिकसम्मग्दर्शनस्यचतुर्गतित्वंनिवेदितं, मिच्छतिगति मिथ्या-दिविके मिष्यात्वसास्वादननिश्रद्धशोग्रुणस्यानविके मूलोभगएकः क्षयोपश्मीद्यिकपरिणामळञ्जणः सचचतस्युगतिप्रमाप्यते वेनउत्त-राश्चतुर्भगाज्ञेयाः बारतचि अयवे अविरवेसम्यगुर्द्शनारूयेग्रणस्थान नकेम्टाः तिनित्तित्रयोभंगाः क्षयोपश्मीदयिकपारिणामिकलक्षणः मधमः उपरामञ्जयोपश्मीद्यिकपरिणामळश्चणोद्वितीयः अपंचीप-शमकदर्शनिनां ज्ञायिकाद्यिकद्वायोपशमपारिणानिकलक्षणः तृतीयः क्षायिकदर्शनिनांएवेत्रयोगूहोत्तरास्तुचतुर्गतिषु एवेभवंति वेन**ः** चतुर्गतीनांद्वादशभवंति ॥ ५६ ॥

टवार्थः—उपशांतमोह ग्रुणटाणे प्राणमोह सपोगी ग्रुण-टाणे द्येभ विना वीन भेद छे. आंद्रियक्ता अने ग्रुहहेदस विना थे भेद छे. अपोगी ग्रुणटाणे वे भेद छे, निध्यात्व टीका—लोगंतिकाइतिथोकांतिकानन, पंचाउत्तरमेदाश्चर्त्दर्शने वेपपीप्ताअपर्याप्तमेदेनाण्याविद्यातिभेदारवेसम्यक्त्वेप्तभवंति न नि-प्यात्वे, लोव्हांतिकापिकारिणोगृहीत्व्यानशेषाः, लोकांतिकपरिवार-श्चज्ञातापां नरिज्ञायाध्यपने सामानिकारसरकादयोऽसिहिताः नवे सर्वेसस्यग्दर्शानेनइति तथेत्रसास्वादमेनुस्वात्रानोदाजांवानामिति वचसत्तैनियकाः पर्योग्नाः तत्रापर्योग्नायस्यायांनसम्यक्त्वं, यतः सा-स्वादनेनस्काउपूर्वीअवद्रस्यानिस्याण्युविष्यद्रसाइतिकम्मेस्तव्यास्याप्ति। परियर्द्वगवीसं, विर्ययोगिकायुकविद्यातिकदाः सास्वादनेभवित॥ परि

्टबार्थः — ठोकांतिक नव तथा अण्यत्तर ५ ए पर्याप्ता अ-पर्याप्ता ए अङ्गावीस भेद नथी। इहां होकांति नव अधिय-तिना छीधा छे, परिवारतो एहनो घणो छे। ज्ञाताम्द्रेव क्छो छे. सामानिक आत्मरक्षकादिक छे. वे माटे समकितना सर्वने भजना जाणीये छे, विश्वय तो जिनोवेत्ति, तिमद्वीज सारवा-दन. ग्रुणठाणे च्यासे जीव भेद छे, नास्कीना भेद सत पर्याप्ता भेद छे अपर्याक्षावस्यपे सास्वादनपणो न होये जे माटे नरकाडपूर्वीनो उदय सास्वादन मानयी वे माटे तिर्ययना एक-वीस भेद छे ॥५९॥

वायरथावरतियुगं, अपज्जत्तंवियलतिअंअपज्जतं । अमणापंचअपज्जा, समणापज्जाअपज्जाय ॥६०॥

टीका---नायरद्ति नादरस्थावरिवकंनादरपृथिवी अपयौति रै वादराप्कायापर्योत्त वादरप्रत्येकतनस्यतिकायापर्योत्तइनिमेदत्रयंसारवा-दनेभवति इयमयभावना अत्रकश्चित्तसंश्चिपर्यदियः तिर्यक्षसम्पर्येदः पूर्वभिय्यात्ववकेनीतस्वादिप्रकर्यणाकरणेनवद्वैकेद्रियायः पुनः कारण-

gog.

।शान् । यथाप्रवृष्यादिकरणकरणेनग्रन्थिनेदंत्रस्वारङ्वोपशयसम्पट्ट-र्शनः उपरामाद्यां पात्रव् उपरामी भृषां वेसारवादनमधिगम्यसारवादन-ऱ्यांचे अल्पतरकारावदोषे आयुःसये मृत्या स्वावगविकेउत्पयने, तस्य-प्ररारपर्याप्तावस्थतोऽर्वागृपवसारवादनंदित्वामिय्यात्वरुभते, मनुष्य-तपूर्ववद्वापुरतदा प्रधान्वेधिनेदसंभवेश्रीणमभववाउपदार्वपाप्यपन तेतः सास्त्रादनेषायुपःक्षयंकृत्वापुर्वेदियं द्रृत्यद्यवेनस्यापिभवंति. वि-परतिषे अजयचे विकरुनिकेअपर्गातंसारगढनेमभर्तति, अवंघतिषै• मञ्ज्योत्राप्त्रेपद्वायुरूपश्चेषप्राप्यपतनसारवादनेषृतः विवाहेपुन्पद्यते-विकलानांतुकारीरपर्धापिरनंतरंमिस्पात्यंत्रजति, अमणापंचअसंज्ञिपं-वंद्रियाः पंचजटचरस्थटचररोत्तवर भूजपरिउरपरिक्वाअपर्धा हेषुवि-कलवत्माप्यन्ते समणेलि समनसो भनःसदिना पृवेजलपगद्यः पंघ-अपर्याप्ताः पंचपर्यासम्बेषुसारवादनंबाप्यवे अपर्यातपूर्वाचि नेदसंभ-त्रीपद्ममानुपतिनः सारवादनंष्राध्ययुत्तरयसंज्ञिष्युः पद्ययानस्यभद्रतिः पर्पाप्तपुराविधभेदसंभत्रोपशमात्पतितेन सारपादनंबाष्यते, पृत्रंस्पान वरिनकंअपूर्वाप्तेविकस्मिकंअपूर्याप्तअसिव्यकं अपूर्वाप्तसंज्ञिदशक मितिएकविंशतिनेदाः तिर्पैषः सारवादनेमाप्यते ॥ ६० ॥ टवार्थः--विगटत्तिनअपर्यातापुष्यी १ अपू १ वनस्पनि १ पु तिन भावर अपयोग्ना ते बादर छे पु तीन नेद छे. असक्ति ५ अपर्याप्तासंज्ञि ५ पर्याता तथा अपर्याता भिल्या दश ए दिश विर्ययना भेद पामीके ॥ ६० ॥ मणुप्समणाभेञा, देवेनिजुदतह्वसीसंस्यि । सगपणइगहीयसयं, पणसोईसन्निपञ्चा ॥ ६१ ॥ द्याध-मञ्जूषसम्या मनुष्यायांनाचे समयनि मनासदिता प्रपष्टिकंद्रिधानंनेदानांसारपःदनेवाय्यके देवे देवनतिनेदंप्रयन्ते-14

मिध्यात्वतत्सप्ताधिकंशतंसास्वादनेमाप्यवेइतिसर्वेमछनेसास्वादनेमा-प्यवे तथाचिमश्रेपर्यासमेदा एवपाप्यवे, तत्रसक्षभेदाः पर्यासाः स्त्नमभायाः प्राप्यन्वेतियम्मेदाः संज्ञिपर्याप्तकाःपाप्यवे ॥ ६१ ॥

टवार्यः—मसुष्यना समणा कहेनां गर्भज महुष्य अपयोता पर्याप्ता २०२ मेर सास्वादल ग्रुणहाणे पामीये, देवताना मि-ध्यास्विनि पेरे अञ्चाविद्य विन्ता ११७ पामीप, सर्व मील्या ध्यास्त्रं यया तथा हवे सिश्रमुणहाणे सात मेर नारिकता प-र्याप्ता ७ ते तिर्चय पंचेद्रांसङ्गी पांच पर्याप्ता तथा महस्यना एकसोएक मेद्र गर्भेज पर्याप्ता देवता पंचरासी पर्याप्ता एटले एकसो अटार्णु मेर मिश्रमुणहाणे पामीये ॥ ६१॥

सम्मेसन्नीदुविहा, चउसय तेवीस माघवइपजा । देसेपणतेरिक्ला, पन्नरसाकम्मभूमिनरा ॥ ६२ ॥

द्यका--सम्मेसिक्वाति सम्यक्तेसंक्तिपंचिद्रियोद्विषः पर्या-सपप्रिंतमेदिक्वः चतुः शतचत्विद्यतिष्वमाणस्त्रमाधवर्धानाः मतमापुर्श्वीप्याँसमेदे नैवमाप्यते । इत्यम्रनामकारेण वयोविश्वत्यपि-चदः चतुः शतमेदाः गाप्यते । नैतिषकास्वयोदशतेरिखादश माद्यपो-द्वत्राष्ट्राप्तिकेन्नाप्यते । नत्यसमार्थार्थेक्रक्रकातदेवानां, एवंचतुः शतं-ष्रपादिक्वतानुर्यदेशनमार्थार्थेक्रक्रक्रत्यतिश्चरित्यादिद्यान् निमित्तमिप्राप्यते । देशित देशविद्यानिष्यायाः तत्रदेशे वितास्ये पंचते द्वारात्रप्रदेशनपार्थेक्ष्यत्यानिष्ययाः तत्रदेशे वितास्ये पंचते ग्रात्रप्रपाद्याः तिर्यमञ्ज्यपातिस्यात्रात्र स्वित्यंविद्याः पंचते ग्रात्रप्रपानके पंचतिरस्यातिसंग्याः चंचद्रशक्रप्रपृत्वाभः पात्रस्याद्याः पंचप्यांहाः सद्यप्यातिसंग्याः चंचदशक्रप्रपृत्वाभः वान्तमन्त्रपाद्याः दृश्च विज्ञातिसंग्याः प्राप्यते ॥ ६२ ॥ ट्यापं: —समित्रत्युणटाणे मूठ मेद २ संशीपपाँती अप-पाँती ए वेला उत्तर मेद च्यान्तेन घोतीत धान ते मन्दे सातमां नास्कीला अपपाँती १ मेद ए मन्ये समित्रन नहीं पुटले च्यास्ते तेतीन भेद छे. नास्कीला १३ निर्पयला १० गार्भेजनश्रपला २०० देवनाला १९८ पूर्व घरारते तेतीस पामीपे, इहां घोड् पूछे ले परमाधर्मिन मनित्रन केम जहे १ तिह्यां उत्तर ले कोड् प्रबंगानि देवनाने काले समित्रन पाने छे, देशविस्ति गुणटाणे पांच भेद गर्भजविर्ययला पर्याक्षा पतर कम्म्मूमिना मनुष्पना पतर भेद पर्याक्षाणु वीस भेद वामीपे छीए, ॥ ६२ ॥

पन्नरसकम्मभूमि(वा), नरभेवासेसव्युटाणेषु । समुग्पायायपमचे, केवस्टिवज्ञास्त्रगहुर्वति ॥६३ ॥

नीयकर्मादयेनहष्टः, सचासाताविक्षिष्टविपाकेन, वैक्रियससुर्धातः, वै-किपशरीरनामोदयेन, तेजसससुर्धातः तेजसक्षरीरनामोदयेन, आ-हारकसम्द्रदातः, आहारकनामोदयेन, केविलससुर्धातः वेदनीयना-मगोबोदयेन, सयोगिप्रांतेषुवभवति ससुर्वाया ससुर्वाताश्चप्रमत्ते केविलससुर्वातवर्जाः परम्यांति ॥ ६३ ॥

स्वार्थः—रोष छहायी उपरछे गुणटाणे पन्नः कर्ममूमिना पर्याप्ता ए पन्नर मेद पामीये. बीजे क्षेत्रना उपन्या ते विराति धर्मनी प्राप्ति नहीं सामग्रीनो अभाव छे ते माट जाणवुं. सङ्घ्यात सात छे ते मन्ये प्रमत्त गुणटाणे एक केवर्जी सञ्चद्यात नयी, शेष छ समुद्यात छे. वेदना १ कथाय २ मरण २ वैक्रिय ४ तेजस ५ आहारक ६ ए छ पामीये. ॥ ६३ ॥

पढमेवीयचउत्थे, देसेअणहारमिसिदोचेव । केवलीयंचसयोगे, खीणअयोगामि नो डुंति॥६४॥

टीका—प्रथमिमध्यात्वे द्वितीयेसास्तादने चतुर्थेअविरति-सम्यक्त्वे अनाहारित्तआहारकसमृद्यानवर्जाः पंचसमुद्रधानाभवित आहारसमुद्रधातस्तुचतुर्दशर्धवरस्यवप्रमत्तगुणस्थानकरियवभविनन् शेपेषु। मीसिति भित्रे तृतीयेसणस्थानकद्वावेवदेनीपक्तपयदश्यो-समुद्रधात्रापयेते भित्रमरणाभावान्तमारणांतिकं वेक्षियमित्रयोग-मावावविक्तयं ठेजसस्तुतीवसंक्षित्रध्यर्णमस्यमवति तीवरस्वेत्रोगे-निम्नस्स शेपपूर्ववदेव । सयोगिकेविष्ठश्यर्णवयोवशमित्रण्यान्यानं, केदलीयं केविष्ठसद्वचात्रस्यणसम्यादकरिमाणेभविन् । रिवर्णान-मोहारस्यद्वादश्च अयोगिति अयोगिकेविष्ठस्थर्णवयाद्वरम्युणं नो-

800

इतिनिषेषेभवति झीजेमरणाभावान्माग्यांतिकं मोहाभावातटरस्पुष-जीवनं, स्पानाकटरबातवेदनाकपायी, छञ्चस्यत्वान्नकेवितसुद्वयातः एवमयोगेषि नतुअयोगमर्ग्यहरूयेनरः ह्यंनमार्ग्यातिकपितयोन येचेतनादाताभावान् भवश्येषि न मरणसमुद्रयातः ॥ ६४ ॥

ट्यारं:—-पहिछे मिट्पात्व ग्रुणटाणे हुवे बीजे सास्त्राह्म ग्रुणटाणे, घोषे सम्बन्धत ग्रुणटाणे पांचमे देशविरति ग्रुण-टाणे, केन्द्रणे समुद्धात तथा आहारक समुद्द्यात विना पांच समुद्धात छे. २ नर्बा. आहारक समुद्द्यात होते. सपोगी ग्रुणटाणे एक केन्द्रणे समुद्द्यात छे. सीणमीढ अयोगी केन्द्रण ग्रुणटाणे एक केन्द्रणे समुद्द्यात छे. सीणमीढ अयोगी केन्द्रण ग्रुणटाणे कोइ समुद्द्यात नर्वा. ॥ ६४॥

सेसेमरणं इकं, अहरूदायपटमपंचयुणे । अहतिगंधम्मचउगं, पमत्तिअपमचिधम्मचउ॥६५॥

जीयरमञ्ज्ञवसाणं, तंझाणेजेचरंतपंचितं । तंडुञ्झभावणाया, अणुणेझायअयर्थेता ॥ १ ॥ अंतर्म्यकूर्मप्रमाणकारुमेकवचित्तावस्यानंध्यानंत्री रेचरंतविसंअयवा भावना अथवा अनुषेता अथवा चिनारमृतिः ॥ उत्तरेष ॥

विचारसारयन्यरपटीकाः

अंतोष्ठदुष्तिनं, विंतावत्याणमेमक्युम्मि । छउमत्याणझाणं, जोगनिगोहो जिष्णणंतु ॥ २ ॥ अंतष्ठहूर्तान् परतःचिंताभवति अयवा ध्यानांतरंत्राभवति पुनः

114

बदुवस्तुसंक्रमेसंतानोभवति ॥ उक्तंच ॥ अंतोसुदूनपरओ, चिंताज्झाणतंत्रवुज्झादिसु । चिरंपिदुज्झवदुचा, सुसंक्रमेझाणसंताणो ॥ ३ ॥ अक्तंरुदंपम्मं, सुक्रज्झाणादुतत्त्यअंताद्वं । निक्राणसाहणाद्वं, भवकारणभदरुदाद्वं ॥ ४ ॥

निध्यस्पासाहणाड्न, अन्तासणभ्यस्वराई ॥ ४ ॥ त्रवास्त्रपानं धतुधां अभनोज्ञानाधियोगधितनकपंप्रपमं अभनोज्ञा अमनोद्धाः शस्त्रश्वस्पतेपाधियोगधितनं स्त्राप्तेवज्ञति अपग डाउ-वमुग्राणांसयोगेनादियोगधितनं स्त्राप्तेपांसय इत्यादि अतिष्टां-पोगे आनुगरितसमुद्धानाद्वयोगधितनं उपयोगधितम् प्रमानं अभिनगो-प्योग्दास्त्रप्रमानंप्रयमंभनोज्ञविषयादिसंवयोगधितास्य. निती-

त्रसाद्वयं स्थापन वनामावावयं वर्षक्षयं वर्षक्षात्र्यं क्षाण्यः स्वाययं प्रविधानात्र्यं क्षाण्यः स्वाययं प्रविधानात्र्यं क्षाण्यः स्वाययं प्रविधानात्र्यं क्षाण्यः स्वाययं प्रविधानात्र्यं क्षाण्यः स्वयं योः स्वत्यः वर्षक्षयं क्षाण्यः स्वयं वर्षक्षयः स्वयं स्वयं वर्षक्षयः स्वयं वर्यवयं स्वयं वर्षक्षयः स्वयं वर्यव्यः स्वयं वर्यव्यः स्वयं वर्षक्षयः स्वयं स्वयं वर्षक्षयः स्वयं स्व

તૈનામાં તત્ત્વરાં ભાગમાહાનું પ્રદેશ તે પૈમિશામિયાન, ત્યાપક જ પોજિલેપવામાં તમિર તેમાર્ન કૃપવાને કૃપિયાન કરમ થવાનું ! પ્રસ્તિ- વિદ્યાન પ્રતુષ્ટ ને ફર્માં પ્રદેશ નિર્દેશનિય હોય, તાને તેમો મોટી ત્રિયત્માર દુધને માંગતા હાઇક થઇ કે હોય નો તમામાન અપના કુપ્યાન હોય તો તમામાન અપના કુપ્યાન હોય ત્યાપક કુપ્ય મારા કું કેટવા હોય ત્ર કારણાં નિર્દેશન કર્માં પ્રસ્તિ હોય પ્રયુપ્ય કુપ્ય पमापपरो, जिणमणमयमण्डिविकंतो यहुँदैअदृष्टिमज्झाणिम इत्यात्तेस्वरूपं तद्यव्यक्ष्यत्वहृत्त्वारणमृतित्यानं (मणियानं) अतिक्रोधमद्वमस्त निर्कृणहर्रदोरपरिणामंत्रक्ष्यानंवद्यानं (मणियानं) अतिक्रोधमद्वमस्त निर्कृणहर्रदोरपरिणामंत्रक्ष्यानंवद्यानं (मणियानं) अतिक्रोधमद्वमस्त निर्कृणहर्रदेरात्ते । प्रतिकृष्टिकं त्व दित्ताह्रस्पिताः ।

११ चौर्याव्वनिय १ परिवृद्धस्पात्त्वस्यात्वस्यनन्योपयोग्नावस्य मध्यम् पर्यम्पात्राच्यवित्तक्ष्यत्रस्य प्रयम् ।

पर्यम्पात्राच्यात्रक्ष्यत्रक्षयाप्यायात्त्वस्य पर्यक्षः आद्यो छेत्रया
प्रवृद्धस्य अस्याद्धितात्वस्यात्रस्य स्वत्यस्य स्वत्यस्य ।

पर्यक्षः अस्याद्धितात्वस्यात्रस्य स्वत्यस्य स्वत्यस्य ।

पर्यक्षकरणे, न अद्याद्धस्याद्यात्रिक्ष्यान्यस्य ।

पर्यक्षकरणे, न अद्याद्यस्य द्विनिक्ष्यान्यस्य ।

पर्यक्षकरणे, न अद्याद्यस्य द्विनिक्ष्यान्यस्य ।

विवादीक्षण्यस्ति।

विवादीक्षण्यस्ति।

विवादीक्षण्यस्य नाण्यस्य स्वर्णाम् ।

विवादीक्षण्यस्ति।

विवादीक्षण्यस्ति।

विवादीकष्टिकं नाण्यस्य स्वर्णाम् ।

पर्यक्षस्ति।

परस्ति।

संकाद्भयेसरिदेओ, पसमधिकाद्गुणगणोवेओ। होइअसंपृद्धनणो, देसणसुद्धावस्मि ॥ २ ॥ मदकम्मअणायागे, शोरिकिणजरंशुभरायणं। भारितभावणाए, झाणमयेकासमेद्रं ॥ ३ ॥ सुविद्धत्वारसभायो, निरसंगोतिकभञीनिरासोओ। वैरामाविपमणो, झाणस्मित्रुनिखटी होद्य ॥ ४ ॥

स्तत्रेकत्वरूपंजिनाज्ञासत्यत्वोपयो गेकत्वंप्रयमंवर्यध्यानं, : कदाप्य-वत्रोधेजिनाज्ञासत्याङतिचिननं, अणुवकयपराणुगाह परायणाजं-किणाजुप्पवराजिय रागदोपमोहानन्नहावा ईंगोत्तेण ? इत्येकं-स्वरूपं प्रथमं, अपाया रागद्वेशकतायाः एतेनमनगुज्यंते, भाननाच-नाहंविभावकर्ता नाहंविभावभोक्ता नाहंविभावादारः नाहंविभा-धरसिकः नाहंविभावपरिणामी, नचपुट्रलानंस्वामीनचाधारः नया-हुकः नव्यापकोनोपुद्रलानांयोगेमममुखं परकर्तत्वमेवदुःखं यद्या-नंतनिर्विकारस्यभावात् अन्यन्तन्नमम्, एतेरागद्वेपमिथ्यात्वादयो-दोषाअपायाएव तेषांयोगेममनस्यातन्यं इत्यादिन्ति ननैकायतोपयोग-रूपं द्वितीयं । विपाकविधयश्चज्ञानावरणादीनामशनांकर्मणांविपा-काज्ञानरोधादयः तेषांविषयर्थितनंज्ञानावरणादीनांनाहं कर्त्तानाहंभी-क्तानाहं,आदाता नाहंकर्मणासमृद्धइत्युपयोगचितनतन्मयत्वंतृतीयं-विपाकविचयारुयं, चतुर्यंटोकारोकस्वरूपंजद्वां यस्तिपंग्रहोकास्यान-चितनं वस्तुतः स्वीयासंख्येयप्रदेशगुणपर्यायावस्थानपरिणमनचित-नंतन्मयत्वंसंस्थानविचयारूयंधर्मध्याने किंवहुना सन्त्रवियजी गई पय-त्थवित्यरोवेयं सञ्चनयसम् हुमयंदभाङ्जासमयसञ्चं १ सञ्चपमायि-रया मुणओखीणोवसंतमोहाय। झायारोनाणधरा, धम्मज्झाणस्सनि-दिहा २ इरयनेनथर्मध्यानध्यातारखेनिर्शन्या एव, अत्रदिग्पटाश्चतुर्थे-गुणस्थानके आज्ञानिचयारूपंचर्मध्यानमिन्छंति तदमिप्रायपरिज्ञान मात् आज्ञांगीकारतद्भावनादयोभवंति आज्ञास्वरूपैकत्वोपयोगः स्थिरत्वमंतर्भुदूर्त्तपमाणं अनतानुविधअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानदः पायोदयाभावेषुवभवतिनाः रिव्हत्युक्तं धर्मध्यानस्वरूप, गुक्तस्यानंतु-निर्मेलक्षयोपरामोद्भवययार्थः चेतनाप्रागरम्येनिर्मित्तावलंबनप्राप्तः स्वरूपोपपोगीस्वरूपेकत्वपरिणतस्यभवति पूर्वविदःआद्येगुके तद्य-तत्काङकृतज्ञानावरणीयश्चयोपशमरूपभावश्रुतापेश्चवचनद्रव्यश्चनाः

पेश्चः नोचेन्नरुदेवीमाषतुषादिषुव्यमिचारः, तच्छु हृद्यानंचतुर्द्यानं

प्रथनत्ववितर्वतम् विचाररूपंष्रयम्, एकत्ववितकः अगविचाररूपंदिती-पं, सुस्मिक्कियामितपाविकपंतृतीयं, व्युपरतिक्रयानि इति उपंतर्यं, तः षाद्ये द्वेजपशांतज्ञी गकषाययो भैवतः, अत्रोपशांत ज्ञी गकषा यशान्देत-उपशमध्रीणश्चपक्रश्रेणीयारम्येते पुत्रेत्रेयं घ्यानशतकाशपादिति, तया-रमनःपुद्रहादिस्यः मिन्नत्वेनस्वरूपोत्पादःययन्नीःयपृथम्त्वचिननेन-स्वरूपगुणपर्याचपपमस्वचितनेनवितर्रेष्ठतज्ञानावरंविविचारो अर्थ-ध्यंजनयोगसेकांतिः, अर्थः पदार्थः जीवन्यंजनतस्य हाश हज्ञानादि-गुणस्पृहः तत्रयोगोमनसर्कत्वेनवाङ्कायचापटरोयटञ्जणः तर्रपं-ह्यानंद्रव्यात्पर्यायेपयाँ यात्इत्वेपृत्रंसामान्यधर्मदिशेपधर्मगुणपर्याययो**॰** गपरावर्तनेन सविक्ल्पंविक्ल्पपूर्वकं भद्दानज्ञानस्वकपैक्त्वात् नेद-रत्नत्रमक्ष्पंप्रभमेश्कात्मानं, अर्धपदार्थेव्यंजनेशुणपर्यापेष्कत्वोपयी-गरूपंदितकाँ रूपं प्रताहंबनेन अविचारे उपयोगांतरासंक्रमणरूपंनिर्दि-कल्पंचतेनाविचारंनिर्विकल्पत्वेनाभेदरत्नवधीरूपंद्वितीयं, एकत्ववि-तर्कअपविचारलञ्चणंग्रक्तंभवति, स्थमक्रियास्थ्ययोगचलनस्पात-स्यारोधककाकेअमविपाविरूपंतृवीयं, सर्वयासक्रियन्वेक्षेत्रांतरगमन-रूपिकपारूपंचतुर्परपुष्टिनिकियानिशतिरूपं चतुर्व गुरुव्यानं, एवं ध्यानस्वरूपं, तथ्याणस्यानकेषुविभजनाहः ॥ अट्टस्टाइतिप्रथमेषु-पंचतंत्व्याङक्षणेषु प्रणेषु मिध्यात्वात् देशविरतिवर्यवेषु आत्तरीहे-क्रेष्याने, आवदयक्रनिर्युक्ती, सदक्षिपदेशविरया पनायपरसञ्जाणुः गज्झाणं भवपमायमूळंबसेयवपयतेणं ? इत्यार्वध्याने इयकरणा-कारणाच मद्दविसयमचर्चितजंचउन्झेओ अविरद्रदेशासञ्ज्ञज्ञज्यमग-मसेविअमदत्तं इतिरुद्राधिकारेमुनीनां धर्मव्यानानितिसस्यान्, त-स्वार्भेतुअममत्तानांधर्मध्यानं, तद्यपतिपदमानश्चपेक्षपाअमनते• धर्मच्यानमार्टच्यपमाल्यतन्त्रमस्तिपिकियत्कारंपावन्त्रमृत्यानीभवति. 15 111

वचारसारयन्यस्यटाका.

विषारसारमध्यस्यडीका.

तेनआर्तिभकंपर्मयतुष्कंप्रमत्तेऽप्रमत्तेषुणस्थानकेभवति, निदानात्ते-स्पष्टनीनामसंभवातुअप्रमत्तास्येसामेग्रुणेयर्भष्यानस्यवयत्वारोनेदान् मर्वति ॥ ६९ ॥

टवार्थ:—रोपगुणटाणे पांचने विषे प्रमत्त ? अपूर्वकरण दे अन्विवित्तवादर ३ सूरुमसंपराय ४ उपज्ञांतमोह ५ ने विषे पृक्त मरण सम्प्रद्वात छे॥ हवे गुणटाणे च्यान कहे छे। मिच्यात्वयी मांडी पांच गुणटाणा पर्यत आर्त ? तया राद १ ए वे च्यान छे, वेहना ८ पाया छे, आवस्यक निर्धेता मुंति विता धर्मेच्याननी मना छे. निदान आर्त्तविना तीन मेद आर्त्वचाना च्यार नेद ए सात मेद प्रमत्त्रप्रयाणे च्यानना

छै। अप्रमत्त ग्रणठाणे धर्मध्यानना च्यार मेद छे ॥ ६५ ॥ चउधम्म एकप्रुकं अपुविसेसंमि एगसुकंच। चरिमे दुसुक्चरिमा, उझाणभेया ग्रुणठाणे ॥६६॥

- हीक् --च उद्धम्मद्दरपादि अपुन्तिहरपादि, अपूर्वकरणे अप्तेष्टर एए प्राप्तिके स्वारोग्ध के प्राप्तिक स्वारोध स्वार

ट**वार्थः---द**पार धर्मव्यानना पाया तथा एक पहेली पृथ-

क्त्ववितर्रत्तप्रविचारनाथ प् पांच भेद ध्यानना अपूर्वकरण ग्रुण-टाणे छे, शेष ग्रुणटाणे एक शुक्रम्यान छे, नवसे दशसे अग्यारसे शक्कनो प्रयम पायो छे, श्रीणपोहे शुक्रनो वीजो पायो छे, तेरसे शुक्रनो तीजा पायो छे, तेरमाने अंते छे, तेरमानी आ-दिस्यान तर्या ध्यानांतरिका छे, "चरियाण चीदसे शुक्रना छेहुङा धे भेद छे, ध्यानभेद शुणटाणे इंम सङ्खा ॥ ६६ ॥

दंडकभेषा सुगमा, वेयतिगजाववादरकसाओं। चरणे अविरईइका, पढमचउठाणगे नेआ ॥६७॥

टीका-अयगुणस्थानकेषुदंडकभेदानाह दंडकभेदाः सुगर्भाः ग्रुतियाः नेर्र्ड्या १ असुराइ १० पुत्रवाई ५ वेन्द्रिया ३ चेवं ग-स्भपतिरि १ नराणं १ वंतर १ जोड्सिअ १ वेमाणी १ इत्येवं चतुर्विशतिदंडकास्त्रेमिध्यात्वेचतुर्विशरपिभवंति सास्वादनेतेजीवा-पूर्विनाभवतिद्वार्विशतिः, मिश्रेऽविरतसम्यक्त्वेपोडश्वंचेदिपदंडकाः, देशविरतिगुणस्थानकेतिर्गग्पंचेदियामनुष्यपंचित्रया, एतेद्वीदंडकी-भवतः, प्रमत्तारयोगिपर्यवेषुप्कोमतुष्पपंचेदियास्योदंडकोलम्पवे, वेरद्वारेवेदनिकंषुरुपनपुंसकर्वावेदव्शणंयावद्वादरकपायइति अनिवृ-त्तिबादरगुणंपावन् वेदिविकोदयः।मूक्ष्मसंपरायात् उपरिअवेदीएवजीवः वैदाद्विविचाः।द्रन्यवेदा भाववेदाश्चतत्रद्रव्यवेदार्लिगाकाररूपाः। भाव-वेदाः पुरुषाणां स्थमिरापरूषः स्त्रीयां पुरूषा मिरापरूपः पंजानां तूभ-यामिलापरूपः, प्ररुपादिषु तिष्पर्फुकुमनगरदाहुसमानविषयदाहुः स-चनत्रमगुणस्थानकंषावदेत्र छिंगाकाररूपस्तुसयोगिकेवछिपर्यतंदद्दयते, तस्पाउधकर्मयंषेवेदत्रिके, उपयोगदादशक्यनेनद्रव्यिगग्रहणंत्रत-मिति, अभिडापापेश्चयातुनवर्मयात्रन्, नतुन्यानारूउस्यथेनिगतस्य-

कावेदोद्यतानात्रामिराषरूपः, तत्कयं तत्रोच्यतेअववेदोदयः नविष यामिलापरूपः किंतुपुरुषे धैर्षरूपः, झीवेदस्यकिंविददैन्यतारूपः नपुंसकस्यक्तिचिदातुरतारूपपृवज्ञेयः, वेदोदयाभावेतुतीवत्वदैन्यत्वा-त्तस्वादयोनभवंति, उक्ताः वेदाः. संप्रतिचारित्रंकथयनाहः

चरणेचि चारित्रंसप्रतिपक्षभेदयहणेनसप्तविद्यं, तद्यथा सामायिकं, छेदोपस्यापनीयं, परिहारविशृद्धिः, सक्ष्मसंपराये. यथास्यातं.

अविरतिश्चतत्रसामायिकमिति सर्वसावद्यपोगविरति-सक्षणंसामायिकं, तद्विशेषाएवछेदोपस्थाप्पादयोविशुद्धतराध्यवसा-पविशेपाः, सावद्ययोगविरतेरेवतत्रय्युत्पत्तिः, रागद्वेपविरहितः समः, अयो गमनंसकलकियोपलक्षणमेतत्सँवैविक्रया, साधीः अर-

समाये भवंसामायिकं, सामायेननिर्वृत्तंसमस्पवाविकारस्त-न्मयः समायः सप्रयोजनमस्येतिवासर्वत्रयथामिप्रेवेर्येटक्, तद्यसा-मं।पिकंद्रिमकारं, इत्यरकालंपावज्ञीविकंच नगाद्यप्रथमान्यनीर्थ-करवीर्थपोः, प्रवज्याप्रतिस्यावारोपितं, शस्त्रपरिज्ञाव्ययनादिविदः भरधतः छेदापस्थाप्यमंयमारोपपरोविद्याष्ट्रतस्त्वाद्विरतेः सामायिकः

क्तद्विष्टस्यनिजैराफला, समस्यायः समायः समायमितिस्वार्षिन

ब्यपदेशं जङ्काति, इत्यनइत्यस्त्रालमस्यमनीर्थकृतांविरेहस्रोपवर्तिनां-चपावळांविक प्रवज्याप्रतिपनिकालादारम्यपाणप्रयाणकादविष्टिः प्रयमानिमती वैकाद्विध्याणासामान्ययतिपर्या यहोदोविश्रद्धतास्यसाः वद्यपोर,विग्नावस्थानविविक्तनसम्हानतारोपणछेदोपस्थाग्यसयमः । हे तोपस्य,स्यमेन हे दोपस्याच्येषुर्वपूर्योष छेदेसति उत्तरपर्याये उपस्थापः नदेकोदरथापनं, नदपिद्विपा, निरतिचारसातिचारभेदेन, नप*दाः पर्य* निर्मनेचारमञ्जानविद्याशस्ययनविदः मध्यमनीर्थं क्राद्वारयो गयः)^{१५}म-પદવે, પ્રસિત વૈજ્ઞાનો ધૈનિફાવ્યાળાં શિવ્યત્ને ન મધને ખર્ચાત, ^{માતિના}ન

तुमन्तन्त्रभूभस्यपुनर्भनागेपयोक्षतेपस्याप्यंगुभव्यंधेतनः मानियान 3112

चरियतिकलपपुनाद्यंतर्तार्थंकरमोरेवेत्यर्थः, परिद्वारस्तपोनिशेयस्तेन-विद्यद्वंपरिहारविद्यद्वमिति, तद्दपिद्विधा, निर्विदयमानकं, निर्विष्टकायि-कंच, तननिर्विदयमानकमासेव्यमानकंपरिभुज्यमानकमित्यर्थः, निर्वि-ष्टकायिकमासेवितसुपभुक्तंतत्सहयोगात्तदन्रष्ठायिनोपिनिर्विशमानका-स्ताछील्पेशक्तीवानिर्वेशः उपभोगोनिर्विशमानकाः ततउपभुंजानाः निर्विष्टकायिकाः कायोयेरितिपरिभुक्तंताद्दग्विधतपसः निर्विष्टकान विकाइत्यर्थः परिहारविद्यादिश्वतपः प्रतिपन्नानां नवकोगच्छः, तत्रप-रिहारिणध्यत्वारः, अनुपरिहारिणध्यत्वारः, कल्परियतपुकपुववाचना-चार्यः, सर्वेपिश्वताद्यतिसंपन्नास्तथापिरुच्याकल्पास्थितएकः कश्चित्र-वस्थाप्यते, तत्रवेकालभेदेनविदितत्वोन्ततिष्ठंतितेपरिहारिणः निय-ताचाम्लभक्ताः, स्वतोनुपरिहारिणांशीय्मेचतुर्थपष्टाष्टमभक्तलक्ष्मणंज-घन्यमध्यमोकुष्टं, ऋमेणैत्रक्षिक्षिरकाळेषष्टाष्टमदशमानि जबन्यमध्यमो-स्क्रष्टानि, वर्षां स्वष्टमद्वादशभक्तानि ज्ञघन्यमध्यमोत्कृष्टानि, पारणाका-केप्याचाम्छमेवपारयंति, उक्तत्रिधानंतपः पण्मासंकृत्वापरिहारित्वंम-तिपद्यंते, अनुपरिहारिणश्चपरिहारियोभवंति, तेपिपण्मासान्विदधते-तत्तपः, पश्चात्करूपरिथतइति, प्रवमेषपरिहारविशुद्धसंयमोऽप्टादशमि-र्मातः परिसमाप्तिभुपयातिपरिसमाप्तेत्ततिसम्बुपनस्तदेवार्केचित्परिहा-रतपः प्रतिपद्यंते,स्वशक्त्यपेक्षाः केचिद्वासिनकल्पमपरेतुगच्छमेव-विज्ञन्ति, परिद्वारविद्यद्विकाश्चस्थितकृत्पाएवमधमचरमर्तार्थपोरेवनम-ध्यमतीर्थेष्ट्रिति, सक्ष्मसंपरायसंयमस्तुक्षेणिमारोहृतः प्रतिपततोत्राभ-षति, श्रेणिरपिद्विप्रकास उपशमिका,शायिकाच, तत्रोपशमिकाअनंता-नुवंधिनोमिष्यात्वादिवयं नपुंसकर्खावेदीहास्यादिषद्वंपुवेदः अमृत्या-रूपानाः प्रत्यारूपानावरणः संज्वरनाक्षेति, अस्याधारंभकोऽप्रमत्त-संयतः अपरेत्रष्टववेऽविरतदेशप्रमत्ताविरतानामन्यतमःप्रारभवे, सचा-नंतात्रवंधिनधत्ररोपिसमकमेवशमयति । अंतर्महर्तेनततोदर्शनविकं

तारोऽदर्शीणपुमानागेहागपुंत हमेदंततः स्विवेदंगीपदागेद्वति मास्त-पुंतस्ववेदं नतः पुरुपपेदं गृतीयः मञ्जीवरियोग्धरमा क्लीपेदंनतः पुरु-पवेदेततो पिहास्पादिपदः हततः पुंपेदंततोऽप्रस्याख्यानम् स्पाद्धान् स्वाद्धाने विद्यान् स्वाद्धाने विद्यान् स्वाद्धाने विद्यान् स्वाद्धाने प्रदेशीयान् संग्यद्धान् स्वाद्धाने प्रदेशीयान् संग्यद्धान् स्वाद्धाने स्वाद्धान् स्वाद्धाने स्

यसापीदशमग्रणस्यानवत्तीं श्रेण्यारोहे चवद्रमानविशुद्धाय्यवसायिक्यः
द्धतरं उपशांतमोहारूपंउपशांतसर्वक्रपायं एकादशग्रणस्यानकंठमठे,
सचोपशांनाह्यक्षयेणम्यतनगुनर्वशमंग्रक्षमसंपरायंग्रणस्यानंठमठे, सः
चहीयमानपरिणामत्वातः संद्वित्ययमानद्यश्मसंपरायीकञ्चते इति, क्षांयिकीत्त्रश्लेणमारोहन्त्रथमममनंताद्यांचिनोविष्पारविमश्चात्रसम्बन्धार्मः
अप्रत्यारूपानम्यारूपानावरणीनवृंतस्क्रकीवेरीहास्यायिक्तसंवेरवेर सा राज्यस्यारूपानम्यारूपानावरणीनवृंतसक्क्रीवेरीहास्यायिक्तसंवेरवेर सा राज्यस्यारुपानम्यनावर्णानवृंतस्यारुपानम्यनाममन्तिरर्ताः
नामन्यतन्त्रीवरस्यारुपानम्यनावर्णानस्यारुपानम्यनाममन्तिरर्ताः
नामन्यतन्त्रीवरस्यानमञ्चनतायः, स्यानंताद्यंपिनोञ्चगपयेक्षयाप्यानम्यन्त्रस्यारुपानस्य

संयमी भवति, सविद्युष्यमानसूक्ष्मसंपरायीकव्यते, अत्यंतविद्यदान

त्ततोहास्पादिपञ्कं, ततउदितंनेदंततः संज्वल्नानामेकैकंक्रमेणक्ष्यः पति, सावशेषप्रतसंज्वलनकपावेज्तरक्षप्रित्वास्थते, सववपूर्वसेपः चोत्तरेणवसहस्थप्रति यावत्संज्वलनसंख्येषणाःः तमपिअसंख्ये

284.

·णांश्चयुगपदेवक्षपयितुमारमते, तन्मच्यभागेत्वेषामिमाःषोडशमकृतीः क्षपयति, नरकतिर्थगताणृतदानुष्टर्योणुकद्वित्रचतुर्गिद्वयजातीः आ गरमा पराम भाणपू का दरमगुणस्थानं माप्तः, उपशांत रूपायोगियपाः व्यानस्य राज्यतः, अयंच्यतीनमोहीपृत्रभवति, ज तन्त्रभूत्रभूतेपताय-तसंपमीभयति, तपायुनरपंत्रीणमोदीक्षपेनक्रपापोपिक्यारूपा-मीमवाते, प्रयादाव्हार्थेष शास्यातः संपन्नीभवाने, भगवतातपा-क्रपंचल्यातोप्रसिद्धः ययाल्यातः सन्दैकादशगुगम्थानेजपर्मातः द्वाररोज्ञीणस्वायकपायामात्रः, प्रसपोनिकेन्छिअपोनिकेन पियदाच्यातः, एवंपंचावियदास्ति, अष्टवियंक्तर्यं चारिकीकाणाः लकादिभेदाः अपिवन्तर्टीनापृदत्तेयाः, अनमतिपद्धसा-र्द्वसायस्यान्त्र्यान्द्रसाविशतिः सर्वेषाअनस्यारुपानङ् ोः, एवंसमभेदाः संययमार्गणाङ्ख्यातंत्रारिनस्यरूपं, तत्रगुण-बेमजाहा, चाणेचात्विचारिनाधिकारेमयमच्युपुणस्पा-7 रहक है, सास्तादन गुगटाने वेउनाउ किना मामीरे, मिथराणटाणे सोल पंचेंदीना भेर पामीरे, रोल पानीये, देशविराति तिर्वेच पंचित्रे मतन्य इक प्रामीरे, अने छहा गुणराणायी एक मनु-भीषे. वेद झारे भारतसंपताय पर्यंत तीन वेद यणटाणायी मांडी उपाटा पांच गुणटाणा अ-ान १ केनलदर्शन १ ए उपयोग तीन वेद या छे, वाद्यस्यानीहिंगनी अपैज्ञावे ए यान्या मेरापक्य वे भारवेदनी अपेद्यावे नव गुण-ार्मणाना मेद सात ७ सामायिक हैं छेदी-

पस्यापनीय २ परिहारविशः इ सक्ष्मसंपराय ४ ययाच्यान ५ देशविरति ६ अविरति ७ ए सान भेद तिहां पहिन्ने ब्यार सुणदाणे अविरति एकज छे ॥ ६७ ॥

दरविरइदेसविरए, पमत्तिअपमतिचरणतिअगंच। सामाइयछेयंपुण, नियहिअनियहिगे नेयं ॥ ६८॥

टीका—देशिवस्तीपंचमेगुणस्थानके दर्गवरतिः दर्गार्ड्याद्वेरतिः प्रसिद्धिसारुपादरविरतिभेविति, प्रमतेनवाऽप्रमतेचरणितयां चरणा-नांविकंचरणिविकं सामायिकछेदोपस्थापनीयपिद्धाराविद्याद्विछक्षुणंमा-प्यते, सामायिकंपुनः छेद्द्वतिछेदोपस्थापनीयंचारित्रयुग्मेअपूर्वकरणे अनियद्वी अनिवृत्तिकरणेभवति ॥ ६८ ॥

टबार्थः अने देशविरति गुणटाणे एकत देशविरति छै।
मसत १ अप्रमत्त २ गुणटाणे सामाधिक १ छेदोपस्थापनीय २
पिहारविद्युद्ध ३ ए तीन होये, अर्ध्वकरण गुणटाणे तथा अ-निवृत्तिकरण गुणटाणे सामाधिक चारित १ अने छेदोपस्था स्नीय चारित्र ए वे चारित होय ॥ ६८ ॥

सुंहमेसुहमंचरणं, सेसेसु अहस्कायगंभवेचरणं । योणिलक्खाचुलसो, मिच्छेवीये अ गइतसगा ॥६९॥

टीका—सुद्रमेस्ट्रमसंपरायल्झणे द्वामेगुणस्थानके स्ट्रम-चारित्रं स्ट्रमसंपरायल्झणंचारित्रंभवति, त्रेपेषुउपझांतमोद्द्व्जीणमी-हसयोपिकेत्रल्लिअयोगिकेत्रलिल्झणेषु चतुर्प्रगुणस्थानकेषु अह-रक्तापगं यथाल्गातल्झणंचारित्रंप्राप्यते, इत्युक्तंचारित्रद्वारं, अथयी-निद्वारंअभिष्द्रसुराह् तत्रयोनिहरुपत्तिस्थानं तत्रयेजीवाः पूर्वभवाषुषः क्षपान्अभिनवाषु रूर्वेन्द्रश्वास्यावन्नगरपावाआगरपप्रधमसमये प्रव-द्रस्यवे तश्यकृष्णेग्यसस्यक्षसंयान्यरिणनाः प्रद्रद्याज्ञात् स्रव्यक्षित् स्पत्रद्वाधोनिः, वर्णादीनाममन्यतमप्राव्यक्षस्यक्षस्योनिः, पृत्रपृत्रकृष्णेद्ववर्णेविवर्णस्यकृष्णेयववर्णितस्योगेमगावर्णस्य हे? पृत्रविवर्णन्यकृष्णेद्ववर्णित्वर्णस्यक्षम्यक्षित्रस्य हे? स्पर्यस्य प्रद्र्यक्षस्य हे, सस्य एक्तियन्त हे? स्पर्यस्य प्रद्र्यक्षस्य हेति वेषाहृष्णकृष्णित्रस्य स्वत्यक्षस्य स्वत्यक्षम्यक्षम्यक्षम्य स्वत्यक्षस्य स्वत्यस्य स्वत्यक्षस्य स्वत्यस्य स्वत्यक्षस्य स्वत्यक्षस्य स्वत्यक्षस्य स्वत्यक्षस्य स्वत्यक्षस्य स्वत्यक्षस्य स्वत्यक्षस्य स्वत्यक्षस्य स्वत्यक्षस्य स्वत्यस्य स्वत्यक्षस्य स्वत्यस्य स्

> दोदोविगटनारय, तिरिदेवेचअरचअरहक्साई, मणुष्चउदसहकरता, संखाजोणीयाच्छसीओ ॥ २ ॥

त्रञ्जनिष्यातेषत्र्वातिरुज्ञायोनयः प्राप्यंते, यीयेति द्वितीयेसास्तादः नेअगतित्रसकाः-गित्रसकास्तेजोकायात्रापुकायिकास्तद्विरहिताः साध्यारणरहिताः तेष ५६ पर्यपात्रञ्जायोनानांत्राप्यप्ते, रूक्तापुरु-सीमिरक्वे पीएगतसनियोयविषाद्विपाटः ॥ ६९ ॥

टवार्थः — यूक्ष्मसंपरायगुणटाज स्वक्ष्मसंपरायचारित्र होये, होय इन्मारमी बारमी वेरकी चउरमी ए च्यारे गुणटाणे ययाख्यात चारित्र छे. हवे चौरार्छा टाख बीवायोनि कहे छे, मिष्यात्व गुणटाणे चौरासी टाख बीवायोनि छे, सास्वादन गुणटाणे वेउ-कमनी सात टाख वायुकायनीए चउद टाख नयी, घउद टाख सावाराजनी नयी ॥ ६९॥ मीसदुगेसुरनिरया, तिरिमणुपंचेद्दिसंभवाजोणी। देसेतिरियनराणां, सेसेसु मणुअयोणीओ ॥ ७० ॥

द्रीकाः—मिश्रसम्यक्त्वछ्झणेगुणस्यानद्विकेग्रुरयोनिः, निस् यचि नारकप्रत्ययोनिः, विषेग्पर्वेद्वियम्ययायोनिः, महष्पप्रत्यया

योनिः पहिंवशतिख्क्षायोनीनां प्राप्यंते, देसे देशविरताख्ये ग्रुगरपाने-ेषुप्रमतादयो-ागक्षमण्डनप्रकृतिकार्यक्षान्त्रसम्बद्धाः अवपर्या-प्राप्यपितसमूर्किमादीनांयोनिभेदन्याख्यायाअदद्धत्वातद्वद्वापिसम्बद्धान

व्याख्यातायुवेति ॥ ७० ॥ टबार्षः—मिश्रगुणटाणे तथा समक्रित गुणटाणे पंचेंद्रीप-

णानीच्यार टाख देवतानी च्यार टाख, नार्राती च्यार टाख, तिर्पचनी चठद टाख, मञ्ज्यनी एटडी रोति होषे, देशविरति ग्रणटाणे च्यार टाख तिर्पचनी, चठद टाख मञ्ज्यनी होषे, तेष छठायी मांडी सर्व ग्रणटाणे मञ्ज्यती योति होषे, योति ते वर्ण गंघ रस फरसमया, जे गंघ प्रथम समये आहार छेवे वे

ंगोनि कहीये ॥ ७० ॥ कुळकोडीणएवं(सु), धुववंधीमिच्छमाइठाणेसु । सगंचत्तछचत्तगुणयाळ,दुगंचपणतीसदुगतीसं॥७१॥

टीका--कुलकोटीनांअपिन्पास्याप्त्रमेवशोनिक्रमेणैवरोपा. . कुलाश्चमित्रपोनीअपिएककुल्टांभवेति, प्कपोनावपिअनेककुल्टां

कुटाश्चमित्रपोनोअपिपुककुट्दंभवेति, पृक्रपोनावपिअनकुट्दंभ भवति, गर्तकुट्कोर्गद्धारं, अयवुववंधिनीद्धाराण्याह, अ्ववंधीद्दर्यादि-तप्रनिज्ञहेतुसद्धावेषासांप्रकृतीनां भ्रवोअववयंभावीवयोभवतितावृव-वंपिन्यः, पासांचनिज्ञहेतुसद्भावेपिनाववयंभावीववस्ताअवृववंपिन्यः,

१२र

पररादि, "निवहेतुसंभवेतिह, भवणिव्होतेणहोयपवर्डाणं, बंदोता-अदुराओं भुशाजनदविज्ञदंगाओं ।१। प्रावंधिन्यक्ष पत्रपातीय-कम्मा गुरुट्टनिविधो स्थायभयञ्ज्ञा निच्छत्र सामात्ररणा विग्येपुत्र-वंधितगयना । १ । तत्र वर्णपतुष्कृतञ्जतकार्यणागुरुटपुनिर्माणी-प्यातानिक्षेचे नानक्नावमञ्जयः, भव क्रांगिष्यात्वेकपायाः पोडस्-हरदेनाष् रहेनरिक्षतिर्वेहनीयमञ्जयः, आयरणानिज्ञानापरणपंचकः दर्शनायरवनवत्रः यरूपाणियनुर्देश शिव्रमंतरापंतानसामभोगोपभोग-षीयाँतरापरक्ष भेषं अपि अभि वे भेगन यन्त्रारिशस्येतागुणस्यानारोहेर्य-धनिनेथेऽपरवस्पदेशुरुद्रावेऽस्वरंश्वन्युवरंषिन्य इति, निय्याल-माहिर्येगार्रमध्यात्यास्यः रेष्ट्मिन्यात्यादिपुरथानेषु,मिन्छमाइटाणेसुन इरयनेनमिन्यारवादिषुगुण-नानेषुच्यासंभवंगोज्यं, नवमिष्यात्ये "स-गुपत्त' सप्तप्रवारिशन प्रविधान बन्यंते द्वितीवेसारवादने मिध्यात्व-षंथाभारेपद्रथः वारिशन नुवर्धधन्योगस्यते, गुणयालद्वगं पह्त्यनेनमि-अगुणरथान रेसम्य रुगु प्रत्यान रेडनंत्रातुं विधारयानाई विक्रमियात्वा-नांबंबायगमेणुशीनधन्यारिंगर् वृत्रवंधिन्यी वंध्यन्ते देशविरवेअम्ररपा-स्यानाभारेपंचानिरानुष्ठ रूपो रत्यंते, प्रमतेप्रत्यास्यानकपापपंचा-प्रामेषुक्रविशह्युवनधिन्धोवस्येते ॥ ७१ ॥

ट्यार्थः — इन्हरीडी प्रय ए रावे, हुने पुत्रवेशीनी सहता-टीस प्रमृति छै, नसीदि ४ वेनस १ कार्यण १ अगुरुख्य १ निर्मात १ जनान १ दुर्गेजा १ निष्पात्व १ कपाप १६ झानादरमी ५ दक्षनात्राची ९ अनस्य ५ पूर्व पुद्रताळीस पुत्रवेशी जागरी, निष्पात्व ग्रमहोन सहताळीस पुत्रवन्त्री कोषे, सारदादन ग्रमहोने निष्पात्व ना छेताळीस पुत्रवन्त्री छै, निश्चगुण्याचे तथा समिति ग्रण्याण ए वे ग्रम्याण अनंताद्वेशी ४ सीणधी ३ मिथ्यात्व १ ए आठ न यांचे, तेणे उञ्ज्ञानालीस बांचे, देशविरति ग्रुणटाणे अप्रत्याख्यानी ४ न बांचे ते पांत्रीस,बांचे छठे ग्रुणटाणे प्रत्याख्यानी मृत्रति, ४ न बांचे तिणे इगतीस झुवंची मृत्रति बांचे ॥७१॥

ंड्रगतीसंग्रणतीसं, अद्वारसचउदसंचसुहुम्मंस्मि ॥ अधुवायंथेसेसा, धुवउदयामिच्छिसगवीसं ॥७९॥

शत् , प्रमंत्तेऽधार्विशतिः, अपूर्वकरणेप्रथमविशतिः, चरमेभागेपरः। अनिवृत्तिकरणेचतसः, सक्ष्मसंपरायतिसः, उपशांतेएका, श्रीणेएका,

्ड्योतनाम, आतपनाम, पराचातनाम, असदशक्ं, स्थावस्त्राकरूपं, असविंशतिरूपं, गोबद्धिकं, वेदनीयद्विकं, हास्यादिचतुष्कं हास्याति अरतिशोकलक्षणं, वेदनिकं, आयुश्चतृष्यं एवं विसप्तिः अवनर्वे सयोगिकेविक्रक्षणेएका, एवमवुववंधिन्योवन्येते, अत्रव्यवंध अना-द्यनंतभेगः, अभन्यानां अनादिसांतोभगो, भन्यानां सादिसांतभगः, वपशांतंपावत्आरूडस्य ध्रुववंचकाभावेषुनर्मिध्यात्वंगतेसप्तचारि-शद्यंयकरणेयंयोभवति, पुनः श्रेण्यारोहेतद्यंयापगमेयंथोन, तेन-सादिसान्तःभंगको भवति, पुनस्त्ववंधमकृतिषुपुकः सादिसांतःभंगः माप्यते, निरंतरबंधान्बंधकालेसादिःबंधाभावेसांतःइतिभाष्ये, या-सामन्युच्छिनस्तुसंततः स्वोदयन्यवच्छेदकालंबावदुदयस्तावृवोदयाः, पासांतुष्यविद्यनोप्युरयोप्योपिमातुर्भवति तथाविधद्रव्यक्षेत्रकालः भावस्वरूपंपंचविधंहेतुसंबंधंप्राप्यताअटुबोदयाः, यदभाणि, अव्यु-छिन्नोउरपो जाणपपढीणनाध्योदर्आवृछिनो विद्वसंभवद् जाण-उद्याताओ १ तत्रव्रुवोदयाइमाः, निमिणधिरअधिरअग्रुरुअसुद्वअ-सुद्वतेयकम्मचउत्रता नाणंतरायदंसण्मिछेतुवउद्यसगवीसा १ तत्र-निर्माणं अस्थिरस्थिरं अगुरुट युश्ये अश्येती जसंकार्मणं द्वेशरी वर्णादि-चतुष्कंपताद्वादशनामकर्मणः १२, ज्ञानावरणपंचकमतरायपंचकं-मिष्यात्वेइत्येताःसप्तर्विशतिः युत्रोदयाज्ञेयाः, निष्यात्वस्यसांतत्वोदये-पियुवीद्रपस्तासांअनंतं काटंमिध्यात्वोदयेनैवसहवर्षमानात् , प्रवोदः योमिच्छि, मिध्यात्वेसप्तर्विशतिसपिआस्ति, सतिमिध्यात्वेकस्पापिनोद-'यव्यवछेदः ॥ ७२ ॥

ट्यार्थ:—सातमेपणड्यवीस दांचे, आटमे शुणटाणे निदा २ दिना ओगणश्रीस बांचे नवसे गुणटाले स्प १ दुगंडा १ नव नामकर्मनी एड्रग्यार न बांचे तेयारे अग्नर भुत्रचेषी सांचे. गुश्मसंपराय शुणटाले संज्याता ४ च्यार विना चड्य सुवसंची बांचे. गुश्संचीयी क.ट्यां दोन रही वे अनुत्रचंची वा-गर्वा. वे इहां किय्याले सिकेर अनुत्रचंची छे. सास्वादने ५५ छे, मिश्रे ३५ छे, समितिते ३९ छे. देशविरते ३३ छे प्रमत्ते ३३ छे. अपमते २८ अर्थ्यकरणे प्रथम ३० पछे आठ ८ अनिवृत्ति ४ तथा सुरूमसंपाये ३ उपशांतमोहे १ स्रीणः मोहे १ सयोगि केविछ १ अयोगि केविष्टये नयी।॥७२॥:

्छवीसखीणंजा, सयोगीवारसधुवोदयापयडी । ,ओहोदओवसेसा, अधुवदया हुतिपयडीओ ॥७३॥

टीका—सास्वादनादारम्यद्वीणमोह्ययंन्तं मिध्यात्वरिकाः प्र
इत्विद्यतिः वृत्रोद्दास्यस्यने, द्वीणमोह्यते मानावरणदर्शनावरणतिरापश्चमात् सयोगिन्द्योद्दर्शनुष्ठाद्दादशनामम्कृतयप्यवृत्रवेदाउदयन्तेनम्माप्यन्ते अयोगिन्द्योत् स्वात्र्यां अविश्वनुवोदयाउदयन्ते त्वर्योदयनम्माप्यन्ते अयोगिन्द्योत् स्वात्र्यां स्वात्रयाद्यः क्षेत्रयोद्द्यस्य स्वात्रयाद्यः मानोद्दयक्षके क्षेत्रयाणां स्वयेक्षयाद्यानाद्यस्य स्वात्रयाद्यानाद्यस्य स्वयात्रयाद्यानाद्यस्य स्वयात्रयास्य स्वयात्रयात्रयः स्वयान्यस्य स्वयात्रयात्रयात्रयः स्वयात्रयात्यस्य स्वयात्रयात्रयः स्वयात्रयात्रयः स्वयात्रयात्रयस्य स्वयात्रयः स्वयात्रयात्रयः स्वयात्रयात्रयः स्वयात्रयात्रयः स्वयात्रयात्रयः स्वयात्रयात्रयः स्वयात्रयात्रयः स्वयाय्यकं स्वयात्रयः स्वयाय्यकं स्वयात्रयः स्वयाय्यकं स्वयात्रयः स्वयाय्यकं स्वयायः स्वयः स्वय

अमुनीदयाध्य-मन्डितस्याष्युन्यस्यपुनस्द्यस्याद्वानादिति, यद्वेवसिध्यात्वस्याप्यवृत्वी-द्यतापृवयुज्यते सम्यक्तप्राप्ती-व्यवस्थ्रितस्यापितव्द्वसस्यापित्वात्या-यनेपुनः सद्धावादिति अभोच्यते, यासांप्रकृतीनावेषुगुणस्यानकेपु- गुणमत्ययतोऽद्यारपुरमध्यमः हेहोनविष्ठे, अवद्रम्परेपकालाद्यपे-श्रमावेष्येवगुणस्थानकेषु प्रदाचिवसीभवति च दाचित्रभवतिताप्यः अनुषोदयाः, यथानिद्रायानिध्यान्वद्ददेगसम्पर्काणमोहंपाषवुद्दयोऽय-दपप्रवत्तेते,अयधनसनतम्सीभववीनिभिध्यात्यम्यनेदलक्षणं, यतस्त-स्पष्तप्रथमगुणस्थानकेनायारयुद्धययच्छेदस्न प्रसंतनोदयः न प्रता-षित्रः इतिप्रवीदयेनीयतस्येति ओधीदयनः सुवीदयापहारेऽवशेषाअ-पुचोदपा प्रकृतपोभवंति, तमनिस्पात्वंसप्तदशाधि कशनमो बोदयेतर-सप्तविंदातियुवीदयास्तदपगमेशेषाभवन्ति, भिष्यात्वे अञ्चवीद्याभवंति, प्रेसास्वादनेपंचार्जातिः, मिश्रेचतुःसप्ततिः, सम्यक्त्वेऽप्रसप्ततिः, देश-विरतीएकपृष्टिः, प्रमसेपंचपंचारान्, अग्रमसेपंचारान्, अग्रमंत्रणेपद्-पत्वारिशनु, अनिवृत्तिकरणे परवारिशकु, बङ्गसंपराये बतु ख्रिशनु, उन पशांतमोदेवपस्तिशन्,श्लीणमोदेवस्त्रिशन्,नयाचरमांवेवसोनविशन् सपोविकेति निर्मेदात्, अयोगिकेनिकादश, अञ्चतीदपाउदपत्वे-नज्ञेयाः, इ दुइयः, ३.५द्वरीस्यामुम्हतिपुशनायनंतश्रनादिसांतरः सुणीदीभंगकीभवनः, तपाभव्यानांच्ताः सत्रविशतिरप्यनाद्यनंतीः द्याएव, भव्यानांतुःअनादिकाटीनाअपिस्वस्त्रोदयव्यवच्छेदकाळेअनु-दपात् सांताइति, अधुनीरणनां प्रकृतीनांतु निरंतर उदयाभावन् सा-दिसांतताप्यद्वत्येकभंगः ॥ ७३ ॥

टवार्थ:—हवे छुव उदमी सवाबीत छे निर्माण १ अधिर १ अग्रभ १ शम १ अग्रक १ अग्रक एउ १ तेजस १ कार्मण १ वर्णादि ४ झानावरणी ४ अंतराय ५ मिन्यात्व १ ए सवाबीत हुनोदमी निय्पाले छे सारवाद-नवी मांडि रीणमोह परीत निय्माल विना छतीस हुनोदमी छे, सपोगी गुणटाणे नामकर्मनी बार वे छुनोदमी छे. अयोगीमे घुनोदयी नयी बारनो उदय छे अबुनोदयीनो छे ओवोदययी घुनोदपी टाळतां शेष रही ते अद्भुनोदयीनी संख्या जाणनी, ते

खीणेअसईचरिमे, चउसयरिसेसअधुवाओ ॥७४॥

··· , दीका--अयसत्तास्त्ररूपमुपदिशन्नाह तीसहियेति तनसंसाः

रिणांअप्राप्तसम्यक्त्वः युत्तरगुणानां सातत्ये नचतुर्गतिषु सञ्जावेन भवंति-

ताञ्चवसत्ताकाः, यास्तुकदाचिद्धवन्तिकदाचिद्धर्यंतरेन भवन्तिताअग्रुव सत्ताकाज्ञेयाः, तत्रगाया तसवत्रवीससगते अकम्मध्वबंधिसेसवेअतिगं,

आगइतिगवेयणीयं दुजुअलसगउरलसासचउ १ खगइतिरिद्धगितपं ष्ट्रवंसत्तात्रसदशकंस्थावरदशकंचोभयमी छने नवसविंशतिः वनवीसित, -वर्णपंचकगंधद्विकरसपंचकस्पर्शाष्टकमीलनेनविंशातिः,सगतेयकम्मचि,

तैजसकार्मणसप्तकंतेजसञ्चारिर ? कार्मणशरीर २ तेजसंतेजसबंधनं ? तैजसकार्मणबंधनं ? कार्मणकार्मणबंधनं ? तेजससंघातनं ? कार्मणसंवातनं ? इतितैजससप्तकं घुववंधिशेषेतिवर्णचतुष्कतैजसः कार्मणशरीरात्शेषाएकचत्वारिंशत्धुवर्वेधिन्यः, वेदविकं आगइति-

गांचे आगिइसंवयणजाइइति संस्थानसंदननजातिसर्वमिळनेसस दश १७ वेदनीयं सातासातलक्षणं हुजअलत्ति पुगद्विकंहास्परित-असित्शोकटक्षणं, सगउरटचि औदारिकसमकं, तद्योदारिकशरीरं ? औदारिकांगोपांगल्झण २ ओदारिकसंघातनं ? औदारिकः षंचन १ औदारिकतेजसबंचनं १ औदारिककार्मणवंचनं १ और

बने ८५ मिश्रे ७४ समितिते ७८ देशविरते ६१ प्रमते ५५ अप्रमत्ते ५० अपूर्वकरणे ४६ अनिवृत्तिकरणे ४० सुक्रमसंपरापे

३४ उपर्शातमोहे ३३ खीणमोहे ३१ ॥७३॥ तीसहीयसयसंता, धुवाउवसंतमोहठाणंजा॥

अञ्जादिया पंचापुं छे ९५ ते मध्ये मिय्यात्वे ९० छे. सास्ता-

126

दारकतजसकामणवंदानं ७ इतिजीदारिकसप्रकं, उद्यासचतुष्कं १२९ उच्छ्यास १ उद्योत १ जातप १ परावानसम्बं १ संस्थाति १ अमुखगतिङ्कि २ तिषमानितिषमातुष्ट्वीस्भ्रणतिष्मातुर्वास्भ्रणतिष्मार्द्धिः नीमगोत्रसः वृष्यानान्त्रराहुचसः शतंसरूपाः मकृतपोव्रवसताकाअ-भिषीयंत्रे मुसानारुचातासम्पर्क्तवद्यानाद्वीर्सर्वजीवेषुप्रदेवसङ्गाः ान, अयानंतावुवैविनांकपाराणामुङ्कनसंभवाब्द्यसम्ताकनेवपु-त्ते,अतः क्षेत्र्वतनाकमकृतीनांनिसः विकस्तासंख्यासग्रस्ते १ मेर्न चः यनोऽत्राप्तसम्यक्न्त्राच्युत्तस्युष्णनामेवर्जीज्ञानामेतार्द्वसंयोगो विजीवामां अञ्चरतनारुता वा नवाहीत्तरपुणजीवानां चर्चिरपरे, ोऽननातुर्याचेनायुवसमाकतेवयदिवोत्तरगुणप्रामापेश्चयाअञ्चवस-त्ताकृशीक्रियते तरासशेसामपिप्रकृतीनांस्यातातोऽतुर्वाधेनामेव सर्वोअपिप्रकृतयोयपास्यानयुत्तरग्रुणेषुसचारयवरछेरमञ्जयः त्वाजारमञ्जूषाच्यारमा ज्याच्या ज्याच्या विश्वास्थान केयाचत् ने सन् ति, तनोपरामध्येषिगतस्यकुकारसामुणस्थान केयाचत् ने सर तंपुनसत्तायांमाप्यते यद्यपिशायिकसम्यास्यन्तासप्तकादिश्चय-तानेरोऽरित, तरापगुणस्थानेतामान्यसत्ताधिकारेकधितस्त्रा-तिःतथापिस्यबुम्पावगंतम्यः, श्रीणे असर्वति अष्टच्यारिसर्-तसतापेक्षयामोहनीयप्रविशातिः निद्रापंचकं आयुखिकं यु-ममङ्गपः औदारिकते नसवंधनं औदारिकसम्पर्वधनं औ नसकामणस्थनं तजसकामणस्यनंपृताः पंचासङ्ख्यक्रिकः

अत्तीतिद्वादशेसनामुग्रहपामान्यते, अष्टपंचाश्रतसवापे ितिः मतायांमाप्यते, "शरिमेण्यसो इत्तेष्ता देतेगुणस्याने-तेःसत्तावांप्राप्यतेः गगरथानोक्तःशोवसत्तापेद्भयानु स्वताः राजनुत्रसत्तायुणस्थानकेवक्तान्याः, अभुवसत्ताअधार्विद्यानिः वेरक्रस्यांगनीमाप्यन्ते करमानमाप्यन्तेताञ्जनसत्ताकः मोह १ मिश्रमोह १ मतुष्पदिकं २ देवदिकं २ नरकः

द्विकं र वैकियसप्तकलक्षणं, वैक्रियएकादशकं, जिननाम, आस्त्रबतुष्टपं, आहारसासं, उद्येगींबलक्षणाष्टाविंशतिः प्रकृतिसमूहरूपाअतुवस त्तारूपास्तत्रमिय्यात्वेऽष्टाविंशतिरप्ययुवसताः प्राप्यन्ते, जीवमेदापेश-यासास्वादनेमिश्रेचिजननामरहिताःसप्तविंशतिः सम्यग्दर्शनात् उप-शांतमोहं यावत् अष्टाविंशतिरप्यधुवसत्ताकाः माप्यन्ते श्लीणमोहेसपी-गिकेशस्ययोगिकेविळ्छाणेग्रुणस्थानविके एकविंशतिरवृत्रसत्ताकाः माप्यंते, एवंध्वसत्ताशेषाअध्यसताःमकृतयङ्गति,इत्युक्तंअध्वसत्ताः हारं ॥ ७४ ॥

ट्यार्थ:--तथा २९ सयोगिये ३० छे. अयोगीये १२ अंग्रुवोदमी जाणवी. ग्रुवसत्ता एकसोतीस छे. ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ९ वेदनी २ मोहिनी २६ नामकर्मनी तिर्यचगति ४ जाति ५ औदारिक १ तैजसकार्मण ७ संचयण ६ संस्थान ६ वर्णादि २० विहायोगति २ तिरिआतुपूर्वि १ जिननाम् कर्मविना प्रत्येक ७ शसदंश १० थावर १० नीचगोत्र १ अंतराय ५ एकसोतीस १३० घुवसत्ता इग्यासमा गुणठाणा पर्यंत जाणवी, नवमाने बीजे भागे श्रपकश्रेणिने तेर नीकले वेवारे नवमायी क्षाणमोहपर्यंत ऐसीनी सत्ता छे. श्रीणमोहे पेंसी, वेरमे चउदमे चहुत्तरी घुवसत्ता छे. मिध्यात्वे २८ सा-स्वादने २७ समकिते २८ अप्रमते २८ अनिवृत्ति २८ सक्ष्मसंपराये २८ उपशांतमोहे २८ शाणमोहे २१ सयोगि केवळी २१ अपोगि केवळी २१ ए अव्यसता जाणवी. וו אא וו

मिच्छेविसममिच्छा, यौपअणधीणत्तिविणुमीसदुगे। बीयतीअकसायहीणा, देसेपमत्त युअलंम्मि ॥७५॥ १वेंग

विचारसारमन्धरपटीका. टोका—सामतंसववातिर्वायस्यातिद्वारमिपितसाह

-तनप्रयाचित्रकाणं, यथाञात्यमोज्ञानस्त्रीमचारिववीर्यस्य गुण 3 प्राप्तमं सक्षेणसर्वक्रीयसायऋनहदयस्वास्थरत्वसामर्ट्यस्वस्त्रसायस् •• कायत्वसरके, तथारीपाणां अध्यानाचारीनां आरमगुणानां निरासणः त्वकरणेक्रम्भपितेनपुतक्र्मुणचतिष्टपंमधानं द्वीगाअस्पानाधानः

भाग । स्वरूपने नेकाव रेकपा नाम्यवृत्याणमाकः नेद्वालामात् अ राह्मानादीनां कारणकार्यक्रपोभपवर्षवतां गतकानिज्ञानवरणकानाः वरणमोहातरायस्थानिचाविकमण्युच्यंते, रोपाणिवेदनीपासुनीय-गोषकपानिक्यानीन्यसिर्धायंत्रे, तक्यातिषु याः माङ्गतयः जदिताः स्वावरंगुणसर्वआवृष्यंतियातयंत्वेचेचीत्यः सर्वैयातिन्योविसतिः भ वत्ता वात्रव्यकः जनस्यः व्यवस्य व्यवस्य विद्यान् विद्यान् विद्यान् विद्यान् विद्यान् विद्यान् विद्यान् विद्यान इत्येवशीलाः वेसवातिन्यः पंचित्रत्तिवर्भवति, तत्रसर्ववातिन्यः क्षेत्रच्यानावरणं केवल्दरानावरणं पंचनिद्रस्वादशादिनाअनंतातुः विदेशम्याहपानमस्याहपानावरणस्त्रुणाः कृषायाः सिट्याविपेतिः विद्यातिः, तनकेवटसानावरणकेवलन्दरानावरणस्यक्रकेण्यादीमतीयः माणारियतिरत्तमदेशश्चेषयात्रमतंत्रयाश्चरस्तात्रमधुण्यायमानातिश्चरः त्तावमयुणमाय्मावः, सर्वयाञ्चये सक्टविद्येपाववीयसक्टसामान्याः तथानिज्ञापंचकानामन्युर्वअञ्चोतसर्वयाचात्यन्तिनेनसर्ववातिन्यः, सद्यपिनिद्राचामपिस्वप्नार्दानांदर्शनंतद्दपिनिद्रोदयदीयिल्पेनेवेतिद्वादः क्यापाणां उर्पोपिअनंतावुवन्युर्यः गृद्धभारित्रयम्कविचातनक्रः, प्रत्यास्यानकपायोदयस्याहिसकपरिणामचातकपः, प्रत्यास्यान गयोदयः तदसावद्यविरातिरूपपरिष्यमनयातकः, एतेयपारम्सर्वः गतकतान्सम्पतकाः, यत्त्रनस्तेषांम्यद्येन्वेषिअयोग्याहारवि

रमणंउपकृभ्यते, तत्रवारिवाहृदृष्टातोवाच्यः, सुडुविमेडुरए होईग्रह चंद्रम्राणमित्यादित्तेयं, अथवानस्कादिविपाकभयाद् यद्विरमणंतर्वेति यसुखामिलापे नेवितितिवलोभोदयप्ववाद्धः, तयामिष्यान्वंतुलिम्म णीततत्त्वश्रद्धानस्वरूपंतम्यक्तंत्वस्वमिद्धंतीतिस्ववाति, यसुत्तस्य बलोदयेपियसुप्यप्याविद्यस्तुश्रद्धानंतर्यर्पस्यद्धादोपयोगाभावात् सि स्पेवेति ॥ उक्तंच ॥ विद्योपावश्यके, सदस्यविसेत्माओ भवदेउ जहात्यश्रोवलंभाओ, नाणफलाभाओ निच्छदिहस्सश्रमाणं १ इतिमच्छवीसममिच्छाद्यति ॥ मिच्छद्वतिमध्यात्वेतीसंविद्यातिम्

त्रातः भीपत्ति द्वितीयेसास्त्राद्ववंचेत्राप्यन्ते, ताप्त्रप्कोनविद्यितः अनंताद्यंविष्पत्तृष्यस्यानद्वित्रवंविनाद्वाद्वशसर्ववानिन्यः मीसर्व-गैति सिश्माविरतिसम्पक्त्वलक्षणेगुणस्यानद्विकप्राप्यन्ते वीयकसा-यद्याणा देसेइतिसंबंधः द्वितीयकपायहीनाः देशविरतेऽद्याप्त्रवं तीयकसा-तीयकसारद्वीणाप्रमत्तप्रग्लेशृतीयकषायहीनाः देशविरतेऽद्याप्त्रवं तीयकसा-त्ताप्रमत्तलक्षणेगुणस्यानद्वयेष्ठात्वयस्यस्य ।। ५५ ॥ - दन्नार्थः—सिय्याखे वीस सर्वशती छे, सास्त्राद्व ग्रुणटाणे

- ट्याय:—नमध्याय वास स्वचाति छ, सास्वाद धुण्यः मिष्पात्वभोद्दिनी विना १९ सर्वधातिनो वंध छे, मिश्र तथा सम्प्रित ग्रुणटाणे अनंतात्वर्षवी ४ थीणाद्री तिन दिना यार सर्व-चाती प्रकृतिनो वंध छे, देशविस्ति ग्रुणटाणे नीजी चौकडी अमस्यास्यानीयानी काढींचे एटके आठ सर्वचातिनो वध छे, प्रमत्त तथा अप्रमत्त ए वे ग्रुणटाणे सर्वचाति ४ नो वच छे.

केवरज्ञानात्रणी १ केवरवर्शनावरणी १ निवा वे ए च्यार वार्ष छे ॥ ७५ ॥ फेवराजुअलावरणं, अपुत्रवीअभागओज वृहमजा । दरघाड्रमिच्छिसङ्गा, नपुंत्रिणातेविसासाणे ॥ ७६ ॥

र्थाम-नेपार १ अराजिशनि ॥ अराजिशनि अर्थेकाणप-भ्यभागांवेनिहाइप स्थानावे अपूर्व स्त्यात्यदिनी यभागतः सुन्यते-परायंपारत् वेदरुपुगरुपण केदरजानावरण केवलदर्शनावरण रूपामवृतिर्वेद्वयनेः ननःपर्वेद्याभावः रस्याद्वविदेशयानिन्यः पंच-स्तिज्ञानाप्रस्मभृतज्ञानाप्रस्मनः पर्ववज्ञानाप्रस्मक्षे ज्ञानापरव्यपुष्टचे पार्वेद्र्यनापरकाज्यध्रद्दर्यनापरकावधिदर्यनापरक-इपेर्द्रीनापरणीयकंगज्यतनाधायारः कोधमानमापातीभक्षानी-क्षपापादास्यर्गेन**ार्गन्यो कन्यसुनुन्तार्खावेद**प्रवेदनपुंसकवेदछ्क्षणा ''नी रूपायति" कपायगरसाद्यययः, अनरायपंचरंकृताः पंचविसति-महत्त्रपोदेशपानिन्नोदेशंपानपंतीत्वेत्रशीलादेशपानित्योमनिज्ञाना-यरणमुदिनमपिदैशपानयन्ति किथिनृदेशंक्षयोपशयमातं तथायातय-न्तिप्रशार्वेषतया मलपदिविष्ठयारमुआत्मनः सर्वस्वेकेषटञ्जान-मेरस्टरभेनरूपंत्रपानपंतिताः सर्वपातिन्योमतिज्ञानादिकेतु आन रमनीदेशरूपंशुणंजानयंनिनादेशवातिन्यः नासांमध्ये, षिऱ्यान्वेसषाइति सर्वाः प्रकृतयः देशयातिन्योयस्पेते तापुत्रसास्ताः दनेनपुंसकोश्यदिनाधनुर्विशातिरेवच्छन्ते, नपुंसकोद्रपंथः निध्या-रवप्रायोग्यपुर्वति ॥ ७६ ॥

द्यार्थः — अपूर्वकरण गुणदाणाना वीजा भागवी द्रामा गुणदाणाधीय केवटज्ञानासकी केवटदर्शनासकी ए वे सर्वय-तीनी वेच छे पड़े नभीज, देशमातीम होते २५ ज्ञानावणी छे दर्शनायणी ३ हास्पादि ६ वेद ३ संब्वटना छ अंतराय ९ एदं २५ ते मके मिल्यालगुणदाचे सर्व २५ देशवातीनो चेच छै, मारवादन गुणदाचे नवंस ६ विना धोबीस देशवातिनो चेच छै. ॥ ५६॥ - स्त्रपृष्ठिसत्, अममत्तेषुण्यमृकृतयोवस्यते, तापृत्रदेवासुर्राहृताअपूर्व-- करणेद्वार्विसद्वरस्यते, अत्रगायायां अद्वसुपद्अमेतनगायायांगतम-- स्वत्तेतीयं अष्टसुग्यस्यान्वेसुअयंत्रमः ॥ ७८ ॥

टवार्यः—सवर्घोती तथा देशवाती काटतां शेप रही ते अवाती प्रकृति सर्व ग्रुणठाणे जाणवी. अवाती ७५ छे ते मध्ये मिय्यात्वे ७२ छे. सास्वादने २८ छे. मिश्रे ३९ छे. े समकिते ४२ छे. देशविरते ३६ छे. अपमत्ते ३४ छे. अपूर्व-· करणे ३३ छे. अनिष्किवादरे ३ छे. सुक्ष्मसंपराये ३ छे. ⁻ उपशांतमोहे १ छे. क्षीणमोहे १ छे. सयोगिकेवलिये १ वांचे छे इंग उदयनो अधिकार जोई कहेवो. उदयपिणे पुण्यतस्वना ं मेद ४२ छे. सातावेदनी उंचगोत्र मतुष्यद्वग २ देव २ पंचेदि जाति १ पांचशरीर ५ तीनउपांग ३ वज्रश्रत्यभनाराचसंघयण ^१ समचउरंससंस्थान १ वर्णोदि ४ अगुरुलयु १ पराचात १ उसास ? आतप ? उद्योत ? शुभविद्वायोगित ? निर्माण ? नसदश १० देवतावुआयु १ मकुष्यायु १ तिर्पचतुआयु १ -तीर्पकरनाम १ ए वेतालीसमध्ये सिथ्यात्व गुणटाणे ३**९** ओगणचाठीस छे. जिनआहारक नयी. सास्वादन गुणटाणे अरतीस छै. आतप नयी. मिश्र गुणटाणे चोतीस छे. तीन आउखा नयी, उद्योत नयी. समकित गुणटाणे जिननाम तया आउरता वे मेराय तिणे ते सदतीस छे. देशविरति गुणटाणे इगर्नास छे. अप्रमत्ते वेतीस छे. अपूर्वकाणे वत्तीस छे.।।७८॥

अट्टसुतिगंचदोसु, तिसुसाय वंधसेसयापावे । चउवीससयंजोहो, वज्ञाइगहासुहाअसुहा ॥ ७९ ॥

दीका-अहमुत्तिगंचद्रस्यादि अष्टमुगुणस्यानकेपुद्रितपदंपर्व-

गापापां संबंधितं विगंवदोस्रति इयोग्रेणक्योविषयेद्विवयनेबद्धव-प्रमातिष्रगृहत्वात्, तिगं सातवेदनीय उधेगाँवयशोनाम्ह्सणं-मक्नतिविकं पुण्यकृतीनांबस्त्रवे । तिस्नुनिपुउपशांतमोङ्गस्राण-मोहस्त्योयिकेबह्निल्ह्स्चेणुणस्यानांबकं "तायावंवति"सातस्येवयं अ स्वायिक्यानेबंधामाद्वात्, तेत्तयाद्विकेषकःपुण्यकृतिनाणनातिताः पापमकृत्यः सर्वेणुणस्रता स्वाधिक्यान्ध्यातिः तास्प्रच्यक्षा-प्रसारं सास्वादनेत्तमपृहिः, विश्वचतुश्चनारित्रात्, सम्यक्तवेष्युक्षस्य-रिद्वात्, देशविक्तीयस्वारित्रात्, प्रमत्तप्रनिद्वात्, अम्मतिविद्यात्, अ-प्रवेक्षणप्रयानिवृद्यद्वात्यपायकृतिविक्तातः, अनिवृत्तपायानेक्ष्यात्वात्यस्य अन्युण्यपायोभय्यानेवेष्याविद्यतिव्यात्वातिः अन्युण्यपायोभय्यानेवेष्याविद्यतिव्यातिकातिः स्वस्यार्थनेविद्यातिकाति स्वस्यार्थनेविद्यातिकातिः स्वस्यार्थनेविद्यातिकातिः स्वस्यार्थनेविद्यातिकातिः स्वस्यार्थनेविद्यातिकातिः स्वस्यार्थनेविद्यातिकातिः स्वस्यार्थनेविद्यातिकातिः स्वस्यार्थनेविद्यातिकातिः स्वस्यार्थनेविद्यातिकातिः स्वस्यार्थनेविद्यातिकातिः अगुभकेक्ष्यावात्रअग्यान्यभावित्याति। विद्यापातिकातिकातिः स्वस्यार्थनेविद्यातिकाति स्वस्यार्थनेविद्यातिकातिः स्वस्यानेविद्यातिकातिः स्वस्यानिकातिः स्वस्यानिकाति स्वस्यानिकातिः स्वस्यानिकातिः स्वस्यानिकातिः स्वस्यानिकातिः स्वस्यानिकातिः स्वस्यानिकातिः स्वस्यानिकातिः स्वस्यानिकातिः स्वस्यानिकाति स्वस्यानिकाति स्वस्यानिकाति स्वस्यानिकातिः स्वस्यानिकाति स्वस्यानिकाति स्वस्यानिकाति स्वस्यानिकाति स्वस्यानिकाति स्वस्यानिकाति स्वस्यानिकाति स्वस्यानिकाति स्वस्यानिकाति स्वस्यस्यानिकाति स्वस्यस्यस्यानिकाति स्वस्यस्यानिकाति स्वस्यस्यस्यानिकाति स्वस्

४ च्यार ९ श्रम ते पुन्पमकृतिमां गण्या छै. सर्शम ते पुष् प्रकृतिमे गण्या ते माटे एकतो चोवीस प्रकृति थाय छै.॥५९॥ नामधुववंधिनवर्ग, दंसणपणनाणविग्घ(य)परम्घाप। भयकुछमिच्छसासं, जिणगुणतीसाअपरियत्ता॥८०॥

टीका—अथापरावर्तद्वास्थाल्यानयमाह, तवयाः प्रकृतपः अग्यस्याः प्रकृतेष्वं उद्यंजभयंवाविनिवार्यस्वक्षेययं पंजपंतिः प्रकृतेष्वं उद्यंजभयंवाविनिवार्यस्वक्षेययं पंजपंतिः द्वार्यस्कायं प्रवादेव्ययः प्रकृतेष्वं उद्यंजभयंवाविनिवार्यस्वायं प्रवादेव्ययः पर्याद्वायः परावद्वेव्ययः पर्याद्वायः परावद्वेव्ययः पर्याद्वयः परावद्वयः परावद्वयः पर्वाद्वयः पर्वादः पर्वाद

ट्यार्थः—अय इवे अपूरासंगान बहुनि क्दे छै. नाम नृत्यंगी नव वर्णादिक ४ तजम १ कामण १ अपूरुव्य १ निर्माण १ उपयात १ ए नव, दर्शनास्त्रण ४ झानावस्त्री ५ अंतराय ५ कम्मेन्द्रनि ५ प्रायान १ वय १ हुरांज १ मि स्वान्यनोहती १ मानोसाव १ जिननाम ए २९ अपार्थ विचारसारयन्यस्यशेकाः

हैं, बंदमां तथा उदयमां कोइके नहि ते वंध तथा उदयर आवता नदी पोतापने केंच तथा उत्तय आवे हैं. ते बंच तथ उदय बोहुक्ती प्रकृतिनो सेकीने पोतानो इंग तथा उदय पाह वे परावसमान बहीजे, वेहची इतर वीजी ते अपरावर्षमान कहीते. ॥ ८० ॥

निणविणुमिच्छिर्आमच्छा, सासणमीसेसुसजिणस्

पंचसुनाणविग्यं, दंसणचउनवगदसमंस्मि ॥ ८१॥ म्माई।

र्यका—ज्ञचनसम्मा गुणस्यानकेपुनिभजनाद्व । जिणः विश्व इत्यादि जिननामुक्यंविनामिस्यान्वे अप्राविद्यातिः परावर्तमानाः स्थानं तताववातिस्थावव मानायस्थानं, सिवाणां व जिननामताविनाः द्वाग वता वसारा उसके कारण वस्तु प्रमुख्य प्रमुख्य स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन भारत्र वर्षात्र वर्षात्र क्रिकेट क्रि पंचन विश्वासिक्षाम् अत्रुप्रपंचन्त्रं देसमञ्जास दर्गाम्यास्य ष्तुरम्, पृताधतुरसञ्जारकमाना नहमेऽनिग्रविकत्वेदसमेगूस्स संपरायलक्षणेबद्धतेद्वति ॥ ८१ ॥

ड्यार्थः—दिट्यात्व गुणटाचे विन नाम विना २८ अप-सर्विमान होये छे. सस्त्राहन गुणग्राणे निय्मान विना २७ अपरावतंमान हे, निश्चमुणदाचे सवाविस २७ दांचे हे. सन-कत्वी मांडी पांच गुणदाने सम्रक्षिते, देशस्ति, प्रमते, अप्रमने, एवंद्रापे ५ एनाए जिननाम नेटावे वेदारे २८ पावच

मकृति वंधाये, नवमे ग्रुणठाणे दशमे ग्रुणठाणे ज्ञानावरणी ५ अंतराय ५ दर्शनावरणी ४ एवं १४ अपरावर्षमान वंधाये ॥<१॥

तणुअहवेअदुज्अल, कसायउच्चोअगोअदुगनिहा। तसवीसाउपरित्ता, यंधङ्अपरित्तसेसाउ ॥८२॥ वीका—तणुअहहत्यादि ततुक्तदेनोपलक्षितगष्टकं तणु-

वंगागिइसंघयण जाइगङ्खगङ्पुःचिचिगाथावयवेनप्रतिपादितंतन्व॰ ष्टकं, तत्रतनवः तेजसकार्मणयोरपरावर्तमानासुप्रतिपादितस्वात् रो-पाओदारिकरूपारितस्रः, उपांगानित्रीणिआकृतयः संस्थानानिपद्, संहननानिपद् , जातयः पंच, चतस्रोगतयः, खगतिद्वयं, आरुपूर्वी-चतुष्क मिति अश्करान्देनत्रयक्षिशत्मकृतयोगृह्यंते, वेदाः स्त्रीपुं-नपुंस रूक्षा स्त्रयः तुजुअल द्वि युगलंहास्यस्यस्तिशोकरूपं, कपा-माः गोहरा, उज्जोयनुगंति द्विकशस्द्रयप्रत्येकंतंपंधानुद्यीनानपान छपं गोबद्धिकं, गोबंदेदनीयलशुणंगोवंद्रधंगेंदिभेदाव्, सातामातभेन दा देवनीयमपिद्धिया, निदार्थकं, असदशकं, स्थायत्वशकं, आप्रपिय-स्याद्दित्वेनापुक्रनपतिः प्रकृतयः परावर्तमानाभवति, तत्रपोदशक्या-पानिदापंच रूपप्यपिएताः एकशिशतिमकृतपोत्रु १४४८ताई ४मिन परोपरोधन दुवैति । तथापिम्बोदयेस्यजानीयम् हृत्युदयनिने ।।व्यम र-त्रमाना वर्तने, वियमव्यागुभागुभप्रगृतपश्चनस्रोपयपि ३१४४तिन-विरुद्धारतयापिकवयनिवसवर्तमानाः होषाः परपणि प्रश्निके घोदपाम्यामविषास्पर्गविरुद्धाः अभिञ्जनः पगवर्गमानागुणस्यानपः बेबक्रमे (बीक्स)द्रारम्बन्धमानिस्यः क्षेत्रः । स्वतंत्रमानाःचे ४४तिः १४ निय्युष्टवेनकाविकाअद्योजिः, जिननायनुअयगदन्यःनेपुगणनाः प्राचन्त्रानत्त्राहारकद्भिक्षेत्रपृक्षन्त्रात्यामप्रमधायान् गविकान्यार कि भौतात्रको, प्रक्वेत्रतेनसामादनेशत् सर्वतः, विश्वकार्यः

त्वारिशत्, सम्पन्त्वेष् कोनभंचाशत्, देशपृकोनक्वारिशत्, प्रमने-पंचर्षिशत्, अप्रमत्तेषुक्रिश्चन, अपूर्वकरणेर्द्रिशत्, अनिद्यत्तिकरणेऽटी, स्टमसंपरावेतिसः, उपशांतादिषुश्चिषुकंसातमेत्रपृतंपरावर्षमानानां-वंचकमद्वति ॥<२॥

ट्यार्थः—तत्रुआदिक आठआठ विंड प्रकृति तत्र है उ-पांग हे संस्थान है संत्यण है जाति ५ गति ४ विद्यार्थ-गति २ आतुप्रविं ४ वेद ४ हास्यादि ४, कपाय १६ उद्योत १ आतुप १ गोत्र १ वेदनी २ निद्या ५ वत १० ध्यावर दस आऊखा च्यार एड्कांणु परावर्तमान जाणवी मिप्यात्वे नव्यासी ८९ सास्वादने ५४ मिश्रे ४७ समकिते ४९ देशविरते ३९ प्रमचे २५ अप्रमचे २१ अपूर्वकरणे ३० अनिश्चितकरणे ८ स्वम्मसंत्यारे ३ इत्यारारे १ वारमे १ अयोगि अवं-ध्यम्परंत्यारे ३ इत्यारारे १ वारमे १ अयोगि अवं-ध्यम अप्रपार्वते ने गापा मांहे उद्धी वेह टाल्ता देश यही वे परावर्त्तमान जाणवी,बांचे, हुये विपाक च्यार कहे छे ले मच्ये को क्षेत्र आवादा वेह फिरतां उद्य आवे वे क्षेत्र विपाकी ४ आतुप्रवी छे वे मच्ये मिप्यात्व ग्रुणटाणे समकित ग्रुणटाणे च्यारे आदुप्रवीनो उदय छे ॥=२॥

मिच्छेसम्मेचउपुरि,निरयविणुवीयएआउचउ(चउरो) देसेनरतिरिसेसा, मणुआमणुआउचेयगाभणिया ।८३।

टीका—अधविषावद्वांभीचतपताह, तनविषावःक्रपेफटानुभवः, सचतुर्द्वात्तमयमेक्षेत्रविषाकाः आवष्ट्रप्येक्तस्यः, क्षेत्रमाकाशेतंत्रवः विषाकउद्देषोषासांताः क्षेत्रविषाकाआवष्ट्रप्येक्षतस्रोन्तकार्त्वपर्वतस्य-सनुष्यां क्ष्रणापतस्ताक्षां चतसुणामभिष्यव्यत्तविवोदयोभवतीति ॥ उक्तयं बहुत्कमैविपाके नर्याउस्सउद्धं नर्एव्वक्वेणगण्यं नर्याण्युव्वियाष्, ताहुतहिअव्यविष्यां नर्याण्युव्वियाष्, ताहुतहिअव्यविष्यां ।१॥ एयंतिरिमण्युवेवे, तेसुविवक्वेणगण्युमणस्स् तेस्समण्युव्वियाणं, ताहुज्द्योआवृह्विन्याचि ॥२॥ मद्यविग्रहुगत्यभावेषि आदुष्याणायुद्धः सक्रमकरणेनविद्यं क्वंदेशिविगाकिन्यस्तायतुर्गतिवतो जीविपाकिन्युर्गते विद्यमानेषित्रक्रमेण्यातासांगतीनाविपाकस्याविपाकस्यापि तासांक्षेत्रवियानेनस्वकीयोविपाकोदयोनत्याऽन्यातामतःक्षेत्रवि म्यप्वेति, तश्युणस्यानेक्रमेणविभक्रवाह्न, मिच्छेसम्मेद्दयादि मिच्छेमिध्यावेसम्मेचि सम्यक्तवृश्कोन्युग्रग्रथाने वद्यव्

ार्वध्यान्यात्वसमानं सम्यन्तद्वात्रान्यमुग्यास्यानं चड्ड प्रिवित्तात्वपुर्वः उद्वेषाय्येत् वीपृतिद्वित्तीयेसास्वाद्वास्यः दर्शमार्वः वात्तिः दर्शमार्वः वात्तिः दर्शमार्वः वात्तिः दर्शमार्वः वात्तिः दर्शमार्वः वात्तिः वात्तिः दर्शमार्वः वात्तिः वात्ति

પૂર્વ હિંદુ વૈષ્ય કહે देवियहा सं नरा हमा तिमार को दिल्ला प्रश्न का वाह का वाह किया किया है कि स्वीत के स्वीत क

१४२

विचारसारग्रन्थस्पटीका.

्रणमुगोभवविपासदानाज्ञवविपासित्वं, ald a fine a second and second are second वेद्यन्ते, तपाहिमोसगामिनः अञ्चपगतेषः २५-४-... पंपाति, अतोविमितस्वोदयभ्यंप्रतिगतीनानियत्यभावातभवविपा किन्यः, किंतुजीवविपाकिन्यपूर्वेत्युक्ताआयू पिचत्वारिप्वविपाकिन्यः। गुणस्पानक्रमेत् आउपउइतिआयुश्रतुष्कं नस्क्रयुर्तार्पगायुर्नेतयुः देवासः चडाति चतुष्केमिच्यात्वसारवादनामिश्राविसतिहश्रणेगुण-स्यानचतुप्केउहर्यः,माप्यवे,तथादेसेदेशविर्तिटशुणेगुणस्यानकेतिरि॰ मणुत्तितियंगासुर्वृत्याषुःमाध्यते, शेषाः ममत्तादारम्यअयोगिकेनिष्ठ-चरमसमयंगावत्मतुष्यासुषः वेदकाभनिताः सप्तकर्णप्रकृतीनामगायाः स्त्रस्यत्यस्यतंत्रनीन्येत्र १ यथाज्ञानावरणीयस्योकृष्टास्थितिः प्रिशस्को टाकोटीसागराणां अयावाचित्रहर्षेशतानि अयावान्यूनः कर्मनिपेकः भावताचपतानिषिदाब्वपंशतानिषिदात्कोटाइयेटिसामशंतमैतान्वेवा न्यानिसाधि शनिकायुषशतुदेवनारकायुपोरुकृशस्यितिः प्रयक्षिशस्सा-गतः वेषदेवनारकभवनेदाः, अवाधायमनुष्यतिर्पमभविभागप्रमाः णात्रपश्चिशः नागरेम्पे भे ताण्येतिकथमित्युच्यतेआयुपः अवायापां-मुदेशपेदनंतास्तिवेत्रसिताएव, शेषक्रमेणातुः अयावायामदेशोद्यताः भवति वेनांतर्गताप्वेतितयाआयुषः प्रदेशोर्योपिकमाविनातावे प्रमवति अनुभाषुपोभवविषाक प्रवेति ॥८३॥

ट्यार्पः —सारवाद्व गुणटाचे नरकानुपूर्धिनो उदय छे नही। दोष तिन आउप्रदिनो उदय छे, उपरांत सर्व गुणदाणे छे, आ तुप्रविनोध्यक्त विपाकीद्य नवी तो योइ पृष्ठे वे आतुप्रविनो थितिचंच प्रदेश किहां भोगने तेहनो उत्तर कम्मपप्डीपी जे पर्देशोद्रमुख्ये भोगवे अथवा गतिनामक्तमे मन्ये संकलावीः भी- राहे हैं, ले अपने मयान नहीं आहे बीना भारे प्र तैयाने हम्मावडी मध्ये हती हैं, ही बीना हम्मी अ हमें ते कि माहे माहे की जातहाली हिंदियाँ

हरा के के कहेंकी रक्षण बादे बादी आक्रम कारे रिप्ताने के बच्चा के को कार मुख्ये ब्यार आक्रम इंक के देखांग के मुख्यांगे बहु के तुम मुख्यांगे आक्र के क्षण में बहुते के इस के क्षण मुख्यांगे पृक्ष भया कर्म के बाक्स हमने महत्वा क्षण बच्चे, बहेती इस को कार्काण में ग्रेडन के इक्टांड्क बहेतीयन

૮૪ અન્યુઝ મહત્ત્વ જ ૧૯૩૫ નાન કુમ શ્વન કનભુ, પ્રધાનમહારભિવકનામાં જૂમ કહેરમાં માનેન્દ્રઝ, ન દુર્તામહારણ મુસ્લામાં

ांचा विश्व हुई से स्वावेश्वर स्वावेश्य स्वावेश्वर स्वा

The second of the entire county is a figure to the second second

यन तम्मार्गमार्गमाप्याहारपर्याम्वरेक्युहीनित्त्वस्य सम्प्राद्वारीरेक्यः पाटा ११ ॥ उत्तरेष ११ भगवत्यां जीवार्यनेदेते आग्नारपाट्युक्यः विश्वतिक्यायाः विश्वतिक्यायः विष्यतिक्यायः विश्वतिक्यायः विष्यतिक्यायः विष्यतिक्यतिक्यायः विष्यतिक्यायः विष्यतिक्यायः विष्यतिक्यतिक्यायः व

्यान — हवे चुहुद्धिकाकी बहे हे सामक्रमणी पुनेदरी १- तिमाण १ दिर १ अदिर १ द्यान १ अनुम १ अनुम १-११ तिमा १ सामण १ वर्णादिक ४ हारेर ३ क्रान ६ सम्यान ६ स्वयण ६ व्यवस्था १ तामारण १ सम्बेद १ व्हान १ प्राथान ए वर्गम स्थान १ तामारण १ सम्बेद १ व्हान १ प्राथान ए वर्गम स्थान १ तामारण १ सम्बेद ना जीति स्थान १ सम्यान सम्यान विक्रेन उपयो नियान ना जीति स्थान १ सम्यान सम्यान भीता हिंदी ने व्यवस्थानिक सम्यान स्थान १ सम्यान १ सम्यान भीता स्थान स्थान

आयप्रनियोपद्येणं, दुषतीसंसाराणाहतिष्यिक्ति । उरतदुमदीणादेशे, छद्रेसाहारकोषविणाः ॥ ८५ ॥

ाश्च — व्यवस्थितीयवाचेत्रः भाषामध्यस्य समानः द्वराच्यः १ च मद्यस्यो र्वायापमध्यसम्बद्धसम्बद्धः वृद्धसिकेष्ट्रस्यात्रः ११५ सम्बर्धदेविद्यस्यानुः अञ्चलकेष्यस्य विश्वसम्बद्धः देशः



उदय छे, ऋपभनाराच १ नाराच २ ए वे संवयण विना क्षीण-मोह गुणटाणे तथा सयोगि गुणटाणे पुद्रष्टविपाकी चीवीस छे, अयोगी गुणटाणे शरीरनो उदय नयी वेमाटे धुद्रहविपाकिनो पण उदय नयी ॥ <६ ॥

घणघाइदुगोयजिणा, तसीयरतिगसुभगदुभगचड-सासं ।

जाइतिगजीयविवागा, पणदुगसयरीपढमदुगे॥८७॥

टीका--अयजीवविपाकिमकृतीराह् घणघाइति, घनघातिन्यः सप्तचन्वारिशन् ज्ञानावरणपंचकं दर्शनावरणनवकं मोहनीयमप्रार्विः शनिधा अंतरायंपंचया हुगोयत्तिगोयवेयणीयंइतिगोपद्विकं वेदनी-पद्भिकं दुगोपशद्भेनपकृतिचतुष्ट्यंगृद्धवेजिननाम प्रसिष्ठकं प्रस्पादरः पर्याप्तरुषं इतरनिइतरन्रयावरितकं स्थावरम् श्मापर्याप्तरुषं ग्रुभगद्रभगच्यति ग्रुभगचतुष्कं ग्रुभगग्रुस्वरादेपपदाःकीर्तिकपं हुर्भगचतुष्कं दुर्भगदुःस्वरानादेवायशो क्यं, सासंति उध्ध्वासं जाइतिगचि जातिनिकं जातिपंचकं गतिचतुष्कं स्वगतिद्विकं जाति-निकशस्देनएकादशमकृतयोगृद्यंते इत्येताः अष्टसप्ततिमकृतयोजीव-विपाकिन्यः जीवविपाकित्वंजीवगुणाज्ञानादयोआवृहपतिष्ठति यथा-बहारतथाएककर्मवर्गणाउदयत्वेनभुज्यवे वस्तुतस्तुद्देशभवपुद्गरहिः पाकाअपिजीवस्येवपारंपर्थेणात्रगृहसुपवातंचकुर्वतितेनजीवविपाकाः प्रवेतिमिष्यात्वगुणस्थानेजिननाममिश्रमोहसम्यस्वमोहरहिताः पं-धराप्तरिः जीवविषाकेप्राप्येवे,सास्वादनेतापु रम्दः मावर्षाप्तर्भि पारवी-दयरहिताद्वासप्ततिः जीविषाशाउद्येपाप्यंते ॥ ८७ ॥

ř

京子をおける

टबार्थ:—हुवे जीवविषाक्ष कहे छे. धनवानि ४५ ते मध्ये łks

प निपाक ते उत्पारस्या हे, तेमाटे भिन्नमीहनीतमितिनिहनी र मेळीवे पट्टे ४७, गीत र वेदनी र जिन्नामित में १ वस्तीन र जिन्नामित में १ वस्तीन र जिन्नामित में १ वस्तीन र वस १ वादर १ पर्यात र वस्तीन र गुमा ४ गुमा १ गाइनि र जाईप र जाईप र जाईप र गासि ४ रामि २ प्रिप ४ गाईप र जाईना करेनो गानि ५ गति ४ रामि २ प्रिप ४ गाईप होता जानि ५ गति ४ रामि २ प्रिप अगिता के छे. पुरुष जोचे प्रकाल गुणां जिन्नाम १ मित्र विचा मित्र प्रवास १ गमितन गोदिना निना पथ्यीतर जीपरिपातिनो ३ र छे. गामासन प्रयास १ भमितन भीदिना निना पथ्यीतर जीपरिपातिनो ३ प्रकाल गुणां भद्र १ भमितन गुणां भद्र १ भम्पति १ मित्र विचार निना गुणां भद्र १ भमिता हो मित्र विचार निना गित्र विचार निना विचार गामित छै। ८०॥

दुविच उमहीपणपक्ष, मुणवञ्चाछपंच वचपुणचनाः। तिम दुमहुमञ्ज्ञतीमा, सचरद्वज्ञारजीयनुजा(या)दवा

द्धीक न्यान विश्वास्थान है। विश्वास्थान क्रमण्डल की न्याक प्रकार कर्मा की विश्वास्थ्य के क्षेत्र क

विचारसारम्भ्यस्यटीका. परिस्तान् मुक्ष्मसंपराये, ताएनसंज्वटनटोभरहिना द्वानिशत्उप

मोहे, ताएवद्मावस्य सीणमोऽहोने,नाएवनिद्माद्वरसानावरणपंद तरायपंचकदर्शनावरणचतुष्कामत्वेत्र पोडशायगमेजिननाचोर्वेचर दर्वामञ्चतयः संयोगिकेविद्याणस्थानके, ततअयोगिकेविद्याणेएक दराजीवविपाकिन्यः उदरेमाप्यंते इति, इत्युक्ताविपाकाः ॥ ८८ | ट्यार्यः—मिध्र गुणटाणे सासठ प्रकृति जीव विपाक्ती छे, समकित गुणटाणे चोसड मङ्गति जीव विपानी हे, देशविरति युण्याणे पंचावन मङ्गित जीव विपाकी छै, प्रमत गुण्याणे उद्ययपंचारा मङ्गति जीव विपाक्ति हो, अममत गुणराणे विताः डीस मकृति जीव विषास छे, अप्रवस्त्व ग्रणटाने पिस्ताडीस पहाति जीव विपाधी छै, नवमे अनिश्तिकरण गुणटाणे उत् णघाटीस छे, सक्ष्मसंप्रसर्व वेबीस छे, उपनांतवीह बत्तीस छे, भवाजात है। व्याचनात्र काम है। व्याचनात्र काम हो। संयोगिकेविकेने सत्तर प्रकृति जीव विपानी उद्भे हैं। अंगोगिने इंग्यार जीव विपाकी उर्च छे, वारमी प्रकृति जाजत्वो ते भव विपाकी मङ्गति छे॥ ८८॥

अष्टमचउचउरङ्गाय, चउरोयहंतिचउवीसाः। सोल्समंगानवमे, इगभंगोतुहमठाणंन्मि ॥c९॥

टीका—अथभंगाकम्माणमितिविज्ञणताहः सुणहाणेसः अहस्र क्षितंत्रमोद्वयंग्रहाणंतु, पंचाअनियाद्वेटालेस् वंबोपस्योपस्ततो ? गो-हुनीयसःक्रवंतस्थानेषुक्तकेष्ट्रकेकेव्यस्थानंसिध्याहृष्ट्यादिपुनन्त्रसुग्रुणः स्थानकेषुमवति, तद्यथामिच्यादृष्टेचीनिद्यतिः, सास्तादनस्ये हरिस्तितिः, सम्पर्गामिष्याहष्टेःसम्बद्धाः, अविस्तसम्प्रगृह्देःसम्बद्धाः, देशनिस्तरपर्योः दरा, ममतापूर्वकरणेषु भंगएकस्थानान्त्रनक, एतानिच्द्राविस्त्यान

विचारसारप्रन्यस्यटीकाः.

ولإهة

> सत्ताब्दसओसिन्छे, सासायणमीसप्नवृक्षोसा । छाइनवअदिरवे, देसेपंचाइअड्डेव ॥ १ ॥ विरायसओछसमीप्, चउराईसत्तछघपुषिम् । अनियद्विचायपुण, एकोवडुचेवउद्यंसा ॥ २ ॥ एमसुडुमसरागे, चेण्ड्वेयमाअवेसेसा । भेगाणंचपमाणे, सम्बद्धिमतायन्त्रं ॥ ३ ॥

विस्पार्टशसप्ताद्दीनिद्दश्यभैनानिर्वाणिपपैनानिष्वयापुँदपस्थानानिः भवंति ॥तद्यया॥ सप्तअश्चीनवदशस्यवादनसमाद्दीनि दशपपैतानिः वीनिउद्घरपानानिसप्तअर्शनवदशसम्बाद्दीनि दशपपैतानिः वीनिउद्घरपानानि सम्वयस्यान्ति । विस्ति नवपर्यतानिष्यादिअस्थानानि पदसप्तअर्थानादि । निष्यप्तादिक्तं नवपर्यतानिष्यादिअस्यपेनानिष्यत्तारिउद्ययस्यानानि विषयस्य अर्थापनिष्यानिष्यप्तानिष्यानिष्

विचारसारम्ब्यस्यडीका.

प्रकाणप्रवामोपुरुणस्थानकेपुप्रत्वेक्षम्धाअर्वकरणेपनसङ् दिच्तुर्विस्तरोभवीन, तर्राभव्याले अर्था सारवारने चतस्रः, । धनसः, चञाह्याचिअविस्तादिषुअप्रमत्तपर्यवसानेषुगुणस्यानेषुः भारतः १०१८ः । इधनस्रापनाश्चमात्रयति नर्शामध्यान्त्रेसामीवनीन्येपकाण्यान्त्रस अयकोशकोवः अनेनात्त्रविचतुष्ट्यमतानः अमरनेनाकाणेनउद्वा नयान्यपन्नस्यमनियनिनोजिस्यान्त्रमन् नरयगमनियन्त्रस्यः अन नानुबंधिनांसनायाभावानुनउद्दयः. नदमिष्यान्वंअपन्यान्यानावानु परपादपानसम्बद्धनाङ्गोयादीनामस्यनमे २ य.को पादीनांत्र पाणारेताः नां अन्यनमोपुक्तोत्रकः हामपानिकुगत्यातिमो ऋगुगत्योगम्यनाम् प् गहंहचेनासासम्महनींनाउदयोग्यः पिष्यान्ते, अवहारयातिस्राहे मुहोभेगः, सम्बागिनीक्ष्ममेन्द्रीन्त्रमाने द्विनीयोशंत्र, मुक्तमद्वय गैर्निस्रम् पेनतेनभेगा पदभंगाः क्रोधांभयाः पदभगायानसंभगः, पदभ मा मापासंभवाः, परनोभसभवाः, पृत्रंचनृतिशानिसमाः, सर्ववसमा भागामान्यः प्रधानमञ्जूषाम् । भ्याबिसाति हाक्रमोऽपमे वनस्मितवसम्बे अवैवानस्माणावाअननाः त्रुवंदिनिया वृक्षितं अद्यानाः वृक्षः अवश्रया तीमत्त्वे कृत्रे वृक्षास्त्रा वाणाः। भूषाच्यापा चालाः। २००० वाणाः। याच्यते, इतितीस्रधगरिशनमः, नेपानिम्भिरसप्तरेनम्भगूपम योरयमभयानेनावर्वधनोयहानुम्सानेतान्यरिनो माझ्यपोनस्तान वृदयः, अवाप्ये के इतियः। विकले अभानी भूति वैश्वतिः मारपते, हिनितिः य र गाया । स्रध्याविकानसः, तथानीर महिनसः केनस्य नृत्यासाः स्तिनुत्रीर सुप्रमायनः ष्ट्राच्यानम् । प्रत्यानम् वर्षाः । प्रत्यानम् वर्षाः । प्रत्यानम् । प्रत्यानम् । प्रत्यानम् । प्रत्यानम् । प् प्रतिनेषु रशानामुद्रयः अत्रे कार्यमानायस्य । द्वाराम् । प्रतिनेषु रशानाम् । प्रतिनेषु रशानाम् । प्रतिनेषु रशान रहीपमुर्गितानयः, सारवादनेसारअहानवर्षानिजदयस्यानानि, सरसा-स्वानिद्वतीत्वर्षात्रस्य अस्यान्यस्य स्वानिद्वति अस्तान्यस्यात्रस्य स्वान्यस्य हपानामस्यनियम्बाः कोगादिकाः वयाणावंतनामस्यनिवेदः स्थान धुगरचोरम्पनगत्पुगतभिन्देनामासन्पर्नानां अद्युरः उद्दयः अद पामे वेश्वभंगानां प्यावेशातिकानाते अवैज्ञुपसाचाराः द्विपासं त्रक्ष

777

TH

27

नासुद्रयः तत्रद्रेचतुर्विद्यतीभयज्ञुएसयोः प्रश्निप्तपोनेवोदयः, अत्रैकाः भंगानांचतुर्विद्यतिः, सर्वसंख्ययासास्वादनेचतस्त्रश्चतुर्विद्यतिः, सर्वसंख्ययासास्वादनेचतस्त्रश्चतुर्विद्यतयः, मिश्रेष्यसार्वेशिवन्वनीणिज्दयस्यानानित्रज्ञनंतानुर्वादेवाः क्रियोदिकाः त्रयाणांवेदानां अन्यतम्वेददः द्वयोर्धुनाल्योरस्यतस्तुर्यालं पृताःसप्तसुन्वेदयाः, तत्रैकाचतुर्विद्यतिः, ततोभयज्ञुएसायांवापश्चिस्तायां अष्टीद्याः, अन्द्रचतुर्विद्यतिः, सर्वसंस्वयामिश्रेचतस्त्रश्चतुर्विद्यतिः, सर्वसंस्वयामिश्रेचतस्त्रश्चतुर्विद्यतिः, सर्वसंस्वयामिश्रेचतस्त्रश्चतुर्विद्यतिः,

तानाजाः १५, जन्द्र युवास्यतानयञ्च एतसारुषुत्रानायः नोजदयः तमेकाण्यनुविज्ञानिः, सर्वस्रस्ययामिश्रेण्यतस्रश्चनुविज्ञतस्य अविततसम्यगृहष्टी षद्स्यस्रश्चीनवपर्यातानिचत्वारिजद्रयस्यानानि, तमानेतासुक्षेषिकजोस्त्रयोऽन्यतमेक्रोवादिकाः, त्रपाणविदानामस्यतः मोवेदः द्वर्योर्षुगल्योरन्यनमन्युगलं इतिषण्णां प्रकृतीनां जदयोअविः

तुर्विशतपः, तथातस्मिन्नेवयर्कभयञ्चयस्योभ्यसम्यग्मोहयोर्ड्यः स्तासम्यग्मोहयोर्ड्यः स्तासम्यग्मोहयोर्ड्यः स्तासम्यग्मोहयोर्ड्यः अन्नापितिस्रश्चतिः शतस्यग्मोहायोर्ड्यार्ड्यः वयातिरिस्रश्चतिः शतस्य स्त्रस्याअनित्रस्य स्त्रस्य स्त्र

सम्पर्दर्शेषपशिमकसम्पर्दश्यां अवैकाचतार्वशिक्षः नतोभवेषात्रप्रः प्रापायासम्पर्भोद्देवामित्रीसपणास्त्रयः अवितस्रव्यत्विद्यानयः, तपानस्मित्रपंपकेकपवृद्यप्रसयोद्येतुप्रसानेष्ठसम्परस्यपेरवाम् यवेद रहस्यस्वयोर्षेनपरमित्रायोः सानासुद्रयः, अवापितस्रव्यत्विद्यान्यः, रिशनपः, रूपानस्मित्रेयपंचकेभवनुष्यसस्यस्योदेशिजशास्याप्यः दयः अके सायनुविद्यानः, सर्वसंख्यपादेशित्रसार्व्यव्यविद्याविद्यावी

तार्कानमतोऽप्रमत्तेचचन्त्रासिपंचपरसम्बूल्वेतानिचन्त्रारि उरमस्यानाः 4 नि, तमसाधिकतस्यम् दृष्टे रोपज्ञामिकतस्यम् दृष्टेचोप्रमताममतस्यमस् ्ष्यान्य साम्यक्षात्रम् १८८ च म्बर्गाक्षात्रम् १८८ च म्बर्गाक्षात्रम् । इतंत्रम् स्वतंत्रम् व्यक्तियास्यम् सप्तः स्वीधादिः समाणाविसामाम्यतस्रो वैदः इरोपुमारपोत्त्यतस्यातं इतिचतस्यामकृतोनामुदयः अने काञ्चाविद्यातिः नतोभवेत्राञ्चयुप्सायांत्रासम्बग्नमोदेनास्तिनेप्रानासुरसः स्वत्रशासः स्था नव वाद्यक्षणः भ वागः वद् अदगास्त्राकः अस्ति। अन्तिसम्बद्धनिवस्तरः भंगानानिरिमनेवस्तुष्केत्रभस्त्रम् सासस्यम् मोहयोः मिह्मायोः पण्णासुदयः अनापितिस्रश्चावसातयः तयाः तिसम्बन्धत्वकेभयन्यसम्बन्धतः । अन्यसम्बन्धः अन् भन्ताच्याक्रमान्। सर्वेतस्वयाम्मतस्यअष्टीच्यावस्यः एकम्म भवस्याच्याच्यावताः अपुनस्योचस्यः १४४१ वर्षः १४४१ वर्षः १४४१ वर्षः १४४४ वर्षः १४४४ वर्षः १४४४ वर्षः १४४४ वर्षः उदयस्यामानि, तत्रसंज्वलनक्कोधारीनामन्यतमएकःक्रोधादिः त्रया-णावेदानांअन्यनमोनेदः द्वयोद्यगस्योत्स्यतस्यगरंहरचेनासांचतस् णामकृतीनामुद्दमोऽप्रवक्तणेववः अवकाचनुनिवातिः, ततोभवेन युप्तापांत्रमक्षितापांपंचानामुद्दयः अन्द्रस्तावैक्षती भपञ्चयन रोर्डुगपटमक्षितयोः एण्णायुरुषः अन्नक्राचतुर्विकातिः सर्वतिष्यपाः अवन्तराण्यतस्य अतिहातियार्रपुनः पुक्रीद्वीताय्रस्य ्राडवपनेवाजनाम् व्यापनिकासम्बद्धाः स्थापनिकासम्बद्धाः स्थापनिकासम्बद्धाः स्थापनिकासम्बद्धाः स्थापनिकासम्बद्धाः वैदानामन्यतमोवदः इतिद्विकोदयः, अयितिभिवेदस्याभिः संग्वछ-वराता च्यापन् । नेब्रिवसमेदाः ततीनेत्रीरसम्बन्धेनेस्कोद्यः सम्तानियोद्विनन्नेमे व्यवस्थापम् । इत्रविवरंषेमाप्यते, तत्रपद्मिमाङ्ख्तुनियनंषेसतारः मिवयनं योद्विवधनंभेद्वीपकविधनंभेषकः इतिस्ताभंगाः मतिपादिताः तः प्यनसामान्येनचतुः विद्वपेकवंशापेत्रयापत्तारएवभगाविकश्येते ते-डिशभगकाअनिर्विचानसस्येगुणस्याने, इगभंगोसुद्दमनाणस्म संपरावेवंथाभावेपुकंकिहाकृतसंज्वटनटोयंवेद्यते, अवक्रपुव-

शंकिः तथा दशमेएकं एवंजातानिअधीसहस्राणिवतुःशतानिसम् सप्तव्यक्षिकानिपदृश्यानांसर्वाद्यंभवति एतेचभंगकायोगादिनायमि तेअनेकभंगानांसर्वाद्यंभवति ॥ ९१ ॥

टबार्थ:—हवे परश्ंदभी चोचीसी कहीये छै. तिहां भिष्पास्ते अइसिट चोचीसी छे. सास्त्रादने बतीस चोचीसी छे. सिभे बत्तास चोचीसी छे. समित ते साठ चोचीसी छे. देशिः से बादन चोचीसी छे. प्रमत्त गुण्टाणे चवंत्रालीस चोचीसी छे. प्रमत्त गुण्टाणे चवंत्रालीस चोचीसी छे. आर्रासण गुण्टाणे चीस चोचीसी छे. सर्व भिल्या ५२ चोचीसी छे. नामे गुण्टाणे अटानीस भांगा छे. दशने सङ्मसंगराण गुण्टाणे केने विदे एकत भांगी छे. ॥ ९१॥

उत्रयपयाओगुणीया, पयवसासंभवंवियाणिका । नाणंतरायतिविदं, वससुवोहंतिदुक्षिम्मि ॥ ९२ ॥

ર્ટી ફાર્ક— અપક્ષાના ભળાવિદ્યમેળા મગ ફાનિવિતમ્મને 1 ન લંગ ઋત્તરમળ ત્યા ઇનામાં નિર્દાય વિદ્યાસભાગ, પ્રથમ મોળવાર મેં કરાર પંચાય સ્ટાર્ચ્ય પંચારના મના પૂર્વ નિર્દાય ભાગ સમયો મનન કમ્મ્યુ, નિલ્સાર સ્ટાર્ચ્ય વસ્તુ પ્રમુખ પ્રાપ્ય પ્રથમ પ્રથમ પ્રથમ સ્થિત સ્ટાર્ચ્ય સ્ટાર્ચ્ય સ્ટાર્ચ્ય પ્રાપ્ય નાત્ર કર્યું જે સ્ટાર્ચ્ય મામ કર્યો હોય ક્રમ્ય સ્ટાર્ચ્ય સ્ટાર્ચ્ય સ્ટાર્ચિયા પ્રમુખ્યા સ્ટાર્ચો કર્યો કર્યો કર્યા મામ

अव्यानगान्तिक्षेत्राह्यस्य ॥ १२ ॥

----द् चल्यामा मर्थे ३६व ५६वा मधिव तथा पर चलामा समहाश हाले. तथा भी योगी नप्तरूपी करीपे, हुम मईष करनां ८४७७ भांगा पाने, झानावरणीना भागा २ छे. अंतगयना भांगा २ छे पापनी वय पांपनी उदय पाधनी सत्ता ए विविध भांगी दशमा गुण-राणा पर्यत्त छे. हुन्यानी जन्मे गुणटाणे पांचनी उदय पांचनी मता ए एक भागी छे. ॥ ९२ ॥

मिच्छेपुणसासाणे, नवचउपणनवयवंधुदयसंता । मीसाइनियहिओ, छचउपणनवयद्गभंगा ॥९३॥

टीका—अवदर्शनायणीयभग हान्युणस्वानकेपुरर्शपहाह । मिच्छेपुणसासाणेद्द्रशादि मिच्यान्येपुनः सारागदनेदर्शनावरणीयपदी-भंगी, नवति नगनांमकृतीनां वयः ध्युणांमुद्दयः नवानांसत्ताल-६ण.म्यमोभगः, वेषामेवजायानांनिद्रोदये पंपानांमच्ये ए हास्मिन् समये एकाप्यनिद्याच्यानां व्यवस्थानां व्यवस्थानां व्यवस्थानां प्रतास्त्रवः नवानांस्त्राक्षः डिनीयपूर्वनं मुक्यं प्रवास्त्रवेष्ट्रयानां व्यवस्थानां विवस्थानां व्यवस्थानां व्यवस्थानां व्यवस्थानां व्यवस्थानां व्यवस्थानां व्यवस्थानां विवस्थानां व्यवस्थानां विवस्थानां व्यवस्थानां विवस्थानां विवस्यानां विवस्थानां विवस्

ट्यार्थ:—दर्शनावर्षणांना मिध्यात्वे तथा साखादने नय येथ ध्यार उदम, नत्र सत्ता ए पुक्र तथा नव बंध पांच उदम नव सत्ताए पींजी ए वे भांगा छे. मिश्र ग्रण्यटार्णायां मांडी आ-टमा ग्रुणटाणांना प्रथम भाग ग्रुषी १ ध्यारनो उदय नव नवनी सत्ता ए एक भांगो तथा छनो वंध पांचनो उदय नव नतनी सचा ए वीजो भांगो ए वे भांगा छे. ॥ ९३ ॥ चउवंधतिगेचउपण, नवंसदुसुजुअल छ संता। उवसंतेचउ पण नव, खोणेचउदयछचउसंता॥९४

टीका—चउत्रंयतिगे इत्यादि अपूर्वकरणस्पर्यस्वाशद्दां कभागादास्य स्वस्मसंपरायपर्यतं उपश्चमश्रेणिवतः चउत्रंथति, द तुर्णावयः चतुर्णायुद्दयः नवसत्ति नवसत्तारुश्चणः एकोभ्यः अथवाष्तुरुर्णायंकः पंचानांत्रयः नवसत्तारुश्चणः द्वितीयः निद्रो द्वपत्तुर्वारेलनापरिणामकपः चोरुनाचर्चार्यस्पर्यतिः प्रद्वाति नवमेदशार्यं तेनिकित्तिपुनःपरावर्षत्रक्षणकपापरिणातिः द्वाति नवमेदशार्यं वोद्यमाद्यगरं चतुर्णायंथः चतुर्णायुद्यः परसत्ता पृथप्रपक्ष श्रेण्यारोह्वतः भंगः, तथा उवसंते उपशांतप्कादशेग्रणस्यारे-धृत्यांग्वद्वयः नवानांसत्ता अथवा नवानायुद्धयः नवानांसत्तापृत-द्वाभंगक्रीप्राप्येते स्रीर्णाति श्रीर्णायुद्धयः एवंभगद्धयः प्रणांसत्ता अथवा चतुर्णायुद्धयः चतुर्णासत्ताक्ष्यः एवंभगद्धयः प्राप्यते, क्षपकाणामत्यतिष्यद्वयात्रवाद्विवस्यत्वयात्रविवस्यमङ्कर्यतस्यवेननवस्यवर्णामदेशोदयस्यापि नम्रद्यनाद्वित्वद्वयमिष्करार्यिक्षम् ॥ १४ ॥

ट्यार्थ:—आटमाना उपस्था भागे नवमे दशमे ए तीन ग्रुणटाणे स्पारनो उदय नवनी सत्ता ए भागो उपशास्त्रेणिमें छे स्पारनो वंद्रा स्वारनो उदय जनी सत्तानो भागो नवमाना तीजा भागवी जाणको. इग्यारेभ ग्रुणटाणे स्पारनो उदय नवनी सत्ता अथवा पांचनो उदय नवनी सत्ता ए वे भागा छै. झीलमोह ग्रुणटाणे स्पारनो उत्त्य छनी सत्ता अथवा स्पारनो उदय स्यारनी मता ए वे भागा छे. ॥ ९४ ॥

चउछसुदुक्तिसत्तमु, एगेचउगुणेसुवेयणियभंगा । गोपपणचउदोतिसु, एगर्ह(सु)दुज्ञिङ्कंम्मि ॥९५॥

र्शका--अय वेदनीयगोत्रभंगकान्गुणस्थानेषुदर्शयताह । घउउउउरपादिपुपर्युमिष्यादृष्ट्यादिपुषमत्तसंयतपर्यतेपुगुणस्यानके पुपत्येकारेदनीयस्य प्रथमाधन्त्रारोभंगाः तेचेमेअसातस्यवंधः अ-सानस्योदयः सातासानेसना १ सानस्ययन्यः असातस्योदयः सातासावेसचा २ असातस्यवंदः सातस्यउदयः सातासावेसचा सातस्यक्यः सातस्योदयः सातासावेसचा ४ एवंभंगचतुष्टयं-प्राप्यते तथाअपमनसंयन।दिवृत्तयोगिकेन्नलिपर्यतेपुद्रीभंगको सात-स्यवंदः असातस्योदयः सानासावेसचा १ पुनः सातस्यवंदः सा-नस्पोदयः सातासावेसना एवभंगरद्वयंप्राप्यवे, तथाएकस्मित्रयोगि केविहिनिचम्बागेभंगाः वेचेमेअसातस्पोदयः सातासावेसता ? सानस्पोदयः सानासावेसचा २ एतौद्वीविकल्पी अयोगि-केविहिनिन्दाग्ममभवंयावन प्राप्येते चरमसमयेता असातस्योदयः असातसत्ता १ अयवा सातस्य ३६यः सातसत्ता एवंभेगद्वयं प्राप्यते द्विचरमसमयस्यसानंशीणंतस्यअसानंप्राप्यते यस्यअ-सातंत्रीणंतस्पसातंत्राप्यवे गोवृत्तिगोतस्यपंचमेदामिष्यादृशे वेचे-मेर्जाचर्गोवस्थवंथोर्नाचेगों बोडयः नीचेगोंवसत्ताएकोविकल्पः वेज-स्कायिकेपुत्रायुकायिकेपुरम्यते तद्भवादुद्वतेपुचारोपजीवेपुमिष्या• रहा नांचगाँबस्यबंदः नांचैगाँबोदयः उधनीचैगोँबसत्ता अथवा नीचेगोनस्पवंदः उचेगोत्रोदयः उधनीचेगोत्रसत्ता अथवा उधेगो-प्रस्पत्रंथः नीचिगीत्रोदयः उद्यनीचिगीत्रसत्ता अथत्रा उद्येगीत्रस्पत्रंथः रक्षेत्रीवस्योदयः उद्यनीचैगीवसत्ता एवंभेगपंचकंभवति तथा सा-

स्वादनेपयमभंगवर्जभंगचत्ष्यंप्राप्यते प्रयमभंगक्तेजोवायुकारि योस्तृद्वक्तेयुत्वसास्वादनाभावात्, तयात्रियुत्तिभावितिदेशविर्ते उधेर्गोववंवकोद्द्रीभंगीभवतः सिश्राद्वयोद्धि नी चर्गोवंववंदि उधेर्गोववंवकोद्द्रीभंगीभवतः सिश्राद्वयोद्धि नी चर्गोवंववंद्रिते अत्वाचार्याः देशविततस्यपंवमपृवभंगएक उक्तंच सामत्रणंवपञ्च उद्यगोयस्सउद्दर्शोद्धे इतिवचनात् एग्रह्युत्रमत्तसंयत्प्रमृतिष्ठश्च स्रग्रणस्थानेपुत्रप्रवक्षेकोभागः त्वप्रमत्तात्त्रक्ष्मसंपरावपर्यतं उग्गांवस्त्रद्व उद्यग्नेवस्यायेष्ठव्यव्यायाव्यवद्वक्ष्याच्यावेष्ठव्यायाव्यवद्वक्षयाच्यावस्यावस्य प्रवक्ष्यवयावस्यवद्यावस्य व्यवद्यावस्य व्यवद्यावस्य विक्रयः अत्वत्यावस्य विक्रयः अत्वत्यव्यावस्य विक्रयः अवविन्तिद्वीभंगीउद्योगोवस्योदयः उद्यनीचीभंत्रसाल्यः विक्रयः उद्यनीचीभंत्रसाल्यः विक्रयः उद्यनीचीभंत्रसाल्यः विक्रयः उद्यनीचीभंत्रसाल्यः विक्रयः अवविन्तिद्वीभंगीउद्योगोवस्योदयः उद्यनीचीभंत्रसाल्यः विक्रयः अवविन्तिद्वीभंगीउद्योगोवस्योदयः उद्यनीचीभंत्रसाल्यः विक्रयः अवविन्तिद्वीभंगीउद्योगोवस्यादयः उद्यनीचीभंत्रसाल्यः विक्रयः अवविन्तिद्वीभंगीउद्योगोवस्यादयः उद्यनीचीभंत्रसाल्यः विक्रयः अवविन्तिद्वीभंगीचित्रस्याव्यव्यविक्रयः अवविन्तिद्वीभंगीचित्रस्यावस्य

त्वात् इत्युक्तेतेवेदनीयगोत्रे ॥ ९५ ॥ टवार्यः —वेदनी कर्मना छ गुणटाणे च्यार भागा छे असातानो वंध १ असातानो उदय १ साताअसातानी सत्ता १

योगिद्धिचरमसमयंयावत् चरमसमयेतु उर्द्वगीवस्योदयः उद्वेगीव सताअपंद्वितीयोविकल्पः नीचैगीवस्यसत्ताद्वासप्ततिप्रकृतिषुक्षीण

असातानी बंध १ सातानी उदय १ साताअसातानी सत्ता २ तथा सातानो बंध सातानो उदय साताअसातानी सत्ता २ सातानो बंध असातानो उदय साताअसातानी सत्ता ४ ए ब्यार छडा सुणठाणा पर्यत छे. इहां छड्डाने अंते असातानी बंध जाय छे तिणे सातमायी तेरमा पर्यत सात ग्रणटाणे सां-

तानी वंच सातानी उर्य बेनी सत्ता ? तथा सातानी वंच असातानी उर्य बेनी सत्ता ए बीजो ए वे भांगा पामीये छै. एक अयोगी गुणटाणे ज्वंचना च्यार भांगा छे. असातानी उर्य येनी सत्ता ? सातानी उर्य बेनी सत्ता २ असानानी सार भागा हो. गोत्रक्रयंना भागा सात हो. विहां भिष्यान्त्रे व भाग छे. नीयनो यंग्र नीयनो उर्प नीयनी सता १ पनो पंच नीपनी उद्ध बेनी सत्ता नीपनो दंग ऊंचनी प धेनी मता ऊंचनी यंच नीयनी उदय बेनी तता पू भागा छे. सारवादन गुणटाणे नीचनी कंत्र नीचनी उदय ी सता पु भांगी नयी तेणे च्यार भांगा हो, जे कारणे नसम्बद्धिन पडतो सास्त्रादने आवे उपगोत्र शांची संचाकः आहे, समिति हे नादे तो कंत्र नवी, विद्वां वीजे नवा प्रणटाने ऊंच बंधना वे भौगा हे, जे कारण सारवादनने पंच उल्यो छे, तेणे नीच बंचना ठीन भागा उल्स, पण पृहज वे भांगा छे, छटावी मांडी दरामा पर्यन येंग ऊंचनी उदय ऊंचनी समा ए एक आंगी है, बारमे तेरने जंघनी जदय है. हेनी सता एक भागी अपीव एणदाणे वंचना वे आंगा छे. ॥१५॥ गवीसा, सोलसवीसंचवारछदोसु । तेसुइकं, मिच्छाइसु आउएभंगा ॥९६॥ —संमतमासुः कर्वणी भंगवान्युष्यस्थानेषु रहाँद्याहः । गहरवः,दिअवादः कर्मणः अद्यविद्यातीनगा स्तवनस्कृदुः रदापुषः नरकाषुरुदयः नरहाषुःसत्तारः । वः प्रथमः भगनेतिकामुक्तः नामपुरस्यः विर्नुनामपुरः च्यात्वेसारवादने माच्यते मत्त्रदाषु ईयः नरकादु स्दरः मना, प्रमुमिष्यालेमारमाईनेजारितःस्मास्त्रे

आयुर्वेयकरणानंतरंनरकायुरुद्दयः तिर्पग्नरकायुः सत्ता, नरकायुरुदयः मनुष्यमनुष्यायुःसत्ता एतीभंगकीनारकस्यचतुर्धुगुणस्थानेषुप्राप्येते एतेपंचनैरियकायुभैगकाः, देवादुषोषिपंच, देवायुरुदयः देवायुः सं-त्ताबध्यमानायुषांतिर्यगायुर्वेदः देवायुरुदयः देवतिर्यगायुःसत्ता मलुष्याधुर्वेवः देवायुरुद्दयः मलुष्यदेवायुः सत्ता बंधानंतांदेवायुरुद्दयः तिर्पगृदेवायुःसत्ता, देवायुरुद्रयः मनुष्यदेवायुःसता एवं पंच, तिर्प-गायुरुद्रयेनवभंगका, स्तिर्यगायुरुद्यः तिर्यगायुः सत्ता अपंचपंच-हुरगुणेषुप्राप्यते, बध्यमानागुषांनरकायुर्वेवः तिर्पेगायुरुद्दयः नरकः तिर्यमुसत्तारूपः मिध्यात्वेषुवप्राप्यते, निर्यगायुर्वेवः तिर्यगायुरुदयः तिर्यग्तिर्यगायुः सत्तारूपस्तुमिथ्यात्वेसास्वादनेप्राप्यते, ष्यायुर्वेधः तिर्येगायुरुदयः मनुष्यतिर्यगसत्ता अयंभंगः मिष्यात्वेसाः स्वादने मुरूपतयामाप्यते, सम्यगृहद्देस्तिरश्चोऽपिदेवायुर्वेयः तिर्यगा-. युरुदयः सत्तालक्षणः मिश्रवर्जमिष्यात्वादि देशविरतपर्यंतप्राप्यते . बंधानंतरंतिर्पेगायुरुद्रयः नरकतिर्पेग्सत्तातिर्पेगायुरुद्रयः तिर्पेगति-पेंगुसत्तातिर्पेगायुरुदयः मनुष्यतिर्पेगुसतातिर्पेगायुरुदयः देवतिर्पे-गायुः सत्ताप्तेचत्वारोमिप्त्रवद्यायुषोऽपेक्षयापंचस्वपिगुणेपुप्राध्यन्ते प्वमनुष्यायुर्भगानव, मनुष्यायुरुद्यः मनुष्यायुः सत्तालक्षणः चतु-र्देशगुगुणस्यानेषुप्राप्यते, बध्यमानानांनरकायुर्वेशः मनुष्पायुरुदयः नरकायुर्भेतुष्पायुः सत्तारूपः मिध्यात्वेतिर्थगायुर्वेयः मनुष्पायुरुद्रपः तिर्पग्मनुस्यायुः सत्तालक्षणभंगोभिष्यात्वेसास्वादनेदेवायुर्पयः मनुः ध्यायुरुद्यः मनुष्यमनुष्यायुः सत्तारूपः भंगोमिष्यात्वेसास्वादने, देवापुर्वयः मनुष्यापुरुद्दयः देवमनुष्यापुः सत्तालक्षणभंगः भिधनः जैमिय्यात्यायममनपूर्यतेषुप्राप्यतेषुति अष्टार्विशानिभंगामिय्यात्वेप-थमेगुणस्थानेप्राप्यते, सास्वादनेपड्विशतिभंगास्निर्यंगमन्ष्यपोः नरकापुर्वयटक्षणीद्वीभंगी न नरकापुरोहिषयोमिश्यात्वेष्येनि छनि

षडिकाविंशतिः निञेषोडशभंगावध्यमानभंगानांद्वादशानामभा-वात बीसंच अविस्तसम्यग्दर्शने " वीसंभंगा " विंशतिर्भगाः कयमितिचेद्रच्यते तिथैग्मनुष्याणां प्रत्येकमापूर्वयकालेयेनरकाति-र्यरमञ्ज्यावृद्धियमस्त्रयोभंगाः यक्षदेवनैरियकाणां प्रत्येकमावृर्वयन कालेतिरंगगतिविषयः प्कैजोभंगः वेअविस्तसम्पर्देष्टनंसभवंति शेवाविशतिरे अभिते, देशविरते द्वादशभंगाः, यतोदेश-विरतिस्तिर्पेग्मतुष्याणांप्रभवति, तेचतियेग्मतुष्यादेशविरताआयुः ब्रीयन्तोदेवायुरेवबर्नातिनशेषमायुस्ततिरितरधांमनुष्याणां यमत्येकं प-रभवायुर्वेयकालान्यूर्वेप्केक्षोभंगः परभवायुर्वेथकालेपिदेवायुर्वेधकःपः एकको भंगः वंदी परकाछं तुचत्वारोभंगाः, चतुर्णामप्यापुर्यामध्ये-अन्यतमंत्रदृष्याततोदेशविरतिमतिषद्यवे, तदपेशयाचरवारीभंगाः माप्यन्ते, सर्वसंख्यया, द्वादश छशेसातिद्वयोः ममतानमतयोः म-रियेकंपहुंगाः, प्रमत्ताप्रमत्तसंपतादि मतुष्यापुर्भवंति बंधकाडात्-पूर्वएकः वंधकाकेतदेवापुर्वेवकपः एकः वंधोत्तरकारंतुचरवारोपि-एवंपदभंगाः, दोण्यउम्रति चतुर्पेअपर्वेकरणानिश्चिकरणमुक्ष्मसंपरायो-पशांतमोहेप्राणस्थानेप्रशामक्षेणिमधि इत्रयमत्ये कंद्रीद्वी भंगीत ध्या-मनुष्पायुरुद्यः भनुष्यायुः सन्ता, अथवा बद्धापुपरनुमनुष्पायुरुद्दयः देवमनुष्यायः संचालक्षणपुवद्वीभंगक्षीमाध्वेते प्रपतिकत्पः परभ्या-पुर्वभोत्तरकाळएतेज्ञायुर्नेवब्नंति, अतिविश्वद्धप्यातुपूर्ववद्वेशापूर्वि उ-पशमधीणमितिपदांते ते, देवारुप्येत्रतान्यायूषितदुक्तंत्रममहन्ते ति-ग्रुआउगेत्रवदेस जेणसंख्यितहरू, ततः उपशमभेगिमधि हत्यए-तेपुद्रोद्वीपुत्रभंगकीपूर्वपदापुष्कास्तुनक्षपकविषयनिपद्यते, ततः उ-पशमभ्रेणिनधि इत्येत्युक्तं क्षपक्रभेण्यांत्वेतेषांपुकेशोभंगः मनुष्या-पुरुद्रयः मञ्जप्यायुःतचाळश्चणपृथंनिक्यपेतंचायुः कर्नस्वरूपम् ९६॥ वनार्थः-हवे आउखाकर्मना भांगा गुण्याने कहे है.

मिष्यात्व ग्रुणटाणे नारकीना ५ देवताना ५ तिर्पचना ९ अटावीस भागा छे, सास्वादन गुणठाणे छवीस भागा है मनुष्यना तथा तिर्यचना नारकीवंद्यना २ मांगा नवी. मि गुणटाणे सोळ भांगा छे. च्यारे गतिमध्ये वध्यमान भांगा नवी बार वध्यमान भांगा नयी. समकित गुणटाणे वीस भांगा छे च्यार अवंधना च्यार बांची रह्या पर्छा बच्चमान च्यार छे. डे देवता नास्की समकित गुणटाणे मनुष्यायु बांचे. तिरि मनुष्य एक देवायु बांचे, समकितीने नरकतिरि आयुर्वघ नयी. छष्टार्या मांडी तेरमा पर्यंत उंच बंध, उंच उदय, उंच नीचनी सत्ता, ए एक भांगी छे. एक अयोगी केवली ग्रुणटाणे अवंधना वे भांगा छे. सत्ता ए एक भांगो पामीये जे कारणे क्षपकश्रेण अर्थवायु चढे परं वंवायु चढे नहीं. देशविरति गुणटाणे तिर्पेचना छ मत्रुष्यना छ ए बार पासीये अबंधनी १ बध्यमान एक देवतानो बांघी रह्या पाछल्या च्यार एवं ६ तिरिगतिना छ मतुष्यगतिना, छेडे तथा सातमे गुणठाणे मतुष्यगतिना छ भांगा पामीये तथा आठमे नवमे दशमे इग्यारमे ए च्यार गुणठाणे मनुष्यायुसत्ता मनुष्यायुउद्यः मनुष्यायुउद्यदेन मनुष्यायुसत्ता ए वे भांगा पामीये. कोईक जीव आउखो बांचे, उपशमश्रीण चढें त्या क्षीणमोह गुणठाणे मनुष्यायु उदयसना ए एक भांगी पामीये. जे कारणे क्षपकश्रेणि अवधाय चढे परंबंधायु चढे नहीं ॥ ९६ ॥ छनवछकंतिगसत्ता, दुगंदुगंतिगंदुगंतिअङ्घचउदु^{गं}।

छचउदुगंपणचउ, चउदुगंचउपणगएगचउ ॥९७॥ टीका—सांप्रतंनामकमेस्वरूपंतिमजनाह छनवङकंइरणदि- गाभाषुरमं तत्रव्याख्या तत्रमिष्यादृष्टीनाम्नः पर्ववस्थानानि तथ-यात्रपोर्विश्वतिः पंचर्विश्वतिः पद्विश्वतिः अद्यक्तिशतिः एकोनर्नि-शत् विदात्, तनापर्यानकेंद्रेदियमायोग्यं बद्रातः त्रयोविंशतिः, तस्यां पाद्यमानायां बादरमुक्ष्मप्रत्येकसावारवैर्भगाधत्वारः पर्पातकदिप प्राचीरवापर्याप्तद्वित्रचलुसिङ्गित्रिक्षेत्र्यंचेद्वियमासुष्यप्राचीरयं रहतःपं-चर्तिशतिः, तरपर्धं भेरे दिववायोग्धायांपंचित्रातीयव्यमानायांभंगाः विशतिः अपर्याप्तद्विविचनुरिद्विपतिषैग्यनुष्यपेषेदियपायोग्यायांचय-ष्यमानायांतुप्रत्येकष्किकोभगइतिसर्वसंख्यपापंचित्रंशतिः पर्या सेर्के-द्विपप्राचीग्यंबद्धतः पद्दिशितिः तस्यांचवय्यमानायांभंगाः पोडशः देवगतिनरकगतिमायोग्यंबद्धतः अधार्वेशतिः देवगत्यप्राविंशती अष्टीभंगाः नरकाष्टाविदार्ताएकभंगः एवंनवपर्याप्तद्विनिचतुरिद्विप-विषेग्मनुष्पपं धिद्वयमायोग्यांबद्यतां एकोनविकान्, तत्रपर्याप्रद्विति-धतुरिद्वियप्रायोग्यायां एकोनिर्जिक्षतिकष्यमानायां प्रत्ये कंअष्टी भंगाः । तिर्पेग्पेधेदियमायोग्यायांपरचत्वारिशन् शतानिअष्टाधिकानिमनुष्य-गतिमापोग्यायामप्येतार्वतपूर्वभंगाः सर्वसंख्ययाच्यारिहाद्विकानिः द्विनवतिशतानि ९२४०। यातुरे इगतिभायोग्यानी वैकरनामसहिता एकोनत्रिदान् साचनि-यादृष्टीनवंबमायातिवी थैकरनामसम्यक्त्वप्रत्य-यान्, मिध्यादृष्टेश्चतद्भावान्, पर्याप्तद्विवनुसिद्वेयतिर्वगर्पेद्विय-प्रापीरपंच्यतः दिशतः तत्रपर्यासद्वित्रचत्रसद्वियपायोग्यायांत्रिशः तिबध्यमानापांत्रत्येकमप्टीभंगाः, तिर्पर्ग्येन्द्रियमापोरयापांत्वशः धिकानिषरचत्वारिशन्छतानि ।४६०८ सर्वसंख्यशङ्कार्विशत उत्तरा-णिपद्चत्वारिंशतः यावन्मवध्यमतिष्रायोग्यां त्रिंशतः तीर्वकरनामसः हितायाचरेवगतिषायोग्याआहारकद्विकसहितावेउने अपिमिण्यादशे नवंचमायातः, वीर्थकरनाम्नः सम्पन्त्वप्रत्ययत्वादाहारकनाम्नस्त्रः संयमप्रत्ययत्वात्, उक्तंच सम्मचगुणनिमित्तंतित्ययरं संयमेणआहा-

रमिति तत्र त्रयोविंशत्पादिगुभंगसंस्यामिय्यात्वप्रत्पपनिरूपणार्यः माह ॥ गाथा ॥

> चउपणवीसासोलस, नवचत्तालसयायवाणउर्द् । वत्तीसुत्तरछाया, लसयामिच्छरसर्ववविद्वी ॥ १ ॥

तयापिय्वारप्टेनंबउदयस्थानानि तद्यदाएकविंशतिः चतुर्विंशतिः सप्तसहस्राणि सप्तशतानि त्रिसप्तत्यधिकानि तथाहिएकविंग्रस्युदर्गे एकचरवारिशत्, तत्रेकेंद्रियाणामेव अन्यतचतुर्विशस्युदयस्याभावात्, पंचर्विशत्युद्वयेद्वाभिशन् तत्रपृकेदियाणां सप्तेविक्रयति वेग्पंचेदियाः णामधे वैक्रियमनुष्याणामधे देवानामधे नारकाणामेकः एवंद्राप्ति-शत्पद्विशत्युदयेषदशतानि तत्रे केंद्रियाणांत्रयोदश १३ विकरेंद्रि-पाणां नव, तिर्थग्पंचेंद्रियाणांद्वेशतेषकोननवत्यधिके २८९ मदः ध्याणामपिद्वेशतेपुकोननवत्यिषके ॥२८९॥ सप्तविशत्युदयेपुकर्षिः शत् तत्रप्रेंद्रियाणांषद् ६ वैक्रियतियंग्पंचेंद्रियाणामष्टी वैक्रियमः तुष्याणामधी देवानामधी नारकाणामेकः, अष्टार्विशस्प्रदये एकादश-शतानिनवनवत्यधिकानि, तत्रविकलेंद्रियाणांवर्, तिपैग्पेचेंद्रियाणां-पंचशतानिषद्सप्तत्यधिकानि ५७६ वैक्रियतियंग्पंचेंद्रियाणांषोडश १६ मतुष्याणांपंचशतानिपदसप्तत्यधिकानि ५७६ वैक्रियमतुष्या-णामटी देवानां घोडरा, नारकाणांएकः, एकोनविशहुद्येससद्श शतानिपुकाशीत्यधिकानि॥१७८१ तत्रविकलेंद्रियाणांद्वादश, ति-र्यक्पंचेंद्रिपाणामेकादशशतानिद्विपंचाशद्यिकानि ११५२ वैक्रिय तिर्पेक्पंचेंद्रियाणांषोड्यः १६ मतुष्याणांपंचशतानिपदसप्ततिअधि-कानिवैक्रियमनुष्याणामष्टी < देवानांषोडश, नारकाणांएकः, त्रिशह-

तिर्यकृपंचेंद्रिपाणामष्टी ८ मनुष्पाणामेकादशरातानि द्रिपंचाशदधि-कानि ११५२ देवानामधी, एकन्विशहुदयेपुकादशहातानिचतुः पष्ट्रधम्यविकानि ११६४ तः विकटेंदियाणांद्वादशः १२ तिर्परुपर्वे-द्रियाणामेकादशक्तानिद्धिपंचा स्मद्विकानि ११५२ सर्वसंख्ययासार सहस्राणिसप्तदशस्तानिविसहत्विकानि ७१७७३ मिथ्यादृष्टेः उद् यभगानिमध्यात्वेपटसचारधानानि तद्यधाद्दिनवति रेकोननवतिः अष्टाशीतिः, अशीतिः, अस्सप्ततिः, तमदिनगतियत्गति रानामि-मिध्यादशीनामवसेया, यदायुनर्नरकेषुचदायुष्दरीवेदकसम्यग्दृष्टिः सत्-तीर्थकरनामसहितः परिणामपरावर्षनेनमिध्यात्वंगतः नरकेपुरामृत्यद्यते तदातरपैकोननविरतभुहर्तकाछंपावहरूपते, उत्पर्धकर्वमंत्रभुहर्षां-नंतरत्तारोपिसम्पक्त्वंप्रतिपद्यते, अष्टाशीतिधतुर्गंतिकानामपिक्रिच्या-दृष्टीनां पद्मीनिरसीतिश्चण्कं द्विषेषु पथायोग्यदेवगतिमायोग्येनस्कग्न-तिप्रायोग्येचोद्वलिवेसतिलम्यवे, एर्सेद्रियभवाहुब्दस्यविक्लेंद्विवेष तिर्वे क्षंचेंद्रिये पुनन् व्ये पुदानध्ये समुत्पनानां सर्वेषयां सिभवाव व्येषव्यंत मुंह नैकालंगा र रूप्यनेपातो ८ वर्षे वैकियशरीरादिबंधसंभवानसम्बे अष्टसप्ततिस्वेजोवायुनांमनुष्यगतिमनुष्यानुपूर्योरुद्दक्तियोः माप्यते, वैजीवायुभवादुर गृत्यविवक्षेत्रियेप्रतिर्यक्षेपेन्द्रियेप्रवामध्येसप्तरप्रान नांअतमुद्धर्तं शास्त्रयात्रत्यस्तो ऽ त्रश्यमतुष्यगतिमनुष्यानुष्यो वैधसंभन यात् तदेवंसामान्येनमिष्यादेष्टेः वंबोदयसचारथानान्युक्तानि, संप्रति-संवेपज्यते, तप्रमिष्पादृष्टेखवीविंदातिबन्नतः मागुक्तानिनवास्युदय-स्यानानिसम्(भे)हानिसंभवन्ति, केवटमेकविदातिपंथविदातिसप्तविदा-

नच्देयाअपर्याप्तेकेन्द्रियप्रायोग्येक्निति तेषांनप्रोत्पादाभाषान्, ना-पिनेस्पिकारतेषांसामान्यनोष्येकेन्द्रियपायोग्यकंवासंभवान्, ततोऽक-

देवनेश्यिकसत्कोदयस्यानमंगा न प्राप्यन्ते, सत्तास्यानानिपंचनग द्विनवृतिः अधारातिः पदयोतिः अर्गतिः अप्रसप्ततिश्रतवे चतुर्विदाति पंचर्विशति पद्विदान्युर्वेषुपंचापिसच स्थानानि नवः पंचर्विशत्युद्वेवेजोवायुकायि हानधि हत्याष्ट्रसति प्राप्पते, पद्भिंशतपुद्येवेजोवायुकायिकान् वेजोवायुभवादुत्या बळेन्द्रिपातिर्वस्पेचिन्द्रियेषुनन्येसमुत्पन्नान् अधि मृत्याष्टाविंशस्येकोन **बिंशत्र्**क्षिशद्कपेषुपंचसुअष्टशस्तियजां निशेयाणिप्रत्येकंपत्वा चत्वारिसत्तास्थानानिसर्वेसंख्ययासर्वाण्युदयस्यानानि अधिषृदयत्रये विंशतिबंधकस्यचत्वारिशत्सत्तास्थानानि, एवंपंचविंशति पद्दिशी बंधकानामपिवक्तव्यं केयलमिहृदेवाअप्यातमीयेषुसर्वेध्वप्युद्यस्थाने धुवर्तमानपर्याप्तेकेन्द्रिययोग्यांपचिव्यति पर्विशतिचवन्नेति ^{हर्य} नवरंपंचविंशतिबंघेत्रादरपयांप्तप्रत्येकस्थिरशुभदुर्भगानादे कीर्तिपरेरशेभंगाः अवसेयाः नशेष कीर्तिअयशः मुक्ष्मसाचारणपर्याप्तिषुमन्येदेवस्योत्पादाभावात्, सत्तास्यानभावन पंचिव्यतिबंधेपडविद्यतिबंधेचमागिवकर्तव्या सर्वसंख्ययाचत्वारिहा

पुकोननवतिः अष्टाशीतिः षड्यीतिः तत्रत्रिंशहृदयेचत्वार्यपितम् प्येकोननकृतियोगमवेदकसम्यग्टाष्ट्रकेद्धतीर्थकरनामा परिणामपरिव र्जर्नेनॅमिय्यात्वेगतोनारकामियुखोनरकगतिप्रायोग्यामघ्टाविंशर्ति^न धाति, तमधिकृत्यवेदितव्यानिशेषाणि पुनर्साणिसत्तास्यानान्यविशे

पेणतिर्यममुख्याणां एकत्रिशदुद्ये एकोननवतिवर्जानित्रीणिसत्तास्या नानिएयोननवतिहिंवीर्थकरनामसहिता नचतीर्थकरनामतिर्येश्वसंभ वृति सर्वसंख्यपाअष्टाविंशति(बंधे)सप्तसत्तास्थानानि देवगतिवर्जाः १९८ शेपामेवभवतित्रिशतंविकरेंद्रियतिर्यग्पेचेंद्रियमायोग्यांमनुष्यगतिमा-योग्यांचबधतोमिथ्याहष्टेः सामान्येननवापिप्राकृतनानिउदयस्था-नानितद्यथाद्विनवतिः एक्रोननविः अग्रशीितः पदशीितः अ-शीतिः परसप्ततिः तत्रैकर्विशत्युद्येसर्वाण्यपिड्मानिपाप्यन्ते, त-शाय्येकोननवतिः बद्धवीर्थकरनामानंभिध्यात्वंगतंनैरयिकमधिकरयाः यसेया द्विनवतिः अद्याशीतिश्चदेवनैरियकमञ्जविकलेन्द्रियतिर्वगु-पंचेन्द्रियकेन्द्रियानधिकृत्यपडशीतिरशीतिश्रविकछेन्द्रियतिर्यगपश्चे-न्द्रियमञ्जेकेन्द्रियानधिक्रस्योदितःया, अष्ट्रसप्तिरेकेन्द्रियतिर्यग्येचे-न्द्रियानधिकृरययतुर्विशस्युरपेएकोननवतिवर्जानिशेपाणि पंचसत्ता-स्थानानितानियकेन्द्रियानाथेकृत्यवेदितव्यानि, अन्यवचत्रविंशति-रुदपस्यानाभावात । पंचावेदारयदयेपिपडपिसत्तास्यानानि तानि-यंथेकविंशत्युद्वेभावितानित्येवभावनीयानि षड्विंशत्युद्वय एको-ननवतिवर्जानिशेपाणि पंचसत्तास्थानानितानिमागिवभावनीपानि, प्कोननवतिस्तुनस्म्यते यतोनिध्यादृष्टेः सतः प्कोननवतिः नाकेप्रत्यद्यमानस्यनेरयिकस्यशाप्यते न शेषस्य नच नैरयिकस्य पहार्वेशस्प्रदयः संभवति, सप्तविशस्प्रदयेअष्ट्रसप्ततिवर्जानिशेपाणि पंचसत्तास्थानानिप्रामिवभावनीयानि, एकोननवतिस्तुनसम्पर्वे यतो मिथ्यादृष्टेः सतः एकोननवतिर्वश्केषुत्पद्यमानस्पनेरियकस्पमाप्यवे मशेषस्यनचनैरयिकस्यषद्विंशत्युद्वयः संभवति, सप्तविंशत्युद्वये अन ष्ट्रसप्ततिवर्जानि शेषानिपंचसत्तास्यानानि तवैकनवतिः पागुक्तस्-पंनेरियकमद्भिक्रयधिनवतिरशक्षीतिश्चदेवनैरियकमतुजविकलेन्द्रिय-तिर्यग्पंचेन्ट्रियेकेन्द्रियाणामातपोद्योतान्यतस्सिद्धतानांभवति, नार-कादीनांवानचवेषामष्टसप्रतिस्वेषामवस्यंमतुष्यद्विकवंयसंभवात् ए-तान्येवपंचसत्तास्यानानि अष्टार्विशत्युदयेतंत्रेकोननवतिर्द्धिनवतिर-ष्टाशीतिश्रमानिवभावनीया, षडशीतिरष्टाशीतिश्रविक्रवेन्द्रियतिर्य-

22

स्पोन्तियमन्त्रमानिक्स्योतिन वागूनम् होनावं शहरागोनिनिः प्रचानारणानाति भारतीपाति, विश्वपुर्वेषणारित्यणानगरि ष ह्योनिस्मीलिस-सर्वेच हे स्टाल्ड्यानियस्थाल्ड्यम्स म्मानविक्रमोतिनापानि, एक्कोननवनि परमुपापनी, पन र निष्पाद्धेः सन्ते हर प्रेचे हरनारनोध्ययात राजस्यनगरे सम्प्राप्य नयनैस्पिकस्पविशाहरयोद्धित कृतविशाहरवेष्यतान्य क्षाारिताति र्गात र ते विद्यानियार में रिन्यानीय कृष्य 2 कृष्यानित में राज्ययानिया रोर होन् विज्ञानुविज्ञानी कानः चन्त्रणारिक्षरमञ्जास्यामानि पातुरेस निवामोस्याम् होनाविज्ञात्माभिष्याः छेनै कामागति । हारणप्रामेचेस मनुष्य रेपमनित्रायोग्यप्रजीकापातिकानः । हा हक्षेन्द्रयनिर्यम्पर्धन्दिष प्रापीरमायस्यः गामान्यनप्रागुन्हानिनशोदयस्थानानि, ए*हीननव*र्ति यज्ञांनिपधमनास्थानानिः, एकोननयनिमस्क्रवेणस्मियेगानिप्रापीन्य पंचारभात्भयात्नानिपचयनाम्यानानि, वृक्षत्रानिचनार्वेशतिपंच विशाति पद्मिशस्यद्येषुवाभित्रभावनीयानि, मप्तविशस्यप्राविशनि प क्रीनर्पिशङ्गेषुपंचमृद्यस्थानेषुअष्टसप्तनिवज्ञानिप्रत्येकरापाणिकताः रि २ भावनीयानि अष्ट्रसप्तनियतियेचेकारणप्रामुक्तमन्सरणीयं सर्वै संख्यपामिच्यादेष्टेः विदानंत्रत्रानः चन्त्रारिशनुसन्तरस्थानानि मनुज-गतिदेवगतिप्रायोग्याविशत्मिथ्यादृष्टेः नवधमायाति मतुजगतिमाः योग्याद्वितीर्थकरनामसद्वितादेवगतिष्रायोग्यात्वाहारकतीर्थकरनामस-दिताततः साकथंमिय्यादृष्टेःवंचोदयसत्तास्यानसंवेचः, सप्रातिसास्वान दनस्यवंधोदयसचास्थानान्युच्यते, तिगसत्तद्दगति त्रीणिवयस्यानानि तद्यथाअष्टाविशतिः एकोनर्त्रिशत्रविशत्त्रत्राटाविशतिद्वेधा देवन-तिमायोग्यानरकगतिभायोग्याचतत्रं नरकगतिमायोग्या सास्वा-दनस्पत्रंधमायाति, देवगतिप्रायोग्यायाश्चवंधकास्तिर्पग्पचेन्द्रियमञ् पाश्चतस्यांचाधार्विशतौत्रध्यमानायांअध्योभंगाः तथासाम्बादनाएके-

अञ्चलपाचउसङ्घी, वत्तीसलयायसासणेभेया । अञ्चर्वासाङ्सु, संबोणहिहयळन्तुङ् ॥ १ ॥

सुगमा, तपासास्वादनस्योदयस्यानानि सप्त तयया, एकविंशतिः चतुर्विंशतिः पंपविंशतिः पदिवंशतिः एकोन्द्रस्यविक्रकेन्द्रियस्यिन्द्रस्य प्रकृतिस्याद्रस्य एकेन्द्रियस्य विक्रिक्तिः विश्वत्य प्रकृत्रस्य स्वाद्रस्य एकेन्द्रियस्य क्रिक्तिः विक्रिक्तिः स्वाद्यस्य स्वाद्रस्य स्वाद्यस्य स्वाद्यस्यस्य स्वाद्यस्य स्वाद्यस्य स्वाद्यस्य स्वाद्यस्य स्वाद्यस्य स्वाद्यस्य स्वाद्य

विचारसारग्रन्थस्यटीका.

१७२:

नसहयदाः कीर्त्ययकाः कीर्त्तिस्यांयोद्वीभंगीतावेवसंभवतः नशेषाः सङ्मेषसाधारणेषुतेजोवाष्ट्रष्ठचमन्येसास्वादनस्योत्पादाभावात् , पंच-विंशत्युदयो देवेषुमध्येउत्पन्नमात्रस्यप्राप्यतेनशेपस्यतत्रचाष्टीभंगाः तेचस्यिरास्थिरशुभाशुभयशः कीर्चिअयशः कीर्चिपदैरवसेयाः पर् विंदारपुद्योविकळेन्द्रिपतिर्पम्पेचेन्द्रियमनुष्येषुमव्येक्रपत्रमात्रस्यअत्री प्यपर्गाप्तकेनसहयएकेकोभंगः नसंभवति, अपर्गाप्तकमन्येसास्वादनः स्पोरपादाभावात् शेषास्त्रसंभवंति तेचविकलेन्द्रियाणांप्रत्येकंद्रोद्धाः विंशतिषदृतिषग्पेचेन्द्रियाणांद्वेशतेअष्टाशीत्यधिकेमतुष्याणामपिद्धिः शते अध्याक्तीत्यधिकेसर्वसंख्ययाषड्विंशत्युद्येपंचशतानिद्वयशी^८ रयधिकानि ५८२ सप्तविंशत्यच्याविंशत्युद्योनसंभवतः तीष्टिउत्प ष्यनंतरांतमुद्देतेसतिभवति सास्वादनभावश्चोत्पष्यनंतरमुरकर्पतः किं चित्रनपडावळिकामात्रं ततः एतीसास्वादनस्यनप्राप्यतः पुकर्तिशङ् द्येदेवनेरयिकाणांस्यस्थानपर्याप्तानांप्रयमसम्यक्त्वात् प्रच्यवमानानां• प्राप्यते तपदेवस्यैकोनविंशदुदयेभंगाअष्टीनैस्यिकस्यैकद्वित सर्वेसं रूपया नव ९ श्रिशङ्दयास्तिर्यंग्मनुष्पाणांपर्याप्तानांप्रथमसम्यरत्वान् मच्यवमानानांदेवानामुचरवेकियेवर्त्तमानानांसास्यादनानां तप्रतिरधां मनुष्याणां चत्रिशहुद्येप्रत्येकंद्विपंचाशद्धिकान्येकादशशतानि ११५२ देवस्याष्ट्रीसर्वसंख्ययात्रयोविंशतिशतानिद्वादशाधिकानि पुक्तिवादुद्यस्तिर्यम्पेचेन्द्रियाणांपर्याप्तानांप्रथमसम्यक्त्वान् प्रव्यक भानानां अत्रभंगाम्कादराशतानिद्धिपंचाशद्यिकानि देवस्याशीतर्गतं रूपपात्रयोविंशतिशनानिद्धादशानि २३१२ एकत्रिंशतुश्वेमायेके द्विपंचादादिकानिषुकादशशानानि ॥ गाया ॥

> वर्तासदुनिअहम, वासीइसासायपंचनत्रउदम वारिह्यातेनीसं, वादिवद्वाससमाम ॥ १ ॥

तुगमा, गर्बभगगर्यपासनकायभिकानिभाकार्यादात्राति साम्बा-उनम्बद्धसमाध्यावे नद्यादिनपति. अहाद्यतिधनपदिनप्रापः आहारकष्यप्रवासम्बाद्धश्रमधीयनः सन्यिननगरबादनभावमन्तर-रक्षतिनायसभ्यते भदापायः अष्टार्वातिः यत्रगतिकानामपितास्याः दनानां, रामानसदेवअध्यते नषाहाविद्यानद्यनः समजादमार्यदेअः धायान नद्ययाभ्यात्रप्रकृतियात् अष्ट्राविद्यतिहिमाम्बाद-सम्बंध-धीरपासवनि देवगतिर्वयसनयक्तमापर्यामः सारवादनः देवग-नियोग्ययप्रातितनः रोपाउदयानसभवति, अवमनुष्यानिष्दरयि-शहरदेवे अपिसतार पानित देरपचेदियानुसार प्रदनानिपन्तपादार्थाति-रेषपतोदिनशंबरपदायभेजितः प्रतिपतनीस्वयंते, नदितस्यामप-शाम भेजिस भवः । एक विशाद वेप्यहादाति वेयवनो दिन प्रतिरुपशाम भेन वितः प्रतिपत्ततीसम्बते नयन्तिस्मामुपः।यक्रेविसंभरः प्रश्निश-गुर्वेष्यहाद्यानिरंवयनपुर्वावशादुर्यार-वर्यवेषोद्वियायांनधनिरक्षांद्वि-मर्रातः संभरति पानुक्तप्रकेः एकोनविशनंतिर्यग्यंधेदियाणां-मञ्ज्यप्रायोग्यामध्यः सारवादनेसमारपुरयरचानानि, तनपुरेदिय-विक्रोडीद्रयनिर्वर्वपेदियमनुष्यदेवनिरयिकाणांसारवादनानांस्वीयस्वी-यो इयाचानेषु वर्षमानानानेत्रसनारधानमधाद्यातिः नत्रांमतुष्यस्य-विश्वपुर्वेवर्तमानस्योपशमभेनितः मनिपतनः सारवादनस्पद्धिनव-निः एउत्रिक्शाई अकरपापित्रक्तरूपं सर्वाष्यप्यद्वयस्थानान्यधित्रस्यसामा-म्बेनसर्वसरूपपासारवादनस्याष्ट्रासत्तरभानानि, संप्रतिसम्प्रामिप्या-र्दशः बंधोदयसन्तास्यानान्यमिषीयते, हगतिमदुगंति निभेगुणस्था-नवेद्धेवंधायाने नवया अष्टाविशक्तिः एकोनविशक् तत्रनियेग्य-त्रप्याणां सम्यग्निष्यादृर्शानां देवगति प्रायोग्यमे वर्षे ध्रमापाति ततः द्रोपाअग्राविद्यातिः तत्रभेगाअग्रीएकोनविद्यतिमत्रप्यगतिमायोग्यां-बचनांदेर्वनस्विकाणां अवाप्यर्शभंगाः तेषात्रभयवापि । स्थिस-

स्थिरग्रभाग्रभयशः कीर्त्तपेयशः कीर्त्तिपदेश्वसेयाः शेपास्तपरावर्तन मानमकृतयः शुभाएवसम्यग्र्मिथ्यादृष्टीनांबंबमायांति, ततः शेपा-भंगाः नपाप्यंते, त्राण्युदयस्थानानि तद्ययाएकोनत्रिशत्त्रिशतएकः त्रिशत् तत्रेकोनत्रिशातिदेवानधिकत्याग्रीभंगाः नैरयिकानधिकत्येकः सर्वसंख्ययानवर्वि शतितिर्यग्पेचेंद्रियानविकृत्यसर्वपर्याप्तिपर्याप्तयोग्या-निद्धिपंचाशद्धिकानिएकादशशतानिमनुष्यप्रायोग्याण्येशद्विपंचाशद थिकानि पुकादशशतानिसर्वसंख्यपात्रयोर्विशतिशतानिचतुर्राधिकानि २३०४ एकभिंशाइदयेतिर्यंग्पेचेंद्रियानधिकृत्यतत्रभंगाद्रिपंचाशः-धिकानिएकादशशतानि सर्वोदयस्थानभगसंख्ययाच<u>त</u>क्षिशच्छता-निपंचपष्ट्यधिकानि ३४६५ द्वेसत्तास्थाने, तद्यपादिनवति-रष्टाशीतिश्च, संप्रतिसंवेध उच्यते, सम्यग्मिय्यादृष्टेरप्टाविंशतिः वंध-कस्पद्वेउदयस्थानेतधयार्थिशत् एकेकस्मिन्द्यदयस्थानेद्रेसत्तास्याने-तद्ययाद्विनवतिरद्याशीतिश्च एकोनिश्चिशत्अशापिद्वेसत्तास्थाने तदेवं पुक्तैकस्मिन्द्रद्यस्थानेद्वेद्वेसत्तास्थाने इतिसर्वसंख्ययापरः, संप्रति-अविरतसम्यग्टप्टेर्वधोदयस्थानानिअभिघीयते तिगछचउति त्रीणि-बंधस्थानानि तद्यथा अष्टार्विशतिः एकोनर्त्रिशत् तत्रतिर्यग्मतुष्या-णांअविरतसम्यग्दर्शनांदेवगतिप्रायोग्यांचन्ततांअष्टाविंशतिः तत्राप्य-ध्टीभंगाः अविरतसम्यग्टच्टयोहितिर्यग्मनुष्यानशेषगतिप्रायोग्यंच-बद्गंति, वैननस्कगतिप्रायोग्याअष्टाविंशतिर्नलम्यते, मनुष्याणांदेव-गतिप्रायोग्यांवीयंकतसिहतांत्रव्रतोएकोनत्रिवात् अत्राप्यध्येभंगाः अष्टानुद्यस्थानानिएकविंशतिः पद्विंशतिः सप्तविंशतिः अष्टा-विंशतिः एकोनविंशत् एकविंशत्, तेनेकविंशत्युर्येनेस्यकतिर्यग्यः चेंद्रियमनुष्पदेवानधिकृत्यवेदितव्यः क्षायिकसम्यग्हण्टेः पूर्वप्रद्रायुः . ,े असेने' न े . . . , अविरतसम्पन्हांच्टश्चापयोप्तकेषुनी-ं त्पद्यते, ततोपर्याप्तवर्जाः शेषाभंगाः सर्वेषिवेदितव्याः, तेचपंचर्वि-

शतिः तपतिर्ययपेदियानधिकृत्याध्यामनुष्यानधिकृत्याध्ये देवान-प्यथिकृत्याप्टी नतियक्तनिवहत्येकः पंचविक्रतिसप्तविक्रत्युद्रयोदे-बार्नरिव कार्न्विकपिन वंग्मनुष्यानिविक्रमावसेयः, तत्रनेरियकः क्षायिकसम्बरहाध्यादिवस्त्रिविधसम्बरहाध्यस्युक्तंचवूणीं, पणवीसस-त्तर्वासो द्यापदेवनेरङ्घवेउ वय तिरियमणुपुपदम् नेरङ्गाखड्यवे-यगसम्मदिर्दादेशेनिविद्तसम्मदिद्वी तिभंगा अनसर्वेप्पात्मीया-आत्मीयाःस्वेषिद्दृष्ट्याः पद्विदहपुदयस्तियंग्मनुष्याणांशायिकवेद-क्सम्यर्द्धानांचित्रश्चामीपशमिकसम्यद्धीनांचित्रश्चांद्वाविद्यतिस-स्कर्भणोवेदितस्याः, अप्टाविंशत्येकोनिर्वशत्येकतिर्यग्मनु-ष्यदेवानां पुक्रिकाङ्दयस्तियँग्पंचेंद्रियाणां भंगाः आत्मीया २ इष्टप्पाः पत्यारिसत्तास्थानानि, तद्ययात्रिनवतिः द्विनवतिः पुत्रोननवतिः अप्टाशीतिश्चनवपोऽप्रमत्तसंपतोऽप्रवंकरणोवावीयंकराहारकसहिता-मैवर्विशनंबव्यवायश्चादविस्तसम्बरहिष्टिदेवोजातस्तमधिरूरपत्रिनवतिः अष्टाशीतिश्चनवयोऽपमचस्त्वाहारकंत्रन्वापरिणामपरावर्तने, तिथ्या-स्वमुपगम्यचनस् गांगनीनामन्यनमस्यांगती अपनस्तरपतत्रतत्रगती-मुमोपिसम्यरत्वं प्रतिपत्रस्यद्भिनवति देवमनुष्येषुमध्ये सिष्यात्वमप्रति-प्रतस्यापिद्विनवितः प्राप्यवेषुकोननवितिर्देवनैरयिकमनुष्याणां अवि-रतसम्यगृदृश्नांवेद्वित्रयोपिर्वार्थंकरनामोपार्ज्यांतिर्विर्यश्चरीर्यकरनाम-सत्कर्मानोत्पषवे इतितिर्यगदीनः अद्यशीतिश्रतुर्गतिकानामवि-रतसम्परदर्शनां, संप्रतिसवेच उच्यते तत्राविस्तसम्परदृष्टेरहार्विज्ञाति-बंधकस्यअष्टावष्युदयस्यानानि तानितिर्यममुख्यानिषकृत्यतन्नापि-पचिंदातिसमिवदात्युदयो विकियतिर्थयम्बुष्यानधिकृत्य एकेकरिम-न्त्रदयस्थानद्वेद्वेसत्तास्थानेतद्ययाद्विनवतिः अष्टाशीतिश्च एकोन-त्रिशतः द्विधादेवगतिमायोग्यामनुष्यगतिमायोग्याचतत्रदेवगतिमा-योग्पातीर्थकरनामसहितातांचमनुष्याप्त्रत्रग्नेति एवेपांउद्यस्थानाः

नि सप्त तद्यया ॥ एकविंशतिः पंचविंशतिः पर्हविंशतिः सप्तविं शतिः अध्यविंशतिः एकोनिवंशत मनुष्याणांपुकविंशत्रभवति एकैकस्मिन्तुद्यस्थानेद्वेसत्तास्थानेतद्यथात्रिनवतिः एकोननवतिश्र मतुष्यगतिप्रायोग्यांचैकोनत्रिंशतंत्रच्नांति देवनैरियकाणां उदयस्थानानि पंचतद्यया एकविंशतिः पंचविंशतिः अष्टाविंशतिः एकोनर्तिशन्विंशन् देवानां पंचतान्येत्रपष्टतुर्भिशत् ? साचउद्योतवेदकानामवर्गतन्या एकेकः रिमन्तुदयस्थानेद्वेद्वेसत्तास्थानेतद्यथाद्विनवतिरष्टाशीतिश्वमनुष्यगति-मायोग्यांत्रिंशतंविरतमसम्यग्दृष्टदेवानरियकाश्ववद्गति तत्रदेवानाधुरः यस्थानानिषद् तान्येवतेषु उद्यस्थानेषु प्रत्येकंद्वे सत्तास्थानेत्रिनवितः रेकोनववतिश्चनेरयिकाणां उदयस्यानानिपंचतेषुप्रत्येकं सत्तारपानमे-कोननयतिरेवतीर्थंकराहारकसत्कर्मणोनरकेपुरपादाभावान् तदेवंसाः मान्येनएकविंशत्यादिपुनिंशत्पर्यतेषुउदयस्थानेषुप्रत्येकंद्रेसत्तास्याने-निनवतिरेकोननवतिश्चनिरयिकाणामुदयस्थानानिपंच तेषुमायेकंस-त्तारथानमेकौननवतिरेवतीर्थंकराह्यारकसत्कर्मणोनरकेपूरपादाभावात् तरैवंसामान्येनपुकविंशत्यादिषुविंशत्वर्यतेषु उद्यस्यानेषुसत्तास्यानाः निमस्पेकंचत्वारि तथयात्रिनवतिः दिनवतिः एकोननवतिरशयीः निश्चपुक्रानिशहद्येषेद्वे देदिनयतिरष्टाश्चीतिश्चसर्वसंख्यपानिशत्इति सं मतिरेशनिगतिःतस्यवंशादिस्थानान्युच्यंते तुगववाचाउप्रशति रेशः

भंगाः वेपनीयकसाहिताएकोनिवान् साधमनुष्यस्य तिरक्षतीः प्रवर्गमन्वर्भयंगभागान् अवारण्टीभगाः पद्वत्यस्थानानि तदायारे पर्विदानिः स्तर्भिवानिः अन्यार्गितिः एकोनस्थितनिवान नगया-निक्तादिविद्वयन्त्यमनुष्यानं प्रवर्णके प्रभाः निक्यमायद्योरे करो दितस्योत्नद्वयम्वयस्यानं प्रवर्णके विद्यान्यस्य हननः सुखरदुःस्वराम्यांम्रशस्तामशस्तविद्वायोगतिम्यांचञायवे नधव्यनादशत्रतः १४४ तद्यपाद्वःसं-दर्भगानादेयायसः कीर्तानामुदयोग्रणमृत्यपादेकमभवतिङ्ति तदा-भेताविकल्पानमाप्यंते, वेक्तियतियम्भनुष्याणांमृत्येकमेकेकोभंगः कर्विशन्तिस्थां जनापितपृत्रभंगाः, चत्नारिसत्तास्यानानि तद्यपा नवतिः, दिनवतिः, एकोननवतिरध्यवीतिध्य तनगोऽममचोऽ करणोवातीर्थं कराहुरर कंचन् स्वापरिणामहात्तेनदेशनिरतोजातः तस्य-तिः, समावशतिः, अष्टाविशतिः एकोनविशत्विशत्वपतेषुचमस्वै-देससास्पानं तद्यथा द्विनवितस्यशीतिश्चपुर्वतिरश्चोद्वपि, नवरंत-कर्निशह्दयोषिचत्तस्यः, तत्राषिचपृतोष्चद्वसत्तास्यानेष्कोनिः ोमनुष्यस्पेवदेशविस्तस्योदयस्यानानिअनंतरोक्तान्येवपंच, तेषु-वेद्वेसत्तास्थाने, तयथात्रिनचतिरकोननचतिश्च तदेवदेशिविर पविशस्यविपुनिशस्यरंतेषु चत्वारिससास्यानानि तयाप्रयते नेद्वेतयथाअष्टार्विशतिः एकोननिशत्एतेचरेशविस्तस्येवभा-ष्यउद्दरस्थानानि तद्ययापंचिवस्तिः सप्तिकातिः अद्यविसातिः . शत्तृनिंशदेतानिसर्वाण्यप्याद्दास्कतंयनुस्देशी-रूपसंयतस्यकारे॰ ने, विशनुस्त्रभावस्थनयतस्यापितनवैक्तियसंयतानामाहारकः ष प्रयक्षंचित्राति समीकात्युत्यपोः मस्पेहने होनंगः तावेकोननिशतिष केकः सर्वसंख्यसाचनुरस १४ निशः भावस्यस्मापिमाञ्चवे, ततशतुःश्वारिभःचि देवानं १४४१११० शतपास्यपुनद्वे अपितीर्चकरनामस-वैशातिनयद्मातिइतिनिनमित्सेनेननमित्सेनेमाप्यते, एको-

नर्गिराद्वेधकस्य,पंचस्वपिउद्दयस्थानेष्ठप्रत्येकंद्वसत्तास्थानेत्रव्यपादेन वतिरेकोननवतिय तत्राहास्कसंयतस्यानेनवतिरेवतस्यकोनिराद्वंक कस्यानियमस्यीर्थकराहासकसद्धावातः, वैक्रियसंयतस्यपुनर्द्वेअपितदेवं प्रमत्तनंयतस्यसर्वेष्वपिउद्यस्थानेषुप्रत्येकंचत्वारि २ सत्तास्यानानि प्राप्यन्ते, इतिसर्वेसंस्ययाविद्यातिः इदानीमममत्तस्यवंवादीन्युर्ध्ये चउदुराचवक्ते अप्रमत्तसंयतस्यचन्त्वारि श्वस्थानानित्वय्याअध्यानि

तात्वेकत्रिशत् एतेषुचतुर्ष्यपिस्थानेषुभंगः एकैकएववेदितस्यः, अ स्थिराशुभाषशः कीचींनांअममतेवंदाभावात् द्वेउदयस्थाने तपपा-पकोननिवान्षिकान्, तत्रैकोननिवान्योनामपूर्वेममत्तसंपतस्तरआः हारकं वैक्रियंचनिवरूपंपद्यादम्मकभावंगच्छतिनस्प्रमाप्यने, अवद्रीभे गीएको वैक्रियस्यापरआहारकस्यएवं विशाद्ययेपिद्वीभंगीस्वभावस्थ-स्याप्यममत्तसंयतस्यर्विशहुरयोभवति तत्र भंगाश्रतुश्चत्वारिशद्यिकंः शनं १४४ सत्तास्थानानिचत्वारितद्ययात्रिनवतिः द्विनवतिः पृत्रोननः यतिः अष्टाद्यीतिथसंप्रतिसंवेधउच्यते,अष्टाविशतिवंधकस्यद्वयोरपुः दयस्यानयोरे कैकंसत्तास्थानं अष्टाशीतिः, पृक्षोनिविशद्वंधकस्यापिद्रः योरप्पुदयस्थानयोरेकेकंसत्तास्थानंपुत्रोननवृतिः, निवाद्वंधकस्यापिद्वः योरप्पुरयस्थानयोरेकेकसत्तास्थानं द्विनवतिः, पुक्रविशत्येषकस्याः पिढपोरप्युदयस्यानयोर्दकैकंसत्तास्थानं त्रिनत्रतिः, यस्यहितीयं करमान हार र्रवासत्सनियमात्तद्ववाति वेनप्रकेहरियन्थेष् रहमेपसनास्थाः नंसर्वतंद्रयया नशै, संप्रत्यपूर्वकरणस्य व्यादीन्यु व्यते, पणगणाचाउनी जपतंत्ररणस्यपचत्रंबस्यानानि, तद्यवाअष्टाविशतिः पृशेनविशत . विश्वतूष्क्रिक्षेत्रातुष्क्रयत्रवाचानिचलारिअयमतसंयतस्य रदश्यानि प्रशेतपराः श्रीनीः माधरेवगतिवायीग्यावंधायर छोति शेवन या

विधारसारयन्थरपत्रीकाः. एकद्वरपरपानीवेंदार् अववजनस्थानास्यसंहननय्रसंस्पानसस्य इ.स्वरमसानविद्वाचीमानैः भंगाश्चत् विद्यातिः अन्येत्वाचार्यात्वत्वे आधारंहननवपान्यतपरंहननयुकाअस्प्रसम्भेजिपनिपरंजै, तन्य-वेनभंगाद्विसम्बिः, एउमनिश्तिगद्धस्य मगंपरायोपसांतयोहेन्वपिदः ष्ट्यं, प्रवासितास्यानानि, यथाद्विनत्तिः जिनत्तिः एक्रोननवः विरात्रचेचकामानिश्रहृदेवेस बार वानानि ववात्रमं अध्यासी तिरे हीनत-वातेः द्विनवनित्वनवतिभएरानियवगरमप्रिसादुरवे गनापंपितताः स्पानानिकयमितिचेतुच्यवेड्हअस्त्रान्तिकेशेननिकार्विकार्तः एकः निराद्वां थकाः मरपेकदेवनातिमाधीन्यवंशस्यक्छेदेसस्येकशियां यकाः भवंति, अध्यविशासादिवंचकानां चस्यानानिययाकममध्यासीत्यादी निसत्तास्थानानि, ततपुक्विचवंचे यत्वार्यपसप्तास्थानानिमाण्येते सं-

मत्यिनशृचिपादस्त्यनंथस्यानादीन्युच्यते ॥ ९७ ॥ ट्यार्पः—मिष्यात्त्र गुणटाणे नामक्तर्यना छ वंधयानकः नव उदयस्पानक, छ सत्ताना यानक पानीचे. सास्तादन ग्रुण-टाणे तीन बंदापानक, सात उदाप्यानक ए वे सत्ताना थानक गामीरे. निश्च ग्रणटाणे वे बंदयानक, तीन उद्दरयानक वे ताना थानक छे. समस्तित युग्याणे वीन वंदयानक, जाठ प्रथानक, ध्यार महाना यानक हो. देशविरति ग्रणटाणे ने यानक, च्यार उरम्यानक, च्यार सत्ताना पानक छे. प्रमत्ते न्यपानक, पांच उदयमानक, च्यार छत्ताना थानक छे. वर्षे च्यार वंघयानक, वे उर्ययानक, च्यार सत्ताना था-अपूर्वऋषे पांच बंचवानक, एक उद्देश्यानक च्यार सत्ता-

नामकर्मना नवमे ग्रुणटाणे॥ ९७॥

एगेगमष्ठएगेगमङ, छउमत्थकेवलिजिणाणं । एगेचउएगेचउ, अङ्घचउदुछक्षमुदयंसा ॥ ९८

टीका--एगेगमञ्जति । अनिवृत्तिवादरस्यएकंवयस्यानं कीर्तिः एकमुदयस्यानंत्रिंशत्, अध्येसत्तास्यानानि तद्यया वि वतिः द्विनवतिरेकोननवतिरध्यशीतिरशीतिरेकोनाशीतिः प प्ततिः पंचसप्ततिश्चतत्राद्यानिचत्वार्युपरामश्रेण्यांवाक्षपकश्रेण्यांवा वन्नामनयोदशकं नश्चीयवेत्रयोदशसुयधाक्रमंत्रिनवत्यादेः शीर्षे परितनानिचस्वारिसत्तास्यानानिर्वधोदयस्यानभेदेनभेदाभावात्ऽ नसंवेधोभवति इतिनाभिघीयते, मुश्मसंपरायस्यएकंदंधस्यानं म कीर्तिः एकमुद्रयस्थानंत्रिशन्अध्यासनास्थानानितानिवानिवि दरस्यैववेदितः यानि तत्राद्यानिचत्वार्युपश्चमश्चेण्यामेवउपरितनार्वि प्रसप्तभेण्यां छउमत्यकेविङिजिणाणं इत्यादि छद्मस्थजिना पशांतमोहाः क्षीणमोहाश्रकेविकिनाः सयोगिकेविकनोऽयोगिवे -विलनभतेषां यथाकममुदयसत्तास्थानानि ए गंचउ इत्यादि त^{त्रो} पर्शातमोहस्यएकमृदयस्थानं विशत्, चत्वारसत्तास्थानानि तद थात्रिनवतिः द्विनवतिः गुकोननवतिः अध्यक्षीतिध्रशीणकपाप स्पएकमुदयस्थानं त्रिंशत्अत्रभंगाश्रतुर्विशतिरेववजर्पभनाराचतंह ननयुक्तस्येवदापक्रभेण्यांसभवात् तत्रापितीर्थकरसत्कर्मणः क्षीणगी हरयसर्वस्थानादिमशस्तमिरयेकपुत्रभंगः चत्वारिसत्तास्यानानि तद्य याअञ्जीतिः एकोनाञ्जीतिः परसप्ततिः पंचतप्ततिः प्रकोनाञ्जीतिः पंचसप्ततिः, अवीर्थकरसत्कर्मणोवेदित्तव्ये, अशीतिः, परसप्ततिः। षीर्थकरसत्कर्मणः सयोगिकेचलिनोऽष्टाचुदयस्थानानि नद्यपार्विः शतिः, एकविंशतिः, षर्विंशतिः, सप्तविंशतिः, अप्याविंशतिः, धुवरेतावेदावः वेदावः धुवरं-राषः धृतान्तामानधारेनास्य ११४-જવાનો જ રાવાલાયાં અને તરાસાનન વર્ષો ક્ષિત પ્રતે જાણાં રાજા સાંગ मणभाभक्षात्रंतः, प्रस्कातंत्रः प्रश्लोनार्वादिः, यचमप्रतिः, स्वर्षेत्रः स्थे ५१७ वर्ते, संचप्रभेत्रणस्थानकाष्ट्रस्यास्त्रः अल्ला स्थ्यीविकातिः หรัฐขานเทส สุดเม หลุงเป็นสุดแบ่งที่แสกย์แล เมื่อ रियालकोनको य नार्थका अधीरवेषातनः परमनान्यानान नक्षमा व्यक्ति । एको नायो हिन प्राप्ता विकास प्राप्ता । त्रकाना हे संविक्तसम्बद्धानां स्थान एकोनार्यात्रः प्रथमप्रतिः क्रारीचनकार्यो,चार्वात्तवसम्बद्धाः साचन्यात्त्वते, चामगण्डेकारी-मर्वेद्वयेवीक्शास्त्रकातिः स्वयानद्वि प्रस्कृति नयप्रकान देशियादहरूलमभावयः अब धाममध्ये हायादि युगायानवे पुनाम-महाबार छत्तव वालेयवश्चनतात्रकेयवनकेतालिक क्षेत्रकारं वेप-प्रकारणाराधालोकेयाः तद्वरशुप्रभ्यानकेषुक्रीद्रमगणास्थान<u>स्य</u>-स्तान तर्थानमञ्जेजार्वप्रस्थाम तेतेषम् ॥ तथेरम् ॥स्टा

्यार्थ--- पृक्ष भवयानकः पृक्ष व्यवपानकः । तात सला-भाग कः दर्शन युवधान पृक्ष व्यवपानकः पृक्ष व्यवपानकः तात्र कर्ताधानकः वैः व्यवपानकः व्यवपानिः सामने प्रेपारितिकः संस्त्री प्राप्ययोः भवत्रभी प्रप्रायाणे दृद्धा वन नवीः द्राचानी युपाराकः पृक्ष व्यवपानकः भाग सलायानकः पानि युपारानि स्वार्थः पृक्ष विकासन्ति स्वार्थानकः विशेष युपारानि भाग वृद्धानि सामकः प्रयास सलायानकः विशेष युपारानि वे द्राप्यानकः वैः सामकः प्रयास सलायानकः विकास युपारानि वे द्राप्यानकः वैः

स्तिनास्तितानेदानेदाक्तव्यावक्तव्यपरिणतानां गुणपर्यापण्यपतिनैः तानां अपयार्थपरिज्ञानं जिनोक्ततस्यविरुद्धभाषणं भावपपा-वादः, आत्मनः स्वरूपप्रदणताशक्तिमतः स्वरूपाप्राप्रीपरभाव-महणतापरिणनिः अभिसंचित्रीयादिनामात्रादत्तादानं, तस्यवपाति बाहुल्येनपरंणलोभोदपानुस्यायर्ताः कृतानां चन्यवान्यादीनां वह वेदव्यान दत्तादानं, स्वरूपानंतज्ञानानंदादिस्तद्वर्मभोक्तः जीवस्यस्वरूपभोग-प्राप्तीपरभाषानांरागादीनांवर्णादीनांसंपोर्गाकृतानां भोगः आस्वादनं भावभैयुनं तस्येवअत्यंतपरिणतीङ्ग्द्रियायतचेतनायायावेपायेस्यपः रिणतिस्तमाइन्द्रियविषयग्रहणंद्रव्यमेयुनं, स्वभावानां विदानंदादीनां गुणानांस्वामीपतिः ईश्वरआत्मातेपांचायरणेनपर्णादेगुणपरिणताः नांपुद्रछस्कंशनांचिदानंदादीनांगुणानांस्वामित्त्वेनाधिपत्यरूपापरि-णतिः भावपरियहः, तत्प्रायल्येनधनधान्यादीनांस्वामिस्वरश्चणताः परिणतिः दृःयपरिग्रहः, इत्यादि स्वरूपंचर्यसंग्रहणीतोज्ञेयं योगाः परार्यत्तवस्वीर्यपरिणतिरूपाःकर्मग्रहणहेतवः भावयोगाः परिणामार्छः थनादिरूपाः दृश्ययोगास्तद्वष्टंभक्षुद्रत्वपरिणामामनोवाकायरूपाएवं सप्तदशकियाः पंचर्विशतयस्तत्रचतुरविशतिः सांपरायिश्चेक्रियाः सांपरायिकीनामसंपरायेणकजायेणसहपरिणतासांपरायिकीकिया ए काइयीपधिकीतवसंपरायेणकपायेणसहपरिणतानांजीवानांय गायी-गानां प्रवृत्तिः सासांपरायिकोकिया चतुर्विश्वतिःवयाकापेनीनरत्ताः कायिकाकायव्यापाररूपाकियाकायिकोकिया १ अधि तरणंभावती॰ ग्रुणवातनंद्रव्यतोत्राणवातन कारणंअधिकरणं नत्मश्तिकपाकियाः अधिकरणिकीकिया २ प्रकृष्टोद्वेवः परजीवेदः वदानरूपामनोयोग-परिणतिः माद्वेगिकीकिया ३ परेपांतापनरूपापरिणतिः पारिताप-निकी ४ प्राणानांद्रव्यभावरूपाणां अतिपातः प्राणातिपातः तद्र्पा-क्रियांप्राणातिपातिकी ५ परप्राणाचातेनजीवानांइतस्ततः प्रचारन-100

परावर्त्तनरूपाआरंभिकीकिया रागद्रेषपरिणाममुख्यन्वेनप्रमादाद-नुपयोगतः चापल्येनयाक्रियाभवनि साआरंभिकाकिया ॥६॥ उपक-रणानिधनधान्यदयः इतिराणिअं।दारिकादीनिकर्मयदाः सातादितद-भिरापरूपाअनेकोपायोपसर्जनसंस्भणहच्छामूच्छांदिरूपापरियहिकी-क्रिया ॥ ७ ॥ मायाप्रत्ययिकीति-मायाशस्त्रेनचतुर्णामपिकपायाः णांपरियद्वः ऋोधादिपरिणतोप्रश्चस्ययानीर्यप्रशत्तेः तथायाकियासा-मायाप्रत्यविक्यं भगवती इत्ते।तुमायाकाषट्यंतेननिर्इतामायाप्रत्यविकी अप्रशस्ताविषयकपायार्थप्रशस्त्राआचार्योपाव्यायादीनांउड्डाहादिगो-पनं ॥ ८ ॥ तथानिध्याद्रश्चेनप्रत्ययिक्षीनिध्यात्विपर्यस्तद्रश्चेत्र-र्तातिः तत्त्वार्थेथञ्चानटञ्जणासाविवया अमिगृहातानमिगृहीतसंश-यहीतं अनम्युपगतदेवतस्वगुरुतस्वधर्मनस्वरूपाणां संदिग्धनि-ध्यात्वप्रवयनोत्तमक्षरमर्थपदेवास्नोक्षमध्यश्रद्धानस्यभावतोभवति । तन्प्रवृत्तिकृरवेवनमनादिक्ष्पात्रातिमत्ताकियामिध्यात्विकीिक्षया, अ-प्रत्याख्यानकान्त्रिया प्रत्याख्यानआत्मधर्मत्राधकपरिणामप्रवृत्तित-द्देतुकुदेवादिधनस्वजनविषयादीनांत्यागः अकरणरूपापवृत्तिः न-प्रत्याख्यानंअप्रत्याख्यानंतेनअप्रत्याख्यानेननिर्वृत्ताअप्रत्याख्यान-कीकिया, दृष्टिर्दर्शनंअवहोकनंजीवाजीवादिवस्तृनांनृपनिर्याणमवेश-स्कंधाचारसंनिवेशनटनर्शनमञ्जनेपरूपयुद्धाद्यात्रोकनारसविषयाहण्डि-कीकिया देवकुरसभाप्रपोदकावरोकनरूपाकियारहिकीकिया. तथा॰ रपर्शनंतत्प्रत्ययाकियारपर्शनकीकियाहिधा-स्पृष्टिकीकियास्पृष्टिः जीवाजीवभेदात्, तत्रजीवस्पर्शिनीयोषित्पुरुपनपुंसकांगरपर्शन-रक्षणारागद्वेषमोद्यवनःजीवस्य अजीवस्पर्शनिवस्याम्गचर्नेकृतवन परशास्कतृत्युपध्यादिविषया स्पर्शनप्रत्ययात्रिया पाउँभीयति-प्रातीत्यक्रीकिया, 'भाजनादिप्रवीत्ययाक्रियातैस्यतादिभाजना-

नांअनादतानांजंतुघातादिनिवृत्ताकियापातीत्यकीकिया, अथवापर कृतारंभादिगृहाणांप्रशंसनंतत्प्रातीत्यकीक्रिया, सामंतोपनिपातिकी किया समंतातुअनुप्राप्तो सामंतोपनीपातः स्त्रीपुरुषनपुंसकपर्यसं पातान् उज्झनीयवस्तुत्यागः साचगृहस्थानांभवति, तत्त्वार्यग्रतीत प्रमत्तसंयतानां भक्तपानादिअनारत्तेअवश्यत्याज्येसमंतारद्वपाती भवति, संपातिमसस्वानामिति नेसरिथतिरेशीभाषा परहस्त कृतजंतुचातादिनाकिया नैसत्थिकािकिया अथवानेसर्गिककियापि रकालमृत्रचपरदर्शितपापार्थभावानां यद्वज्ञानंसानिसगैकियाइति त च्चार्थवृत्ती आणवणीति क्षेत्रांतरातुखेप्सतवस्तुआनयनरूपाक्रिया विदारगंजीवाजीवानां द्वेषी करणं नत्मापोग्यकीकिया अथवाविदारणंपराचरित प्रकाशनीयसावद्यपकाशीकरणं विदारणं-तरमरयपाकिया अथवा विनारणक्रियाङ्करपितःचार्यभाष्यपाठातुः भाषाद्रयामिज्ञः पुरुषोययेकंवितारयतिअर्हृत्यणीताज्ञोलेवनेनस्र-मनीपिकपाजीवादिपदार्थेशरूपणस्वयंनयनकिया अन्येवीनयनंशव्छं-दतीनपनिक्रयास्याद्वादानपेक्षितकायकारणोपयोगमंतरेणसञ्ज्दोप-देशरूपाड्तिस्थानांगवृत्ती अनाभोगः अज्ञानं तत्परययाकिया अथवा अनाभोगः अपरयवेक्षिताप्रमाजितेदेशेशरीरोपकरणनिश्रेपः अनवकांक्षिकीकिया, आज्ञाप्रयोगिकीकिया आज्ञावलान्कारेणआ-देशः तत्प्रयुंजनारूपानृपामात्यादीनांभवति, सम्दाणि समुदाप रूपाचीरादिमारणेझटितितदास्वकार्यां बैनजामङ्ख्यादिसंक्रहरयोत्था-सामुदाविकांऋिया, पेझत्तिवेमसगः अभिष्यगरूपः मीतिपरिणामः रनत्प्रत्यपात्रेमिकिया, दोसति द्वेषः द्विष्टनाअनमिष्यंगरूपोऽप्रोधिः परिणामः तत्त्रस्ययिकीकियाद्विषुत्रमेता किया सांपरावेण ध्याः वेगमहवर्त्तमानस्यजीवस्यव्यापारस्याः विद्याः वाजपिषशानायः इस्तनेदात् नत्रसिय्यात्वात्रत्याख्यानानानोगस्याःक्रियाः अपन

स्ताअवरोपास्तुप्रशस्ताःपुष्पववकारिष्योऽप्रशस्ताः पापवंचकारिण्यः उभयवापिकंथकार गत्वातः आस्त्रवरूपाएवेतिताअपितीव मंद्रज्ञाता-ज्ञातभावनीर्याधिकरणकारणविशेषेस्युस्तदिशेषः उक्तः, सांपरा-यिक्रोमेदाश्चतुर्विशतिः, ईर्यापथिकोच ईर्गकंपनंचलवीर्यस्वेनविप-यक्षापरहितएककः योगन्यापारस्तत्वत्ययिकीकिया प्रदेशप्रकृति-बंधकारणरूपाइयांपधिकांकिया साअकपायमुनीनामेव, उपशांतमी-हक्षीणमोहसयोगिकेविटचरमसमयंगावत् भवति, एवमुक्ताआस्न-वभेदाः तान्चगुणस्थानेषुविभजन्नाह ॥ आसवतिसङ्ख्यादि ९९॥ आस्त्रवाअभिनव कर्मबहणहेतवः तिस इतिनिष्ठमिण्यात्वसास्वादन-मिश्रवक्षणेषुगुणेषु इगचता एकचचारिंशद्रेदाः प्राप्यंते तत्रमि-ध्रदृष्ट्रीमिध्यात्वभावेषिसम्यगृदर्शनाभागात्मिध्यात्विकाऋियासद्भाव-एपउक्तंचभगवत्यां नैरिययाणंभंतेसबेसमिकिरिया गो॰ नोतिणहे-समृद्देसेकेणहेणंगी ः नेर्द्धआतिविहापन्नतासम्मदिहीमिच्छादिहीः सम्माभिच्छादिष्टी तत्यणं जेवेसम्मदिद्दीवेसिणंचत्तारिकियाओपन्न-त्ताओ तंआरंभियापरिग्गहियामायावत्तिआपघरकाणीया तत्यणं जे वे मिच्छादिष्टीतेसिणंपंधिकरियाओपवृताओ तंआरंमिया परि-गाहिया जावमिच्छादंसणवत्तीआ एवंसम्मासिच्छदिष्टीणंपिअँव-मानिकपर्यतं युनाटापकड्तितेनमिश्रगुणस्थानकेपिभिष्यात्विकीकिया सद्भावः एवं एकघन्वास्थिदेवाः इरियावहिहीणं ईर्यापधिकाँकिया हीनाचे रहितालम्यते चत्तद्विचन्त्रारिशतुआस्त्रत्रभेदाः सम्मतेद्वित सम्पग्दरीनटक्षणेगुणस्थानके पूर्वीक्ताइयांपियकीकिया मिथ्या-चिकांकियांविनाभगति, देखि देशविस्ती गुणचत्त एकोनचस्वा-रिंग्रहेदाः अप्रत्याख्यानिकीकियारहिताजास्रवाणामिति अग्वसा-विरितरेवनास्ति शेषाणुकादर्शावरतयः संत्येवतर्हिकयंसर्वअविरते-रभातः अत्रस्थात्ररादिअत्रिरातिसद्भावेषिसापेश्चरचेनतत्ररोहपद्रशृति-

र्सेनिमंड्न्ट्रियविषयसेवच्चेननाप्रत्याख्यानकीक्रियाड्ति अथवा परि-मिताश्रवच्चेननाषत्याख्यानकोड्ति सुबद्दित सुद्दित शोभनः यदिः स्यतिः प्रमत्त्वपनिः ग्रणस्याने पंचवित्राह्मत्रभेदाभवंति ॥९९॥

ट्याय:—आअवतत्वना ४२ मेर छे. इत्दिष ५ कपाप ४. अरत ५ योग ३ किरिया २५ एवं ४२ छे. इनम्बं भिष्पात्व सारवादन मिश्र ए तीन गुणटाणे इक्ताजीस आश्चर छे, इरियावही किया नयी, ते अक्ताय वेहवे तेणे सक्तायी यानके ए नयी. समक्रित गुणटाणे व्याजीस आश्चर छे. एक इरियावही किरिया नीवर्ळी हती. वर्ळी सिथ्यात्वकी किरिया

नीक्ष्ण पुनले च्याजीत छे. देशदिशत गुणशणे ब्याजीत जा-ध्रा छे. अपचरकाणकी किरिया नवी. गुयनि-छडे गुणशणे पद्मीम आध्रव छे.॥ ९९॥ पाणाइबायपरिग्मह, मिच्छअपचरकआणपाओगी।

पाणाइयायपारगाह,।मध्छअपचरकआणपाआगा। पांडुचीअसामंतो, वणीअनेसत्थीसाहरथी ॥१००॥

टास्या-प्राणातिपातिक्राक्षिया १ परिवादिक्षितिया २ मि-भ्योत्यक्रिक्या ३ अवत्यारुपानिक्षित्या आज्ञान्यपेषिक्षित्य भारत्योक्षिया प्रातित्यक्षिया मार्चनोपनिपातिक्षित्या नेसःयीक्ष्या स्टर-वीक्ष्या ॥१००॥

स्वार्थः—प्राणातिपानकी किया १ पारप्रकृति किया १ निष्यत्वकी किया ३ अपनारकाणकी किया ४ अपनार्थाणकी

क्रिया १ पार्ट्याच क्रिया ६ सामनोत्त्रण क्रिया ७ नेक्स्पी रिका ६ साहरणको क्रिया ॥१००॥ आणवणीसमुदाणी, इरियावहीणअवयविहिणा । अन्नेइंदीयहीणा, वीसंछट्ठेग्रुणठाणे ॥१०१॥

अझं इंदीयहोणा, बोसिस्ट्ठेगुणठाणं ॥१०१॥ दीका—आणवर्णां आणवर्णाक्रिया सामुरायिकाक्रिया इंपोपियकाक्रिया तपाअवतपंपविद्वानारोणः पंपर्विशतिरास्त्रवभेदाः मनतेमाप्यते वेपेमेड्रियाणिपंपक्षपयाध्यवारः योगास्त्रपः

प्रमत्तामान्यतः तप्यस्त्रियाणप्यक्तवायाक्ष्यताः यागास्यः। हित्याद्वयोददारादंपप्यविद्यातः अयवाक्ष्यः। व्यावार्षाः। प्रवृद्धियद्वाना-वीत्तनार्याद्वातिः आहवा-प्रयृप्यक्यानकेटम्यते, आवयर्षयायद्वाना-नाषिकारिणः आत्मोपयोगस्यविषयासक्तव्यनस्वकर्णकत्त्वपरिणामात्-द्वांद्वपर्श्वतिविषयप्रहणेनापिनविषयिकत्तातेनद्वंद्वियाक्षयत्वाभावः?०१ ट्वार्थः—आणवणि क्रिया १० समुदायिकी क्रिया ११

इरिपावडीकी क्रिया १२ ए बार क्रिया हीण कहेतां काडीये ए पांच अत्रत काडीये तेवारे पंचर्वात छे, अने कोईक आचार्य कहे पांच इंदिय पण काडीये तो बीसयेद आअवना छे, छटे ग्रुणगणे छे इहां हरिभद्रनी प्याल्याये किटलिक मस्तनी छती माने छे ते चुन्य मकृति बांचे इंच क्युं छे ॥१०१॥ आरंभहीणसत्तिम्म, मायाविचीविहीणअङ्गयमे ।

शास्त्रहाणस्त्रमम्, नायावचावहाणअडनयम् दोस्तविद्दीणादसमे, सेसेड्रियावद्दीयेगः ॥१०२॥ .टीका—आरंभद्यण्डत्यादिसत्ताम् सप्तेयुणस्पानेआरंभिक्री

. टीका — आरंभडीण्डरचादिसत्तिम् सस्येग्रणस्थाने आरंभिक्षी-क्रियाद्वीनापुकोनाविद्यादिसस्येभेदाः अप्रयोगाच्ये, तपाष्ट्रमेन-वर्गुणस्यानेमायाप्रयोगकितियाः विद्वीनाविरद्विताअस्याभेदाः आस्त्रवाणांभप्येवे, तथमतातेभाषाकस्यावेद्येषावद्मापाप्रस्यिक्षेः निरात्तिधाननिविद्यादिताः दस्योगकस्या परायेनवआस्त्रवाः प्राप्यते, इत्यनेनस्रोभक्षपायपोगित्रककायिकीदिः कीरपृष्टिकीअनाभोयिकीराग्प्रत्ययिकीइतिनवास्त्रवभेदाद्शमेपाप्यत्ये दोसिविद्याणिते द्वेपाभावकथनेनअधिकरणप्रोद्वेषिकीपारितापनिकाम् सुरताः सर्वोअपिक्रियानिरस्ताभवति, शेपेउपशांतमोह्झीणमोह्सयो पिकेविट्टस्पेगुणस्थानिविकेद्वर्षाप्यक्षिक्रिया १ योगित्रकंप्रप्ते

चत्वारआस्त्रवभेदाः प्राप्यंते, अयोगीनिराश्रवद्दतिश्रीप्रज्ञापनायांटो-भस्परागांदात्वात् रागिकीकिषाददामेप्राप्यते, द्दतिउक्ताआस्त्रवभेदाः ॥ १०२ ॥ टयार्थः—ते मत्येयी आरंभकी क्रिया द्वीण करीये वैदारे

द्वेप मरपयिकी किया नथी, छोभ ते मुख्यरते समर्मा गण्यो छे, पत्रयणानी टीका मध्ये होए इग्यारमे बारमे तेरमे ग्रणदाणे एक इरियायहीकी किया रूप एक आश्रय योग छे, पकरमे ग्रणदाणे आश्रयतम्बनो भेर नथी ॥१०२॥

सातमे राणटाणे ओगणीत आश्रव छे, माया प्रत्यविकी किपा विना आटमे नवमे राणटाणे अदार आश्रव छे, दशमे राणटाणे

अज्ञयदुगियारभावण, दुपमत्तेपंचवक्षअदुचरणा । चउपक्षापुटवदुगे, तेवक्षाखीणमोहंजा ॥१०३॥

द्धिः—अयसं सन्तिन्तृणस्यानेषु प्रवधासह तमसस्मेदाः सस् पंचारान् न्त्रक्षपृष्टीत्तः आवतः भारतेषः सच हराचिन् केनियन् अ रचनमृष्टि वर्तेऽपिषुमासमाससादितन्तुः ध्वेदसावनारपति स्थापमापः षुत्रे तमपृष्टि वर्तेऽपिषुमासमाससादितन्तुः ध्वेदसावनारपति स्थापमापः षुत्रे तमपृष्टि वर्तेऽपिष्टि सम्बाद्धिक देशस्यनपतीनि संस्पेतिस् स्पर्तिः म

मिन रहर्नेनि नपनि प्रारणायनंत्रमे उना हन्नः पाप आस्त्रवनिरोधः स्टब्स् आन्युक्तेममहो दवैषः स्टब्सेन् ह्यमिति आस्त्राः स्टब्सेनान वेशसियसः इद्रिक्सपायास्यः तेपानिभेषः संदर्भः आस्मनः स्टब्सिपारागरेनुसन् परिणामाभावः संवरः सचमर्वदेशानुद्धिया वादरमुक्ष्मयोगगेयकाले-सर्वसंबरः शेपकाञ्चेचरणप्रतिपंचगम्म्यदेशमंबरः गसंबरः कंनीपायेन नक्र्यः इत्युपायदर्शनार्थनच्यार्थोक्तंत्रत्रं समृतिसमितित्रमात्रेपद्मान परीपहजयचारियेः त्रिपंचरशहारशहाविशतिभेदर्वयाकमसमपं-पासन्भवंति, तत्रसम्यग्पशमनमुमक्षीर्योगनिग्रहोग्रक्षः, आत्मसं-रभणंयोगाः मनोवाद्धायरक्षणा ग्नेपानियहो निग्रहीति प्रवचन-विधिनामार्थः वयस्यापनं उन्मार्गसमननियारणंसर यगुः असमी नहानुमा-रेणस्कृद्विष्टपरिणनिसहर्यारग्यो मनीबाद्धायभ्यापारनिग्योपारनागृति त्रिप्रकारा मनः अञ्चयस्यस्यययोपनं मनोगृप्तिः, वाकगन्यादिः भेदातस्यगोपनं प्रागृप्तिः, कायः चलना रूपयोगस्य जीदारिकादेः गो॰ पनकायगृप्तिः, दोगानामप्रगति अववससस्य वैद्यानोपिसंगर-विध्ययंगिमाः पंचईर्षाभाषणादाननिद्येपोत्सर्गाः समितपः तप्रई-रणेईपोगतिपरियामः आवश्य हार्यआमधोदिने विहारजिनगञ्जञाः हारोगो वर्राविहान-अंडिल्यंबामानमगमनचद्वस्यादिवर्त्रयं आगमी-क्तविधिनारागंद्रेया इन्द्रनादिसंतरंफतिः समनारराध्यक्षेनगमनईर्धार-मितिः, आहच उपयोगोधोनाटयनमार्गायगुद्धिवर्षतेध्यन स्वो-दितेनाविधनाभवनीर्यासमितिस्तवदाः १ अध्यनेपसमितिमादस्या-मुक्तारकं मुख्यसना प्रादिनस्यनी निबद्धमयो जनमा बसाय है। सि सम्रोन दिग्यं स्मी क्तमर्थ वर्णमनिष्का यानसहै हा व्यासनिस्य यार्थ मनुष्यान सम् ण्यांजी रकायानां पूर्वा रचनियमितचस रहेरानायणं नापासनिति , जान हपायस्यानृतादिदोषंसत्यभसन्यानृतप्तनिरवयं स्वाद्धायपित्रदेशी भाषासमितिभैवतिसायीः ॥ १ ॥ धार्यपणाबाहः आहारवनुर्वे-दउपररणानिस्त्रोहरणमुख्यसन्वयाधीक्षयदादिष्युः दापसार्थास्य-विसारपनिनारमयोग्येपधि जैतरादिनामनुनयमंदरपारमेताय-नार्यपात्राणियननायाहास्यहृदार्थं वृश्वनस्याध्यादाविनियेषद्धयौ-

प्रापेनचआस्त्रवाः प्राप्येते, इत्यनेनत्येभक्ष्णाययोगितिकःहाविकीर्टीः कीरपृष्टिकीअनाभीविकीसम्प्रत्यायेकांड्तिनवास्त्रवेताक्ष्रानेप्राप्योगि

दोसिविद्यांगाति द्वेषाभाव कथनंन अधि क्रणमदिष क्रांगारितापनिकाप-सुखाः सर्वा अपिर्वक्रपानिग्स्ताभुवति, जेथेउपराग्निमोद्धसांगमोहस्यो-गिफेविट्टस्लेण्युणस्थानिग्केद्वयांग्यिक्काक्तिया १ योगिक्कंयपूर्व-पस्वारआस्त्रवमेदाः प्राप्यंते, अपोगीनिराक्षयद्वतिश्रीप्रज्ञापनायांडी-भस्परागादात्वात् रागिकांक्रियाददासेप्राप्यते, इतिउक्ताआस्त्रवमेदाः

॥ १०२ ॥ = ट्यार्थः—ते मल्येया आरंभका क्रिया हाण करीये देवारे

ट्याय:— त मन्यया आरभका क्रिया होण कराय द्यार सातमे ग्रुणटाणे ओगणीस आश्रव छे, माया प्रत्ययिको क्रिया विना आटमे नवमे ग्रुणटाणे अद्यार आश्रव छे, दशमे ग्रुणटाणे द्वेप प्रत्ययिकी क्रिया नयी, छोभ ते ग्रुरूयवृत्ते रागमां गण्यो

हुत निर्माणी दीका मध्ये होष इत्यासे बास्मे वेसे ग्रणहाणे ऐक इरियावहीकी क्रिया रूप एक आथव योग छै, पजरमे एक इरियावहीकी क्रिया रूप एक आथव योग छै, पजरमे

अज्ञयदुगिवारभावण, दुपमत्तेपंचवन्नअदुचरणा । चउपन्नापुठवदुगे, तेवन्नाखीणमोहंजा ॥१०३॥

पंचारात्,तत्रअपंपूर्वोक्तः आश्वः पौरुपेयः सचकदाचित् केनचित् अ रपंतम्रिन्छ्यतेऽपिपुंसासमाससादिततङ्ग्छेदसाथनारपंतिकेद्ययमापः यथे त्यपूर्वोपाजितक्रमंत्रज्ञार्थनिन्छेदायतपसीनिर्वारचेतिकस्यति, अ सिनवक्रमेंपचयनिवारणायसंवरमेवताबद्धश्याम आस्त्रविनीयेः संवरः आद्यप्तेसमादीयवेयैः कथोष्टर्शिति)आङ्गाः कर्मणाप्रवेशविषयः इदियक्तपायाद्यः वेषांनिरीयः संवरः आस्यः कर्मणाप्रवेशविष्यः

टीका-अयसंवरभेदान्युणस्थानेषुकथयबाह् तत्रसंवरभेदाः स**स**र

परिणामाभावः संवरः सचसर्वदेशान्द्विधा बादरम्इनयोगरोचकाळे-सर्वसंवरः शेपकाञ्चेचरणप्रतिपचेतरम्यदेशसंवरः ससंवरः केनोपाये-नक्तंत्यः इत्युपायदर्शनार्थतत्त्वार्योक्तस्त्रतं संग्रुप्तिसमितियर्गानुप्रेक्षा-प्रीषहजयचारित्रेः त्रिपंचदशद्वादशद्वाविंशतिभेदेर्ययाकमंसप्तपं-चारानुभवति, तत्रसम्यग्प्रशस्तम्मक्षोर्योगनियहोगुःहिः, आत्मसं-रभ्रणंपोगाः मनोवादायसभाषा स्तेषांनियहो निगृहीतिः पवचन-विधिनामार्गरपवस्थापनेउन्मार्गगमननिवारणंसम्यम् आगमोस्तार्वसा-रेणरक्ताद्वेष्टपरिणनिसहचरिरकोः मनोबाद्धायव्यापारनिव्यापारतागुप्तिः त्रिप्रकारा मनः संकल्परूपस्नस्यगोपनं मनोगृप्तिः, वाक्तत्यादि-नेदातस्यगोपनंत्रान्याप्तिः, कायः चटतारूपयोगस्यऔदारिकादेः गौ-प्नकापगुप्तिः, योगानानपन्तिः अयश्यंतरतः चेष्टावतोपितंत्रसः सिष्ययैमिमाः पंचईर्याभाषणादाननिक्षेपोत्सर्गाः समितपः तत्रई-रणंड्रेपांगतिपरिणामः आवश्यकार्यआगमोदिते विहारेजिनसङ्गान हारोगो वरीविहान थंडिल्यवामानुमगमनं चड्रपादिकार्यः आगनी-क्तविधिनारागंद्रपात्र लनादिभेनरणनिः संगतासाध्यक्षेनगमन्द्रपास-मितिः, आहच उपयोगीयोनारंशनमार्गविद्यदिनिरंवेधानः सूत्रो-दिवेनविधिनाभवतीर्यासमितिरनवद्या १ आत्मनेपरस्यहितनाक्यः मुपकारकेमुखयसनावाहितस्पनीतिबहुमयोजनमावसायक स्वितनके दिग्यंमुत्रोक्तमयंवर्णमतिपचावानसंदेहकानित्वदार्यनवुप्रातकंव ष्णांजीवकायानां एवंवियनियमितचसक्रेवेवभावयं काक्रलाविती स्तार हचत्पास्त्वान्तादिदोषंसत्यमसन्वान्तंचनिस्तवं वृत्रद्विवेत्रस्त्वे भाषासमितिभवतिसायोः ॥'१॥ जन्मस्ताह व्यह्मस्तुमे दंउपकरणानिरजोष्टरणमुख्यस्त्रमध्येचोटग्रुव्देच्युन्सन्द्रमानिस्थ-विरतत्पिजनक्ष्ययोग्योपिषः श्रीपृष्टदेवस्यंभृतद्वनंबरसंबर्गताथः नार्यपात्राणियतनायाहासम्हणार्य एररंगुत्तान्याम् दिनिनिचंदाः 293

त्पादनैषणादोषरहितंआगमोक्तिविधनाव्रमांगारादिदोपरहिताएषणा-गवेपणासमितिः, यथपिनिर्यथानाहारार्थिनस्तथापिवाचनादिकरणे-प्युपयोगन्याचातकख्रतशीतादिमारोक्यहिदिदोपरहितंअशनः अ व्यापकः असंगांतः असक्ततपाआहारादिकरोति तद्ववेषणास-मितिः, तथादाननिक्षेपणासमितिगाह रजोहरणादिचतुर्रशोपक्तः णानांपीटफलकशप्पादीनांआदानंबहणंनिक्षेपणंसंचनं । तम्रजी-वादिरहितमन्यस्यादिष्टतयाकरणंत्रमाज्यं आरानंनिक्षेपः कर्तन्यः इत्पादाननिक्षेपणासमितिः, पारिष्टापनिकासमितिमाह स्पंडिनं उज्ज्ञिनस्यवस्तुपरिशपनक्षेत्रं तवस्यावरजंगमजंतुवर्जितंवशुपानिरीः श्यउपयुक्तः पुद्रवेषुअद्वेषतो दोषाभावतः वाधकप्रवारणाप वस्त्रपात्राहारक्षिण्यमछादीनांउत्सर्गः परिशयनासमितिः इतिपंपस मितपः, संवरार्थमात्मनाधायेवेइतिधर्मःसचर्माविधस्तर माधान्येनः निर्प्रपानांतेन मुनिधमेंदिशतः आयकाणामपिश्तमादिवदितांपरेति श्चमणंश्चमाक्रीघलागः १ वन्त्रवः । वन्त्रवः । वन्त्रवः परिणामस्याश्चमाः । ३०००, ६४० हो हो हो हो हो हो हो है। रपद्दिन्तरामा नहिक्रीधीममस्त्रभावः नाहंक्रीधस्यकतांद्रत्यादिशा वनायास्तः • तिः अस्युः चार्याः । उत्तरेकश्चितपरिणामोगं रहपस्तविषयेगोऽनुस्ते तः अस्मासासस्य भावः विशिष्टमातिक्रछसेपदः क्याबिरेनसंपर्धते, क्याबिद्धीनाः स्ततोनगर्वपरिणामः मदनिव्रहोमानविचातश्चेरपर्यः, जारमादिशंसर् मनि औरविक्रेय्यपंदिकंक्षणभेगांतेकत्य होमरः, अद्वस्तिमंतानंरः स्त्रभावः असीमानद्याः ।

मदादिमन् **धर्षे इ**त्यादिकात्म क्षण्य । तुमायप्रयागः आर्ववसूत्रनावदृष्ययैः यायाशपदा

रृ.तिः साचपरकीयवस्तुब्रहृणार्थेभवति परवस्तुब्रहणंच ममनसंयु-ज्यवे नाहंपरभोर्गातेनमायांकः करोति अतोमायात्याग आर्जवंमम-धर्मद्दति ३ अलोभ शोचलक्षणंटोभस्तुभावतः परमार्वतोऽमिष्वंगः चेतनाचेतनमिश्रवस्तुविषयः टोभदोषाधक्रोधमानमायाहिसानृतस्ते पानप्रपरिप्रहार्जनमळजाछेनोपचीयमानः आत्माभवति अशुचिः वैनभावविद्यद्धः ममत्वाभावो निःसंगता अपस्त्रोहणात्माऽर्थानुष्टा-नेनि:कल्मपतानिर्मेलताभावसाधनमात्ररजोहरणादिपविगतपूर्वःसुनिः शुचिः तेनपृतंशीचं अपरनाममृतिदृत्यादि ४ विषमानेअर्थेभवं-सत्यंसंतोजीवादिपदार्थाः वेनहितंअनेकांतनयप्रमाणसप्तभंगेनिक्षे श्रुताम्यासपूर्वकं अविसंवादि अहं च्छासना तुगतं ज्ञानं सत्यंतद्वपयुक्तंत्राज्यमपिसत्यंतदात्मनः धर्मः आत्माहियथार्थोपयो-गीयधार्थीपपोषिनोममधर्मीययोपयोगिताएवसत्यं तदतुगतंअपरुषं-असंगातंरागद्वेपविश्वक्तंत्र्योतुः धर्ममापकंद्रव्यभावाहिंसामृष्ठेवाक्यं तद्रपिधर्मः ॥ ५ ॥ असमंजसयोगनिष्रहः संयमः सचसप्तदशविधः स्थावरपंचनसचतुष्काचायकरूपः योगनयगुणसंरक्षणनवर्त्तनवंथान्त-यायिप्रवृत्तिनारणरूपः योगसंयमः प्रेक्ष्यचशुपाद्यास्यंडिलादित्वक् प्रवृत्तादिकरणेमेशासंयमः यत औदयिकभाववास्यादिप्रहस्यातप्र-हर्णतर्अपेक्षजीदासीन्यंभजतः अपेक्षासंययोभवति अपहृत्यपरि-वर्षं उपकरणादीनां राधवं कुर्वेतः संपमी भवति तदपहरपसंपमः भक्तपानाद्यर्पपियगच्छतः सवित्तरजोत्ररजितचरणस्यस्थंडिहात्-प्रमार्जनसंयमः उपकरणसंयमः अथवाज-जीवकायसंयमः अञ्जानकायानां पुस्तकादीनां अन्यतरे पुरागद्वेपरूप परिणामत्यागअजीवकायसंयमः इतिसप्तदशविवसंयमआत्मनः धर्मो-भवति यतः परभावात्रयायिमवर्चनंअधर्मः तत्परित्यागोधर्मः इति-संयमन्याख्यातः तपोचर्भः तत्रतपतितापयतिङ्गितपः तपतिङ्गित-

25

स्वयंउद्विज्ञोभवतिसंयोगजसुखात् तापयतिआत्मप्रदेशेस्थितान् क मदिखेकानितितपः शरीरिदियतापात् कमेदहनाञ्चतपः भावतअनंत-ज्ञानानंदादितत्त्वेस्वस्वरूपेभोगतोआनंदेनस्वरूपेकार्र्यसंवरतपः पर-भावत्यागः परभावानमिटायस्तत्तंकोचादि ह्रपंनिर्जरातपः तबद्वाद-शविधं बाह्याम्यांतरभेदाततचनिर्जराधिकारतोज्ञेयत्यागस्वरूपंतुआ-रमनः शरीरोपध्याहारोपाश्रयादिषुअमिर्ध्यगहेतुमृतंआत्मनः परभा-वातुगत्वरूपोभावदोषः तस्पत्यागपरिणामः आत्मनः धर्मोभवति आक्रिचन्यंतुस्वात्मनः सत्तारूपंस्पाद्वादपरिणतिपरिपाट्यास्पात् अ-स्तिपश्चगृहीतात्मभावस्यआत्मत्वेनोपादेयतयाकृत्वाहोषंस्यानास्तिता पश्चमूतंपरव्यूहं तत्रनिर्ममत्वंआर्किचन्यंगत्मदीयसत्तातोअन्यत्-

नाहुं अहंतुस्वस्यभावगुणपर्यायवान् चिदानंदस्वरूपस्यकर्ताभोक्तावि **छसितान्यमात्रानांरागद्वेपादीनांअभोक्ताअतस्तद्वायकत्वमवेश्य** । तत्रनिर्ममत्वेआर्किचन्यं ॥ ९ ॥ त्रज्ञचर्यस्वरूपंतुष्टंहत्वादात्मात्रज्ञ-तत्रावृत्तिः आत्मनिउपयोगरमणभोगतयावर्त्तनमञ्जूचयमञ्जाणआत्मः निचरणं एकीभावेनअवस्थानं त्रहाचर्यतद्वक्षणाय परभावाभोगाः त्मकंभावमैधुनं स्त्रीशरीरस्पर्शादिङ्यमैधुनंत्याज्यं आत्मस्वरूपेकं॰

त्वरूपन्रक्षचर्यरूपदर्शकरणार्थे गुरुकुलवासेवसितव्यं गुरुगुद्वात्मः तच्चत्तापकात्मतच्चरमणता संरक्षणकोपयोगदाता स्वयमपिस्वतच्च॰ विटासी न पुद्रलाशी ग्ररु स्तस्यांतेत्रासित्वं परमात्मतत्त्वप्राग्भावः हेतुत्वात् यःवज्जावंसेव्यं आचार्योपाच्यायादोनांसंसर्गः तत्त्वोप-पदेशकारणमितिबद्धाचर्यस्थैर्यार्थस्त्रीसंसक्तवसत्यादित्यागरूपाभावना श्रीउत्तराध्ययनोक्ताः अयंतिनियंथाः एवंविधंबद्धचर्यआत्मधर्मएवं-व्याख्यातं दश्चविघोयतिघर्मे स्तद्दृहढीकरणार्थभावनाभावनीया ताश्च-द्भादशअनित्याअशरणाद्या इतितत्रसर्वसंयोगाअनित्याः संयोगोवि॰ योगयुक्तपुवअनस्तन कोसगङ्ख्यादिअवपेक्षाअशरणोऽपं आत्मा-

१९४

संसारेनहिधनस्यजनाद्योस्वात्मगुणस्थकाः शरणेस्वरूपरुचिपरि-णवेः । स्वरूपज्ञातास्वरूपरमणीआत्माप्वनिमित्तास्तुअर्हतृसिद्धा-चार्पादिनिर्विथाः यगारं यजारमास्त्ररूपविधामी भवति अत्यंतानंदन भोगीभवति एवजन्यादितः समुद्दमूर्वेन दुःखेनाठाउरपजन्यवतः शरणंनास्ति इत्याटोचयतः सर्वदाह्मशरणं इतिनित्यमेवमीतस्य-सांसारिकेषुभावेषुमनुजसुरसुखेषु हस्त्यश्वादिषुहिरण्यसुवर्णादिषु-चनासिष्वंगोनमंगितर्भवति विद्यपरमर्थिमणीतशासनामिहितएव-विधोज्ञानाचनरणादिषुमनर्ततेभानार्यः अहंममशरणंनान्येआत्मार्योः पासनेनममग्ररवंडतिसंसारेसंसरतः अनंतपहरूपरावर्तपरिवर्तनेन-पातस्यममकाकावस्थानप्राप्ताः व्यवहारराक्षिपाप्तानंतकालस्य केन-सहनसंबंधः कृतइति अवसंसरतोनगुखं ग्रुखंतुममस्बद्धपोपयो• गकत्वपरिणमनेनएकतात्रमेशाएकएव।हंनाहं परसंगी वीतराग-द्वेपस्वभावस्थमम कः संगी ॥ ४ ॥ अन्यस्वभावनात्तसर्वमपि-धर्मास्तिकायादिअजीवद्रध्यसमृहमत्तोअन्यजीवाः । सर्वेमतोभि-ब्राइतिअञ्चिभावनातुसर्वेषिपद्रताः प्रकेतेनजीयेनअनंतवारंजः-पर्वास्तेनारयंतद्यपयः तनस्तन्त्रेनाहमपित्वंस्य १ शुचिअतः अद्य-वित्यक्तवागुनिकपोचिद्वपेशमगमिति ६ आस्त्रवभावनामिध्याः त्वाविरतिकपाययोगाः आस्त्रवास्तेषस्याज्याः नाहंआस्त्रवस्यकर्षा माप्याखवीनमस्वभाग्रहति ज्ञानदर्शनचः रिवरूपोपरिणानः संवरः संप्रधममधर्मः सप्रीचाहं इतिनिर्जसपूर्वेबद्धकर्मस्ययरूपानिर्जन रास्वरूपमुच्यवे नमभग्रहीतामिनवक्रमेणः तन् सपणायकरणाय इति स्रोक्तरमावाधसाद्योक्तपर्यंनाअजावादक्तययेनानंतवार्युता-अतो टोकपरिभूमणेनम्मधर्मा मदीयही कह्यातं रूपे पमरेशानंतज्ञानपार-णतिपरिणामः तश्ययथार्थात्पाद्य्ययञीय्यतंकासहकारसहज्ञश्त्या-भवनहोकः सप्यमधर्महाति ॥ १० ॥ बोधिसम्परत्यपा

येमतीतिरूपंतत्त्वश्रद्धासायदुर्जमा सम्भद्द्धस्सामित्तंस्रम्भद्दश्वस्त णनसंदेहो दृकोनवरिनस्मद्र जिणंदवरदेसिओयम्मो ।१। वर्मे आत्मस्यभावरूपस्तत्तारणरूपयमः श्रुतवारिनरूपंतरसायकानि येपादयोतत्रहाँ योग्यदेशिवरतादयोभावः वर्षेणप्रमादेशेम इतिहारश्चासाय आत्मयमेसायनकारणर्वाव् यमेरूपाः संवर्षमृत्वद्विसंप्रति परिपद्वस्त्रस्यामः प्रतिजानीतेषार्गेश्रच्याः परिपद्वस्त्रस्यामः प्रतिजानीतेषार्गेश्रच्याः परिपद्वस्त्रस्यामः प्रतिजानीतेषार्गेश्रच्याः परिपद्वस्त्रस्यामः प्रतिजानीतेषार्गिर्मेश्रच्याः परिपद्वस्त्रस्यामः स्तिजानीतेषार्गिर्मेश्रच्याः परिपद्वस्त्रस्याम् वर्षम्यत्रस्यानाः तेषुश्रनाकुरुर्वेनतागद्वेपरिवर्वक्षयोज्ञयः स्वयंत्रस्य वेष्ट्यस्ति वर्षाः स्त्रमंत्रस्य वर्षाः वर्षाः यायनंश्रस्य स्त्रस्य स्त्रस्य स्तर्भावस्त्रस्य स्त्रस्य स्तर्भवस्य स्त्रस्य स्त्रस्य स्त्रस्य स्तर्भवस्य स्तर्भवस्य स्तर्भवस्य स्तर्भवस्य स्तरस्य स्तरस्य स्तर्भवस्य स्तर्भवस्य स्तर्भवस्य स्तर्भवस्य स्तरस्य स्तर्भवस्य स्तरस्य स्तर

अपनास्तरः पञ्चानभागात्रास्त्रस्य स्वर्णास्त्रस्यास्त्रस्यास्त्रस्यास्त्रस्यास्त्रस्यास्त्रस्यास्त्रस्यास्त्रस्यास्त्रस्यास्त्रस्यास्त्रस्यास्त्रस्यास्त्रस्यास्त्रस्यास्त्रस्यास्त्रस्यास्त्रस्यास्त्रस्यत्यास्त्रस्यास्त्रस्यत्यास्त्रस्यास्त्रस्यास्त्रस्यत्यास्त्रस्यास्त्रस्यत्यास्त्रस्यस्तिः

आहारश्चमांतिः कोहिपुत्रव्यहणायमवत्ते इत्यादिभावनपापरीमह-क्षमणायपतितन्यं इति चारित्रभेदाः सामिककेट्रोपस्यापनीपद-रिहा।विद्याद्विश्वश्चमसंपराययथारुवात्स्यमाः चूर्वस्यावर्णितः तेषांतर-भेदाः सप्तर्पचाञानुष्रपस्यानेचुविभाज्ञाह तत्र आधेचुत्रिचुणस्या-नेपुसंतरोदानांसम्बद्धाति सिन्याश्चादातः नस्वरूपणाहक्त्वं इति तथा अजयद्विमद्द्यादि ४ जवयद्विष्वावितरदेशविस्तव्श्वणेग्र-णस्यानद्वये द्वाद्सभावना एवमाप्यते शेपभेदानांतुसर्वविदरी ए-वमाध्यमाणस्वात् वेननायसंग्रहीता दुपमते प्रमत्ताममत्त्वश्चणेग्र-

भैचाशत्भेदाः अदुचरणाङ्गतिसङ्गमसंपराययथारूपातरूपचारित्रद्वपः १९६ रहिता नष्य पुषद्वेर्गित् अधूर्वकरणानिश्चिकरणश्चाणगुगस्यान-द्वे परिहासदिपारिजाहिनाश्चतुष्याञ्चनभेदाः संवस्यउपशांतमो-हसीणमोहटक्षणेगुणस्यानद्ववे पृकस्यव्यास्यातस्यवसंभवात्तिप-भागदेदाः संवस्येति ॥ १०३ ॥

टपारं:—हुवे संवस्त्वना भेर गुणटाणे कहे छे. भिष्पान्त र सास्तादन २ मिश्र ए गुणटाणे संवस्तन्तनो भेद कोई नदी. अविरति सम्प्रित्त तया देशविरति गुणटाणे बार भावना कोइक जीवने कोइक बेटाई होई वे माटे १२ मेद छे. प्रभम संपराप १ अभमत गुणटाणे संवस्ता पंपावन भेद छे. गुभ्म संपराप १ यथाख्यात २ ए वे चारिष विना अपूर्वकरण मित्रातिकरण पूर्व गुणटाणे परिहार विश्वच विना चोपन संवस्ता भेद छे अने गुण्टाणे परिहार विश्वच विना चोपन संवस्ता भेद छे अने गुण्टाणे परिहार विश्वच विना चेपन संवस्ता भेद छे इत्यारमे यारमे गुणटाणे एक यथाख्यात चारिब छे, शेष च्यार पारिव छे नहीं ॥१०२॥

सेसेमुएकखायम, चरणखवमचणेणनोअन्ने ॥ परिसहजयोअसंवर, तेणंसब्रथ्यतेमहीया ॥१०४॥

र्द्धका—संसेग्राप्तमस्यायग ४ वेषेष्ठसयोषिकेवरूपयोगिकेवरिः
दक्षणेएकंक्षाविकेययारूयात्वारिकंसंवरमेदेष्ठवारम्बे देरापरदर्पयावाद्भेदाः क्षयोपदामस्याताचारम्बे यद्यविक्षाविक्रदेषरीपहज्यः
संभाव्यते तथापिवीयाँनंतव्याताक्ष्ट्रनविक्रस्याभवात्वात्तार्थके अववारिषद्वीद्रयस्तुगुणस्यानेयुक्तस्योनास्ति तथापियरीयह्जयस्तुग्वैग्रुणस्यानेयुक्तरस्तिनास्त्वैनवेषपञ्चयस्याद्वावैद्यतिभेदाः गृहीताः
द्वाद्काः संत्रभेदागुणस्यानेयुक्त ॥ १०४॥

ट्यापै: —तेणे त्रपत मेर छे शेष कहेतां त्रेष खो ते तैस्मी तथा चऊरमी ग्रणटाणी तेहने विषे एक प्रयाह्मपत चारित छे. बीजा संतरना मेर सर्व अयोपशर्मी छे ते तेसे चऊरमे ग्रणटाणे अयोपशर्मी भाव नयी ते माटे आविक चारित्र छे, अन्यभाव नयी ते माटे ग्रुमित ग्रपतिक्षाधिक चारित्रमांत गरोपी छे. बार्वास परिसह तेतो उपरहे ग्रणटाणे नयी, परं बार्वास परिपहनो जीपबी ते संवर छे परिसह तो कर्मना जरमपी छे ते माटे इंच कळी छे ॥१०४॥

पढमतिगुणेअकामा, सम्मत्ताओसकामछ्द्वाओ । " घारविद्वतिज्ञराओ,ज्झाणदुगंचरिमदुगुणुम्मि॥१०५॥

टबार्थ—निर्जरातत्व आश्रयी पहिले तीन ग्रुणराणे अ

कामनिर्वात छे सकाममणाना अभावधी सम्प्रित गुणटाणाधी सकाम निर्वात छे. छटा गुणटाणाधी वसमा पर्यत बार भेद निर्वातना छे. ए रीते तेसमे गुणटाणे एक गुरु,स्थाननी तीजी पायो छे अने घडदने गुणटाणे गुरु,स्थानना बे छेडा पाया छे. निर्वास स्वरूप बद्धों ॥१०६॥

आसुरुमंचउवंधो, उवसमतिसुपगईपएसवंधरुगं । मुकाजीवाभेया, गुणटाणेसु नसंभवंई ॥१०६॥

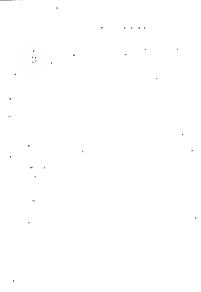
र्शका-अथवंचनस्वस्वस्पंगुणस्थानेषुविभजताह बंधश्चतुर्धाः प्रकृतिषंतः स्थितिषंतः रसबंतः प्रदेशक्यहति तनप्रदेशादीनांसम्-दायः स्वस्वविपावस्वभावः प्रकृतिर्वयः स्थितिः काटावधारणंपृतत्-समया पडामङ्गतिः इयनुकालयान् भुज्यवेइतिनिःशीरणारिमकास्थितिः अतुभागोमं इवी अदिविषाकदेतुमृतोरसः आईतरकपापप्रत्ययोत्पन्नापु-कद्भिविचतुः स्थ नरूपा.तस्यायंथः अनुभागवंधः प्रदेशाः पुहल-परमाणुनिचयकपास्त्रेगार्थयः प्रदेशार्थयः कार्मणवर्गणायोग्यपुद्रसन्-म्यसमृहः तस्पर्वनः प्रदेशक्यः ऊत्कंच ठिर्द्वयंवीदस्सर्टिई पपुस-बंधोपपुसगहुणं जंताणरसोअग्रभागो तस्समुदाओपगड्बंधो १ वि-स्तारस्त्रशतकादितोऽवसेयइति आमुहाति ६ आइतियावेत्यक्ष्मसं-परापगुणस्थानकंतावत्चत्विवोषिवंवः महतिमदेशोयोगहेतुकोस्थि-तिरसीतुकपायमृत्ययौजभयोरिषसङ्गाना गुजपशांतमोहात् उपरिग्रण-स्थानिभनेसुमृकृतिभवमदेशभवीणुवयोगप्रत्ययत्वात् योगानांचतन-सत्वातद्वत्यक्तः संक्षेपेणवंधः वीवमंदादिविस्तारस्त्वकर्ममञ्हरपादिती-श्चेपद्वतिकृत्सनप्रकर्मश्चयोमोश्चः सचसर्वयुष्पस्थानावीतत्वात्युषस्थान नेषुनसंभर्वातअजीवभेदाश्चतुर्दश धर्मोस्तिकायस्कंथादयस्वेपिगुण-स्यानेपुनसंभवनि अतोनोक्ताः ॥१०६॥

ट्यारं:—सहम संपत्तव ग्रुणदाणा पर्यत च्यार वंच छे १ स्थितिवंच २ ससंव ३ प्रदेशवंच ४ च्यार वंच छे, उपशांत प्रमुख तीन ग्रुणटाणे प्रकृतिवंच प्रदेशवंच ए वे वंच छे, मोझ-तत्वना मेद तथा अजीव तत्वना मेद ग्रुणटाणे संभवे नहीज ॥ १०६॥

भंगासंवेहाओ, गुणठाणसयंचदेवचंदेण । भणियंविणयावणय, संतिदासस्तवयणेणं ॥१०७॥

टोका-भंगासंवेहाओ इत्यादि १०० मोहादिकर्मणांभं-गास्तेपांकमस्तसंबेहाओति कर्मसंबेधनाम्नास्वकृतएवप्रथस्तस्मादनः सेया स्तत्रसविस्तरेकथितत्वेनविचारसारप्रकरणेनोक्ताः णंस्यानशतंपद्यपि अष्टगायाधिकमपिशतमेवेतिख्यातिः धर्मप्रसृतिवाचकवंशाविष्ठित्रपरंपरायातसेवेगशासादिप्रयेनोद्धारिताः नेक्सन्यसंबातसत्पदमरूपणावञ्जनपाप्तखाताविरुदः श्रीमज्जिनेश्वर-सरिवंशपूर्वाचळभानस्वरूपश्चामदभयदेवसूरिः नदांगउपपातिक पंचाशकादिवत्तिमकाशकपरंपरयाश्रीमत् खरतरान्वयेश्रीजिनपंदः सरिशिष्यर्थामत्पाटकपुण्यत्रधानाव्छिष्याः पाठकाः श्रीसुमतिसागराः चितामणिटिप्पनादिशंयकरणप्राप्तन्यायभारतीअवदाताः तन्छिप्याः वाचका बृहत्कल्पादिछेदयंयखखभाष्यादिटिप्पनकरणविमखावदाताः श्रीसार्यांगाः तिष्ळिप्यानेकतीर्यप्रतिष्टादिकृतगुभाचाराः पाठकाराजः स्तास्त्रिच्छम्याः पाटकाः श्रीज्ञानवर्गास्त्रिच्छम्याः पाटकाः श्रीशत्रुं जपेसमनसरणमे रूनमुखानेकती यंता जनगरादिषुसहस्रपरणादिश्रविध-करणकृतशासनोकुदीपनाः श्रीमकुदीपचेदास्तेषांक्षिप्येनजैनागमाम्पा सरसिकेनगुणस्थानकेख्यासयियानपूर्वकंत्रिस्वितगुणस्थानशनकं । र्थापद्रायनपुरवास्त्रस्यः विनयेनअवनतः नमः वातिवासद्वि भादः

^{पर्}तमासायकरणतुन्धून्सुन्नीनांच्यामोहनितृत्यर्थननममाहादिरोप-ज्यात्रासः यातसस्यानायमोदाय जन-पैनिष्ट्यः संतीहिगुणज्ञाभवति ॥ इतिक्षी विचाससमकाणे वर्षद्रगणिविगचिवेरवोप्सगुणस्थानशनकेस्त्रोपसार्यका हिस्टि भीमानि ! वीरंनदतात्चात्रद्वीराजिनवाणीनमः श्रीरद्वमानायगीतः वर्षनेत्रापकोत्तरमवंसायसिद्धायगुणसाःहिने ॥ १ ॥ तदंशे-गच्छे दुवैचारम्यास्ताः थीनिनचःसरीसाः सममूक्तमृनिन ः ॥ २ ॥ तस्त्रकाच्चिसद्दृत्ताराजसागहरूसयः । सान् रचेदाधं नेज्यत्युगोजन्याताः ॥३॥ जनजानिनवोघा :ांवे-पक्षि गाविने पाः समजःपंतदेवचदाः द्युभालयाः ॥४॥ स्वा-काराय । देवचंद्रणचीमता । गुणस्थानसवेटीका । चकेन ज्ञका ॥ ५ ॥ तद्रबाचमंतुस्तइच्याः ज्ञानस्त्राद्वपरायणाः रिसिकाभवंतुभविकाः सद्य ॥६॥ इतिश्रीविचारमकाणे तिद्येकासंपूर्णा ॥ ग्रुभंभवतु ॥ कल्पाणमस्त ॥



॥ अथ श्री विचारसार प्रकरणसटीक ॥

नमिउं चीरजिणंदं, मग्गणठाणेतु पुत्रभणीयाई। दाराइंचउनवई, भणामि गियपरविवोहत्यं॥१॥

अर्ह मूळ गायां अनुसारे "चतुर्नचिद्दाराणि" गड शुद्ध संपरे छे. अने पूर्वपंत्री तथा उत्तर्गभी टीस्टमां "एकदव-द्वाराणि" एवा पाठ इस्तिलिस्त प्रतमां छे ते मूळ गायां अनुसार संपत्ती नणी.

वकं अभिषेयंभणाभिकययामित्यर्थः प्रयोजनंचनियपाविभोहरयं-निजः आत्मापरायपयार्थभाविज्ञासारसिकासम्यगृद्धदेशवित्तः सर्ववित्तादिजीवारतेषांविश्चिष्टोचाः ज्ञानंवियोचस्तदेवअर्थः प्रयोज् जनवरयस तंनिजपरविचोचार्यं आत्मनोज्ञाननिर्मटाय परस्या-पिकोतुः ज्ञानमकाशाय ॥ १ ॥

टवार्थः —नमस्कार करीने वीरबर्दमानजिनेंद्र सामान्य के वर्जामा इंद्रसमान वेढ् प्रत्ये मार्गणास्थानकने विषे पूर्वे कछा जे भंगादिकद्वार चोरांखं ठेभणामि क॰ कडु धुं निज्ञ आत्माने तथा परने प्रति भोधवाने ज्ञान जाणवा प्रकाशने हेते अर्थे करीने ॥ १ ॥

गईइंदिएकाए, जोएवेएकसायनाणेसु । संयमदंसणळेसा. भविसम्मेसन्निआहारे ॥२॥

टीका--मार्गणानामभिधाविकां गाथामाह । गइइंदिएकाए

क्रोधमानमापारोभारूपाः चत्वारः ज्ञप्तिर्ज्ञानं यदाजापतेपरिच्छिदः वेवस्तुअनेनेतिज्ञानंसामान्यविशेषात्मकेवस्तुनिर्विशेषधर्मग्रहणात्म-कोबोधः ज्ञानंमतिश्रुतावधिमनःपर्यायकेवछनेदात् पंचवकारं तदेव-ज्ञानंमिध्यात्वसहकारेणविषयस्तंमत्यज्ञानश्वताज्ञानविभंगभेदात् नि-प्रकारमज्ञानं विशेषस्यपर्यायाधिकत्वादेकान्तरूपेणकुग्रहयस्तानांन-ताहक् बोधरतेनअञ्चानं ज्ञानाज्ञानयोरुभयोरपिविशेषग्राहकस्वात् ज्ञानावरणीयश्चयोपशमोब् मृतत्वादारमनः ज्ञानरूपस्यस्वपर्यायस्य-भावस्यमृष्ट्तिशक्तिरूपत्वात् अष्टानामापैज्ञानमार्गणायां संबद्धः॥६॥ संसम्यग्मकारेणयमनं उपरमणंसाबद्यपोगादितिसयमः यद्वासंपम्यते नियम्यते आत्मापापव्यापारसंभारादनेनेतिसंयमः । अथवा शही-भनायमाः प्राणातिपातविरमणा अस्मितितिसंपमधारित्रं सामायिकछे-दोपरपापनीयपरिज्ञातविद्यद्विमक्ष्मसंपराययधारुयात्यक्षपंपच्या । विरतिसाम्यातुदेशविरतिः ब्रहुणं विरतधर्मस्यमतिपश्चमृतःवादविर-तिस्तस्याऽपियष्टणं युत्रं सप्तथासंयममार्गणा दृदयते अनेनेतिद-दीनं यदिवादष्टिर्दर्शनं सामान्यविशेषारमफेवरत्तनिसामान्यरमकोयोधः दर्शनद्दरपर्यः तचतुर्विधंपश्चरचश्चरवधिकेयखदर्शनभेदात् अवदर्शन-इयसामान्यभोधकपत्वात् सामान्यबोधस्यपिडरूपवस्त्याहकःवात् । ·निद्विविद्यस्पत्रस्तुनिविषयांसः वेनदर्शनोपयोगेनविपर्यतापरिवार्तिः इति । ंटदपतेदिरूपते कर्मणासहआत्माअनपाइतिवेदया वृष्यनीतः यज्ञपीतवेजःपद्मक्षमेदात्षोडा सत्रभावकेदया परिणविक्यापीय-वीर्यसहकारियेतनायावाअमशस्तामशस्तापरिणतिः । बङ्गीर्यवतः मदास्तामदास्तकार्वपरिणामश्रवर्तनरूपाभाववेदया द्रश्यवेदयार्त्वरे-क्रिपशरीरपारिणोतत्तववर्णादिपहरुपरिणमनस्या नादारिकायांवि-विउत्तरान्ययने शांतिबादिकृतरहृषुवती । भर्मात परमपदयोग्यतान मारापपतिहत्तिभव्यः सिद्धिगमनयोगी भव्यः नभव्यः नहिद्धगन

सम्यग्जीवस्तर्भावः सम्यक्त्वंमोक्षामिलापरूपा या आर तस्त्रेतस्यनिद्धाररूपपरिणयनंसम्यक्तं सञ्जीवी उपशमक्षयोपशमक्षायिकमेदात् सास्वादनस्योपशमांतर्भावात् मिश्रस्पक्षयोपरामसहन्यारात् मिथ्यात्यस्यत्दप्रतिययक्त्वात् सम क्त्वमार्गमायांअंतभीवः अनंतात्वंधिवतुष्कस्य दर्शनमोहनीयां कस्पविपाकनाप्तस्य क्षयंगतस्य उदययोग्यस्य प्रदेशविपाकतोऽ® तस्य उपरातिस्य यनुदर्शनं उपरागदर्शनं सप्तकस्यविपाकप्राप्तस् क्षयंगतस्य उदययोग्यस्य विपाकतो उपशांतस्य प्रदेशतः उदयर यावेद्यमानस्य दर्शनंश्चयोपशनसम्बगुदर्शनं सम्यक्तवस्य दीनर स्य ? विपाकोदयेपि मिथ्यात्वपदेशत्वात् प्रदेशग्रहणं दर्शनसप्तकरं सत्तातःसर्वेथा क्षीणस्यनिर्गेलं निरतिचारं अप्रतिपातिदर्शनं क्षापि कसम्पग्दर्शनं इति मिथ्यात्वादयोगुणस्थानाधिकारेव्याख्यातापः ॥१२॥ सन्नित्तिः संज्ञानंसज्ञामृतभवद्भाविभावस्वस्वभावपर्यान्नोच सा संज्ञानिववेयेशांवे संज्ञाः मनो विज्ञानयुक्तादी वैकालिकीसंज्ञा युक्तासंज्ञिनः तदितराअसंज्ञिन इति ॥१२॥ ओजोस्रोमकाविष्ट कादिआहाराणां अन्यतमाहारयुक्ताआहारकाः तद्रहिताअनाहारकी वैविग्रहुगातिसमापन्नाःके बिलसमुद्धात अयोगीके बिलनः सिद्धांअनी हारकाः शेषाआहारकाः एतेचतुर्दशमूलमार्गणाउत्तरद्विपष्टिमार्गणां रूपामेदाउत्ताः ॥ २ ॥

ट्यार्थः—हवे ६२ मार्गणा नाम कहे छे. वेद ३ कपाप . ४ गति ४ इंदी ५ काय ६ योग ३ ज्ञान ८ ज्ञान ५ तीन अज्ञानमांहे गण्या माटे मार्गणा ते सर्वे जीवनी विचारणा वेमाटे· ७ प्रकृति गणी छे. संयम ७ पांच चारित्र ५ देश- दिर्गति ६ अस्तिति ७ दर्शन ४ चञ्चआदिक, ढेरमा ६ कृष्णाहि, भव्य तथा ऽभव्य २ समीठन ६ उपराम १ क्षयोपटाम २ द्वा-यक्ष ३ किष्याल ४ सारवादन ५ मिश्र ६ संज्ञी तथा ऽसंज्ञी २ तथा आहारक तथा अनाहारक ए ६२ मार्गणा जाणती ॥२॥

पणितरिचउसुरनिरये, नरसंग्निपणेंदिभवतसिसदे । इगविगलभूदगवणे, दुदुपृगंगईतसिअभदे ॥ ३ ॥

दीका—अवनायुमार्गणायुष्यस्थानानिकवयस्यात् ॥ प्रमतिहि ह्याविक्षानिकिति निकंगानियिवं पर्याति किर्यात्रकाः देशः दिरिनियंत्रेयंपगुणायानानि चयउनिवृग्यन्ति विक्ष्यात्रकाः देशः दिरिनियंत्रेयंपगुणायानानि चयउनिवृग्यन्ति नरकार्गति निक्यात्रकाः वाद्यात्रिमिक्षात्रकार्यात्यात्रकार्यात्रकार्यात्रकार्यात्रकार्यात्रकार्यात्रकार्यात्रकार्यात्रकार्यात्रकार्यात्रकार्यात्रकार्यात्रकार्यात्रकार्यात्रकार्यात

स्वार्य—निर्दर्भातरूपे यांच पाट्टला ग्रवशाया है. देक-गति माक्रमतिने पार्च ४ किस्सा व १ कावादन से विक्र से अविति ४ प ४ ग्रावस्थाना है. अनुस्थाने १ क्योगांगांस से विद्वार्यात्र है क्याराय्य वस्त्र स्टब्स्स्य स्टिस्स्य है क्याराय वस्त्र स्टिस्स्य स्टिस्स्य स्टिस्स्य स्टिस्स्य स्टिस्स्य स्टिस्स्य है अस्टिस्स्य है अस्टि

कर्मपने विषे विषयम् १ तपा सम्बन्धः स्व राजिनम्बन्धः वेजस्य १ सम्बन्धः तया सम्बन्धः सम्बन्धेः विषयम्बन्धस्यये सम्बन्धः ॥ ३ वेपविकसायनवदस्त, सोमेख्यअवपद्विस

४५१वकता४म४२त, स्मिन्डअद्य**ु**र्ठेड बारवञ्जर चुचक्दुनुः ब्हनाअहक्द्राच्य

चारकाचन द्वापनंद्वतुः पडनाजहूनदाचनर द्वारा-चेजातनात्वता ॥ ४ वेदेव विवस्तरेत्व नामाधादद्वापेषु विभावतः ज्ञानः ज्ञानविद्यान् राधात्वापन्द्रान्ति वृद्धते द्वारान्त्रे क्यारेत्वपन्द्रान्त्रसम्बद्धाः पडक्षमधीरकाच्यात्वाराम् गार्याच्य श्रद्धानिमानसाम्बद्धाः पडक्षमधीरकाच्यात्वारामानस्वारता स्वर्णाने

न्द्रस्तृत्याः सिन्द्रशंनामध्यूनेन्द्रानंत्रमत् स्वर विकानायामी निम्बत्यसम्बद्धन्त्रस्त्रम्यसम्बद्धस्याः म्बाद्धानुस्त्रमम्बद्धः क्षेत्रश्चेन्त्रस्त्रात् स्वर्णस्त्रम्यस्य क्षेत्रश्चेन्त्रस्त्रः स्वर्णस्त्रम्यस्य क्षेत्रस्त्रम्यस्य अर्थन्तिः स्वर्णस्त्रम्यस्य स्वर्णस्त्रम्यस्य स्वर्णस्य अर्थन्तिः स्वर्णस्त्रम्यस्य स्वर्णस्य स्वरत्य स्वरत्य स्वर्णस्य स्वर्णस्य स्वरत्य स्वर्णस्य स्वर्णस्य स्वरत्य स्वरत्य स्वरत्य स्वर्यस्य स्वरत्य स्व

वर्षेक्रविद्विवेश्वदेशे व्यास हिन्सावक कार्यक्षेत्रं स्वतंत्रप्रवेश्वदेशे व्यास्त्राच्या प्रत्ये व क्षाप्रा स्वतंत्रप्रवेश्वदेशे व्यास्त्राच्या स्वतंत्र क्षाप्रा स्वतंत्रप्रवेशे स्वतंत्रप्रकार्यक्षेत्र कार्यकार्ये कार्य

विचारसाम्मकस्ण. चारिनेचरमाञ्चा चर्जानचनारमुणस्पानङ्गा उपराातमोहस 1 मोहसयोचिकेनछिजयोगीकेनछिकपामन्ति एपुक्रपायोन्यामा 15 दिति ॥ ४ ॥

ट्नार्थ:—चेर वीन, ऋोच मान माया ए ६ मार्गणाने वि मिटवात्त्रथी मांटी अनिजनिकाण पुरन नव गुणदाणा है. होभने विषे मिट्यान्त्रभी मुश्चसंपाय पर्यन १० गुणायानक्र छे. अतिरनिः मार्गणा विषे मिच्यान्व ? सारवादन २ मिश्र ३ अविगेन ४ ए ४ गुणदाणा छे. अज्ञान तीन मार्गणाने विषे वे अथश निन गुणदाणा छे. परंकोइ जीव समक्रिनगुणदाणायी परनी मिध

आच्यो वेहने निक्क अस्पासे तथा मिथना अन्पकाल मार्थ ज्ञान पटने नहीं निणे ज्ञान कहींचे इत्यर्थ अपशुर्मान १ तया प्राप्तरानिके मिष्यास्त्रया मांडी गीणमीह परेन १२

युणटाणा पामीचे छे, वपारुपानचारिने चरिमक्र॰ छेहला ॥१५॥ १२।१३।१४। ए ४ युणटाणा छे. ॥४॥ मणनाणसगजयाइ, सामाइयछेयचउदुन्तिपरिहारे । केवलदुगिदोचरमा, जयाईनयमईसुऑहिदुगे ॥५॥ · दीशः—मणनाणसगजयाद्दं । इत्यादि यन.पर्यग्राने सगीन् समयतिनामनिर्वे पस्नशङ्गीनिङ्ग् धनेननमतात्रवनतार्वकरकागिरीने वरणसञ्चसंपराचीवसां १नीहनीयमोहलः त्रमानि सास्यणस्थानसन् भवंति. सामापि राते होपस्या भिन्न हारिय चाहीनिमनतायमतापूर्व करणानिशत्त्रादरानीत्यवः द्वातीत् द्वेत्रमतात्रमत्वरूपेपरिहासीरगुः प्यारिवेमाच्वेते जीत्तरानियरिहासस्यद्वीनिकस्यानिवाहरूपीवरूपः गत्नभेतिपारोहः केवलद्विकेवलज्ञानकेवल्यानवसने मार्गे

णाद्विके द्वीचरमीत्रपीदशचतुर्दशमलक्षणीयुणस्थानकीभवतः अञ याइतिअयतादिअविस्तसम्यगुराणस्थानतः क्षीणमोहपर्यतंनवग्रण-स्यानकानिप्राप्यंते मतिज्ञानश्रुतज्ञाने ओहिद्रगेत्रिअवधिद्विके अवधिज्ञानअवधिदर्शने प्राप्येते । नशेषाणितयाहि मतिज्ञानश्रत-ज्ञानाविक्जानानि मिथ्यादृष्टिसास्वादनमिश्रेषुनभवंति तद्भावेज्ञानन त्वस्यैवायोगात् यत्तुअवधिदर्शनंतरक्तिश्चरमिमायाद्विशिष्टश्वतविदे मिथ्याद्रवीनांनेच्छंतितन्मतमाश्चित्यास्माभिरपितनेषांनभणितं अथ-चस्रभेभिष्यादृष्ट्यादीनामप्यत्रषिदर्शनंप्रतिपाद्यते ॥ यदाह्र ॥ श्रीस-धर्मास्वामी पंचमांगे " ओहिदंसणअणगारीवउत्ताणंभेतेकिनाणी ? अञ्चाणीगोयमा नाणीवि अञ्चाणी वि जर्डनाणीतोअत्येगड्यातिनाणी-अस्थैगडयाचउनाणीजेंतिनाणीतेआमिणिबोहीयनाणी सुअनाणी ओ• हिनाणीजेचउनाणीतेआभिणिशोहिनाणी सुपनाणी ओहीनाणी मणप-ज्जवनाणी जेअन्नाणीवेनियमःइमअन्नाणी सुअअन्नाणी विभंगनाणी" इत्यादिञत्रहियेञज्ञानिनस्ते मिध्यादृष्टयएवेतिमिध्यादृष्ट्यादीनामप्य-विषदर्शनंसाक्षादयसुत्रेमतिपादितंचएवंविभंगज्ञानीः यः सास्वादन-मिश्चवर्तते तथापितदानीमविषदर्शनंपाप्यवेडति ॥ ५ ॥

द्यार्थ:—मनःपर्धायक्तानने विषे यति आदिक सात ग्रण-दाणा छै. राष्ट्रायी वारमा पर्यंत छे. सामायिकचारिय तथा छेदो-परमापनीयः चारियने विषे छटो, सातमो, आठमो, नवमो, प् स्यार ग्रणदाणा छे. पिहारविश्रिक्त ग्रणदाणाने विषे छटो सा-समो प् ये ग्रणदाणा छे. फेनब्ह्यानने विषे ॥ १३। १४ मो पू वे ग्रणदाणा पामीये. अजनकः अविरतिया मांडी बारमा पर्यंत नत्र ग्रणदाणा छे. मितिशान १ तथा श्वतसान २ अविष-दर्शन. अविश्वतान ए ४ मार्गणभी पामीये छे॥ ५॥ ५॥ अङ्क्षयसंभिचउयेयमिः स्वईग्रहकारभिच्छतिगरेसे। सुद्दसिसहाणंतरमः योगआइम्सुद्धापः॥ ६ ॥

देशः — अहजरमानिहः य ते ॥ स्वस्तिक्षात्रे हम्याचारिहाः यनादिः । स्वत्रे स्वोध्यते अवना प्रश्ने पुरान स्वीहः नाम्यश्ये प्रणापानानिः जनसम्प्रस्य ने भयति अवना प्रश्नो पुरान स्वान् अस्ति स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वर्य प्रणापान स्वार्य स्वर्य स्वय स्वर्य स्वर्य स्वयं स्वयं स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वयं स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्

टरायं — उपरामसम्प्रितने विषे आह ग्रुणशाण छै. पं-धार्या सांडी इत्यासा पर्यन क्षणेपश्रमसम्प्रितस्य पोयो, पां-प्रमी, छुटे, सातनो, पृथ ग्रुणशाण क्षणिकसम्प्रित पोपायां पारमा पर्यत इत्यार ग्रुणशाण के विष्याच १ साराइस न निम्न ३ ए तीनने विषे तथा देव पितने विषे तथा प्रश्न-संप्रापने विषे सटाणंक पोताना नामनाज ग्रुणशाण छै. निम्मास्तनं विषे, भिष्याच, साराइस्तनं विषे साराइस मिथने विषे निम्न, देवर्गितने विषे देशविरति, व्यन्तरंतपणे दिषे ग्रुप्त-स्वाप छै. तीन योगने दिने आह्मस्त्रमार्गणने विषे छुद्धके-इसाने विषे वेर ग्रुणशाण छै। ॥ ६ ॥ असंन्निसु पहमदुगं, पहमतिलेसासु छन्नदुसुसत्त । पहमंतिमदुगअजया, अणहारेमग्गणासुगुणा ॥७॥

टीका—असंत्रिग्रपटमदुगं । इंत्यादि ॥ असंज्ञिप्रसंज्ञिच्य-तिरिक्तेषु प्रथमद्विकं मिय्यात्वसारवादुनस्थणं ग्रुणस्थानद्वयंप्राप्यते प्रथमलेश्यात्रयेभिय्यादृष्ट्यादीनिप्रमस्तातानि षद्गुणस्थानानि भवं तिच कृष्णनीलकापोत्तवेदयानांहिमरवैकं संख्येयलोकाकाशप्रदेश प्रमाणान्यव्यवसायस्थानानि ततोमंदर्संक्वेशेषु तदच्यवसायस्थानेषु तथाविधसम्यक्तवदेशिक्तिसर्वविरतीनामि सञ्जावीनविरुध्यते ॥ उक्तंच ॥ सम्यक्त्वदेशविरतसर्वविरतीनांप्रतिपत्तिकालेश्चभलेश्या-त्रयमेवभवति उत्तरकालेतुसर्वाअपिलेईपाः परावर्तते इति श्रीमदाः राध्यापादाअप्याहः "सम्मत्तसुअंसबासु टहृदुसुद्धासु तिसुअचरितं-. युषपडिवत्तओपुण अत्तयरीए छ लेसाए " ॥ १॥ श्राभगवत्यांच " सामाइयसंजर्णभंतेकड्लेसा<u>स</u>होज्जा गो० । छस्लेसासुहोजाए-वंछेओवष्टावणीयेसंजयाएवि " इत्यादि तथा तेजोपद्मलेहययोः सप्तग्रुणस्यानानिभवंति अपमत्तांतानाम्मिथ्यादृष्ट्यादीनांअपमत्तानां वैजोपद्महेरपास्तारतम्येनभवंति तथाअनाहारकेपंचगुणस्यानानिभ-वंति कमित्याह प्रथमांतिमद्विकायतानिइतिद्विकायतानिइति द्विक-शब्दस्यप्रत्येकपोगात् प्रथमद्विकंमिध्याद्यष्टिसास्वादनं अंतिमद्विकं सपोगिकेवल्पयोगिकेविछञ्चणं अयतङ्ति अविस्तिसम्यग्रदृष्टिश्चेति तत्रमिथ्यात्वसास्त्रादनं अत्रिस्तसम्यग्दृष्टिलक्षणंगुणस्यानप्रयं अना-हारकेविग्रहगतीप्राप्यते सयोगिकेविष्राणस्थानंत्वनाहारके सप्र-क्षातावस्थापांतृतीपचतुर्यपंचमसम्बेदृष्ट्यं । अयोगिकेवल्यवस्था-मांतुयोगरहितत्वेनीदारिकादिशरीरपरिपोषक्यद्रस्थहणाभावादनाहा-

रक्त्वं ओदारिकवैक्रियाहारकक्षरिरपरिपोषकस्तुपुद्रहोपादानमाहा-रक्द्रतिमार्गणासु गुणागुणस्थानकाउक्ताः ॥ ७ ॥

ट्यायं: — असंजिमार्गणाने विषे भिष्णात्यसास्वादन ए वे गुणटाणा छे. कृष्ण १ नीछ १ कापोत १ ए वे स्वामार्गणाने विषे छ गुणटाणा छे. वे ते १ एव १ ए वे वे स्वानं विषे पहिला सात गुणदाणा छे । १ । २ । ३ । ४ । ५ । ९ । एउमंहुतानित्यात्व १ सास्वादन २ अंतिमञ्जा वेस्मो चउदमो अज्याकक अवितिकक समिक्त ए पांच गुणटाणो छे. अनाहारकमार्गणाने तेमन्वे पहिलो संजी चोयो ए तीन गुणटाणे विम्नह्नगति वर्षमान जीवने अनाहारकपणे पामीपे. तेस्मे गुणटाणे केव्हीसमुद्दचातकातांअना-हारक छे. चउदमो अदार्शरी छे तिचे अनाहार्श छे ॥ ७ ॥

नरगईपणेदितसयोग, नाणचउतिदससुक्रभविसंत्री। स्वायगदारेचउठाण, अणहारेसचइगवंघ ॥ ८॥

दीका—अपमार्गणास्यानेषु मूलवंबरपानानि वेदपन्ना ॥
नराष्ट्रपर्वादि ॥ नरामिः, पंचिन्द्रपत्नातिः, नसस्यः, पोनयः,
गराप्ट्रप्रादि ॥ नरामिः, पंचिन्द्रपत्नातिः, नसस्यः, पोनयः,
स्वादिक्षान्यतृष्टमं, प्युरायग्रवाधिकपदार्वार्थकः ग्रद्धकेदया १ भराः
संज्ञां, हायिककाम्पर्दानी आहासः प्रताष्ट्र, अधादस्यापाणामुक्
टतःपत्नातिंवरपानानि सान्नियवंवकाशि एवेष्ट्रवियवंवकाशि
एवेपद्गियपंवकाशि एकनंबक्केऽपि एवेष्ट्रवेपवंवकाशिवरपानकानि
तसर्ववेपवार्युवं सामक्रमेष्ट्रपत्नि । प्रतिववंवकाः वेषमात्वेदः
प्रताप्त्रपापमामा भोहायुवं । प्रतिववंवकाः वेषमात्वेदः
नीपयंवकाशिक्वियवंवकाः पूर्ववत्वारिवंवरपानानिमार्ग्वे अनाहारकमार्गणापांकाः एकन्ये देवंबन्धस्यति ॥ ८ ॥

ट्रमपं — मनुष्पाति १ पंत्रेन्द्रिमानि २ त्रमद्यप तीनपोगमनापन हामा पृत्रं ३ ज्ञान ४ मनि १ यून २ अस ३ मनपर्षत्र ४ दर्शन ३ यशु १ अवन्तु २ आस्द्रिशन गुक्रतेत्रमा १ भग्यसंज्ञी भाषिकसमक्षित १ आहारक १ म अट्र

मार्गणाने विते बपार बंधरवानक सान । आठ । छ । एक्ती है

इगविणुळोभेअडविणु, उवसमिकेवलदुगेअहक्सा • एगापयडीवंधे, सेसेसुसगढवंधाइं ॥ ९ ॥

दीका—द्वारिणुलोभेइत्यादि । लोभक्यायमार्गणायां इस् विद्य पुक्रियवंश्वकत्ये विशासमञ्जीपत्लक्षणानिविणियंपस्पानानि अनमयमगुणस्यदेशक्रत्यात् उपशासम्यात्त्ववार्गणायां जष्टवियवंश्व कत्यं विनासस्पर्शक्षक्रपाणिनांगणंश्वस्थानानि प्रमुवससियदंती-आउन्तर्यनितिद्वपायुषः अञ्चयक्त्यात् चेत्रल्युनि केत्रल्यान केव्ल दर्शनल्युणे मार्गणाद्वये थयास्यात्यारिये एका सातावेदनीया-स्यामकृतिकंष्यवे द्वरयनेनपृक्षविच्येयकः सृश्वसंपर्यपणि गति-मिश्रसव्यवेष्ठाप्यवे लेशा उत्तहत्याः पद्मित्रस्यागणेणा गति-

सप्तअष्टोपुर्वेद्विवंबस्यानेप्राप्यंवे इत्येवंजक्तामार्गणासुमूळ्प्रतिवंबन् मेदाः ॥ ९ ॥ टवार्यः----डोभकषाये पुक्तो यानक नयी ८ नो ७ नो ६ नो ए तीन वंबधानक छे. जपशमसमकितमार्गणाने विषे

त्रिक्इंद्रियधतुष्ककायपंचक्वेदनिककपायिक अज्ञाननिक सं-यमछेइयापंचअभव्यक्षयोपशमसास्वादनपंचनिष्यात्वअसंज्ञित्सणाः

^{*} पाठान्तर्र

[&]quot; एगासुहमिच्छमीसे, सगसेसासत्तअडवंधा "

आटनो बंदयानक नयी. भादाशी नो छे. परमुवसमिवहंता-आउनबंधिदृतिबचनात् केवट्यान, केवट्यंन, ययास्यातचारित्र ए दीन भागेगाने घिषे एक सतावेदनी प्रकृति बांचे शेष ३९ भागेणाने विषे सातनो तथा आठनो वंदयानक छे. हवे भागे-णाये बंध स्वामी कहे छे॥ ९॥

इगसत्तरवीसचउअहिय, सयंनरगाइगइचउक्केसु जाइंचउतिक्रिथावरि, नवसयसयपंचतेउदुगे॥१०॥

टीका<u>---</u>इगसत्तरवीसच्डअहियाइत्यादि । अथमार्गणासु**३**-त्तरपंचरवानित्वंकययताह एक षिकंशतंनरकेओघत्रंवः तत्रसुरद्विकं, विकियद्विकं, आहारकार्द्वेकं, देवायुः नरकविकं, विकटविकं, सूक्ष्म-विकं, एकेन्द्रियस्थावरं, आतपं, एताः एकोनविंशतयः नरियकाः न बक्तंति यतः नैरियकाः मृत्वानरियकेषुनोत्पद्यंते तेनननरकः निकबंधः देवरवेपिनं,त्पादार् वेननदेवत्रिकः वैक्रियद्विकवंधः आ-हारकाद्विकस्पनृतिः वंध रः वेननवंधः पुकेन्द्रियादिचतुर्पेउत्पादा-भावात् नवंयस्तदुद्याः प्रकृतीरपिनयञ्जेति अतपुकाधिकंत्रातं ज्ञानावरणपंचरं, दर्शनावरणनवरं, वेदनीयद्विकं, मोहनीयस्य पह-विश्वतिः, आपुपः, द्वयं नाम्नः पंचाशत्, गोत्रद्वयं, अंतरायपंचकं, एवं एकाषिकं शतंरत्नप्रभादिपुत्रिषुत्रध्यते पंचकादिपुत्रिषुजिननाम-रहितं एकरातंत्रध्यते तमतमायांजिननाममञ्ज्यापरहितानवनप्रक्रिः बध्यते तप्रस्त्नप्रभादिषुत्रिषुओवतः एकाषिकंक्षते मिष्यात्वेजिन-नामरहितं रातंत्रध्यते सास्वादनेनपुंसक्त्वेदः मिध्यात्वमोहनीपं दुंडक्संस्थानं, सेवार्चं, एवं चतुष्ट्यंवर्जयत्वापण्यवतिः यध्यवे तेषुअनंताउत्रेषिचतुष्ट्यं मध्यसंस्थानचतुष्ट्यं मध्यसंद्वननचतुष्ट्यं कुखगतिः 'नीचेगोत्रं स्त्रीवेदं दुभगत्रिकं स्त्यानद्विनिकं प्रचीतनाम

तिर्पेग्द्विकं तिर्पेगायुर्नेरायुः एतद्रपद्वविंशतिरहितासप्ततिः मिश्रेन रियकावब्नंति, अविरत सम्यगृदर्शने जिननामनराषुर्युक्ताद्विःसर तिः त्रध्यते एवंसर्वत्रयथायोग्यंयोज्यं सप्तमप्रथिव्यानवनवर्तिओवः जिननाम्नःसंक्रेशत्वेअवंचात्तमनुष्यायस्तराप्तम्याउदवृत्तः तिर्पेशसम् रपद्यवेद्दतिनियमान्नचंवः . नरद्विकउद्येगीत्रमंतरेणमिथ्यात्वेपण्णवित सास्त्रादनेतिर्पगायुः नपुंसकचतुष्कवर्जपुकनवतिः मिश्रेअनंतातुरं व्यादिचनविशतिरहितानरदिके उद्येगीनयुक्तासप्तरिर्वनाति प्र सम्पन्त्वेऽपि अत्रमिश्राजित्तौनसम् स्तावन्नयप्यते तथापिनादिशं उद्देगींत्रंबच्यते तेनसप्ततिर्वच्यते अयमर्थः नरद्विकस्यनरायुपा सा-स्वादनायहर्षप्रतिबंधः आयुर्वधर्मतरेणापिमत्यानुपूर्वीपंधीभयति । तिअंतमुद्रनां न्तरउदयेपुर्व । नरगाङ्तिनरकादिनसः तिपैग्मद्रप्यदेवगतिवतुष्केषुयवातुक्रमयोज्यः तजनस्कातीपुकाः षिकेशतं ओयः विर्ययम्भीसावशाधिकेशवं ओयः ययस्पनवस्पगतीः 'चत्रधिकंशनं औयतः पंधः समदशाधिकंओचतः यंथीः भवति तवाहारकपुनित्वाभावात् जिननामचारत्यपिसम्परस्ये तथा

ध्याद्वेद्रपिक्षनस्याधिक सारवारनेपृकाधिक्षानं नरक्षविकादिषीक्षायङ्कटपरंशान ननः अगयकोगन्द्रसंत्रपण कुरुवाद्दिष्यद्वरिष् पुढेगर्वाणानिता उद्यक्तीयनिदिद्योगिति नाराज्यसम्बद्धापित्रहे ॥ द्विने
गर्वापेक्तं ॥ पृक्षविकाद्यमुग्यः इतिहादिकार्वाण् होनाक्ष्मिकः विके वेदीमनित । तत्राप्ययः अगुर्वेशन्तिनेश्रेनाधिन अनंतावृक्षित्रे पंचादिकादिः रचकार्यद्वाकिकादिकादिकादिकादिकाद्वाप्यक्षास्त्राम्यविक यङ्किरवात् नगर्विकादिकादिकादकप्रभागप्यक्ष्मानाः साप्

विधविवेच क्लुद्धिमंतरेण अर्ह्धं व भनगादिषु प्रस्वासंभवाहांचेः

विषास्तासम्बद्धाः श्रेनहतातिः साम्यःकदिनातम्यरूचेकृतिभैशते ता समितिदेवीः व प्रान्तमः बान बबेधमानमाबाटो भी बनाबदष्टि है शक्तित्युणस्य नरपार्वे इतिनिषमानिकपसामित्र मनुप्यातीओकतिविशी वाधानंतारवार्वे एकोत्तरातंत्रिक्षेत्रनंतात्त्वंविधम्वतेक्षवसन्सः न्यः एन्द्राविद्यन्वयानारेण्यग्नेनसम्बन्धः साण्यनिननामससस्यःसः दितापुरुत्तविः ता वास्त्रपारुपानचतुष्ट्यस्यादेशेतमपृष्टः प्रकते तिर्पाष्टः जयमतारिकजोपवन्तवेषं देरगनीचतुराधिकानंतिषेतेः भवति तचनरस्माचीन्य पृत्राधिस्मानमानेपुरोज्यपनामस्यावरनाम आतपम्द्रविष्युरधिवंजातंववेभवति यतः भवनपतिरयंतरम्पीतिष् भीयम् शानप्पतीम्ब्यान्वोद्योतम् बम्ब्यणादिनाएकेन्त्रियन्वेदाति। विन्त्रतेषं निध्याने जिननामव्ययुत्तरानंसास्त्राहनेन्युंसक्रयत्- केहिन्द्रसथायातापमकृतिसमक्राह्मनापण्यात्तिः मिश्रेभनतातुः यशिषहाँदेशती छेटैतासमतिः सम्परूचे सा एवनासुर्जिननामः हादिताद्राहतनिः बंबेभवति सीचमैदाानऋत्वेएवंबाच्यं भवनपतिः म्पतरचोतिषापटघोनितात् न तादक् शासनअनमादिषु परिणमः नाम् वीर्थक्रानामकर्पणः वर्षेनभवति वेनओघोष्ट्यात्वेस्पुतारातंः भवि सारवादनेपण्यविः निभेसत्तिः सम्पक्त्वे जिननामवेपाः भागत पुरुतामानः वर्षभर्मातं सल्दङ्गारास्त्रां पुरुताविकसते । पतः आनतादीनांतिकंगातीगुमनाभावान् विषक्विकसप्रच्योतः एनवंदाः शेरंरत्ममनात् आनताहिषुत्रयोतनामातिपस्त्रिकस्प प्राचित्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्ष्यानवर्तित्वति दामप्तिनेचयः हेपंपनेचन् देवगनिनंधस्तानितःत्तेयं नाह्यजसि जान तप्तुच्केपृथिवी अवुवनस्पतिस्क्षणस्यानसमिके पूर्व ससमागण-विननामसुरादिक २ वैकिपदिक २ आहारकादिक २ देवासु नेस्त्रिकादि एकादरामकृतिवर्जनवाधिकं सतंजोधतः भवति

.-

305 11 20 11

ઋ પ્રતિનિધિત્ર કારણવા ફહેલાં કેનાવરમાં પ્રકાર (કો.પ. 44 લાગ્યન પૈતે ન્યો કલા સ્નાહિના વસ્તુનિધાન ન વર્ષક — જોને કહો હશાનાનો પાસન પ્રતિનિધ

कउंचगोत्र ए १५ विना जाणवो ॥ १० ॥

नाणतिगओहिदंसण, सम्मदुगे इगुणसीइवंधंति । उवसमगेसगसयरि, केवलहरकायगे एगा॥ ११॥

दीवा—नाणतिगङ्ग्यादि ज्ञानाविकप्रागणायां अवधिद्रश्निसम्पर्श्वाद्विकेःस्यो परायदर्शनिज्ञापि क्षम्पर्श्वादे क्षान्यवितः ओवेवंधोभवति तवस्तसस्रतिः अविरत्तसम्पर्श्वानग्रण्यानवंद्यायोग्याआहारस्राद्वेकंपअभयोगतः वयावि तेनप्कोनाद्यातिवेवंभवति साप्कोनाद्यातिः आहारस्र वित्तपक्षानाद्यातिवेवंभवति साप्कोनाद्यातिः आहारस्र वित्तपक्षानाद्यातिवेवंभवति साप्कोनाद्यातिः अप्याप्त्रभिवादिः अप्रयम्पर्शनेनविः अप्रयंकरणेअद्यंवादतीस्राप्त्रपत्रिः ममधिवपिः अप्रयंकरणेअद्यंवादतीस्राप्त्रपत्रिः ममधिवपिः अप्रयंकरणेअद्यंवाद्यंवाद्यंवांभवति अधितः उपश्मद्याप्यव्यवेवनभवति तवअवितर्वेपस्रतिः देशविद्यतिः यक्ष्मसंस्पर्वेसस्यः उपशानसोदः
पंपाञ्च अनिष्वेद्धावितः वित्तपत्रपत्रपत्रस्यः उपशानसोदः
प्रयाद्यंवायंवावेवव्यविद्यावितः स्वर्ष्यपत्रस्यावेवविद्यविद्यावि

ट्यार्थ:—मित्रान १ श्रुतज्ञान २ अवधिज्ञान ३ अव-धिर्द्यन १ ह्योपशासम्भित १ ह्यायिक सम्पर्कत १ ए छ मार्गणाय इग्रुण्यासी प्रकृति बांचे ते ५० सत्तहतिर सम्प्रित ग्रुण्याणे छे ते अने आहारक २ अमसत्तग्रुण्याणे जर्देन बांग्रस्ते ते सर्व मिर्टा ओचेपग्रुण्यासीनी छे. उपशासम्पर्कितने विने मनु-प्रायु तथा देवायुनी बंच नयी तिणे सत्तहत्त्तरे प्रकृतिनो ओचे बंच छे. केवटहुगपपारुपारुपारिवने विषे एक प्रकृतिनो बंच । छे बीजा नयी. ॥ ११॥ मणनाणचरणतियगे, पणसङ्घीदेससासणेमीसे।

मिच्छेसुहमेनियआ, अभयअन्नाणअमणेसु ॥११॥ शक्ता—मणनाण्डस्यादि मनःवर्षासानेतामादि क्रोतेगस्य वनोपपरिद्वाविग्रस्थि शारिकात्रेयंशप्रीतांओयः योभग

त्वरिष्याः ममलमायोगमाआदारुक्ष्यं केष् विश्वराधिः सरम्भवेतः हारुक्षाः कामोलमायोगमाआदारुक्षये त्वराधिः अपूर्वेभागत् प्रव वा तिराण्यव्यानकामं भित्ताप्रकोषे देशद्वतिदेशाः (तिमाणमार्थाः स्व स्तुन्भागणमार्थाः भागिताप्रकोषे देशद्वतिदेशाः (तिमाणमार्थाः स्व

ર હુરું તમારાળા ના મામાં માળવા પા મહત્વાદ (માળવાના પુરુ સંદેશન માળવામાં તિવરોજિ તિજ ક્ષાલના માળવાના પામાં મેં જ ફર્દ દિ હાત તજ કે સલાવધિક સાર મુદ્દ ને પુરુ કો સરકાદ મિ મેંગલું લાહીલ છે ર રાહ દું તમારાળા પે કહેતું તુમાં એને

्यमार्गणायाः नज्ञानां ६ हमार्गणायां जनगणु अस्तिमार्गणायांत्री देशे द्रश्यते. —मन-पर्वे ह्यातः १ सामाधि ≋ १ द्विशास्याणायः स्वारं ६ १ पारद्वार्गिग्री⊈ च् च्यादे भार्गणायः पांतदः म दक्ति

તોએ છે. તેમના અગુપાતાએ એ છે તો હાફાર કરવાશીન એ એ ત્રુપા તુનાક પાયકાના બીન છે. દર્શનાને ભૂપાક એ વૃષ્યક્રે રાજ્ય યુદ્ધતાલ દર્શનો તોએ છે. શાળાદનાનુષ્યકોએ રેચ્ટ્રેપ પર જેઓ તોએ છે. નિત્રનુષ્યક્ષાય પ્રેજ નો બીફ છે. નિષ્નાર લાઈ

क्ष्मी एक्ष्मी नवस्त्री क्षाप्त महनवस्त्तावस्थान्त्रकार्याः पूर्वार्यः २००२ १७ दश्रुकेताः अने वर्षा जनवर्षः १ वर्षातः ५ तथारी वर्षेत्रका क्षाप्त प्रकानसम्बद्धाः स्वतः वर्षेत्रकारोत्रकार्यः सम्बन्धसम्बद्धाः अनुयाविक्रीसम्बद्धाः सम्बद्धाः ।

ज्ञारस्वनेष्ट, अद्रभादम्ययः स्मनुद्धीम् ॥ १६॥ द्राप्ताननम्बद्धाः विकासद्दरमञ्जूषः जाजा शनं औपःमाप्यते ततः प्रांगुणस्यानीधवत्तेवे तथा अञ्चयति अदिरतमागणयानिकेतैद्दिन्द्रण्णनीतः स्रोपोतन्देशयायां आहारकद्विन

रहिनं अष्टादशाधिकंत्रातं अधिभग्नतः जिननामरहितासद्वराधिकं शतंभिय्यान्वे तारवादनेषुकोत्तरातः मिश्रेषतः सन्तिः एवं प्रमते-विषष्टिपायन्यक्तस्य, वेजोवेदयायांनरकविकष्यक्षयिकविकटिवकतः दितं एकादशोत्तरंभेयावःप्राप्यवे तद्यस्थियात्वे अष्टोत्तरातं सान

दितं प्रार्थां नार्वेश्वास्त्राचितं त्यां विष्णायं अहोत्तरातं ताः स्वार्वेष्णायं अहोत्तरातं ताः स्वार्वेष्णयं अहोत्तरातं ताः स्वार्वेष्णयं अहोत्तरातं ताः स्वार्वेष्णयं स्वर्वेष्णयं तायाद्वः स्वर्वेषण्यं स्वरं स्वर्वेषण्यं स्वरं स्वरं स्वरत्यं स्वरं स्वरत्यं स्वरं स्वरं स्वरत्यं स्वरत्यं स्वरत्यं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरत्यं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरत्यं स्वरं स्वरं स्वरत्यं स्वरत्यं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरत्यं स्वरत्यं स्वरं स्वरं

यांनरकविकयुक्त्मित्रकविकटिवक पूकेन्द्रियस्थावरातपोद्यतिर्पप्-

निकमितियो इसाहितं चतुरिए कंदातं ओचे प्राप्यते मिण्यात्वेजिनाहांरक्तिद्वंतिहितं पृकाषिकंदातं भवतितात्वादान्ते नर्द्वसक्यतुरु काष्मामेससनवतिः सिभानताद्वंभयातं व्यवद्यातिः नत्तासरायुष्ठपृद्यते पिद्यतिः
हिंगमेपतुः तसतिः पृद्यावन्त्र सोषिद्यालस्यातं तवः वर्षेषा १६ ॥
इवार्यः—अविस्तित्राणायो कृष्ण्य १ नीत २ काषीत ३ ए
मागणाये १६८ नो औत्य छै. एकतीसत्तर सिण्यात्व ग्राप्यात्मे
यांचे व एक जिननाम एवं ११८ नो छै. तेजोकेस्याये नरकविक्ष इ स्टम्भ व विगत ३ नव ए बांचे पृक्तते अगीयात्नो

याव व एक जिननाम एवं ११० ना छि. उजावस्ताम सक्त निक है दक्ष्म है विगढ़ २ नव ए बांचे एकस्तोअगीयारनो जीव छे. पड़ावेश्या ३ सूक्ष्म २ विगढ़ ३ एकेस्ट्रि १ वाद १ जातप १ ए बार विना एकसोजाठ १०० नो जीय छे. नरक तपा ए बार उजीत ४ ए सोड विना शुद्धवेश्या ए १०४ एकसो ज्यारनो जीव छे। १२। बारस्त्यमणाहोरे, सेसासुअवीसअहियसयपयडी। बंधुत्तरपयडीणं, ओहो प्सोसमासेणं ॥ १४॥ टीका----वारसपमणाहृते इत्यादि । अनाहारेआनाहासका-गणायांआहास्कद्विकदेवायुन्स्कविकतियंगायुः मराष्ययुः इत्यर्धेः विनादादशाधिकंशतंआदः शाय्यते मिष्य त्वेजिननामरहितं एका-दशाधिकंशतंमाय्यते सास्वादनेजातिचराष्टकं स्थावत्यतुष्यद्वंडातप-सेवार्तनपुंसकृतेद्विष्यात्वप्रकृतीनां अंचाभावेअप्टनवृतिः सम्यक्ते-पंचसारितः स्पोणिकेत्राख्यणस्यानेपृकाइतियः शेपासुप्वेन्द्रिय १ ससः १ योगाविकतेद्विककक्षायचतुष्क ४ चक्षत्यक्षदर्शनमन्य-संजिआहारकळक्षणासुसक्षत्रभागेणासुर्विशोत्तरशतंवचेपाप्यते ग्रण-

स्थानकमञ्चओवर्ववाधिकारवतृवक्तव्यं वंवीत्तरप्रकृतीनांपृषओयः

टबार्थः—अनाहारकमार्गणाए एकसो बारनो ओघ छे. शेष

समासेनेतिसंक्षेपेणउक्तः ॥ १४ ॥

मार्गणा १८ नरगति १ पंचेद्रीजाति २ त्रसकाय २ योग २ वेद १ कषाय ४ च्छुदर्शन अच्छुदर्शन २ अव्य १ संझीआहारकः मार्गणाये एकसोवीस १२० प्रकृतिनो वंच छे सर्वमार्गणाए जेटका क्छा तेटके ग्रुणठाणे वंधमकृति कहेवी. वंधनी उत्तर-प्रकृतिनो ओप संद्रोपे कछो ॥ हवे वंधस्वामीपणोकर्षनी कहे छे: ॥ १४॥।

केवलदुग्अहरकायग, रहियावंधंतिनाणविग्धाई । तेउससुहमासायं, सेसादुगवेयणीकुणगा ॥ १५ ॥

टीका—जयमार्गणासु ज्ञानावरणादिकमैज्कृतीःविभजनाह ॥ कैवल्डगृत्यादि केवल्रद्विकयपास्यातचारित्रमार्गणारहिताएकोनपि मार्गणाः नाणविज्याद्वइतिज्ञानावरणपंचकअंतरायपंचकरूपाः दश-प्रकृतीः नियमेनवंचतिवंवर्धांति वेदमीवेकमैणिकेवलद्विकपयास्याः तत्रक्षणाष्ट्रवेत्त्तास्तिस्रो मार्गणाः सहमासेपरायमार्गणासिहताश्चतस्रः एकंसातवेदनीयंवयंश्चर्दतिरोषाः अष्टपंचाशतमार्गणाः वेदनीयद्वि-कस्य कुणगाः वेदनीयद्विकर्णयकर्ताः ।। इति ॥ १९ ॥

टवार्थः — केनब्दद्वान केनल्दर्शन ययाख्यातचारित्र ए तीन मार्गणा विना सर्वेमार्गणाई ज्ञानावणी ९ अंतराय ९ दानहाअ भोगउपभोग वार्यातराय एवं ९ नो बंच छे. तथाकेनल्द्वगपया-ख्यात्तव्वस्मतंपराय ए ख्याः मार्गणाए एकातत वेरती बाँचे, होप अद्यव्वसमार्गणा साता असातावेदनी बांचे छे ॥१९॥

अध्यवसमागेणा साता तथा असातावेदनी यांचे छे ॥१९॥ नाणचउओहिदंसण, चरणितगेदेससम्मतिगमीसे। दंसणछगंचयंधड्ड, केवलहरूखायगे नरिथ ॥ १६ ॥

दीका—अथर्शनावरणीपंपार्गणासुविभजतात् ॥ ज्ञानचलुष्कं अविदर्शने, प्रशादिकं देशियरिवार्गणायां सम्पद्धविकार्गणायां सिश्रदृष्टिरपानं प्रशादकार्भणायां दर्शनावरणीयपुरक्तस्यानार्ष्ट्र-विकाद्वितंत्रवीयापके ग्रन्नहृद्धं वयास्वातस्यायांवार्गणायां दर्शनावार्ष्ट्रम् नावरणीयंवेवेनाराने वेद्युणस्थानेष्ठतद्वयंपायात्रान् ॥१६॥

द्यार्थ:—ह्वं दर्शनावरणीकभैतो मार्गणांपे वंच कहे छै. हात ४ अवधिदर्शन, सामायिक छेदीपरणपतीय, परिदार्यवर्शित, ह्यामिक हेदीपरणपतीय, परिदार्यवर्शित, ह्यामिक १ सायिक १ सायिक १ सायिक १ सायिक १ सायिक १ सार्गणिय दर्शनावरणीकमेती छ मकृति जांचे, बीणद्रांतीन न बांचे, वेचल द्वा तथा ययास्यातचारिये दर्शनावरणीकमेती जंच नयी ॥ १६ ॥ सुद्रमदंसणच्चमं, सेसानवर्यधगायगोयंग्मिम ।

तेउवाउनीयं, सम्मत्तपराउउचंच ॥ १७ ॥ ःश टीका-सुहमेङ्गयादि ॥ सङ्गतप्रयययारिने दर्शनावरणी चतुष्कंबेषेभवति शेषाःपंचचत्वारिश्त्यमार्गणाः दर्शनावरणीपनवान् बंधकानव्यंचकाः ज्ञातन्याः इतिगोत्रास्येकर्मणितेजस्कापवासुकार् रूपेद्वमार्गणेषुकंनीक्षेगीक्षंबेकुर्वति सम्मतपराज्ञकंबङ्गति सम् क्रवतः प्राःसम्पगसहिताः मार्गणाज्ञानचतुष्कारमपनतुष्कदेशनि

र्गोत्रंप्यवंबेभवति ॥ केवल्ड्कप्याल्यातेअवंदः ॥ १७ ॥ टबार्यः—सूरुमसंपरायगुणठाणे दर्शनावरणी ४ वंपाये शेष मार्गणा ४५ ते दर्शनावरणीची नव प्रकृति बांचे. हुवे गोवर्

रताविधदर्शनसम्यग्दर्शनिवकिमश्रवश्चणासु चतुर्दशमार्गणासु उद्दे

बंध कहे छे. तेउकाय तथा बाउकाय पुक्तीच गोधनो बंध करे सम्यक्त्व उपरछी मार्गणाओ ज्ञान ४ अवधिदर्शन ६ संपर्म समक्तित तीन मिश्रमार्गणाए एक उद्यगोचने बांचे छे।।१९।

· सेसादुविहंवंधइ, मोहेतिगनाणओहिदंसेसु । - सम्मतिगेग्रणवीसंति, चरणमणनाणडकारा ॥१८॥

दीकाः—सेसाद्रसिद्धंदुरपादि ॥ शेषाः मार्गणाः विचवारि शत्मार्गणाः द्विविधं अग्रेगीतंनीचर्गोत्रमुक्षंवेकुर्वति मोहंगोहनी पाख्येकर्मणिज्ञानस्यि वेक अवधिदर्शने सम्पनःविकामेहनीयस्य एकोनविश्विविभीभवति अनंताद्विधयत्वष्ट्यं सिस्पाल्योव्हर्गयं नयुंसकवेदक्षविद्दृतिसहनवंषेभवति विचरणाति सामायिकष्टेदोप-

नेपुत्तकवद्वावद्वत्ताताम्ययययाः विचलातः सामाध्यक्यः स्यापनीयप्रहादाविद्यद्विको चारित्रविके मनःयपैक्जानमार्गणायां मोहनीयस्ययुकादशाकृतिः वेधेमवति ताभ्याःसन्वकनचर्द्यस्याः स्यादियदकं युक्यवेरः एवंयुकादश्रावेभवंति शेषाः द्वारशक्यायः स्योनपुंतक्वेत्रपिट्यात्वद्धायाः वैध्यस्यवेनेनयवंति ।।१८॥ रुवारं:—सेमाक० रोपमार्गवाष् उचयोत्र १ नीरमीव २ वे प्रश्ति यांने भोदनीकर्मनी चेन गुणराणे कहे हो, ज्ञान अवस्थित्रांन सम्बन्ध ३ उपश्यक्षप्रीध्यान २ क्षापिक ३ ए मार्गवाष्ट्र भोदिक ३ ए मार्गवाष्ट्र भोदिक ३ ए मार्गवाष्ट्र भोदिक १ प्रकृति वांने अनेताहुबंधी ४ प्रियन्यक्षित्री, नर्भकरेट, स्वांत्रेड ए साननी चंच नर्या. मार्गान्क हेट्टोपस्यापनीच, परिहार्गवृद्धि, मनःपर्यव्ज्ञान एक्ट्री मार्गाए मोहर्नानी ११ प्रवृति वांचे वात क्यान, २ वेट मिल्यान्ट १ प्रकृत वांचे ॥ १८ ॥

ापु मोहनीनी ११ प्रदृति बार्चः वात्त्वरायः, २ वद् मिय्यात्व १ प्रतर न बांचे ॥ १८ ॥ हेयस्टदुगेहरवाएं, सुहमेनोयंधईडमोहस्स । तासणमीसेदेसे, नीअठाणठीआओपयडीओ॥१९॥

तासणमसिवस, नीअठाणठीआआपयडीओ॥१९॥
केरहदुगेहरवाण् इत्यादि । केरहदिके केवरडाान केवर-शनहभुगे न सरक्षमणः

च्छेदात् ययद्वश्रम्हम्माक्याक्यान् सास्वादन तथा क्रिक्षे तथा होद्देशिदतास्ये मार्गणात्थाने निषदाणतीयाओद्दति निकस्या-नद्यामगुणात्थानेनदास्थ्यताः बङ्गनयः येषेभवेति सारवादनिक्षि-यात्वभोहनयुंसरतेवेदीनापजुर्वद्यानः येषेप्राप्यते सिश्चेएकोन-द्यातिः प्राप्यते अनेनागुर्वेद्यान्यात्व्याक्ष्येदिक्ष्यात्वमोहरिद्वानः द्यादितांभनागुर्वेद्यन्यनुष्यअवत्यास्थानयनुष्ट्यर्थ्यान्यंसक्वेदिक्ष-याद्यादिताःपंचदश्येत्रेप्राप्यते ॥ १९ ॥

यात्यादिताःपंचरशकंवेशाप्यंते ॥ १९ ॥ २वार्यः—केतळ्ट्रगयपारत्यात्यात्रिते क्षरमसंपरायवारित्रे मो-त्वरमंत्री गर्कृतिनो वंश नयी. सारवारत सुणराणे २४ वांते. मेळे द्रश्लीस वांचे १९ देशविस्ते १९ प्रकृति वांचे पू पोताने तत्वरत्री प्रकृति वाणवी ॥ १९ ॥

29

सेसासुमग्गणासु, छवीसपयदीओमोहकम्मरस युणठाणसंभवाओ, आउभेया य नायदा॥ २०

बीका-सेसासुइत्यादि । शेषासु चतुःचत्यारिशत्यागेष पडारिशनिः पकृतयः मोहकर्मणः वंनेप्राप्येने समुराय हेम्राप् हरपञ्ची रहुपर रहा स्पारतायति शेषात् गृताधि हंती वर्षत्य हत्यः हे भांति गुणटाणसमपाओ गुणस्थानशत् हे प्रयागुणस्थानेज नयामार्गणास्थानेपिआयुगः भेताः जाताच्या तत्रन्रहातीरेग

तिर्यममनुष्यक्रपेत्रे आयुगांकोभानः मनुष्यमतीतिर्यमही। पेनेष्ट पसकाये योगस्य देश्ये क्याययनुष्ये अञ्चानपये आसतिन गेणाया दर्शन्त्रये केदयाया आवातिके अध्यानव्यक्ति मिध्य रमार्गणाया आहारकमार्गणायां सुपंत्तास्त्रायः चत्र्यमापेरी मारपने नभा प्रकेरियधिक केरियपप्यित्पर स्नरपतिक सणाग्र 🕅

ર્યેળનનુષ્ય જગૌદી ગાલું બેરીએ હતા: 🕕 તે હાર કામપાલ કાર્યમાર્યજ્ઞાય

प्रतिर्पेगापुर रहते । तीन । जानति हम्ळ नेत्रमा त्रापेपकामस्त्रीय मन्यस्त्वत्रकृषासु मार्गणासु मन्य्यदश्रमीही नायुनिरीवार्षी तना मनः वर्ववज्ञानमामाथि ६ छत्तीवस्थापनायपरिकारीय्यक्ति रेम क्षांत्र स्थामा प्रशासा क्या है। स्थान है। स्थान प्रमायवयात्र्यातायाः वसम्यम् दर्शनां सञ्च कतादारस्याम् । अपिती

क्वजावृत्त्वः दश्यकाः प्रावशेष्ठवः। जनवानवश्चानार्गाः स्टिन हार्य का देश का end -en a uich en a fimma bet 8t केंद्रजना १६ प्रश्तेष बादश्तेना वात. बादगाना 🚧

प्राप्त नरकाल र अवार्थ प्राप्तामा प्राप्तिक

पन्नासाचउम्रहो, सगसहोतिपन्ननिरयमाईसु; अडवन्नाचउनाईसु, थावरतिसुछपन्नतेउदुगे॥२१॥

दीका — प्रमासायसभी इत्यादि । तानेतरणारहासि ना-कादिपु, पतुर्य गतिषु क्याक्रमेपीन्यं तस्कातीर्थमाराद्वामामञ्चल-तिर्वयते ग्रातिम्याहास्कारकादिकग्रसमानेकटानिकप्रेकोन्त्रपरमान् रातपण्डमणाःसप्तरसम्बर्धमेनीति तिर्वगणतीजिननामाहारकदिक-रिद्वाचार्यारः वेचे स्मयते मत्यतीक्षास्यिक निर्वातीयमाहारकरिक-प्रायोग्यापुर्केन्द्रियस्थानस्यत्पसिद्वाचित्रपंत्रस्यद्वेकन्तरस्यत्विकद्यस्यान्यन्तमासुर्धिक्वेदिक्वमाहास्यदिकनस्यविकद्यस्यान्यन्तमासुर्धिक्वेदिकमाहास्यदिकनस्यविकद्यस्यान्यन्तमासुर्धिक्वेदिकमाहास्यदिकनस्यविकद्यस्यान्यन्तम्यान्यन्तम्यविक्वानिक्यान्यन्तम्यविक्वानिक्यान्यन्तम्यविक्वानिक्यान्यन्तम्यविक्वानिक्यान्यन्तम्यविक्वानिक्यान्यन्तम्यविक्वानिक्यान्यन्तम्यविक्वानिक्यान्यन्तम्यविक्वानिक्यान्यन्तम्यविक्वानिक्यान्यन्तम्यविक्वानिक्यान्यन्तम्यविक्वानिक्यान्यन्तिम्

34

ध्यप्तनस्पतिलक्षणास्य सप्तमार्गणासु वेद्यमाच्यते तेजस्कापगार् कायमार्गणायां तासुअष्टपंचाशत्सु मनुष्यक्षिकाभावेपरपंचाशत्के भवति ॥ २१ ॥

टग्रपंः—हये नामकर्मनी प्रकृति मार्गणाये कहे छै. नाह गाँवे नामकर्मनी ५ प्रकृति गाँचे. सुर २ विक्रिय २ आहारत २ नरक २ मुश्म ३ विकल ३ एकेन्द्रिय पात्ररातप ए सत न गाँचे. तिर्पय जिननाम आहारक २ तिना चीसठी गाँचे जिननामसुर २ वैकीय २ आहारक २ नरक २ ए नद न गाँचे. ५९ प्रकृति च्यार जातिना जीय एकेन्द्रिय विगवेदि रे ए जीय न गांचे तीन थावर एथी पाणी वनस्पतिष्ण ५६ गाँचे त उकाय १ वाठकाय यतुष्युत विगा छप्पत प्रसृति गाँचे ॥ २१ ॥

सम्मत्तमग्गणासु, गुणवालंचरणमग्गणाठाणे। चउत्तीसंचोसठो, मिच्छत्तिठया(उ)सुनामस्सावी

र्टाका - मम्मत्मगाणायत्तामाया २२ सम्परिनेम्यत्तामः
गेणामम्परस्यमार्गणा मतिश्रुना गिश्रानिकिञ्जिष्दर्शने १ ह्याभी
मद्माविकर्शनेषु होन्यस्यारियानुकीभाति । त्यमिन्यारविनयेदेशे
सार्वारद्भानेपेश्वर्या प्राम्थायतिन्योद्धाः
क्षेत्रस्युक्तमार्गणायांमन-प्रवैद्यानामाणि हादियारिनयेद्धाः
अत्यन्नकृतिः प्रथमप्रमूण्यान्यान्यायोग्याः श्रीत्वन्तिनयात् ।
म्याय्यार्वनानिस्यायपृष्यान्यात् भार्यात्य प्राप्तिने ताः भार्यात्रः
निस्यत्यान्यस्यायपृष्यान्यात् भार्यात्यः । श्रिकायपृष्ठिके

टमर्व--मन्द्राल जाज है। जार्रहारी व शान अगर्प

दर्शन क्ष्मिपशम क्षापिक सम्पन्नन ए मार्गणावे ३९ ओगण-पार्डास मकृति बांधे. तेर मकृति सारवादन आवनां तथा १५ निश्च आवतां ते न बांधे. उपदाम समीकृती आहारक २ न बांधे अने ले घारिज प्रत्याप मार्गणा मनःपर्यंव सामापिक हेंद्रीस्थाननीय परिहार ए ४ मार्गणावे प्याती मकृति हठी सातमी प्रत्यापी छे ते बांधे मिन्यान्व प्रत्यापार्गणा मिष्यान्व व १ अज्ञान विक अभय आवंज्ञी ए मार्गणावे जिननाम कर्म आहारक विना ६४ नो यंच छे नाम कर्मयी प्रकृति

सपमत्तसंजुआमग्गण, जाववंधईपंचसठीयो; अणहारेतेसट्टी. केवलहखायनोजयई ॥ २३ ॥

टीका—सपमत्तात् आङ्ग्यादि ॥२३॥ विभ्यात्वतः प्रम-सपमति प्राप्तकामासामाणास्याप्त्यते कृण्णाति वेदयावरे आहारकः द्विकादितापंपपृष्टिः चंत्रेप्राप्यते गृत्याप्त्यानातिकानाम्युक्तापंप् पृष्टिः चंत्रेभवति अनाहारके आहारकद्विकारकद्विकायेषे विपृष्टिनाम-मृष्ठतयः वेत्रेभवति । केवद्विकायाल्यानः नामप्रङ्गतिः न अजयति । नवंशतिङ्ग्यतः ॥२३॥

ट्यार्थः—प्रभव गुणटाणा पर्यत ले मार्गणा छे. कृष्णती-हकापोतादि ते पांसडी प्रकृति पर्यंत बांधे आहारक र न बांधे अविरित्ते मार्गणा पण आहारक न बांधे ए भावना पर छे प्रभत्तवी अबीक् छे पांसिड बांधे. अनाहारक मार्गणाये आहारक र नरक वे विना ६३ प्रकृति बंधाय छे केवच्छान मार्गणाये तथा यथारूपात चीरित्र मार्गणा नामकर्मनी मकृति न उपार्जे न बांधे ।। रहा। मिच्छतिगदेससुहम्मे, ठाणभवासेसयासुसणस्त्र अविरइतिलेसपणसङ्घी, नवछतिगपन्नतेउतिगे।र

र्टाका—मिष्ठ्यतिगङ्खाति ॥२४॥ मिष्यात्विविते मिष्यात् सास्वादनसिश्रवक्षणे देशविरतीम् इनसंपरायणारित्रे स्थानभवान् तिः वेषेभवति मिष्यात्वेषत् सास्वादनेपुकर्पषाशत् सिश्रेष्ट सास्वादनेपुकर्पषाशत् सिश्रेष्ट सास्वादनेपुकर्पषाशत् सिश्रेष्ट वित्ते वित्ते स्थानभवान् सिश्रेष्ट सास्वादनेपुकर्पषाशत् सिश्रेष्ट वित्ते स्थानभवान् सिश्रेष्ट सास्वादनेप्य स्थानिक स्

अष्टकमैनंधमकृतयः इत्यनेनमार्गणासुउक्तनंधस्त्राभित्वं अपमार्ग णासुउद्गयस्त्रामित्वंकययतृमयमंद्विषष्टिमार्गणासु मुळउद्गयस्यानानि कथयितुमाहु । मुळकर्माणित्रीणि उद्यस्थानानितान्याहु ॥२४।

टनार्थः — मिथ्यात्व ग्रुणठाणे चोसाठ सास्वादने पृक्तवर ५१ मिश्रे छत्तीस २६ देशिवरते ३२ सहम संपराये पृक ठाणे जे ग्रुणठाणो तिहां औपन्या जे ते मृकृति वांचे होप मार्गणा पंचेद्री वसकाय १ योग तीनवेद ३ कपाय ४ दर्शन २ भव्य १ संझी १ आहारक १ एट्डी मार्गणाते सत्तसाठि ६७ मृकृति बांचे. अविरित मार्गणा तथा तीन क्षेद्रया मार्गणाते विरे आहारक द्विक विना ६५ बांचे ते जो ठेडवाए ५९ ग्रुणति बांचे पद्मवेदपाए ५६ बांचे शुक्कवेदपाये त्रेपन बांचे ए मार्ग-णाये नाम मङ्ति वेहर्चाने कही ॥२४॥

अहसगचउरउदया, नरपणतसयोगसुकभवेसु; ग्ववगाहारगसंक्रिसु, अडचउअणहारगेउदया ॥२५॥

रीका-अहसगचारउदयाहत्यादि । तत्रज्ञानावरणादिसर्व-क्रमैणां उर्यवेद्यरूपः अष्टानां समकाटं विपाकन्वान् अष्टीर्यरूपंप्रथम-रपानं ततः सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रमाप्तः परभावारोचकस्वभावा-त्रभवः संदेकायतादिनस्वपरिणत्यासकळपरभावेष्यानासक्तोपयोगः अरक्तद्विष्टतयासर्वविभावेत्यजनस्वभावस्मणानुभविक्वेनप्रासराक्ष्ट्रस्या-नः उपरामभेणि क्षपक्रभेणियागतः उपरातिमोहरूपंप्कादशमं-क्षीणमोहरूपंदादशम्युणस्थानमधिरूदः आत्मामोहोदपरहितोभवति तदासप्तकर्मरूपंद्विवीयंस्थानकंभवति सएवञ्जीणमोहीएकस्विविनर्कञन प्रविचाररु रंगुक्यानं-यायन्ज्ञानावरणदर्शनावरणांतरायरूपं कर्म-यप सर्वयाशय क्रमा पाप्तसर्वभावात्रभासरूपे केवटज्ञानदर्शनान्त-वीर्यरीयमयातिकर्वचन्द्रपेवेदयति तस्यचतुःकर्गोदयरूपंतितप्रयान-कंभवतितस्यमार्गणासु मार्ग्वेनसङ्तिपंचेन्दियजाती वसकायमार्गे-णायां योगितकशुद्धकेदयाभव्यक्षायिकाहारकसंज्ञावक्षणाः मार्गणाः अदरागवर्डरुपादातिसर्वेदः श्रुत्यनेनप्तासुवार्गणास्अष्टसप्तचनुः हपाणि गाँणि स्थानानिपाप्यंते अनाहारकमार्गणाउपशांतमोहशी-णमीदगुणस्थानाभावात् सप्तीदयस्यानाभावात् अष्टवतुः इपी-द्वीरपानकीमाप्येवे ॥२५॥

टबार्थ:—हुदे मार्गणाचे उद्घरधानक कहे छै. आटतो उदय तथा सातनो उदय मोद्द दिना तथा धनवारीकर्य खपे ध्यारनो उदय पु ३ धानक छै. मतुष्पगनिपंचेन्द्रिय जानि मार्गणाये संज्ञा मार्गणाये एउडी मार्गणाये ८।७।४ नो उ हो अनाहारक मार्गणाचे आड तथा च्यार ए वे दानक n 34 n उपसमदंसणतियगे, नाणचउकेसुअइसगउदपो

सगन्वरअहुलाए, केवलिन्वअइसेसास् ॥ ३६ ना राज्य - उत्तम स्था व्हतादि । तसेपश्चमसम्पत्तरे पशुः भूरवर्षिक्षे दर्शनिकि मन्यादिमनः प्रयापे ते ज्ञानश्युष्टे अ समृष्कृतिकी अध्यक्ष्यानी नानु स्थारय है तिल्लाः सभावत् ययास्यानः

रिभागक गरमनी है। अध्ययनान अध्यान भोडादिकी प्रवासक रपत्न ग्रन् अवस्त्राच अवस्थानमार्गणाया चत्रांचे चनुरुपक उरवन्तान जनतपुरवर्षसभेनतर शतासुनारीणाम् नदीपुरस मध्ये ॥ ब्रह्मानप्रशासन्बर्णस्यानामात्रात ॥ ३४ ॥

ट्याये.— प्रायममाझनाइमैन ३ ज्ञान ४ गुढ्रने भिरे व तवा महत्ती ३१४ ३. प्यारवातवारिसार्गणार मान्ती म क्या कारनी इस संस्थान सरस्यीन र स्थानी अ के. रापनार्मेश्व १ इस १५४ जाड हर्नेनी अब व ॥२६

निरम्पुणमोद्धको, दो कुटमीक्सोईएपिसि । વિશેષ્ટ્ર (પ્રશેવન, મળુષ્-૧૬પ્રશી તથવા (મોપ

टक्स - इत्यान्त्र विन्तु यो स्टब्स् मिलस्सीयास्य स्थिति चेत्वहरूत्राहरू वर किर्मानका है । व्यवस्थान अस्ति। 文化开发 网络斯尔西西尔 计多数计 指 "人 电报音量" 化 打印制用 त्वंओघतः भवति ताश्रह्मा ज्ञानावरणीयपंचकं दर्शनावरणंनवकं वेदन नीयद्विकं मोहनीयपृहर्विशातिः र्खापुंत्रेदस्योदयाभारात्नरकायुःनीचे गोंत्रंअंतरायपंचकं एवंसमकर्मणांएकोनपंचाशव नामस्तुनरकगति १ नेरकातुपूर्वीद्विकं पेचेदियजातिः १ विकियांगीपांगद्वपं तेजस-कार्मणशरीख्यंबुंडकसंस्थानवर्णादिचतुष्कं ४ अशुभविहायोगतिः १ उच्छ्वासः निर्माणः अगुरुलयुः उपघातः । यसबादरपर्यापं ३ मत्येक १ स्थिर २ शुभरूपाः अपर्वाप्तास्थिरपर्ऋपार्विशवइतिसर्वतः एकोना-शीतिः ओचोदयः तद्यसिद्धांतापेश्चया कर्मग्रंथाप्रेश्चयातुअपर्या-मनामोदयनारकाणांनेच्छन्नि पराघातंचेच्छन्नितथापिएकोनाद्यातिः ओघोदयः मिथ्यात्वेचसम्यक्त्वमोद्विमश्रमोहंविनासप्तसप्ततिरुद्रयेभवनि सास्वादने मिण्यात्वापर्याप्तनस्कानुपूर्वी रूपाणां प्रकृतीनां अनुद्रेये चतुः सप्ततिः उरयेभवति मिश्रेअनंतात्त्रंषिचतुष्ट्याप्यमेमिश्रमोहर्नाउः वेचएकसप्ततिरुद्देपाप्यवे एवचमिश्रमोहनीयायगमेसस्यग्मोहनीय नरकातुपूर्वीमी छनेद्वासप्तति अविस्तसम्पणगुणस्थानेवाप्यते इति नरकगतिउदयस्त्रामित्वं देवेसिदेवगतिविषयेषुचृङसीतिचनुराधिकाः शीतिचतुरशीतिः उदयेओवः माप्यते ज्ञानावरणीयपंचकंदराना-बरणीयनत्रकं वेदनीयद्वयं नपुंसकतेदंविनासस्विद्यतिः मोहनीदेः देवायुः गोभद्रयेउद्यगोनंयदापिकिल्विपादीनांनीचैगोवंत्रपापिन्। ह्व-ष्टत्वाद्यभावानापेक्षितं । अंतरायपंचकंएवंससकर्मणांरंचारान् नास्न-स्तरेवगतिरेवातुपूर्वीद्वयंपंधिद्वयज्ञातिः १ वैक्रिपद्धिकं तज्जनसर्वयं समचतुःस्रसंस्थानंवर्णादिचतुष्कं ४ शुभविहारोगहेः स्ययात-नाम १ उद्योतनाम १ अयुरुख्युनाम १ निर्मापनाम १ उस-घातनाम १ त्रसददाके अस्थिर १ अगुभद्दकेग १ अनादेव १ अपराः इतिपतुःखिरात्नास्नः सर्वमीष्टिनेन्तुःश्रास्तेः प्राप्यते । केचित्दुःस्वरापयांत्ररूपोदयङ्ख्यन्ति नदनिक्वयंन्यविकृतं नार 30

गींत्रस्यविपाकः अष्टवाप्रज्ञापनोक्तस्यदेवेध्वदर्शनात् वेननाधिः उपचातोदयः सुशरीरपुद्धरोपचयस्यन्यूनाधिक्येनगणनात्गृहीतंस तुरशीतिओषः लब्धिपर्याप्तत्वंदेवानांनास्तितेनापर्याप्तइतिनापेधि कार्मभंयीकेसिद्धांतेत्वपेक्षितं "देवापद्यताविअपद्यताविरितपाअन् कर्में येपेपिदेवगती जीवस्थानद्वयमितिवाक्येनगृहीतमपिअतः उ त्तिकालपर्याप्तनामोदयेपंचाञ्चीतिः सम्यग्मोहनीय १ मिश्रमोहर्ग यस्योदयाभावेमिथ्यात्वगुणस्थानेऽशीतिःसास्वादनेमिय्यात्वमोहर् यापपोप्तमंतरेणएकाश्चीतिः मिश्रअनंतात्त्रवंधिदेवातुप्वीउर्याभा भूगों भी में को संबंधिक है। इस हो है है है है की 200 Physical community of the con-ક્ષું કર્યું કરોલા હુ કરે આ ગલ કે આવા કે બુલો ફોર્યું સાહિયા છે. મોલી અર્થિત કે दये ओवः भवति तत्रज्ञानावरणीयपंचकं दर्शनावरणीयनगरं वेदनी पद्भिकं मोहनीयस्पचतुर्विशतिः विश्वमोहनीयसम्यगमोहनीयस्री येदपुरुपयेदोदयाभावान् तिर्पेगायुः १ नीचेगानंअवकलपासादीनां उधेगायोदयः कथंन १ इत्यत्रोच्यतेयद्यपिशुभगोत्रोदयेनइक्ष्येपि प्रज्ञापनोक्तोशेगीप्रविपाकानां मध्येकस्पाप्यसंभवात् । नीशेगीप्रभेक भेतरायपंच कंप्यंसारकर्मणांसायस्यास्थित्नाम कर्मणः वपश्चिशत्ति पंगदिकं एकेदियज्ञानिः आहारकंत्रक्तेशरीरचतुर्पं हुंडरतंरपाने क्यांदिचतुष्ट्य उष्ट्यासनाम ? आन्योबोतेनिर्माणेअग्रहस्य ! उपयान रे पराचान रे बादर रे पर्यानवन्ये हस्यरगुभयशोहपंत दकं हुम्बर्गवनास्यात्रसन्यकः युव्ययःविश्वनः युवाराविभवीतिः अन्ये मनेमंद्रननंद्रविन्युद्धने तथापि हाम्बर्धि हासूदील गानीपाने पराकतोदयः कार्मवेथा रश्कीतेषित्रशायनापायकीतरमातः प्रोति याणो हुई र-लंतु हेवाबियोगात् तेननीयानं तयोग्रहणे प्राची स्थि

-1]

प्यशीतिरेव सास्वादनेस्यश्नविकामिध्यात्वातपानुद्येपंचसप्ततिरुदये भवति गुणस्पानद्वयस्यवसंभवात् तिर्यम्मतिविषयेनवाधिकंशतंबदये-भवति ज्ञानावरणपंचकं दर्शनावरणनवकं वेदनीयद्विकं मोहनीया-ष्टाविंदातिः तिर्पेगायुः नीचैगोतं १ अंतरायपंचकं एवंएकपंचारात सप्तकर्मणांनाम्नः अष्टपंचाशत् निर्यमृद्धिकं २ जातिपंचकं शरीर-माहारकमंतरेणचतुः औदारिकविक्रियोपांगद्वयं संहननपद्कं संस्था-नपदकं खगतिद्वयं जिननामविनामत्येकसप्तकं वर्णादिचतुष्ट्यं प्रस-दशकं स्थावरदशकमिति अष्टपंचाशतूउभयमीख्नेनवाधिकंशतंओधे मिथ्यात्वेसम्यगुमोहमिश्रमोहविनासप्ताधिकंदातं । सास्वादनेसुक्ष्म-त्रिकाताप्रमिश्याखंविनाह्याधिकंशतं मिश्रेजातिचतुष्कं अनेतातुः विचित्रप्रकरमात्ररनाम १ तिर्यगानुपूर्वीमंतरेणमिश्रमोहोदयेनत्रिन-वतिरुदयेभवति अविरतसम्यगृदर्शनेमिश्रमोहापहारेसम्पग्मोहनीय-तिर्पेग्गादपूर्व्वीउद्येचतुरश्चीतः देशविरतीअप्रत्याख्यानचत्रप्यंवै-क्रिपद्विकद्वर्भगानादेयायदाः तिर्पगातुपूर्व्वीस्थ्यणदशप्रकृत्यपग्रमेच-तरशीतिः उदयेमाप्यवे सप्ततिग्रंयेअनादेयोदयः विवक्षितोपि आहडजासध्यद्योगमिकवड " वाग्योगप्रत्ययोदयत्वेनयोगरोध-काटेगृहीतत्वात् वाग्योगरहितानभवति सप्ततिवाक्याशयोपज्यएवं जानंति मण्यप्रतमञ्ज्यगतीचतुराधिकंशतं उदयेभवति तत्रज्ञानाय-रणादिसप्तकर्मग्रुतिर्पग्नरकदेवायुर्वतरेणद्विपचाशत् नाम्नरतन्तरग-रयातप्रध्वीटञ्चणद्वयंपंचेद्रियजातिः शरीरपंचकं उपांगनयंसंहननपर्क वर्णादिचतुष्टमं खगतिद्धिकं आतपस्यपृथिवीकायोदयात् उद्योत-रपविषेग्परययत्वात् तयोरभावेषत्येकपरकं असदशकंस्थावरम् श्म-साधारणवर्जमकृतिसप्तकं एवंद्विपंचाशव्यभयमी छने चतुरिष हंशतं उर्येओघः संभाव्यते तत्रमिष्यात्वे आहारकद्विकानिननाममिश्र-मोहसम्पर्मोहाभावेनवनवतिरुद्येभवति सास्वादने मिथ्यात्वापर्पापं

टनार्थः—नास्क्रीनीमार्गणाए इगुण्यापसीनी उदय छे देव गतिमार्गणाये चोरासीनो उदय छे, प्रेत्वीयमार्गणाये असीम्ह तिनो उदय छे, तिर्थचगतिमार्गणाये पुक्तीसातनो उदय छे महाच्याते पुक्तोबेनो उदय छे. ॥ २७ ॥

विगलेदुर्सिईचउदससयं, पंचेंदिएसुपुढविवणे।७ ग्रणसीईतेउदुगे, सगसयरिजलंमिअडसयरी ॥२८।

दीका—विगलेड्सीइ ह्रियादि । विनलेड्डिनिचत्रिरिवर्क स्रणेमार्गणानवेद्वाचीतिरुद्येओचः भवति ज्ञानावरणपंचर्वदर्शनि बरणनवर्कं येदनीयद्विकंभोह्नीयस्यचतुर्विवातिः सम्पर्मोहिनिश्र मोहपुरुपद्मीवेदल्डलणप्रकृतिचतुष्ट्यवज्ञीतिर्वगासः नीर्चगीवेत्रंत सप्पंचर्ननाम्नस्तुनिर्वर्शाप्रकृतिचतुष्ट्यवज्ञीतिर्वगासः निर्चगीवेत्रंत सप्पंचर्ननामनस्तुनिर्वर्शाद्वर्ज्ञद्वीद्वज्ञातिओदास्वर्दनासकार्मणस्त्रं ग्रह्मसस्तित्वर्षम्

पाठातोर्

गणसोदगीसयरिगइतसिसयंग्रिसगसयरि

यर्गादिचतुर्वज्यासीयनागुरुत्जनिर्माणीववातपरावानपरकं सः भगे आहे पर्भन्तं प्रवस्तावस्य स्थानस्य समानार प्रवस्तिनारं या वर्गम् कर र्मिनपर्धावसम्मान्नेद्वासीनिः ओपीदयः माप्यते अवमिष्पाते-द्वपर्यातिः साम्बाःनेनिध्यान्यापर्यामद्वयंत्रिनाजद्यातिः एवत्रीदिन यतुषीदियज्ञानिः चतुर्रान्द्रयेतुचतुरिन्द्रियज्ञानिवहणेनक्षेप ही-भ्द्रपश्नुबाच्य चडदशसयपचेन्दिवेमुत्तिचेचेम्द्रियमार्गणाचा चतुर्दे-शाधिवज्ञातउद्येभवनि तवसप्तकर्यणां पंचपचादावृताम्नानु एकेन्द्रि पादिजातिपतुरुपाभावेरया प्रस्तः मसाधारणातपाभा रेपरोर्परोनपष्टि-र रेपेमाप्यते तदुभयमी छने चतुर्दशाधिक दानभवनि ओयतः मि-पान्येआहारकाईविक्थमोहसम्परमोह जिननामटशुणम्कृतिपं **पश्चमश्चनयाधिकं यानसारवादनै निध्यात्वापर्यासनरशातुपूर्वीलक्षण**-प्रशृतिवयमेनरेणपद्मीयव्यानंभवतिमिभेतुअनेनात्त्रंपीयतुष्यातुष् धीं भिकापगमेमिश्रमोहर्मा छने चरातमेवो द्येमाप्यते अविरतिसम्पग्-दर्शनेषनुगर्धकशनदेशविरतेसप्ताद्यातिः एउसर्वग्रुणस्यानकेषुओयोः द्रपरद्वाच्य पुरुविप्रणेगुणसीई तक्ष्यभिव्ययमार्गणायां पुरोना-श्चीत ज्ञानारर्णायपंचकंदर्शनावरणीयनवकं येदनीयद्विक्रमोहनीय-धतुर्विशतिः तिर्पेगायुः नीर्धगोत्रंअतरायपंचकंनामकर्मणः निर्पे-ग्रुद्धिकं प्रवेन्द्रियज्ञातिः १ शरीरविकंतुंडकसंस्थानंवर्णादिचतुष्ट्यं मरपेकसप्ततंत्ररागुरवादेयंविदीषपदकं साधारणदुस्तरविनारयात्ररम् एवंद्राविंशन् अन्यस्पातीदर्भागीरस्तु कर्मदंयःशपापेश्चयात्तेषं । वर्णस्वित्रनरपतिकायेषिणुकानाञ्चीविरेषीदयस्तथाप्ययंभेदः र्भणासमचत्वारिहान्नामायुआतपोदयाभावेसाधारणोदयेचदार्तिहात् । आतपोदयः पृथिप्यामेवभवति मिष्यात्वेषुक्येनाद्यीतिः सास्वादने-मुक्ष्मअपर्याप्तमिध्यात्वाभावेपंचसप्ततिः प्राप्यते अनापर्याप्ताभा-वस्तुरहत्वपर्यामापेदयं आतपोदयस्तुपर्यामानांतत्पर्यामत्वं सास्ता-

दनेनभवति तेनतस्यापगमः वनस्यतिकापमृत्ययेष्ट्रकोनाञीतीविध्यात्येषुकोनाञीतिः सास्याद्नेमुद्दभविक्तमियात्वाभावेषव्यति। प्रवेगुणस्यानद्वयंतुमन्येक्रनस्यात्वाभावेषव्यति। प्रवेगुणस्यानद्वयंतुमन्येक्रवनस्ययंतावारणवनस्ययंति त्रवाति स्वरीअपकाषेत्रमस्ययंतिसप्तसप्तिति त्रवाति क्ष्मणां सम्यत्वातिक्रावेष्ट्रम्यात्वेष्ट्रम्यातिक्रारितिः द्वंद्रकंतिस्यान्वर्णादिक्तुष्ट्रयंभावेकं प्रवेद्द्रम्यातिक्रारितिः द्वंद्रकंतिस्यानंवर्णादिक्तुष्ट्रयंभावेकं प्रवेद्व्यत्वमातिक्रारितिः द्वंद्रकंतिस्यानंवर्णादिक्तुष्ट्रयंभावेक्षति प्रवेद्यत्वम्यावेक्षति विकाशिषेषव्यक्तं साधारणद्वस्वरावक्रविनाशेषयस्य प्रवेपक्षविक्रवर्णवेन्तिः सास्यादनेष्ट्रभापयातिक्रया

रग्रामञ्ज्ञाणपंचकं साधारणहुःस्वरिवनाशेषं स्थानरपटकप्वजमयनिव नेषद्समति मिट्यास्वेतुष्ट्समतिः अनिलतिवाष्ट्रकायल्यामारणा यां वैकियशरीरोदयगणनेकोलपिशत्सससतिः प्राप्यते ॥२८॥

Barga and Selection (1865) in Selection (1888)

टमार्थः—विकलेन्द्रिनो छ्यासीनो उदय छे. पंचेन्द्रिमार्गः णाये एकसोचीदनो उदय छे. एच्वीकाम तथा वनस्पतिकार्ये इग्रुप्यासीनो उदय छे. तेउकाय वायुकायने सतहत्तरिमक्रतियो उदय छे. अपकाये अटहत्तरिमक्रतियो उदय छे. ॥ २८ ॥

सत्तरसस्यंतसंमि, इगलाअभवदुअणाणंमि । १ मणयोगकसापसु, विभंगचसूसुनवगसयं ॥ २९ ॥

* (पार्वतर) अभव्यअक्षाणसत्तरअहिअसयं ।

टीका-सत्तरससयं इत्यादि । त्रसकायलक्षणमार्गणायांसप्त-दशाधिकेशतंपकृतिनांओघेउदयोभवति तत्रसप्तकर्मगांपंचाशतृना-म्नस्त एकेन्द्रियजातिआतपस्थावरमूक्ष्मसाधारणलञ्जणंप्रकृतिपंचकं नास्तिशेपाद्वापष्टिः उभयमी छने सप्तदशाधिकशतं उदये ओवतः प्रा-प्यते तत्रमिष्यात्वेजिननामाहारकद्विकमिश्रसम्यग्मोहारुयप्रकृतिपं-चकं विनाद्वादशाधिकंशतंसास्वादनेतुमिध्यात्वापर्याप्तनरकातुपूर्वील-क्षणनयमंतरेणनवाधिकंशतंउदयेभवति मिथेअनंतात्रवधिचतप्रपात-पूर्व्वीत्रिकविकलिकाभावे मिश्रमीहनीयप्रक्षेपेचवक्तीनांशतंउदये-प्राप्पते अविरतसम्यग्दर्शने चतुरिक्षकंशतंदेशविरतेसप्ताशीतिः एव-ओघोदयबत्याबद्वयोगग्रणस्थानकंताबज्ज्ञेयं अभव्यमार्गणायां अज्ञा-नर्धिकमार्गणायांसमद्दशाधिकंशतंओचे उदयोभवति मिश्रमोहसम्प-ग्मोह्रजिननामाहाश्कद्विकंत्रिनासप्तरशाधिकंशनंउद्येपाप्यते मण-योगतिमनोयोगमार्गणायां एकेन्द्रियादिजातिचतुष्क स्थावरचतुष्क आतु रूखीं चनुः कातपलक्षणश्योदशंविनानवाधिकंशतं ओघोदयेभ-वति मिध्यान्येजिननानाः स्व द्विकमिश्रसम्यग्मोहंविनाचत्ररिकं-शतंभवति सारवादनेभिष्यात्वं विनाअधिकंशतंभवति मिथेरवनं-तातुरंधिचतुप्कविनामिश्रमोहनीयक्षेपेचशतंउदयेभवति सम्यग्धुणे-त्तमिश्रमोहानुद्रये सम्यग्मोहोदये शतमेवदेशविरवेतुअमत्याख्यानच-मुष्ट्यनरकगति नरकायुर्देवगति देवायुर्वभंगाने योयशोलक्षणप्रकृति खयोदशक्तंतरेणसप्ताञ्चीतेरुदयोभवति प्रमत्तेत्वे राष्ट्रीतिः अप्रमत्ते-पर्तप्तिति प्रयावत्सयोगिगुणस्यानकेद्विधत्व रिहादुरयेपाप्पते । इति । क्यापचतुर्येतुर्येधकपःयेमानचतुष्क होभचतुष्क जिन-नामलक्षणम् इतित्रयोदशाभावेनवाधिकवातं मिध्यात्वे आहृतद्विकः मिश्नसम्परमोहं विनापंचाधिव कातंसारवादने सक्ष्मित्रकातपनिष्यात्व-नरकादप्रभौतिनानवनवतिः प्राप्यते एवं गुणस्यानकेषुअनिश्वि-

बादरंपावत्वक्तव्यमानकपायेण्येयमायाकपायेण्येवंग्रुणस्थानद्वकंष्यं वत्ववाच्यं स्वनामकपायतोअन्येनिवापांवेचछ्वदर्शनमार्गणयांचन तिचतुष्क स्थावरचतुष्कावपुर्व्वाचतुष्कातपं जिननाममंतरेणच्यं वर्शनेनवाधिकंशतं मिथ्यात्वेआहारकद्विकासम्पक्तवार्वेकंशतं मिथ्यात्वेआहारकद्विकासम्पक्तवमीवनंतरेणच्यं वर्शनेनवाधिकंशतं मिथ्यात्वेआहारकद्विकासम्पक्तवमीवनीवंतरंणच्याियंकंशतं मिथ्यात्वेआहारकद्विकासम्पक्तिमीहत्वेपेशतं सारणव्शानिमानावाधिकंशतं मिथ्यात्वेवन्यवादिक्षतं देशस्तावशिष्कं स्थानं वर्शनेमिश्राभावत्याच्यं विभंगज्ञानेसम्पम्मोहनीयज्ञातिच्यव्यक्तर्यः स्थान्यत्वाहारकद्विकातपालिच्याव्यक्तिस्यान्यत्वाहित्यवाव्यक्तिस्यान्यत्वाविकात्यव्यक्तिस्यान्यत्वाविकात्यव्यक्तिस्यान्यत्वाविकात्यविकात्यत्वाविकात्यविकात्यत्वाविकात्यत्वाविकात्यत्वाविकात्यत्वाविकात्यत्वाविकात्यत्वाविका

स्मार्थः — पुकसो सत्तरनो उद्ध भसने विषे प्कॅद्रियआतं।
पात्रर सक्ष्म साधारण विना पुकसो सत्तरनो उद्ध छे, प्रसम्प पिष्पात्व अभन्यमार्गणाये वे अज्ञानमार्गणाये पुकसो सत्तर्त उद्ध छे, भिश्रमोहनी १ सम्यक्त्वमोहनी २ जिननाम १ आ हारक १ आहासकमिश्र २ पूर्पाच नवी. मनोयोगने विने क्याप ४ ने विषे विभंगने विषे चुह्यदर्शनने विषे पहालेखाने विषे पुकसो नवनो उद्ध छे. तिहां मनोयोगने जाति ४ थाव ४ आङ्गद्धी ४ आतप पू तेरनो उद्ध नवी, क्याप ४ मे अन बार क्याप जिननाम विना विभंगने चशुदर्शननो पहने प्रयानसार्थियस्य, १६विज्ञाणस्यमहिष्टम् अस्यम् । दृषिभत्यप्रयाच्यक्ते, जनसम्बद्धिमस्यक्ते तो १६८०।

रेक्षा- दमा यस्तिसकः । मुख्यसंकराम्ब्राणाम्यदा हा त्यानकारेणानुवर्गनामुद्रक अवर्गन्तक विवासामध्यापकार्यासी भागाताः सा वाव प्रापेटि चनु बन व्यक्तिकृष अञ्चयक्तर वासम् RATION OF SECTIONAL STREET, Section of STATISTICS रामसारकाराणु । इ.वे.ह्याजारचाराणुग्रन्तेस्थाचरच्युरबाद्यच्य कारणहा दिल्लाक दान में शाक यह प्रतिनाह कर दिन शिक्ष में स्टब्स राष्ट्रप्रथाति संग्रहिन्द्रात त्रचु कि साम्बर्धत्व प्रप्रिकतास्या ८० पर्यास्त्रावर्थाः संदित्र नाथकराष्ट्रितः विकासीत्र कृति प्रियन्त्रीयांस unigated देखनामाहित्य हात श्रेमाराटांक नहेंयाप्राचात गांव भूतर भूतिकार्थाः । अस्य भायाः चित्रं चद्याः तिवासम्पूर्वे हेdennie aluebe ging felfgautgengete einaftig enguly. देशाभागुनीहिनीयोग्योग्यास्यार्थान्यः प्रान्यः प्राप्तात्वर्थः न्याद्वास्याद्वेत्रः त्रप्याद्वाति । एक्ष्यभाष्ट्रायावन्त्रय तथा भनीतिनार्यं सन्तादिक्य मारारकः विच्नदर्भयाः व्यक्तित्रकात्रविद्यानाः वर्षे व्यक्तिविद्यासी प्रदास हासिकार्यानेशस्य वर्षा दोन्द्रवयुक्तानेपालावः । सन्दर्भात्रवदर्भाः पिक्टापर देवीय आष्ट तक्छाइटवावेगाचासाव वेस स्टब्स प्रसम्बद्धारमान् विविनादिष्यदाष्ट्रः नाम्बस्यार पुनरवेतो सानुपन्तीः इ.स. ११स विद्यादि जाति प्रदेश स्वाधनस्य वस्तानास्यावकः । ना प्रतिना માંજાનનામાદાશ્વર્ધિત્રસ્થાદદાક દિનાપનુ પ્રવાદાયુઉનદ્નીહને પ્રક प्रवास कर्य को का व्यविश्वसम्बद्धाः व्यवस्थितः स्थापिक स्थापिक स्थापिक માત્રા કે પ્રદેશોયન જો આ કેલોક્ટ હોલો કેલોન્સી સ્વેટ કહિયાની પાર્ટ કો પેન શાલન ને અના જ માન માન કર્યા જ કરેલા હો કરે જ કરાય તાલ કર્યા છે. તેમાં જો મા

. ;

साएवमिश्रमोहापगमेसम्यग्मोहानुपूर्व्वात्रपोदयेचनवनविः

١:

ग्दर्शनेसाएवाप्रत्याख्यानचतुष्ट्यदेवित्रकदुर्भगत्रिकवैक्रियद्विक र्यगानुपूर्व्वां सक्षणचतुर्दशापगमेपंचाशीतिः देशविरतिग्रण केउद्योभवति । साएवपस्याख्यानचत्ष्कनीचेर्गोवोद्योतिवर्ष तिर्यगायुर्वञ्चणाष्टकानुदयेसप्तसप्ततिः प्राप्यते, अप्रमतेस्यान काभावात्चतुःसप्ततिः अपूर्वकरणेअतिमसंहननिकसम्यग्नीह पगमेसप्ततिः, अनिवृत्तिवादरेहास्यपदकाभावात्चतुःपष्टिरु वति ततः परंवेदाभावेत्वष्टसप्तति स्तथा ज्ञानाप्रकाविषदर्शन पशमशायिकमार्गणासुजातिचतुष्कस्पावरचतुष्कातपजिननाम द्यंधिमिष्यात्वमिश्रलक्षणपोडशाभावेषडधिकंशतंओघोदमः रतसम्यय्दर्शनेआद्वारकद्विकाभावेचतुरिधकशतं, देशेसप्तर वात्सप्ताचीितः, एवंसीणमोहंयावत्वाव्यं सयोपशमेअप्र वत्, क्षायिकेतुजिननामक्षेपेसम्यामोहनीयवजनपद्गिकारी विगुणंषावत्वाच्यम् ॥ उपशमेउपशमसम्यग्मागंणायांश्चयो मायोग्यपडिषकरावेआहारकदिकसम्यग्मोहनीयाभायेअधिक धेपाप्यते, देशेऽशीतिः प्रमत्ततनस्यानिद्वितिकापगमेपंय एवं उपशांतमो हं यावन्वाच्यम् ॥ ३० ॥ टवार्यः-वचनयोगे एकसोवारनो उदय जातिएके थापर ४ आनुपूर्वीआतप पृहुनो उदय नवी. स्रीवेदने वि २ जाति ४ आहारक २ आनुपूर्वी ४ धावरहरूम स ३ आत्रप एवं १६ मकृति विना एकसोजनी उदप छै ज्ञान, अत्रधिदर्शन, श्चयोपरामसमक्षित ? प्रदर्श मार्गमारे

४ धातरमूक्ष्म अपयोगनाम साधारण ३ आतप १ जित-अनतात्त्रवेषि ४ विष्यान्त १ विश्वम् १६ विना १०६ ४० उदय छे. इहां अपर्याप्तपणो काढीए ते रुन्धिअपर्याप्ती-ो छे. उपशम समकित एकसोळ मध्येयी स्त्रीवेद १ आ-द्विक २ ए तीन काडींगे तेवारे एकसोतीननो १०३ नो छे. ॥ ३० ॥

इतिगिदेससुहमे, सठाणुदओअपुरिसिअइसयं⊛

गणेइगसीई, केवलिजुअलेवयालीस ॥ ३१ ॥ डीका--मिच्छतिग इत्यादि ॥ मिच्यात्वेसम्यग मिश्रमोह-हारकद्विकीदयाभावेसप्तदशाधिकशतंत्रदयेप्राप्यते, सास्तादने-

शाधिकशतंत्रस्पेमाप्पते, मिश्रेशतंमाप्यते देशेसप्ताशीतिः उद-पते, स्रश्मसंपरायेपष्टिरुद्येप्राप्यते, सगत्तिस्वकड्तिस्वस्वग्रण-प्रायोग्योदयाः माप्यंते, पंढेनपुंसकवेदटश्चणेसोल्ड्सिपोडशा-ातंउद्येओयः माप्यते, देवनिकं वेदद्विकं जिननामोद्यरहितं , मिण्यात्वेसम्यग्मिश्रमोहाहारकद्भिकादितद्भादशाधिकं शतं-ो, तदेवसक्ष्मित्रकातपिमध्यात्वनरकालपृत्वीविनापडाधिकशतं-

दनेमाप्यते, अनंतानुवंधिस्यार्वाकेन्द्रियादिजातिचतुष्कानु-तेर्पगानुपूर्वात्रिकानुद्येभिभ्रमोहोदयेपंचनवतिः साएवंभिश्र-इद्ये सम्यग्मोहोद्ये आतुप्रवींप्रक्षेपेचअप्टनवनवतिःपाप्यते वक्षपायमञ्ज्याञ्चप्रश्रीतिर्यगाञ्चप्रवीं नरकत्रिकवैकियद्विकदर्भन

त्रभावेचतुरशीतिःप्राप्यते एवप्रमचेएकोनाशीतिः अममते-: अपूर्वेपुकोनसप्ततिः अनिवृत्तांतुपष्टिः एववाच्यं प्ररिसिति-दिमार्गणायां जातिचतुष्कस्थावस्यक्ष्मसाधारणातपनस्किवक-*** (** पाडांतरे)

सगसंदेसोलपुरिसेअ।

जिननामअन्यवेदद्वयाभावेअष्टाविकहातंओवोदयः प्राप्यते, ग्रण् स्थानकमश्रमिथ्यात्वे आहारद्विकसम्पगोहमिश्रमोहामावेवतुर्वि कवातंसात्वार्त्नोमिथ्यात्वापपांति विनाद्वाविकहातंमिश्रअनंतातुर्विव आत्यप्ट्यांविकिष्वानामश्रमोहर्द्वोपेचपण्णवतिः सम्पग्दर्शिमिश्रमोहा-भावेसम्यग्मोहानुष्ट्यांविकक्ष्रोपेचवतिः, देशवित्तोअमरपारपार्वीप-'वैक्तिपद्विकदेविवक्तमन्वपतिर्पणानुष्ट्यां हुमेगिवककपचर्तराव्यप्याने मेपंचाद्यातिः ममत्तेपुक्तेनाचातिः अममतेचतुः सातिः अर्गन्ते सातिः अनिष्टतिवादरेचतुःसष्टिः इतिक्षंयं मणनाणेति मनःपर्यवक्तमे प्रकाञ्चतिः ममत्तपुणस्थानोद्ययोग्याततः क्षीणमोह्यावस्येपे मेनवज्ञानकेनव्यर्शनव्यन्नाणमार्गणाह्येदिक्वस्वार्ग्वात् वर्योदस्यो णस्थानोदयेषन्वर्वेशनव्यन्नाणभागेणाह्येदिक्वस्वार्ग्वात् वर्योदस्यो

ट्यार्थः — मिष्यात्व १ सास्वादन २ सिश्र १ देशविति १ स्वक्ष्मसंपराय एट्डी मार्गणाय नामग्रुणटाणे जे कही वे प्रकृ हिनो उदय छे, सिष्यात्वे ११७ एकसो सत्तरनो सास्वार्ते एकसो अर्गायार १११ उदय छे, सिश्र १०० नो मकृति उदर छे, देशविरतीर्मे ८७ सत्यासी प्रकृतिनो उदय छे, सुस्प्रमंपरार्षे ६० साठ प्रकृतिनो उदय छे, प्रस्प्रवेद एकसो आटनो १०४ उदय छे, जाति ४ यादर ४ आत्य १ जिननाम १ नर्स्त १ वेद २ ए १५ प्रकृति नयी. मनःप्रवद्ताने एक्ष्याची प्रकृतिनो उदय छे, जे छटा ग्रुणटाणे छे वे हेवी. केवस्त्रानं नेवस्टर्शननी बेतार्छास प्रकृतिनो उदय छे, तेरसा सयोगी ग्रुण टाणा मस्य उदय छे वे हेवी। वेर ॥

. परिहारेअडसयरि, सामईयछेपसु हंतिइगसीह । सद्दीओअहक्कापु, इगवीससयंअचकपुम्मि ॥३२॥

दबार्थः—छटा गुणटाणाप्रस्थां ८१ इक्यासी प्रकृतिनो छे ते मन्ये खाँबेद १ आहारक कार्याप् वेवारे परिकृतिकृतिकृति चारियमे अटहत्तारे प्रकृतिनो उदय छे, सामाधिक १ छेदीप-स्वापनीयचारिक छटा ग्रणटाणाबाहाने इक्यासीनो उदय छे, यभारपातचारिके साठ प्रकृतिनो उदय छे, द्रग्रणसङ्घी हृग्यासे उदय छे, ते मन्ये एक जिननाम मेख्यि वेवारे साठ भाई, अपग्रहाद्वानमे जिणनामकर्म विना एकसो एकसीसनो उदय छे ॥ ३२॥

अजए इग्रणीससयं, आइतिलेसेगनीसयुअसयगं। एगारनवयदसहिय, सयंचतेउतिगेनेयं॥ ३३॥

टीका—अजप्दगुणीससपंदरयादि अजयेअविरतिमार्गणायां-आहारकद्विकजिननामोदयरहिताः एकोनविंशत्यधिकशतंप्रवृतंपः

ओचोद्रयेभवंति, मिथ्यात्वेमिश्रमोहसम्यग्मोहंविनासप्तर्शाधिः सास्वादने १११ मिश्रे १०० अविरते १०४ भवंति आदिलेश्या-त्रयेकृष्णनीलकापोतलक्षणेजिननामोदयाभावात एकविंशस्पिकः शतमकृतीनांओवः एत्रममत्त्रपात्रत्वाच्यंएगारेत्यादितेजिक्षकेतेजीन वेदयामार्गणायांनरकायुः विनाचतुःपंचाशनुसप्तकर्मपृकृतयः नाम्न स्तुनरक्रीद्वकविकलिकापर्याप्तमुक्ष्मसाधारणातपजिननामरहिताःसर पंचारात्उभयमी छने एकादशाधिकंशतं ओवोदयः मिध्यात्वेमिश्रमी हसम्यग्मोहाहारकंविनासप्ताधिकंकातंसास्वादनेमिथ्यात्वंविनापद्गी कंशतंमिश्रे अनंतानुवंधिचतुष्कानुपूर्वितिकेकेद्रियजातिस्थायतामा भागेमिश्रोद्येचअष्टनवतिः अपतेमिश्रमोहानुद्येसम्पग्मोहानुप्री विकमी छने प्काधिकंशतं देशियरती चतुर्दशापगमेसप्ताशीतिः प्रमते पुराजीतिस्वमत्तेषद्समतिरितित्तेयं वज्ञलेश्यायांवेजोलेश्याप्रापीयी कादशाधिकवातमङ्कीएकेदियजातिस्यावरनामाभावेनवाधिकेवतेशी घेमिय्यात्वेपचाधिकंसास्यादने यतुरधिकशतंमिथेअष्टनवतिः रतमम्पण्दरानेप्काधिकशतंदेशिक्ततसाशातिः भमतेप्काशीतिः अवमन्त्रपदसप्ततिः इतिवास्यं शक्कवेदपायांदद्याधि कातओपनः उर्व योभवति जातियतुष्कस्थाराचतुष्कातुगनरक्षशिकशिनाइशोत्तरीत और्चनिष्पान्त्रेसम्पर्गमञ्जाहाहारः इत्त्रिकज्ञिननामविनापंचीत्तराने सासादनेमिय्यान्वविनाचनुगिकः शतमिश्रेभनंतानुवंधियनुष्कानुः बीचि द्यानारीनिश्रमी इदापेच जल्लाकिम गति सम्पण्दर्शने मिश्रमी हो भा नेमस्यतनी हात्रपूर्वाचि हमशोषेषु हाथि हमतहेवातिस्तीचनु रैसाभाः वेष्माबोद्धिः प्रमतेषु सञ्जीतिः पुरमपोषिगुणस्वानपावरतेषं रेवै॥ टरार्थः—ऑस्टनियार्गवाने पृक्षते ओक्ट्याननो उत्प है, अहारधनिक राम दिना ए तिन दिना जादि तीन वेदपारे

ह ग्रूडम २ आतप १ जिन भाग ए बिना वेजोकेडमामे एकतो इंग्यारनी उदय ए इंग्यार तथा पूर्दे बेभावर १ ए बिना एकतो नवनी उदय छे, शुद्धकेडमाने विषे जाति च्यार थावर ४ आतप १ नरक २ ए बार बिना एकतो इसती उदय छे. शहरेश

चउदससयंचसन्निसु, अष्टारसअहीयसयंतुआहारे। तणुभविदुचीससयं, अणहारेअसीईनवअहीया७३४॥

टीका--चउरससपंचसंजिसुइत्यादि संज्ञिमार्गणायांपुकेंद्रि-पादिजातिचनुष्करथावरस्यस्मसाधारणातपटक्षणाष्टकोदपंविनाचतर्द-शाधिकंशतं ओघेभवति मिण्यात्वेपंचक्तमंतरेणनवाधिकंशतंसास्वादने अपयांप्रमिष्यात्वनरकालपृथ्वीविनापद्रधिकंशतंमिश्रीअनंतालुपंध्याल-पृथ्वीत्रिकाभावे मिश्रक्षेपेचशतं उद्येभवतिततः अयोगिपर्यंतं ओघो-दपवतभावनीयंसंज्ञिमार्गणायांअवयोत्तोदयबहुणंतु सुद्धासंत्रीसुसन्नि-द्वर्ग इत्यादायातक रंजहारसिकादारकमार्गणायां आनुपूर्श्वीचतुष्ट्यो॰ द्याभावात् अष्टादशंशनंउदयेभवति मिध्यात्वेपंचकाभावात् वयो-दशाधिकंशतंसास्यादनेस्यः मित्रकातपिष्यात्वाभावात् अष्टाधिकश् तंमिश्रेअनंताद्ववंधिजातिचतुष्कस्यावसभावेमिश्रक्षेपेचशतंसम्पक्त्वे-मिश्रेवातुद्रयेसम्यग्मोहोद्येचशतमेवेतितृतः त्रयोदशाभावेसप्ताशीतिः एवंप्रमत्तादिपुसयोगिपर्यतेषुत्राच्यं तणुत्ति तत्रयोगःकाययोगः भव्य-ति भवसिद्धिकरुक्षणेमार्गणाद्धयेद्वाविञ्यस्यधिकंशतं ओधेभवतिमि-ध्यात्वादिषुओघोदयवत् अनाहारकमार्गणायां जीदारिकवैकियाहार-कशरीरोपांगसंहननसंस्थानविद्वाधोगतिपरावातोच्छ्वासातपोद्योतो-

* (पाटांतरे)

नवहिअदुग

प्चात्सुस्वरदःस्वरमस्येकसाधारणमिथमोहरुक्षणं प्रकृतिविशरद्वरवे द्विनवृतिःओघेउदयः संभाव्यते आदेवानादेवोदयस्तुस्तरोदयेप्रोक्तः वाक्यस्यपरेश्वतस्यादेयताभवतिवक्तव्यकालेतुआहारकृत्वंपश्चात्सम यांतरे अनाहारकत्वंपपत्रस्यादेयतानादेयताचोदयेभवति अयोगिः

ग्रुणस्थानके च स्वरनामोदयाभावेष्यादेयनामोदयउत्तद्धतिनिद्दर्शनाव मिथ्यात्वेसम्यग्योत्निननामानदयेनवतिर्भवति, सास्वादनेस्क्ष्माप

र्याप्तमिध्यात्वनस्व मनुष्यगतिअयोगिगुणद्वादशपचाद्रयज्ञातः १ १००० ब्रुवोदयीद्वादशजिननामवेदनीयद्वयंउचैर्गेत्रंमख्यायुः एवंपंचर्विहाति

ก็ รูช แ टबार्थ: --सूंजीमार्गणाए जाति ४ यावर ३ आतप ए आर् विना एकसो चौरनो उदय छे, च्यार आहुएखी विना एकस

अद्वारनो उदय छे, आहारकमागणामे काययोगभन्यमागणा एकसो बावीसनो उदय छे, आहारकमार्गणाने काययोग भन्य मार्गणामे एकसोबावीसनो उदय छे. अनाहरकमार्गणाए गुणि वेनो (बाण्नो) उदय छे शरीर ३ उपांग ३ संवयण ६ संस्था ६ वर्णादि ४ वययोगति १ पराघात १ उच्छवास १ आठ १ उद्योत १ उपचात १ सुस्तर १ दुस्तर १ ए दिना ॥३४।

चउनवईअसंन्निसु, उदयसामित्तमग्गणाठाणे। केवलदुगवज्झासु, सद्यासुनाणविग्युदयो ॥३५॥

टीका-च्यनवङ्असन्निमु इत्यादि । असंजिमार्गणायांज्ञ नावरणीयपंचकंदर्शनावरणीयनवकं वेदनीयद्विकंसम्यग्मोहिमिश्रमी पुरुपवेदस्त्रीवेदोद्यंविनाचतुर्विश्ततिः नस्कायुर्देवायुद्वयंविनाआपुर्दे त्यात्रपूर्वीचनुष्टपं जातिपंचकंत्रेक्रियाहारकंविनाशरीरंकीदारिकीपांग त्रपंसेवार्त ? दुंडकंत्रफांदिचतुष्कंअगुभित्रहायोगतिः सप्तकंतीर्थ-करंबिनामत्येकनसस्यावस्दशकंषुवेपंचचत्वारिशव् विकियशरीरेचगृ-द्दीवेषतुर्नवतिः असंज्ञिमार्गणायांमिष्यात्वेषिचतुर्नवतिः सःस्मत्रि-कातपमिध्यात्वंविनापुकोननवतिः सास्वादनेपाप्यतेइति प्रोक्तं-**3इपस्वामित्वंमार्गणास्याने,मार्गणासुकर्मे।इयं**विशृण्यताहकेवलडुरगति-केषद्वज्ञानंकेषलमार्गणांवर्जयित्वाशेषासुपष्टिमार्गणासु ज्ञानावरणी-पांतरायदशकस्योदयःप्राप्यवे ॥ ३५ ॥ ट्यार्थः-च्यनवर्ड घोरायंनो उदय छे, असंज्ञीमार्गणाने उदय छे, समकितमोहनी १ मिश्रमोहनी १ प्ररुपवेद १ स्त्रीवेद १ नरकाय १ देवाय १ नरकगति १ देवगति १ आहारक २ संचयण ५ संस्थान ५ देशाउपर्थित १ नरकाउपर्थित १ श्रमनि द्वायोगति १ पराचात १ तिर्यकरनाम १० तथा ए मार्गणाए स्वामी क्यो, केवटज्ञान १ केवटदर्शन २ मार्गणामे ज्ञानाव-रणी ५ अंतराय ५ नो उदय नयी शेष सर्व मार्यणाए ज्ञाना-बरणी ५ अंतराय ५ ए दश मकृतिनी उदय छे ॥ ३५ ॥ दंसणरोहंकम्मं, सुहुमाहरकायगेसुछगुदओ । केवलदुरोअभावो, सेसासुनवेवउदर्यमि ॥ ३६ ॥ टीका—दंसणरोहं इत्यादि दर्शनेसामान्योपयोगरूपंगुणंरोध-प्रवीत्येवंशीलंदर्शनरोधंदर्शनावरणीयकर्म सुद्वमाह्वस्तायमे सुःम-संपराययथारुयातरक्षणमार्गणाद्वये दर्शनावरणीयचतुर्वानिदाप्रच-टाद्वयंप्रकृतिपर्कं उर्वेपाप्यवे केवटदुगेकेवटज्ञानकेवटर्र्शनट-32

क्षणायांमार्गणायांदर्शनावरणीयस्योदयासावः सेपासुअध्पंचारा मार्गणासुदर्शनावरणीयकर्मणोनवप्रकृतयः उदयेपाप्यंते ॥ ११

ट्यार्थः — दर्शनावरणीयकर्भ सूक्ष्मसंपरायगुणटाणे यपारुपा मार्गणापे दर्शनावरणी ४ च्छा १ अच्छा २ अवधिकेवड ४ च्यार आवरण निदा १ पचला १ ए ६ नो उदय छे, वेवट सुगने विषे दर्शनावरणीकर्मनो अभाव छे, दोप अटावनकर्ण

णाप नवनो उदय छे, दर्शनावरणीये नवे प्राहतिनो उदय ^{छाने} ॥ ३६ ॥ सबासुचेअणीए, उदयदुर्गनीअगोअउदयं च ।

निरपथायरतिरिष्, चउजाईअसंक्षिठाणेसु॥ २७। दीका—सन्त्रामृति सर्वामुद्रिपष्टिमार्गणास वेदतीपरुषंत्राण पाइतिराः

दुर्सर्वर्धेरश्व पाक्रयन्वयाय्यमाणस्यात् ॥ ३० ॥ द्यार्थः—मृत्वेमार्गेणाष्ट्र वेदनीयक्रमेनी वे प्रकृतिनी ³⁴³ ७, उपना १ अझाता २ व वे जालती, नीपनीयनी दस्य

७, गाना १ असाना २ पू वे जावती, नीपमोबनी २१ वे पू प्रांता १ असाना २ पू वे जावती, नीपमोबनी २१ वे पू प्रांतापुर वे दे हे, वर झानिवास पांचने निष्णपति पृथी विशे विशे प्रांतापुर वे देवे हैं असर जानि अध्योगार्गित विशे पृथ्य के पूर्व विशेष विशे

मणनाणकेवलिदुगि, संजमपणगेसुउचउदयोत्ति । सेसासुगोयजुअलं, देसअसन्नीसुआउदुगं ॥ ३८॥

टीका---मणनाण इत्यादि मनःपषेवज्ञानकेल्डिकसंयमपंचकः लक्षणासुमार्गणासुउचैनोंकोदयः नीचेगोंकोदयस्यपंचमेगुणस्थाने प्राप्यतेससं पेवनिष्ठसत्त्वान् शेषास्त्रिद्धप्तास्त्रित्तमार्गणासुगोष्ठस्याते चैबोंगिकारेचोंगिवस्यपंपाकृतिद्धपंचप्रदेशपारप्यवेहति आसुःकर्मविषयेत् देशविर्तिनागेणाअसंज्ञिमानेणासुआजुनातिर्यस्परपायूक्पंआयु-दिकंडदयेपारपवे ॥ ३८ ॥

टवार्थः— मनः पर्ववज्ञान १ केवल्हान १ केवल्हान पांच संपन पटली मागणाए एक उद्यगोवनी उदय छे एवं १९ केष मागणाई उदगोव नीचगोव वे कर्मनी उदय छे, देशांवरति मागणाई तथा असंज्ञिमागणाई आक्तवा २ नी उदय छे, एक तियेचनो एक मल्लपनी ए वे आक्रवानी उदय छे॥ ३८॥ गईआईच्छसुधावरि, संयमसणनाणकेवल्हुगंमि। एगंतेउतिगेसु, वेयतिगेतिसिउदयाई॥ ३९॥

टीका--गईवाईचवस् इत्यादि गतिनास्त्रादिस्तवएककाायः उद्देषाप्पवे, तननरकातीनरकायः तिष्मातीत्पमायः मद्यप्पाती-मद्यपादः देवगतीदेवायः उद्देषाप्पवे व्यातपुर्वेद्धय द्वीदिप्दी-द्विप चर्निदिष्टशणामुचतस्यवादितिष्ण्यादिपंचस्यावरकापमा-गणासु प्रतिपगायः उद्देषाप्पवे, समम्पचकेसामाविकादिकेननः पः ना गोणिनस्तिर्यम्देत्रस्याज्यात्वात्व्यद्वेषाध्यन्ते नेपतिमेतिर्गरिक्ते त्रीणिर्वाणिकार्यं विउद्येभवन्तिनशंसकोदे देगधुर्वनार्गाणस्तिनेतिर्यस्य पर्वे देनस्कायुः जिनागोणिकार्यं विउद्येषाप्यंते ॥ ३९ ॥

ट्यार्थः—मति च्यार ने पोता २ तो प्रक्र आदर्शने उदय हैं. जाति च्यारे प्रकृत्यि, विश्वेष्यः, पहुने शिरे प्रकृति विभय आउरात्नी उदय हैं. धारर पांचमे प्रकृति विभयत्ती उदय हैं. सेवम प्रकृतियात्तात, केरवहातन, केरवहातन प्रकृति सर्गमारे प्रकृत्यायु उदय हैं. देजीवेष्या, प्रकृत्यात्त हैं. वेदयाने नामसपु दिना तीन आउरपाती उदय है. वेदति

तान आजगाना अन्य भाषाकोरे हेसमु विना व सो अप रक्षार पुरुष हे नरकामु विभा तीन आजरातनी अन्य छेआरे हैं

चनारियससासु, तिरिनरिवंचेवियोगत्तराजावे ! चर हुदुहारमळेले, भत्रसंक्षीसुअङ्गीसं ॥ ४० ॥

27 દાં — નાતાલ કા વરવાવિ કાગામ વચાવિ કાતમાં ભાગામાં માર્થે ત્યા હત્વ કે દેવ માર્થિ તો કાં તે તેના દુકતી કરવા કરિયત મહેવા દર્ધ માયુલ ઉદ હત્યા કરે તેમાં કર્યાં પ્રાથમિક વિચાર વિચાર કરે હતા કર્યાં કરિયા કર્યાં કરિયા કર

experienced one present as the t

भोहमार्गणा करे छे. त्रिरिगति सञ्च्यमति पंचेन्द्र मार्गणाये तीन पोग प्रतकायमार्गाने विषे अधितिसार्गणादं पद्य १ अप्युदरानमार्गणादं आहारकार्गणाये केद्या ६ ने विषे अध्य-मार्गणाये पुरुषदेददं संजीमार्गणादं मोहनीकर्मनी अटारीस प्र-सृतीनो उदय छे.॥ ४०॥

नपुविणुदेवगईप, निरपपुरसित्पिहीणइगविगले । थावरअसंद्रिपसु, असम्ममीसायचउवीसं ॥४१॥

टीका—नपुविण इत्यादि ॥ देवगतानपुंसकवेदं विनासस-विद्यातिमाँद्वसङ्ग्तः उदयेशाप्येते निरापिकतस्कार्तापुरुपयेदस्वियेद-दिनापद्वियतिः उदयेक्षणाप्येतिस्य विकक्षेत्रिय स्पायस्यका-संज्ञाद्धशाद्धस्यार्गणापुरुप्तिन्त्रप्तिवास्वविद्यातिः असम्मति-सम्यम्मीद्विसिमोद्वेदिनापस्विद्यातिः उदयेशाप्यन्ते ॥ ४१ ॥

दशर्यः — देवगतिमागणणे नप्तंसकदेवनी उद्य नयी. नरक-मच्चे पुरुषेद १ स्वीदेदिना २६ महतिनो उद्य छे, मोह-निनो पुरुन्दिप १ विकठ २ पावर ५ असंसीमागणा नपु-सक्तदेवनो उदय छे, खाँदेद पुरुषेद ए वे बेदनी उद्य छे नदी, अने समस्तिमोहनी १ किन्सोहनी १ ए ४ विना पोवीस प्रमृतिमोहनीनो उदय छे. ॥ ४१ ॥

वेषदुवेअहीणा, अवारकताचाकतायचउगेसु। मणनाणदुत्तामईयः, चउदत्तथीहीणपरिहारे॥४२॥

दीका—वेपदुवेजदीणा इत्यादि ॥ वेदाविकेवेदद्रयद्वीनातनः गुरुपवेदेन्द्रानगुंसकर्वदेविनापद्विद्यातिः व्यविदेषुरुपद्यविदेविनापदः विंशतिः नपुंसकतेदेपुरुपन्ति विद्यापद्यातिः उद्देष् सापच्चेगेतिकशायग्द्यस्य कोवमानगायाद्येभृदक्ष्यः मंपिकशायद्वाद्दंविनागोदश्चरवेगाप्यन्ते मनःपपद्यानगः छेदोपस्यापनीयचारिकेसञ्चटनचनुष्ट ह्वास्पर्यक्रेद्विकरः छञ्चण्यतुदेशमृक्ष्तयः उद्देषमाप्यंते परिद्वारिगृङ्कीसृष्टि

एवजपोर्शभविष्ता ॥ ४२ ॥

टवार्थः — पुरुषवेरमध्ये स्त्रीवेर नपुंतस्त्रवेरती २६
छै. स्त्रीवेरमध्ये पुरुष नपुंतस्त्र विना २६ नो उरप छै. स्त्रे वेदमध्ये स्त्रीवेर पुरुषये विना २६ नो उरप छै. स्त्रे मध्ये मान ४ माया ४ छोभ ४ ए बार विना १६ छै. मानमध्ये क्रीच ४ माया ४ छोभ ४ ए बार ि नो उरप छै. इम मायामध्ये १६ उरप इम डोमम्

उद्ग छे. मनःपर्यंव ज्ञातमन्त्रे सामापिकना मेद जाण उद्म छे परिहार विद्यद्विमन्त्रे स्रविद विना १४ उद्प हे नाणतिगओहिदंसे, वेअगसन्मेअमिच्छअण सम्मविणुदुसम्मत्ते, मीसंजुआतेउमीस्संनि

्ट्रीका-तथाज्ञानिक्केविद्श्लेवेद्गतिवेदके क्षायोपः
ग्रद्धांने अमिष्क्रिचनिवयन्ते मिष्र्यात्वानंताव्यंधिमिष्राः इर् प्यात्वेमोक्करीयन्तियन्ते मिष्र्यात्वानंताव्यंधिमिष्राः इर् प्यात्वेमोक्करीयकंताव्यंधिचतुष्टमात्र्यमेश्वमोहितनाद्वार्विद्यातः पद्मचे,इतामनेद्वितिद्वारम्वन्तेशायिकोपशास्त्रभोपसम्बद्धाः विष्णुदितिसम्पम्मोहनीयंविनाद्वस्येनचेदक्सस्मम्मायोग्याद्वाः सम्पग्मोहनीयरहिताप्कविद्यातिः उद्येषार्यवे उभयोरिपि

रित्वात् आतिचारिताचश्चयोपश्चमग्रणवत्एवभवति मिस्र

वेउतिनापुर्कादशर्तिर्मश्रमोहोदयेनयुक्ताद्वार्विशनिर्मोहस्यउद्यःमिझे-प्राप्यते ॥ ४३ ॥

ट्यापै:—मितजान १ धृनजान १ अभिजान अवधिदरीन वेदक समकित ए मागेणाप निष्य २ १ तननावृत्रेषि ४ मिध-मोहनी विना धावीस महानिया ७३० १, ये समकितमध्ये उप-दान तथा शायिकमध्ये समकितमोहनी विना २१ महाति मोह-कमैती ३६थ छे. सिम्बद्दिसमाँगाए निक्रमोहनी मेडीई तैवारे यातीसनी उदय छे. ॥ ४३ ॥

केवलिदुगहरकाए, उदयाभावोअनाणतिगेसु ।७ छगसगवीसदेसे, अहारसगवीसमणहारे ॥४४॥

पाठांतरे

णोकेविहरकाए सहमिगठोभोअनाणतिगेसु.।

वंच्यमत्याख्यानद्वयक्षपायाध्कमिश्रमिष्यात्वोद्यंविनाशेषाः अश्व इाउद्वेभवंति, सगदीप्तति, अनाहास्क्रमागणायां निथनोहोद विनासप्रविवातिः उदयेभवंति ॥ ४४ ॥

ट्यार्थः—फेनल्झान १ केनल्झन १ यपाल्यातपारि मोहनीकर्गना उदयनो अभाव छे, अज्ञानतीनने विषे केतलप्र आचार्यमेने समकितमोहनी १ मिञ्चमोहनी १ ए वे दिना स्वी सनो उदय छे, केटलाएक आचार्य मिश्रयणठाणे अज्ञान तीन माने वेदने समकितमोहनी विना सत्तावीसनो उदय छे, अवार सगदेसविरतिमच्ये अद्यारनो उदय छे, अनंतात्ववंधि ४ अवर्या स्यानी ४ समकितमोहनी १ मिथमोहनीप् १० उद्य नर्य तिणे १८ नो उदय छे, अनाहारकमार्गणांव मिश्रमोहनी दिन

सत्तावीसनो *उ*द्य छे. ॥ ४४ ॥ सासाणेपणवीसं अभवमिच्छेसमिच्छछवीसं । नामस्सपयडीओ, ग्रणठाणविद्धीउनायवा ॥ ६५ [॥]

वीका—सामाणे इत्यादि सास्वादने दर्शनमोहनीयक्षोर्रं विनापंचिवतिः उद्येभवन्ति, सास्वादनस्योपकातिद्यांक्षवर्गः अनंताउत्युद्धवेद्योनमोहिककाउद्येचसास्वादनस्वापितः। अन्यः मागणायाभिष्यास्वोदयसहिताः पर्स्ववातिः निष्यादर्शनमागणार्यः पिष्यास्वोदयसहिताः पर्दाववातिः इत्युक्तंमागणागुउदयस्वानितं मोहस्य, सांवर्तनायवञ्चतीः मागणागुउदयस्वेनियभववात् ॥४॥

टवार्यः—-दर्शनमोहनी तीन विना सास्वादनगुणटा^{चे ५५} पंचरीसनो उद**य छे,** दर्शनमोहनी अभव्यमार्गणाये तथा मि^{रदा} त्वमार्गणाये मिथ्यात्वमोहनी मेळीबे तेवारे २६ नो उदय छे, हवे नामकर्मनी वासठी मार्गणाये उदयनी प्रकृति कहे छे, गइइंदिय ए गाथाने अञ्जलभे तीस छप्पतपनास एगाया जोढीने अर्थ करवो. ॥ ४५ ॥

तीसअडदुपन्नासा, दुसुतीचीसं(चउतिगतीसं)तिगे-सुपणतीसं ।

गुणसहीदुगतीसं, इगतीसंदोसुतीसंच ॥४६॥

टीका---तिसभडति ॥४७॥

ट्यार्थ:---नरकगतिष् तीस प्रकृतिनो उदय छे. तिर्वचगतिष् अद्वादन नामकर्मनी उदय छे. मनुष्यने पंचाश नामप्रकृतिनी उदय छे, देवगतिए तेत्रीस प्रकृतिनी उदय छे. बेन्द्री, तेन्द्री, धोरेन्द्रीय ए तीन मार्गणाए ३५ महतिनी उदय हो. पंधे-न्दिने गुणसठिनो उदय छे. पृथ्वीकायने यत्तीसनो उदय छे, अपकापने इगतीसनी उदय छै. तेउकायने वाउकापने तीस प्रकृतिनो उदय छे.॥ ४६ ॥

पत्तीसा(दुगतीसा)यासही, चउसगसही(पद्मा)त-हेवसगसद्वी ।

छपन्नाचउपन्ना, चउसहीचउसुद्यासही ॥४७॥

हीका-दुगतीसा ॥ ४७ ॥

टबार्थ:-बनस्पतीकायमध्ये बत्तीस प्रकृतिनी उदय छे, बस-कापने बासती मकृतिनो उदय है, यनोयोगमध्ये धउपत्रनो 33

उद्य छे. बचनपोमे सत्तावतनो उद्य छे. तिमज कायपोने सडसडीनो उद्य छे, पुरुपमेदने छणननो उद्य छे. झांबेदने धोपतानो उदय छे, नपुंतकचेदने चोसडीनो उदय छे. काप ४ ने डासडीनो उदय छे. ॥ ४७॥

तिसुसगवद्माचोयाल, अडतीसंदोसुईतिचोसद्यी । पणपन्नद्चउचत्ता, वायालीदोसुगुणचत्ता ॥४८॥

टीका--विस्तागवता ॥ ४८ ॥

टमार्थः — मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान २ अविध ३ ए तीन मागणाने विषे सत्तावननो उदय छे. मनःपर्यवज्ञाने ४४ नो उदय छे. केवल्ज्ञाने ३८ नो उदय छे. मतिज्ञान १ श्रुनः ज्ञान १ वे मागणाये चोसठीनो उदय छे. विषेगे प्रवादननो उदय छे. चारिज वेमल्ये सामाङ्क छेट्रोपस्थापनीयमचे चाम-जीस मृक्तिनो उदय छे. परिहार विद्यद्विमन्ये ४२ प्रकृतिनो उदय छे. सहमसंपराय १ यथारूयात ए वेमन्ये ३८ नो उ-दय छे. ॥ ४८ ॥

चोयालाचोसही, चउपन्नछसहिसत्तपन्नाय । अडतीसतिलेसासु, चउसहिछसहिभयणाप्॥१९॥

टीका-चोयालाचो इत्यादि ॥ ४९ ॥

टबार्थः—देशितते चीमाठीसनो उद्घ छे. अविरितम्पे चोसठीनो उदग छे. चश्चदर्शने चोफानो उदग छे. अचश्चरर्शने छासठीनो उदग छे. अवधिदर्शनमध्ये सचावननो उदग छे. केचरःशंनमञ्चे आइतीसनो उदय छे. कृष्णनीत्रकापोत ए तीस स्टेरपानन्ये ध्यार ग्रुणटाणा मानिये तो आहारक र जिन विना पोत्तदीनो उदय छे. अथवा छ ग्रुणटाणा मानिये तो जिननाम विना छातदीनो उदय छे. एभजना जाणवी. ॥ ४९ ॥

सगपणछपञ्चासा, सगचउसद्वीतहेवपणपद्मा । दुसुसग(सगअडवन्ना)वन्नाइगपन्न, गुणवन्ना(सद्वी) तहयचउसद्वी ॥ ५० ॥

टीका-सगपणउपनासा इत्यादि ।। ५० ॥

टपार्थः —वेजोबेदयाप् सतावननी उद्घ छे, पद्मवेदयाप् ५५ नो ग्राङ्कवेदयाप् ५६ महति नात्रकर्षनी उद्घ छे. अध्यने सहसर्वानो उद्घ छे. अध्ययने चोसदोनो उद्घ छे. उपराधने पंचावतनो उद्घ छे. झायिकने क्ष्योपदाधने सतावननो उद्घ छे. सास्वादन ग्रुणे द्युण पंचासनो उद्घ छे. तिम वर्ज नि-ध्यात्व ग्रुणकाणे चोहदीनो उद्घ छे. ॥ ५० ॥

अडवञ्चाछायाला, तिसद्वीपण(अड)तिसनामकस्मस्स। उदओमग्गणठाणे, गईआईकमेणणेयद्यो ॥५१॥

दीका—अडका इत्यादि । पूर्व गायापरकरसमझिदताएव-ध्यास्या तननरकमातीनामनिव्यात् , विष्मातीअस्प्यात्त, मद-स्यातीद्विपंचात्त्र, देवमतीच्तिक्षत्त्रम्, एकेन्द्रियेवमर्विकान्, विकटविकेपंचित्रात, पंचीन्त्रेयस्क्रीनपिटः पृष्टपाद्वार्थितम्, अप्कापेप्कर्वित्रात्, अन्निकायेप्कोनपिटाः पृष्टपाद्वार्थितम्, अप्कापेप्कर्वित्रात्, अन्निकायेप्कोनपित्रात्, वासुकायेर्विशन्,

वनस्पतिकायेद्वार्षिशत्, त्रसेद्विषष्टिः मनोयोगेचतुःपंचाशन्, वर नयोगेसप्तपंचाशत्, काययोगेसप्तपृष्टिः प्ररूपवेदेषर्पंचाशत्, सं वेदेचतुःपंचारात्, नपंसक्वेदेचतुःपष्टिः कपायचतुष्केपर्पाः त्रिषुमत्यादिज्ञानेपुसप्तपंचाशत्, मनःपर्यवज्ञानेचतुश्रत्वारिशत् केयलज्ञाने अष्टर्विशत्, दोसुचि, द्वयोमीतज्ञानश्रतज्ञानयोश्रतुःगष्टि विभंगेपंचपंचाशत्, दुईत्तिसामायिकच्छेदोपस्यापनीयेमत्येकं चतुः श्चरवारिंशत्परिहारेद्विचत्वारिंशत्, सूक्ष्मसंपराययथार्यातयोः एको नचत्वारिशन्, चत्वारिशचदेशविरतीचतुश्रत्वारिशन्, अविरतीयनुः पष्टिः चक्षुर्दर्शनेचलुःपष्टिः, अचक्षुर्दर्शनपरपष्टिः अवधिदर्शनेसाः पंचारात्, केवलदर्शनेअष्टत्रिंशत्, तिलेसासुत्तिकृष्णनीस्कापोतः लक्षणासुतिस् पुलेश्यासुपदिगुणस्थानचतुष्ट्यमंगीक्रिपते तदानिन नामाहारकाद्विकोदयंविनाचतुःपष्टिः अथवाप्रमसंयावत् पृश्रुणस्याः नकानिमन्यन्तेतदा जिननामविनाषट्पष्टिः पूर्वभजनाभवति, अर् येचतुष्टपंइच्छंति वेप्रतिपद्यमानकायवेदया वयंतुगुणस्थानचतुर्ये भवति, पूर्वप्रतिपन्नाद्यकेश्यावयंतुप्रमत्तंयावत्प्राप्यते, यद्यपिन द्यद्विवशताहीयमानामृतन्वीतयापिसत्वेनगृहीतन्याइतिपूर्वमृतिप्ताः ' पेक्षया " छिज्जमाणेछिन्ने " एतद्वचनापेक्षयागत्वरत्वातृनांगीः कारः, यथासास्त्रादनस्याज्ञानंकर्मग्रंथिकानामिति भावनयापेश्चर्या तुसक्ष्मांशस्यापिसतः अग्रहणेदोपः तेनग्रहणंपथासिद्धांतेसातार्वे ज्ञानंइति तेजोलेक्यायांसप्तपंचाशत् पद्मलेक्यायांपंचपंचाशत्, अर्थ लेहपायांप्रद्रपंचाहात् , भव्येसप्तसष्टिः, अभव्येचतुःपष्टिः उपशमे सम्मग्दर्शनेपंचपंचाशत् , वेदकेसप्तपंचाशत् , क्षायिकेअप्रयंवाशीः मिश्रेएकपंचाशत् सास्त्रादनेएकोनपष्टिः मिध्यात्वेचतुःपष्टि, संशि मार्गणायां अष्टपंचाशत् , असंशिमार्गणायां पर्चत्वारिशत् , आहा रकेत्रिपष्टिः अनाहारकेअष्टविंशन्, एवंनामकर्मणः उद्यः मार्गणीः

स्यानकेशत्यादिकमेणज्ञात्तव्यः इत्युक्तसुद्यस्वासित्वंगार्गणासु, सां-प्रतसुदीरणास्वरूपंनिदर्शयनाह् ॥ ५१ ॥

ट्यार्थ: —संद्रानिजाति ४ आतुपूर्वी ४ आतपविना अटा-चननो उदय छे, आंसीने छेताछीवनो उदय छे, आहासको भेसतीनो उदय छे, अनाहासको, पांत्रीसनामकर्मना प्रकृतिनो उदय छे, उदयिन प्रकृतिमांगणने विषे गति आदिको अनुकमे जाणवी ठे समजी छेन्यो. ॥ ५१ ॥

मूलोदीरणठाणा, सडअडछपंचदुन्निनेयदा । उत्तरउदीरणाय, उदयसमापयडिसंखाय ॥ ५२ ॥

वनस्पतिकायेद्वायितम्, बसेद्विषष्टिः मनोधोगेच्युःगंत्राज्ञा, रक्ष-नषोगेससपंपाशम्, कायषोगेसमपष्टिः पुरुषयेद्रपरांपाशत्, स्री-येदेचतुःपंचाशन्, नपंसक्तयेदेचतुःषष्टिः कपायचनुष्कारस्यिः, त्रिणमत्यादिज्ञानेषसमपंचाशन्, मनःपर्वेवद्यानेचनुःशनसिंहर्रः,

नचत्वारराष्ट्र, पत्वारताच स्वानराष्ट्र युव्य वर्णायः पष्टिः चशुर्दरानेचतुःपटिः, अचशुर्दरानेपरपटिः अवधिररानेतः पंचाशत्, केवलद्शंनेअष्टर्विशत्, तिलेसासुत्तिकृणानीलकापीत लक्षणासुतिस्पुलेदयासुपदिगुणस्थानचतुष्टयमंगीक्रियते, तदाजिन नामाहारकाद्विकोदयंविनाचतुःपष्टिः अयवापमत्तंपावत् पर्गुणस्याः नकानिमन्यन्तेतदा जिननामविनापर्षष्टिः एवंसजनाभवति, अव येचतुष्ट्यंड्च्छंति वेप्रतिपद्यमानकाय्छेदया वयंतुग्रणस्यानचतुर्यः भवति, प्रवीमतिपनाद्यकेदमानपंतुममत्तंपावन्माप्यते, यद्यपिषै शुद्धिवशताद्दीयमानामतन्वीतयापिसत्वेनमृद्दीतन्याद्दितपूर्वमितपूर्वा पेक्षया " छिज्जमाणेछिन्ने " युतद्वचनापेक्षयागत्वरत्वाद्नांगी कारः, यथासास्वादनस्याज्ञानंकर्मग्रंथिकानामिति भावनयापेश्च तुस्रः गांशस्यापिसतः अग्रहणेदोषः तेनग्रहणंययासिद्धांतेसास्त्राहे शानंइति वेजोलेश्यायांसप्तपंचाशव् पद्मलेश्यायांपंचपंचाशत्, गुर्हे **ले**डयायांषदपंचाशः सम्यग्दर्शनेपंचपंच मिश्रे**एकपंचा**शत मार्गणायां अष्टपंचाः...

स्थानकेगत्यादिकमेणज्ञातस्यः इत्युत्तस्युद्रयस्यामित्वंमार्गणासु, सां-प्रतस्यदीरणास्यरूपंनिदर्शयनाहु ॥ ५१ ॥

ट्वापं:--संद्रिनिजाति ४ आद्युषी ४ आतपविना अठा-वन्ती उदय छे, अक्षेत्रिने छेताछीतनी उदय छे, आहारकने क्षेत्रिनी उदर छे, अनाहारकने, प्राप्तिनी उदय छे, उदयनि प्रकृतिकार्गणाने विषे गति आदिकने अञ्चक्रमे झाणवी ते समजी केच्यो. 10 ५१ ॥

मूलोदीरणठाणा, सडअडछपंचदुन्निनेयदा । उत्तरददीरणाए, उदयसमापयडिसंखाय ॥ ५२ ॥

स्पानानि, नरकादिगतिनिकद्दियचतुष्ककायपंत्रकजानिकदै-शविरताविरतिलेखपानिकमाद्यमञ्चयसाखादनिम्य्याखासिन्द्रल्या-स्रस्यअष्टोद्वेज्दीरणास्त्रानेवेदिनिकक्षपानिकसामायिक्केट्रोपरपाप-नीयवेजःपद्मवेदकमार्गणासुस्सअष्टीषटद्वि वीमिज्दीर्गास्पानानि, संज्वललोनेससअधेषद्यंच, परिद्वारेअधेषद्, स्क्रमधंपरापेषद्र्यंच, यपाल्यावेपंचद्वेजपश्मेअधेपंचपद्, मिश्रेअधे, अनाहारेद्वेकेड द्विकेद्वयोर्त्वजदीरणास्यानानिज्तरीक्षरणायाः संक्षिपन्नाह् ॥ १२॥

टबार्यः—उदीरपाला मूड पानक ५ छ सातनी आजला विना आजला सहीत आटनी उदीरणा आजलावेदनी निन सातमे गुणटाणे आटमे नवमे गुणटाणे ६ नी उदीरणा छै। मोहनी विना दशमे इम्यारमे बारामने मयमभाग पर्यत पांची उदीरणा, हालावरणीय १ दर्शनावरणीय २ अंतराय विना वेनी उदीरणा, वेरमे गुणटाणे छे, मकृति उत्तर वेहनी संख्या १२२ मी उद्यन्ती रीठे जाणवी. ॥ ५२॥

मणुआउनेयणीयं, अपमत्ताओपरंतुनोदीर**इ**। चारसअयोगिपयडिनो, दीरइअकरणोविरीओ॥^{५६॥}

दीका—मण्डभाऊ इत्यादि मतुष्यापुर्वेदतीयद्वयंभ्रमत्तरीत्री परंउपरिनज्दीरपति, अपमत्तादिणुदिगुद्धतीरैत्वात्त्यानावादंवर्षः स्वाचपुर्वस्ततपुर्वोद्याविक्वाद्विहितेदतीयं तथा मतुष्यापुः उत्रेरे टम्पतेनोदीरणाकरणेन तथा द्वाद्वभ्रव्यविष्युणस्यानस्याःमद्वत्रस् उद्वेतंतिनोदीरणावां येनकरणती येणनामचट्यी येणोदीरणाव्यक्षै अयोविगुणस्यानकेद्दरणतीयस्याभावात् अकरणवीयस्वेनोदीरणम् इति तथाचनस्यामत्वान्त्नोदीरणाभयति ॥ ९३ ॥ टर.र्घ:—मनुष्पञायुर्वेदनी २ प्रमत्तव्रणटाणा सुधी उदीरे, अप्रमत्तवी पछी उदीरे नहीं, अयोगिग्रणटाणे बार प्रकृतिनो उद्य छे तेमाटे च्दीरणा नवी. ॥ ५३ ॥

सेसासद्यापयडी, आवल्यिसेसगाओउदयंग्मि । मोदीरइअपडीनाही, पडिग्गहीउदयतुखाओ ॥५४॥

दीका—संसासवा इत्यादि । होपाः सर्वाः सप्तापिकशातकपाः मृह्तपः पावत स्वकाद्यम् आवजीभोगयोग्यादाकिकाः अवशोषा- वृद्यपक्षेभवि त्रानोद्दिर्पात्याप्त्यास्त्वाद्वदिताः काः अपतद्वापित्वाद्वपासांमृहतीनां स्वराप्ति अन्यमृहतियुनसं क्रमावताअपतद्वापित्याः संन्यवन्त्रोभामृत्याः प्रत्याप्ति अन्यमृहतियुनसं क्रमावताअपतद्वापित्याः अन्यस्त्रमृहतिद्वप्तः प्रतः यासांमृह्नतीनांपर्योशः अन्यस्त्रमृहतिद्वप्रतः प्रतद्वापित्य- हार्यस्य अन्यस्त्रमृहतिद्वप्रतः अन्यस्त्रमृहतिद्वप्राप्तः अन्यस्त्रमृहतिद्वप्राप्तः स्वराप्ति क्रमावन्यमृहतिद्वप्राप्तयः स्वराप्ति क्रमावन्यस्य स्वराप्ति क्रमावन्यस्य अत्याप्ति स्वराप्ति क्रमावन्यस्य स्वराप्ति व्याप्ति स्वराप्ति स्वरापित्यस्य स्वराप्ति स्वरापित्यस्य स्वराप्ति स्वरापित्यस्य स्वराप्ति स्वराप्ति स्वराप्ति स्वरापित्यस्य स्वराप्ति स्वराप्ति स्वराप्ति स्वरापित्यस्य स्वराप्ति स्वराप्ति स्वराप्ति स्वरापित्यस्य स्वर्पति स्वरापित्यस्य स्वर्पति स्वरापित्यस्य स्वराप्ति स्वरापित्यस्य स्वराप्ति स्वरापित्यस्य स्वर्पति स्वरापित्यस्य स्वर्पति स्वरापित्यस्य स्वर्पति स्वरापित्यस्य स्वर्पति स्वराप्ति स्वराप्ति स्वराप्ति स्वरापित्यस्य स्वर्पति स्वरापिति स्वरापित्यस्य स्वर्पति स्वरापिति स्वरापति स्वरापिति स्वरापति स्वराप

टवार्थः —दोष जि महति रही वे क्षेत्रारे उदयमचे पृक जावर्जी होष रहे देवारे उदयपणे छे, पांउदीरणा नयी, जो वे कांजे सतामचे अज्ञादित्तरक खा नयी जे उदीरे वेसाटे आव-जीवत रोपकांजे उदीरणा पण नयी, अपदीमादी (अमृतिमादी) मृतृतिदे प् रोठे छे जे अपडिमादीनो छेड्डाचे अंत्र कोई में म संक्रमे तेमाटे इंम छे, अने पडिमाहिमकृतिने तो उदय तथा उदीरणा मेठीज छे. उदयनो अनंतमो माग सवठी प्रकृतिने भेठी खपाये छे वेमाटे हुवे चोरासीटाख जीवाजोनीतं स्वरूप कहे छे. ॥ ५४ ॥

पुढवाईसुपत्तेयं, सगवणपत्तेयणंतदस्वउदः।

विगले<u>सुदुदुसु</u>रनारय, तिरिचउचउदसनरे<u>स</u>ु॥५५॥

टीका-पुरुवाईसुपत्तेपं इत्यादिपूर्वव्याख्याताएव ॥५५॥

टबार्थ:---पृथिवीकायनी सातटाख योनि छे, अर्कार्यी सातलाख योगि छे, वेउकायनी सातलाख योगि छे, वाउका पनी सातलाख योनि छे, वनस्पतिकायमन्ये प्रत्येक वनस्पतिनी **१०** लाख योगि छे, साधारण वनस्पतिनी १४ लाख जीवा योनि छे, वेन्द्री, तेन्द्री, चीरेन्द्री पहनी प्रत्येके वे वे हार पोनि छे, देवताने च्यार टाख, नारकीने च्यार लाख, तिरिपंकी ४ लाख तथा मनुष्यने १४ लाख योनि छे. ते मिल्पापक चोरासी लाख जीवायोनि छे. गतिच्यारमाहे २६ लाख जीव योनि इंद्रीमार्गणाये सचळी ठामे. काय ६ मांहे सचळी ठामे. मनोयोगे २६ ढाख, वचनयोगे ३२ छुाख, काययोगे सर लामे, पुरुषवेदे २२ लाख लामे, खाँवेदे २२ लाख लामे। नपुंसकवेदे ६ लाख छाने, क्षाय ४ मांहे सस्व टाने. ॥५५॥

एगिंदिएसुपंचसु, वारसगतिसत्तअडुत्रीसाय । विगलेसुसत्तअडनव, जललहचउपयउरग्भुयगे प्रा

टीका—पूर्गिदिएसुद्दरपादि अयञ्चळकोटिमानमाह, प्रकेटिये

पंचयुप्रध्यपादिष्प्रियीकायेद्वारसञ्ज्ञाः छुटकोटीनां, आप्क्येसतन्त्रः छुटकोटीनां, अधिकायेदयोठ्यावायुकायेसत्रञ्जाः वनस्पति-कारेक्ष्यविद्यातिहस्रः विगलितं, द्विद्विपरिद्विदियसत्र्याः भीदि-वेक्ष्येद्वाराष्ट्रस्याः विविद्याः प्वतिक्षयः विगलितं, द्विद्विपरिद्विद्याः प्रदार्विद्वियसत्यः अञ्चलेटीनां जन्यस्याद्वारसञ्ज्ञाः स्वपरस्याद्वारसञ्ज्ञाः अप्तर्यपद्वारसञ्ज्ञाः अप्तर्यपद्वारसञ्ज्ञाः अप्तर्यपद्वारसञ्ज्ञाः अप्तर्यपद्वारसञ्ज्ञाः अप्तर्यपद्विसातिल्ञाः विद्यारसञ्ज्ञातिल्ञाः विद्यारसञ्ज्ञातिल्ञाः विद्यारसञ्ज्ञातिल्ञाः विद्यारसञ्ज्ञातिल्ञाः विद्यारसञ्ज्ञातिल्ञाः विद्यारसञ्ज्ञातिल्ञाः विद्यारसञ्ज्ञाति स्वर्वेतः स्वर्वेद्वार्यस्य स्वर्वेद्वारस्य स्वरत्यस्य स्वर्वेद्वारस्य स्वरत्यस्य स्वरत्यस्य स्वर्वेद्वारस्य स्वरत्यस्य स्वर्वेद्वारस्य स्वर्वेद्वारस्य स्वर्वेद्वारस्य स्वर्वेद्वारस्य स्वर्वेद्वारस्य स्वर्वेद्वारस्य स्वरत्यस्य स्वर्वेद्वारस्य स्वरत्यस्य स्वर्वेद्वारस्य स्वरत्यस्य स्वरत्यस्य स्वर्वेद्वारस्य स्वर्वेद्वारस्य स्वरत्यस्य स्व

ट्यार्थ:—हुवे कुछ कोडी कहे छें, एकेन्ट्रिमे पृथविनी याराख कुछ कोडी, अपकायने सानदाख कुछ कोडी, तेऊ-कायनी सीनदाख कुछ कोडी, सपुकायने सानदाख एठ कोडी, यनस्पतिने अड्डावीसटाख कुछ कोडी, पैन्द्रीने सातदाख कुछ कोडी, तर्न्माने आटटाख कुछ कोडी, पौरेन्द्रीने नत्रदाख दुछ कोडी, जाक्पमें सादीबारटाख कुछ कोडी, सेपरने बारटाख कुछ कोडी जाज्यी. 11 पर 11

अश्वतेरसवारस, दसदसनवर्गनरामरेनिरप् । वारसछबीसपणवीस, हेतिकुळकोडिळरकाङ्गै ॥५७॥

टीका—अपमार्गणासुयोनिसंख्यामाह् । नरकातीपरवारो-टक्षामद्भयमतीपसूर्वज्ञद्धा, देवमतीपरतस्तिपर्यमंतीद्वार्याः यो-त्रमः, पुकेन्द्रियाणाद्वियंचारात, द्वॉन्ट्रवेढ्वे, भीन्ट्रवेढ्वे, भूतुर्गिट्रवेढ्वे, भूतुर्गिट्रवेढ्वे, पंपेन्ट्रिये पर्दिकातिः, भूषियागिद्यपद्धाः साप्तस्त, वनरायगोद्वार्यवत्तुः विश्वतिः, भवेद्यार्थवात्, यनोयोगपर्द्वशतिः, वयनयोगद्वार्यवात् संक्रमे तेमार इंग के, अने परिगादियकृतिने तो अग तम उद्दीरणा मेनीज के उद्दुपनी अनंतामी मान मच्छी पहुनिन मेवी रागते हे वेमारे हो योगसीतास जीसाजीनीई सम्ब करे हैं. ॥ ५४ ॥

गुदवाईसुपत्तेयं, सगवणपत्तेवणंतवसचउव । विगले<u>सुरुत्सु</u>रनारय, तिरिचउचउवसनरेसु॥५५॥

रीहा—पुरुगार्सुपतेषं इत्यादिपूर्वस्यारुगताम् ॥५५॥

रवार्यः-पृथिती हापनी सातदाख योनि छे, जासकी सातवारा योनि छे, वेउद्यपनी सानवास योनि छे, वाउछ पनी सातज्ञास्त योनि छे, बनस्पतिकापमस्ते मत्येक वनस्पति १० टाल योनि छे, साधारण यनस्पतिनी १४ टाल जीई योनि छे, थेर्न्झा, तेर्न्झा, धीरेन्द्री पहनी प्रत्येके वे वे हार् योनि छे, देवनाने च्यार डाख, नारधिन च्यार डाख, विरिप्ल ४ टाख तथा मनुष्यने १४ टाख योनि छे. ते मिल्पांपर्य चोरासी टाख जीवायोनि छे. गतिच्यारमांहे २६ टाल जीव-योनि इंद्रीमाराणाये सवली टाने. कार ६ मांहे सबली हाने. मनोयोगे २६ डाख, वचनयोगे ३२ द्वाल, काययोगे सर लामे, पुरुषवेदे २२ लाख लामे, स्वावेदे २२ लाख हाने। नपुंसकवेदे ६ लाख छामे, कषाय ४ मांहे सस्व टाने. ॥१९॥

पर्गिदिएसुपंचसु, वारसगतिसत्तअहवीसाय। विगलेसुसत्तअडनव, जलसहचउपयउरगसुयगे ^{प्रा}

टीका—पूर्गिदिप्सङ्क्यादि अथकुलकोटिमानमाह, प्रेंडिंग

पंचसुपृधिरमादिपुपृथिवीकायेद्वादशल्याः कुलकोटीनां, आप्क्रयेसा-ल्ह्याः कुलकोदीनां, अग्निकावेशबोल्ह्यात्रापुकावेसमल्ह्याः वनस्पति-कारेअप्रविद्यतित्वाः विगटेनि, दीदिपादीदीदियेसप्रटक्ताः भीदि-पे अष्टीर ताः चत्रारिद्वपेनवरुषाः क्रस्कोधीनां जरूपरेसार्द्वद्वादशस्ताः, खचरस्यद्वादश्रदश्चाधतुष्यदस्यदशब्दशः कुलकोटीनांभवंति, उरः परिसपैरयदशस्त्रा अञ्जपिरसपैरयनबस्धाः अमरस्यपद्विशतिस्क्षाः नारकस्यपंचित्रशतिलक्षाः कुलकोटीनांभवंति सर्वतःप्काकोतिः सप्तनवतिच्छाः पंचाशवसहस्राणिङ्ग्हानांभवंति, एवंगाचाह्रपं-धारयम् ॥ ५६ ॥

ट्याप:--हुवे इंछ कोडी कहे छे, एकेन्द्रिमे पृथविनी ग्रारहाख कुछ कोडी, अपकायने सातहाख कुछ कोडी, तेऊ-कायनी तीनहाख कुछ कोडी, वासुकायने सातहाख कुछ कोडी. वनस्पतिने अद्वावीसदाख कुछ कोडी, बेर्न्झाने सातदाख क्रछ कोडी, तेन्द्रीने आटटाख इन्ड कोडी, चीरेन्द्रीने नवडाख इन्ड कोडी, जटचरमें साडीबारलाख कुछ कोडी, खेचरने बारहाख कुछ कोडी जाणवी ।। ५६ ।।

अद्धतेरसवारस, दसदसनवर्गनरामरेनिरए। बारसछद्वीसपणवीस, हुंतिकुलकोडिलरकाई ॥५७॥

टीका--अयमार्गणासुपोनिसंख्यामाह । नरकगतीचत्वारो-ल्ञामनुष्यगतीयतुर्दशल्या, देवगतीचतस्रस्तियगर्गतीज्ञाषष्टिःयो-नयः, प्केन्द्रियाणांद्विपंचाशत्, द्वीन्द्रियेद्वे, ज्ञान्द्रियेद्वे, चतुरिन्द्रियेद्वे, पंचेन्द्रिये पर्विशातिः, पृथिन्यादिप्रचतुर्षे सप्तसप्त, वनस्पत्यांचतु-विश्वतिः, परोद्वातिशत्, मनोयोगेपहविश्वतिः, वचनयोगेद्वातिशत्, 34

रायपोगेयनुरशितः, प्रस्पारीतेशाशिक्षातिः, नरंगकेशशिक कारोप्ततुरसोतिः, रूपसेपद्यतिशतः, मनःपर्वतिरोतेष्याति नजानप्रदेशकृत्योतिः, निभेषेषश्वितिः, संवयंत्रकेषपृति कितिमानित्रशास अविसीपतानीतिः, पनुसीनेज्यांकरीः भणार्वाभिणवाणीतिः आधार्याभीपरावणीतः है।उगःवेष तुर्कात आव रेक्याच्येचन्एवीलिक वेजीवेक्यावांत्रक महिन्द पश्चमुक्तीव्रांगंकालिः, मधीलननेपचनुस्वीतिः, वर्शनावीनेपव पदाप्रधानिः, सार्वा स्थिपप्रकासन्, सम्बानीकतृप्रधीनिः, वर्तेः वार्रका पाच १: रेमाले . - अमन्ति वार्रकार्याय समातिः, आहार 🕏 नाद्वा क्षेत्रेयस्थानि , ५३६ । हो श्वेत्या तथ्यवार्गन स्तर्भ नवर्तरत्वाद्वातः । वामान्येनयवात्वतः । त्रायवातप्रवातात्रं वर पोरतरत्यात् कः अपः प्रमातास्मृतः शतर व दुरुपयानास्कृतः । तेन मर्स्य કે તરિકારે હવાએ કોનાઓજૂન•, મન્ટ કુલ કર્મતક હકામેનાએ કે જેડાઉલા^ક क्षितः व प्रवादामकामपुर क्या कार्या प्रवाद व वर्षे वर्षे विवस्ति वस्त्री angener. Bertetille bertett 1 4 . H

दमार्थी जन्म की हात । व की है। अधिवारी की राज दम्बारिक न्याय की स्वास्त्र प्रमाणकार ने आया की भी ही अपन्य जन्म की नाम हुई होती, है। वो बीरी दक्ष हुई होती, नाम्बन प्रमान अपने देई की ही किसी को देक बोदी जाया । व दुई होती है। इस्से

પોલી છુટ ઘાડા હો, સન્ય મહોતેનું હતવાની દિ સનત્વી પ્રવાસ સ્થાનોના હાલ્યો હ લઈ પ્ર टीका—अनमार्गेजाससचादारं मृहोत्तरनेदेनकपपताद्व, अव-सत्ताद्वारस्यप्रयमंत्रतस्येऽपियोनिङ्कटकोटिद्वारेषुर्ववर्णिते स्वयीकटा-हन्यायेनचष्ट्डकस्यादायकमेष्येतेति ॥ ५८ ॥

ट्यार्थ:—पोनि तदा छुठ कोडी मार्गणास्यानके ने जिहां जिम संभवे ते तिहां तिम बहेवा सामान्ये विदोप एहना पंत्रकवी जोड़ हेवा ॥ ५८ ॥

तसनरपणिदियोगे, हरकापसुकभवसन्नीसु । आहारेतिगसंता, दुगसंतानाणदंसेसु ॥ ५९ ॥

द्वीका—"तसनरण हत्यादि असध्यमकुण्यातिपंपिद्वाजान्तियोगनय पथारूपान्छ देवयाभन्यकृषिकांत्रीआहार कर स्थायन्तियोगनय पथारूपान्छ देवयाभन्यकृषिकांत्रीआहार कर स्थायन्ति विगतना भीनिसत्तास्थान्ति, व्हाँउपरात्मोहेषान् प्रमुक्तेष्णामुक्तास्याप्त्रीका स्थायन्ति क्षायान्ति क्षायान्ति स्थायन्ति स्थायन्ति स्थायन्ति स्थायन्ति स्थायन्ति क्षायन्ति स्थायन्ति स्थायन्य स्थायन्ति स्थायन्ति स्थायन्ति स्थायन्ति स्थायन्ति स्थायन्ति स्यायन्ति स्थायन्ति स्थायन्यस्य स्थायन्यस्य स्थायन्ति स्थायन्ति स्थायन्ति स्थायन्ति स्थायन्ति स्थायन्ति स्थायन्ति स्य

द्यार्थः—वसहायमध्यमातं प्रशिव्यातियोगः ३ यथा-द्यातं भारितगुद्धवेदश्य । १ तहानिर्मायने आहुएकमार्थ-णापे वीन सत्तरस्थानक छ ८ तन्त्र नीह विना ७ सवा घरिन विना ४ नी सत्ता छै. हान ४ दर्शन ३ ने विषे ८ तथा ७ ये सत्तायानक छै। ॥ ५९॥

अञ्चयअणहारे, केयलदानिचयरसेसअइसंता। निरपदेवायथिणा, तिरिएजिणहीणसंताओ ॥६०॥ कायपोगेचतुरशीतिः, प्ररूपलीवेदेद्वाविशतिः, न्युंसकेगरीतिः कपानेपुचतुरशीतिः, रूपत्रयेषद्भिशतिः, मनःपर्यवक्षेत्रवेषतुर्वः अज्ञानद्वयेयतुर्श्वानिः, विभंगेग्र्विशतिः, संपम्पंपकेषपुर्वि देशिक्ती अशासा, अविक्तीचतुरवीतिः, चतुर्रशैनेअश्रासिः अनुभूर्वानेयतुरसीतिः, अवधिवर्शनपर्यवितिः, केवटार्शनेक युरंश, आमन्द्रयायवेचनुस्यानिः, वेजीवेशपायांपरप्रवातिः। पञ्चगुणुगो सो स्थितिः, सध्ये समध्ये चपनुरश्चितिः, वर्शनस्त्रीमेनेप परार्विमतिः, सार ॥ स्नेपरांनासन्, भिन्यालेशतुरशीतिः स्वी पार्गणापागद्य शिक्षिः, अमंद्रिमार्गणायांगद्रसप्तातः, आहु॥ हः नग्रहार क्रयो अगुरवानिः, युवे इल होडी सल्या अधियनामंत्र केरतः व नवाधितपाद्भि । सामान्येनमवासंभ । अपम्यासंख्यमिनि वर्ष पोलिकस्पनिकाकेष्यनमाज्ञासपुत्र शन्तं स्टब्स्पणभाविताः तेन तप्यत જુવામાં હવા ને તે નાંપીટ્સના , મન્દુ જેયુ કર્મ નાર્ય કર્મ નામને મે ડાયેના કે भिनः मचमाद्राम्बीम्बप्रदाना स्वारियु करीनभीति विसरी નાજુન માંત ફુટ કો કો ક્રયનિન્દ્રને દ્વાનન મુખ તામન મિના પૈની ના પ્રે नगणनीन्द्रः दन्तिरहेत्वीन्द्रण होस्यार ॥ ५० ॥

ત્રોમી દૃષ્ટ દો કોઝોડ, મધ્યમજાતનું પ્રસ્થવના !! જેન્દ્રવર્ષિત્રેયા, શામકેના હાલમાં ૫ 'પડ મ टीका---अभगार्गणासुसचाद्वारं मृह्येत्तरमेट्रेन् कथपताह्, अव-सत्ताद्वारस्यप्रथमंक्तन्येऽपियोनिकटकोटिद्वारेपूर्ववर्णिते स्वनीकटा-हन्यायेनचपृष्टकस्पादायकमेणेवेति ॥ ५८ ॥

दशर्यः—योनि तया कुछ कोडी मार्गणास्थानके जे जिहां जिस संभवे ते तिहां विस कहेवा सामान्ये विशेष एहुना यंत्रकरी जोड केवा ॥ ५८ ॥

तसनरपणिंदियोगे, हस्कापसुकभवसन्नीसु । आहारेतिगसंता, दुगसंतानाणदंसेसु ॥ ५९ ॥

दीका—"तसनः" इत्यादि त्रसकायमञ्ज्यातिपंचेन्द्रियज्ञान्तियोगमय यथाच्यातछ्दुन्देयाभन्यज्ञायिकसंज्ञिआहारकञ्ज्ञणाहु-तिनासा भीणसत्तरयानानि, अधित्रयाद्यादेशीद्वयात् द्वपक्षरे-णाद्यस्मस्परायपर्वभीद्वरयात् (शीणमोदेसस्कर्णास्ता स्योपि अयोगिग्रणस्याने अवातियतुष्ट्यसात् द्वासन्ताद्विद्यान-यतुष्ट्यस्यादिनेद्यांनीकदेवास्याने, अधित्यासम् नष्यक्रपास्य यतुष्ट्यसम्यादिनेद्यांनीकदेवास्याने, अधित्यसम् नष्यक्रपास्य चत्रसञ्जानाः विकागांनाण्यानोकद्विद्यास्यात् ॥ ५९॥

ट्यार्थः—अतस्यायनहृष्यमति पंचिन्द्रिजातियोग ३ पया-स्यात चारिनधुकुदेशभाग्य १ वज्ञीनार्यमाये आहारसमार्य-णाये तीन सतारवानक छे ८ तथा मोह विना ७ तथा चाति विना ४ नी सत्ता छे. ज्ञान ४ दर्शन ३ ने विषे ८ तथा ७ वे सतायानक छे. ॥ ५९ ॥

अट्टचउअणहारे, केवलदुगिचउरसेसअडसता । निरएदेवाउविणा, तिरिएजिणहीणसंताओ ॥६०॥

सप्योजेषम्हातिकः प्रमुक्तेनेतिस्यातिकः वर्षविवयति माध्येपकारावितः स्वारोपकाशकोः, मनत्वविदेशेषपूर्णि न्दान्योगपुराक्षेत्रे । अववेगप्रीक्षित् सेन्यायकेगार्थ नेपायक विकास है। विकास स्थापित स्थापित स्थापित है। बक्का विकासिक समान । समान क्षेत्र स्थानिक है। अधिक र्दरः मधनेत्रमधीन प्रशीतिः वेतीनेश्वापार्यस्थानि रपराञ्चले की कारण वर्ष करते का कारणी है, हर्षेत्र विकास ter to be une interest many, there tremand, the भवाम संचारिता । त्राहर इस्टेडिया के हिस्सिसिसि अभावेत स्ट्रीके र नामानीनन सर्गक तत व्यक्तिपति व गार्थ वर्षे वर्षात्र वाचा पश्चितः । चन्त्र वृत्तव्यक्ति वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा किया हो भारत विकास अवस्था है। इस स्वासिकियो 体,中代设备合理对关的信息设计设计设计 医神经神经神经 拉特

THE PARTY OF THE P

भारते देश्वे करे हो तहे. जनसार हरे या दे जनसम्बर्ध । कन्द्राची केलेक्ट्रेस जानसार हरे देशकान्द्र संगत स टीका—अनमार्गणसुसचाद्वारं मूटोत्तरनेदेनकपपताह्, अव-

सतादारस्यमध्येतकत्वेऽपियोनिङ्ककोटिदारेपूर्वर्गावे सुनीकटा-हन्यायेनचष्ट्रकस्याहायक्रमेणवेति ॥ ५८ ॥

हन्यारेनचपृष्टउइस्याशयस्मणकीत ॥ ५८ ॥ रबार्यः—योनि तदा इन्छ कोडी मार्गणस्यानके ले जिहां

द्याय:—-पान तथा छुठ काढा मागणास्थानक ज जिहा जिम संभवे ते तिहां तिम करेवा सामान्ये विशेष एहना यंवकमी जोड़ केवा ॥ ५८ ॥

तसनरपणिदियोगे, हस्कापसुक्रभवसद्गीसु । आहारेतिगसंता, दुगसंतानाणदंसेसु ॥ ५९ ॥

त्रीका—"तसनरण हृत्यादि वसञ्चयनतृत्यमतिपयेश्विपज्ञान

तिसार्यः स्तानस्य द्वारायः स्वारायस्यपायस्यात्रायस्यात्रस्यात्रस्यात्रः तियोगस्य पर्भारत्यातात्रात्रहेदयास्यस्यात्रस्यात्रस्यात्रः तिगतत्ताः श्रीणिसत्तारयागाति, ऽष्टोऽपरातिसोहयात्रः द्वापरुपे-णायुक्षमंत्रप्राप्यपेत्रेमोह्रप्यार्वभाक्षयात्, श्रीणमोदेसप्ररूपातत्ता

णावुभमारपायपवनाम्बर्धनाययपात्र्यात् , साम्मारकाम्बर्धास्याः समीवि आमेतिगुणस्याने चात्रीयत्वस्यता, युगतस्याद्विप्तान-युग्तेमस्यादिकेदर्शनिविवेदेततास्याने, अधात्रभासः सम्बर्धन्यस्य युग्तेकस्यादिकेदर्शनिविवेदेततास्याने, अधात्रभासः सम्बर्धन्यस्य

ट्यार्थः—प्रत्यक्षप्रवन्धःपाती प्रवेदिकारियोग है यथा-ह्यात पारिवर्धः वेद्यंत्व प्रहे तक्षाकर्मकार्यः पार्वे यीन स्वस्थानक छ दान पोहे दिना प्रतापारी राज्य प्रति साम के पात प्रतापारी होत्य प्रतापारी

विना ४ नी सत्ता छै. ज्ञान ४ इर्सन ३ ने विषे ८ तथा ७ भे सत्तायानक छै. ॥ ५९ ॥

अञ्चयज्ञणहारे, केवलद्गिचउरसेसअइसंता । निरष्देवाजविणा, तिरिषजिणहीणसंताओ ॥६०॥ टीका—अङ्गयं इत्यादि । अनाहारकमार्गणायदितवास्याने तत्रअद्यानां सचा अन्तरालगतिकानां यतस्यां सत्ता, केवलिसपुर्या-तायोपिग्रणोमतीत्य केवल्ड्मि, केवल्ड्मान केवल्ड्स्गिन्ध्रणास् मार्गणासुअयातिचतस्यां सत्ता, शेषासुमार्गणासुअद्यातम् इत्यान्ध्र मृत्रम्या, अपोत्तरसत्तास्यानान्याह्, निरपु नरकगतीनेत्रिक्षणार्थ-वाय्रित्ताः समय्त्यारिश्वत्यतंसत्तायां मङ्कतयः अविदितिस्वर्थः तिर्येगाती जिनहीनति, जिननामसहिताः सप्तयत्वार्थार्थः विर्वरातान्यार्थः मारप्यत्ते, भवस्यभावादेवनहिजिननामसत्ताकः तिर्वगतानुत्वर्धः ॥ ६० ॥

टबार्थः—अनाहासिक्तमार्गेणाए आठ तथा ४ ए २ सर्च-थानक छे. केवळ्जान १ केवळ्ड्रांनमार्गणाये ४ सर्च छै. शेषमार्गणाये सर्वने आठनी सचा छे. नरकगतिमध्ये देवतान आउरवानी सत्ता नयी. शेष १४० वी सत्ता छि. १। ६० ॥ जिननाम सचा नयी शेष १४० वी सचा छे. ॥ ६० ॥

निरयाउविणादेवे, थावरतिगिजाईचउसुअजिणाय। देवनिरयाउहीणा, तेउजुयस्त्रेनराउविणा ॥ ६१ ॥

डीका—निरयाउविषादेवेड्स्यादि ॥ विरयाउविषादेवे नर्कार्ष विभागसपत्वारिमग्दातंदेवमतीसत्ताप्राध्यते, स्थावरिनकेपूष्पी अर्चन् नरपविरूपे आतिषत्तृष्टे पूर्केद्रियादिलक्षणे अञ्चिषाय इतिजिननार-रिताचपुनः देवनस्कापुद्वानायं चस्त्वारिक्षत्वस्ततस्तापांभवित तेउ-गुअने वेजोवापुकायलक्षणेनसप्रविषाद्वति महस्त्वपूर्विनायत्वस्तर्ग-विराद्यस्तिस्तायां माध्यते, अवदेवद्विकसरकद्विकसर्वार्धाक्षक्रितिस्य-द्वान्कादारकप्तुष्टक्रजननायद्वितंप्यद्वानामव्रकृतीनां आपुःविर्विर श्चसम्पर्मोहरान। वैजीवायुक्त्येनासित तथापिकर्षमञ्ज्तीसंकमप्रदे-इसस्ताकस्यवित्अक्ष्मितकर्गाश्चस्यसंभववि वेनोक्तापिप्रवाहव्या-स्यापातुअशार्वेशस्युत्तस्शतंसत्तायांप्राप्यते गङ्तसिवेऽबिह्नात्तर-ह्यापात्ववेकियोपटक्षितंदेविकरुनस्कियकेविक्रययतुष्कंआहास्त्रथ-तुष्कंमदुष्यविकंऽपटक्षणेनउक्षेगोविमस्यादियहणस् ॥ ६१ ॥

ट्यार्थः —देवगतिमच्चे नरकायु विना १४० मी सचा छे, यान २३ एथिवी १ जप २ वनस्पतिमच्चे जिननाम विना देवायु १ नरकायु विना एकसोपिस्ताजीसनी सत्ता छे । वेउ-कायबाउकापमच्चे देवतानो आजस्बो १ नरकायु १ मदाप्यायु १ जिननाम एटटानी सत्ता नयी १४४ मी सत्ता छे ॥ ६२ ॥

सासणमीसअसंन्निसु, जिणविणुआहारसम्मीसविणा। अभवेरकायगसम्मे, सचविणु हुंति इगचता ॥६२॥

डीका—सारवादने तथा विभेजसंबिष्ड जिननामविनासार-परवारितावादांअभयोजिननामाङ्गासकस्त्रात्कस्तरम्यपोहंविनापृक्षप-स्वारितावादांवपापामाप्यते स्ववगेति हायिकसम्यपृद्धनेतस्त्रविष्ठ-अनंताद्वंपियपुग्यत्देनोनोद्विरिकटस्यणसार्वविनापृकप्रवारितपुर्द्ध-तंसतायांमाप्यदेहति ॥ वर ॥

ट्यार्थ:—साध्यादन १ मिश्न १ तयाअसंद्र्यानेविषेजिननाम-विना १४७ नी सता छे। आहारक ४ सम्प्रितमोदनी दिना अभयमर्गाणाये एकतो एकताश्रीसनी सता छे। द्वायिकसम्प्री-तम्पर्देवनंताव्यंची ४ विण्यादयोहनी १ विभयोहनी १ सम् क्रितमोहनी १ एसात विना एकतो एक्नाश्रीसनी सत्ता छे॥६२॥ केवलदुगिपणसीइ, खागसुहुमेदुसयहक्वाए। एगसयंसेसासुअ, अडयाळसयंचसंतंसा॥ ६३॥

दीका—केवल्युविद्श्यादि केवल्यानकेवल्दर्शनेष्याद्यातं सत्तापांमाय्ये अयोदकागुणस्वानप्रायोग्या स्वःभसंपरापयादिवं के क्षेत्रीणतद्यक्ष्मसंपरायस्यव्यक्षिकंत्रातं सत्तायां प्राप्यते जीपकामिर्द्र क्ष्मसंपरायस्यअष्टव्यवार्तिस्वत्वतंतत्तायां प्राप्यते तथाहुक्ताण्तिर्धं क्यात्यारिने क्षपक्षभेणिगतस्यपुकाधिकंत्रातं जीपशिकंत्रप्रार्थे स्वअद्ययवार्तिमत्त्रातं सेतासुअ शेपासुमार्गणासुअङ्ग्रसार्थिः प्रति

ट्यापी:—केन्डजन १ केनड्टर्शन १ मने पंचारी सता छे, क्षपहरुकि च्रन्तांत्रायने प्कसोतीय १०२ ती हरू छे, उपरामक्षेणि स्वन्यां तायने प्कसो अञ्चार्जातनी हता के प्याप्त्रान्थारिवेश्व रुकिनोंने पृक्षों प्रकृती सता छे, उपराम् भेगोने पृक्षों अन्तार्जासनी सत्ता छे, नेपमांग्याये पृक्षों अ द्वार्जातनी सता छे ॥ ६३ ॥

स्त्रासुगोयवैषणीय, केनलदुनिद्दीणनाणनिष्पणी यीरकम्मे ए३, न३ उसीतान्त्रस्याय ॥ ६४ ॥

વેશ— જુયુનનાન વાર્યના માંગનાના સાંગનાના સામાન કરેલી પ્રમામારિયામું શનના સ્તેના કુ ૧ માળનો પારવાદિ સાંગદિષ જિલ્લામારુમારે મનુના ને રન્નો પ્રવાધ સ્વાધના સોગપ્સ કે તે છે જે જે તે તો જે ત્રિયા કરફ ન સાંગના માંગ વાર્યા માંગમાં માર્ય કા તે દર્શ જે જ્યોર મેને જે રહ્યાન સંગ્લેન્ટ પ્રસ્તિ હાન કહી પ્રવાદ વાર્યાસ્થ્ય

34

रणीयं अंतरायंसत्तायांपाप्यते केवराद्वेके नप्राप्यते ॥ बीप्कस्मे-एवंनीपृत्ति द्वितीयेकर्षण्वद्वानावरणीयपृत्तावारणीयवत्नवांपया-रुपाते औपदामिकरपारूपाते दर्शनावरणीयनवकस्पसत्ताक्षपक्ष-पारूपाते दर्शनावरणीयस्परस्यानार्द्विव इतिहापरप्रकृतिसत्तापृत्वस्व-क्ष्मसंपरायेद्वि ॥ ६४ ॥

ट्यार्यः—कर्मनी चि. भित्र भक्ता वहे हे । गोयकर्मे १ वेदनीकर्मनी सत्ता सबं मांग्या दिये छे । केवलजान केवल्दर्शन-मध्ये ज्ञानावरणीय २ अंतरपन्ती नता नथा, यीजी सबं मार्ग-णापे ए वे कर्मनी सचा छे. यीजो कर्म्यर्शनावरणीयनी सचा पिण केवल्दुगमन्त्रे तथा ययाल्यानपारित्रमध्ये उपशमधेणिने नवनी सत्ता छे ।। ६४ ॥

केवलदुगिहक्लाए, खीणेनोसंतमोहकम्मस्स । सुदुमेअर भन्न, इनंचअभरेअस्त्रीसं ॥ ६५ ॥

दोशा—अभ ा प्याहः । पाउनुसिद्दस्यादि केवळ-झानफेवळ्डान तथः यथाळ्यावेत्तीयां त्रं-ंक्तोब्दस्यतात्मभावि कोपदासिकेययाळ्यावे अशर्विदातिः सक्तां "च्छुमे" यद्भमंतप्रोका-हतिपद्गांत्रे राष्ट्रपिद्याचे प्रवादे प

टबार्यः-केवटहुगने विषे केवटहान १ वेवटहर्शन ए

केवलदुगिपणसीइ, खत्रगसुहुमेदुसयहक्वाए। एगसयंसेसासुअ, अडयालसयंचसंतंसा ॥ ६३ ॥

दीका—केवलद्विवृद्धपादि केवलज्ञानकेवलद्वर्शनेपंचार्वाति सत्तापामाप्यते त्रयोदश्याणस्यानमायोग्या सङ्क्ष्मसप्तापचातिन्नम् कञ्जिपातसङ्क्षमस्परायस्यव्यविकंशतं सत्तापामाप्यतेलोपशानिन्नम् क्ष्मसंपरायस्यकष्टक्ष्यास्थितंत्रातंत्रतायामाप्यते तथाहुम्खापतिन्नम् स्पत्ताप्ताप्ताप्ताप्ताप्ताप्तापतिन्नम्

सत्तायांभवति ॥ ६३ ॥

ट्यार्थ:—केवळज्ञान ? केवळदर्शन ? मध्ये पंचाडीर्ग सत्ता छे, क्षपकक्षेणि धुरुगतंपरायने पृकसोदोय १०२ में हर् छे, उपरामभेणि सूरूगतंपरायने पृकसो अडताळासनी सता छे प्रचारपातचारि केश करेगोने पृकसो पृक्ती स्ता छे, उपराभ श्रेणीन पृक्ती अडताळासनी सत्ता छे, श्रेपमार्गणाये पृक्ती स इसाळासनी सत्ता छे ॥ ६३ ॥

सदासुगोयवेयणीय, केत्रछदुगिहीणनाणविष्याण। पीएकम्मे एउं, न । छ संताअद्भलाए ॥ ६४ ॥

रीका—इत्युक्तासर्वमार्गं गामुसत्ताः सांत्रतंत्तानावाणादिकंत्रंतं सनामार्गणास्विभन्यद्वीयतादः । सरामुगोयद्वादः सर्गस्रिः रिट्याणासुमार्गणातुगोववेदनायस्यद्वंत्र्यसत्तावापाय्यवे रेतोवरः कारेतीचेगोवं प्रस्तु सत्तावापाय्यवेगायायाय-उक्तगिष सतिस्योतार्वे केवर्टादंपाति केवरदो।नदसन्यस्तिस्तासुविधसुपरिधाणासुस्तानार श्रीप अंत्राप्यानाचीम् विकादिते नमाचन ॥ बीएस्प्ये-एक्पीएम् इंत्रीवेक्क्षेण संभावन विष्यानावर्ग स्वयन्त्रदेषमा-रास अस्त्रामिक्ष्याच याने स्तेनात्रकारनात्रक्रमामाहायक्क्ष-धारुयति वर्गनावर्गायन्यायान्यानि न्दिरमा सङ्गीवनायुद्ध-क्ष्मप्रावर्ग्य ॥ ६४ व

केवलदुविहस्याण, श्रीणेनोयनबोहकस्मस्स । सुदुमेश्रर ४००, एवेलअश्वीकाणीयं ॥ ६५ ॥

र्थश्य— मध्यः स्थानः । व्यवस्थाति वेतद्यः सानस्यवद्यनि तयः स्थानस्यवद्यनि । स्थानस्यवद्यनि । स्थानस्यवद्यनि । स्थानस्यवि । स्यवि । स्थानस्यवि । स्यानस्यवि । स्थानस्यवि । स्थानस्यवि । स्थानस्यवि । स्थानस्यवि । स्थानस्यवि । स्थानस्यवि । स्य

टबार्यः-चेत्रब्रहुगने विषे केनव्यतान र वेत्रब्रहान ए

केवलद्भिक तथा क्षपकश्रेणि 'ययाख्यातमे 'मोहनीकर्मनी सर नयी, स्क्ष्मसंपराय उपशमश्रेणिने मोहनीकर्मनी अटावीसनी सर छे, क्षपकसूक्ष्मसंपरायने एक टोमसंज्वलनी सत्ता छे, अंभ ब्यने छवीसनी सत्ता छे, जे कारणे श्रंथिमेदी धई त्रिपुंजीकर कर्पा पछी मिश्रमोहनी १ समितनमोहैंना १ ए देना सत्ता यारे तेतो ग्रंथीमेद तो मन्यनेज थाये, अभव्यने अनादिअनंत सि ध्यात्व छे तिणे छवीसनी सत्ता छे. समकितमोहनी मिश्रगे हनीनी सत्ता नयी ।। ६५ ।।

सेसासुअहवीसं, इगवीसतिसंतनिरयदेवेसु। **पर्गिदियविग**लेसु, थावरतिगितिरियनरसंता॥६६॥

टीका—सेसामुद्दत्यादि शेषामुनार्गणामुअद्यर्विशतिः मेर्द स्यसत्ताभवति, क्षायिकेसम्पक्त्वेएकविंशतिमीहसत्ताभवति, आई निकंनरकगतीनरकतिर्वग्मनुष्यायुर्द्धश्रणसत्तायांभवति, देवगतीरे बायुस्तिवैगायुर्भेतुष्यायुद्धयंसत्तायांत्रम्यते, पुर्केद्वियमार्गेणायांविकतः त्रिकमार्गेणायांपृथिवीअप्वनस्पतिरूपेस्थावरत्रिकेतिर्यगायुः नायुर्वे

क्षणंआप्रर्द्वयंसत्तायांत्राप्यते ॥ ६६ ॥ टमार्थः---रोषमार्गणा जे रही तेहने विषे अटावीसनी सती

छे. आयुखाकमेनी नरकगति तथा देवनातिनच्ये तीन आजसानी सत्ता छे. नरकने देवायु सत्ता नवी. देवनाने नरकायु सती नयी. किम जो नरकयी नीतयाँ देशता न यांचे अने देवतानी नीसपी नारकी न धाय तिणे नरकमतिमध्ये ने देशगतिमध्ये तीन आऊखानी सत्ताछे, पुक जे देवगतिमां देवाय, नराय, निर्वशा प र टाने नरकगतिमध्ये नरकायु, नरायु, तिर्वयाय प र टाने

हुरद्धः एक्।रिष्ठपार्गणावे विकास नीनसाँच पृथिती, अह वसापति ए नीनसाँच निर्मेष १ मरण्याय सना के २ नी देवनाना आक्रमानी भगवता आक्रमानी मना नदी, ते ए यार्गणादाया क्षा देवना सामग्रे न धाँच ने साह ॥ ६६॥

ग्रष्ट्रतस्तितियकेषकः, दृतिमणुआउगुरुमश्रहकाराम्। स्रोणेमणुश्रेषके, घउषेगासुचउर्गति ॥ ६७ ॥

्रवा—गङ्गितिय ह्रायाहि । यानिवसेतेळीवाधुवाधारान् गप्यात्वेशाधु प्राय्यते, कासद्वि कास्त्रात्वद्यान्यद्याम् प्राप्यः, प्राप्यः, स्वाध्यायेष्यप्रस्थात्वे स्पर्वप्रक्रमण्यानः, उत्तर्येद्यः स्व ग्रंप्याय्याय्यायेष्यप्रस्थात्वे स्पर्वप्रक्रमण्याः व्याप्यस्थाति । प्राय्याय्यस्य स्वाधः प्रमाण्यः प्रप्राय्यक्षित्रात्विद्वित्तिनिर्वार्वित् व्याप्यस्यायाय्यस्यान् । । स्वाध्यः स्वाधः प्रयाव्यक्षित्रस्यक्षित्रस्यः । स्वस्यः स्वाधः प्रमाण्यः प्रमाण्यः ।

्वार्थ----गानिवस तेउकाय वाष्ट्रकार्य पृथानिर्वयाध्यमता हे. करदातान, कप्रदर्शनमध्य एक भवत्याष्ट्र सत्ता हो. स्थान-स्थाप रे यपारवान ? क्षाप्रते ? एक स्थाप्याष्ट्र सता हो. प्रशासभीगा स्थापरवाय ? तथा यपारवानित स्थार आउत्यानी सता हे. प्रयमाण्या जिल्हा तेहमचे स्थार आउत्यानी सता हे. ॥ ६७ ॥

नामेतिरिध्वउजाईसु, थागरि(सासाण)मीसे(मीस) वहेचसासाणं(अमणेसु)।

असित्रमुदुगनपई(दुनवद्ययसेसामु), जिणविणुसे

सामुतिगनवर्ड् ॥ ६८॥

केवछिक तथा क्षपकश्रीण ययाख्यातमे मोहनीकर्मनी तग्न नयी, स्वश्मसंपराय उपज्ञमश्रीणेने मोहनीकर्मनी अटावीसनी सत्ता छे, क्षपकस्क्ष्मसंपरायने एक टोमसंज्यटननी सत्ता छे, अन् व्यने छनीसनी सत्ता छे, के काराये श्रीधमेदी यई ग्रिउनीक्स्य कपी पछी मिध्रमोहनी १ समिकनमोहूँनो १ ए वेसी तता पाँपे तेतो श्रेमीमेद तो भव्यनेच थापे, अभव्यने अनादिअनंत कि व्याख छे विण छनीसनी सत्ता छे. समक्षेतमोहनी निश्मी इनीनी सत्ता नयी ।। ६५ ।।

सेसासुअष्टवीसं, इगवीसतिसंतनिरयदेवेसु । पर्गिदियविगलेसु, शावरतिगितिरियनरसंता॥६६॥

ट्यार्थ: —शिषमार्गणा ने रही तेहने विषे अठावीसनी सर्ग छे. आपुत्ताकर्मनी नरकगति तथा देवमातिमध्ये तीन आजदानी सत्ता छे. नरकने देवाणु सन्ता नयी. देवताने नरकाषु :सत्ता नयी. किम जो नरकथी नीसर्यो देवता न याथे अने देवतांवी नीसर्यो नारकी न थाय तिणे नरकगतिमध्ये ने देवगतिमध्ये तीन आजत्वानी सत्ताछे, पुक जे देवगतिमध्ये देवाणु, नराणु, तिर्वचणु ए हे टामे नरकगतिमध्ये नरकायु, नराणु, तिर्वचाषु ए हे टामे त्यत २ आहारशायात ४ वज्यतात १ वज्यत्यीतमध्ये तथा त्रारक्षेण प्रभागसम् चयारपातपारिकमध्ये ऐसीती सन्त छे तथा नदी, तिर्धेच तथा नार्यक्षेणी महति नीकटी पास १ तथा १ सारामजाति ४ तिरि २ नस्क २ आतृष १ उदीत पृ ११ नदी, ए समाद्रविकार सङ्ग्रे ॥ ६९॥

चउरसिआणं भेया, सुरनरविभयमईसुआहिदुगे। सम्मन्तरिगपम्हा, सुकासिह्यसिद्धरुगं ॥७०॥

टा श---इत्युक्त सलाग्यरूप, अध्यार्गणायुजीयनेदान्दर्शय-तष्ट्र ॥ पउ:साँउआणनेआदृग्यदि ॥ तवआदभेदाः चतुर्दन ग्रुंबदियग्रद्भग्रेदियग्रदर्श्वादियशेदिययम्बदियः असंक्षिपेर्ध-देवमंतिर्पर्यद्विपरर्यामार्थ्यामनेहात् धतुर्देश तदसुरनरसि ॥ पुरर्गनीनस्थाननीयसञ्जिहिक पर्याप्ताययोग्नटश्चमबिक अपर्याप्त-। हु व.रणापर्यातीयुक्तने वटक्यपर्याप्तरतस्यदेशकर बनाती उत्पादाभाषात् वनगावभगनानेनोर्मानज्ञानेस्त्रनानेनोहिड्याचि अवधिविके प्रदर्भिज्ञानदर्शनतक्षणे सम्यक्त्वविकेक्षयोपशमिक क्षायिकउपशम दक्षणपद्मवेदयामा शुक्रवेदयामा मञ्जिनियसेजिदि हमपर्याप्त पर्या-ाद्यक्षणं नवति वर्धाःक्षणिद्धान्यः नर्धनतेषुमिष्यान्यादिकारणतोमतिः नान।दीनामसभगान्, अनपुरुष्टे हेरिहापर्याष्ट्रकः करणापर्याप्तकोः ह्याउँनहरूपपर्याप्तरम् मिन्बाट्टरशुभक्षेद्रपाद्यसाद्वरसादित्याग्रीति ग्रष्ट आविक्यामीपशर्मपशनिकेष क्यंतिज्ञाजपर्याप्तकीर-पत्रे उध्यतेद्दुपः वर्धित्यू विद्यापुष्कः शपक्रभेणिमारम्यानेतातः विदर्शनि रूपं सप्तक्ष्मपुरवाद्यापि असम्परत्यमुलाधपदिगति-दतुष्ट्रपरयान्यत्तरस्यांगनाकृत्ययते । तश्राताऽपर्याप्तकः आविकताम्य-

,

दीका—अयनामकर्मणः सत्तामार्गणासुविभजनाह ॥ ना तिरि इत्पादि नामेइतिनामकर्मणः तिर्गगतीजातिषु चत्तपुरस्य रेषु पृथ्वीअभवेजोवायुवनस्पतिलक्षणासु । असंज्ञिमार्गणार्थी नवतिः जिननामरहितासत्तापांप्राप्यते, आहासत्तर्गण स्वयुः इतिवचनात् जिननामसत्ताचित्रगर्मातान्भवत्व सास्तर्तिण योरिपिजननामसत्ताभवति सेसासुवेषासुमार्गणासुविनवतिः ना कर्मणः सत्ताभवति ॥ ६८ ॥

ट्यार्थः—नामकर्मनी सत्ता विचारतां तिर्यचगतिज्ञाति तेमच्ये थावर ५ मिश्रदृष्टिमन्ये तथा सास्वादनमच्ये तिम प्रती मार्गणामच्ये वांणुनी सत्ता छे. जिननामविना शेषनामेणं वांणुनी सत्ता छे. जिननामविना शेषनामेणं वांणुनी सत्ता छे. ॥ ६८ ॥

अडसीई अभवेसु, हारगजिणहीणकेवऌदुर्गिति। सुडुमदुगेखवगाणं, असीइतिरितरयरोगवि^{णाहि}

टीका—अडसीड्रंअमब्येसु-इत्यादि अभव्यमार्गणासुगार् शीतिः सत्तायांप्राप्यते, आहारकच्तुक्रजिननामरहिताअग्राशीते भाष्यते, केवलहुगम्मि इत्यादि केवल्झानकेवल्दर्शनमार्गणसं सहुमदुगे मूश्मसंपरायययाल्यातचारिचलक्षणमार्गणासुस्पक्षणे गतासु अशीतिः सत्तायांप्राप्यते, तिर्पमातिनरकगतिप्रापोगन्य योदशनवमगुणस्यानेद्वित्तायभागेद्वीणत्वात् अशीतिः स्रवापाने प्राप्यते ॥ ६९॥

ट्यार्थः—अभय्यने आहास्क ४ जिननाम विना अञ्चारी मङ्ग्तीनी सत्ता छे, आहास्क १ आहास्कांगोपांग २ आहार्त बंधन ३ आहारकसंचात ४ केत्रछत्तान १ केत्रछर्शनमध्ये तथा क्षपककेशि महमतंपराय यथारच्यातचारित्रमच्ये पूँचीनी सत्ता छै तेरती नर्या. तियंच तथा नारकीयोगे मकृति नीकळी धातर १ महम १ सांचारणजाति ४ निर्दे २ नरक २ जातव १ उद्योत ए तेर नर्या. ए सत्तांद्रिकार संपूर्ण. ॥ ६९ ॥

चउदसजिआणं भेवा, सुरनरविभंगमईसुओहिदुगे। सम्मत्ततिगेपम्हा, सुकासंन्निसुसन्निदुगं ॥७०॥

टीका-इत्युक्तं सत्तारवरूपं, अथमार्गणासुजीवभेदान्दर्शय-ब्राह्न ॥ चउदसजिआणंभेआइत्यादि ॥ तत्रजीवभेदाः चतुर्द-शपुकेंद्रियमुक्ष्मपूर्केद्रियनाद्रश्हीद्रियनीद्रियचतुरिद्रिय असंज्ञिपंचें-द्रिपसंज्ञिपंचेंद्रियपर्याप्तापर्याप्तमेदात् चतुर्दश तत्रसुरनरत्ति ॥ ग्ररगतानरकगतीचसिक्षिद्वकं पर्याप्तापर्याप्तरक्षणंभवति अपर्याप्त-श्चेहकरणापर्याप्तोगृद्धवेनरूव्यपर्याद्वस्तस्यदेवनस्कगताउत्पादाभावात् विभगेविभगज्ञानेनोमतिज्ञानेश्वतज्ञानेओहिदुगचि अवधिद्विके अवधिज्ञानदर्शनलक्षणे सम्यक्त्वविकेशयोपशमिक क्षायिकउपशम छक्षणेपद्मछेदगायां शुक्केदगायां सिक्किनिचसंक्रिद्धिकमपर्याप्त पर्या-प्रस्क्षणंभवति नदोपाणिजीवस्यःनानितेषुमिध्यात्वादिकारणतोमितः ज्ञानादीनामसंभवात्, अतप्रवच्हे गोरहापर्याप्तकः करणापर्याप्तको-गृद्धवेनसम्बप्पाप्तस्तस्य निथ्वाद्धेरशुभक्षेत्रयाकत्वादसंज्ञित्वाश्चेति आह क्षायिकक्षायोपदामीपदानिकेषु क्यंसंज्ञिअपर्याप्तकोल-म्यते उच्यतेद्रहयः कश्चितपूर्वनद्वायुष्कः क्षपकश्रेणियारम्यानंतानु-वंधिदर्शननिकस्पं सप्तकंक्ष्यं रुत्वाश्चायिकसम्यक्त्वमुत्पाद्ययदिगति-चतुष्ट्रयस्यान्यतस्यांगताञ्जलववे तदासीऽपर्याप्तकः क्षायिकसम्य-

क्त्वेपाप्यते, क्षायोपशमिकयुक्तश्चदेवादिभवेम्योअनंतरमिहोत्पदः मानस्तीर्थकरादिरपर्थाप्तकः समतीतः एवआपशमिकसम्यस्त्वेषुन रपर्याप्तावस्थायामञ्जतरसुरस्यदृष्ट्यं, इहापश्चिकस्य सम्यक्तव्यः पर्याप्तस्यकेचित्रच्छंति नथाचतेपादुः नतावदस्यामेवापर्याप्तवस्या यामिदंसम्यक्त्वमुपजायते तदानस्यतयाविचविशुद्र्घभावात् अयतः चिवदानीमोहोदयंतुपारभविकं तद्भवतुकेनतन्निवार्यते इतिमन्येपाः तदपिनयुक्तियुक्तमुत्पदयामः यतोयोमिथ्यादृष्टि स्तत्प्रयमतयासन्य क्त्वमीपशमिकमवामोतिसनावत्तद्भावमापत्रः सन्काटनकरोरेपवपर् क्तमागमे अणंबधोदयमाउगबंधकारुंचसासणंकुणइ्डवसम्मसम्मर्दे हिचउद्वंमि १ कालंनोकुणइ १ उपशमश्रेणेमृत्वाऽउत्तरसुरेपूर्यत्रपा पर्याप्तकस्यनन्लभ्यतेइनि चेञ्जत्वेतद्मिनबहुमन्यामहेतस्यप्रथमसम्बे एवसम्यत्वमोहपुद्रछोदयात् श्लायिकापुरामिकसम्यक्तवभवति नती पशमिकम् ॥ उक्तंत्र ॥ शतकब्हरूचूर्णां जोडवसमसम्मदिद्दी उप समसेढीएकालंकरेड् सोपडमसमएचेवसम्मत्तपुंजंडर्याविकाए^{प्}र णसम्मत्तपुरगले वेअइ तेणनउवसम्मदिहा अपज्जतगोलम्मई दृखारि तस्मात्पर्याप्तसंज्ञिलक्षणमेकमेवजीवस्थानमत्रप्राप्यते इतिस्थितंत्रं परेशुनराहुर्भवत्येवापर्याप्तावस्थायाम्प्योपश्चिकंसम्यक्त्वंसत्तिवृण्या दियु तथासिधानात् सप्ततिचुर्णोहि गुणस्थानकेषुनामकर्मणीवये दयादिमार्गणावसरेऽविरतिसम्यग्ट्येरुद्यस्थानचितायां पंचर्विशर्याः यथ देवनारकानधिकृत्योत्तंत्रजनारकाः क्षायिकवेदकसम्यादृष्ट्यः । देवेषुत्रिविधसम्बग्दृष्ट्योपितयाच तद्व्यंथः पणवीससत्तवीसोद्यो देवनेरइए पडचनेरइगोखनगसम्मदिर्द्वावेयगसम्मदिर्द्वा देवीतिर्विह सम्मदिश्ची तयापंचसंग्रहेऽपिमागणस्थानेषु जीवस्थानचितायांऔ पशमिकस्पजीवभेदद्विकं उत्रसम्मसिसम्मिससी इत्यनेनग्रंथेनसी द्रिकगुत्तंततः सप्ततिचूर्णिअसिमायेणपंचसंग्रहकर्थयंथासिमायेणन रमामिरपिउपशमगम्यक्त्येसेजिधिकमुक्ततस्यतुकेविक्तमेथि**सिध्यड्-**श्वनार्यावदेवि ॥ ७० ॥

टबारे:—एवे थाँद भेदे जीव भागेणा कहे छै. सुश्म एकेंद्री १ याद्रस्पेंडी २ वेंडी ३ नेंडी ४ चीरेंडी ५ संक्षिपेंचेंडी ६ असंक्षिपेंचेंडी ६ असंक्षिपेंचेंडी ६ असंक्षिपेंचेंडी ७ अस्वीमा ए मान पर्यामा ७ हवे ६२ मार्गेणाइ भेद करे छे. टेब्याति १ नस्काति २ विभंगअज्ञान ३
मिरिज्ञान ४ अनुकाम ५ अस्पितान ६ अवधिद्रशैन ७ उपदाम ८ सायिक ९ ध्रयोपदाम १० सीन समस्रित पद्मवेदया
- एड्रुइडेदया १२ मेक्सी १३ ए तेर मार्गणाने विषे संक्षीपेंचेंडी
पर्यामी अने मंक्षीपेंचेंडी प्रयोग ए थे जीव स्थानक लामे
मोज्ञा नहीं ॥ ५० ॥

त्तमसन्निअपज्जअं, नरेसवायरअपज्जतेऊए । धावरङ्गिंदिपढमा, चडवारअसंन्निदुदुविगले॥७१॥

दीका—तमसीहरू गादि ॥ नग्युयांक्तंस्त्रीह् कंअपयोत्रातंत्रिक् युवंन त्यत्पयांत्र मागणायं हम्यते हृद्येमुद्धायुषः अत्तिविद्विकं हम्यवेदित्तन पितादिषु संस्कृतिवेद्रत्यां सुद्धायुषः अत्तिनो हन्यय-सामकाश्चरुष्यः यदादः श्रीयत्यं यदाः प्रताप्तमायं करिण्येते-साम् ह्याप्त्रस्त्रातंत्रपुर्वेतं गोपमा, अंतोमण्यत्तित्तत्तत्त्रप्रपणाशीत् एवोपणसपत्तर्त्ते अद्याद्वेति गोपमा, अंतोमण्यत्तित्तत्तत्त्त्रपणपाशीत् ताण् अक्तमम् सीष्ट्यप्त्रमाण् अंतर्तिषेत्राम्मवर्धतिपम्प्ताणाणे-वद्यार्थेषु पात्रवर्णेश्चया खेळसुर्या स्तिपत्ति साम्यत्वेत्वात्रिपत्तव्यार्थेश्वः वद्यारीणायुष्ट्यार्श्वस्त्रमण्येश्वस्त्रप्त्रमण्येष्ठस्तिविद्यात्रप्त्रमण्येव्यक्तंत्रस्त्रमण्यात्रस्त्रमण्यात्रस्त्रमण्यात्रस्ति स्त्रमण्यात्रस्त्रमण्यात्रस्ति स्त्रमण्यात्रस्ति स्त्रमण्यात्रस्ति स्त्रमण्यात्रस्त्रमण्यात्रस्ति स्त्रमण्यात्रस्त्रमण्यात्रस्ति स्त्रमण्यात्रस्ति स्तर्मण्यात्रस्ति स्त्रमण्यात्रस्ति स्त्रमण्यात्रस्ति स्त्रमण्यात्रस्ति स्त्रमण्यात्रस्ति स्त्रमण्यात्रस्य स्त्रमण्यात्रस्ति स्त्रमण्यात्रस्ति स्त्रमण्यात्रस्ति स्त्रमण्यात्रस्ति स्त्रमण्यात्रस्ति स्त्रस्ति स्त्रस्ति स्त्रमण्यात्रस्ति स्त्रस्ति स्तरस्ति स्त्रस्ति स्त्रस्ति स्त्रस्ति स्त्रस्ति स्तरस्ति स्त्रस्ति स्तरस्ति स्त्रस्ति स्त्रस्ति स्तरस्ति स्

विचारसारप्रकरणः

।मणुरसासञ्चरं अंगुलसा असंखनागमित्ताए ओगाह-त्रेमि^ररुदिर्द्धा जन्नगीसचाहिंपज्ञतीहि अपज्ञत्ताअंत-वेवकालंकरेतिति ताव् संपूर्शिममतुष्यानाश्रित्यतृतीयमप्य-उक्षणंजीवस्थानंप्राप्यते, इतिसवायरत्ति तदेवपूर्वोक्तंसंज्ञि-(रापर्या प्रेनवर्त्तते इतिसवादरपर्याप्ततेजोडेदपार्याटम्यतेए-नेतेजोलेइयायांत्रीणिजीवस्थानानिभवंतिः संइयपर्याप्तप-केंद्रियापर्याप्तश्चत्रादरोऽपर्याप्तः कथमवाप्यते इतिचेत्उ-विनुपतिःयंतरज्योतिष्कसोधमेशानदेवाः पृथिवीजस्वन-उत्पद्यंते, यदाहुः दुःखमांचकारनिमप्रजिनप्रवचनप्र-नुजिनभद्रगणिसनाश्रमणः पुरुवीआउवणस्सङ्ज्झेपज्जत गगचुआणंत्रासोमेसायडिसेहीयाटाणाः ? वेचवेजोक्टेदपा-णि किण्हानीयाकाऊतेउलेस्साभवणवंतरीयाजोइससोह-ावेउछेस्सा<u>भु</u>णेयव्या यल्छेदयोष्रियतेतछेदयपुवअये**ऽपि**स-वेसेमरई तखेसुउवयक्षाईइतिवचनात्,अतस्तेजोळेरपाया-वस्यायांकियरकालमवाप्यते, स्थावरपंचकमार्गणासुप्रय-(जीवस्थानानिस्कृभैकेंद्रियापर्यातम्कृभैकेंद्रियपर्याप्तवाद-प्रपर्णप्रलक्षणानिभगन्। । निजनिसंबिध्यतिरिक्तेकी-म्यायेननयमशस्य र उत्तर् नहांनजादिमानिद्वादश-नेसर्वेपामपिविद्यादमनाविकलतपासंज्ञिमनिपश्चस्वादसं-देवपते, बुदुविगलतिविक्तलेषु द्वीद्विपत्रीदियचतुरिदि :यानेभवतः वसद्वीतियोऽपर्याप्तः पर्याप्तः इतिद्वीदियेषु बीदिनोड म्योपः वर्गमः चतुरिद्वियेषुचतुरिद्वियोडप-

।श्रदारकेद्दि ॥ ५१ ॥ —अनं मक्रपनितार्गगामे होय वेद्वज आस्त्री- पंचेंद्री भेळांजे तेवारे संत्री रिचेंद्रीपर्यांकी १ अपनीक्षी २ असंस्वीपंचेंद्राअपर्यांक्षी ए ३ जीवना मेद टामे छे, मदाल्प असंस्वीपयोक्षी नपांद्र १४ चानके ज्यते पर तान निर्मेद्ध्य मरे तिणे ३
जीवमेद कट्या १ तेवांके वांचे क्यांचे हुए मेरे १ अपनीक्षी २
जीवभेद कट्या १ तेवांके वांचे क्यांचे क्यांचे एक्षेत्रीयों तिणे
अरेद्धार्य तेजोंकेद्वयांचे १ ता कार्का क्यांचे एक्षेत्रीयों तिणे
अर्पद्धार्य तेजोंकेद्वयांचे १ ता कार्का क्यांचे १ पर्यांचे
अस्त तेजा, बाव, बनस्पति को १ त्यांचे वादरपानकळांचे, अर्म्ह्यांमांणाम्य पहेळा बाद आवस्यानक ळांचे, अर्म्ह्यांमांणाम्य पहेळा बाद आवस्यानक ळांचे, बेंद्रीमांणा २
बेंद्रिया जीवस्थान छे, तेद्रीमें व्हेंसा जीवस्थान छे, चोंद्रीमें
चोरेंद्रीना जीवस्थान छे।

दसचरमतसेअजया, हारगनिरितणुकसायदुअनाणे। पढमतिलेसामविअर, अचम्खुनपुमिच्छसव्वेबि.७२॥

टीका—दसरासने पेः त्यादि ॥ असे अस्कारे चरमाण्येतिमानि-पर्योक्षापर्यासद्विने चनुमार्गक्रिसेक्षिपंचिद्र स्वरूप्णानिद्दराजीवस्थानाति भवति, द्वीद्रियार्दानामेन्द्रसत्वान । तथा अन्ते, अविरतेसक्षेण्यारि स्वादस्थानानिभवति, त'। ऽ गार्वे निर्माणकी न ग्रस्ति राय्योगे-कारायरानुदेवीसहामन्योगे- त्राम्यानाः । ग्रथमानिवेदयानु भायेद्वतरिमन् अभव्ये अस्पर्वर्द्धने न सुस्व-देदीभिष्यात्वेसवायिरि जीवस्थानानिभवतिसर्वजीवस्थानस्यायस्यारस्यादयानिमामिति एर

ट्यार्थ:—बेटी तिंदी २ त्रीव्ही ३ असंझी ४ संझी ५ ए पांच अपर्याप्ताने ५ पर्याप्ता ए दस जीवस्थानक प्रसन्नायने हामे, अवतमार्गाणामे १४ जीवस्थानक छे. आहारकमार्गणामे २

तिर्पेचगति ३ कायपोग ४ कपाय ४ मागेणामे ८ मतिअज्ञान ९ अतअज्ञानमे १० कृष्णवेदया ११ नीस्वेदया ११ कापोत-तेदया १३ भव्यमार्गणामे १५ अभव्यमार्गणा १५ अच<u>शु</u>दर्शन-मार्गेणा १६ नवंतकवेदमार्गेणा १७ मिथ्यात्वमार्गेणा १८ ए अदारमार्गणामे सर्व १४ जीवस्थानक छे ॥ ७२ ॥

पङ्जसंन्निकेवलद्गा, संजममणनाणदेसमणमीसे । पणचरमपजनयणे, तिअछचपज्ञीयरचक्खुमिम॥७३॥

टीका--पञ्जसंत्री इत्यादि । पर्याप्तसंज्ञिलक्षणमेकमेवजीव-स्थानंभवति ।। छद्धरपाह ।। केवलद्विके केवलज्ञान केवलदर्शने संयमपंचके मनःपर्यवज्ञानेदेशविरते च एकंजीवस्थानंसंज्ञिपर्याप्त-छश्चर्णजीवस्थानंभवतिनान्यत्, तथापंचजीवस्थानानि चरमाणि-अंतिमानिपर्योप्रथपर्याप्तानि द्वीदियपर्याप्तश्रीदियपर्याप्तचतुरिदिय-पर्गाप्तासंज्ञिपंचेंद्रियपर्गाप्तसंज्ञिपंचेंद्रियपर्गाप्तख्झणानि पंचस्थाना-निपाप्यंते, वयणति वचनयोगेकुत्रचिन् एषुअपयांप्रेव्यपिवयन-योगसंभवः भाविनिमृतोपचारात् इतिन्यायात् वेषांमतेदंशजीवभेदाः प्राप्यंते ॥ तीयळचपजजायरतिचकखुम्मि चशुदर्शनेऋतुमुत्रादिनय-कमेणत्रीणि चतुरिद्वियपर्याप्तअसंज्ञिपर्याप्तसंज्ञिपर्याप्तलक्षणानित्रपो जीवमेदामतांतरेनैगमनपापेक्षपाछचषरजीवस्थानानिनान्येवचतुरि दियादीनि त्रीणिपर्याप्तापर्याप्तळश्रणानिचधुर्दर्शनेभवंति ॥७३॥

ट्यार्थ:--केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ मार्गणामे सामायिक ? छेदोपस्यापनीय २ परिहारविशृद्धि ३ मृक्ष्मसंपराय यथारूपात-चारित एवं ५ संयममे मनःपर्यवज्ञानमे देशविरतिमे १ मनी-पोगमे १ मिश्रहृष्टिमे ए ११ मार्गणामे १ पर्याप्तासंज्ञी जीव-156

रपानदाने, चचनपोम छेहटां पांच पर्याप्ता बीवस्थानदाने, पेन्द्रां ? तेन्द्रां २ पीरेन्द्रां ३ असंज्ञीपंचेन्द्रां ५ संज्ञीपंचेन्द्रां ५ पर्याप्ता ए पांचमे भाषा छे. भाषापर्याप्त जीवा पछी चर्ड-दर्शनमें तीन अथवा छ जीवस्थान छे. चारेन्द्रां १ असंज्ञीपं-वेन्द्री २ संज्ञीपंचेन्द्रां ३ ए तीन पर्याप्ता छे. अथवा एहिज तीन अपयोप्ता अने पर्याप्ता ए ६ एण जीवस्थानदामें चर्छ-वर्शनमें ॥ ७३ ॥

थीनरपणिदिचरमा, चउअणहारेदुसन्निछअपञ्जा । तेसुदुमअपज्जविणा, सासणगुणठाणपुर्विव ॥७४॥

द्रीका—धीनसपणि इत्यादि। ह्यांवेदे तथा पुरुषवेदे पेचेल्विय-प्रामीनयानि चरमाणिचतारिजीक्षणानािन भवति, यद्यपिचसिद्वांवेऽस्-संज्ञिपयोगिऽपपोमस्यक्तविनयंतकप्रकारकः तथेयोक्तमपाक्यांवे-णंभवेअसंतिपंचेदियतिकस्वयोणीयार्के इत्यिययगा पुरस्तिमपाक्यांवे-स्त्रीपुरस्तिकास्मानस्मीहरूयकांवेदेपुरुष्वेदिनिर्देशः विज्ञाकाराह्व-स्त्रीपुरस्तिकासस्मानस्मीहरूयकांवेदेपुरुष्वेदिनिर्देशः विज्ञाकाराह्व-स्त्रीपुरस्तिकासस्मानस्मीहरूयकांवेदेपुरुष्वेदिनिर्देशः विज्ञाकाराह्व-स्त्राप्वेद्रस्ति। अपर्योक्षम्यः भेकेदिवाः अपर्योक्षमार्थस्यार्थस्य स्त्राप्वेद्रस्त्राः अपर्योक्षम्यः भकेदिवाः अपर्योक्षमार्थस्यार्थस्य स्त्राप्वेद्रस्त्रस्तिकार्यकार्यस्यार्थस्य अपर्योक्षमार्थस्यः स्त्राप्वेद्रस्त्रस्त्रस्त्रस्यार्थस्य विज्ञास्मार्थस्यः स्त्राप्वेद्रस्त्रस्त्रस्तिकार्यम्यार्थस्य स्त्रस्य स्त्रम्यस्य स्त्रस्त्रस्य स्त्रम्यस्य स्त्रम्यस्य स्त्रस्त्रस्त्रस्य स्त्रस्ति ।

36

एनद्क्तंभवतियन्युद्धभैकेंद्रियापर्याप्तस्थान्यानसस्याद्वेतस्य-क्लेनभवति, सास्याद्वनस्यग्रुभपरिणामत्यात् स्रश्मस्यमहांसिद्धारस्याद्वेतस्यान्यस्याद्वेत्रस्य परिणामस्याद्वःकेंद्रियमन्येक्षराद्वात् । अतः वाद्ररापर्याप्तद्वीद्वियापर्याप्तस्याद्वियापर्याप्तस्याद्वियापर्याप्तस्याद्वियापर्याप्तस्यान्तियापर्याप्तस्यान्तियापर्याप्तस्यान्तियापर्याप्तस्यान्तियापर्याप्तस्यान्तियापर्याप्तस्यानानियापर्यान्ते इत्युक्तात्वस्यानानियापर्यान्ते वात्यव्याप्ति गण्यस्यानानिमार्गणायुर्ववत् ज्ञात्वस्यान्। ॥ ७४ ॥

ट्यार्थः स्विन्तमे १ पुरुषनेत्मे १ पंचिद्विमे १ छेहरणा ४ जीवस्थात छे, असंज्ञीपंचेद्वी अपयोत्तीपयाती २ संज्ञीअपर्याती पर्याती ए ४ छे. स्वित्तमे, पुरुषनेत्मे, असंज्ञीमे नजाई, असंज्ञिम नपंत्तरुवे छे, परं इहां मान्यो छे, ते असियाय आचार्य जाणे. अनाहारक्रमार्गणाये संज्ञीअपर्याती १ पर्याती २ सम्भअपर्याती १ पर्याती २ सम्भअपर्याती ४ तिंजीअपर ५ वींद्वीअपर ६ असंज्ञीअपर ध्यादाअपर ६ ए आठ जीवस्थात छे। ए आठमे स्वभ्रभपर्याती कार्याप् जेवारे सारवादने ताल जीतस्थात छे। यादाअपर १ वींद्वीअपर २ तिंजीअपर ५ वांद्वीअपर भ प्राता मार्था असंज्ञीअपर ६ स्वाप्यांत्री ६ संज्ञीअपर ५ ए ताल महारे जीवस्थातक न्यामीय गुण्याणामार्गणाय गर्वे क्या ने दिने गुण्याणामार्गणाय निव्यं मार्वे व्याप्त निव्यं ना व्याप्त निव्यं निव्यं

सं<mark>चेपरमीस</mark>असद्यमोस, मणवयविउविभादारा । उरलंमीमाकम्मण, इययोगाकम्मअणहारे ॥७५॥

दी हा—मञ्जयनि नंबर्शयोगाविनायिहासका। १६पोपः इच्छम्पम्यवस्थाः सुरक्ते हर्वराजनेनेतियोगः अटः स्वर्थनने योगः घटनापरपर्भारविकानुषायिषयर्तनयोगः अस्निनवकर्षप्रद्वणः देतुः इतिन गमनोयोगधनु इतिचयासस्यमनोयोगः अग्रत्यमनोयोगः भन्यामन्यमनोयोगः असत्यामृपामनोयोगः नवसंतोम् नयः पदार्थाः यातेषुयथामंहःयंम्यक्तिपदमापक्रचेनययावस्थितं तस्त्रचितनेनधदिनः सन्यः यथाअस्निजातः अस्तिनाम्निपरिणामः कायप्रमाणः टोकप्रमा-णसम्पेयप्रदेशात्मकः यथावस्थितवस्तुविकल्पनपरः सत्यमनोयोगः न्याअसत्यः दिपरीतः अयथायं नास्तिजीव दृरवायुत्सूत्रचितः नरूप. असरपमनोयोगः नथामिश्रः सत्यासरपमनोयोगः पद्माइह-ध्यरवदिरपलाशादिगिभेषुषदुष्यशोकर्थाषुअशोकवनमेवेदंइतिपदा-विकल्पयनि तत्राज्ञोकस्याणांसक्भावःसस्यः अन्येपामपिधवस्वदिरपः लाशादीनां नत्रसद्भावादसन्यः इतिसत्यासन्यविकल्परूपः, मिश्रम-नोपोगः इतिथ्यहारनयमनापेशया परमार्यनस्तुपुनरयमसरयं-एवपभाविकल्पिनार्भायोगान् नविद्यवेसन्यंपत्रसञसस्यः नविद्यवे-मुपायत्रमञ्जूषः असत्यश्चार्राञ्जूषः अनादिभि हरितिकर्मधारयः असत्यामृपश्चासीमनोयोगश्च असन्यामृपामनोयोगः अत्रस्पाद्वादा-नकांतनपनिश्चेपविनापद्योक्ष्यापारक्षपेवटपटादिचितने तत्र्पय-हारतोपृपापिनपरमार्थतः आगमोपयोगरहितस्त्रात् सरयमपिनइदृग्-विकल्परूपः असरयमृपामनीयोगः मुनीनांचआद्वासदियाचनेआद्वाः रपाचनस्पन्यवहारतोनमृषापरमार्थतः आहारमकार्प(१)मितिविकरूप-रहितत्वानुनसत्यः अवसमिश्रमनोयोगः असत्यापुपामनोयोगयोःकः प्रतिविद्येपः तत्रोच्यवेनिश्रमनोयोगत्रतोअशोकत्रनेअशोकस्पएकां-नम्रदः धवखदिराणांग्रहृणेच्छापिनतेनमिश्रत्वंअस्यतुअपिनानापिनः त्रपासापेक्षतपापिकारणाभावात् अगृहीतत्वात् वेनसर्वथानअसन्दः इतिनसत्यः नमृपाइतिःयपदिदयते एववाम्योगोपिचतुर्वियः अत्र-तृतीयचतुर्भोतुपरिरयुख्यवहारनयमतेनदृष्ट्यानिश्चयनयेनरयाज्ञादः

एनदुक्तंभवतियन्ध्यःभैकेंद्रियापर्याप्तस्थान्वावस्थानंसास्वादनेसम्यक्तेनभवति, सास्वादनसम्यअपिणामस्वात् स्रःमस्यमहासिद्धिरस्यिपामस्वात् स्रःमस्यमहासिद्धिरस्य पिणामस्यम् इभैकेंद्रियमञ्जेदनादृत् । अतः बाद्रयपर्याप्तद्वीदिपाप्याप्तान्ति । स्वतः वाद्रयपर्याप्त्र सिद्धिर्ययपर्याप्ते सिद्धिर्ययपर्याप्ति सिद्धिर्ययपर्याप्ति सिद्धिर्ययपर्याप्ति सिद्धिर्ययपर्याप्ति सिद्धिर्ययपर्यापति सिद्धिर्ययपर्यापति सिद्धिरस्य सिद्य सिद्धिरस्य सिद्धिरस्य सिद्धिरस्य सिद्धिरस्य सिद्धिरस्य स

व्यार्थः—स्त्रीवरमे १ पुरुषवेदमे १ पंचेद्विमे १ छेहल्या ४ जावस्थान छे, असंज्ञीपंचेद्वी अपयोद्योपयाँद्यो २ संज्ञीअपयोद्यो प्याप्ती प ४ छे. कांवेदमे, पुरुषवेदमे, असंज्ञीमे नजाई, असंज्ञिम नजाई, असंज्ञीम नजाई, असंज्ञीय आयार्थ जाणे. अनाहारक्रमार्गणाये संज्ञीअपयोत्ती १ पर्वाद्यो २ स्वस्त्रअपयाद्यो व असंज्ञात्रभव ९ पर्वाद्यो १ पर्वाद्यो २ स्वस्त्रअपयाद्यो व असंज्ञात्रभव ९ वादरअप ० ९ पर्वाद्यो १ पर्वाद्यो १ प्राप्त में अस्त्रभव १ अप्तर्याद्यो कार्वाप्याप्त छे । प्रजादमे सहस्त्रअपयाद्यो व व्याद्याप्त कार्वाप्याप्त हो । प्रजादमे सहस्त्रअपयाद्यो हो व्याद्याप्त १ व्याद्याप्त १ असंज्ञात्रभव ५ संज्ञात्रभव १ असंज्ञात्रभव १ संज्ञात्रभव १ संज्ञात्य १ संज्ञात्रभव १ संज्ञात्य १ संज्ञ

संघेयरमीसअसद्यमोस, मणवयविउतिआहारा । उरलंमीमाकम्मण, इययोगाकम्मअणहारे ॥७५॥

टी हा—मध्यपनि पंचदश्योगामिचापि हागाचा ॥ दहयोगः शब्दस्पपर्वत्रमदेवः युव्यतं हर्षका अनेनेतियोगः अदम्बस्यत्रमन भरत्रत्पप्रदेशोपचितत्वाचर्डिभवन्तपुटवर्गणानिप्पत्रत्वान् भीपृत्या-अप्याद्वःतत्योदारमुराटंज्यस्महृदामहृद्वगतेणवराटायतिपद्रभपद्धम-तित्येसरसरीरं ॥ १ ॥

भण्ड्यतहोराल, वित्यरवंतवणस्मड् पष्प । पर्यर्ड्दनिध्यअतं, इहिमचिवितालंति ॥ २ ॥ उत्त्वेयपपुत्ती, चिवपंपियहल्लगंजहामिष्ठं । मंस्तिहपुहारुवद्वं, उग्रालंसम्यपरिभाता ॥ ३ ॥

उद्दर्शणमंद्रभेदारिकं भीदारिककायपोगः तथा आदारिकंमिधं मनकार्यणोनिति गम्पवेत्तअदारिकंमिधः उत्पविदेशेहिपुरंभवाद्भंतरभागतोजीवः प्रधमसम्वेदार्धनेनिवकेव्रकेनाहारयतिततः परंभादारिकरपाप्परस्थकत्वाद्रीदारिकंणकार्मणमिभेणपावच्छरीरयनिव्यक्तिः
यदाह्वकरुश्वतांभोनिभेषपाददवादिशादाह्वकाम्प्यानिर्मितानेकशास्त्रदेशः श्रीभद्रमादुस्वामी जोएणकम्प्यणं आहारिकंजर्सर्वः
बोवोजेणपर्मासंभावाव्यक्रियस्तिष्पन्ता ॥ १ ॥ तथा कृतक्रिकंक् मुद्रचतादस्यपादिवीयप्यदस्यसम्पत्रं अर्धनेनिकंभिभित्रस्यः
मुद्रचतावस्यपादिवीयप्यदस्यसम्पत्रं चर्मणेनिकंगः क्ष्मपंकृतित्रवार्मणं कर्मपराणवः प्वास्मदेदीः सहस्रीत्नीदरम्यः
कृतवाः संतःक्रमणंक्रीयं वक्तंच क्षम्यविगारोकस्य क्षम्यन्तिः

शरीरंतसञ्ज आमृत्युण्डियेभवमपंचमरोहुचांवस्ते सामेने वर्धारेत्र परारितमाङ्कभवितंभगुद्धंचवरार्षेयात्रीर्यस्तिमेह्यंतरायेशंनीमाच्वतम् स्रणं तथाहिकामेपेनेवववुषापरिकरितोव्युष्टस्यदेशम्यहायेत्रार्वे देशसुपत्रप्रतिनव्यदिकामप्ययुःपरिकरितोग्रयंनरंत्रयामनि तर्हुन सापेश्वमेत्रसत्यं अन्यत्सर्वमसत्येद्दिक्समैयंथ्यीकाकारः विकर्जेन्द्र याणामन्यक्तरचेनअसत्यअष्ट्रपात्रकृत्योगः तद्द् अपिष्ट्रपात्रदेप्तम-रत्तमेवति ॥ कायपोगः सप्तया वैक्रियकाययोगः औदारिककाय-योगः आहारककायपोगः मिसिन्निएतेष्वमिश्रावैक्रियमिशः औ-वारिकमिशः आहारकमिशः कम्माणितकार्येण पुर्व स्तकायपोगः मात्रायंस्तुविविधाकिया विक्रियातस्योगवेकियं तथाहिष्ट्कस्या-मात्रायंस्तुविविधाकिया विक्रियातस्योविक्यं व्याहिष्कस्या-क्षेत्रकेमवि अण्यस्यामहद्दभवि महद्यस्वाअण्यवित हर्य-स्त्वाअहरयंभवित इत्यादिविक्रियाक्षयेतिक्यं क्ष्पविकयं वैक्रिय-मिश्रं यवकारीणेन औदारिकेणसङ्गविक्यमिशः तककार्यणेनामिशं

रभ जनवाजाहरूपण्डल प्रधाननगराहरूषा राष्ट्र राज्य अनेनिस्पाद्व प्रकार प्र

والمتراوم وينجر والمتراور والأمام الموارا وأأوا المرازع والإوادي

मरबलप्रदेशोपचितत्वाचार्डभवन्त्वर्वभागित्वपत्रत्वात् श्रीपृज्यान अप्पादुःतत्योदारमुराटंअराटमद्वनामहद्वगतेणअराटायतिपदमेपद्धम-तित्वेसरसरीरं ॥ १ ॥

> भणद्भतहोरात्त्र, वित्यस्वतंत्रणस्सद् पप्प । पपदुद्गित्यअतं, इहिमचित्रसात्ति ॥ २ ॥ उत्त्वेयवप्सो, विचयपिमइल्टर्गजहामिष्टं । मंसाद्वेपुहारुयदं, उरालंतमपपिभासा ॥ ३ ॥

उदारेणभर्वश्वारिक श्रीदारिककाययोगः तथा श्रीदारिकिक्षं यव-कामैणोनित गम्प्येतकश्वारारिकामश्चः उत्पचिदेशिद्विप्रभवादनंतर-मागतोजीवः प्रध्यसमयेकामेणेनेवकेवकेनाह्वारयतिततः पांश्रीदा-रिकस्याप्पास्थ्यक्रवार्श्वशिक्षणकामृण्यिष्णयावच्छरीरस्यतिप्पतिः यदाद्यत्वक्छस्तांभीशिष्णगददश्वीश्वाद्यहकाम्प्यानिर्मतानेक-शाक्तंस्दर्भः श्रीभद्वाद्यस्यामे जोप्णकम्मपूणं आहार्रेद्वश्यंतरं ज्ञीवेवेजपरेसानिर्णजावकरीरस्रतिप्यती ॥ १ ॥ तथा केविक्स-मुद्दावातावस्यायांद्वतीयप्रप्रसम्पत्यये कर्मणेनिकिभीशारिक प्रदातात्रस्यायांद्वतीयप्रप्रसम्पत्यये कर्मणेनिकभीशारिकाम कर्मश्वमाणं कर्मपरमाण्यः एवास्मवदेशैः स्हस्रीरिसान्द्रयोग्या-द्वाताः तेतःकाम्णेक्षरिर उक्तंथ करम्यनिमारोकम्म क्रमणान्व-विह्यविष्यक्रमनिष्णक्रंवरार उक्तंथ करम्यविमारोकम्म क्रमणान्व-

A contract the

गच्छन्करमात्नोपछम्पते १कर्मपुद्रधानामतिस्क्ष्मत्वात् नोपछ्र्यवे निष्कामन्प्रविशन्कार्मणमेवकाययोगः कार्मणकाययोगः कार्मणकार् रीरकार्मणकपरस्युर्यरूपयोःकः प्रतिविश्चेषः यद्यआहरोदपविनग्रशै-ताःकामणवर्गणादिखकाः कार्मणशरीरत्वेनपरिणमन्तियेचअग्रस्वीर्मपरास्वित्येचअग्रस्वीर्मपरास्वयियेतनायायोगविर्वेणगृहीताकार्मणवर्गणाःकरिनेनपरिणमति

चरितत्वात् तथा प्रवेण्हीतपुत्रलानांपरिपाकहेतुत्वात् असिनवपुः
त्रल्याहुकशक्तिरमावात्नयोगत्वं इतिअयमार्गणासुपोगार्वविभन्नः
हाहु॥कम्ममणहारित्तं व्यवच्छेन्द्रफल्लिह्याव्ययस्तोऽवस्त्रमनवारियतः
व्यतस्वावधारणसिहैवं कार्यणमेवैकमनाहारकेनशेषयोगाआसभवादिः
तिनचुनरेवं कार्यणमनाहारकेन्वेवेतिआहारकेच्चिरिवरतिमधमसभवैकार्मणपोगसभवात् "जोएणकम्मपूर्ण आहार्द्वकेणतंत्वविभाव्यात्माम्पावेषयमसभयक्ताय्योगिकेवल्यवस्थापामनाहारदे अवार्यवेयववायाः
मार्वेयअयोगिकेवल्यवस्थापामनाहारद्वाराक्षमणकाययोगाभावातृ गययोगोअअजोगी इतिवचनात् पृवयन्यवापियपासभवनवयारणविविद्यतारणीयः इति ॥ ५५ ॥

टवार्थः — हुवे १५ योग कहे छे. सत्यमनोयोग १ अस-रयापुषामनोयोग ४ सत्यवचनयोग ५ असत्यवचनयोग ६ मिभ-वचनयोग ७ असत्याअपुषावचनयोग ८ वैक्रियकाययोग १५ आहारककाययोग १० औदारिककाययोग ११ वैक्रियमिश्रयोग १२ आहारकमिश्रयोग १३ औदारिकमिश्रयोग १४ कार्यण-काययोग १५ ए १५ योगना नाम कळां, अनाहारकमार्गणामें कार्ययोग १५ ए १। नरगईपणंदितसत्गा, अचक्खुनरनपुकसायसम्मदुगे। सक्षिछलेसाहारग, भवमइसुओहिदुगिसवे ॥७६॥

दीका — स्रग्रंद्पणिद् इत्यादि ॥ नरगतीपेपेन्द्रियसकाये-सद्योगेअपश्चर्रश्नेनरेपुरुपवेदेनपुंसकवेदेकपायेषु क्षोधमानमाया-हो मेष्ट्रसम्पद्मबद्धिकेशयोपश्चमेशायिकेशिक्षात्मपुरुवाविक्ष्यासुआ-ह्यात्केनतिद्यानेश्चरक्षानेअवधिद्विकेशवधिज्ञानाविषर्शनेसर्वेपचर-ह्यापियोगामवंति प्रवेपुसर्वेप्विमागणास्थानेषुपथासंभवसर्वयोगाः पंचवशान्वेति ॥ एष ॥

दवार्थः— महस्पगति १ पंचेत्रा २ वसकाय २ अच्छात्रश्चेत प्रकृपवेद नप्रंसकवेद कपाय ४ कोच मान वाया द्यामा क्षायिकस-मितत १ झयोपकामसम्बद्धित १ संज्ञीनार्गणाने १ केदया ६ कु-णानीक्कापीत तेजीपप्रद्यक्त ६ केदया आहारक १ भव्य १ मित-प्रभावः २ अत्विज्ञान ३ अवधिद्यान पृट्छी मार्ग-णाने सर्वे पेत्रस्थीन पार्यते हें. ॥ ७६ ॥

तिरिइन्थिअजयसासणि, अनाणउवसमअभवमिच्छेसु तेराहारदुगुणा, तेउरळादुगुणसुरनिरए ॥ ७७ ॥

दारिक्सिश्रकापयोगारिताएकाद्वायोगाः सुरतिदेवगतोनिरतितरः करतोप्राप्यते. मनसःप्रत्यासेवचनस्परत्यासेविक्रियद्वपंकार्मण्यपूरं पृकादवात्वकार्मणमपातसःस्थाते तथा प्रयमसम्परोत्ययानस्पर्वक्रिय पिनश्रव्यपातस्यायाः वैक्रियंपनीवाग्योगीपर्यात्रावस्यार्यासर्वायु

टवार्थः—निर्वचगति १ स्तिवेद १ अविस्ति १ सारदारत १ अज्ञान ३ फुमतिकुश्रुतिभगक्ष पृह्नी मार्गणामे अरदार्य-सम्परस्यमार्गणामे १ अभव्यमार्गणामे १ सिप्पाल्यमार्गणामे १ पृद्धी मार्गणामे १३ योग पामीये । आहारकवारीर १ आहो-रहीय २ ए कार्योडं तेवारे इंग तेरमांहे ओदारिकिटक, औरा-एकवारीर, आवारिकिय, ए वोच कार्याई तेवारे देरगति १ ना-कर्गनि १ ए मार्गणामे ११ योग हो ॥ ७७॥

कम्मुरलदुर्गथावरि, तेसविउवदुगपंचइगपवणे । छअसंक्रिचरमवयज्ञअ, तेविउविदुगुणचउविगले७८॥

दीहा—कम्पृटल्लुमङ्ग्यादि ॥ स्थायस्थत्वृषेष्विष्पारीजी-वनस्यनिटल्लेषु कार्यम् जीवास्किद्धिकीतारीक काष्योग जीशिक् मिक्कायपोगटल्लेयोग्यपपार्यन, नवजाननाः यावसैन स्यादर् ।

्राह्मयः क्षेत्राः महिक्यद्वनः महीतिक्षाक्रिक्योक्षिक्षेत्रक्षेत्

सामान्यतएकेंद्रियेपवनेवाशुकायेचतत्रकार्मणीदारिकद्विकलक्षणयोग-प्रयभावनामाग्वत्वाक्रियद्विकभावनात्वेवं इहिन्छचतुर्वियावायवो-वांतितद्यथास्यभावादसः पर्याप्ताः अपर्याप्तकाश्चतववादस्यायुकाप-पर्याप्तानांकेपांचि द्वेक्तियत्थ्यिसंभवोऽस्तितानधिकृत्यवैकियमिश्रंतन सम्पते नतुक्यमुच्यतेकेषांचिद्वैक्तियस्थ्यसंभवोऽस्तियावतासर्वेऽपि-बादरपर्याप्रावायवः संबक्तियापुत्रअवैक्रियाणांचेष्टाएवाप्रशतेः उत्तंच-कडुणंभंतेसःवेवेडन्त्रियात्रायात्रायति ! अविडन्त्रियाणंचिष्टाचेत्रनपत्रतः इतितद्युक्तसम्यग्सिद्धांतापरिज्ञानात् अविक्रयाणामपिवेपांस्वभाव-तपुत्रचेष्टोपपतेः यदाहभगवान्धांहरिभद्रम्रिप्रज्योऽवयोगद्वारदी-कार्यां वाउकाङ्गाचर्जन्त्रहामुहमापद्मत्ता अपज्ञातापादरापज्ञाताअप-ज्ञतानस्पतिविशासीपतेषं असंखिज्ञद्योगप्पमाणप्पगसरासिपमाण-मिताजेपुणबादरापञ्जता वेपयससंखेज्जङ्भागमिता तत्यमावतिण्हंस-सीणंपेउव्यिष्टाद्वेचेवनस्थित्रायरपञ्चतालंपिअसंखेळाडभागमिलाण-अत्यिजेसिपेटाद्वे अत्थितः विपक्ति ओवगासंख्यिकां भागसमयमितास-पपंतुच्छासमएवेउध्वियवत्तिणो तथाञ्जेणसब्वेसुचेवउहरोगाइसुच-ष्टावायबोविज्ञानि तम्हाअविडव्यिआविवायावायतिति । वित्तव्यंत-भावेणवेसियायव्वंतिवानाद्वायुरितिकृत्वातिण्हेरासीणंत्रयाणांराशीनां-पर्पाप्तापर्पाप्तास्भावादरापर्पाष्ठवायुकायिकानांतथातेएवपूर्वोक्ताः पं-चकार्गणादारिकद्विकवैक्तिपदिकटशणयोगाधरमाचतुर्यी असत्या-मृपारूपात्राक्वचनयोगाश्चरमवाक्तयायुक्ताः पद्योगाः भवंतिकः इत्याह । असंशिनिसंशिव्यविधिक्तेजीवेतत्रकार्मणमपांतरालगताञ्च-रपतिमयमसमये चओदारिकमिश्रमपर्यामातस्थायांपर्याप्तावस्थायां ओ-दारिकंबादरपर्याप्तवायुकायिकानां वैक्रियद्विकंचरमभवोचरमःवाग्योगः असत्यामृपायक्षणः वेनसुक्तांत्रिकपद्विकेनऊनाहीनाध्यत्यारोभवति-.. क्रेंद्रयाह्विकलेषुद्रान्ट्रियत्रीदिषचन्त्रियेषुकोऽर्यः तत्रकार्मणीदारिक-

टवार्पः --- तिर्पचगति ? स्विवेद ? अविरति ? सास्वादन ? अज्ञान २ खमतिक अविभंगक्ष पहनी मार्गणामे उपरास-सम्पक्त्वमार्गणामे ? अभव्यमार्गणामे ? सिट्यास्वमार्गणामे ? एटळी मार्गणामे ?२ योग पामीये । आहारकशरीर ? आहां-रक्तिम २ ए काढोई तेवारे इंग तेरमां के औरारिकदिक औरा-एकशरीर, औरारिकिय ए दोय काढीई तेवारे देवगति ? ना-कराति ? ए मार्गणामे ?१ योग के ॥ ५०॥

कस्मुरलदुगंथावरि, तेसविउद्युगपंचइगपवणे । छअसंस्रिचरमवयञ्जअ, तेविउद्युगणचउविगलेण्या

टीका—कम्पुरल्ह्गङ्गबादि ॥ स्थावरचतुष्येपृथिव्यय्वेजीः धनस्पतिल्क्षणेषु कार्मणं औदारिकद्विकं औदारिककायपोग औदारिकः भिश्रकायपोगल्झगणंषीगमयंप्राप्यते, तम्भावना। ध्यवरेति स्थावरे पृथ्वीकायापुकायवे औवस्पतिकायरूपेपूर्वोत्त्त्योगन्यंभवतिकार्मणः पंतरालगतो औदारिकपिशंअपर्योक्षकालेपर्याप्तकाले औदारिकंग्रेप्रां-त्तास्त्रयः योगाः सर्वेक्रियद्विकाः सर्व्यक्रियद्विकंग्वेक्तिपविकर्याप्यः लक्ष्यंननर्यन्येद्विक्तिपविकाः सर्व्यक्षित्रप्रविक्तिपविकर्याप्यः रामा-पनएकेद्रवीपत्रने प्राप्तकारीपतम्बद्धर्यमीशास्त्रिक्षद्व रूपक्षयपीन-प्रयमायनामाण्यार्थेन परिक्रनायनान्येतं इहान्तित्वप्रार्थियायाययो-दारित्रचन्नद्वान्यसम् प्रयोगः अस्योग्रस्थानस्यारमञ्जूषार पर्याप्तानाचेपाचि चेद्रवर्शन्यसंभगोर्जान्त्रतानाधक्ष्यर्थाक्यमिश्रेकः एरपने न ११:पक् क्तेकेपाबिईक्सियर्टाव्यमभगोर्टाम्नपारनागर्देट्रपि-शाद्रस्थयांनारायवः गर्धावयापुत्रअधिक्षयाणाचेद्दापुरामगर्भः उत्तरप्र-बहुण भोता देवेटाँ एका वाका वाका माँन १ अविकास प्राप्त के स्विकास प्राप्त के स्व द्रि ११५मः सम्बन्धिः । नायरिकानान् अर्थाकः वाकामवितेषाय भाव-मध्यपेशोपपंत पहाइभगवानधीहिसभद्रम्सप्रवयोऽनुयोगद्वासी-कामा बाउकाहबाधर्का पहासुहमाबद्धमा अवव्यक्ताबारगरद्धमाअय-क्षनातायविदियसीपनेव असस्तिक्षतीयापबाकपर्यसम्बद्धानाण-वितासिरणयाः गवळाता वेपयमसंबद्धाः नामसिता सन्यनाविष्टंग-रगवार्था वपराञ्चिक्ति यदायस्य अन्यविभागे स्वर्थाम् विनाण-र्जात्पत्रिमिपराद्यभन्दिकार्वे परिज्ञो स्थामिरस्थाभागमप्रमितास-पपारकातमप्रैक्षिपर्यानची नभावेषमध्येत्रचेत्रव्यक्षेत्राहसूच-भ्यशपरीयद्वीत तम्हाअविद्योगिआविद्याराश्चरिति । दिसरांम-बाउंपरेनिशयम्बनिशनाद्वासुरितिङ्कशानिष्ट्रेसरीयश्यायांसञ्चीनां-पर्वाप्तारपीतात्वः मा बादरापपीतराष्ट्र काविकानोतपावेषु रहत्रीत्ताः पं-पद्मर्पवाद्यातकद्विकादिकद्वस्थापोगाध्यमाचनुर्धी आसया-स्पार्कपाराक्तवचनयोगाध्यसवाक्त्रयायुक्ताः धहयोगाः भवंतिज्ञः इत्याह । असंक्षिनिसंक्षिण्यविधिक्तेन्द्रीवेतवव्यमेयमपांतरारमतायु-रपविन्नद्यसस्तवेचऔदारिकामिधनवर्षाता स्थायांपर्याता सर्यापां औ-दार्रक्यादरमधीवराषुकायिकामां बैक्टियदिकचरमभरोधरमः बाग्योगः अहत्यापुषाटक्षणः वेनयुक्तार्वभिषद्वियेनञ्जनाहीनाधन्त्रागेभवेति-क्रयाहति रहेपुद्रान्द्रियसीदियचन्तिहियेपुरोऽयीः ननसार्वेगीहारिक-

द्विकभावनामागृवत् असत्यामृपाभाषाशंखादीनांभवति । शेषाणां-विगलेअसध्यमोसनयइति ॥ ५८ ॥

टवार्थः--पृथ्वीकायः अपकायः वेउकाय ३ वनस्पतिकाय ४ ए ४ थावरमार्गणामे कार्मण १ औदारिक २ औदारिकमिश्र रे वैकिय ४ वैकियमिश्र ५ ए पांच योग छे । असंज्ञीमार्गणाने चरमवचन योग १ असत्याअम्या मेळीजे तेवारे पांच योग तेहीज एवं ६ योग छे। ए ६ योगमांहे वैक्तिय १ वैकियमिश्र २ ए द्विक काडीए तेवारे कार्मण ? ओदारिक २ ओदारिकमिश्र ३ असत्याअमुषाभाषा ए ४ योग छे, विकल्पेंद्री १ तेंद्री २ ची-

सिंहे ॥ ७८ ॥ कम्मुरलमीसविणुमण, वयसमईछेयचक्बुमणनाणे। उरलदुगकम्मपढमं, तिसमणवयकेवलद्गंमि ॥७९॥

टीका---कम्मुरलमीसइत्यादि ॥ कार्मणमीदारिकमिश्रंविना-- रोपास्त्रयोदशयोगाभवंति कड्त्याहमनोयोगेसामायिकच्छेदोपस्याप-·नीयसंयमेचशुर्दशेनेमनःपर्यवज्ञानेवयोदशयोगा· भावनामुकरेवयोदुः कार्मणौदारिकमिश्रौतौतेषुसर्वधानसंभवतप्वतयोरपर्याप्तावस्यायांभा-- वात् मनोयोगादिभार्गणायांत् तस्यामवस्यायामसंभवात् तथा उरह-हुगत्ति औदारिकद्विककार्मणं प्रथमं तथा अंतिमं मनोयोगद्वयं एवं - वचनयोगद्वयं एवंयोगसप्तकं केवटज्ञानकेवलदर्शनलक्षणमार्गणायां-प्राप्यते तत्रभावनाओंदारिकमिश्रकार्मणयोगीसयोगिकेविलसपुद्घात

गतस्यभवति मनोयोगोतुअविकलसकलविषलकेवलज्ञानकेवलदर्शन-विरोकितनिखिललोकारोकस्यभगवतः मनःपर्यविज्ञानिनोऽवृत्तरसु-रादिभिर्वामनसापृष्टस्यसलोमनसेवदेशनात्वेहिभगवतृप्रयुक्तानिमना॰ द्रव्याणिमनः पर्यवज्ञानेनपर्यंतिवाग्योगस्तदेशनावसरं भवति॥७९॥

ट्यार्थ:—कामण १ जींदारिकमिश्र २ पृ दोषं विना वाकी १३ योग छे, मनयोगमांहे १३ वचनयोगमांहे १३ सामायिकमे १३ छेदोपस्थापनांयमां १३ चछ्तर्श्वनीयमे १३ मनःपयोग्रज्ञानमे १३ पृ छ मार्गणांने १३ योग छामे छे, उरख्दुग जींदानिक १३ पृ छ मार्गणांने १३ योग छामे छे, उरख्दुग जींदानिक १ कह्त्यमांनी एक एक्ट्रियमांने १ अहत्यमांने मांग २ पेह्र छो जेतिमचन हो सत्यवचनयोग १ अहत्यमने मांग २ पेह्र छो जेतिमचन हो सत्यवचनयोग १ अहत्यमने नांग १ पृ थ योग छे, केवख्झान केवळ्दर्शनमे सात योग छे ॥ ४९॥

मणवयउरलापरिहार, सुहुमेनवतेउमीसिसविउद्या । वैसेसविउविदुगा, सकम्मुरलमोसअहस्काए ॥८०॥

दीका—मणवपद्दरणिद् ॥ पितृहार्यवण्डिकेषुक्रमसंपरिषय मवयोगाः केवद्दरमाहमनोग्रागश्चात् श्वाम्योगश्चाद्वर्दाक्षीत्रारिकेषिति अञ्चारकार्वक्रपाद्वर्द्वरणुर्वावदः रुप्ध्यमारंभकाकेभवतित्यामनभवति विक्तपिद्वक्रपिष्ठिध्यमतः तद्दरपमनभवति औद्दारिक्तमिश्रंक्षार्यणय-ग्रह्मातिमंतरेणातंभवात् वेनतावपिनभवतः अत्तरप्वाग्योगमनोयो-ग्रास्तुत्वद्रमागोपद्वयापराध्वनयेतनायिषणार्वेनव्हते युवानः एवँ स्तानवर्यागाः संबिक्तमारह्वविक्रयेणवर्ताद्वतित्वविक्तपं वेत्यान्तराप्त्रिताः संवोदद्यायोगाः संबिक्तमस्वर्विक्रयेणवर्ताद्वतित्वविक्तपं वेत्यान्तराप्त्रेम् संवोदवर्यागानिष्ठेत्रसम्पर्यक्षावस्यायाभावित्वतातः पित्रमाद्वर्यक्तास्यय्वन्तराप्त्रस्यक्रम्यम्प्त्रस्यक्रम्यम्प्त्रस्यव्यक्ताद्वर्यक्षात्रस्यक्रम्यम्प्त्रस्यक्रम्यस्यक्रम्यस्यक्रम्यस्यक्रम्यस्यक्रम्यस्यक्रम्यस्यक्रम्यस्यक्रम्यस्यक्रम्यस्यक्षात्रस्यक्षित्रस्यक्षत्रस्यक्षात्रस्यक्षात्रस्यक्षस्यक्षत्रस्यक्षात्रस्यक्षस देशविरतेसँवीकेयद्विकाःवैकियवैकियमिश्रसहिताःसंतः एकादशयोगाः भवंतिदेशविरतानामंत्रडादीनांवैक्रियलब्बिमतांवीकियद्विकतंभवात् । तयातेणुवनवपूर्वोक्ताः सकामेणीदारिकमिश्राः सहकामेणीदारिक-मिश्राम्यावत्ते इतिसक्तमणीदारिकमिश्राः संतःपृकादशयोगाययाः रूपातसयमेभवति अयमर्थः मनोयोगचतुष्ट्रयवाग्योगवतुष्ट्रयकाः र्मणीदारिकद्विकलक्षणाएकादशयोगाययाख्यातसंयमेभवंति तत्रमनो॰ वाग्चतुष्कादारिकयोगास्तुज्ञानेएवकार्मणमीदारिकमिश्रंतुययास्या-तसंयमंआकुरुस्यगृहस्यभगवनः केविलनः संभवंति तस्यहिसस् व्घातस्पृतृतीयचतुर्यपंचमसमयेषु कामणकामणशरारयोगीचतुर्यपं चमेतृतीयेचेतिवचनात् द्वितीयपष्टसप्तमसमयेषु औदारिकमिश्रीन-श्रीदारिकपोक्तासममपष्टाद्वितीयेन्चितिवचनादवाप्यते इतियथारूपार तसंयमेद्वयोरिपसंभवान् इतिप्रोक्तामार्गणास्थानेयोगाः सांप्रतंमा र्गणासुउपयोगस्वरूपनिरूपणपूर्वेतसुपयोगमनसिधितसुराह ॥८०॥

टवार्थः--मनोयोगना मेद ४ वचनयोगना ४ मेद औरा-रिककाययोग ए नव योग परिहारविश् क्रिसंयममे ९ मूक्ष्मसं-परापसंपममे नव योग छे, वेहिजमनना ४ वचनना ४ औदारिक १ अने एक वैकियकाययोग भेजीइंएने ए १० योग छे. निश्र-द्रिं देशविरातिमे नव योग छे. तेही जविक्रिय २ मेली जे ए ११ योग छे. ययाख्यातचारित्रमे ९ योग छे. नव ते तेहीज-कार्मण ३ औदारिकामिश्र २ ए २ मेठीने तेवारे ११ योग छे. यथारुयातमे ए बासठीमार्गणामे योग कह्या. ॥ ८० ॥

तियनाणनाणपणचउ, दंसणवारज्ञिअलखणुवओगा। विणुमणनाणदुकेवल, नवसुरतिरिनिरयअजपसु८१॥

टीका-तिञनापनाण इत्यादि ॥ श्रीप्यज्ञानानिमत्यज्ञान-थताज्ञानविभेरूपाणिज्ञानानिमतिथताविषमनःपर्यवकेवटटश्चणानि । पंचएततस्यरूपंविशेषावस्यक्रभाष्यविवरणतोज्ञेयं चत्वारिदर्शनानि-चधुरचश्चरविकेवस्ट्रीनस्क्षणानिङ्खेवं द्वादशोपयोगाः जियस्र कणति जीवस्पात्मनोस्ञाणंस्यवेज्ञायवेतदस्यतावच्छेदेनेतिस्शण-मसाधारणस्वरूपं अनप्योक्तमन्यमापि उपयोगटक्षणोजीयः इतिवेच-द्विधासाकाराअनःकाराश्चतनपंचज्ञानः।निर्नाण्यज्ञानानीत्यष्टाउपयोगाः साकाराः चत्वारिदर्शनान्यनाकाराउपयोगाः यदाहप्रवचनार्यसार्थसरः ससरोरुद्दसम्द्रमकाशनसहस्रभानुधीमदार्वस्यामः प्रजापनायां उपयो-गपरेकतिविदेणंभेतेउवओगेपवने ॥तंजहा॥ आसिणियोद्वियनाणे-सागरीवओं में सुअनाणेसागरीवओं में ओहिनाणेसागरीवओं में पण-पुज्ञवनाणसागरीवओगे केवलनाणसागरीवओगे महअद्राणसागारी-वजीगे सुअञ्चलनेसामरोवजीये विभेगनापेसामरोवजीये अणामारी-वजोगेणभेवेकतिविहपत्रसेगोयमाच्याव्यहेपत्रसेतंत्रहा चर्४दंसण-अणागारीवओमे अचरक्रदंसणअणागारीवओमे ओहिदंसण अणा-गारोवओंगे केवटदंसणअणागारोवओंगे ॥ इत्यादि अवज्ञानस्प-सिध्यात्वोपद्यतपेतनाविपर्यासेन**ः।**ज्ञानत्वंभवति नदर्शनस्पयनः दर्शनस्यसामान्यमाहुकत्वेनपदार्थसामान्यावचोधकरवाताविपर्यासतावे " नकुदरीनत्वभेदाः नभवंति । मणनाणेति विनायनःपर्यवज्ञानं केवल-दिकंच केवटज्ञान केवटदर्शन ट्याणरोपानवोपपोगाभवति, गुरे-मराती तिरित्ति, विर्यमानीनिरपत्ति नरकाती अञ्चयतिअदिरित-मार्गणायांभवंति । युवेपुद्धित्ववित्यसंभवेनमनः पर्ववज्ञानकेवटः द्विकंचेति ॥ < १ ॥ टबार्थ:-हवे बार उपयोग रहे छे. ३ अज्ञानमनिअ-

द्यापः—हव बार उपयोग यह छ। २ अज्ञानमानअ-ज्ञान १ धुनअज्ञान २ विभंगअज्ञान ३ पांपज्ञानमतिज्ञान देशविरतेर्संत्रित्रपद्धिकाःवैकियवैकियमिश्रसहिताःसंतः एकाद्शयोगाः भवंतिदेशविरतानामवडादीनांविक्रियङ्ख्यिमताविक्रियद्विकसंभवात् । तयातेषुवनवपूर्वोक्ताः सकामेणीदारिकमिश्राः सहकामेणीदारिक-मिश्राम्यांवर्तते इतिसक्तमणीदारिकामश्राः संतःप्कादशयोगाययाः स्यातसंयमेभवंति अयमर्थः मनोयोगचत्रष्टयवागयोगचतुष्टयकाः र्मणोदारिकद्विकलक्षणाएकादशयोगायथाल्यातसंयमेभवंति तत्रमनो-वाग्चतुष्कोदारिकयोगास्तुज्ञानेएवकार्मणमीदारिकमिश्रतुययाख्या

तसंयमंआकुलस्यगृहस्यभगवतः केवलिनः संभवंति तस्यहिससुः व्यातस्यृत्तीयचतुर्यपंचमसमयेषु कामणकामणशरीरयोगीचतुर्येपं-चमेतृतीयेचेतिवचनात् द्वितीयपष्टसप्तमसमयेषु औदारिकमिश्रमि-श्रीदारिकयोक्तासप्तमपष्टदितीयेच्चितिवचनादवाप्यते इतियथारूयाः तसंयमेद्वयोरियसंभवात् इतिमोक्तामार्गणास्थानेयोगाः सामतमा र्गणासुउपयोगस्त्ररूपनिरूपणपूर्वेकसुपयोगमनसिधितसुराह ॥८०॥

· ट्यार्थः--मनोयोगना भेद ४ वचनयोगना ४ भेद औदा-रिककाययोग ए नव योग परिहारविश्वक्रिसंयममे ९ सूक्ष्मसं-परायसंपममे नव योग छे, वेहिजमनना ४ वचनना ४ औदारिक १ अने एक वेकियकाययोग मेळीइंएने ए १० योग छे. निधः द्रष्टिमे देशविरतिमे नव योग छे तेहीजवैक्रिय २ मेळी जे ए ११ योग छे. यथारूयातचारित्रमे ९ योग छे. नत्र ते तेहीज-

कार्मण ३ औदोरिकमिश्र २ ए २ मेठीने तेवारे ११ योग छे. यथारूयातमे ए वासठीमार्गणामे योग कह्या. ॥ ८०॥

तियनाणनाणपणचउ, दंसणवारजिअलखणुवओगा विणुमणनाणदुकेवल, नवसुरतिरिनिरयअजण्सु८१।

टीका-तिअनाणनाण इत्यादि ॥ श्रीण्यज्ञानानिमत्यज्ञान-थृताज्ञानविभेरूपाणिज्ञानानिमतिथृताविषमनःपर्यवकेवटटञ्चणानि पंचएततस्बरूपंविशेपावरयकभाष्यविवरणतोज्ञेयं चत्वारिदर्शनानि-चशरचश्चरविकेवस्दर्शनस्क्षणानिडत्वेवं द्वादशीपयोगाः शिपस्र-कपत्ति जीवस्पात्मनोटक्षणंटक्ष्यवेज्ञायवेनद्रन्यनावच्छेदेनेनिटक्षण-मसाधारणस्यक्षं अतस्योक्तमन्यवापिउपयोगरक्षणोजीवः द्रानिवेध-द्विधासाकाराअनाकाराश्चनवर्षचज्ञानानिर्वाण्यज्ञानानीत्यष्टाउपयोगाः साकाराः चन्वारिदर्शनान्यनाकाराउपयोगाः यदाह्मवचनार्यसार्यसर-ससरोरुद्धसमृद्धप्रकाशनसहस्रभानुश्रीमदार्षदयामः प्रज्ञापनायां उपपो• गपटेकनिविद्देणंभंतेउवओगेपत्रते ॥तंत्रहा॥ आमिणियोहियनाणे-सागरीवओये सञनाणेसागरीवओमे ओहिनाणेसागरीवओपे मण-परझवनाणेसागरीवओगे केवटनाणेसागरीवओगे महअदाणेसागारी• वजीगे सञ्जनाणेसागरीवञीगे विभगनाणेसागरीवञीगे अणागारी-वभोगेणभंवेकतिविहपन्नतेगोयमाचअभ्वहेपन्नचेतंजहा चर्द्धदंसण-अणागारीवञीगे अचरकुरंसणअणागारीवञीगे ओहिरंसण अणा-गारोबओंगे केवलदंसणअणागारोवओंगे ॥ इत्यादि अनुजानस्य-मिच्यात्वोपद्यतचेतनाविपर्यासेनअज्ञानत्वंभगति नर्दानस्यपनः दुर्शनस्यसामान्यप्राहुकत्वेनपदार्थसामान्यावशेधकृत्वातावपर्यासतावे ' मक्तर्रानत्वनेदाः नभवति । मणनाजेति विनामनः पर्यवज्ञानकेवटः दिकंच केवटज्ञान केवटदर्शन ट्सपंशेषानशेषयोगानवति, सुरे-सरगती निरित्ति, विर्यन्गनीनिस्मति नरकगती अवयत्तिअदिगनिः मार्गणायांभवंति । एतेषुहिमर्ववित्यसंभवेनमनः पर्यवज्ञानकेवट-द्विकंचेति ॥ < १ ॥ टबार्थः---हवे बार उपयोग कहे छे. ३ अज्ञानमनिजन

द्यापः—हृव शाः उपयोगं कह छः । व अज्ञानमात्रज्ञः ज्ञान १ भूनअज्ञान २ विशेषअज्ञान ३ पांचज्ञानमात्रज्ञान •११

१२ 🛴 विचारसारप्रकरण.

शविरतेसेविक्रपद्धिकाःवैकियवेकियमिश्रसद्दिताःसंतः एकादशयोगाः वंतिदेशविरतानामंबडादीनांबिक्रियलब्बिमतांबिक्रियद्विकसंभवात् । यातेएवनवपूर्वोक्ताः सकार्मणीदारिकमिश्राः सहकार्मणीदारिक-धाम्यांवर्त्तेवे इतिसक्रमणीदारिकमिश्राः संतःपुकादशयोगायथा-पातसंयमेभवंति अयमर्थः मनोयोगचतुष्ट्यवाग्योगचतुष्ट्यका-

गोदारिकद्विकछक्षणाएंकादशयोगाययाच्यातसंयमेभवंति तत्रमनो-।ग्चतुष्कोदारिकपोगास्तुज्ञानेपुत्रकार्मणमीदारिकमिश्रंतुपयाल्या-संयमंआकुलस्यगृहस्यभगवतः केविलनः संभवंति तस्यद्दिसस्र-वातस्यतृतीयचतुर्थपंचमसमयेषु कार्मणंकार्मणशरीरयोगीचतुर्थेपं-मेतृतीयेचेतिवचनात् द्वितीयषष्टसप्तमसमयेषु औदारिकमिश्रंमि-

दारिकयोक्तासप्तमपष्टादितीयोग्चितिवचनादवाप्यते इतिपयाख्याः तंपमेद्वयोरपिसंभवातः इतिप्रोक्तामार्गणास्थानेयोगाः सांप्रतंमा-गासुउपयोगस्यरूपनिरूपणपूर्वतस्प्रयोगानसिषितसुराह् ॥८०॥

 ट्यार्थः—मनोयोगना मेद ४ वचनयोगना ४ भेद ओदा-ककापयोग ए नव योग परिहारविश्वक्रिसंयममे ९ सूश्मसं ायसंयममे नव योग छे, तेहिजमनना ४ वचनना ४ आदारिक अने एक विकियकाययोग भेळीइंएने ए १० योग छै. मिश्र-ष्ट्रेमे देशविरतिमे नव योग छे. तेहीजविकिय २ मेळी जे ए १ योग छे. यथारूपातचारित्रमे ९ योग छे. नत्र ते तेहीजः र्मण ३ औदोरिकामिश्र २ ए २ मेळीजे तेवारे ११ योग छे. पास्यातमे ए बासठीमार्गणामे योग कह्या ॥ ८०॥

ायनाणनाणपणचउ, दंसणवारजिअलखणुवओगा। णुमणनाणदुकेवल, नवसुरतिरिनिरयअजएसु८९॥

दीका—विअनापनाण इत्यादि ॥ शांष्यज्ञानानिभत्यज्ञान-श्रुताज्ञानविभेरुपाणिज्ञानानिमतिश्रुतावधिमनःपूर्यवकेवल्टक्षणानि पंचप्तान्स्वरूपंविशोपावस्यकभाष्याविवस्यातीनीयं चत्वारिदर्शनानिः प्रधारपुरावधिकेवस्यद्वानस्कृषानिद्वत्येवं द्वादशोपपोगाः जियस्र कर्णात जीवरपात्मनीस्कृष्णंस्कृत्यतेक्षायतेनदृत्यनावन्स्रेदेनेतिस्क्षणः मसाधारणस्वरूपं अत्रण्योक्तमन्यवाषिउपयोगटक्षणोजीवः इतितेष-द्विधासाकाराअनाकाराध्वनवर्षच्छामानिर्वाण्यज्ञानानीत्यष्टाउपयोगाः साकाराः घत्वारिदर्शनान्यनाकाराउपयोगाः यहासमवचनार्धसार्यसर-संसरोरुद्धसमृद्धयकाशनसहस्रभातुधीमद्दार्षदयामःप्रज्ञापनायांउपपो॰ गपरेकातिविहेणभेतेजबञोमेपन्नते ॥नंजहा॥ आमिणिबोहिपनाणे-गगरोत्रओमे सुअनाणेसागरोत्रओमे ओहिनाणेसागरोत्रओमे भण-व्हावनाणेसागरोवओमे केवलनाजेसागरोवओमे म्हअहाणेसागारो-नीमें सुअअनाणेसानरोवओमे विभंगनानेसागरोवओमे अणागारो-नोगेणभंवेकतिविहपन्नतेगोयमाघअध्यहेपनचेतंत्रहा चरकुदंसण-गगारोवओमे अचरक्कदंसणअणागारोवओमे ओहिदंसण अणा-वसीमे केवळदंसणसणागारोवसीमे ॥ इत्यादि अवज्ञानस्य-यास्त्रीपहतचेतनाविषयांसेनअझानत्वंभवति नदर्शनस्यपतः रियसामान्यग्राहु करवेनपदार्थसामान्याववीयकत्वाव्यविषयासताते शनत्वभेदाः नभवंति । मणनाणिति विनामनःपर्यवज्ञानंकेवसः फेनटसान फेरल्ट्सान स्त्रणंशेषानवीपपोगाथवंति, सुरे-तिरित्ति, विर्पमानीनिरयाची नस्क्रमती अञ्चयत्तिअविरिति यांभवंति । एतेषुदिसर्गविस्यसंभवेनमनः पर्यवज्ञानंकेवट-गर्थः—हवे बार उपयोग कहे छे. २ अज्ञानमतिअन श्रुतअज्ञान २ विभंगअज्ञान ३ पांच्ज्ञानमतिज्ञान

• पारक्षारम् करण<u>.</u>

विचारसारप्रकरणः देशविरतेसंवीक्रयद्विकाःवैकियवैकियमिश्रसहिताःसंतः एकादशयोगाः

भवंतिदेशविरतानामंबडादीनांवैक्रियलब्बिमतांवैक्रियद्विकसंभवात् । तथातेएवनवपुर्वोक्ताः सकार्मणीदारिकमिश्राः सहकार्मणीदारिक-

૨૧૨

मिश्राम्यावत्तेवे इतिसक्तर्मणीदारिकामिश्राः संतः एकादशयोगायथाः ख्यातसंयमेभवंति अयमर्थः मनोयोगचतुष्टयवाग्योगचतुष्टयकाः र्मणोदारिकद्विकलक्षणाएकादशयोगायथाल्यातसंयमेभवंति तत्रमनी-वाग्चतुष्कोदारिकयोगास्तुज्ञानेएवकार्यणमीदारिकमिश्रंतुययाल्याः तसंपर्मआकुलस्पगृहस्यभगवनः केवलिनः संभवंति तस्पहिसमुः द्यातस्यतृतीयचतुर्थपंचमसमयेषु कामणकार्मणशरीरयोगीचतुर्थेन चमेतृतीयेचेतिवचनान् द्वितीयपष्टसप्तमसमयेषु आदारिकमिश्रंमि॰ श्रीदारिकयोक्तासममयशहितीयेग्वितिवचनादवाप्यते इतियथारूपा॰ तसंयमेद्रयोरियसंभवानः इतिमोक्तामार्गणास्थानेयोगाः सांप्रतमाः गंगासुउपयोगस्त्ररूपनिरूपगपूर्वक्षप्रयोगानामेधितसुराह् ॥८०॥ ट्यार्थः--मनोयोगना मेद ४ वचनयोगना ४ भेद औरा॰ रिककाययोग ए नव योग परिहारविशुद्धिसयममे ९ गुरुमसं-परायसंयममे नय योग छे, तेहिजमनना ४ वचनना ४ औदारिक र अने एक वैकियकाययोग भेजीइएन ए १० योग छे. निभ द्रष्टिम देशविरितमे नव योग छे. तेही जंगिक्रप २ मेजी जे प ११ योग छे. ययारुयातचारित्रमे ९ योग छे. नत्र ते तेही व

पदारुयातमे ए बासर्तामार्गणामे योग कहा. ॥ ८० ॥ तियनाणनाणपणचउ, दंसणयारजिअलन्यणुवओग विणुमणनाणदुकेवल, नवमुरतिरिनिरयभगणगु८१

वामंग ३ औदारिकामिश्र २ ए २ केवीजे तेवारे ११ योग छै

चउरिंदिअसंन्निदुअन्नाण, दंसङ्गवितिथावरिअचक्तश् तिअनाणदंसणदुगं, अन्नाणतिगभवमिच्छदुगे ॥८३॥

टीका—पर्शिदिअसिहिद्यादि चतुर्विदेवेअसेहिनियत्वारउपयोगाभवंतिकृतद्वर्याद्वध्वज्ञानस्यक्षेत्रहेक्ज्ञानेमस्यक्षानभूताज्ञानकपेद्वेदर्शनेच्छार्दरानाच्छार्देशन्यकृत्ययः नयातपृत्रवृज्ञात्तरक्ष्यद्वययः नयातपृत्रवृज्ञात्तरक्ष्यद्वययः नयातपृत्रवृज्ञात्तरक्ष्यद्वययः नयातपृत्रवृज्ञात्तरक्ष्यः
व्याद्वययोगाअपवन्त्यत्विक्षयुर्वर्यन्तर्विक्षः संसः प्रयोभवंतिके
त्वर्याद्वा ॥ इगतिसामान्यतः पृत्र्वदेवेद्वादिदेवे श्रीदिवेदुस्यावरेपुस्यक्षानभूताक्षानेअप्यद्विक्षयेद्वित्ययवयोगाः भवंतिनश्चेयाः
विभागत्वानभ्वमत्ययनः शेषास्तुसस्यक्ष्यादिअभावात् नमाप्यवेअज्ञान्
र्वाद्वर्यम्यकृत्यस्याव्यविक्षयस्यक्षयस्य विस्ययावातिक्षयान्त्रिक्षस्यमार्गणायांमिय्यान्वविक्षेत्रभ्वयस्यक्षयस्य विस्ययावादितियद्यावानिदेकंअन्त्रवर्यः प्रयोग्याः अन्तान्तिक्ष्यस्यक्षाविद्यत्विक्षस्ययावादितियद्यावानिदेकंअन्त्रवर्वर्यः प्रयोग्यः वृज्ञिक्षक्षराणावेत्यतेतप्रसम्यगवगव्यत्राः इनिदंवेद्वस्तिकारम् ॥ ८३ ॥

ट्यूमें:—पीट्रांमे १ असंजिमे १ मतिअज्ञान १ स्वअ-ज्ञान १ ए ३ अज्ञान वाध्वदाँन १ अपध्युत्सेन २ ए दोष दर्शनमे ४ उपयोग छे । एक्ट्रांमे बेट्रांमे तेट्रांमे एंच पावर्ते ए ८ मार्गणामे २ अज्ञान १ अध्युद्धतेन १ उपयोग छे, चधुद्धतंन विना तीन अज्ञान मतिअज्ञान १ स्वअज्ञान २ विभंगअज्ञान २ दोष दर्शन चधुद्धतंन १ अचधुद्धतंन २ ए ९ उपयोग छे । ए मार्गणामे तीन अज्ञानमे ३ अभ्यप्येनिस्क-द्विको पिप्याव १ सार्यादनमे सर्वे बळा वे पांच उपयोग छे ॥ ८२ ॥ १-शतज्ञान २ अविद्यान ३ मनःपर्यव्यान ४ केवस्यान ५ च्यार दर्शन ४. चख्रदेशेन १ अच्छुर्दर्शन २ अविदर्शन ३ केवस्दर्शन ४ ए बार बीव स्त्रुप्यउपयोग छे. मनःपर्यव्यान १ केवस्यान २ केवस्यशंन ३ ए बीन विना बाकी वीन ज्ञान तीन अज्ञान तीन दर्शन ए ९ उपयोग छे. देवगति १ विरिःगति २ नरकगति ३ विक कहीं अविरति ४ ए च्यार मार्गणामे नव उपयोग छे १॥ ८१॥

तसयोअवेअसुका, हारनरपणिदिसन्निभविसवे। नयणेयरपणलेसा, कसायदसकेवलदुयूणा ॥८२॥

वीका—तसयोअ इत्यादि ॥ वसेयुयोगेषुमनीवाद्यापकपेषुवेदेपद्रस्याकारक्षणकांप्रिन्युसकत्व्यणेषु शक्केक्सायां आहात्वेपनारातांप्रिन्येपुर्साद्याप्रभयेषुसर्वेद्वाद्वाराप्युपयोगाः संभवति ।
वेदेग्वापित्यापकपेषुकेन्द्रद्विक्द्वीनाद्वीनोपयोगाः विगाकारायोग्यस्विदेपुद्रस्योपयोगाः कथ्येत नययोग्याद्यात्वाद्यात्वाद्वार्ति इतरे
अवधुद्दर्शनपंच्युकेक्यायुच्युप्रकाययेषु क्रोयमानसायान्योभेषु केरवदिकेनकनाद्वार्यभोगाः भवति नतुकेकद्विक्षप्रधुद्दर्शनादिसमार्थेअक्ट्यादात्तस्य ॥ ८२ ॥

द्यार्थः - प्रसक्ताय १ तीनयोग ३ मनोयोग १ यपनयोग २ कापपोग ३ वेद ३ प्रस्पवेद १ झांबेद २ नतुंसकोद ३ एक्ट्रवेदया आहारक १ मनुष्यमित २ पनेब्दि १ संसी १ भव्य १ प १३ मार्गणामे सर्व १२ उपयोग छे. पर्श्वासनमे १ अन्दर्श्वानमे १ पांच केदयाने कृष्ण १ तीन २ स्पोत ३ वेद्यो ४ पदा ५ स्थायमे १० उपयोग छे. कादसात १ क्रिट्यान २ प्रदोनं ओआसीन द्वायर्थः ॥ ८२॥ चउरिंदिअसंन्निदुअन्नाण, दंसइगवितिथावरिअचकश् तिअनाणदंसणदुगं, अन्नाणीतगभविमच्छदुगे ॥८३॥

द्याप्री:—वीर्दामे १ अधियोगे १ मितअज्ञान १ सृतअ-ज्ञान १ प २ अज्ञान चडुराने १ अध्युद्दान २ ए दीए दर्शनमे ४ उपयोग छ । एवंदाने बंदीने तिद्राने पांच पावरने ए ८ मार्गणामे २ अज्ञान १ अच्छारक्षेत्र ए ३ उपयोग छ, चडुरात विना तीन अज्ञान मतिअज्ञान १ सृतअज्ञान २ विभागअज्ञान ३ दीय दर्शन चड्डारले १ अच्छारक्षेत २ ए ५ उपयोग छ । ए मार्गणामे तीन अज्ञानमे २ अभ्यपनेपिच्छ-द्विको मित्याव १ सारबादनमे सर्वे बद्धा वे पांच उपयोग छ ॥ ८२ ॥ केवलतुर्गेनियतुर्गं, न गिनअद्याणिवणुत्तद्वअभूका दंसणनाणिनगंदेसि, मिसिअद्याणमीसंतं ॥ ८४ ।

द्योका-केनस्युगेनियत्म समादि ॥ केनसङ्के क्षेत्र ज्ञानस्रौतस्थानेनिस्तरि हेर्दुस्तालो स्टब्ह्यैतन्त्रपंभावितहेशस्य अञ्चलक्ष्युपयोगश्यार हेदपुर किरल्झालदर्शनोहपादः सञ्चीयञ्चात रिवपनामे केरलनामो उपराज्ञहर्तनप्रयनात् इतिस्परहारनप्रस्तीन धयनवेनआरणकायेआराष्यंत्रा स्टब्बनियमान् तथावि सरदजानयः कारीमन्यादीनाम्ययोगानात्त्रांतभो रात् यथासवितुः वकानेतारः दीनांसत्रापेऽपितनुषाःपरशैनातः पूर्वतेनशेषाद्विनवतिस्त्राणः विग्रभज्ञानी अविनाशेषानवोषपोगा आपिकसम्यक्त्वेषपारवादणाः रिप्रेमाप्यते अज्ञानिकस्यम्बर्यान्यसञ्ज्ञावेभावान् नअनयोसिति ॥ तपादेसिद्दतिदंशविरती जानविकंगतिश्वतभविष्टशुणेददाैनविकंच-. श्रारवशासिदर्शनन्यपंपाप्यते । नञेपास्त्रपानानिकस्पनिप्पालम त्यपान्नात्रमनःपर्यवेकेवछद्विकं सर्वविरत्यभावात्रतनमिश्रेनदेव रहकं अज्ञानमिश्रितंभवति तत्रसम्यक्त्वात् पतितस्यमिश्रभावंगतस्यज्ञाः निष्कदर्शनिषकरूपंउपयोगपदकंपारपते मिथ्यात्वात् विभूमार्गगतः स्यअज्ञाननिकदर्शनविकरुपंउपयोगपदकप्राप्यते अञ्चानधिदर्शनमः र्गणाऽसिपायेणोच्यते इति ।। <४ ।।

. स्वार्पः—केवल्ड्ये केवल्झान १ केवल्द्दांनमे आफ् . आपणाप्तिच केवल्सान केवल्द्दांन ए वे उपपोग छे. . तीन अज्ञान विना वाक्षे नव उपपोग पांच ज्ञान स्यार दर्शन . ए संमीलने नव उपपोग छे. झायिकसमकितमे ययाल्पातवा । प्रिनेम दर्शन ३ चछु १ अचछु २ अविष्दर्शन ३ तीन ज्ञान मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान ए ६ उपयोग छे, देशविरतिमे अने पृष्ठीज ६ उपयोगज्ञानसुमिश्र न क्षीजे ज्ञान काठीजे एटके २ अने दर्शन ३ अज्ञान ए ६ उपयोग मिथमे छे. ॥<४॥

मणनाणचरवुवज्जा, अणहारेतिस्रिदंसचउनाणा । चउनाणसंजमावसम, वेअगेओहिदंसेअ ॥८५॥

द्वाक्षा-मणनाणंपगञ्चवज्ञा इत्यादि ॥ यनःपपंपक्षानचनुः
रैश्नेनवज्ञाःशेषावशोषयोगाअनाहारकेभवंति, यणुमनःपपंपज्ञानेपः
पुर्दर्शनंत्वमानाहारकेनसभवंति अनाहारकोविष्यदगतिकेविष्ठसम्बद्धः
प्रातापीयितिद्वाव्यायांनचन्त्रानाथाः समयः नत्यः वांणिवर्शनादिकः
प्रात्पायुत्विद्वाव्यायांनचन्त्रनाथाः समयः नत्यः वांणिवर्शनादिकः
प्रात्पायुत्विद्वाव्यायांनचन्त्रनाथाः समयः
प्रात्पायुत्विद्वाव्यायांनचन्त्रनायः
प्रात्पायुत्विद्वाव्यायांनचन्त्रनायः
प्रात्पायुत्विद्वाव्यायांनचन्त्रनायः
प्राप्त्वाव्यायः
प्राप्तिव्याव्यायाः
प्राप्तिक्ष्यः
प्राप्तिकः
अविद्वाव्यायाः
प्राप्तिकः
प्

शेवेस्वेरसारसमणेकमा, अद्वयुष्यवध्यवस्यो । षावदुष्यविक्षित्रसम्, जीअगुणपोगोवजोगते ॥१॥ अत्रमुख्यरस्यसमाषेक्षयोगभुक्यस्यस्याख्यास्यागायास्त्रने-स्याखेयाद्विसांत्रतंषांगणसुष्ठेक्याःनिक्ययताद्वः ॥ ८५ ॥

टवार्थः—मनःपर्यायज्ञान, प्रसुद्दश्न ए दोव कार्राजे अना-द्वारकमे १० वपयोग छे. तीन दर्शन ३ पद्ध १ अपन्न २ अवसि च्यार ज्ञान ४ मतिज्ञान, भृतञ्चान, अवसिज्ञान, मन.पर्यायज्ञान, ए ४ उपयोग छे. च्यार ज्ञानमें संजममे उपशामसमितने हायो-पशम समिक्ततमे अविधिदर्शनमे ए इग्यार मार्गणामे सात उप-योग हे. ॥ ८९ ॥

छसुलेसासुसद्वाणं, एगिंदिअसंक्षिभूदगवणेसु । पदमाचउरोतिन्निड, नारयविगलम्मिपवणेसु ॥८६॥

टीका-—उसुलेसासुसङ्गणं इत्यादि ॥ पर्सुलेदगासुस्तरपानं स्वाःस्वाःलेदगाभवंति यथाकुष्णलेक्यायां कृष्णलेदगानील्लेदगायां-नील्लेदगा इत्यादि सामान्यतः एकेन्द्रिवेपुअसंज्ञिभूदकवनेषुपृषि-व्यंद्धनस्पतिपुप्तपाः कृष्णनीलकापीतवेजोलेदगाश्चतस्यःभवंति भवनपतिव्यंतरप्योतिल्लासीर्वेपेद्यानादिवाहिस्स्त्यभवस्युनाप्तेपुम्प्ये-ससुद्रपर्वेते तेपातेजोलेदगावंतः सहुत्ययंते नात्युव वाधुकायिकेप्रप्रपानिक्यंत्रपर्वे वार्केपु वाधुकायिकेप्रप्रपानिक्यंत्रपर्वेते नात्याप्रपार्वेपुष्रप्रपानिक्यंत्रपर्वे वार्केप्त्रपर्वेपेप्रपानिक्यंत्रः कृष्णनीलक्यंत्रपर्वे नात्याप्रपाप्तिस्यः कृष्णनीलक्यंत्रपर्वे नान्याप्राप्तेप्त्रपर्वेप्तर्यान्तिक्यंत्रपर्वे नात्याप्रपाप्तिस्यः कृष्णनीलक्याप्तिकेय्याभवंति नान्याप्राप्तेप्तर्यामन्त्रस्यस्तास्यवत्तापस्थानोपेत्वच्यात्र्यात् ।। < ६ ॥

टवार्ष:—हिवेबासठ मार्गणामे वेहमा कहे छे, तिहां छ वेहयामे आपआपणी वेहमा छे. ऋण्यवेहमामे क्रूण छे. मीठ-वेहमामे नीख छे, तेजोमे तेजो. कापोतमे कापोत एकेन्द्रामें असंप्रतिष्ठे २ पृथियीकाप अपकाप वनस्पतिकाप ए पांच मार्गणामे परिट्ठी कृष्ण नीव कापोत तेजो ए ब्या वेहमा छै. नाम्क्रीगिनिमें बेन्द्रीमे तेन्द्रीमें चौरेन्द्रीमें आग्रीकायमें यायुकायमें ए छ मार्गणामे पहिंडी तीन वेहमा छे.॥ < ६॥

अहरकायसुहुम्मिकेवल, दुगिसुकाछाविसेसठाणेसु। यंथाचउसदर्यवि, अकसाएपगइवलवंथो ॥८७॥

पगड्

टीका-अहकारपुसुदुरिम इत्यादि ।। यथारूपातसंयमेस् **इमसंपरापसंगमे** केवलद्विके केवल्जान केवल्दर्शनक्रपेशक्रलेस्या एवनशेषाः एतासुअत्यंतंविशुद्धपरिणामत्वात् , शेपासुमार्गणासु प

कचत्वारिशत् संख्यासुषडपिवेडयाःप्राप्यंते ॥ उक्तामार्गणासुवेडयाः संप्रतित्रेधतस्त्रेविभजनाहु॥ वेधाचउसवत्यवि इत्यादि निध्यात्वादि-

पार्थः ॥ ८७ ॥

प्रदेशकंध छे ॥ ८७ ॥

हेतुसिः अत्मपदेशेकपेपुद्रदानांसीठीकरणवंदः सचतुद्धांपकृतिवंदः स्थितिबंदः रसवंदः मदेशवंदः तत्रयोगापयडिपएसंठिइअग्रुभागं-कसायाओइतिवचनात् प्रकृतिप्रदेशवंधीयोगान्भवतः स्थितिवंध-रसबंधीकपायान्भवतः, तयतन्त्रार्थतोशेयं ज्ञानेषु विपुअञ्चानेषु पद-मुतंपमेषु विषुद्रशंनेषु पर्सुछेदयासुभन्याभृष्येषु परमुसम्यक्तवेषु संज्ञि असंज्ञि मार्गणासु आहारकानाहारकपार्गणासु चतुर्विथोपिऽपंधः वेनसर्वत्रापिसर्वास्वपिमार्गणासु वंधभेदाश्रस्वारोपिनाप्यंते अकसाप् कपापरहितासकेनटाद्विकंपथारुयातलक्षणासुनिपुमार्गणासु

इतिमकतिवंधः तथा दलति प्रदेशसमुदयोदलः प्रदेशयंथः इति-बंधव्वयंमाच्यते योगरूपस्यहेतोःसङ्गावात् द्वारायातयन्धरूपसंदरे-

पणतसनरयोपसु, कसायलेसाअचक्खुभद्रसु । चउमूलउचरापुण, सगवन्नाहेयवोभणिया ॥ ८८ ॥

ट्यार्यः---मथारूपातचारित्रमे स्वत्नसंपरायचारित्रमे केवट-ज्ञानमे केवटदर्शनमे एक शुद्धकेदया छ । यीजी मार्गणा १३ गतितेंद्री १ तस १ योग २ वेद २ कपाय ४ ज्ञान ७ संजय ५ दर्शन ३ भव्यसमिकत ६ संज्ञी १ आहारक २ इक्ताउीस मार्गणामे ६ छेदया छे। बंचना ४ भेद छे, सर्वमार्गणाये प्यार प्रकारनी बंध छे, जिद्दां कपायीदय नहीं तिहां प्रकृतिबंध तथा ए ४ उपयोग छे. च्यार ज्ञानमे संजममे उपरामसमितते झरो-पराम समक्षितमे अवधिदर्शनमे ए इग्यार मार्गणाने सात उप-योग छे. ॥ ८५ ॥

छसुलेसासुसङ्घाणं, प्रगिंदिअसंन्निभूदगवणेसु । पढमाचडरोतिन्निउ, नारयविगलग्गिपवणेसु ॥८६॥

दीका—ल्सुलेसाम्रसङ्गणं इत्यादि ॥ परस्रकेद्रयमुस्तस्यानं स्वाःस्वाःवेद्रयाभवंति यथाकृष्णकेद्रयायां कृष्णकेद्रयानां लेक्ट्रवेयाभवंति यथाकृष्णकेद्रयायां कृष्णकेद्रयानां लेक्ट्रवेया इत्यादि सामान्यतः पृकेन्द्रियेयुअसीक्ष्मभूदकवनेषु पृषिव्यं व्यवस्थातिषु प्रमासः कृष्णनीलकापोतिजोकेद्रयाश्चरतः भवंति भवनपतित्यंतरत्योतिष्कसीचर्यस्यान्ते वाहित्यं विक्रेन्द्रवेयु विक्रेन्द्रवेयु विक्रेन्द्रवेयु वाहित्ययेषु असिष्य वाह्यस्याव्यं वाह्यस्यावित्यं प्रमासित्यं कृष्णनीलकापोतकेद्याभवांति नान्याप्रापोऽसीवामन्यस्यासायाव्यं वाह्यस्याविष्यस्याविष्यस्यावीपेतस्याव्यं वाह्यस्याविष्यस्याविष्यस्याविष्यस्यावीपेतस्याव्यं वाह्यस्याविष्यस्याविष्यस्यावीपेतस्याव्यं वाह्यस्याविष्यस्याविष्यस्यावीपेतस्याव्यं वाह्यस्याविष्यस्याविष्यस्यावीपेतस्याव्यं वाह्यस्यस्यस्यावीपेतस्यावाः

टनार्पः—हिनेनास्ट मार्गणामे छेड्या कहे छे, तिहां छ छेड्यामे आपआपणी छेट्या छे. कृष्णछेड्यामे कृष्ण छे. मीड-छेड्यामे नीख छे, तेजोमे तेजो. कापोतमे कापोत. एकेन्द्रांमे असंज्ञामे २ पृथिबीकाम अपकाम वनस्पतिकाय ए पांच मार्गणामे पहिंछी कृष्ण नीछ कापोन तेजो ए च्यार छेड्या छे. नारजीगतिमे बेन्द्रांमे तेन्द्रांमे जोरंन्द्रांमे आस्वकायमे वायुकायमे ए छ मार्गणामे पहिंछी तीन छेड्या छे.॥ ८६॥

अहरकायसुहुम्भिकेवल, दुगिसुकालाविसेसठाणेसु। यंधाचउसवरथवि, अकसाएपगइदलवंधो ॥८७॥ **इम**संपरापसंपमे केवरुद्धिके केवरुज्ञान केवरुदर्शनक्रपेशुक्कुरेश्या-एवनशेषाः एतासुअत्यंतंविशुद्धपरिणायत्वात् , शेषासुमार्गणासु ए क्ष्यत्वारिशत् संख्यासुषडपिळेश्याःप्राप्यंते ॥ उक्तामार्गणास्रहेश्याः

संप्रतिबंधतस्वेविभजनाहु॥ बंधाचउसबल्यवि इत्यादि मिध्यात्वादि-हेतुमिः आत्ममदेशेकम्पुद्रटानांहोर्छाकरणयंगः सचतुर्द्धामफृतियंधः स्थितिबंधः रसबंधः प्रदेशबंधः तत्रयोगापयडिपपूर्सटिङ्अणुभागं-कसायाओइतिवचनात् मकृतिप्रदेशवंधीयोगात्भवतः स्थितिवेध-रसर्वधीकपायानुभवतः, तश्चतन्त्रार्थतोज्ञेयं ज्ञानेषु विषुअज्ञानेषु पद्-मुसंपमेषु त्रिपुदर्शनेषु षद्मुटेश्यासुभव्याभव्येषु पद्मुसम्पन्त्वेषु संज्ञि असंज्ञि मार्गणासु आहारकानाहारकमार्गणासु चतुर्विधीपिऽवंधः वेनसर्वत्रापिसर्वास्विपमार्गणासु वंधमेदाश्चल्वारोपिभाष्यंवे अकसाए कपायरहितासकेवटद्विकंयथाख्यातलक्षणासुविधुमार्गणासु इतिमक्तिक्यः तथा दल्ति प्रदेशसमुद्दयोदसः प्रदेशवंधः इति-वंश्वत्यंमाप्यते योगरूपस्पदेतोःसङ्गावात् द्वारायातप्रन्यक्रमसंदेन टबार्यः-यथारस्यातचारित्रमे सुश्मसंपरायचारित्रमे केवल-ज्ञानमे केवल्दर्शनमे एक शुक्लवेदया छे। यीजी मार्गणा १३ गतितेंही १ नत १ योग ३ वेद ३ कपाय ४ ज्ञान ७ संजय ५ दर्शन ३ भव्यसम्प्रित ६ संज्ञी १ आहारक २ इकतालीस मार्गणाने ६ छेदपा छे। बंदना ४ नेद छे, सर्वमार्गणाये च्यार प्रकारनो बंध छे, जिहां कषायोदय नही तिहां प्रकृतिग्रंथ तथा मदेशबंध छे ॥ ८७ ॥ पणतसनरयोपसु, कसायलेसाअचक्खुभद्वेसु ।

चउम्रुउचरापुण, सगवज्ञाहेयवोभणिया ॥ ८८ ॥

द्विस्त-अध्येशहेत्रीमृहोत्तसमार्गणासुनिष्वपदाद्व ॥ तर इहदेत्रीमियान्यःविस्तिकणायपोग्रहःसुणाश्वतसदेतः निः व्यान्यदेवकं अदिस्तिद्वाद्वाकं कृषायापेयाियात्वयः योगाः पयद्वसदे-मीजनेससरंवायान्, त्वरणाविषेशिद्वयमार्गणायां त्रस्त कृषणायिव्यायः वर्षा मानुष्यातीमार्गणायां कृषणीयमार्गणायां कृष्णादिवेशायः पद्वयः वर्षात्रामरंगणायां भूत्रतेत्वयस्ताः उतस्तेनः सगातासरायेयाः पद्वयः वर्षात्रामरंगणायां भूत्रतेत्वयस्ताः उतस्तेनः सगातासरायेयाः प्रभावनाः कृष्णास्तिस्ति होत्यन्तियोगोगायायोग्ययस्ति।

विध्यद्वेत्रप्राणितमे, अजयजनोषिदिव्यपण्यासः) वौरद्देवदीणा, साजासमुस्सिनंदीमः॥ ८६॥

रिक्षां प्राप्तिक है जाताहरूक है। भा के देश विकासिक राज्यिक के तो प्राप्त कर बात अहरतिकारी वोधी अवस्थानी होती विकास करते के अवस्थाति कार कर दो ताह में बात कराया प्रकार के राज्ये हैं कि एक वोद्युक्त करेड हो समझ कराया है है है अहरू करें होंगी जाने का राज्ये हैं के अवस्था करेड कराया है हैं साहाराआहामकद्भिकराहिताः पंचर्षचाशत्हेतनः प्ररूपवेदेनपुंसक-वेदेचप्राप्यंते अन्यतरवेदह्नयद्गीनाभवेतिप्ररूपवेदेखीनपुंसकेनद्धीपु-रुपेनद्दतिहेतनोहिः वदयरूपानेयाःवदयरूपाःपरिणामविशोषिसंक्षेशहे-सवोत्तेयाः ॥ <९॥

टबार्फ:—तिरिगति १ अज्ञानतीन अविरति १ अभग्य १ मिन्पात्व ए सात मार्गणाने विषे आहारक २ विना ५५ बंध हेत् छे यूड ४ छे, स्वीवेदमार्गणापे उरुपवेद तथा नर्पुसकवेद ए विना ५३ हेत् छे, वे वेपनमध्ये उरुपवेद तथा नर्पुसकवेद-मत्ये आहारक वे भेडीये वैवारे ५५ हेत् छे ॥ ८८ ॥

संबयुआयगिंदिसु, चउछत्तीसंचमूखियरा ॥ ९० ॥ दीका—देवेजलाहरणादि ॥ देवमतिवपूरे जीदारिकद्विकः द्वारकसंबद्धिनपुंसकवेदिविनाद्विपंचारतपंचदेतयोभवंति । भवप्रस्य-मादेवनसंभवः नारफेनारकमतीस्त्रविद्युरुणयेदंविनादेपुबदेवमस्पर्या

वेवेउरलाहारग, संढविणानारगेअथीपरिसा ।

ह्वात्कत्वद्वातमञ्जाक्ष्यवानाद्वाय्याताय्यव्यत्वायम्बद्धात । यस्यस्यः पार्ववनाद्वयः वार्ववनाद्वयः पार्ववनाद्वयः वार्ववनाद्वयः पार्ववनाद्वयः वार्ववनाद्वयः वार्ववनाद्वयः वार्ववनाद्वयः वार्ववनाद्वयः वार्ववन्त्रः वार्ववन्तः वार्ववन्त्रः वार्ववन्त्रः वार्ववन्तः वार्ववन्त्रः वार्ववन्त्रः वार्ववन्तः वार्ववन्त्रः वार्ववन्तः वार्व

१ ए पांच विता ५२ बंबटेतु छे। नस्कातिमध्ये आहास्त्र २ जीशरिक २ स्त्रीवेद १ अस्येवेद ए ६ विना ५१ टेतु छे। एक गप्तसक्रेद भेळीने एकेंद्रामध्ये मूळ च्यार उत्तर स्त्रीस बंबदेतु छे, ते सर्व आगर्ज गायाये कहा छे॥ ९०॥ इगमिच्छसत्तअविरय, कसायतेवीसपंचयोगाय । पवणेवंचउथावरि, अविउदाहेउचउत्तीसं ॥ ९१ ॥

टीका—नेचउच्यंते ॥ इगमिच्छद्दस्यादि ॥ तत्रपूर्कादेवेड्रिने ध्यात्वेअनाभोगंपूक्तंअविरतयःसा तत्रपरकायव्यस्पर्शानंद्रियविषय रूपाःसस्अविरतयः कथायाः व्योविद्यातिः ऋष्ट्रस्वेदर्शनायोगाः अत्वारिकद्विक्तेवेक्तियद्विक्तकार्मणयोगव्यक्षणाः पंचपवनेवायुकायेयेव पर्विवरत्मेदाः प्राप्यतेच्ययावरिस्यावरचतुष्केपृत्यवयप्रवास्यति वेजोळ्ञ्चणासुचतसृषु अविद्यान्तिविक्तेयद्विकर्शनाञ्चतुः विवादेतव प्राप्यते पृत्यव्यादिश्वैकियद्विक्तंतसभवति ॥ ९१ ॥

टबार्थः --- एक अनाभोगिमिय्याख १ छकाय ६ फासनेहिः यनी अविराति ए सात अविरातिकपाय वे वेद विना वेवीस योगा पांच योग औदासिक २ वैक्तिप २ कार्मण १ ए पांच बंबहेतु छे । वासुकायमध्ये ३६ बंबहेतु छे । पृथिवी १ अप २ वेउ ३ वनस्पतिए ४ थावरमच्ये वैक्रिय २ विना ३४ बंधहेतु छे ॥ ९१॥

विगलेइन्दिअवुद्धी, वयणयुआछसत्तअद्वतीसाय। नाणतिगओहिदंसे, वेअगखवगेसुअडचत्ता ॥९२॥

टीका-निवगलेदुन्दिअनुद्धी इत्यादि॥ विगले द्वादिय शांद्रिय चतुर्रिदेयलक्षणमार्गणाविकेद्दियाणां द्वान्दिये रसनेन्द्रियशद्धः शीन्द्रिये द्वाणेन्द्रियस्द्विः चतुरिन्द्रिये चक्षुरिन्द्रियशद्विः वयणविवयनं

न्यार्थः—विकास विवे हाँद्रयार्थि करवी अने प्रप्तान्थेन अस्त्याअनुषाम् वेद्यार्थे तेत्रम् वेद्यार्थे कि पात्त हे आवर्षिद्वा ८ व्याप विदे योग वे मु अनेस हेतु के वेदिद ने प्राचिद्वा आवर्षित् केदीवे तेत्रम् सहतीस परहेतु कि प्रप्रिति के प्रमु हाँद्रती कार्यार्थे वर्तार्थे अवद्यार्थित परहेतु कि शान वे त्या अपर्यवद्योग साधायसम्बद्धात हस्तिकसम्बद्धात पृदेशे मार्ग-पार्थे अस्त्रात्मेस परहेतु कि ॥ विदे ॥

भिष्ठअणहोणउपसमि, हारमहोणाठचनसासाणे। भिष्ठाहारमहोणा, मीसेदेसेग्रणष्मवा ॥ ९३ ॥

-4

नप्रायोग्याः त्रिचत्वारिंशन् देशनिर्स्तोदेशनिरस्तिगुणस्यानप्रायोग्या एकोनचत्वारिंशन्देतनःप्राप्यंते ॥ ९३ ॥

ट्यापं:—मिष्यात्व ५ अनंतातुर्वाध ४ ए नव विना उप-शमसपकितमच्ये आहारक २ ते अङ्ताळीसयी काडीये वेवारे छेताळीस बंधहेतु छे. सास्वादनगुणटाणे मिथ्यात्व ५ आहारक २ ए ७ विना पंचास बंधहेतु छे. मिश्रे वेताळीस तथा देश-विरते इग्रुणच्याळीस बंधहेतु छे. जे गुणटाणे कही ते. ॥९३॥

केवलदुगिसगयोगा, जोगाइकारशुद्धचरणंमि । नवयोगिककसाओ, सुहुमेदसहेयवोभणिया ॥९८॥

ट्यार्पः—केवटज्ञान १ केवटदर्शन एने विषे सात. योग

छ । मनना ४ वधनना ४ आँदारिक २ कामेण ए ११ योग-वंपरेत, यदारुवानपारिको विषे यनना ४ वयनना ४ औदा-रिक १ नव चीम तथा एक संस्थादन टीम ए दश बंधदेत है।। १४ ॥

संजलणनोकसाया, कम्मणओरालमीसविणुयोगा। सामाइयछेप्जण, हारप्यीविउविपरिहारे ॥९५॥

टीका-संज्ञलयनोकसाया इत्यादि ॥ तक्सामायिकधारिपे-छे रोपस्थापनीयधारिषेपद्विदातिः देनवःमाध्येते त्रवद्वादशकपाया-त्रदर्वसर्वविरातिमाद्वभंतः सर्वविरातिमाक्ट्येपनिष्यात्वविरातिन्वस-एवअतः संज्यातनचतुष्ट्यन्यनोक्षपायाः प्रवययोदशक्षपायभेदाः कार्मजादारिकविभंगोगाभावेदोपाखनीदशयोगाः प्रवंपद्वविशतिवंच-हेसवः माप्नंते, सामायिकच्छे दोपरथापनीयेमाप्यन्ते तथापरिष्ठारविश-द्विचारिषेखांपैरादिनाद्वारशकपाया मनोयोगवाग्योगाष्टकजीदारिकं-धेनिनयपोगाः एवेनवयोगाप्त्रपुरुत्रिंशविदेनवः प्राप्यवे वैकिया-हारकटर्म्याच वनवासित्वान् अमियुहीतनपोविशेपयुक्तत्वामभवतः 11 88 11

टबार्थ:--संज्वलनना ४ नीक्षाय नव कारमेण २ औदा-रिकामिश्र ए वे जिला १३ योग छत्रीस वंबहेत छे. सामापिक छेटोपस्यापनीय चारिनने निये आहारक २ खाँबेट २३ वंध हेत है. ॥ ९५ ॥

तेरसकसायजोगा, मणनाणेवितिकेइमणवयणे । योगातेरसतेहिं, उज्जुसुअनयविद्यीगहिआ ॥९६॥ 2+2-



where the market represents the most of the set of the second problems of the second proble

24 N

ા જાતની પ્રદેશમાં જમારા કરાયા જાતા છે. મામારા તેમાર તુરા જાલ્લા મામારા જાતા જાતા જાતા હતા છે.

The results of the control of the co



१ सामंतीवणी १ आणवणी १ आज्ञाप्रत्ययकी १ ए वचन-योगनी किया नयी. ।। ९८ ।।

इरियावहीअभावो, घेइंदिसुरसणवयणसंजुतं। तेइंदिपसुनासा, चउरिंदिसुचक्खुदिहीअ ॥९९॥

दीका-दुरियावद्वीजभावो इत्यादि ॥ ईर्गिवेषुवेषुविद्यानिकः भेदा रसनेन्द्रियवचनयोगसंयुक्ताः द्वाविदान्योगाः भवंति, ननुदय-नयोगोदयेषाडोद्या इत्यादिकाकियाकयंन तयोच्यते पाडोद्यां मनसः क्रियापूर्वापरकालंबावन्वाक्यस्मरणवन् भवतिस्मरणेयदीवकालह-संजाधारकस्पदीयंकालिकीसञ्चा तु समनस्कर्यववेनहाँद्विपादीनांन-भवति ॥ श्रीदिवेषुरसनेदियदार्षेदिययोगान्त्रयास्त्रसन्आस्त्रवेदः संभवंति । चतुरिदिवेषुच्छरिदिवेतयादिष्टि इतिहिश्स्मित्र्र्युद्धेने-मींटनेपंचविदानुआस्त्रवाभवंति।अवपुकेन्द्रियविकटेदिरेष्ट्रा कर्यादे अत्रताः वचनयोगादिअभावेकथंप्राप्यन्ते तत्रोच्यते इक्त हर्क्स्ट्रहरू रणरूपंभावासवीद्यास्वरवंतमात्मज्ञानाभावान् वर्वे सेव प्रवर्वन्त्रे व अगुद्धविभावपरिणविपरिणमनेनात्मनः परक्तृन और पर का णाविपातः १ जीवाजीवादिपदार्यानांस्यद्वस्य द्वरस्य रिणामीमृपाबादः सार्श्वयापुद्गडमहरूकार्यः विकास द्रष्टिकवर्णादीनां अनुमृतिः भावमृतुनं, उत्त्वहेर स्ट्रिक्ट् परिम्रहः इत्यनेनपरभावकनृताहिम्यनः देखन प्रकतादत्तादानं परभावास्तादनंषेषुनं जनसङ्ग्रहः पूरेक बास्रवाः सर्वजीवेष्वविरतेषुसरामान्द्री व्यवस्थानम् ।

टबार्यः—इतिपावदीविच इन्हर्न स्था हैन मिया छे मील्या वीस कारह है कि न ह

वचनपोग ए ने मेळीये तेवारे ३२ आश्रव छे, तेंद्रियने एक नासिका इंद्री मेळीये तेवारे तेतीस आश्रव छे, चीर्सिय ते चश्चदर्शन एकमे दृष्टिकी मेळीये तेवारे ३५ आश्रव भेद छे ९९॥

पाणाइवायपरिग्गहंसि, च्छअपश्रस्कतहरिआवहिषा इंदियअवयहीणा, मणनाणेवरणतिअगेअ ॥१००॥

टीका—पाणाइवायपरिगर्हमि इत्यादि ॥ तत्र मनःपर्वत्रः ज्ञानेचारित्रविकेसामायिकच्छेद्रोस्थापनीयपरिहारिवेद्यद्विक्क्षणेमाणाः तिपातिकीक्तिया १ परिमहिकीकिया, क्रियात्विकीकिया, अमर्याः स्यानिकी, तथाईपांपयिकीकियादीना, शेषाविज्ञतिः कियाः कां यिक्यादिकाः मशस्ताः, अर्हुत्भक्ष्यादीशासनस्यादात्रारणिविण्यः

कुमारादीनामिवविंशतिः कियाः सामायिकचारित्रेमाप्यंते, मरी

स्तमश्तिरिवमशस्तामिमयनेतैप्वनत्यविमशस्तामोश्रेशक्याविनिः याञ्चनीनारम्भवेतथामशस्तामाणातिपातिकयपिकथनसंग्र्यते, तं नाद्व ॥ माणातिपातास्त्रवस्यसवयामत्यास्यतत्वानृतदेतुप्^{तद्वा} दशक्यायोदपाभावानृनमयति, योगयापल्याविद्वीपरागादिपारिणार्गः

रपसःचान् , अम्रशस्ततावाणेनयशस्ततावव्यकःपास्ययेते, नद्यिः यापाः आस्त्रवमेद्रत्यान् मशस्तादिक्षियाः प्रशत्तपुण्याद्यास्त्रवै कारणत्वेनकपेनिर्वयः नरपजति, निःकर्णन साध्यरूपिणतिरपः क्षमदेत्कियादश्तीक्ष्ययोजनं तग्रहः॥ निश्चपिनग्रद्यसेन्यस्य क्षमदेत्कियादश्तीक्ष्ययोजनं तग्रहः॥ निश्चपिनग्रद्यसेन्यस्य

नाराक्टोनप्रशासीतीयश्रकः ज्ञानारीनांथादिः श्रभकंतः व्यक्त सुमतिवत् अन्दरपोदपलेनाभाषणेथनिर्वातमभातिनयभाषीरी-शादिस्तान्यायक्टनेनिर्वागजनतः पृत्रेमश्रस्नक्रियारिनेया। द्रिष पंचकाऽमतपंचकहीनाःसप्तर्विकतिसस्वभैदाः प्राप्यंते, इंद्रियोप-योगेसस्यपिमपुनास्त्रवस्याभावाननेद्रियविषयतातेनेद्रियास्त्रवाभावः॥ ॥ १००॥

ट्यापें:—प्राणातिपातिकी किया ? परिमाहिकी किया ? निष्पातिकी किया ? अपचरकाणी किया ? तथा ईरियावडी किया ? ए पांच क्रिया विना २० किया इंदिय ९ विना अवत ९ विना एटके कपाय ४ योग ३ क्रिया २० ए सत्तावीस आश्रव मेर छें, नयपार्य ज्ञान ? तथा सामायिक १ हेट्रोपस्थाभीय १ परिवार विद्याचि १ यू नीन चारिनने विषे सत्तावीस आश्रव मेर छे ॥१००॥

नाणतिगओहिदंसे, अभिच्छदेसिमिच्छइरिअहीणाय; मणइरिअविणाअमणे, अणहारेहेनितिचीसं ॥१००॥

द्वी १.1—ना ग्राम्भिक्ते इत्यादि झालनिकेमित्रस्ति स्वाविकेस्ति स्वाविकेसित्रस्ति स्वाविकेसित्रस्ति स्वाविक्तेस्य स्वाविकेसित्रस्ति स्वावित्ति स्वाविति स्वावितिति स्वाविति स्वाविति स्वावि

अमजेअसंक्षिमागेणायांचत्वारिक्षद्भवः मान्यतेतरमत्यपस्यतम्मव वात , अणहारे चिअनाहारकमागणायांनयर्द्धात्वास्त्राः तमेदिर पंचकत्मार्वदियसद्भागेषाद्यंतथाचभगवत्यांजीवेणंभतेगम्भवरंतिरि सदंदीवे अणिदीवेगकसंति १ गो० सदंदीवेवकमतिसेणंकतिदंदीवेवकम

तिपंचिदिये उक्तमित्रं ति रचनात् इंद्रियमंच कंत्रातपंच कंत्रायप्याः प्राप्तप्याः कंत्रायप्याः प्राप्तप्याः कोचित्रायाय्योगारित्रायुक्तः काययोगारत्यायपंचिद्रियाति किरापारियि कीक्तिपानभारते, यचिपंचित्रे यस्याचित्रक्षाति किर्मायद्याः किर्माद्याः किर्मायः प्राप्तिया कार्याः प्राप्तिया कार्याः प्राप्तिया कार्याः किर्मायः किर्मायः किर्मायः कार्याः विकासित्रायः कार्याः किर्मायः कार्याः किर्मायः कार्याः कार्य

नोन माने, विशागण स्थापे भी शारिक क्रिक्सियासिकायोक्तरय भारित इत्य-श्रुक्ति वागोदेना. नातरवाक्तियाः कायिस्यादिकाः प्राच्यन्ते कायभीय-रुपम्मा सान् अधि करणादि क्षारस्याणयानादिष्यरिणस्या विशेषेष्ठ के-नानादार कमार्गणाया वयस्ति असुनात्र स्थाप्ति सान् वर्ते सार्वे करीये द्यायो — क्षितशान है सुनवान है अस्पिशान अस्पिशन

१ ने पुरुतातम भिर्मालिकी क्रिया किना देशीमी मार्गमें निल्नालिको किया १ तमा ब्रियावीकी क्रिया ए ने विनी भाजम नाजाना नेद छे, मनोपीम १ द्रीपाधी २ ए ने दिना ४- जाउन नेद नमसीने विषे छे, न्यावाहक मार्ग यहे देशम जाउन छे, द्विका १ गोगीम २ मानोपीन १ मध्यस्थार्था १ जावकारी १ दिशका १ जावामी नेसा १ ए दिना बनोबीन १ क्यनबीम १ स ने बीक

110

न्य क्या १८४ के प्रश्निश

वेयगियामिच्छइरिया, उवसमखबगेतेइरीअजुत्ता; सुहमेयोगतिस्होहो, काइयअणभोगपिजाय ॥१०२॥

दीका—वेयिपमिच्छा । वेदकेष्ठयोपश्चभेसम्पक्तवे त्रिष्पा-त्विसिक्रपार्द्वपायकिकियारिहताश्चलारिहारस्वनेभदाः मान्येते, अ-विताबिद्योपस्वाकात् विस्थात्वास्त्रविविक्षसम्यक्तव्यक्तिमाद्वभावः तपाउपशाससम्यक्वेशायिकेसस्यक्तवेचस्वारिहारद्वपायक्रीतिस्या प्रका पुकरुवलारिहारस्वाकार्यक्ति, विच्यात्विकीतिस्याश्चलाः छोहोत्ति होभः संग्वस्तव्यक्तिकार्यक्रावाक्ष्यक्रियाः अन्ताभौगिकीतिस्या साच्छात्व-वाणकर्माद्वसाय्वाव्यक्तिक्तया, अन्ताभौगिकीतिस्या साच्छात्व-वाणकर्माद्यसायात् पावत् ज्ञानाप्रणताव्य किवित्त्रभ्रातंपायः जातसस्यवेवितेवन्यानाभौगिकीतिस्यासंभवः इति पिकारित एत्यस्य-विकितिस्यालोभस्यरागोगवात् क्रोयोस्यासावत् विविक्तितिस्या-अमहर्त्यवे सार आस्त्रवाः प्राप्यंते, केवित् ॥१००॥

टवार्थः—चेदग कहेतां क्षयोपश्य समक्रितने विषे ह्रिय्या-विका तथा इस्मिन्हीन्या विना च्यालीस भेद आश्रव ना पामीचे, जपराम समक्रित तथा क्षायिक समक्रित सार्गणावे इस-पावदी किपा भेलीचे एटले ४१ आश्रव के, द्रस्तसंपराप चर-सेदे योग तीन, लोग कपाय तथा कायिकां किया अनामी-विका किया तथा एमकी किया प्रटल सान आश्रव पानीचे स्वक्षांत्रपण मच्ये ॥१०२॥

अहिगरणदुगयुआ नव, केइभन्नंतिसेसेइयुयाळा; इरियावहोविहीणा, चरक्अचरकुम्मिवायाळा॥१०३ - टीका—अहिगरण इत्यादि ॥ अधिकरणीपाउसीइतिकि

द्वयंबदेतितत्रापिप्राद्वेष्यातुनसंभवति, तयापिप्रज्ञायनार्टाकार्याच् र्णामपिकपायाणारागद्वेषोभयरूपत्वात् प्राद्वेषिकीकियाभवति १ त्याज्ञायभेदातृनवआस्त्रवभेदारूम्यते (इति) केड्नवभन्नति, सैन सिरोपमार्गणायामगुर्ध्यविनामतिनिकवेदनिकक्षप्रयाण्यस्य

विकंजेदयापंचकं अभव्यत्वंभित्यात्वंसास्वाद्नांसिश्रं अविरतियेति वर्षोसिंदातिमार्गणामु "इरियावद्यीविष्टणात्त्रग्रं वर्षपयिकांक्रियारित् एकचत्वारिंदात्आस्त्रवाः प्राप्यते, एतास्त्रमार्गणातियमात्सकषापाप्^व भवंति, तेनसापरायिकांक्रिया प्राप्यतेनयाप्यिकां, चक्षद्रश्नीअवध देशेनेद्विचत्वारिंदास्त्रवाः स्वयंतेहृत्युक्ताः आस्रवामार्गणास्याने

सिमइग्रित्तपरीसह, जङ्घम्मोभावणाचरित्ताणि, पणतिगङ्वीसदसवार, पंचमेपृष्टि नायवा ॥१॥

प्रसामतंगार्गणाससंवरभेदानुदर्शयत्राह ॥ वेच

वेचगुणस्थानशतकटीकायांव्याख्यातायुक्तातव्याः ॥१०३॥

्यार्थः — केड्क आचार्या नय मेदे अधिकरण किया तथा पांडसी किया वे संस्कृत करी नव आध्रव भेद माने छैं ध क्यार्थिय स्थारित करी नव आध्रव भेद माने छैं धै क्यार्थिय स्थार्थिय प्राकृती रही जे २५ मार्गणा महार्थ

विना तीनगति वेद ३ कपाय ४ अज्ञान ३ ढेइपा ५ अ

भव्य १ मिप्यात्व १ सारवादन १ मिश्र १ ए सर्वे मार्गणार्थ इरिपावही विना ४१ आश्रव भेद पामिये, एटछे बासडी सा गेणापे आश्रवना भेद कहा।।१०४॥

नरतसपणिदिजोप्, नाणंचउगेतिदंससुकासुः भवेउवसमिखायग, सन्निआहारेसुसबेवि ॥१०४॥ टीक्य-न्ततस् इत्यादि नर्राचमगुष्यम्तीवसकाये प्रवेश्द्रिः वेमनोवाद्यायक्षेयोगवयेमतिष्कृताविष्कतः पर्यवश्चेणक्षानच्युष्के तिद्सति पश्चत्यक्षविष्ठश्चेणदर्शनिकेषुक्षाद्वतिग्रह्यव्यायामवति-भव्ये भव्येवदसमेति व्यासम्भाविकश्चेणेसम्बन्दर्ययेगेक्षिमार्गणा-यांआहारकसर्णणायांपृयंष्ठोनविद्यतिमार्गणासुसर्वस्मपंचादान्त्रंतरः भेदाः शाय्येवे चारिकमेदानांविष्यंसचान् तत्साचेचसंवर्यदेशः सर्वेऽपिमाप्येते इति ॥१०४॥

टबार्प:—हवे बासिं मार्गणाने विषे संवस्तवना मेद कहे छे, मदाप गांत १ वसकाय १ पंचेंद्राय १ योग ३ ज्ञान ४ ए च्या दर्शन तीन च्छ १ अच्छा २ अवधिदर्शन ३ श-क्रेड्याने विषे भस्य मार्गणाने विषे उपशम समक्रित संज्ञा मार्गणाने आहारक मार्गणाने १९ मार्गणा नेने विषे सर्व भेद संदर्शन सवाजन पार्माणे ॥१०४॥

वेयतिकसायलेसा, वेअगिहरकायसुहमजईहीणा; ह्योभेतेउससुहमा, चउचरणविणायचरणंमि॥१०५॥

दोका—अहिगरण इत्यादि ॥ अषिकरणीपाउसीइतिकिय-द्वयंवरंतिसमापिमाद्वेष्यातुनसम्बत्ति, त्यापिम्द्वापनार्टाकायांच्युः णामिषकपायाणारामद्वेषोभयक्षयत्वात् माद्वेषिकीक्रियाभवति १ ई-त्यात्रायमेदानुनवआस्त्रवमेदारुस्येते (इति) केइनवभवति, सेत-तित्रोषमार्गणायांमद्वष्येविनागतिविक्वेदिविक्वकषायचतुष्ट्यंज्ञतान-विक्रेटेरपायंचकं अभव्यत्विम्याद्वात्रास्त्रवृत्तिम्भं अविरिविकेति-वर्षोविंद्यतिमार्गणास् 'द्वरियावद्वाविहिणादिण' इर्वापयिक्वेक्रियारिहा एकप्तारिंत्रत्यास्त्रवाः भाष्यंते, एताअमार्गणानियमात्तक्षपायुः प्रक्षप्तारिंत्रत्यायिकोक्रिया गाष्यतेनेपांपिक्की, चक्रुर्रहोनेअच्छः देशेनिद्विच्यारिहाराख्वाः रूप्येदह्युक्ताः आस्त्रवामार्गणात्प्योत्-देशेनिद्विच्यारिहाराख्वाः रूप्येदह्युक्ताः आस्त्रवामार्गणात्पात्पने-दर्शनिद्विच्यारिहाराखवाः रूप्येदह्युक्ताः आस्त्रवामार्गणात्पने-

समिड्युत्तिपरीसद्, जङ्घम्मोभावणाचरित्ताणि, पणतिगद्धवीसदसवार, पंचमेपृहि नायदा ॥१॥

तेचयुणस्पानशतकरीकार्याच्याल्यातायुक्तात्च्याः ॥१०३॥
टवार्थः — केड्क आचार्यो नय भेदे अधिकरणी द्विया तथा
पांउसी क्रिया वे संयुक्त करी नव आश्रव भेद माने छे. दें श्वसंपराय यथ्ये श्रेष धाकती रही जे २५ मार्गणी मद्धप विना तीनगति वेद ३ कषाय ४ अझान ३ क्षेड्या ५ अ भय्य १ मिथ्यात्व १ सास्त्राद्व १ मिश्र १ प् सर्वे मार्गणी इरियावही विना ४१ आश्रव भेद पामीये, एटछे बासती मार्गणी आश्रव भेद पामीये, एटछे बासती मार्गणी आश्रवना भेद कहा॥१०४॥

ररतसपर्णिदिजोप्, नाणंचउगेतिदंससुकासुः त्रवेउवसमिग्वायग, सन्निआहारेसुसंवेवि ॥१०४॥ टीका—नरतस इत्यादि नर्राचिमङ्घ्यगतीवसकाये पञ्चिन्द्र-येमनोवाद्वायक्षेयोगवयेमतिष्ठतावधिमनः पर्यवटक्षणेज्ञानचतुष्के तिदंसति चक्षरचक्षत्वधिच्छणेदर्शनिक्केष्ठकाहतिगृङ्कवयायामदाति-भव्ये भव्येउद्यक्षित उद्यक्षमशायिकच्छणेसम्पदन्ददेवेशिक्रागाणा-यांजाहारकमार्गणापांच्यंभकोनविज्ञातमार्गणासुसर्वसप्तपंचाशन्त्रवर सेदाः प्राप्यवे चारित्रभेदानांसर्वेषांसम्बान् तरसन्वेचमंबरभेदाः सर्वेदिपिपाप्यते इति ॥१०४॥

ट्यार्थ:—हवे बासिंड मार्गणाने विषे संवतत्त्वता भेद करें हो, महत्त्व गति १ वसकाय १ पेचेझ्य १ योग ३ ज्ञान ४ ए च्यार दर्गन तीन च्छा १ अच्छा २ अवध्यद्रान ३ छ-क्रुडेदयाने विषे भव्य मार्गणाने विषे उपकाम समक्तित संज्ञा मार्गणाये आहारक मार्गणाये १९ मार्गणा तेने विषे सर्वे भेद संवत्ता सत्तावन पार्मीये ॥१०४॥

वेयतिकसायछेसा, वेअगिहरकायसुहमजईहीणाः छोभेतेउससुहमा, चउचरणविणायचरणंमि॥१०५॥

द्वीका—वैयविकसायवेसा इत्यादि ॥ विद्वित्तः महक्रमणिग्यापेनो भपपासंवयः विद्विक, विक्रसायिव क्यापिकिक्रोधमालमापास्यो वेकाइवि कृष्णाविकेसपायेक वेयति, वेदक्रेसपायाः
मापास्याये वेकाइवि कृष्णाविकेसपायेकापिक्यः
मम्पान्तेयास्यायायायिक स्वस्मयंपयाः
मम्पान्तेयास्यायायिक स्वस्मयंपयाः
माप्यमाण्याद् क्रीवेदेपरिक्षार्यदिवाश्यः येवानात्यां स्वर्वेदाः
प्राप्यमाण्याद् क्रीवेदेपरिक्षारयदिवाश्यः येवानात्यां स्वर्वेदाः
स्वर्वायास्यायः
माप्यमाण्यादः
स्वर्वेष्णायः
स्वर्वेषणायः

पर्यापनोपादिचारिक्यतुष्ट्याभागाः विषेशामन्तेराभेगाःभाको के हो गरपापनी के द्रापि हुने पासला सामान्य सामिप रिकास में किया है। प्रमायस्थात्स्यात्स्यादेकाविनाः परिहादेरोपवादि सक्षिपालिपवास मः मेऽभिरिधनासत्। ययावयातेऽपिअस्ययारिधातिः।।स्यायार् स नेवाः प्राप्यते । जनस्क्ष्मसमसमसम्बद्धातमोभविना सासः अपर क्ती, ज्यानाक प्रचान तैनए इक्तारिशतमें ग्रम गेरी, स्वत्रमाणके प्रपारक्याते पुरुषेषु क्रमानमारशन्त्र ने प्रा नवभो हो द्वापायोग्याः स्रोपहालः भारते, अस्त्रमञ्जनभाग पारपदाः हतीभाते उत्तीम्धीर्यः रहारकः । संस्कृतिकारेयस् तयब्द्यम्यात्वपरिवाधस्यस्तासर् स्रे कार प्राप्त है, उन्हराच्या ने सामेश्वरीय प्राप्त है का प्राप्त स्थाप रत संचारिक्रमण क्यानीयमस क्यात्वीतास्त् । संगापा (बार्क्स करदुर्गानोन्छः चनुषशासम्बद्धाः केलिन्पुत्रससस्यक्षित्भावन रम्यारस्याः । वा व्याप्ताः हस्ताववे स्थावपश्चिम्हः वेशवास्त्रे 4**#77.34# # f . 5 #

इसमें ज्यादे हैं विन्युरे आवास और अपने हैं विक कत् मार्गानवाताता इति तान गृष्ट विना वित्रोताताल अंदर्भ कर प्रकारकारकारित होते स्वयंकारकारित मेर् and experiences, classics herry drawn प्रमामित प्रदेशी तक सम्बद्धी के आहें में सह सामार्थ 支车 渚 化原本 化银铅管 禁虐待 對 許 化烷基 表 薄斑 化苯 of some with a fee a

ક્રમક્કૃત્વનાત્રાર, જ ક્લોનાના કનાદે છતાં માર્દ को इन्द्रे देख्याचा इ.स. वेहन्युव्हालाश्चर त्राप्त्याहे

टीका-केवरुद्रगेअणहारे इत्यादि ॥ केवल्जानकेवल-दर्शनस्त्रोणे मार्गणाद्वयेसामायिकच्छेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धिस् **६मसंपरापचारित्ररहिताद्वादशभावनारहिताएकच**त्वारिंशवसंवरभेदाः-माप्यते, समितिगृप्तिस्थितवर्मपरीपहज्यादिपरिणामानांशायिकत्वा-बस्पामाप्ताइतिगर्यसर्वेषामपिसाधनधर्माणांसपूर्णत्वेनभवनात तथा अनाहारकमार्गणायां सामायिकादिचारिवचत्रक्ताभावः द्वा-दशभावनाअपिनभवंतियतः अन्तराद्यगतीक्षयोपशमचारिवाणांभा-वनानांचनसंभवः केविलसमुद्रचातावस्यायांत्र एतेषांपी इशमेदानाम-संभवप्य समित्यादीनांतकेवित्रसमुद्रचातकालेक्षायिकत्वेनसंगृही॰ तस्वात् ॥ तथा नरकतिषेग्देवगतीअविरतिमार्गणायां देशविरती-द्वादशभावनायुवसंभवंतिनशेषाः सर्वविरत्यभावान् , नष्टदेशविरतस्य-पापधादिकावेसमितिग्रप्त्यादयोभवंति ताः कर्यनगृहीताः तत्रोच्यते देशविरतस्यसमित्यादयोऽम्यासरूपाः नश्चयोपशमरूपा अनवस्था-वित्वेनमधूतिकपत्वातुनातुमोदना दोषस्यसर्वतोनिधुत्तेन समित्यान दपोग्रणाःभावकस्य इति ॥ सेसास् शेषासुजातिषतुष्कस्यावरपंच-काञानात्रिकाऽभव्यमिध्यात्वसारवादनिमेश्रासंज्ञित्वश्चणाससप्तदशमा-र्गणाससेवरस्याभावएवसम्यक्दर्शनग्रणमाग्भावपंतरेणनसेवरभावः वैनसंबरीनास्ति इतिदर्शितंसंबरतत्वस्वरूपं मार्गणास सांमतंनिजै-रातस्वेविभजनाह ॥ १०६ ॥

टवार्थ:—केनट्सान केनट्ट्सेन अनाहास्क मार्गणानेविषे ध्यार पारित्रभावना बार प्रसीठ विना ४१ संवरना नेद पा-मीपे छे. तीन गतिनस्क १ तिपंच २ देवगति ३ अविरति १ देशविरति मार्गणापे १२ आवनाना बार नेद छे. रोपमा-गणापे संवरनो नेद नयी. बासठि मार्गणापे संवरना मेद कहा. ॥ १०६॥ सस्मदिटीमग्गणासु, सकामइयरायमिञ्जसगा नरतिरयदेवतिरिया, थोवादुसंखणतगुणा ॥१०७

द्याका—सम्मदिद्यांमगणासु इत्यादि ॥ मूटभेरतः वि पूर्वेपचितकभेपरिषद्धस्याणा अथवा देशतःकर्मश्रयदश्चणाद्विय कासकामाऽपराअकामा, त्रवाकामाप्रदेशविपाकतोशुरुयमानकः टिकश्चरणरूपाअस्पनिजेसतोचेवस्यपादुर्व्य उक्तेचावस्यर्धिः क्तीपस्केषदेमहरूटे कुंभेपनिस्ववद् सोहद्वनाटिद्यपमिस्वतीश्चर्याक्षात्रे यदुः यदुः स्वयुञ्जर्यः ॥ १ ॥ द्यंतम्यप्त्रमंत्रीत्याप्तरोशुर्व्यप्तरामस्य यणस्पानिके पृत्रभवति ॥ सक्तायातुमदेशविपाकतोशुर्व्यप्त कर्मादुम्ये अस्तत्विद्यवामान्यस्यान्यपुर्व्यपानस्यतिपाक स्वक्रपतिमान्त्रम्यानस्य नाहं श्लोगादिमान् नाहं शिरीः न आहारीः नाहं संसारी अहंत् गुञ्जपिद्यानस्तरस्यस्यभावानंत्रभोषी । राक्ष्याद्यस्यवित्यस्यामानस्य नाहं श्लोगपनिकारस्य

निर्मातभवनितैनसहामा अस्य रंगाल्पनानिर्मातम् वारतंत्रावस्य निर्मात्ते प्रलेखान्य प्रतिवास्य विद्यत्ति प्रलेखान्य विद्यति प्रलेखान्य विद्यति प्रलेखान्य विद्यति प्रलेखान्य विद्यति प्रलेखान्य विद्यति व

जीवानांसम्बन्धनेषां सङ्घष्येषाः पिरवान्तरेषां अहावास्तर्भ निर्देशनेन्द्राज्ञद्दस्योद्धराषान्त्रां कृष्येषार्गकारवाषक्या अर्थे स्टब्स्वप्रमृतेहद्दयेते कृतिन्देशिक् जानायीः महमक्षाः भूकीर टिक्केनेदेशन्त्रमः महस्तन्तरेन गत्नगर गरा क्ष्यादेशनांकिकि

त्योग्रुणेनिजंसल्क्षणेऽपिगृहीतमितिन्याख्यातानिजेस, सांप्रतंपार्गे-णामुअस्पवदुर्त्वदर्शयताहु ॥ नशनिरवेरवादि । इहयवासंस्वेनयोजना-कर्त्तव्या साच्यंनिस्यदेवतिर्वश्योनिकेन्यः सकाशाननसम्बद्धाः स्तोन काः पतः द्वितिपानसः संपृष्ठिताः गर्भजाश्चतत्रसन्पृष्ठिजाः कः दाधिमभवंतियनः एपांविरहोजयन्यनः समयमुत्कृष्टतः चतुर्विश-तिमहस्ताः तेनोत्पतानां जघन्यनः उत्कृष्टतश्चांतमुहस्तिरातिकत्वे-न परतः सर्वेषांनिर्देषात्रपदातुभवनितदाज्ञवन्यतः एकोद्वीत्रपोवा-उत्कृष्टतस्त्रसंख्याता असंख्याना गङ्गरेतु सर्वदेवसंख्येया भवंति । तमसंख्येयकस्यसंख्यानभेदत्वात्रज्ञायवेकियदपिसंख्येयकं तल्ल्यवे-इष्ट्रपष्टः वर्गः पंचमवर्गेणयदागुणितोभवति तदागर्भजमन्त्रस्यसं-रुयाभवतित्रवद्वयोस्तुवर्गधत्वागेभवतिषुपप्रथमः वर्गः (४) च-मणी वर्गः पोडराइनिद्धितीयोवर्गः (१६) पोडशानांवर्गोद्धिशते-परवंचाहारविके (२५६) अस्पराहोर्वर्गः वंचपष्टिसहस्राणिपंच-शनानि रद्वाविश्ववाधिकानिचनुर्योवर्गः (६५५३६) अस्पराशेर्वर्गः सार्वगाययामोध्यते । इतारियकोडिसयाउणतिसंबहंतिकोडीओअ-वणावहंटरकासताटिचेनपसहस्सा ॥ १ ॥ दोसपछन्त्रयापंचमवग्गोडमी-विणिदिष्टो ॥ अंकस्थापना ॥ ४२९४९६७२९६ अस्यापिराही-वर्गोगायानवेणप्रतिपाद्यवे । टरककोडाकोडीचउरासीइहभवेसह-स्साइ, चतारियसत्तहाडुंतिसयाकोडीकोडीण॥१॥ चोपाणंद्ररकाड-क्षोडीणंसत्तचेवयसहस्सीतिवीयसयायसयरी कोडीणंडेतिमायबा ॥२॥ पंचाण्ड्टरकाएगावत्रंभवेसहस्साइउसोल्छत्तस्सयापुसीउद्दी-हवड्वग्गी ॥३॥ १८४४६७४४८७३७८९५५१६ तर्य-पृष्टीवर्गः पूर्वोत्तिनपंचमवर्गेणगुण्यतेतथाचसतियासंख्याभवतितस्यां-ज्ञचन्यपदिनोगभैजमनुष्यावर्त्ततेसाचेयं ७९२२१६२५१४२६-४३३७५९३५४३४५३३६ जयंचराज्ञिनिथयार्थगायाद्वयं छग-

वित्रितित्रिस्त्रंपंचेत्रयनवयतित्रिचतारिपंचेत्रयतित्रिनवपंचपंचसगतिः हेर्नातहेन ॥१॥ चउच्छरोचउइछोपणरोछिककगोयअहेररोरोन वसत्तेवय अंकटाणापराद्वंति । तदेवमेतेषुअंकस्थानेषुगर्भजमद्ययाः भवंति । उत्कृष्टपदेमनुष्याअसंस्येयोत्सर्पिण्यवसर्पिणीभिः भवंति इत्यादि अनुयोगद्वारतोज्ञेयंनरेम्यः नैरयिकाअसंख्येयगुणाउक्तंबाउ योगद्वारे नेरङ्याणंभंतेकेवड्यावेउधियशरीरापन्नतागोयमा, द्वविहाद्वरक पामुकेल्लपातस्थणंजेते बद्धिल्लिपातेणं असंखिजा। असंखिजाहिओ सप्पिणीहिं अवसप्पिणीहिं अवहीरांति खेत्तओ असंखेजाओसे ही ओ पपरस्तअसंखेळ्योभागोतासेणंसेढीणंबिरकंभमूईअंग्रलपत्रमवगगपूर्व यीजवरगपूलंपडियुनंइत्यादिप्रमाणाः नारकाः नरेश्यः अर्सरूपात्युः णानारकाः तेम्यः देवाः असंख्यातग्रुणाअत्रसक्तत्रभुवनपरमादिसम्हाः यापेश्चयाचित्यमानादेवानारकेम्योऽसंख्यातग्रणाप्व।तेम्पोऽपिषरे वेभ्यस्तिर्ययोऽनंतगुणाः तन्नानंतसंख्योपेतस्यवनस्पतिकापस्पस्यः वात्उक्तंचपुप्सिणंभंतेनेरईपाणंतिरिस्कजोणिपाणंमणुस्ताणंदेवाणंतिः द्वाणपकपरेकपरे हिंती अप्पानाचन्नुआवात्तल्लावाविसेसाद्विवागावै सत्र योगामणुस्सानेरङ्गाअसंध्ये ज्ञागुणादेवा असंख्यिज्ञागुणासिप्रान अणंतगुणातिरिस्कजोणियाअणंतगुणा । सांमतिमितियप्रारेकायप्रान रेनदमिषित्यसङ् ॥१०७॥

रवार्थः—निर्मात ते कर्मन परिवादन अपना कर्ममण्य ते निर्मामन पूज ये मेन छे, एक सहाम निर्मात सपा बीती अहाम निर्मात छे, निर्मा जेस्की समक्षित सहित मार्गणा बीत सामादिक निर्मार्थ सहाम निर्मात अने जनभ्यादिक वैदेर इनस्ट- अहाम निर्मात छे, जे भागणा सब्दे समक्षित वृद्ध मिल्यान्त वे मेन छे ने साग्या सब्दे अहाम सहाम दे किंदित क्षे. निर्जराता १२ मेद तपना छे वे बार मेद तो जे जीव देशविरति तया सर्वविरति परिगम्या हवे वेहने चारित्र विना तपनी आगममन्ये ना कडी छे. विणे देशविरवि तथा सर्वविर-तिने छे. तथा भगवतीसूत्रे भागश्चित १ विनय २ वैपादस ३ तथा सरझाय ए च्यार तप, समकितीने बद्धा छै. देवता सम-कितीने अधिकारे इम आगमयी जाणवी. हवे अल्पवहुत्व कहे छे, मनुष्य योडा छे, संख्याता छे, उत्कृष्टे २९ आंबताइ छे मनस्ययी नारकी असंख्यात गुणा छे. नारकीयी देवता असंख्यात गणा छे. देवतायी तिर्येच अनंत शुणा छे, जे स्थमग्रहर प्-केन्द्रिय सर्वमांहि गणवा सेवारे थाय ॥ १०७ ॥

प्रणचउतिदुप्गिंदि, धोवातिन्निहीअअशंतग्रणा । तसथोवअसंखग्गी, भूजलनिलअहीअवणणंता॥१०८

टीका--पणचड़तिहरूगिंदि ॥ इत्यादि ॥ इन्द्रियहार्गणायां सर्वस्तोक्ताः पंचेन्द्रिमास्तेम्यञ्चतुर्शन्द्रपाविश्चेपाधिशः वेम्यस्तीः न्द्रियाविशेषाधिकाः वेग्योद्धोन्द्रियाविशेषाधिकाः यद्यपिघनीहतस्य-द्योकस्पउद्धाधभाषताएकपादेशिस्यः श्रेणयोऽसंख्याता असंख्या-तयोजनकोटा होटी प्रमाणा काशप्रदेशमू विगतप्रदेश एवं रापास्तार सांगावानुप्रदेशराशिः तावतुत्रमाणाद्वान्द्रियर्वान्द्रियचतुरिन्द्रियाः पंचे॰ न्तिया अविशिषेणस्थानिर्दिष्टः वेस्यः एकेन्द्रियाः अनंतग्रयायवन स्पतिकायजीवरारीस्नंतग्रमाः पूर्णतमभने पूर्गिदिय वेदिय तेदिय चअविदय पंचेदियाणय कार्यकार्याहितो अध्यास च्छ अशामीयमा-सरत्योवावंचिदिया धर्जीविचा विसेसाहिचा तेदिचा विसेत्र इस विदिया विसेसाहिया पूर्गिदिया अधेतगुणा इत्यादि बरवमार्ग-41

णाऽल्पनहुत्वेस्तोकाख्वसाः द्वीदियादयः पूर्वनिर्दिष्टास्तेम्येख्नसेम्यः Sसंख्यातग्रुणाः अग्गित्ति अग्निकायिकाः म्र्क्ष्मत्राद्रसेद्सिन्नानी असंख्येयछोकाकाशप्रदेशस्त्रिम्माणत्वात्, तेम्योम्ति पृथिवीका^{त्र} काविशेषाधिकास्तेम्योजलति अपकायिकाविशेषाधिकास्तेम्योऽिनः लिवायुकायिकाविशेषाधिकाः वेम्यः अकायिकाः सिद्धाअनंतपुर णास्तेम्पोपिवनस्पतिकायिकाअनंतगुणाः । यद्यपिचपृतेषामपिरृ यिवीकायिकादीनामसंख्येयलोकाकाराप्रदेशराशिपमाणतयाम् वेऽवि शेषेणनिर्देशः कृतः तथापिलोकानामसंख्यातस्वस्यानेकभेदसिन्नत्वात इहविशेषाधिकत्वं अन्यचयतुर्णास्थावराणां सुश्माणां सर्वडोकः ध्याप्यत्वात् अवगाद्गनायाः मुश्मत्वेजीवानांविशेपाधिकत्वं आर्रीः कायेतुवादरराद्रोस्त्यंतमल्पत्वात् स्तोकत्वमितिहोयः एतेयां चर्तेत्रं असंख्येयत्वातु, अकायिकानांतुअतीतकालसमयेम्यः संख्येपगुणः त्वात् वेम्यः वनस्पतिकायिकाअनंतग्रणाः यतः एकस्मिन्निगोरः शरीरे अतीतानागतकालासिद्धेम्योऽनतगुणत्वात् तादृग्निगोरा नामसंख्येयत्वात् उक्तं श्रीप्रज्ञापनायां, पृष्तिणभेवे तसकाइयाणे पुरविकाङ्गाणं आउकाङ्गाणं तेउकाङ्गाणं वाउकाङ्गाणं वणसा इकाइपाणं अपकाइयाणं कयरे २ हिंतो अप्पाचा बहुआवा तुल्लाक विसेसाहियावागोयमासव्यत्योवातसकाङ्या तेउकाङ्या असंखिळी युणा पुत्रविकाड्याड्याविसेसाहिया अपकाड्याविसेसाहिया वी **धकाउकाइया**विसेसाहीया अकाडयाअणंतगुणा वणस्सङ्का**इ**या॰ अर्णतग्रणा ॥ १०८ ॥

टबार्यः—सर्वयौ पंचेन्द्री थोडा, पंचेन्द्रीयौ धीरंप्टी अ षिका, वेहुयी वेरिन्द्री अधिका, वेहुयी वेन्द्री अधिका, पेन्द्रीयौ पर्केट्टी अनंतराणा छे. एवं पंचेन्द्री जाणवा. वसकाय थोज हे. तिण्यु अभिकाय असंख्यातगुणा, अभिकाययी पृथिवी-कापना जीव अधिका, पृथिवीकायमु अप्कायना जीव अधिका, जप्कायमु बाउकाय अधिका, बाउकायमु वनस्पतिकाय अधिका ॥ १०६॥

मणवयणकाययोगा, धोवाअसंख्युणअणंतयुणा । पुरिसाधोवाइरघी, संख्युणाणंतयुणकीवा॥ १०९॥

टीका--मजबयण इत्यादि ॥ मनोयोगिनः स्तोकाः संजि-पंचेडियागामेवमनोयोगित्वातृतेम्यः वाग्योगिनोऽसंख्येयगुणा होहि-पादीनांप्रक्षेपार् , वेम्पोऽपिकापयोगिनोऽनंतगुणाःस्थावरणां तव-क्षेत्रात । आहचमज्ञापनायां युप्सिणंभवेजांबाणं मणयोगीणं वा-गयोगीणं कायपोर्गाणं अयोगाणयकपरेशहितो अप्यावा बहुआवा-तल्लामाविसेसाहियामा गो॰ सहत्योचानणयोगीवययोगीअसंखिळा-गुणा, अयोगीअणंतगुणा, काययोगीअणंतगुणा, सयोगीविसेसा-हिया इत्पादि वेदमार्गणायां अल्पबहुत्वेसर्वतः प्ररिसापुरुपवेदाः स्तोकाः वैभ्यः स्त्रियः संख्यानग्रणाः ॥ उक्तंच ॥ विग्रणाविस्त्र अहियातिरीयाणं इत्थियाभुजेयदा सत्तावीसगुणा युणसत्तावीस-हीआनराणंच ॥ १ ॥ २भीनमु गावनीतस्य अहिआउतहपदेवाणं• देवीओपत्रता जिणे हॅलि अगगदोसे हैं ॥ २ ॥ स्त्रीम्यः स्रायाः नपंसकाअनंतगुणा अनंतनु ।ताच वनः स्थपेत्रवादरस्या ॥उत्तंच प्रजापनायां पुष्टितं भतेजीवाणं सवयगाणं इत्यीवेयगागं पुर रुत्तवैयगाणं नयुंस हवेयगाणं अवेयगाण कपरे कपरेहिती अप्पाता-वहआवात्त्रहावादिसंसाहिया ॥ गो॰ ॥ सदस्योदार्जावाद्रारिसः वेपमा इत्यीवे वगातंस्य ज्ञयु वा अवेषमा ज्ञणतयुवा न्यंसक्रवेपमा-अणंतगुणा स्वेदगावितेसाहीदा ॥ १०९ ॥

टबार्थ:—मनयोगी योडा छे, संज्ञी जीव यहा छे. वचन-योगी असंस्थातग्रणा छे. वेन्द्रियादिक सर्व जीव यहा छे. वचनयोगीयी कायगेगी अनंतग्रणा छे. एकेन्द्रिय सर्ववणा दे-माटे पुरुषदेदी थोडा छे. पुरुषदेदीया स्त्रविदी संस्थातग्रणा छे. तिर्पेचमे त्रिग्रणा छे. तीने विठ अधिका मञ्ज्यमे २५ ग्रणा छे २० वडी अधिका छे. देवताने ३२ ग्रुणा १२ अ-विका छे, स्त्रविदियी न्युंसकनेदी अनंतग्रणा छे. एकेन्द्रिया-दिक सर्व छीवा.॥ १०९॥

माणीकोहीमाई, छोभीअहियमणनाणिणोथोवा। ओहिअसंलामइसुअ, अहीअसमअसंलविभंगाधः

दीका—माणीकोही इत्यादि कषायमार्गणायां सर्वस्तोकामाणिकः मानपरिणामकालस्यको द्यादिपरिणामकालस्यया सर्वस्तोकस्मार्गः वैम्यः क्रोधिनोविशेषाधिकाः क्रोधपरिणामस्यमानपरिणामकालपे सपाविशेषाधिकत्वात्, वेम्योऽपिमायिनोविशेषाधिकाः तद्यभूपस्वेनः

नभवनान् टोभस्यअकारणेकारणेऽपित्रवैमानत्वात् ॥उक्तंत्र॥ पुर सिर्णभंतेजीवाणं सकतार्थंणं कोहकतार्द्यं माणकतार्दणं मापाकता द्रंणं टोभकतार्द्रणं अकताद्रणपकपरेकपरे अप्रादा बहुआवा तुल्ला

सेसाहीया सक्ताङ्गिसेसाहीया दृश्यादि ज्ञानमागणायांमणनाणिणा मनःपर्यवज्ञानिनः सर्वस्तोकः तद्विगर्भजमञ्जूष्यणांतनाऽपिसंप तानांविविधार्मपर्वायस्य विविद्वत्तानां उपजायवे ॥ उक्तंच ॥ तसस-जयससस्य प्रमायस्वीयस्य विविद्वत्तिद्वसङ्ग्रंभसः इत्यादि .वे चस्तो-काप्यसंस्थातम् विविद्वतिद्वस्य अध्यक्षमानिनः सम्पर्दादि-वेदादीनाम् एवयिक्षानभाजां वेन्योऽसंख्ये यग्रण्यात् । तोऽद्विद्याः निम्मोमित्वानश्रुतक्षाचिनोविद्यातः प्रकाशविद्यानम् विद्यसम्पर् रहिनातियम् प्रदेशात्, अतीध्मविद्यानि श्वत्याविनीस्वस्थाने विदय-मानौद्वात्त्रपद्वात्रेमविद्यान् सुतक्षानगोर्व्यस्य प्रमावीद्वायस्य प्रसावन्न यादेविद्यायस्य । स्वत्यपद्वाय्यस्य । वेरुयोगित श्वत्यानिन्यावि-भोताविनोअसंस्थातस्य । स्वत्यादिद्यस्य । वेरुयोगित भावानिक्योवि-भोद्यसिनोअसंस्थातस्य । स्वत्यादिद्यस्य । विद्यानिक्योविक्यान्य ।

्रवार्थः—क्षायमे भान कपाई थोडा छ, भान कपायमे कोमी अधिका छ, कोधी थोभायाकपटी अधिका छ, भाग क्षरदी: भी लोमी अधिका छ, मनः पर्यवज्ञानी भोडा छ, जो मनः पर्यवज्ञान माहस्य-माहसेका होने, मनः पर्यवज्ञानीयो अध्य बिद्यानी असंस्थात ग्राण के ब्यार गतिये तामकिसी और कर्ता छ असंस्थात ग्राण के ब्यार गतिये तामकिसी और कर्ता छ असंस्थात ग्राण के ब्यार गतिये तामकिसी और ब्यार गतिया नामकिती तार्थ छेणा अने मिलसुति बेह बराबर्थ छ, तिल्यो विमेन ज्ञानी असंस्थात ग्राण छे, विष्यास्य है-बता सीजा भीण निर्मे थारी ॥११०॥

केवलिणोणंतग्रणा, मइसुअअसाणणंतग्रणतुहा। सुहमाधोवापरिहार, संखअहरकायसंखग्रणा॥१११॥

'टीवा-केविर्धिणेतगुणा इत्यादि वैम्पोविभंगेन्यः' केव-१९७नः स्भनंतग्रणतत्वाम् सिद्धानावेम्पोऽनंतग्रणात्वान् वेषांचकेव-

क्यानगुक्तत्वात् तेम्पोऽनिगके न्यानिम्पोगस्यानगुनामनिक अनंतगुणाः सिद्धेम्पोऽधि । नस्पनि हाथि सर्ना अनंतगुणस्यातः वैर्पन चमिष्यार्राष्ट्रतपामत्यज्ञानयुताज्ञानयुत्तरपात्, एतेचोभवेऽविचर शानिनः श्रुताद्मानिनः स्वस्यानी स्यमानास्तुस्याः मरय्यानश्रुनी शानयोः परस्परमनिनामाहित्यात् ॥ उक्तंत्र ॥ पृण्वियांनवेतीः याणं आमिनी बोदीअनाणीणं सुअनामीणं औद्दिनामीनं मगर जापनाणीयं के रतनायों व बद्दारायीयं मुञ्जरायीयं विकास णीणंपकपरेकपरे हिनोजणाचा वहुआसानुन्हासविसेसाहीया गीय-मा सम्बत्धोवामणपञ्चवनाणी ओहिनाणी असंदिज्जगुणाआमिरी **योदी**अनागीमुअताणीदोवितुल्ळाविसेसाहीआविभंगनाणी आंसि ज्ञगुणाकेवलनाणी अजंनगुणाइअञ्चाणी सुअञ्चाणीपदीवितुल्ला-अगंतग्रुणा इत्यादि । संयममार्गणायांसुहमायोत्रा मुश्मसंपरायसंप-मिनः सर्वस्तोकाः शतपृथक्त्वमानसंभवात्, तेम्यः परिहासर्वेष्ट द्विकाः संख्यातगुणाः उत्कर्षतः सहस्रपृथक्त्वसंभवात्, वेम्योऽपि पयाख्यातचारित्रिणः संख्यातगुणाः कोटिपृथक्त्वेनप्राप्यमाणवात् इति ॥१११॥

इति ॥१११॥
ट्रापं:—केविक अनंत गुणा छे, जे सिद्ध भगवंत माँहै
गण्या तैवारे तिणयी मति अज्ञानी अत अज्ञानी अनंत गुणा
छे, एकेंग्रंय आदिक सर्व केग्र मांहोमांहे बरावरी छे, वस्ते
संपराय चारित्राचा थोडावणा उत्कृष्टा एकसी बासठी छे, परिहार विश्वाद्धि संस्थ गुणा छे, उत्कृष्टा नक्सो छे, यथा स्थात
चारित्राचा संस्थात गुणा उत्कृष्टा नक्सो छे ते मारे।१११।

छेअसमर्इयसंखा. देसअसंखगुणअर्णतगुणअजया । थोवाअसंखदुअणंता, ओड्नियणकेवल्रिअचरक्र्११२॥ १२॥

टीका-छेअसमहसंग्वा हत्यादि तेम्योयधारुयात्यारिकिमः ष्ठेदोपरपापनीयचारितिणः सरूपेयगुणाः कोटिशनप्रधान्वेनसम्ब मानत्वान, तेम्पोऽपिमामाविकमंयमिनः संग्वेयगुणाः वोद्धिमहस्रपु-धारचेनवाष्यमाणस्यात् इतिवेष्योऽपिदेशविस्ताअसंस्थानगुणाअसं-दयातानांनिस्धांदेशियनसंभयान् , तेम्योअयनाअविस्ताअनंतम्जाः संघपद्वीना अगुणस्थान रूपनुष्टयवर्तिनः दुरवर्षः मिष्यादशामनंतानं-मत्वात दर्शनमार्गजायाययाळपंपरयोजना स्त्रोकाअवधिरशंनिनः पशुर्दशीनिनः असंख्यानगुणाः पनुसिद्धियपंधिद्वियाणांतन्संसवात्, देश्यः केरङ्दर्शनिनः अनतगुणाः सिद्धानामनंतन्त्रात्, तेश्यः अपधर्शनिनः अनंतग्रणाः सर्वतंत्रारितीयानांसिद्वेरपोअनंतग्र णत्वान् तेषां पनियमादघधुर्दरानोपेतत्वान् यहादुः परममुनयः, एए-सिणं भेतेजीयाणं घरक्रदेसगीणं अधरकृदेसणीणे ओहियसणीणं केवटदंसगीण कपरे रूपरेटिनो अप्याया चटुआया । गोयमासव्यत्थी-वाओद्विः तमाधन्तुः हर्णा असस्य ज्ञागुणाके यस्त्रंसणी अणंतपुणा अपरकृदेस ११ जन्म १ मा १ हिन ॥११२॥

टवार्थः—ित गर छेटोपरधापनीय संस्थातयुणा उन्हृप्त नव् बीढांसो छे, सामाधिक सस्यातयुणा छे, नवसहस्र कोढी छे. देशविरति असंस्थ्युणा विषेवगतिना भेलिये अविराति अनंतर-युणा छे, दर्शन ध्यारतो अस्पयदुत्व बढे छे. अवधिद्रश्ली पोडा छे, तिमास च्छान्थी आस्यातयुणा छे, फेक्ट्रश्ली अनंतयुणा छे. अध्युरश्ली असंस्थातयुणा छे, फेक्ट्रश्ली अनंतयुणा छे. अध्युरश्ली अनंतयुणा छे. एफेन्ट्रिय सर्व छेवा वेवारे अनंतयुणा माई. ॥ ११२ ॥

पच्छाणुपुबिलेसा, योबादोसंखणंतदोअहीया ।

टीका—पच्छाणुपृत्रिवेसा इत्यादि ॥ वेदपाद्वारेपद्यानुपूर्वाः वेदपावाच्याः तद्ययागुद्धत्वेदपावंतः सर्वस्तो हाःनिर्मटपरिणामलाग् मुख्यत्वेनवेमानिकलांतकादिष्यतुत्तरसुरप्रयंत्रसानेषकेषुक्रिवेक्क्रीप् मिजेषु मनुष्यर्काषुंसेषु विषेग्रहीषुंसेसु । केषुचिनसंस्थात वर्षायुष्केषु राष्ट्रहेश्यासंभवाव । ततः संख्यातगुणाः पद्मवेश्यारंक सनत्कुमारमाहें इन अलोकेष देवेष पृथ्वीक्तेष मृत्रुपारिपेश्वप क्षेत्रपासंभवात् सनस्क्रमारादिदेवानां वटां तकाविदेवेम्पःसंस्येयगुप-त्वात्, तेम्योऽपितेजोक्षेत्रयावंतः संख्येयग्रणत्वात् सीव्भेशानाविशे वैषुकेषुचित्तियंगमनुष्येषु वेजोङेश्यासन्भावात् तेमायसक्रमः क्षेत्रपासवितपाणिगणापेक्षपासंख्ये पत्ना । ततः कापोत्रहेरणांतः अनंतगुणाअनंतकायिकेष्यपि कापोत्रधेनपासनुभावाततोऽपिनिर्देश षिकानीएकैदयावेती नारकादीनांतल्केदयावंतोऽत्रमधीपाद , ततः §' व्यक्तेत्रयात्रंतीविदीपाधिकाः मूपसांतल्खेत्रयासञ्जानात्, यद्ग्यपानि परमञ्कूषा, पृष्क्षिणं नी देश है । अन्तर्भ ता ना विदेश काउवेसाणं परमवेसाणं हुः। 🗀 🥽 🕾 🗟 र 🗘 🕽 ज प्पादा बाहुआवातुल्लावाविसेसाहीयाचा गोपमा सब्बत्धीचाजीबाधुर्यः **बेसा प**उमबेसा संखिळागुणातेजीबेसासंखिळागुणा अबेसाअणेतपुणी काउडेसाअगंतगुणा नीरवेसानिसेसाहीया किहुवेसानिसाहीय ए बेसाविसेसाद्यां साम्यतारे अभग्यास्तो हा स्वेषां रहप्रमाणस्य ६५ म घरपपुत्ताऽनंतत्वस्थात् वस्योगस्याः सिविगमनार्हा अनेतपुण्य आह्य प्रसिणं भंतेजीयाणं भवसिजीआणं अभयसिजीवाणे नोमक्तोअमर्शसदीयाणं कपरेकपरेत्रितो अणाना वहत्वसामी पनास्ट्यरपीया अभवसिद्धि आली भयानी अभया अधेलाहणा भवसिद्धी आञ्चलंतरपुषा सम्बद्धाः स्मामेना जनस्य इनमञ्चलस्य स्तो धनी पदाचिकसम्परस्यात् हे लेचिरे १४ वर्षणानानां सार गर्नर गर्थे म्पर भारतिकसम्पण्यस्यः तेक्यातपुत्राः ॥११४॥

द्यार्थ:—हेरपानी अस्प बहुत्व पशावपूर्वी क्यीने, शुद्ध-हेर्सी पोडा छे वेवी पद्महेरपामे असंस्य गुणा छे, वेजोनेद्री असंस्य गुणा छे, वेषी कापीन हेरपा असंस्यगुणा, नांटनेद्री अधिका, वेची कृष्णनेशी अधिका, असरप्र पोडा, स्था अनंत-गुणा छे, सारवादन सम्पण्डी पोडा विषयमं उपहाम सम-क्रिती संस्थातमुणा छे, विषयु मिश्र असंस्थानगुणा छे॥११३॥

मीसासंखावेअग, असंखगुणखईअमिच्छदुर्णता । संक्षियरथोवणंता, अणहारेथोविअरअसंखा ॥११४॥

टीका-मीसासंखावेअग इत्यादि ॥ औपशमिकसम्पक्रहष्टि-संख्यानगुणास्तेम्यः श्वायोपशमिकसम्यगृदृष्ट्यः असंख्यातगुणास्तेत्रयः शायिकसम्पग्रहष्टयः अनंतगुणाः, शायिकस-म्यक्स्ववतांसिद्धानामानंत्यात्तेम्योऽपिमिथ्यादृष्ट्योऽनंतगुणाः सिद्धे-म्पोऽपिवनस्पतिकीवानामनंतग्रणत्वान् ,संज्ञिमार्गणायांसंज्ञिनोजीवाः स्तोकाः, देवनारकसमनस्कपंचीद्रयतिषेग्मनुष्याणामेत्रसंज्ञित्वात्, वेम्पइतरेअसंज्ञिनोऽनंतगुणाः पुकेदियाचसंज्ञिपेचेदियान्तजीवाना-मानन्त्यात् । यदागमेन्यगादि । पुएसिणंशेवे जीवाणं सन्नीणं असंतीणं नीसंत्रीणं नीअसंतीणं य कयरेकपरे हिंती अप्पायायद्र-आवातुल्हावाविसेसादीया गोयमा सबस्योवाजीवासंतीनो असंतीनो असंबी अनंतगुणा तथाजाहारकमार्गणायांअनाहारकाः स्तीकाः विमहगरमापुनसमुक्षावेकेविक्षसमुक्षाततावस्थायां अयोगिकेव-क्षिनांसिद्धानांअनाहारकस्वात्, वेम्यः इतरेआहारकाअसंख्यातगु-णा, नवुसिद्धेन्योअनंतगुणाः संसारिजीवारवेचमायः आहारमारनतः क्यं असंख्यातग्रणाः अनाहारकेग्यः आहारकाइविनेयरोपः पनः प्र-

विसमयेएकैकस्यनिगोदस्यअसंस्ययतमभागस्यसंद्रापिवग्रहगस्य समापत्रस्वेनप्राप्यमाणत्वात्, अतः अनाहारकेम्यः आहारकार्म संस्येष्याणाः इतिचितितंगस्यादिप्तत्पग्रहृत्यंद्रश्नीमार्गणासुमूलभा वान्विभजन्नाह् ॥११४॥ टचार्यः—विणसु क्षयोपदाम समकिती असंस्यात युणा

छे, तिणसु क्षायिकसमिकती अनंतगुणा छे, तिणसु मिप्पाली

अनंतगुणा छे, सेज्ञी थोडा, असंज्ञी अनंतगुणा छे, अन-हारक थोडा छे. आहारक असंख्यानगुणा मार्गणाये अस्परहूव क्यो. निगोदनी असंख्यानमे भाग सदा विमह्नगृदिये छे निणे॥ ११४॥ गडपंचिदितसंमि, जोण्येषकसायच्छनाणे।

गङ्गपाचादतसाम, जाएयएकसायचउनाण। संयमतिवंसलेसा, भयसायगसंक्षिहारदुगे ॥११५॥

डी हा- मह्पेपिरिह इत्यादि ॥ गति यसुर हेपपेरिद्यमाती राम हार्ये योगमर्थे वेदमर्थे कमायश्रास्क मित्रुता गरिमन व पेरप्रणे ज्ञानश्रास्ये संपमनक हे यहार भ्रामध्यापिर स्ते ने देखार दहें भर्षे थी विकामस्य स्ते संपिर्दार्थ स्ति स्त्रियं स्ति है अन्तरा है प्रेष्ट क्ष्मि विज्ञानगणायां क्ष्मभागदानिक्रमा सामायश्राद हिस्सोरिया भीट्स क्ष्मिया भीट्स क्ष्मिया सामाय

श ११९ ॥ ट्यार्थ-मानि ४ प्योन्द्राणो १ वसकाय १ पोस १ १६ ३ स्थाप ४ आन ४ सपस २ दर्शन ३ लेव्या ६ मध्य १ आर्थिकसम्बद्धत १ सता १ जादायक १ जनावायक १

पुर मार्गमा इति ॥ ११५ ॥ स्वट समगे, खदगाविणासेसआससमहीणा। स्य, खयपरिणामभावाय ॥ ११६ ॥ णभावा इति उपशमसम्यक्तवैद्यायिकमावमंतरेण-प्यंते, उपशांतदर्शनस्पशायिकभावनेदीनभवति<u>,</u> तुष्के स्थावरपंचके, अज्ञानविके, अभव्यमार्गणायां त्वेमिष्यात्वेसास्यादनेमिश्रेअसंज्ञिलक्षणासुअष्टादश-उपशमरूपभावञ्चयरहिताः क्षयोपशमीदयिकपारिः पः भावाभवंति, केवळज्ञानकेवळदर्शनळञ्जूणासु-विकपारिणामिकश्चाविकष्टश्चणास्त्रयोभावाभवंति । णासु मूलभावाउत्ताः ॥ ११६ ॥ सांप्रतंपार्गणा-ापनाह । पासताळीस मार्गणाये पांच भाव छे, उपशय-हमात्र विना ४ भाव छे, दोषमार्गणाहन्द्रि ४

पीसताळीस मागेणाचे पांच भाव छै, उपसप्तावाहांद्र ४
अज्ञान ३ अभय है, दोषमागेणाहांद्र ४
अज्ञान ३ अभय है, देशचेपरसम्पत्तित १
शादादन १ मिम्र १ असंज्ञी ए १८ मागेणाचे
शाम १ ए वे बिना एण भाव छै, केवडव्यान
१ ए वे मागेणाचे आदिषक १ क्षाविक १
ए बीन भाव छै. इटले वासिठ मागेणाचे मूळ
११६॥
धातस्त, जोएसंस्त्रीतहेचआहार।

णा, भवेमणुपतिगईहीणा ॥११७॥

सरभावापणतस इत्यादि ॥ पंचेन्द्रियमार्गणायां_ १२९

156

तिसमयेएकैकस्यनिगोदस्यअसंस्येयतमभागस्यवर्द्दापिवियहमस्य-समापत्रस्वेनप्राप्यमाणत्वात्, अतः अनाहारकेम्यः आहारसम् संस्येयग्रणाः इतिचितितंगत्यादिष्वस्यबृद्दंब्द्दानीमार्गणासुपूरम्भ वान्विभजन्नाहः ॥११४॥

टर्नापः—तिमस् क्ष्मोपशम समकिती असंस्पात ग्रण छे, तिमस् क्षायिकसमकिती अनंतगुणा छे, तिमस् निप्तनी अनंतगुणा छे, संशी थोडा, असंशी अनंतगुणा छे, अन-हारक घोडा छे. आहारक असंस्पातगुणा मार्गणाये अस्पात्त क्यो. निगोदनी असंस्पातमो भाग सदा विमहुगतिमें छे निगे ॥ ११४॥

गङ्गंचिंदितसंमि, जोएयेएकसायचउनाणे। संपमतिदंसलेसा, भवलायगसंक्रहार्तुगे ॥११५॥

दीका—महूर्यार्थिद दूरयादि॥ मित्रशृत्केष्येदियमानीयाः कावे पोगवये वेदवये क्यापण्यत्कः मित्रुनामानानायदेश्याः आन्यत्वे संप्रमासके चतुर्यक्षामानिकेदपायदेके अवेशः विकासपार्यके मांद्रार्थित्ये आदारके अन्तरारके एवं एक ध्यां दिश्चनार्यवायां प्रमाना सहात्व्य अन्यत्य स्थाप्यक्षाये करायोगस्य नै रदेव क्यारिणानिक स्टायाः प्रमानाः प्राप्यन्ते औयन्त्रिकेत्

टरायी----मांत ४ पोर्शन्ताणो १ अमहाय १ पोम १-इद ३ कथाय ४ जान ४ नयम २ दर्शन ३ वेश्या १ मण्ड १ क्वायिहसम्बद्ध १ मध्य १ आहारक १ जनावास १ एवं सामेबा ६२ ॥ ११५ ॥ पणभावाउपसम्बे व्यवनविणासेमआसुसमहीणा। केपलटुनिउदय, व्यवसिणामभावाय ॥ ११६ ॥

टी हा—पणभाज हुनि उपरापसम्पक्तवेशाविकभावभ्तरेष-पत्यातेभावाः माप्पते, जनगानदर्धनस्पद्धायिकभावनेदीनभवति, ग्रंपकृत्यानिपनुष्के स्थानस्पर्वे, अनुग्रानिक्षे, अभाषमार्थणायां स्योपदाभसस्पक्तवेशियम्पत्रेसारवादनिक्षित्रेअसंदितस्यानुअस्पद्धन्न मार्गणायुद्धायिकजपनामस्प्रभागन्यदेनाः स्थोपसम्भीत्रिककारि-पानिकस्यानुस्यायम्पत्रस्यदेनाः स्थोपसम्भीत्रेसकारि-पानिकस्यानुस्यायम्पत्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यान्तिकस्यान्तिम्यान्तिस्यान्त्रस्यान्तिस्यान्तिस्यान्तिस्यान्तिस्यान्तिस्यान्तिस्यान्तिस्यान्तिस्यान्तिस्यान्तिस्यान्तिस्यान्तिस्यान्तिस्यानि

ट्यापे.—चंत्रताडीम मार्गणांव यांच भार छे, उपसाग्याहाट्टिड धार्मिकमा निना ४ भार छे, रोपमाग्याहाट्टिड ४ धार्वर ५ तीन अशान ३ अभ्या १ ध्राचेरप्रसम्प्रस्ति १. विच्यादा १ तीन अशान १ ज्ञान १ क्याच्याहा १ के विच्याहा १ हो के विच्याहा १ के विच्याहा १ हो के मार्गणांव ध्रापिक १ रायाहा १ हो के मार्गणांव आदिक १ हारिक १ सारिणांविक १ ए वें मार्गणांव औदिक १ हारिक १ सारिणांविक १ ए वेंन भार छे. इट्डे बासिंठ बार्गणांवे मूळ

उत्तरभावापणतस्, जांपसंब्रीतहेवआहारे। सबैअभवहीणा, भवेमणुपतिगद्दीणा ॥११७॥

त्रीका---उत्तरभावापणतस इत्यादि ॥ पंचेन्द्रियमार्गणायां

भाव छे ॥ ११७॥

प्रसक्तायमार्गणायां, योगतिकमार्गणायां, संज्ञिमार्गणायां, आहारक मार्गणायां, संज्ञीनपंचाशन्त्रेनदाभावानांभवति । चतुर्गतिषु सर्वमा वानांमाच्याणत्वान् पंचेन्द्रियादिभावानां सर्वगतिषुप्तदावात्, तथा अभय्यार्गणायां अभ्ययत्वद्विनादिश्वाशत्त्रेभदाश्वायते, तथान

ण्यप्ति, संउप्यगती, तिमह्ह्यीणाति, तिस्त्रः गतयः नास्तामरिते पंगुटक्षणानमाप्यंते, होषाः पंचाशनुभेदाभावानांमाप्यंते, श्रीर यिकस्पअधादश होषाः सर्वेऽपिअत्रमदेशोदयसंकातोदयस्वनापिकि

तंष्ठारूयनेनमतुष्पत्वभेवार्षितमिति ॥ ११७ ॥ टवार्षः—इवे वासित्रमार्गणाये उत्तरभाव कहे छे । पर्षे द्वितेत्रसकायने योग ३ ने संज्ञामार्गणाये तिमहीज आहार् मार्गणाए सर्वभाव ५३ छे, अभय्य विना ५२ भाव छे, भय्य-मार्गणा विषे मञुष्यगतिमार्गणाये तीन अन्यगति विना ५०

उनसुममीसंचरणं, मणपज्जवदेसचक्खुदिष्ठिअ। अहहारेप्हिंविणा, खायगसगहोणचक्खुदुगे॥१९८॥ टीका---अवसमारीसंदरमाहि॥ अनाहारकमार्गणमं सर्वस्

टीका---जवसममीसंड्त्यादि ॥ अनाहारकमार्गणामां सर्ह्य स्वारिशत् मेदाः प्राप्यते, जपशमसम्पक्त्वेआयुर्वशभावात्नमणमपि मरणाभाषेवियहगतित्यमपिनइतिहारिभद्राञ्चस्तन्यतेसमचलारिकार् कामेबंथिकास्तुजपशमसम्यग्वनः संज्ञिद्धयङ्शणजीवभेशांमीकारे

. भेदोच्यंग्ते, तद्पेक्षयाविग्रहगतीउपशमसम्पर्दशनभवति, तेना इचरवारिशत्मेदाभवंति, उपशमचारितंतुपर्याप्तकस्य, मीसं नामश्र योपशमचारित्रमपिपर्याप्तकस्यमनःपर्यवज्ञानस्यापिपर्याक्षाऽवस्थाया-मेवदेशविरतस्यापिपयांशाऽवस्थायांचधर्दर्शनमपिगुरूपरूच्या पर्याप्त-र्यय वेनएमिभार्वविनाअष्टचत्वारिशत्भेदाभवंति । क्षायिकभेदाः केविसमुद्धातावस्थायां अनाहारकत्वेमाप्यते । क्षपोपशमभेदेषु-ज्ञानिविकद्रश्नेनद्विकअञ्चानिविकटिष्यपंचकक्षयोपशमसम्यक्त्वस्यदि-यहगर्ताप्राप्यमाणत्वान् । औदयिकपारिणामिकानामपिवियहगरी-माध्यमाणत्वातुमाप्यंतेअनाहारकेएतेभावाभवंति । उपशमंचमि-अंचचरणंच उपरामनिअचरणेइतिसमासः अथवा उपरामंचमिश्रंच उपशमनिअंतरेवचरणंड्त्यनेनउपशमंचरणंमिश्रंश्चयोपशमंचरणंचेति-ब्याख्याभेदेनोभयमतदर्शनं इतमितिलेषं । चधर्दर्शने अचधर्दर्शने खापगसगद्वीणत्ति, क्षायिकभावस्यद्यव्यवंचककेवद्यज्ञानकेव्यदर्शन-हक्षणभेदसप्तकमंतरेणपद्चत्वारिशत्भेदाभावानां प्राप्पंते, क्षीणमोह-गुणस्थानंपावत् चधुरचधुर्दश्ननद्वयंभवति, श्वीणमोहेचशायिकसम्य-क्तवचारित्रेभवतः, रोपाः क्षायिकस्यसप्तमेदाः घनघातिश्चयेसयौ-गिराणस्थानादिप्येवभवंति। अतश्रक्षरचक्ष्यर्दश्चेषयर्शनद्वयेपरेभेदान-संति ॥ ११८ ॥

द्यार्थः — उपशाससमिततीका चारिकक्षणोपशमणारिक विना सनःपर्वदशान विना देशनियति विना चधुर्रहोन विना अताहा-रक्षणोणाए ४८ भाव छै। झायिक्या तात मेद ५ टिप्येकेन्छ-हान १ पेवटदर्शन १ ए सात विना चधुर्रहोन १ अपधुर्रहोन १ ए वेने ४६ भाव छै॥ ११८॥

वेअकसापेतिउदय, अडखायगहीणनाणुवहिदंसे । विणुखायसगअन्नाणं, मिच्छाअबचअन्नाणा ॥११९॥ टीका —वेयकसायइत्यादि वेद्विकेऔद्यिकमावस्यतिहर्ति। कमेदाः क्षायिकस्यलिव्यंचककेवल्ज्ञानकेवल्दर्शनञ्ज्ञायिकस्य स्यातचारिचरहिताद्विचल्चारिक्षतुभावमेदाः प्राप्यते । तनपुरुपरे स्वावेदेनपुंसकवेदेनस्कर्गतिल्ख्यणऔद्यिकविकरहिताः पूर्वेक्सश्च

स्त्रीवेदेनपुंसक्त्वेदेनस्कर्गात्छश्चण्डीद्धिकाञ्चकरहिताः पूर्वेक्तश्च पिकाष्टकरहिताद्विचन्द्वारिशत्मेदाः, स्त्रीवेदेगुरुपवेदेनपुंसक्रवेदेगर गतिरहिता द्विचत्पारिशत्, नपुंसक्तवेदेशुरुपवेदेस्विवेदेद्वगतिरहितः द्विचत्वारिशत्, कोषेक्रोधकषायष्टश्चणायांमार्गणायांमानमायांभैभ रहिता अष्टादशञीद्धिकाःशेषाः पूर्वेक्ताद्विचन्द्वारिशत्, पूर्वमानै-क्रोधमायाद्योभरहिता गायायांकोधमानस्त्रीमरहिता क्षेत्रेमेश्वमान

क्रायभागाङाभरिहेता सायायांकोयभान्छोभरिहता छोमेकोयमान् मायारिहता द्विष्मत्वारिकानेभराभावानांम्प्रदेकं दाच्याःकोयानार्थः णोमच्ये अन्यतमस्यपृकत्येवारेदायात् नान्येवास्मिति, नाणतिज्ञानिर्वतः समार्गणयायांअविद्दर्शनमार्गणायां क्षायिकस्यप्तस्मेदाः स्योतिकेवि प्रत्ययानभर्वति । युतासांक्षणणनोहयावदेवसस्त्रातः, अज्ञानिर्वतः सिष्यात्वमभन्यस्यअञ्चानं औदयिकसादस्यप्रयमेदेदक्षय्वनयीदरे

मिध्यात्वमभ्रव्यक्तं अज्ञानं औद्यविकभावस्यप्रधमेनेदकं वर्षत्रणीद्दश्चेनावर्षिः भावरिद्धताः श्रेपाञ्यश्चमध्द्रश्चायिकद्वत्तं नश्चायिकचारितं वैतिद्दै। स्वयोपश्चामिकचारितं विद्वार्थः अभ्यविकाः एकोलविज्ञातिः, पारणामिकौदीः भेदी पृतं चत्वात्तार्श्वात् भावराभविज्ञातिः, पारणामिकौदीः भेदी पृतं चत्वात्त्रात्ताः । अभ्यत्वायमसगत्तिसमासेविज्ञ्यतिः प्रदेसपोर्ज्यपृते वयोदशमितिनाहत्ययः ॥ ११९॥

ं. ट्यार्प:—वेद तीनने विषे क्षाय ४ से ४२ साव हैं, तीन औदिपिकना ८ क्षायिकना विद्वना सावना जे पुरुषवेर मध्ये क्षीवेद नधुंसकवेद नरकगति ए तीन नथी। क्षीवेदमप्पे, पुरुषवेद नधुंसकवेद नरकगति नथी। नधुंसकवेदमप्पे, पुरुषवेद क्षीवेदेदेयगति नथी। क्षाय ४ मध्ये क्षोयमध्ये मानादि २ नथी, मानम्ब्ये, बोधादि ३ नथी। मायामध्ये, बीजा तीन कषाव नवी । टोभमच्ये, अन्य चीन कषाप नवी । तथा क्षायिक-सम्पक्त छै, होष अन्य नवी ए अगीयस विना ४२ भाव छै । क्षायिकना सात भेद, पांचर्दाच्य केवल २ अझान १ मिप्पाल १ अभ्ययपणी अझान ३ एटले १३ भाव विना ४० भाव छै ॥ ११९ ॥

साभग्रतेअजप्तेमिच्छ, तिगिदेसिसुहमेग्रणप्यभवा। अङखायगपणलेसा, समचरणविणातिलेसासु १२०॥

टबार्थः--अविरतिमार्गणाये अभव्य बेटांबे तेवारे ४१ भाव पार्मारे, मिध्यारवे ३४ सारवारने ३२ मिश्रे ३२ देशांवादे चोत्रीस है. सक्ष्मसंपराये २२ ग्रणटाणे जे कहा वे भाव

णवा. आठ मेद क्षायिकना पांच छेरपा जे गर्वेपीये वेह थीजी उपशमचारित्र ए १४ भाव विना ३९ भाव पामी

तिन छेरपाने विषेता १२०॥

तेनिरयविणुतेउद्गे, सुकाएनिरयलेसपणहीणा । मणनाणेपणतीसं, केवलद्गितरभावाय ॥ १२१ । टीका—तेनिरयविण इत्यादि । तेपूर्वे।क्ताएकोनचर्त्वारिश नरकगतिलक्षणेनऔदयिकभेदेनरहिताअष्टार्त्रिशत् भावभेदास्तेजीले **इपायांत्रथापद्मले**डयायांमाप्यंते, सुकपुड्नतिराक्कलेड्यायांत्रिपंचाशाः भावानांमन्ये अन्याः पंचलेह्यानरकगतिलक्षणाः परशोदयिकमेदी षज्येतेततः शेषाः सप्तचरवारिशन्भेदालभ्येते, मामनाणेमनःपर्यन **ज्ञानेपश्चित्रिंशद्भेदाभवंतितेचअमी**उपशमस्यद्वीशायिकस्पद्वीदेशितिः विअज्ञानविकरहिताश्चतुर्देशश्चयोपशमस्यअज्ञानाऽसंयममिध्यास्वर रकतिर्पेग्देवगतिरहिताः । पंचदशऔदयिकाः अभन्यत्वरहिताः पारिणामिकस्यद्रौएवंपंचर्त्रिशत्भावाः मनःपर्यायज्ञानेभवंति। केर्रः खडुिंग, केवलज्ञान केवलदर्शनमार्गणायांतेइतित्रयोदशभावाभवंति, भवश्चायिकस्य मनुष्यगति गुक्कुछेरयाअसिद्धत्वरूपाख्वयऔद्धिकः मेदा, एकः पारिणामिकभेदः एवंत्रयोदसभवंति ॥ १२१॥ ट्यार्थः—तेओगणचार्शमब्येथी नरकगति ? कार्डाये तेवारे ३८ भाव पामीये, वेजोलेस्या तथा पद्मलेस्याने विषे तया राक्क**ेर्याने** विषे नरकगति १ वेस्या ५ विना सडताळीस भा^र छै. मनःपर्यवज्ञाने २ उपराम २ शायिक १४ क्षयोपराम १५ औदियक २ परिणामिकण ३५ भाग हे. केवल २ ने निर्प

विचारसारप्रकरण.

नत्र १ क्षायिक २ ऑदयिक १ पारिणामिकनाए १२ भाव छे. ॥ १२१ ॥

पणलिखअन्नाणदुगं, अचम्खुउद्येदुवेअतिगईओ। लेसदुद्दीणापरणामियाय, थावरइगिंदिठाणेसु १२२॥

टीका—पणटडिङ्ग्यादि ॥ क्षयोपशमभावस्यहर्ष्यवक्षं-अप्ताणदुर्गति मत्यज्ञानस्नुनाज्ञानस्त्राणे अज्ञानद्वयं अवधुर्वर्शनं एदेअटीओद्दथिके, पुरूपेदस्त्राविदेगतिवयंनरकामस्तरस्यहर्णवेदया-द्विकं पद्मायक्षेद्रानिक्षेत्रभावतेत्राणश्चतुर्दश्चओद्दयकाः पारिणामिकाः स्यो द पितृयंत्रपार्वद्यानिनेदाभावानांम्यात्राविकंपृधिद्यप्यनस्पतित्र-क्षणेत्रपापुर्केद्वियमार्गणायांमाप्यते ॥ शेपानभवति ॥ पंयेदियादी-सरस्वात ॥ १२२ ॥

व्यार्थ—पांचलिय र अझान २ अच्छादशैन ए ८ छुपो-पदामना उदयना मन्ते पुरुषवेद २ स्त्रिवेद २ सङ्घ्य १ वृंदता १ नास्त्री १ ए ३ गोत पदाशुद्धकेदया २ ए सास विना १४ उदयनी पारिणानिकना ३ एव्छे छायोच्यासना ८ उदयनी १४ पारिणानिकना ३ एव्छे छायोच्यासना ८ उदयनी १४ पारिणानिक ए२५ भाव छे. खावर ३ ऍगोझपसर्गणा विसे । १२२।

तेतेउछेसहीणा, गइतसनितिइंदियसुचक्खुजूआ । चउरिदिसुनाणदुगं, विगलेसुसुएसमक्कायं ॥१२३॥

र्शका—वेतेउन्नेसहीणा इत्यादि । वेष्ट्रीत्काः प्रेमविशती वेजोन्द्रयाहीनाःकियन्वेतराज्यविश्वातिभावनेशः गातिश्वेतेजोना-युकाण्टसणमार्गणायां विद्याद्विगी मीदिवे प्रेमार्गणाच्याप्ते रातु-

मास्वामी-बेर्न्दायाणंभेते किनाणी किअन्नाणीगोयमानाणीविअ र्णाविजेसिणंनार्णाते आमिणिबोहीअनार्णासुअनार्गाजेअसार्गातेम अत्राणीसुअअन्नाणी स्त्रवाक्यप्रामाण्यात् अत्राम्नायः सःमञ्ज सूत्रस्यसमयमात्रस्यबाहुकत्वात् वर्त्तमानकालेसारवादनस्थरपि^{र्य} त्यस्यअनुद्रमात् उपञांताद्वागताविकायांवर्तमानत्वात् ज्ञानवर् मोक्तंकामंग्रंथिकेस्तुकडेमाणेकडेइति भगवन्याव्यात्रगमनेनामिन रवोद्यसन्मुसीमृतपरिणामन्वान् नियनमज्ञानत्वेनभवनान् अज्ञान

टपार्थः--वेमध्ये तेजोडेइया गतिवसक्त० तेउकाय १ वर्ड काम १ बेन्द्रि १ तेन्द्रि १ एहने निरे २४ भार छै. पी रिन्द्रिमार्गणामध्ये चशुदर्शन नेडीये एटले भाव २५ पामीरे तथा भगवतीसूने विक्रवेन्द्रिने २ ज्ञान मान्यां छे, येरीपाणेशे वैनाणीअप्राणी गो॰ नाणीविअज्ञाणीविङ्गनिययनात् ए स्रवयः

सम्मदरसंबविरईं, अवहिदंसणनाणचउहीणा । अञ्चाणेचउनीसं, भागानिमभागपर्यादेवा ॥ १२४ ॥ टी रा-मामरम्क्यादि ॥ सम्मेति संयोगसायमस्यासी राष्ट्रियनग्राचधेद्रस्याः इंपह्नमानः सर्वार्यन पर्वतिक्षः उपाद्यस्यादितं जानिस्रातः ? शानवतुरस्यानाः तेपासावपीः परामनेशः, जीरावेशपृश्विशानि, पारणानिशः ४४, एरेपर्रः

विंशतिभावाः भवंति, देवानांएतेध्वनागमनात्, तत्रैवचधर्रशनय

चतुरिन्दियमार्गणायां पंचविंशतिभावाभवंति । नाणदगंज्ञानवि

मेवेतिअंगीइतम् ॥ १२३ ॥

पण नमाण छे. ॥ १२३ ॥

सास्वादनकाळेविकलानांम् एश्ववेभगवत्यादीसमाख्यातं यदाह स

पारिणामिकना ३ ए चीवीसभाव छे, अज्ञान ३ मध्ये मृत्र वीन भाव मांहियी जे भेद संभवे वे कहिवा ॥ १२४ ॥

स्त्रिशन्भावाअञ्चाणेअज्ञानिकसार्गणायांमाप्यंते । भाजामृद्धापेक्ष-यानिकभावमस्ययिकालेयाः, उपरामशायिकभावानामवासंभवात् ते-

यानकभावप्रत्यायकाश्चयाः, उपरामश्चायकसावानामत्रासभवात् त-पांसस्यस्वपृद्धवान् ॥ १२४ ॥ ट्यार्थः---समकित १ देशविरति १ सर्वविरति १ अवधि-वर्शन १ ज्ञान ४ विना शेपक्षयोपशमना १० व्हरणना २१

बोउवसमखपसम्मं, मीसेअञ्चाणदेसविणुउदप् । तिगईअञ्चाणअजई, मिच्छविणुदोन्नीपरिणामी१२५।

दीका—दोउवसमइत्यादि ॥

टवार्थः — उपदामना भेद २ हायिकसमितनामिश्रना १४ भेद विना अज्ञान ३ देशविश्ति विना उद्दयना १५ श्रीन गरि-मिष्यात्ववितिअताण १ असंयम १ ना दोष १५ पारिणामिक २ जीवरव १ भष्यत्व ॥ १२५ ॥

सामाइदुगेपरिहारगेअ, सम्मचरणदृष्धिवेयविणाः। हुमसापुउवसमस्त्रम्, मीसेल्ड्योसुउवओगाः॥१२६॥

डीका--सामाइहजेइस्यादि गाथाद्वयसंतरंथः तमसामायिकः द्वितेसामायिकस्टेडोपस्थापनीयव्हाणेषारितद्विकेते।उत्तसमितद्वीने द्वापुरामभागस्य, हायिकसारस्यकृतंत्रस्य करस्यन्दामिनोन्सम्

वरवे और यि के भावेनरका मरति पंगानित हाणे विके. अज्ञान विरति मि-

พระพังเทศเลย แบบ โดยสมาชาน पानियामि हेल्यान नर्जे १० एकोए र , तप्ते १० (प्रोकेट को पानिस पाध्या ते सो मार्ग मार्ग प्राप्त मेर प्रशास है है। ती पार्थ केलो कोचम प्राथमा केला के अनामा है हा एक इस्से बार्स उपाद है उपाद में उपाद स्थितमानि । वनिति मध्य प्रधानमाना मुख्याले स्थित ध्यभागः, करोन्यन प्रमानमान्यतः व्यवदार हार्कियासस्य सन् गामाभविनिकार ग्रेग । वस्तुम्बम स्व स्वास्त्रसमे ग्रेस्ट्रास्त्रं । अन्तः मामास्य हो ना यन्तुनेवाः, रचा सन्तवची उपशयनातिप्रस्तिरितिः भारतिकारको राज्य तराज्य स्थारिक स्थारा । यादायायान सर्वितायान सर्वितीन रीरापनि आपि हम्पन भागनि समी शामेन अतिनलियाप स्तः इतिसुर इशोभना अपनेगा । सायोपश्चांन हाजान यनुस्परर्जना सिन् पाइम्इश्इति ॥ १२६ ॥ टबार्थः—एटडे उपराम २ शाधिक १ क्षयोपराम १५ औरपिराना १५ पारिणामिसना २ ए ३४ भाग छे । सामान पिक १ छेदीपस्थापनीय ए वेने परिहासीयशदिमन्त्रे उपरामन चारिप स्तीयेद विना ३२ भाव छे, कोइक आदि तीन डेस्पा ब्यार गुणटाणा पर्यंत माने तेहने मते २९ भाव छे, यथा रुपातचारित्रमब्ये २८ भाव छे, उपशमना २ शापिकता ९ क्षपोपशमना १२ टॉब्य ५ सुउवओगाकहेतां सम्यग्ज्ञान एटडे च्यार ज्ञान त्रण दर्शन पूर्व १२ ॥ १२६॥

उदएअसिद्धनरगई, सुकाभवन्तवीयंचपरिणामा । अडवीसमभवेसु, मीसादसदुव्विपरिणामा ॥१२०॥ ंशका—उद्पुअसिद्धइत्पादि॥ औदिषिकस्पअसिद्धवंनगातिः राष्ट्रलेडपाइतित्रयोभेदाभव्यत्वं जीवत्वंचपारिणामिका एवंअप्रावि-शतिभावभेदाययास्यातचारितेअधार्वेशतिभावभेदाःपार्यते । अभ-षेसुअभव्यमार्गणाचांमीसाञ्चयोपदानरपदशः द्वविद्वीपारिणामिकीअ-भव्यत्वजीवस्यस्यो ॥ १२७ ॥

टमार्थः -- ऑदविकना ३ असिद्धपणे मनुष्यगति १ शुक्क-हेड्या १ भव्यपणो जीवपणो ए २ पःतिकामिक सर्व मिल्यां २८ भाव छे, यथारूयातचारित्रे अभव्यमार्गणाए क्षयोपशमना १० परिणामिक्तना २ अभव्यवणो जीवपणो ॥ १२७ ॥

उदयाउवसमसम्मे, खयअद्गाणंचमीससम्मविणा ।

उद्येअमिच्छावोहा, भवजीयचेणसमतीसं ॥१२८॥

र्शका—उदयाउवसमसम्मेइत्यादि उदयाऔदियकाः सर्वेभेदाः द्यतिनपश्चिदानभावभेदाअभव्यमार्गणायांभवेति । उपराभसम्यक्ते-खयविणतिक्षायिकभावभेदानभवंति । अद्याणधर्माससम्मविणाइति अज्ञानतिकं क्षयोपश्यसम्पक्त्वंविनाचतुर्देशउदयेआदियिकेअभि-च्छाबोहा मिध्यात्वअज्ञानरहिताएकोनविशतिभेदाः भग्यत्वंचर्जादः रवंचपुर्वसप्तर्विशत्भावमेदाः उपशमसम्यस्त्रेपाप्पते । उपशमभे र्णात् उपरामचारित्रेझायिकदर्शनं भवतिनोपरामदर्शने झायिकदर्शनादि-कंतभवति ॥ १२८ ॥

टबार्य:---आँ:यिकना २१ एटले तेबीस भाव **छे.** भप्पने विवे उपशमसम्बित मार्गणाने विषे शायिशनो भेद कोई नयी. क्षयोपरामना अज्ञान ३ क्षाचीपरामसम्बद्धत विना १४।५ छ-विकास ४ दर्शन २ देशविराति सर्वविराति औदियक्ता भिष्यात 128

है अज्ञान दिना हुँदै पारिणामिक्क्यन्ते भग्यराये जीवनार मुनाई मीन्याया जोग भाव हो.॥ हेन्द्र ॥

स्तरगेट्यायगञ्जनाः समस्त्रिजिषायमिसगेसस्मे । उपसमस्वयिषुमीसगः सम्मञ्जादृतिच्छनीसंध्य

दो हा-- रामेतायमन्ता। रामिनि-शायिकमय इस्मैन
मार्गणायां शायिकपुरकार्यप्रांताः मप्तिव्रश्वन शायिकमय
स्वीप्रांत्रासीपश्चमः उपश्चमद्रश्चिः इस्नैन्स्य्वार्यप्राद्यार्शयम्वर
स्वीपश्चमं शायिकपुरकार्यप्राद्यार्थ्यस्यार्थ्यस्यार्थ्यस्य
स्वीपश्चमं शायिक स्वार्यकार्यस्य प्राच्यस्य प्राद्यक्रीत्रविक
स्वीपश्चमं शायिक स्वार्यक्रिय प्राप्तयस्य प्राद्यक्रीत्रविक
स्वार्यिन। इस्यनेनप्रयोक्तप्रभ्यस्य स्वार्यकार्यक्रात्विक
स्वार्यमिष्यप्रविक्तः स्वार्यक्रियस्य
स्वार्यमेष्यप्रविक्तः स्वार्यक्रियः अर्थिकस्य स्वर्यस्य
स्वर्यक्रियः स्वार्यक्रियः स्वर्यक्रियः स्वर्यविक्रयः स्वर्यक्षः स्वर्यक्षः स्वर्यविक्रयः स्वर्यविक्रयः स्वर्यविक्रयः स्वर्यविक्रयः स्वर्यविक्रयः स्वर्यविक्रयः स्वर्यविक्रयः स्वर्यविक्षः स्वर्यविक्रयः स्वर्यविक्रयः स्वर्यविक्रयः स्वर्यविक्षः स्वर्यविक्यः स्वर्यविक्षः स्वर्यविक्यः स्वर्यविक्षः स्वर्यविक्षः स्वर्यविक्षः स्वर्यविक्यः स्वर्यविक्षः स्वर्यविक्षः स्वर्यविक्षः स्वर्यविक्यः स्वर्यविक्यः स्वर्यविक्यः स्वर्यविक्षः स्वर्यविक्यः स्

शमसमित निना एउठे उपशमचारित १ झापिकता ९ क्ष्ये पशमना १४ जीद्यिकता १९ पारिणामिकता २ ए ४९ भव छे, क्षयोपशमसमित तेहना उपशमनो मेर नयी. क्षापिकनो मेर नयी. क्षयोपशमना १४ मेर छे, क्षयोपशमना १४ मेर छे, तेमच्ये क्षयोपशमसमित मेठीये एउठे १९ क्षयोपशमना १९ जीद्यिकना २ पारिणामिकना ए ३६ मेर पार्मारो।।१२९

ffo.

उवसमख्यगेष्गं, मसिमणनाणदंगमद्विणा । उदप्तिगइतिलेसा, द्वयविण्यस्यानिरण॥१३०॥

टीका-उत्रसमस्वामेष्यं दृश्यादि ॥ निग्वे नापानीयनी जपराभदरीनलक्षणं एकसपदामस्यक्षाविक स्वयस्यस्यप्रवंदराचित्रः

रपमीसे सयोपदाने मनःपर्ययकान दर्शान्मिनगरीयर्गनस्यामेटन ष्रियंतिनापंपदश, औदिषकभावेतुमनुष्पतिषेगनस्मतिविक विना-

वैज्ञःपद्मग्रहरेदयारक्षणहेदयानि ६ विनायर्गह ६ स्तीनपुगश्चरद्वण दिनात्रयोददापारिणाभिकास्त्रयः एउजय्रिकानभाषानानेदा नाक्त गतानाकाणांमाध्वेते ॥ १३० ॥

टपार्थः---नरकरातिमध्ये उपनामसमादाः । १ द्रापित्र समक्रिय ए र मिल्लावना १८ नेह छै, तेयाचे यन परेवतान १ है। विरति है सर्वविरति विना दोष ६५ जीवियकता ६१ मन्द्रे सीन गति सीन हेदया प्रध्यवेद १ नपसभ्यद हुउस दिना

३३ भाव छ नारग्रात्याये ॥ १६० ॥ **वेवेतिलेसपीर्युस, संयु**आसंडसदियाईआ ।

गइग्रणठाणप्यभवा, सम्मणटाणेतु नेयस ॥१६१॥

बीका-देवेतिवेसची दृश्यादि ।। इ.च १६रेन्स सुभयान का रातेजा:पद्माराज्ञ केटपाषय स्त्रीवेट पुर प्रवेदलकुन्ती अल्पन्ता कर वेदर्शिताः सप्तविश्वन् भाशानाभेदा वतः १, भारतापर र वेपले प्राप्त भाभागेणामुक्तसभावाः सामनसर्वत्यान्यः ५०. १८६५ हे ठेर्नास देवाग्रियभक्षायुष्यस्थानयभवारतेषुद्रकार्वे अत्यते देवाच ५० देश-

धेमक विभव्यक्षक सद्दानानवात्त्व १६ स्टब्स अध्यसंत्रिक्षावेत्रात्यकाषात्रकाते, वेदन्तं कर्वकार कर के **{** } ¢ }

दिवज्ञस्त्रणः प्रथमः एपण्वउपगमयुक्तः चतुष्कसंयोगः द्वितीयः सपुत्रश्चायिकदर्शनयुक्तः इतितृतीयः मनुष्यगतीसिद्धपृत्यपश्चापि कपारिणामिकलक्षणभंगेकरहिताः पंचभंगाः प्राप्यंते एकेन्द्रिय द्वीन्द्रियम् निद्रयचतुरिन्द्रयस्याचन्पंचकमार्गणायां अयोपशमपारिणा-मिकोद्पिकलक्षणः एकभंगः पंचेन्द्रियवसकाययोगिविकेमध्ये संज्ञपाहारकलक्षणासुचनुर्दशभंगाःसिद्धपन्ययिकभंगासस्वात् कषायः चतुष्ट्ये मत्यादिज्ञानचतुष्ट्ये दर्शनत्रिके केवलिप्रत्यय सिद्ध्यत्य-यभगद्वयाभावात् शेषाभंगाः केवलद्विकेशायिकौदयिकपारिणामिकः स्तथाक्षायिकपारिणामिकलक्षणः पुतीद्वीभंगीअज्ञानवयेम्हतः विक संयोगिकः एकभंगःस एवगनिचतुष्ट्येनचत्वारोभंगाः सामायिकः च्छेदोस्यापनीयचारिवद्वयेश्चयोपञानपारिणामिकोदयरूपः एकः श्रयो पशमदर्शनचारित्रवतां क्षयोपशमपारिणानिकीद्यिकोपशमलक्षणः ष्ठपश्मदर्शनोपशमचारित्रवतांअथवोपश्मदर्शनश्चयोपशमचारित्रवताः मपिभवति । इतिद्वितीयः क्षयोपशमशायिकपारणामिकौदयिकछश्चगः दर्शनक्षायिकक्षयोपशमोपशमचारित्रवतांभवति, पंचभावसंयोगप्र-रयेथेः पंचमःश्वायिकदर्शनोपशमचारित्रयरस्य एवं चत्वारोभगाभवंति, परिहारेत्रयोभंगाः एकःश्रयोपशमपारिणासिकौदयिकलक्षणः पृष-एवोपशमयुक्तः द्वितीयः एषप्वश्नायिकयुक्तस्तृतीयःमूलतस्वयः उत्तरतद्दतिस्रश्मसंपरायेत्रयोभंगाः चतुष्कसंयोगाद्धौपचसंयोगडशुणः एकः यथारूयातेक्षयोपशमपारिणामिकोद्यिकलक्षणवर्जिताः पंच भंगास्तवद्वीउपशमश्रेणिसंभवी, एकः क्षपकश्रेणिवायोग्यः, एकः केवळिभवस्यप्रायोग्यः, एकः सिद्धप्रायोग्यः, देशविस्तोपदर्भगा, गतिद्वयेएवप्राप्यमाणत्वात् । अविस्तीद्वादशभंगायतुर्गतिकारुम्यवैः लेड्यापंचकेद्वाद्रा,गुद्धेद्रा, अभव्येक्षयोपदामपारिणामिकोद्रिकल्पः

कार्दाय रूटशुणएक एव उपशमदर्शने श्रयोपशमपारि गामिकी द्रिये हो ए-द्यानस्थापकः क्षापिकेचन्यारीभंगाः क्षयोपशमपारिणार्मकर्आदिष-कर्सापिकलक्षणः प्रथमः पंचकसपीगः द्वितीयः केवलिमधीनप्रस्पष मृतीयः, सिद्धमन्ययश्चतुर्यः मिष्यात्वसास्यादनमिश्चमार्गणागुश्चयोः प्रामपारिणामिकीर्दापक्टक्षणः, चतुर्गनिकाधन्याः, अमित्रपृथयो-पशमपारिणाभिकौद्यपिकलक्षणपुकः नरतिषेगुगतिद्रयनोद्वीभर्गी अ-माहारकेपंचकसयोगलक्षणंकभंगवर्जनान्पलन.पच उत्तराधनुर्देश-भंगाः भवति, तत्रद्वादशविष्रहरात्यपेशयाप्कः केवलसभूद्वाताऽव-स्यः एकः सिद्धाऽपेक्षयाएवंसर्वमार्गणागुनावनावाच्या ।।१३१॥ टबार्थ:--देवगनिमध्ये उपाटी तीन देइया ग्रीरेट ए ध्या मेळाये तेवारे सङ्गासभावना भेद छै. सश्चिपादिकभावना भागा २६ है. मतिना ग्रणटाणे पर्व बद्धा है ते अनुसार भागेणांव पण जाणवा तेमध्ये संजिपानिकभावना संभवी भांगा ६ छे ते मांहिसा क्षेत्रयो, नरकगतिदेवगतिम-वेतिरियंचगतिय-वे ३ भारत श्रीद्रिक ? पारिणामिक ? ए एक तथा ए भन्वे उपशव मे देवे ए धीओं अथवा क्षाविक भेजावे ए बीओ मनुष्यगनिवन्ते इ संभवामादियी एक सिजनी झायिक पारिकारिक ए भागी नदा योजा सर्व ५ छे, ध्यार हंडी पांच धावर मन्ये १ विकसनीयी-भंग हो, पंचेदी है असकाय है योग है शीन शह बेटपा है भन्य १ संज्ञी १ आहारी १ अनाहारी १ एउटा मार्थयाहे १४ भागा प सिद्धप्रत्यमी भागी नजी ॥ १६१ ॥ पणसयतेसहिया, जीअभेआउत्तराग्रणटाणे ।

जहतहमन्गणटाणे, होगंतियणुत्तरीसम्बे ॥१३॥

सद्वीया इत्यादि ।। तत्रजीवमेदाः पंचशतत्रिषष्टिप्रमिताग्रणस्था-नशतकेदर्शिताएव उत्तराजयिग्रणस्थानेउक्तास्त्यामार्गणस्थानेज्ञाः तथ्यास्त्रप्रद्योकान्तिकमेदाअञ्चत्तरमेदाःसम्मेतिसम्पक्त्वेशाप्यंते तत्र-

स्रोकांतिकानां अधिपतयः एवंबाह्याअनुत्तरास्तुसर्वेपिसम्पग्दृष्ट्यपुर तथा नरकगतीचतुर्देश तिर्थग्गतीअष्टीचत्वारिशत्, मतुष्यगती शीणि॰ शतानि अधिकानि देवगतीअष्टनवरयधिकशतं एकेन्द्रियेद्वाविंशतिः दिनियत्तरिदियाणांद्वीद्वीजीवभेदीस्वनामकी पंचेन्द्रियाणांपंचरातंपंच-निरादिषकं, पृथिव्यादिषु चतुर्पचन्वारोभेदाः, वनस्पतिकावेषद्भेदाः पसेपंचरातंपुकचत्वारिशद्धिकं, मनोयोगेसिशमार्गणायां पर्याप्ताऽपे॰ क्षपाद्वादशाधिकंद्विशतं, अपर्याप्तराणने चतुर्विशत्यधिकानि चत्वारिशः तानिभवंति, यचनयोगेपर्यां प्राट्येश्चयाविज्ञत्यधिक द्विज्ञतं, अपर्याप्राटः पेश्चपापुकचत्वारिंशदधिकं चतुः अन काषयोगेसर्वेषि, पुरुषपेदेनार-केन्द्रिपविक्रहाऽसंज्ञितिषंग्मनुष्यवर्जिनाः शेषाः ५१०, स्वीरेदेवेपः पसनस्क्रमारादिदेवभेदवर्जिनाः ३४०, नपंसकेयग्रन्थरदेवभेदर् र्जिताः १९२, कपायचतुष्ट्येमर्वभग्यादिज्ञानवयेमम्यस्यस्यस्यानः मरपपाः २३, अवधिविकेतिवैगयमोगानानियेगएवमनःपर्यापकेष एज्ञानकेवलदर्शनेपंचदशक्रमेमृमिजा १५। अज्ञानिकेलो होति॰ काऽनुत्तरमुरभैदरहिताः ५३५, छेदोपस्यापनायपरिवारयोभेरतेगारा पर्यातकादरा, सामायिकमुक्तमभगगय यथाव्यातानापथरशहर्मनः निजाइपर्यात्रहाः देशविर्गारिशति , मिर्जानवेव हवेन्विनस्पर्याः त्याः अविग्नीमर्थे, चलुर्द्यानेष्ट्रेश्चराशियगीर्दयात्रां ५३० अमंश्विमनुष्यार्गार्थनेदिषमस्यान् अन्तर्दर्शनेस्रो अर्थपदर्शनप्रतिनार नस्तरे व उदर्शन हे र उज्ञानस्त कृष्णादि वेरपायवेनाम् शः पर विषेत् रत्यपानस्य तारिश्वसन्त्रापः संदिश्येतः विवेणकृतदार्वशयः 366

धिकंशतंवेजीळेश्यायांशदरपृधिन्यपवनस्पतिशदराख्वयः संजितिर्पग-प्रत्ययाः १० मानुष्यप्रायोग्याद्यधिकंद्विशतंदेवमेदार्दशानंयावत् अष्टाविरात्यधिकंशते, पद्मकेश्यार्थासंज्ञितिर्यग्पंचेद्रियादश, मातुष्या-मेदाः देवभेदसनत्क्रमारमाहेदनदाखीकांतिकित्रसागराष्ट्रः किल्विप-काः पर्याप्ताऽपर्याप्तकमेदावपद्विंशतिः, शुक्कवेदयामांतिर्यग्मनुष्याः पद्मकेरपावतः देवभेदास्तुत्येकांतसर्वार्यसिद्धपर्यतंत्रयोदशसागरायः किल्बिपिकाःपर्याप्ताऽपर्याप्तभेदातचतुश्चन्वारिशत् , भग्येसर्वे अभन्येली-कांतिकात्रसरमेदरहिताः पंचशतपंचित्रशत्रूपाअवपराधर्मिकाः कर्म-म्सिनराणां अभव्यस्वमतिषेधः कुत्रचितृदृष्टीपिभगवत्यादीतस्यागद्-र्शनातनांगीकृतङ्गतिउपशमेसंज्ञिभेदेषुनारकतिर्यग्रमतुष्यमेदाः सर्वे-सम्यक्त्वस्याःदेवमेदेषुटोकांतिकाऽउत्तरभेदरहिताभवंति । एठेपुपर्व-ग्रंथिनेदावनात्रीपशमसम्यग्दर्शनाभावः, क्षायिकेतुनारकाःपद्विर्य-गमरप्यादशपूर्वबद्धाऽपेश्चयाकेविश्वतिवेश्वशायिकंनेच्छंतिमञ्चष्यमेदे-प्रभवंति । तस्युगळिकानांतुपूर्वकर्ममूमीवद्युगलायुः पश्चात्युग-क्षेत्रआगच्छतिततः देवेपूरपद्यततः मनुष्यत्वमापनःसिद्धातिउत्तं-चक्रमंप्रशिकार्याः, तंसियतर्द्यचअत्येभवंभिस्रःजंतिखड्यसम्मते, स-रनारययग्रहसग्रह्मंतुजिणकाळियनराणं इतिवचनात एतवृगाया-प्रमाणितर्यग्गतीनसंभवः युगलयुगङ्गंड्रतिवचनान्यतः जानाद्वीप-काःशायिकानभवंतिवेनमानुष्याभेदास्त्रिशत्कर्ममृतिजाः पृष्टिरकर्म-भूमिजाः पूर्वनवतिर्मानुष्याभेदाः पदनैरियकाः किल्विपवर्जितावेगाः तिकाः सप्ततिः **ए**वंत्राच्यं ॥ क्षयोपशमेतुचतुर्थगुणस्थानमृत्यपाः केचित्तुसर्वार्यसिद्धीशायिकंसम्यक्त्वमेवड्च्डन्तितथाप्येतन्प्रायिकः मिवभासवेडतिरोपे॥ मिथे १९८ सास्वादने ४०० मिप्यात्वे ५३५ ग्रणस्थानीक्तामेदाः वाच्याः संज्ञिमार्गणायांमनीयोगवत् असंज्ञि-प्रअष्ट्रतिदान् तिर्पेग्मत्ययाएकाधिकदातं (मनुष्पाणां) मार्यते ।

आहारकस्पर्सवेअनाहारकस्पते नैसिषकाः ससाऽपर्याप्तकास्तियेग्योतिः जाश्रद्यविद्यतिरपर्याप्तकादेवमेदाः नवनवितिरपर्याप्तकाः मद्यव्यमेदाः असंज्ञिमत्ययाप्काषिकञ्चतमपर्याप्तसंज्ञिमद्यव्याः एकाषिकञ्चतपर्या-प्तकाः केवलिसग्रद्यातेचपंचदशकार्ममूमिजाअप्यनाहारकालम्येदेः अतः श्रीणशतानिसप्तचलारिशत्अधिकानिश्राप्यते ॥ इत्युक्तावि-स्तारतः जीवमेदामार्गणासु ॥ १३२ ॥ सांप्रतमार्गणासुसभुद्वात-भेदान्दशपन्नाह ॥

टमार्थः—पांचसे तेसठ जीवमेद छ । उत्तर ग्रुणठाणे जिम छ ते मार्गणाये जाणवो, तेमच्ये ठोकांतिकना मेद अउतार देव-ताना मेद ए समक्रितीनेज होय. नरकगति १४, तिर्यचगति ४८, मदुष्पने २०३, देवतागति १९८, पंचेद्रीयने २२, विकल्ने पोताना २ ना पंचेद्रीने ५३५, पृचित्रीकापने ४, अप्तराय ४, तेउकापने ४, बाउकापने ४, तनस्पतिने ६, यसने ५४१, मनो-योगे २१२, अपर्याप्ता पिणतां ४२४, वचनपोगे ४४४, कार-योगे ५६३ इत्यादिक सर्वयंत्रयी जाणवो. प्रकोकांतिक तथा अउतार विमानना मेद सर्वसमक्षितीने होय, ए रीते जाणवो ॥ ॥ १३२॥

मणुपसगसमुग्घाया, देवेतिरएअपंचचउनिरए। सेसासुमग्गणासु, गुणठाणविह्नीओनेयदा ॥१३३॥

टीका---मण्णसभासम्बामा इत्मादि ॥ मतुष्यातीसगतिः समप्तमुद्रवाताः प्राप्येवेवेदनादयः देवभनीनिर्यमती वेदनाः १ कपायमण्य १ विक्रयतेजस १ छक्षणाः पंचसमूद्रवाताःपर्यनीर पेनाररमतीरदनारुपायमणवैक्षियस्थाधस्वारसमृद्रपाताः वेपाः सुमार्गणासु गुणस्पानविधिवत्त्तात्त्याः । वसकावेपोगाववेश्यस्व तेव्यापोगम्यच्येक्षापिकसम्माद्रश्लेस्यवास्कर्यविद्यवश्चणासुरश् मार्गणासुप्तसम्बद्धर्गाताभवित, प्रच्यविक्षक्वेदे कपाय्यत्वष्टये-इत्तान्यपृत्येदद्वर्गान्येक्ष्यव्याप्तिम्याप्तिषद्वयेव्यापं-चक्तस्योपश्यसम्बय्यत्यवश्चले क्षित्रश्चात्राम्यपावित्रस्यविद्याप्तिः उभावत्युत्तसमुक्षाताभवन्ति, क्षित्रस्यागणासु आहात्वर्क्षकाव्यप्यसम्बद्धन्यात्तिः भव्यविद्यात्रस्यात्वर्श्यास्त्रस्यागणासु आहात्वर्क्षकाव्यप्तसम्बद्धन्यात्ताः भवंति । पृक्षेद्रियस्यस्यप्रक्षास्त्रस्यान्यप्तिः भव्यस्यस्यविद्यात्तिः भव्यस्यप्तिः सम्वद्यातः सम्वद्यातः प्रसित्तिः स्वर्वातः प्रसित्तिः स्वर्वातः प्रसित्तिः स्वर्वातः प्रसित्तिः स्वर्वातः प्रसित्तिः स्वर्वातः स्वर्वतः स्वर्वतः स्वर्वातः स्वर्वतः स्वर्वतः

टबार्यः—हवे समुद्धात कहे छै, मार्गणाचे मदाध्यमित मार्गणाचे सात समुद्धात हुने, देवमति विर्वपमति पांच समु-द्यात छै। वेदना कथान मरण वैकीय तैजस ए पांच समुद्धात छै। नारहोने ४ समुद्धात छै। वेदना कथाय मरण वैकिय तू ५ होपमार्गणाचे समुद्धात ग्रज्याचाने अनुक्रमे मार्गणाचे पिण जाणवे। ॥ १३३॥

इगविगळथावरेसुः असंसीपसुनझाणममणताः। नरतसपणिदिखवगे, सबेजोपअसुकारः ॥ १३४ ॥

टीका—इगाविगल्यावरेसु इत्यादिः ॥ एकेन्द्रिपविकवेन्द्रिप-

स्यावर्षचकमार्गणामु असंजिटश्रणामुनव्यानं अमनस्करवात्तमनी रिहतस्यात्, अंतीमुद्धतमितंचित्तावत्याणप्गवरयुंनिम छउमत्याणं झाणं इतिवचनात्अतः मनोरिहतस्यात् नव्यानसद्भावः नरितम्यः स्पातीवसकायेपंचिन्न्यमार्गणायां श्लायिकेसस्यग्दर्शनेसर्वेआतंरीक्ष धर्मग्रञ्जन्यश्चणानिपत्वारिस्यानानितेपांषोडशापिपादारुप्यंते सर्वेग्रः णस्यानकसंभवात्, गुणस्यानकाऽपेश्चयानमेदावक्तस्याः योग-विकेग्रञ्जन्द्रश्चरायां ॥ १३४ ॥

टबार्यः-एकेन्द्रियमार्गणावे विकलेन्द्रियमार्गणावे धावरमा र्गणाये असंज्ञीमार्गणाये च्यान नयी. स्वेमाटे जे एटकी मार्ग णाये मन नयी. मनविना च्यान थाय नहीं. च्यान ४ प्रकारना छे, आर्त्तस्यान १ रीदस्यान २ धर्मस्यान ३ शुक्रस्यान ४ ए ४ ध्यान छे. तेमव्ये आर्त्तध्यानना पाया ४ इप्रवियोग १ अ निष्टसंयोग १ रोगर्चिता १ निदान १ ए ४ रोट्रघ्यानना पापा छै ४ द्वास्यानंद १ मृपानंद २ चोर्यानंद ३ परिग्रहरक्षणानंद ४ धर्मध्यानना पाया ४ आज्ञाविचय १ अपायविचय २ विपास विचय ३ संस्थानविचय ४ शुक्रुध्यानना पाया ४ पृथास्वविः तर्कसप्रवीचार १ एकच्चवितकं अमविचार २ ग्रुभिक्रिया मितिः पाति ३ पृष्टत्रक्रिया निश्चित ४ सर्व १६ मेद थया, मनुष्याति ? यसकाय ? पंचेन्द्री ? खायिकसमिति ४ ए घार मार्गणारे ध्यानना १६ मेद छे. योग ३ शुद्धकेश्या तथा ॥ १३४ ॥

आहारेचरमस्स, सुकस्सविणाकसायवेषसु । उवसमितिसुकहीणा, तिनाणदंसेसमणभवे॥१३५॥

टीका-आदारकमार्गणायां चरमगुद्धंन्यूपातिक्रपटश्णं वि

नापंचर्राच्यानमेदाः प्राप्यते । अस्यायोगिकानेप्राप्यमाणत्वात् अयोगिन्तंतुआसु मार्गणासुनास्ति तथा कषायमार्गणासु चतस्य-वेदिकिमार्गणासु उपशमसम्यग्मार्गणासु, तिसुक्रतीणा, इतित्रपः राज्ञापकत्ववितर्कोऽपविचार १ वृक्ष्माक्रेपारपुपरत २ उच्छित-

यक्षीपंकत्वातं अप्रमानवार र व्हिमानवारपुरतः २ जंड्छन् क्रियपुद्धवृत्ति ३ किरणहरूपानां श्रीवमोद्द्यारपमाणतात् वैनेतासुनभवति, तिनावरं सेसमयभये सत्यादिज्ञानपिके घह्यादि-दर्शनिकेतस्यपति सम्मास्त्रमां सञ्जिनोभये भयमागणायां अप्रे-तनगापानुत्यमानपेशः वाष्याः ॥ १३५ ॥

ट्यापै:--आहारकमागैणाये ग्रञ्ज्याननी चरम छेह्नडो पायो नवी. ते ग्रञ्जनी चीचो पायो अयोगी ग्रज्याणे छे तेस हार्यान कपायमागिणाये उद्याससमितनागिणाये येत तीन वे स्तान आर्पेता ४ हत्ता ४ धर्मना ४ ग्रञ्जनो १ पूर्व १३ नेद छे. तीन ग्रञ्ज ते झीणमोह्न ग्रज्याचे पर्धा थाये तेमाटे सर्वा

तीन ज्ञान ३ ती । दर्शनसंज्ञी एवं ७ भव्य मार्गणाने विषे छे. ॥ १३५ ॥ चरमदुसुफविद्वीणा, अणहारदुकेनलेसुदोचरिमा ।

पणळेसवयगेमु, असुकपरिणामभेषणं ॥ १३६ ॥ टाका--एनासुमांक्यमुत्तीक्योदपर्यनं प्रकाशनक्रमाह्याच्या-देशानानमेदाः भवेति पर्यादीयप्रवेदस्यादिकस्यपतिक्रपीतास्या-

हीनामवंति । जनाहारकपार्यणायां विवद्वगतीतिज्ञानांच्यानाभा-यात्, अपोरित्यानाहारहम्याप्यंनीज्ञीत्रापयेते, तपारेकरदि-केऽविचारीज्ञीहाक्रमेदीप्राप्येते तथा प्यक्षभ्ययापुकेदयाप्त तथा ह्योपदानीमाम्ययदीनेज्युक, राज्ञज्ञानयित्यादास्यनेद्वाभवंति । अमनतपर्यन्त्रपूर्वाण्यानकानांदरभावान् । राज्ञस्यभावंतिकारा प्राप्यमाणत्वात् नावसर्वेषध्यानभेदाः येउत्ताः तेस्वपरिणामभेदेन भवंति । अत्यंतविद्यद्वीविद्यद्वाः अत्यंतसंक्षेत्रोसंद्विष्टाः सर्वेजी-वानांप्रायोध्यानकाळ्खाल्पः स्मृतिर्चिताभावनाकालस्तुपद्वतस्ति ॥ ॥ १३६ ॥ टबार्थः — छेद्वला छक्कष्यानना २ पापाविना चउदे पापा छै. ए अत्ये २ पापा ते अयोगी गुणटाणे छै. तेमाटे ओछा

छै. ए अंत्ये २ पाया ते अयोगी ग्रुणटाणे छै.तेमार्ट ऑछा गण्या छे. अनाहारकमार्गणाये केवल २ ने विये ग्रुक्तध्यानना छेहुला २ पाया छे. पांच लेवयाने क्षयोपदामसमिकतने विये शुक्कच्यान विना ३ ध्यानना १२ पाया छे. जे कारणे परिः णामने भेदे आटमा ग्रुणटाणा पर्छा ग्रुक्तध्यान होवे ए मार्गणा

ण ग्रणटाणा सीम छे. ॥ १३६ ॥ सुदुमेपढमंसुकं, हरकाएसुकचउरपरिहारे । अहतिगधम्मचउगं, इगसुकयुअंदुसामईए ॥१३७॥

टीका—सृहभेपवर्गमुक्कं हृत्यादि ॥ स्वव्यंतपावेचारिवेतः
पर्मआर्च एकंप्रपक्तविवर्ततस्य वीचारुक्षणंप्रकृत्वा वार्वक्रपे
हृत्कावेपयारूपातचारिवेतुक्कच अध्यक्षणात्म्य पर्वातो मेदाः भवेति
तत्र उपरातिमोवेष्ट्रपक्तवे श्लीणमोहेपुरुत्यसमोगेस्वस्यक्रियार्वक्रप्यात्मिक्यार्वक्रप्यात्मिक्यार्वक्रप्यात्मिक्यार्वक्रप्यात्मिक्यार्वक्षणं परिहारिवर्द्यक्षेत्रार्वेति

अपोषिकेनिक्षणस्यानेक्युपातांक्रपाळक्षणं परिवृत्तिन्युत्तीआर्वेन् निकं निदानात्तरिहन्युनीमांभवति । आचार्यादिङ्गियोगादीरोगः चिनादिकारणेचआतंत्रपत्तंभवान्,स्वाध्यापादीनुवर्यध्यानशतुरपद्म सञ्जातन् वमत्तावमसगुणस्थानप्रायोग्यत्वान् । स्वापदेव्यति ताः मापिक्छेदीनस्थापनीयव्यत्तोन्यादिवज्ञवेष्यक्षप्रकृत्यानंतृव्यत्त-पिनक्ष्यत्यानेत्रेन्यस्यनात्रम्यनेआर्ताक्षयम्यस्यस्यक्षास्यान्। प्रमतेवर्षस्यानयनुष्ट्यसद्भावान् । अपूर्वाद्रनिवृत्तीप्रथमंनुक्रंचारित्र-द्वरेषमतादिअनिवृत्तिवर्यतेगुणस्यानसद्भावात् ॥ १३७ ॥

ट्यार्थ:—यूश्मंतपायचारिने पहिटो शुक्रवाननी पायो छ. पपारपातचारितमध्ये शुक्रवानना ४ पाया छे. परिद्वार विश्रियस्ये आर्त्तराताना तीन भेद धर्मव्यानमा ४ भेद छे. सामायिक छेदोपस्यायनीय विषे आर्त्तर्यालना तीन भेद धर्मना ४ भेद शुक्रनी १ भेद पहिलो पू भेद छे. ॥ १३७ ॥

सुदुसुकंमणनाणे, सेसेसुअहरुदद्वाणाइ । दंडगतेरसदेवे. नवतिरियेडगेगनरनिरए ॥ १३८ ॥

टवार्थः---मनःपर्यवद्यातमस्ये आर्चना ३ नेद धर्मना ४ गुक्रना २ एटहा भेद छे । शेषमार्गणाये आर्त्तप्यानना स्दना - ४ भेद पांमीए, ए मार्गणाए घ्यानना भेद कह्या, हवे २४ व बासठ मार्गणाये कहे छे । तेर दंडक देवतानी गतिमध्ये छे, ति गतिमध्ये नव दंडक छे । नारकीने एक दंडक छे, मनुध्यने दं एक दंडक छे ॥ १३८ ॥

पणप्रिवियविगले, थावरपणगेनियंचमणयोगे ।

पंचेंदिसुतिगनाणे, विभंगेओहिदंसेय ॥ १३९ ॥ टीका—पणएगिदियविगछे इत्यादि॥एकेन्द्रियमार्गणायांपण ति पंच पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतिलक्षणाः पंचदंडकाः भवति, विक

लेखकाः स्वनामकादंडकाभवंति । पृथिव्यादिषुपंचमुखनामका प्वदंडकाः, तथामनोयोगेपंचेदियमार्गणायांज्ञानिकेमत्यादिकेवि

भंगेअवधिदर्शनेचशब्दः समुचयार्थः ॥ १३९॥

टचार्थः—एकेंद्रियमार्गणाये पांच दंडक छे। पृथिवीअप्रे

- जवाउवनस्पति एवं ५ विकलने भिषे पोताना दंडक वेंद्रीने वेंद्री तेंदीने तेंदी चीरिंदीयने चीरिंदीनो दंडक छे, घावर पांचमले थावरना दंडक पोताना जाणवा । पृथिवीकायमध्ये पृथियानी दंडक, अप्कायमध्ये अपकायनी दंडक, तेउकायमध्ये तेउनी दंडक

- याउकायमे वाउनो दंडक, वनस्पतिकायमे वनस्पतिनो दंदक छै। . मनोयोग वचनयोग १ पांचेंद्रिय मार्गणाये १ मितज्ञान १ धृतः ज्ञान २ अवधिज्ञान ३ तथा विभंगज्ञान नया अवधिरर्शनने

विषे ॥ १३९॥

संम्मतिगेमीसंमि, संत्रिसुसोळसंयमेपणगे । मणनाणकेवलदुगे, एगंनरदंडगंहोड ॥ १४० ॥

टीका-सम्बन्त्वितिके उपशमञ्जयोपशमञ्जाविकेमिश्रेसंज्ञि-

एकंमनुष्यगतिस्झणंदंडकंभवति, वचनयोगेविकसविकसंशिपोडश-

ष्याः परेभवंति संयमपंचकेमनःपर्यवज्ञानेकेवटज्ञानेकेवटदर्शने

दशदंडकाः भवंति ॥ १४१ ॥

मार्गणापांसो ट्वि पोडशदंडकानारकैकदेवमत्यपाखयोदशातियग्मनु-

यक्तापकोनविशतिदंडकाभवंति ॥ १४०॥

टवार्पः--उपराम १ क्षयोपशम २ क्षायिक १ मिश्रद्वष्टि ते संज्ञीमार्गणाष्ट्र सोल दंडक छे, देवताना १३ नारकीनी १ तिर्पचपंचेंद्रीय १ ए सोठ छे, पांच संयममनःपर्यवज्ञान १ केव-स्ज्ञान १ केवस्टर्शन १ एउसी मार्गणाए एक मनुष्यनी दंहक होवे. ए मतुष्य विना न पामीये ॥ १४० ॥ इग्रणिसतसेपुरिसे, धीवेएपनरसंसंदिडकारा । वेसेतिरिमणुअदुगं, चरकुसुइगिवितिविणासत्तर १४१॥ टीका--इग्रणिसतसेहत्यादि वेष्वप्कोनविंशविदंडकाः मस-कापेपुरिसेपुरुपवेदेतपार्खावेदेनारकवर्जाः पंचदशसंशिदंडकाः सं-हिनपंसकवेदेनारकरयावरविक्रस्तियमनुष्यस्थाएकादशदंहकाभ-वंति । देशविरतिमार्गगानां तिर्यगर्गतिमन्त्रपातिस्त्रणोद्वीदेडकीच-धर्दर्शनेएकेंद्रियाःपंच, बिति द्वीद्रियाः शीन्द्रपादंशकसप्तकंत्रिनासस्य

टबार्थः---- वसकायमार्गणायेविकल ३ देवना १३ नारकी १ तिरियेषपंचेदीय १ मनुष्यपंचेदीय १९ दंडक छे, पुरुषरेहे स्वीरेहे देवताना १३ तिर्वेश्वपंचेंद्रीय १ मनुष्यपंचेंद्रीय १ ए १५ दंडक छे । नपुंसकनेदमध्ये नारकी १ थानर ५ विकत ३ निर्पयन 843

चेंत्रीय मंद्रप्यपंचेंद्रीय ए ११ दंडक छे। देशियतिमध्ये तिर्पय १ मट्टप्य १ ए वे दंडक छे। च्छादर्शनमध्ये एकेंद्रीना ५ दंडक छे, चेंद्रीनो १ तेंद्रीनो १ ए सात विना शेष १७ दंडक पामीये छीप्।। १४१।।

वावीसंकिण्हतिगे, अहारस तेउएअ पउमदुगे। तिगदसगंचअसझी, सासाणेडुंतिवावीस ॥ १४२॥

टीका—नार्वासंकिण्हातेगे इत्यादि कृष्णनीलकापीतल्ह्यणासुकेदपासुज्योतिष्कविमानिकवजीः द्वाविद्यतिदंडकाः वेजोवेदपायांनारकतेजस्कायवासुकायविकलविकवजीअस्त्रवादंडकामवंति॥ पठमद्रुगेपक्रस्कृत्वस्वाद्वयेतियंग्एंचेदियमकुष्यपंदिद्यगर्भजवेमानिकाः
क्रयोपंद्रश्काभवंति॥ वसगंच असना, असंज्ञिमार्गणायांस्थावरिकलतिर्पगमस्यव्यक्तप्राव्यक्ति। वसगंच असना, असंज्ञिमार्गणायांस्थावरिकलतिर्पगमस्यव्यक्तप्रदेशणाः व्हादंडकाः भवन्ति, तथासास्वादनमार्गणायां
वेजोवासुकायरिहताद्वाविद्यतिदंडकाः लस्यवे॥ १४८॥

ट्यार्थ:—कुण्लंड्या १ नीट्डंस्या २ कापोत्हेस्या १ तिनने विषे ज्योतिया १ नीट्डंस्या २ कापोत्हेस्या ६ ए तीनने विषे ज्योतिया १ निमलंडिना वासीस दंडक छै. तेजोलेस्याने विषे नास्का १ निमलंडिन वे ने नंडक छै. एक वैमानिकनो १ एक विर्यंचनो १ एक पंचेन्द्रि मंडक्याने १ एवं २ छे, त्या असंजिमार्गणाये १० दंडक छै. यावर ५ निकल ३ तियंच्डासंत्री १ महुष्यजसंत्री १ एवं २ छे, त्या असंजिमार्गणाये १० तंडक छै. यावर ५ निकल ३ तियंच्डासंत्री १ महुष्यजसंत्री १ एवं २० दंडक छै. तेजकाय वाजकाय नर्यों ॥ १४२ ॥

सेसासुमग्गणासु, चउनिसंदंडगानिरयविगले । थावरिइगिनपुंसो, देवाधीपुरिसवेआय ॥१४३॥

टीका--सेसायुक्तमाणास इत्यादि ॥ शेषासुमार्गणास काय-योगकपापपतुष्कमानद्वपाविरति अच्छर्दर्शनमध्याऽभव्यविष्या-रवाद्वार्कानाऽद्वारकटश्रणास प्यतिकातिदेवकाःभवति । निरायि-ग्रकेति, नरकातिविकटिषकरणासर्पचकपुकेन्द्रियटक्षणासुपुकः न्तुसक्वेदटक्षणोवेदः भवति । देवगतीस्तिवेदपुक्षवेदीमाप्येते ॥ ॥ १४३॥

टवार्थ:—दोषमार्गणाये कापयोगे कराय ४ अझान ३ अ-विराति पद्धदर्शन १ अय्य १ अभाग १ विष्यात १ आहारी १ अनाहारी १ एटळी मार्गणाये २४ दंडक छै. हेवे बाहर मार्गणाये कहे छै. वेद तीन बताये छै, नारकीने भागणाये विकल ३ पावर ५ एकेन्द्रिय १ एटळाने नपुराक वेद छै. तथा देवगतिमध्ये कंतिय एक्पवेद ए में वेद पामीये छैं।१४४३।

सुहमअहरकायदुकेवलि, वेअरहीआनपुंसगाअमणा। परिहारगादुवेया, सेस तिवेया मुणेयदा ॥ १४४ ॥

इत्युक्तंमार्गणासुबेदद्वारं ॥ १४४ ॥ सांप्रतंमार्गणासुवृत्रवंपिद्वारं दर्शयद्याह ॥

टबार्यः--स्थ्रमसंपराय १ ययाख्यातचारित्र १ केवटज्ञान फेचल्दर्शन १ पुटली मागेगाये कोई वेद नया. कर्मग्रंप-मध्ये केवटज्ञानोपयोगे वेद ३ ने कह्यों छे, ते आकाररूपवेद गवेष्या छे, परंविकाररूप नया गवेष्यो, असंज्ञीने एक नपुंसक्तेर छे. परिहारविद्यद्विने पुरुष तथा नपुंसकवेद छे. शेप जे मार्गणा

रही ते सर्वने तीन वेद लाने छे.॥ १४४॥ वलचउतेअकम्मा, गुरुलहुनिमिणोवघायभयकुच्छा। मिच्छकसायावरणा, विग्घाधुववंधिसगचत्ता॥१४५।

. टीका—वत्रचउतेअकम्मा इत्यादि ।। गाथाः प्राग्व्यास्या-ताः वर्णादीनां ध्रुवंपिक्वंस्वस्वजातिषु एकस्यावद्यवंथात् । नङ् चैनंस्वजात्यन्यतम्बंचेत्रुवनंधित्वंतर्हिसातासातयोरन्यतमस्यावस्यनं धात्मुवनेषित्वमाप्नोति, तत्राह सातासातपोहित मेदोवणादीनांतुः

सपुवहेतुः तेनव्रुवनिष्टवमितिएवंगत्यादिष्वपिहेतुभेदवंयात् अहः वंताशेया ॥ १४५ ॥ टबार्यः-हवेद्युववंची कहे छे. वर्ण ४ तेजस ? कार्मण

१ अगुरुल्यु १ निर्माण नामकर्म १ उपवात १ भय १ हुगंहा १ मिध्यात्व १ कथाय १६ आवरण १४ ज्ञानावरणी ५ दर्श-नांवरणी ९ एवं १४ आवरणअंतराय ५ ए ध्रववंचीनी सड-ताळीस प्रकृति जाणवीः ॥ १४५ ॥ अणमिच्छयोणतिग, विणुनाणतिगओहिदंससम्मतिगे

मीसेदेसविरए, अवीअकसायायध्वववंधी ॥ १४६॥ १५६

विचारसारभकरणः

टीका—तवमार्गणासुःगनंतातुःचिचतुःम्पनिध्यात्वमीहनीय ्रम् प्राचीद्वीनकटसुणाष्ट्रसम्हतित्रज्ञाः सेपापुरोनयनारितम् प्रसिद्ध न्यः सरपादिज्ञानभिकानपिररानजपदामद्वायोगदामद्वापि कटदागसः म्प्रस्वित्किमिश्चेत्रकाति ॥ नाषुरम् संस्काद्वितीयकारागरिताः पंप्र-निंशन्देशिवरतांवंचयान्ति ॥ १४६ ॥

ट्यार्थः—अनंतात्त्रवंषि ४ मिट्यात्व १ थीणडी ३ ए आठ विना ज्ञान ३ अगविदर्शन १ समकिन नीनने विरे एटकी मार्गणाचे इग्रणचाळीत अवश्यी. मिथरहिनेतिचे ३९ पाळीत मुनवंबी हे, देशक्रिविनेविके ए ३९ पार्टासमध्ये कपाय पीजानी चोकही कार्वाचे तेवारे पांचीस प्रवचनी छे. ॥१४६॥

तीअकसायायेणाते, मणपञ्चयनाणचरणतिगसुहुमे। चउदससासापेते, मिच्छिनिणाङचन्तुप्रयंपी॥१४७॥

चतुष्ठचरहिनापु रुनिशन्, मनः प्यत्रज्ञानेसामापि रूपोदीपरभावनीपः दृत्यादि॥ ताएरम् रोक्तास्तृतीयक्ष्यापः परिवारिशाजिलसमेपारियविकेवानि । हेत्वसानाएए वैवर् । नपायुह्नमे बुश्मतंपरायचारिनेज्ञानाराणीयपंचजरशेनाररनीय चतुः पर्वे अंतरायपंचत्रं एतं शतुर्वसम्बन्धित्यः वंधेअंति । तथा मान बादने, तेइति, तामुग्रंधिन्यः निष्याःगीनापर्यन्यास्यन्तः वेपाच्यते मिच्यात्वस्यमिच्यात्वेषु । देशः ॥

रवार्यः-चे पानास माहिया तीजी धोनडी दिना इक पुनवंधी वार्षे । मनःपर्वरतानी सामानिकः छेरीनस्थापनीय रिहमतियुद्धिने विरे वृह पुरवंची महतने छे। स्थनसंस्

राय ग्रुपटाणे ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणो ४ अंतराय ५ ए भुवर्षची बांचे । सास्वादनमध्ये मिष्पात्व विना छेताजीस बंची बांचे छे ॥ १४७ ॥

केवलदुगिहरकाए, अवंधसेसामुसवधुववंधो । धुववंधहीणवंधोह, संखाअधुववंधीणे ॥ १४८ ॥

थी**का -- केपलपुबिह** स्लाप् इत्यादि ॥ तथाके ख्यान हे र दरीनयपारपात्वशुणासुतिसु पुत्र नंधिम इतीनां सरीसां अपेपः न भौभवतिशोषासुगतिइंदियकाययोगी द ह्यापाऽज्ञाननपाऽभितिए रथप्रदेशैनकेत्रपायदक्रभव्याऽभन्यभिष्यात्वर्गदेवसंदि आदारका ना द्वारक अध्यागु चतु अश्वारिक्षत् मार्ग गार्यागु भारत गार्यान् गार्यान् मार् क्षेत्रपंति बृत्वंधिदीनाः शेवामार्गणावेनस्यापि ग्रेक्ताः पदन्यः अ वंशियः प्रतिमार्गणासुरासःयाग्ना ग्रेमाना स्मनीचतुःपंचाराषु भूगवंशियः, तिर्यमतीसप्तनिः, मनुष्यविस्ततिः, देरे ५७ सम् पंचारतः, प्रदेवियेनि कांतियोदियापिः, वनेदियोदिसम्बतिः, पृष्टिभ्या नस्यतिश्रीहर्याहः, वैजीयायुहायमञ्जनभावान् । त्रमेषोगप्रवेदेश्य क्यापनत्रयोजसङ्गतिः । यत्यादिज्ञान वेच अस्य स्थाने क्यासिशः क्रवरताने केवरदर्शनेष्ट्रशामनः वर्षातान मामाव १४३ होपरपाली परक्षेत्रार्थसम्ब्रीवर्द्धसम्बर्धः । जञ्जन ।यनिष्यानं स्वातिः । वन्त स्पत्तेत्रसः, प्रवाष्यतेषु शहरातं तनी हा विश्व । नविनीप्रशासः क्षः । यहान्यवर्दधीनिविष्णार्थनः हणाना व्याचे रेष्ट्रयमार्थनः वे बीन केरपरपायनुवर्गकः, ५६ केरपायाम् १५५५ । एतुकेरपायां करपायाम क्वेदिक्टींट । अक्वेक्टीन, जावनेवसीरात । साम्र भिष्यात्वेसर्मातः, संज्ञिभागणापात्रिसर्मातः । असञ्जिभागणापात्रस्मतिः । आहारकेरिसस्मतिः अनाहारके ६५ पंचपष्टिः, अञ्चयद् थिन्यः भवेति ॥ १४८ ॥

ट्यापै:—केवल्जान १ केवल्दर्शन २ ने विषे प्रधारणातपारिवने विषे प्रवर्धी प्रकृतिनंधीय नहीं शेष से मार्गणा
पोबलातत प्रवर्धी प्रकृतिनंधीय नहीं शेष से मार्गणा
पोबलातत प्रवर्धी प्रकृतिनंधीय के । नात्कीने ५४ तिरेप ते के अपूर्वर्धी प्रकृतिनो थ्य है। नात्कीने ५४ तिपंपने ५० मन्त्यने ५३ देवगितने ५० एक्ट्रीविकल्ड्रीने ६२
वंद्याने ५३ प्रवर्धाअप्वेडवनस्पातिने ६२ वेडवान्ने ५८ अस्त्राम ३ वे ६० मन्त्ययेप्रचा ६३ इ कपाय ४ ने ५३ ज्ञान ३ ने ५० मन्त्ययेप्रचा ६३ श्रद्ध ५५ अध्य ५३ अभ्य ५० उपदास ६८ सायिक
४० स्योपसाने ४० भव्य ५३ अभ्य ५० उपदास ६८ सायिक
४० स्योपसाने ४० सिक्ष ३५ सास्वारने ५५ मिष्यात्वे ५०
संज्ञी ५३ असंज्ञी ५० आहारीने ५३ अनावारीने ६५ अप्रुववंद्यीनो वेष हो। १४८ ॥

निमिणिधरअधिरअग्रुरुअ, सुहअसुहतेअकम्मचउवन्ना। नाणंतरायदंसण, मिच्छंभुवउदयसगवीसा ॥१४९॥

टीका---निभिणविर्जविर इत्यादि गाथा नाम्याख्याताअय-प्रवोद्यिनीः मृकृतीः मार्गणासुविभजयन्नाह ॥ १४९ ॥

टवार्थः — यूत्रोदया २७ छे, निर्माण १ थिर १ अथिर १ अग्रुरुट्य १ ग्रम १ अग्रुम १ तेत्रस १ कर्मण १ वर्णा-दिक ४ ए १२ नामकर्मनी ज्ञानवरणी ५ अंतराय ५ दर्शना-४०६ वरणी ४ मिथ्यात्व १ ए सत्तात्रीस वृत्रउद्धी जाणवी मङ्कि स्वरूप ए रीते छे ॥ १४९ ॥

नामधुयोदयकेवलि, सम्मत्तपरासुमग्गणासुच । मिच्छविणासेसासु, सगवीसंहंनिधुवउदया ॥१५०॥

टीका—नामध्योद्रयकेविछ इत्यादि । केविछिति सीमोमीमसेनइतित्यापान् केवछज्ञान केवछदर्शनमार्गणाद्रयेनामकर्मप्रत्याध्रुवोद्रिवत्योद्धादशमञ्ज्तयः प्राप्यते, तथा सम्मत्तप्राध्य सम्पक्त्यसिद्धास्य मार्गणासुमत्यादिज्ञानचनुध्येअवधिदशनेसंपमप्रदेके
उपशामादिसम्यत्वययेष्यशन्दान्सास्यादनेमिश्रेमिण्यात्योद्रयिनाप्रदविद्यातिश्रुवोद्याः अवंति, जेवाम्युमार्गणासुमप्रविज्ञानिः ध्रुवोद्याः प्राएयते, भावनास्यास्यानाधिकारवनज्ञेषा ।। १५० ।। अनुवोद्याप्रकृतिदर्शनार्यमाह् ।।

ठ्यारी: केवळ्डान १ केवळ्डांनमस्य नामकर्मनी १२ घुरोदपी उदप छे. समकितसिटन जे मार्गणाज्ञान ४ अविष-दर्शनसमकित तीन इत्यादिक मार्गणाये मिध्यात्व विना २६ धुवउदपी उदय छे, जेषमार्गणाये सत्तावीत वृत्रोदपी छे.।।१४०

धुवउदयहीणउदओह, सेसा(संखा)अधुवोदयाणनेयबा धुवसंताकेवलदृगि, चउसचिस्सिससत्राओ ॥१५१॥

र्टाका-—वुवउदयहीणउदको इत्यादि। उदयमार्गणागुउदयस्यय-ओघः सनुवोदयहीनः शेषाउदयोचसंख्यासाअगुवोदयसंख्यातात्या, नरक्राती एकोनाक्षीतिः उदयसंख्या तनसप्तविशतिनुवोदयाः शेषा- द्विपंचारात्अञ्चनेद्रपाज्ञातःयाः एवंसर्वेवभाग्यं, विचारसारपंनर्कः रत्नेपदांततः झातःया इति ॥ अयनुस्तसार्पेक्षरिक्षरात्मानासा-चसस् (अष्ट) १ षंचाराद्दिक्षरान्महत्त्यपेक्षयग्यतीसस्तरभेक्षयाकेवट-ज्ञान केवहदर्शनमार्थायांचातुस्त्तातीः भुवसत्तात्म्यवेदेशासुपष्टि-मार्गाणसुस्तावीक्षयिव्यसताः त्रम्येवेभावनायस्त्रतःत्रीया ॥ १९१ ॥ अञ्चनसार्वाद्यीपमाष्ट्र ॥

ट्यापै:—मृत्रत्रस्यों क्षेत्र कातां उद्दर्गतों ले ओव छे ते मन्ये मृत्रोदधी काउनां रही जे महति तं अमृत्रोदधी जामकी, तरातीः १९ महति उदय छे, तेमच्ये २७ भ्रुपोदधी ५२ अ-मृत्रोदधी ईमज सर्व यंत्रकर्या जाणज्यो, हवे मृत्र काल कहे छे. केदक्तात केदक्तातं विद्यारे पृत्र साथ छे, होए साठ मार्गणाये सर्व पुकर्तातीसनी भ्रुव सत्ता छे. ॥ १९१ ॥

अधुवेतिरियाअजिणा, देवनिरयाङ्गाउविणुविगला। धाषरङ्गअजिणाओ, दुगअतिगाऊतेउदुगे॥१५२॥

तेजस्कावि क्रीरपे आयाख्यकानंतरंमसुण्यगतिमनुष्यानुण्यी । देरगरि वारासीं नरक्षमिनस्कारापी विक्रपशतकाहारक्षमण्डलपाना उद्रविजिननामसत्तानुनामरोजेनियुवद्वाह्युवकारः ॥१५२।

रवार्यः--अञ्चयसत्तामन्ये तिर्यचगतिमन्ये जिननामनी स नया शेष २७ नी सत्ता छे. देवगतिमध्ये नरक्ती आऊर सत्तामध्ये नयाः नरक्तमतिमध्ये देवायु नयाः, विकल ३ यावर एकेन्द्रियमार्गणाये जिननाम तथा देवतानारकीनी आजर काडीये तेत्रारे २५ अव्यवसत्ता छे अने तेउकाय १ वाउकाय ने मतुष्यना आऊखा विना २४ सता छे. ॥ १५२ ॥

नरअणुपुद्धि (येउदि) विणावा, केवलद्गिमीससम्म निरयदुगं

तिगआउहीणसंता, सांसणमीसेअअजिणाय ॥१५३

टीका नरअणुपींब (नखेउबि) विणावा इत्यादि ॥ अवनरोमद्रष्यः वैक्रियाहारकदेवनरकप्रायोग्यप्रकृतिविनावेजस्काय-वायुकाय छञ्चणमार्गणायां भवंति वाड्तिपदेनसर्वकर्मप्रकृत्यादितोज्ञैयं शास्त्रसंक्षेपार्थनोक्तं । केवलद्विकंमिथसम्यक्तवमोहनत्कद्विकंआयु-क्षिकदेवायुः नरकायुः तिर्पगायुः इतिमक्रातिसप्तकविनाएकविंशातिः अवुवसत्ताकालम्पंते ॥ सास्वादनेमिश्रेजिननामरहिताः सप्तर्विशतिः अव्यसत्ताकाः स्टम्पेते, विजिणुवायतङ्गङ्ग्यादिवचनात् । एतङ्गाः थप्राप्तिः जिननामसत्तारहिनानां अथनोद्धितजिनसत्तावतां भनति

टबार्थः—केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ ने विषे मिश्रमी-हुनीय १ समकितमोहनीय नरकतीनआऊषादेवायु १ नरकायु-

तिज्ञ २१ अञ्चयसता छे। किहां एक नरावप्रवितिना २० नी सवा छे। सरवादन तथा निश्च ष् वे मध्ये जिननाम सत्ता नयी शेष २७ अञ्चयसता छे, शेषमार्गणाए २८ अञ्चयसता छे ॥ १५३॥

सेसासुसवसंता, चरणापणमणुअमग्गणाठाणे । ७ पंचविंदितिनरेसु, देसोअजओअसवस्य ॥ १५४ ॥

टीका—सेसस्समबसंतद्दत्यादि ॥ शेषासुमागणासुभद्रवसत्ताः सर्वोः प्राप्तः विश्वस्त अधुवसत्ताद्वारं सांगतंचारिषद्वारं सांगतंचारिषद्वारं सांगतंचारिषद्वारं सांगतंचारिषद्वारं सांगतास्त्रः सांगणासुद्रशेषमा ॥ भव्यस्त्रे सांगणासुद्रशेषमा ॥ भव्यस्त्रे सांगणासुद्रशेषमा । स्रोप्तं सांगणासुद्रशेषमा च्याच्यस्त्रे स्वाप्तं स्वयस्त्रे स्वयस्त्रे

हवार्थः -- महापनी मार्गणापे ४ चारित्र हो, सामापित १ छेद्रोपस्पापनीय २ परिद्वायविद्यक्ति ३ सुरुमसंपराय ४ क्यारुपात-चारित्र ए पांच चारित्र महत्पमार्गणामच्चे पासीचे । वेदेहाति-एव तपा महत्पमच्चे देशविद्यते पासीचे । अविद्यतिसंपसस्वेमे पासीचे । इदां मार्गणापे संप्रपदंत्रक्ती चोड्केन्यो एइनो येद रिण संपर्कतीनो कृत छे ॥ १५४ ॥

 ⁽ पशन्तरं)
 सेसासुसबसंता, नरतसजोगनाणदंसेसुं ।
 सुक्रभविसत्तखायग, सन्नीहारसुसगचरणा ॥

लोभेअहक्खायविणा, तेसुडुमविणाकसायवेएसु लेसपणवेयगंम्मि, केवलदुगिसुद्धचरणंच ॥१५५

चरणेसुनायचरणं, देवाङ्अजयमग्गणेअजयं । तिरपसदेसविरङ्, साहक्लायंअणाहारे ॥ १५६ ॥

टीका—पूर्केद्वियेविकरुंद्वियदेवगतीनस्कातीस्थावस्पर्किषे ध्यात्वसास्वादनसिश्रदृक्षणेत्रिके अविस्तिमार्गणायां अज्ञानियके अभयमार्गणायां पूर्कअविस्तित्रक्षणं गप्यते । तियंगतीं सदेसितः देशिद्यतिपुक्तीद्धीभेदीमाप्यते । अविस्तिद्देशिवस्यतिसाहरूषा-पंतिपद्याव्यातसहितं इत्यनेनअविस्ति येपास्यातिष्यस्यातिस्य भेदद्वयं अनाहास्क्रमार्गणायां भवति । तत्राऽविस्तिविसहयातिष्य स्यातं केवतसमुद्रपाता दुपीनिकविद्युणा 5 यस्पायां भवति । इत्यक्तं वारिवद्धारमार्गणाम्, सामतंसर्वपातिद्वार्दद्ययनाह ॥१५६॥

सम्मत्तमग्गणासु, मीसेअणथीणमिच्छविणुपाई। संजर्इयमग्गणाय, सबधाईअचउपयडी ॥ १५७॥

डी का--सम्मत्तमभगगासु इत्यादि॥ सम्यक्त्वमुद्धपथापंश्रद्धाः

त्यासहिता याः मार्गणाः मत्यादिज्ञानित्यदेशविरतिअवधिदर्शनं उपश्चमञ्चमोपद्माभक्षात्रे सत्यादिज्ञानित्यदेशास्त्रिमोपद्माभक्षात्रे । अणितिअत्याद्मिष्टस्यानिद्धि । अणितिअत्याद्मिष्टस्यानिद्धि । अस्यादि । अद्यादि । अद्याद

ट्यापै:—हवे सर्वेघाती प्रकृतिने वंधमार्गणाये कहे छे । समित सिंद मार्गणा प्रतिज्ञानादिक तेमच्चे अनंतात्त्र्वंधि ४ याण्डां तीन रे निष्णान्वमोहनीय ए अगिता १२ सर्वेदा-निनो वंध छे, संपममाणा मनःपर्यायादिक तेहने विस्तर्य-माति प्यार प्रकृतिनो वंध छे । केवल्झानात्र्यणा १ केवल्झ-क्षेत्रात्र्यणी १ निक्रानिद्रा १ ए चार छे ॥ १५७॥

सैसासुसवघाईय, वीसंकेवल्रदुगेनदेसेवि । सम्मत्तमगगणासु, मीसेअदुवेयसासाले ॥ १५९ ॥

द्वीका---सेसासुसवजाईय इत्यादि ॥ शेषावुषार्गणासु सर्व-षातिन्यः विद्यातिमङ्क्यः वेषेभवंति । च्यान्द्रात सास्याद्वस्य-मिष्यात्वेष्ठनाषुत्रोत्तिवृत्तातिः सर्वेषातिन्योषेभवंति इत्युक्ताः सर्व-षातिन्यः। साम्वदेशचातिनीः दशैष्याह ॥ नदेसेनिङ्क्यादे अव-इसुरक्रमणिन्यायेनकेवञ्चद्विकेदैशचातिन्यः पंचाविज्ञातिमङ्कत्यः नद्व-त्ववेते तथा जदेशसाध्यात्मवेति । सम्यतम्यणासुसम्बरस्यदाद-तिवेते तथा जदेशसाध्यात्मव्यात्मव्यात्मस्यात्मस्य स्वाद्यात्मक्षस्य स्वाद्यात्म णायां अद्वेयतिनगुंसक्तेद्रस्त्रीवेद्विनाप्रयोविंदातिदेशवातिन्यः चेभवंति । नपुंसक्तेद्रस्यमिष्यात्वोद्रयेश्वयमानत्वात् स्वोदेरः मिश्यात्वसार्वादेनेपस्यमानत्वात् साक्षणद्विसारवादनमार्गणाः अवचारित्रयुक्तमार्गणाः अपिवेदद्रयेनः वृति ॥ १५८ ॥

व्यापै:—शेष मार्गणापे सर्ववाति २० वीस प्रकृति वे केप्रख्युगमध्ये सर्ववाति नयी इमुरक्रमणित्यापे अर्थं करते, सम्प पर्यमार्गणामतिकालादिकने विषे त्रिधदृष्टिने विषे लगुंसकरि क्षांतर विना २३ देशायानिनो चंच छे. ॥१५८ ॥

नपुद्दीणाकेवलदुगि, हरकादनस्थिसुहमेवारसगं। सेसासुर्वसघाई, सबाअघाईसेसाओ ॥ १५९॥

रतीविसामितः, पशुरचश्चरैशीनेपेचसम्रतिः, अवधिरशीनेचतुश्चरवा-रिशन, कृष्णादिलेदमानयेनिसप्ततिः, तेजोलेदयायांपद्पष्टिः, पद्म-तेदयायोत्रिपष्टिः, शुक्कवेदयायांपुकोनपष्टिः, भव्येसंज्ञिआहारकेपंच-सप्रतिः, अभव्येद्विसप्रतिरुपशमेद्विचत्यारिशतः । भयोपशमञ्जायिके-चतुश्रतारिशन् । मिश्रेएकोनचत्यारिशन्, सास्त्राद्रनेअपूर्वयाशतः । आहारहे(अनाहारके ?)समपष्टिः, अवानिनीप्रकृतिःवंचेभवति । इत्यक्तंमार्गणासुअचातिद्वारम् ॥ १५९ ॥ अवपुण्यप्रकृतिद्वारंमार्ग-णासदर्शपमाद ॥

टपार्थः--सास्वादनमध्ये नपुंसक्तवेद विना २४ भेद देश-धाती छै. केवल्झान १ केवल्दर्शन २ यथाल्यानचारित्रे देश-धार्ता नदी, सुरुगतंपगयचारिचे १२ देशवाती छे. शेपमार्गणांचे देशयाती २५ वंथ छे. सर्ववाति तथा देशयाती कही ते वंध प्रकृतिनी संख्यामांया कावनां ख्वा वे अवातीनी संख्या छे ते यंत्रयी जोई केज्यो. ॥ १५९ ॥

नरपंचेंदितसेसु, जोएवेएकसायचरकुदुगे । तेउभवेसंझी. आहारेसवपुत्रस्त ॥ १६० ॥

दीका-नरपंचेंदि इत्यादि गाथा । मनुष्यगतीपंचेन्द्रियमार्ग-णायां त्रसक्तोयपोगनिकेवेदनयेकपायश्रत्रष्ट्रये तथा च्छारचद्रहण-दर्शनद्वयेवेजोवेदयायांभव्ये तथा संज्ञिमार्गणायां आहारकमार्ग-णायांप्रतस्सद्दति प्रण्यस्यसंभवद्दति द्वाचत्वारिशन्मकृतयः वंधेमा-ध्यन्ते, प्रकृतिसंख्याच साउद्यगोयमणुदुगे द्वरपादि गाथोक्तापूर्व-गणस्यानदातकेर्वाणेताएव ययावंयस्तयास्त्रमत्याउदयस्वामित्वाऽत-सारेण उद्देषेऽपिषुण्यत्रकृतिसेख्याज्ञात्व्या ॥ १६० ॥ 47

ट्यार--मनुष्पमति १ पंचित्र १ तसहाय १ मीर वेद ३ क्याय ४ घर्युर्धान १ अच्छुद्दर्शन १ वेजीवेदश भव्यमार्गणार्थ संज्ञीमार्गगाये आहारक्रमार्गणाये पुरवना सर्व १ छे. ॥ १६० ॥

छ ॥ १६० ॥ निरिआउरिणापउमे, हारदुगहीणकिण्हतिगभागे भनिणाहारानिरिए, असाणतिगअभामिष्णेसु॥रै

રી 81— હિલ્લામાં જેવા ફરવાલિ ૧ વજ્ઞ કેરળવાલિ વૈનાવૃતિ યુક્તિ લાઇકાન કોર્નિ ૧ નવા કુલ્લાને કહાવેને હોઇને મળે વર્ષિ અફાઇકાર્ડિકો અન્યાતારેકન પ્રસ્તુ વૃત્યને છું ને કોર્નિ પ્ મુનાયા કાર મળે હોવુ કેરાકુના મન નહા હતાને સેન્દ્રલા નિર્મિકી જિલ્લાની નકાના પ્રકારના મામળાવાના કુર્યુલન વાર્તનો કેલ્લ

્યું લ્લામાં નશામાં કરે નામ જાણાયાથી એક શુંધાના વાર માત્ર છે. તુંધાર - દિનાનામ કર્મ નાગાર કાર્ય કરેકેનાણ કોન ન્હ મારશ મુખ્યપ કે શક્કે કે માર્ચ (B-3-3-)

्वंके - प्रक्रम्यान १३१ विवेचायु हेना प्रेर पृष्यस्थ इ. तातुलक है हेना प्रकाप्यस्थान १३ इ. स्पानी इ स्वोक्टरपारे नास्त्रानवर्षयान १३१ इ.स. पृष्या वेर है प्रकार राजनान है नाहरू है वर श्रीय हैना हैने हैं हैने हिन्दर है इ.स. तान्य है नाय का विद्यार है है है प्रकारी हम हैना वेर हैं है हैने

जनत्त्रम् स्टब्स् नाजनित्र तत्ते समयुक्तास् । स्टब्स्कर्यकरम्बद्धस्य किन्ते स्टब्स्करमस्यास्य सम्बद्धाः

स्वायनस्थितस्य विश्वति स्वाययस्य द्वारीयाः ॥१४५० - २ कः - व्यास्त्रक्षात्रः २०१५ व्यापः वर्षाः वर्षाः १५५८ (व भवंति, तथा ज्ञानविकेमतिश्रुनावषिटक्षणे नथा अवधिदर्शनेगुक्क-हेदयायांभाषिकतम्प्यपृदेशेनमितिसम्मेद्दानिक्रिश्चक्रतेनक्षापोपप्रासंस-प्रयपदर्शनंतप्रविषेगायुः योगद्धग्वतिजयोनदिकेनदीनापृद्योनप्रवा-रिहात्युन्यमेदाः चेवेटम्पेते, प्रवेषांनेदानांआद्यगुणस्थानवरेतर्द्व-धात् ॥ १९२ ॥

टवार्थः — असंझी तेषण है ९ ग्रण चार्डास पुण्यमङ्गित धांचे छ । ज्ञान निनने विषे अयधिरसंनगुद्धवेदयाने विषे क्षायिकः समित्रत कटेनां क्षायोपसम समित्रन ए तीनने विषे तिर्पयनो आजस्वी तथा उद्योग है आतप है ए तीन विना है शृयू-च्याळीसनी यंथ छे ॥ १६२ ॥

जाइच्डथायरतिगे, सुरतिगयेडविहारदुअजिणा । जिणजुअआयावविणा, निरपदेवेसआयाया॥१६३॥

र्टाका—जाङ्गपञ्चारतिमे हृश्यादि ॥ एउँदिवदीदिवधीदिव धातिदिवक्षरियामविक्यियम् उत्तरितिक्षणे मार्गणात्तर केरेक-मतिदेवाक्षर्यस्य प्रसिद्धान्त कर्यक्षरित्वक्षर्यं वित्यस्यारे यस्त्रियस्य स्यंभाद्यस्य स्विकंशहत्य स्वरित्यस्य स्वायोग्यंभावस्य वित्यस्य स्वायोग्यंभावस्य वित्यस्य स्वयस्य नाङ्ग्यनेनाभृष्ट्रस्थान्त्रस्य विद्यास्य प्रस्तिकं स्वयस्य स्वयस्

रवार्षः--जानि ४ एरेटी १ वेडी २ नेडी ३ घीरडी ४

तथा थावर तीन पृथ्वी ? अप २ वनस्पित ३ एड्ट्री माने णाये देविक देवगति ? देवालुप्ती ? देवायु ३ विक्य २ आहारक २ जिननाम विना ८ चीनीस पुण्यपकृतिनो वव छे। तथा नरकगित मागणाने विषे जिननाम मेटीय अने आत्र्य नाम काढीई एट्टें ए पिण ३४ पुण्यमकृति बाँचे, नार्ति देव-गते आत्र्य मेटीये ३५ प्रकृति पुण्यनी बाँचे छे, जे काल्ण देवता मरी पृथविकायमध्य जाय ते माटे आत्र्यनीच्य छे॥१६२॥

सुरनरतिगहारदुगं, विउविदुगउद्यजिणविणातींसं । गइतसेसुहमेदेसे, मिच्छतिगनीयगुणपयडी७ ॥१६४॥

टांका—सुरुत्तरतिगद्दागद्दगंद्दरयादि ॥ गइतसे, गतिवसेवेजीः वायुलक्षणेमार्गणाद्वयेदेवियकन्तरिकाऽद्वास्कद्विकोद्यगाँव जिनवार्यः विनाविवारयुण्यमक्वीनांवयोगव्यति । तथास्वस्यतंपरायचारिकेतयाः देशविरतिमार्गणायांसास्वादनेमिश्रमार्गणायांनिजयुणाः स्वस्युण-स्यतितम्बद्धस्मसंपर्शयोतस्यः मृकृतयः देशविरतोप्कित्रयस्यादने-अष्टविद्यात्विक्षेचतुष्ट्विद्याव्द्वितिस्वस्युणस्यानप्रत्ययाः प्रकृतयःवेने-भवन्ति ॥ १६४ ॥

वनार । १९० ॥ देश । विश्व स्वाप्यिक, आहारक २ वैक्रिय २ उंचगोत्र १ जिननाम ए १२ विना ३० प्रकृति पुण्यनी बांचेगतित्रस कहेतां तेउकाय १ तथा वाउकाय मार्गणाये स्हमतंपराप १ देशविरति १ मिथ्यात्व १ सास्वादन १ मिश्र १
एटडी मार्गणामव्ये ते गुणटाणानी प्रकृति बांचे- देशविरति ३१
वांचे- मिथ्यात्वे ३९ सास्वादने ३८ मिश्र ३४ पुण्यनी मकृति
वांचे- हो। १६४।।

७ सासणमीसेसुनियगुणाइतिपाठान्तरम्

आउतिगहारहीणा, अणहारगिजोयदुगतिआउविणा। सगतीसंवंधंति, उवसमिमणनाणतिगंचरणे ॥१६५॥

टीका—आउतिगहास्त्रीणा इत्यादि॥ तनदेवायुः महध्याषुः तिपंगायुः आहासकदिकद्वीनाः सप्ताविदान् प्रण्यपकृतयः अनाहा-स्कावचेकुर्वति, तया उपसमिद्दितउपरामेसम्यक्त्वे सगरी संवर्धति । सप्ताविदानुभेदाः बंबेभवेति, दिव्यनार्रिवानुण्यप्रकृतीनांभये उद्योनतातपदेवायुः नतयुः तिर्वेगायुर्विनानसमित्रव्यंबेभवेति, ततोमनः पर्वद्वानिवानसमित्रव्यंबेभवेति, ततोमनः पर्वद्वानिवानसमित्रवर्वे भवेति, ततोमनः स्वर्वन्ते स्वर्वान्तिवानसमित्रवर्वे भवेति, ततोमनः स्वर्वन्ते स्वर्वन्ते स्वर्वन्ते स्वर्वन्ते स्वर्वन्ते स्वर्वन्ते स्वर्वन्ते स्वर्वने स्वर्वन्ते स्वर्वने स

ह्वायें:--आउस्ता ३ देवतानो १ सङ्घ्यायु २ तिर्पचायु ३ ए ३ विना पुन्यमे तीनज्ञ छे. तेयाटे आहारक २ ए पांच मृष्टाति विना अनाहारक मार्गणाचे त्रेष-पुण्यमृष्टाति ३७ बांचे तथा उद्योत १ आतर १ तीन द्यायु ३ ए पांच विना ३७ बांचे छे. पुन्यनी उपशाससमिततीन तथा यनःपर्यायज्ञानने विषे चारित्र तीनने विषे ॥ १६५ ॥

नरउरलयोयदुगवयर, आउदुगहीणसुद्धचरणंमि । केवलदुगिसायेगं, सेसावंधोहपावस्स ॥ १६६ ॥

ट्रांका---तरवरहसयोपद्मगवरा इत्यादि ॥ तत्र पूर्वगायो-त्तागुमार्गणामुमनःपर्यवज्ञानसामापिकादिचारित्रविकट्टरणामुतरह-गति नरगतिनराउपूर्वावद्यणेनरदिकं जीदगरिकटर्सराउप्तिकांगोपा-गटक्षणं आदारिकदिकं तथा उद्योतातपटक्रणं उद्योतादिकं वज्ञ- न्त्राभनाराचसंहननंआयुर्द्धिकंननुष्यायुः तिर्पगायूक्पंप्रकृतिनवकं त्पज्यते तदात्रयस्त्रिशन्शेषाभेदाः बंदेभवंति। सद्भवाणंभिइति इदं अकपायंचरणंचारित्रं शुद्रचारित्रं यथास्यातस्त्रणं तया केवस्तुनि केवलज्ञानदर्शने पुण्यपकृतिसंबंधिनीएकासातापुबवंधेमवति । ईर रयुक्तंपुण्यमङ्किद्धारंसेसावंबोङितिशेषावंबीघेमार्गणासुवंबस्वामिते । धुण्यम् कृतितःशेषाञ्चरितसंख्यासापापस्यसंख्याञेयाः नरकगतोषुण्य-स्य चतुःस्त्रिशत्पापस्यएकसप्ततिः उभयमीटनेजातंपंचीतरशतं अ वनरकस्यवंथीयः एकोत्तरक्षतं तत्किमित्याह अववर्णादिचतुष्कं पुन्यपापयोर्मेच्ये उभयब्रहणात् जीवभेदेचतद्वं वसस्वात्पंचीत्तरातं भवति । एवंसर्वत्रहोयं तिर्यमाती मनुष्यगती पंचेन्द्रिये त्रसकाये योगत्रये वेदत्रये कपायचत्रश्ये मत्याद्यज्ञानत्रये अविरतीच्धर पश्चर्दर्शनेकुण्गादिलेदपात्रये भन्ये अभन्ये मिथ्यात्वेसंज्ञि असंशि आहारकल्झणासु मार्गणासुद्धयर्झातिः पापस्य, देवगतीवेजोले-इपायांत्रिसप्ततिः, जातिचत्रष्ट्ये स्थावरपंचकेएकोनाशीतिः, मत्यान दिज्ञानत्रये अविदर्शनेउपशमादिसम्यक्त्वविके मिश्रेचतुश्चत्वारि शत्, मनःपर्ववज्ञाने सामायिकादिचारित्रत्रये पद्विंशत्, सःन-संपरायेचनुर्दश, केवल्झान केवल्दर्शनयथारूपाठेन, देशविरती-चस्वारिशत्, पद्मवेदयायां एको नसप्ततिः, गुक्कवेदयायां एको नसप्ततिः। सास्त्रादनेसप्तपष्टिः, अनाहारकेष्कोनाञ्चीतिः, इतित्राच्यंइत्युक्तिः पापप्रकृतिद्वारम् ॥ १६६ ॥

ट्यार्थ:—मनुष्य २ औदारिक २ उद्योत २ बजरूपभ-नाराचसंचयण १ मनुष्य तथा तिर्यचनो आऊखो एटटा विना २३ नो बंद छे. शुद्धचारित्रयथारूयात तथा केवलहुगने विषे एक सातानो बंद छे. केप एल्यप्रकृति ने मार्गणा कही वेहरी शेष रही जे मार्गणाना बंघनी प्रकृति वे पापप्रकृति मार्गणाने जाणवी वे सर्व यंत्रकृती जोज्यो. ॥ १६६ ॥

अपरियत्तापयडी, सुहमेचउदसतहाअहरकाए। केवलदुगेअभावो, सासणमोसअजिणमिच्छा॥१६७॥

अपरियत्तायपढी इत्यादि ॥ ज्ञानावाणीपरंगकांन्यपरंगक्तर्यानायरंग्यक्तर्यानायरंग्यक्तर्यानायरंग्यक्तर्यानायरंग्यक्तर्यानायरंग्यक्तर्यानायरंग्यक्तर्यानायरंग्यक्तर्यानायरंग्यक्तर्यानायरंग्यक्तर्यानायरंग्यक्तर्यानायरंग्यक्तर्यानायरंग्यक्तर्यानायरंग्यक्तर्यानायरंग्यक्तर्यानायरंग्यक्तर्यानायरंग्यक्तर्यानायरंग्यक्तर्यान्यरंग्यक्तर्यानायरंग्यक्तर्यान्यरंग्यक्तरं

द्यायः -- हुपे परावर्तमानमञ्जित कहे छैं। प्रावर्तमानम्-कृति १४ छे, सुक्ष्मसंपराय ग्रुणटाणे जानाराणी ५ वर्तनाराणी ५ अंतराय ५ तथा पद्माख्यातपारिणे केरद्धाने वेजहर्द्धाने प्रावर्त्ता । वेजहर्मान प्रावर्ति । वेजहर्माने विकास ग्रुणटाणे जिननाम नृज्यों । वेजहर्मिन २७ परावर्तमाननी चेज छैं। ॥ १६७ ॥

तिरिजाङ्चउसुधावरि, अझाणअभवेअसंक्रिमिच्छेसु। जिणविणुनाणचउके, ओहिदंसेतिसम्मम्मि॥१९८॥

टीका —तिरिकाइपउग्नयात्रीर इत्यादि ॥ निर्वेग्गनीज्ञाने-धतुरके रभावरायपके अञ्चानयिके अभावेगसञ्जिद्यागणायां निर्धान त्वेजीणिदेखः जिननायविनागश्येवातिः वेपेशवेन । नायपुर्धके ज्ञानपतुरके मस्यादिके अवस्थितनेनुस्यानादिसम्यक्ताविके॥१६८

टबार्थः--निर्यथमाति १ जानि ४ एकेदिय १ देशे २ तेशे

र चारिं। ४ यात्र ते मार्गणाये अज्ञान ३ मार्गणाये असम् मार्गणाये असेज्ञीमार्गणाये निय्पादमार्गणाये जिननाम विना २८ अररावत्तेमाननो वेच छे, ज्ञान ४ मार्गणाये अवधिदर्शते मार्गणाये उपराम १ क्षरीपराम २ क्षायिक ३ ए तीन समकित मार्गणाये चारित्र ३ सामायिकादि ॥ १६८ ॥

चरणतिगदेसविरए, मिच्छविणासेसएसुगुणतीसं। अपरियत्तसेसयाओ, परावत्ताओवंधंति॥ १६९॥

टीका—चरणतिग इत्यादि ॥ चारित्रत्रिके सामायिकादिए सुणेदेशविदती मिथ्यात्वेवनाअष्टाविद्यतिः अपरावर्तमानाः वेवेमवंति । सेसयाग्रङ्गिकोयकाम् अनुक्तमार्गणाम् प्कोनार्त्रशत्भर्यरावर्तमानाः वेवेभवेति अपरिपत्तिसेसाओड्गिअपरावर्त्तमानतः शेषाः
परावर्तमानाः वेवेभवेति इतिक्षेयं ॥ अथविपाकचनुष्टयेकुरणादिन्दसूर्णं
प्रवय्याख्यातस्वकप्तदेवमार्गणामुविभजन्नाह् ॥ तत्रम्पमस्त्रेविन्
पाकिनीरानुप्रश्र्वीवतस्त्रोदर्शयति ॥ १६९ ॥

पाकिनीराज्यस्थींधतस्त्रोदर्शयति ॥ १६९ ॥
ट्यार्थः —देशिवरित १ एटळी मार्गणाये सिष्पात्व विना
२८ परावर्तमानप्रकृति बांचे छे. शेषमार्गणाये २९ परावर्तमानप्रकृति बांचे ए परावर्तमान कही छे, तेह्रयी शेष रही जे
बंधनी प्रकृति ते परावर्तमान जाणवीः ते यंत्रकयी जोई ढेज्योः
ते यंत्रकमे सर्वे ठामे छे. ॥ १६९ ॥

मणवयणकेवलदुगे, मणनाणेचरणछक्किचरकुम्मि । मीसाहारिपुबि, उदओनोदुन्निअमणेसु ॥ १७० ॥

टीका--मणवयणकेवलडुगे इत्यादि ॥ मनोयोगमार्गणायां

वचनयोगमार्गणायां केवट्याने केवट्याने तथा मनःपर्ववद्याने सामायिकादिदेशविरतिपर्ववेचारिवण्टके च्छ्र्वर्शनिमिक्रोआहारकमा-र्गणायां एर्व्याउदयोनोङ्गिनास्तिपृतद्यागणामु पर्यासाऽवस्थायां-प्राप्यमाणत्वान्, अमणेमु असंज्ञिमार्गणायां द्वनिद्वेतिषंगमरुप्यरूपे-आसुप्रचाउदयेषाप्येवे गतिद्वयेषुवामनस्कच्वान् ॥ १८० ॥

ट्यारं:—हवे कर्मना विपाक ४ क्षेत्रविपाक २ व्यार आदुर्पाल्य वेहना उदय ६२ मार्गणाये कहे छे. मनपोग १ तथा वपनपोग २ तथा केवटाईक १ केवट्यईन २ मार्गणाये पर्यद्वान १ चारिषप्टक ६ सामापिक १ छेद्रोपस्थानीय २ परिहार ६ सभ्यसंप्राय ४ यथारुयात ५ देशविपति ६ च्यु-र्व्चन १ सिभ्डिष्ट १ आहामक १ मार्गणाये प्टडी मार्गणाये आदुर्प्वानो उदय नयी, जे कारणे आदुर्प्वानो उदय अंत-राह्मात बहुनां वे ह्येन, ते अंतरह्मातिम ए मार्गणा न ह्येचे, असंज्ञीमार्गणाये वे आदुर्प्वानो विष्णादुर्प्वा १ तथा महु-

वेदतेउतिगंम्मि, सासणिपुवितिगंचवउजाई । गईथावरेसुएगा, सेसासुपुविचउउदओ ॥ १७१ ॥

डीका—नेपुरीव इत्यादि ॥ वेदक्षे आवुर्ध्वाधिकंत्रदर्वे-भवति । तत्रपुरपर्वेद खाँवेदे नकाग्रुष्ट्यां अद्यद्येरोपातिस्तः, नपुतकवेदेदेवाग्रुप्टेयुवर्ययोपातिस्तः, आगुर्द्वः प्रदर्गमाति वेद-तिगाइतिवेदाः प्रशास्त्रस्थाणानुतिस्युक्तेरपास तथा सारदादम्-नरकाग्रुप्टर्याः अभावे आगुर्द्धानिकंत्रद्येगप्टर्वे च्यानः, पर्व-पतामदायः एकेन्द्रभादिनातिष्युक्ते स्थानरपेनकंपुकाआगुर्द्धां-पतामदायः एकेन्द्रभादिनातिष्युक्ते स्थानरपेनकंपुकाआगुर्द्धां- उदयेभवति । तत्रजातिचतुष्के स्थावर्णचके एकातिषंगावप्रकीं प्राप्पते । गतिचतुष्ट्येतुनस्केनस्कावप्रचीं देवेदेवावप्रचीं मव्ये मव्य्यावप्रचीं तिरक्षितिषंगावप्रचीं उदयेभवति, शेषास्र गार्गणास् प्रव्यिचउउद्योप्यस्य स्वतस्रः अपिउदयेपाय्पते ॥ इत्युक्तंस्रोविः पाक्षीद्वारं ॥ १७१ ॥ अयभवविपाक्षिआयुक्षतुष्ट्यंगार्गणासुरसं-पत्राह ॥

टबार्थ:—तीन वेदमस्य तीन आउपुर्ध्वनी उद्द है, तिहां पुरुषवेदे खीवेदे नस्काउपूर्धिनी उद्द नयी, नपुंसकवेदे देवाउ- पूर्धिनो उद्द नयी, नपुंसकवेदे देवाउ- पूर्धिनो उद्द नयी, नपुंसकवेदे देवाउ- पूर्धिनो उद्द नयी, तेपुंसिनो उद्द है. सास्वादनमस्य पण नस्कावृधि विना तीन आउपुर्धिनी उद्द है. जाति ४ एकेन्ट्रिपादी ४ नथा गति ४ मस्य पात पार पार्टि के आउपुर्धिनो उद्द है. जाति ४ एकेन्ट्रिपादी ४ नथा गति ४ मस्य पात पार्टि के आउपुर्धिनो उद्द है. जाति ४ एकेन्ट्रिपादी ४ नथा गति ४ मस्य पात पार्टि के आउपुर्धिनो उद्द है. च्या पार्ट्या व्याप्त पार्ट्या के आउपुर्धिनो उद्द होणावी गति नेत्रामनो आउपुर्धिनो उद्द है. श्रेष मार्गणाने विषे आउपुर्धिन ४ नो उद्द है. ॥ १९१॥

मणवयणेचउआउ, मणपज्जवकेबलेयपुणचरणे । . मणुआउदेसिसतिरि, सेसापुर्विवआउआ ॥१७२॥

टीका—मणवयणे इत्यादि ॥ मनोयोये वचनयोगे आर्षः शतुष्टपंदर्यभवति, चतुर्गतिषुमनोवाययोगस्यसद्भावात् । तथामनः पपदानि केवरुद्धिके चारिषणंषके मणुआउद्दति पृकंमतुष्याषुः उदयेभवति । देसीनामदेशविदतीसतिरितिदेवमतुआयुः तिषंगापु-पुत्ते आपूर्द्रपंदर्यमुख्यते, शेषासुमाणगासुपुकप्वाशस्यशणाषु- पुर्विव, आनुपूर्वीवत्आपुर्वत्उद्येवक्तम्यं इत्युक्तंभवविपाकिद्वारं ॥ ॥ १७२ ॥

टवार्थः — मनोयोग तथा वचनयोगमव्ये च्यार आऊरवानो उदय छे. मनःपर्यवज्ञानमव्ये केवट्यान १ केवट्यान २ चारित्र पांचने विषे एक मद्यत्यायुनी उदय छे. देशविरविमध्ये मद्यत्यायु १ तथा विर्यवायुनी उदय छे. त्रेय मार्गणाये जिम

आद्यप्रविनो उदयके, तिम्हीन आऊखानो उदय जाणवी॥१९१ जिअपुरगस्मविवागा, पयडीओउदयसंभवानेया ।

भंगाणंचयमाणं, नेयदंसंभवंपप्प ॥ १७३ ॥ र्राक्रा—जिअपुरगटाविवागा इत्यादि ॥ जीवविवाका अष्ट-

सप्ततिग्रह्मध्येषाकाः पर्दिवेशनुष्पकृतयः उद्यसेभवाउद्यर्यासित्य-संभवाजेषाः साम्प्रद्रस्वावकोधार्यक्षित्यये तवजीविषणकेनारकेपृत्ये-नपिस्तित्यधिषिक्षतिः इत्यादि पुष्टविष्यके अद्यद्वा विरिक्षित्व-समृतिः, देवगतिअद्यादम् अनुष्येपुक्वित्वात् इत्यादि योज्यं, उदय-द्वानित्यमीपतः वेषेश्रय्यमाणासुक्वमीक्ष्यमृतद्वीपताहः॥ भेगा-कंप्यभगकानांप्रमाणनातस्यस्यम्यययमार्गणायोभेगकाः सभ-कंति वेष्यपार्थिगायास्यः॥ ॥ १७३ ॥

ट्यार्थ:—जीवविषाकि तथा प्रहरविषाकी महाति सर्वे उद-पीयी तिभव पटे तिम जाणको. जीवविषाकी प्रदे हैं, तार्काने ५२ तिर्पयमचे प्रदे सहायमको ६९ देवनाम ने हम तर्वेव पोडी केग्पो, १ पुहरविषाकी नार्काने १८ तिर्पयने हस महापने ३१ देवताने १८ हरवादि यथाक्षेत्र चोई केवी. हसे वासठीमार्गणाये भंगानो प्रमाण जिहां लिम संभवे तिहां कहेवा संवेधादिक श्रंथयी विस्तारे जोई कहेवा ॥ १७३ ॥

नाणंतरायदोदोभंगा, इकारदंसणावरणे । गोएसगवेयणीए, अडआउम्मिअअडवीसा ॥१७७

ंदीका-नाणंतरायदोदोभंगा इत्यादि ॥ ज्ञानावरणीयेदी भंगीपेचानांबंधः पंचानांउदयः पंचानामेवसत्ताइतिमधमः, सक्ष्म संपरायंयायत् पंचानांउदयः पंचानांसत्ताइतिद्वितीयः उपशांतमोहः क्षीणमोहं यात्रत्माप्यते एवमंतरायस्यापिद्वीभंगी प्रथमभंगी अभव्या नांअनाद्यनन्तः भव्यानां अनादिसांतउपशांतमोहात् पतिता नांस।दिसांतः जघन्यतः अंतमुहूर्तेउत्कर्पतः देशोनपुद्रउपरान्ते द्वितीयभंगः सादिसान्तोजवन्यतपुकसमये उपशांतेगतस्य समयांतरे आयुः क्षपात् पंचविध्यंचकत्येनभवनात्उत्कर्पतः अतर्भृहुत्तंइति दर्शनात्राणीयस्यनवभंगाः तद्दर्शयहाहसप्ततिभाष्यकारः वंधरसपः संतरसयपन्नड्ठाणाणितिन्नितृङ्खाणि उद्यटाणाणिडुवेचउपणगदंसनाव रणे ॥ १ ॥ व्याख्यापिश्रामलयमिरिवाक्यात् दर्शनावरणीयाख्ये द्वितीयकर्मेणियंधस्यसत्तायां परस्परंतुलुधानित्रीणिप्रकृतिस्थानानिः तययानवपर्चतस्रः तत्रसर्वप्रकृतिसमुदायोनवस्त्यानद्विविक्रहीनाः पर्एताश्चपरनिदामचटाहीनाश्चनस्रः तत्रनवप्रकृत्यात्मकवयस्थानं-मिथ्यात्वेसास्त्राद्देतच्चमिथ्यात्वेअभन्यानां अनाद्यपर्यत्रसानं करादि-दपिश्यवच्छेदाभावात्, भन्यानधिकृत्यानादिसपर्यप्रसान कालांतरे-व्यवछेदसंभवात् सम्यक्त्वात् प्रतिपत्यमिथ्यात्वंगनानांसादिस-पर्यत्रसानंतञ्च ज्ञचन्यतोअंतर्भृद्धनंकाटंगावत् उत्कर्गतः अपार्वपुदरु परायत्तेपदमञ्ज्ञपातमकं वंधस्थानंसम्यगृतिथ्यादृश्यिणस्थानकादारि ₹ ac

म्पाप्रवेकरणसम्यमंभाग्यावन् तध्वयन्यनोअनमुहुर्वकाठंऽरक्रपेती-द्वेपरपश्चिमागराणांसस्यक्त्वस्यापांनरात्रेसस्यग्रमिष्यात्वांत्रस्निरंपता-वन्तंकाळंतयारपानंसंभयावनतः ऊर्द्देतुकाबन्झपकःभेणिमविषयदे कश्चित्युनर्भिष्पात्त्रेमिष्पात्येचमतिपनेमति अवदर्गनवनियोक्यः चतुः महत्यात्मकंतुषंधस्यानभवृर्वेकतगाद्वितीयभागादासम्पमः मसंपरायंगाः बर्ज्यपन्येनक्तामपंडरक्षेतः अंतर्भृदुर्नगृकतमपंथात्रतक्षंप्राप्यते-हतिचेतुउच्यते । उपरामध्ययामपूर्वकरणस्याद्विर्वायभागः प्रथम-समयेष्युत्रियवं यमार भते अनं तरसमये स्वर्धात् कार हरोति कार्र प्रकृत्याः दियंगनः रामअदिरतीभवनि, अधिरमध्येषपद्वविद्योदंगदृश्येत्रसामाः यिक्तिपत्तिविधरभाऽवरियातिः अनुमृहुर्त्ततुगुणस्थानसमेणक्षेषे । तथानवप्रकृत्यात्मकः सनारथानंदर्शनायरणस्य हाउमधिषुरपद्विधाः अनाष्ट्रपर्ववसिनं अभव्याना । अनादिसपर्ववसिन भव्यानां, साविष्यंत्रसानेतुनभगति, नवम्बुरयस्य शतसस्यानव्यवः हे तेष्टिः क्षरक्रवेण्यां मर्थति, संध्यपक्रवेणितः प्रतिपानी भर्वति, प्रत्यस-नार्थानगुपरामकेणिभाषे इन्योपशानभोद्व गुणस्थानकं याददशप्दते, क्षप्राद्धेणिन्धिरूरथपुनर्गनर्गनयांनयादश्येपरायगुणस्थानकस्य प्रथम-માગતથાપરપ્રવૃશ્યાત્મકારતારમાને અપન્યનોરવાદેવાથાનું દુન વૃષાન णत्यानिर्शिवादरसंपरायगुणस्थान्यत्रयद्वितीयभागादारभ्यत्रोणभीन ष्ट्रगुणस्थानवस्यद्विध्समसमयंयावत् व्यवसेयः धतुःप्रकृत्याभकः देन व सामायि वं शीण कथायध्यस्यसम्बन्धाविश्वादि विवद्यस्यानेषु नर्दे नव-तः । तत्रपाचनसः पचचनवप्रसम्बद्धार्दर्शनावरपादप्रदर्शनाव-रणावधिवर्शनावरणकेवयः संनावस्यक्षयाः । पुत्रासाधवद्योयकोदयः द्विष्कप्रश्निस्थानपुनासुषयनस्पर्धयोगदादाना पंचानाप्रश्नि नांगरवादन्यनमस्यायश्रामश्चिमायांपंचावेक उदयः नारामेहाति-विकासम्बद्धाः विभावति । एक सम्बद्धाः वरपण्यात् वर्ताः वर्ते

भवति ॥ तदेवमुक्तानिदर्शनावरणीयस्यवंबोदयसत्तास्यांनानि । भंगाइकारदंसणावरणे, दर्शनावरणीयेकर्मणिएकादशभंगाभवंतितस्य तिपादिकांगायामाह् ॥ वीपावरणेनववंचप्मुचउपंचउदयनवसंत्रक भउनेने चेनचउनंबुद्येचलंसाय ॥ १ ॥ उत्तरपर्ववचउपणनर्वसदः उरुदपरम्बरसंता ॥ द्वितीयावरणेदर्शनावरणेनववंघकेषुनिय्याद्यीः सास्तादनेषुचउपंचउदयत्तिउदयश्रत्विवः पंचवियोवातत्रचतुर्वियश्र-धर्दर्शनावरणावधिदर्शनावरणकेवछदर्शनावरणरूपः सप्वनिद्रापंदन सत्कान्यतमप्रकृतिमक्षेपात्पंचविचः सत्तामधिकृरयपुनः प्रहृति-स्थानंनवनवप्रकृत्यारमकेतदेवंनवविधर्वधकेषुद्वै।विकर्त्यादिशितीतधः भानविधोवंधः चतुर्विधः उद्यः नवविधसत्ताएवविकल्पोनिद्री दपाभावेनिद्रोदयेतुनवविद्योवंदः पंचविदः उदयः सत्ताछचउवंवेषेवंति, षड्विधयंबेषचत्विधवंबेचप्वंपूर्वोक्तपकारे णउद्यसत्तास्थानानिवेदितःयानिङ्द्युक्तभवतिवेषद्विधवंवकाः स स्यग्मिथ्यादृष्ट्यविरतिसम्यगृहष्टिदेशविरतिप्रमत्ताप्रमत्ताः कियत्वा लमपूर्वकरणाश्चतेषांचतुर्विवः पंचवियोचाउदयः नववियासताएतेन द्दीविकल्पीदर्शितीतद्यथापड्वियः वंधश्रत्वियः उदयोनवविदास त्ताअथवापद्विघोवयः पंचविघोदयः नवविघासता एतीवद्रीवि करपीक्षपकं मुक्त्वा ऽ न्यत्रसर्वत्रापिप्राप्यते भूपकेत्वेकएवविकरपती द्यपापद्विचोत्रंदः चतुर्विधः उदयः नवविचासत्ताक्षपकस्पहिअत्रं तविद्यद्वत्वेननिद्राप्रचलयोनोद्द्यः संभवति तहुक्तंजिनवञ्चभमूरिसः

श्रेणिप्रवीरयचतुर्विवर्ववः चतुर्विवः पंचविवोवाउदयः नवविवास् त्ताक्षपक्रश्रेणमधिङ्करपुनस्टर्पवर्त्वार्विवः पुनकारणमत्रमागेवोत्तः केवित्युनः क्षपकक्षीणमोहेष्वपिनिदामचळ्योरुर्यमिन्द्रतिन्त्कर्मः

प्रकृत्यादियंथैःसहविरुद्धघतेङ्ह्युपेश्तते, यात्रश्चश्चपकश्रेण्यामपिरत्या-नहिनिवनशीयवे तावत्सत्तानचविधाः स्त्यानदिनिवेतुशीणेपदिवधाः तथाचाहचउत्रंपुरयेछत्तंसार्यात्त, चतुर्विचेवेचेचतुर्विवः उदयः अनियन तिवादरसंख्येरीर्भागर्गतिपरतः स्त्यानर्दित्रिवेद्धाणेषः विधासत्तापृषयः विकलपस्तावरमाप्यवेयावरम्धः मसंपरस्याद्वायाश्चरमसमयपरतस्तनमा-ष्यतेषंथाऽभाषानृतदेवंचतुर्वियवेय इस भ्ययोविकत्पास्तद्यपाचतुर्वियो• वंदः चतुर्विदः उद्दयः नवविधासत्तापुषः पश्चमञ्जेण्यां क्षपकश्चेण्यां षायादरस्त्यानिर्धित्रकंनश्लीयते चतुर्विधीवयः पंचविधः उदयः नद-विधासत्तापुपउपशमभेष्यां क्षपकश्रेण्यांतुपंचविधोदयस्यासंभवातः तथाचतुर्वियःवयः चतुर्वियः उदयः पद्विधासत्ताएपविकल्पः क्षपक्षेभ्यांस्यानद्विनिकश्चयानंतरं अवसेयः उत्तरयवंषेहत्यादिउपरते-स्यवन्छितेवंचेयतुर्वियः पंचविधोवाउदयः नवविधासत्तापतीचनी-विकरपाउपशांतमोहगुणस्थानकेपाप्येते उपशामभेण्यांदिनिद्राप्रच-हयोरुद्रयः संभर्जनस्यानद्वित्रिकंचनक्षयमुपगच्छति, ततस्रतार्विधः पंचवित्रवत्ता । १५ । म्यवेतयाचतुर्विधः उदयः पहित्रधा-सत्तापपवि सत्यः शीण रूपार्याद्वचरमसमयादर्वागेवप्राप्यवे । तथा-चतुर्वियः उद्दयः चतुर्विधासत्ताएषः विकल्पः क्षीणऋपायस्यचरम-समयेभवतिनिदाद्विकस्यसनायांश्चपकत्वान् तदेवंदर्शनावरणेसर्वसं-ख्ययाएकादशविकल्पाः, यदिपुनः श्रपक्जीणक्षायेप्यपिनिद्रापन चलयोरुरपद्रप्यते तर्हिचतुर्विचीनवः पचिववः उदयः पहित्रचा-सत्ताबंबाभावेपंचविकः उत्तयः पहित्रधासताङ्खेतीदीविकल्पाअधि-कीमाच्येते इतिनयोदशज्ञातच्याः सांप्रतंवेदनायुर्गोतेषु संवेधविक-ल्पोपदर्शनार्थमाद्दगोषसगतेयणीये । तथागोत्रेसामान्येनएकंत्रंध-स्थानतयाउभ्रगीवनीर्थगीववापस्पाविरुद्धवेनयुगपद्धंघाऽभावात् उ॰ दयस्थानमप्येकंतदपिद्वयोरन्यतस्त्वपरस्पाविरुद्धत्वेनयुगपहुचोरुद्वयोऽरू

भावात्द्वेसत्तास्थाने, द्वेएकंचउर्घनींचेगींत्रेसम्रदितेद्वेतेजस्कार्यिक यापुकायिकवंथायां उच्चेगों त्रसत्ताया उद्घटिते एकं अथवा अयोगि द्वितरम समयेनीचेर्गोत्रसत्तायांद्वीणायांपुकंउचैर्गात्रं, संप्रतिसंवैधउच्यतेनी चैगोनस्यनंबः नीचैगोनस्योदयः नीचेगें।त्रेसताएपविकल्पः वेज-स्कायिकवायुकायिकेषुलम्यते, तद्भवाद्वद्वेतुप्रवाशेषजीवेष्वेकद्वि नीचेगीत्रस्यो-विचतुस्तिर्यग्पेचेदियेषुक्षियस्कार्टनीचेग्रीवस्पर्ययः दयः उच्चैनीयगोत्रेसत्ताअथवानीयेगीवस्यवयः उद्येगीत्रस्योदयः **उद्यनीचेगोंनेसत्ताएतोच**द्वीविकल्पो निय्याद्यीष्ट्रपुसास्वादनेषुत्रानसः म्यग्मिष्यादृष्ट्यादिषुतेषांनीचेर्गोत्रवंदाभावात् Sतथाउँवर्गोत्रस्पत्रयः भीचैगोत्रस्योदयः उभयस्मिन्सत्ताप्यविकल्पः मिय्यादृष्टिगुणस्या नकादारम्पदेशविरतिग्रणस्थानकंयावत्पाप्यतेनपरतः । परतोनी चैगोंत्रस्पोदपाऽभावात् तथा उद्येगोंत्रस्यवंवः उद्यनीचगोत्रेसताएष विकल्पोमिध्यारवादारम्यस्रक्ष्मसंपरायगुणस्यानंयादन् नपरतः परतो॰ वंयाऽभावात्वयाभावेतुउच्चेगों वस्योदयः उच्चनीचगोत्रेसत्ताएषविकः करपः वपर्शातमोहराणस्थानकादारम्यायोगिकेवलिद्विचरमसमयं यावदवसेयः उच्चेगोंत्रस्योदयः उच्चेगोंत्रेसत्ताएषविकल्पः अयोगिः केविछचरमसमयेभवतितदेवमेतेगोवस्यसर्वसंस्वयसस्यभगाः ॥ अ॰ थवेदनीयस्पाष्टीभंगाः तत्रवेदनीयस्यसामान्येनैकंत्रेयस्थानंतद्यद्यासान तमसातंत्राद्वयोः परस्परंतिरुद्धत्वेनयुगपन्त्रंबाऽभात्रात् उदयस्थानमः प्येकंतद्ययासातमसातंवादयोर्युगपहुदयाऽभावात्। सत्तास्यानेद्वेतद्य थाद्वेएकंचपावत् अयोगिद्विचरमसमयादर्वाकः द्वेएवसत्तेतनः चरमः समयेपुकस्यां अन्यतस्यांश्लीणायांपुकंइति संप्रतिसंवेधः उच्यतेअः सातस्यवदः - असातस्यउद्यः राजेऽयातेमत्ताअथवाअसातस्यवदः सातस्योदयः सातासावेसती प्नीद्वीविक्त्यीविय्यादृष्टिगुणस्थानकाः त्ममृतिममत्तगुणस्थानकंयात्रत्प्राप्यतेनपस्तः पस्तः असातस्परं-

गऽभावात् तथा सातस्यवंदः असातस्योदयः सातासावेसवी अथवा गतस्यवंदः सातस्योदयः सातासावेसवीपूर्नोद्वीविदल्पीमिथ्यात्वादार-व्यसयोगिकेवळिचरमसमयंयावनुमाप्येतेनपरतः एतेवंधभेगाः, अवंध-भंगाः, असातस्योदयः सातासावेसर्वासातस्योदयः साताऽसावेसतीपु• तीद्वै।विकल्पीअयोगिद्धिचरमसमयंयावत् । तथाअसातस्यउदयः असा-तस्पसत्तागजञ्जकुमालादीनामिवअयोगिचरमसमयेभवति । अधवा तातस्योद्दयः सातस्यसत्ताष्ट्रपविकल्पःवीर्यकरादीनां अयोगिचरमसम्ये त्ताद्वीविकल्पीअयोगिचस्मसमये एकनेवसमयंभवति,सर्वसंख्ययावेद-तीयस्याष्ट्रीभेगास्तयाआपुषिसामान्येनएकंबंधस्थानं उदयस्थानमध्येवी सत्तास्थानेद्वेतद्ययाद्वे**एकं**चत^{्र}कंचतुर्णाम्न्यतमन्**यावरन्यतरपर**भवान पूर्नवश्यते परभवायुषिधक्द्वेयावैदन्यक परभवेनोत्पद्यवेतावद्रद्वेसतीन संप्रतिसंवेधः उच्यते तत्रायुपस्निस्रः अवस्थास्तव्यथापरभवार्ययंय कालात् पूर्वावस्थापरभवायुर्वेथकाटावस्थापरभवायुर्वेधोत्तरकाटाव-स्पाचतवनैरियकस्पपरभवायुर्वयकाटात् पूर्वनस्कायुपः उदयोनरकार युपः सत्तापुपविकल्पआधेपुचतुर्पयुणस्थानकेपुरोपगुणस्थानकस्य नरकेप्बरांभवाव परभवायुर्वयकालेतिर्यगायुपीवंथीनरकायुपउदयी-नारकतिर्यगासुपः सत्तापुपविकल्पोमिष्याहाष्ट्रसास्यादनयोर्ह्रपोरेवान धमोर्ग्रणस्थानकमोर्भवति । अनैवानिर्यमायुपोषंधसभवात् । अथवा मनुष्यायुपीर्ययोनारकायुपः उद्दयः नारकमनुष्यायुपः सत्ताएपविन कल्पः मिथ्पात्वसास्त्राद्रनाऽविरातिसम्पग्हाष्ट्रित्रंचोचरकाछंनरकापुपः उदयः नारकतिर्यगायुषः सत्तापुषविकल्पः . आदेषुचतुर्ध्वपिगुण्-स्थानकेपुर्तिर्यगायुर्पेवानंतरंकस्यापिसम्बाहचे सम्यग्भिध्यात्वेत्राग-मनात् । अयवा नारकापूषः उदयः मनुष्यनारकानुषः सत्तादहः देवानारकायुर्भवप्रस्ययादेवनवर्वति तयोत्प्रस्यभवात् ॥ यदुक्तं ॥ देवानेर्स्ड्यादेवेतुनारकेतुनिभउववज्ञाति । अतस्तरमत्ययिकत्याभान

वात् सर्वसंख्ययापंचैत्रविकल्पाभवाति । एवंदेवानामपिपंचविकल्प तद्यथादेवायुपउदयः देवायुपः सत्ता इत्यादि ॥ तिर्यगायुपः उदय तिर्पगायुपः सत्तापृषविकल्पः आद्येषुपंचसुगुणस्यानकेषुरीपगुणस्या नकस्य तिर्पशुअसंभवातपुषविकल्पः परभवायुर्ववकालेतुनारकापुष वयः तिर्यगायुषः उद्दयः नारकतिर्यगायुषः सत्तापुपविकल्पः नि ध्यादृष्टेरेवतिर्पगायुषः वंदः तिर्पगायुषः उदयः तिर्पगृतिर्पग्आयुपः सत्ता ॥ एपः विकल्पः मिथ्यात्वसास्वादनस्य अथवा मतुष्यापुरः वंदः तिर्पेगायुषउदयः मनुष्यतिर्यगायुषः सत्तापृषविकल्पः मिध्या-**उद्ये**ः सास्त्रादनस्यवासम्यग्द्रहेर्देशविरतस्यातिरश्चः देवाग्रपण्ववंयात्। अथवा देवायुषः वंधस्तिर्यगायुषः उदयः देवतिर्यगायुषः सत्तापुष-विकल्पोमिथ्याहरेः सास्वादनस्यअविस्तरम्यगृहरेः देशविस्तस्यवानः सम्यग्मिध्यादृष्टेः तस्यायुर्वेधाभात्रात्॥ बंधानंतरंतिर्यगायुषः उदयः नारकतिर्यग्रसत्ता इति प्रथमः । तिर्यगायुषः उदयस्तिर्यग्तिर्यग्सता इतिद्वितीयः। तिर्यगायुषः उदयः मनुष्यतिर्यगायुषः सत्ता अथवा तिर्पेगायुषः उद्यः देवतिर्यंगायुषः सत्ताएषविकल्पः प्रथमिध्याः त्वादिषु आयुर्वेधंऋत्वाततः परंगुणस्थानकारोहवतां पंचमगुणस्था॰ नकंपावरभवति, सर्वसंख्ययातिरश्चांनवविकल्पाश्चतसञ्चातिपु तिर-श्चामुत्पादसंभवात । तथा मनुष्यायुपनदयः मनुष्यायुपः सत्ताप्प-विकल्पः अयोगिकेविकनयावतः तथा नरकायुगोवधः मनुष्पायुपः उदयः नारकमनुष्यायुः सत्ताण्षत्रिकल्पः मिथ्यादष्टेर्भवति । सथा तिर्पगायुपोबंदः मनुष्यायुषः उद्य स्तिर्पग्मनुष्यायुपः सत्ताप्य-विकल्पः मिथ्यादृष्टेः सास्वादनस्य वा तथा मनुष्यापुपः वंघीमतुः ष्यायुपः उदयः मनुष्यमनुष्यायुषः सत्तापुषः विकल्पः मिथ्यादृष्टेः सास्त्रादनस्यत्रादेवायुषः वेदाः मनुष्यायुषः उदयः देवमनुष्यायुषः सत्तापुपविकल्पः अममत्तगुणस्थानकंपावत् एतेचत्वारोविकल्पाः

व्यापुषः सत्तापृतेनयोनिकस्याः अभूमत्तगुणस्यानयानम् । आ-. १५५ ।तपम्मनुष्यसत्तामनुष्यायुषः उद्देशः मनुष्य-व्य रहण्याञ्चयक्ष्यानार्कमनुस्यसत्ता-आनंतरंतुणस्यानाग्रोहात् मनुष्पायुषः उद्दयः देवमनुष्यादुषः एपनिकल्पः उपसातमोहं यानवमाट्यते, देनागुम्बनद्वे प्रपुराम-रोहितंभवात् सर्वेसंस्थयामनुष्याणाः नवभंगास्तदेवंआयुपः च्ययाअद्यानिहातिभंगाः ॥ इत्वेनगाचासुभंगकाः सप्ततिकातोः तर्थः—ज्ञानादरणीना वे भांगा हे. अंतरायना वे भांगा नावाणीना ?? भांगा छे. गोवना ७ मांगा छे. वे-१८ भागा छे. जाऊला कर्मना २८ भागा छे. हवे ।। भागा मार्गणाएँ कहे छे. ॥ १७४॥ गतिगयोग, भंगोसबासुमम्गणासुब (सेढि॰ मानो, वेयणसंताअहरकाए ॥१७५॥ यासुद्गं)। अध्हालावरणीयांतरायभंगानुमार्गणाद्यवर्शयमाह् ॥ गिङ्खादि । ज्ञानावरणीयस्यतथाअंतरायस्यविज्ञः विषयिष्यं पंचित्रप्रदृष् पंचसत्तावस्याः सर्वाः तै, तथासेडिया भेगिः उपरामञ्चय रुटञ्चणातस्पर्यतं रोह्युणस्थानकपर्यतंपामागृणामनुष्यगाति १ ए काप १ योगात्रिक ३ मत्यादि ज्ञानचनुष्ट्य-<u>इ.चे.स्पाभव्यउपरामसम्बन्धः विकसम्बन्धः</u> उनीनविंशतियागंणाम् हुगंतिज्ञानावरणांतराय-

स्पद्गीभंगीमाप्येते । तयाकेवरुद्धिके केवरुतान केवरुद्दशेनं ज्ञा-नावरणांतरापस्पभंगानभवंति, प्रयाख्यावेवेदनंत्रद्यःसंतासत्ता इत्य-नेनर्पचविच्यद्ययः पंचविचसत्तारुक्षणः एकर्वभंगः प्राप्यते भंग-भावनागुणस्यानकमतोद्येषा। १७५॥ अयद्शेनावरणीयकर्मणः भंगावसार्गणास्दर्शयत्राहः॥

्यार्थः — ज्ञानावरणीय तथा अंतरायकर्मनो पांचनो वंध पांचनो उरपनी सता पृत्रिकसंयोगी पृक्षभंगो सर्वमार्गणान विषे केवलज्ञान १ केवल्दर्शनने विषे ज्ञानावरणीय अंतरायनो भंग नयी, यथाल्यातचारित्रमन्ये ज्ञानावरणीय तथा अंतराय ए वे कर्मनी पांचनो उदय पांचनी सत्तानो एक भांगो छे ॥१७५॥

नाणचउओहिदंसे, खायगसम्मेयदंसणावरणा । नवभगपडमद्विणा, वेयकसाएसुसगभंगा ॥१७६॥

्टीका—नाणचड्दत्यादि ॥ ज्ञानचतुष्येमत्यादि एक्षणेअवधि-दशैनेक्षायिकेसम्पक्तवेदर्शनावरणीयस्यनवभंगाः प्राप्यंते, प्रथमेद्वै-नविचयंवप्रत्ययेवेसिम्यात्वसास्वादनगुणस्यानकेसभवात् । एति-स्रुमार्गणासुतत्तसभवात्नभवंति । एदविचयंव्यतः उपरिसर्वेभवंति । त्यावेदविकेकपायचतुष्येसत्वंभयंगाः नृन्योपरात्माः चन्नयाते-सम्वेतिवेचयवात्तमोदेशीणमोदेभवंतितयोक्षननाभावात्।। १ ४६॥ द्वार्षः—सम्ब स्थापः सति, श्रवः अविः, सन्वर्षार्

टमार्थः—हान च्यार मित, श्रुत, अविक्षं, मनःपर्याण, अवधिदर्शने क्षायिकतसमिति ए मार्गणाये दर्शनावरणियकर्मना नव भंगा पामिये । पदेला नव बंव पांच उद्य नव सर्ता ? तथा नव बंव च्यार उदय नव सत्ता ए वे भागा विना नव भंगा पामिये, वेद ३ कणाय ४ ए सात मार्गणाये सात भागा छे, अर्यक्षना च्यार भंगा नवी ॥ १७६॥

सामाइयछेषपण, परिहारेदुग्निकेवलेनस्थि । उवसमिछगहरूसाप, चउसुहमेतिग्निदुगदेसे॥१७७॥

टीका—सामाइयछेएपण इत्यादि । सामायिकचारिकेच्छेदी-परपापनीयचारिवेपहविषोवंधः प्रत्यपीदीचतुर्विववंधः प्रत्यपाद्वपः पृत्रंपंचभंगाःमाप्येते । तथापरिहारिकच्छिपह्विचवंधतंभवीद्वीकेक-छद्विकेनस्तःवर्शनावरणीयभंगाः उत्रसिक्तगः इनित्रप्रसम्पर्पगृदर्श-वीद्वीजनंधारय-....णतेचस्वारोभंगा अर्चेशतंभवाः, प्रकृत्मसंपायेषतृर्विचवंधतस्यपाद्ययः दुगदेते देशवि-स्तीपर्विचवंधतंभवीद्वी ॥ १७७॥

द्वार्यः—सामाधिक १ छेरीपस्थापनीयने विषे पांच भांगा छै । छविवर्ववना २ प्यापिवर्ववना २ प्यापिवर्वव प्याप्ती इस्स छती सत्ताप एक पृथं पांच भंगा छे, परिद्वापिद्यादि ने श्रीनावरणीयना २ भंगा छे, छतो चंव पांचने उदस नवती तत्त तथा छतो चंव प्याप्ती उदय छती सत्ता ए २ भंगा १, वेदछ २ ने विषे दर्शनावरणीयनो भांगो नथी, उपदाम-मितितपत्वे ६ भंगा छै, छवेयना प्याप्तंचना २ हृत्यास्या अ-धना २ एवं प्याप्त्यात्वारिने अवंदना प्याप्तं में छै। सूक्ष्म-प्राप्तना तीन भंगा छै २ उपदामना १ ह्यापिकनो देशविरित-चे छविश्व चंवना २ भंगा छै। १९००॥

यगेमीसेप्यं, कायपणजाङ्चउअसंन्निसु । |च्छेसासाणेपुण, अभविनववंधगादुन्नि ॥१७८॥ દિકા— વેચવેનીસેવું દૃત્યાદિ ॥ અન દ્રમફ દ્રમણેન્યોને દે કરાદ મુખુ મનેની વેદ ક્રાયર મળીએ દેશવું દૃદેશ દિશા ૧૫ લિક્ટર સમાદિદ્રોમથી કાવજવાને વૃચ્ચિત્રાદિ દ્રાયલે કે પૂર્વ દ્રિયાદિ દુઃ પૂળવુર્વ અનેજી માર્ચળાયાં નેખ્યાત કેમાર શક્તે અમાર્ચન દિશા દેશવં* દેશું અનેજી માર્ચળાયાં નેખવાત કેમાર શક્તે અમાર્ચન દિશા દેખ્ય

:सर्थ-ोरकसमाक्षेत्रभिषेते पुर अस्तुना र आग्रा है। क्यान के वेद्या कर्त रिष्ठे जनातुरक्षामीणार्थे रिनामीर्थे तरकता क्र विशेषमात्री, औरतिमार्गणार्थे ब्यार अमा अती कृतवा र इ. शेषमार्गणार्थे तर्रे क्रदेनों जनापार आग्रा के स्थित त्योगना ॥ १५०८ ॥

ન () જેમ અમાં, નિક્રિઝક્ષાળેલેન્ઝેસાયું (અમજભાતમાં જેમ જેમ

रेक 1 स्टब्स्टरेसक, वावस्त्रभगत्वासम्बद्धाः स्वति ।

कर्मका जिल्लाका । इन्द्रांना प्रशिव प्रवासी वर्गा गी

निर्तितिर्देशेमणुषस्, पणनवपणनवयाताइष्यउगेस् । तिमधाररेपणभंगा, सुरनारयभंग(निणनिरिया)न-इसाय ॥ १८० ॥

टीका—निगतिषि द्रस्यादि ॥ नावादिशनीयवादिभेगानावन सरक्षणतीषेषभेगाधिषणनीनवभेगादेवसनाववेषभयादनुष्यानीनवन भंगाः पूर्वोक्ताज्ञातव्याः, पुकेन्द्रियादिजातिचतुष्के पृथिव्यादिस्पः वात्रयेतियंगायुरुद्यरूपाः पंचभंगाः । सुरतारयति देवपुर्वेशतंभवेः द्वोनरकायुः संभवद्विप्रवेचत्वारोवर्जनीयाः शेषाः पंचतिर्गग्रस्पयः भवन्ति ॥ १८०॥

ट्यारं:—आऊखाना २८ भांगा छै, तेमध्ये नत्कातिमध्ये नरकायुना ९ भंगा छै. तिर्यचगतिमध्ये तिर्यचना ९ भंगा
छै, तेवगतिमध्ये देवायुना ९ भांगा छै, सनुष्यगतिमध्ये मुक्तध्यायुना ९ भंगा छे, तथा जाति ४ धावर ३ पृथिवी अरवनस्पतिमध्ये पंच भंगा छे, तिर्यचायु उदय तिरिपंचायु सतानो
१ तिर्यचायुंच्य तिरिचायु उदयेतिरि २ आयुत्तनानो मनुष्यायुवंधतिरि आयु उदयितिरसन्तु-प्यस्ता ३ तिरिजेंद्रय तिरितिरसत्तातिर उदय मनुष्यातिसत्ता इहां देवताना २ नारक्षीना २
पूर्व ४ भंगावर्जित करवा. ॥ १८०॥

अनरातेउवाउ, केवलटुगिएगदेसविरयंम्मि । षारसमणसामाईयतिगंमि, छगरगईप्पभवा॥१८१॥

दीका — अंगरातेजवाज्दरयादि ॥ तेषुपंचमुम्त्येनसपुः प्रत्य-योद्वातीचर्या दोषास्त्रयोभंगारतेज्ञ हायवायुक्तयमार्गणायांतिषैत्पः रपपाः वयोभंगाः केज्ञब्द्विकेषु होनसपुरुदयः नसपुःसतारूपोभं वित देशविरपमिमदेशाद्वातामसद्वित्वारसम्याः भवतितेचयरतिर्व-गातिमस्याः, यदमनुष्यायुः सत्ययाः, नस्यतिर्वेषम्वपापुर्यप्य-मानस्वपन्त्रयोनमार्यते । देशिक्तादेशपुरेज्ञस्ये । मतःवेषद्वान् नेसामावि ६-छेरोपम्यानगीययिद्वासिन्द्वान्त्रयाति वद्भंगामनृष्या-पुरुदपक्तानारस्तिवेगमृष्यापुर्यग्रजोः नसपुरुद्यः नसपुःसता- देवाधुर्वेधः नरायुरुद्रयः देवनराषुः सत्तावंधानंनराधस्वारोऽपिएवं-पद्मवंति ॥ १८१ ॥

टबार्थः---वेजवाजकायने मनुष्यने दावी नवी वेमांहे तीन भंगा छ । तिरिवदय निरिमचाविरिचेवनिरिवदयविरि २ सला २ तिरिउरपतिरितिरिसत्ताप् ३ छे, केत्रटदुगने नरापुउरपनराषु सता पू पुक भंगो छे. देशविशतिमध्ये १२ भंगा छे, मत-प्पना द तिपंचना ६ भंगा छे. यंथमध्ये देवायुवंधे सामायिक ? छेदीपरधापनीय परिदार विदादिमन्त्रे आऊखाना ६ भंगा छे. मतुष्पायुना देवायुर्वेध छे. तेमाटे मनुष्पायुर्वेश मनुष्पायु-सना २ देवायुर्वेश मनुष्यदेवायुसना २ मनुष्यायुरुदयनस्क मनुष्यापसत्ता ३ मनुष्यायुज्दय मनुष्यमनुष्यायुसता ४ मनुष्यायु-उरय मनुष्यमनुष्यायुसत्ता ५ मनुष्यायुउदय देवमनुष्यायुसताए छ भंगा छे. ।। १८१ ॥

सहमाहक्लापदो, अणहारैचउअवंधपचड्या । मीसेवसमेसोलस, चउदसअसन्नीपसुच ॥१८२॥

हीका—ग्रहमाहक्ताएरो इत्यादि ॥ म्श्नतंपरापे तथा प्रभारत्यानचारित्रे द्वीभंगीनसयुरुद्य नसयुः सत्तारूपीक्षपक्रस्य-नरापुरुद्रपः नरापुः सत्तातथापूर्वबद्धदेवायुः यद्यपश्चमश्रेणीआरोह-वितदानराषुरुदयः देवनरायुः सत्तापुनीद्वीउपश्रमश्रेणिगतमृश्य-संपरायय शास्यातानां भवतः शेषगतिनिकनद्वायुः नोपशमश्रेणिमा-रोहति अणहारेत्तिअनाहारकमार्गणायां चतुर्गतिप्रत्यपाधत्वारी-अबद्याय्रह्मपाश्चत्वारीभंगालम्यंवेयतः विब्रह्मर्ताप्वेचत्वारीभंगाएव-स्त्रस्त्रगतिसंभनाभनाति, केनलिसमृद्वचातेऽपिनसपुरुदयः नराषुः 50 १९१

सत्तारूपः पूत्रभंगः सथमयमपूत्रत्रतांत्मेतस्वात्नाधिकः तथा नि तया उपशमसम्यग्दर्शनेषोडशभंगाः भवंति, तपचतुर्गतिपुअ विश्वतिभंगाः तेषुबद्ध्यमानावृरूपाद्वादश द्वीनारकीदीदेवायुःम यीचत्वारोमनुष्यायुः संभवाः चत्वारस्तियंगायुः संभवाः एवंदार नभवंति, शेषाश्चत्वारोअनदायुषः द्वादशयंशानंतरसंभवाएवयोडः माप्येते ॥ असंज्ञिमार्गणायांचतुर्दशभंगास्त्रननवतिषेगायुः संभ

यतः असंजितिरश्चः चतुर्गतिपुरामनात् पंचनरायुः संभवासा नरायुरुदयो नरायुःसत्ता तथा निर्यगायुर्वेशः नरायुरुदयः निर्वग नरायुषः सत्तानरायुर्वेयः नरायुरुदयः नरनरायुः सत्ता नरायुरुदय तिर्यंग्नरायुःसत्ता अथवा नरायुरुदयः नरनरायुषः सत्ताएवं पंध मनुष्यायुः संभन्नाएवंचतुर्दश असंज्ञिमनुष्याणांनरकदेवेष्वगमना 11 863 11

टबार्थः- सक्ष्मसंपराये तथा ययास्यातमध्ये २ भंगा,नरायुः

उदय नरापुसत्ता १ नरायुउदय देवनरायुसत्ता २, अनाहारकमा गेणाए च्यार भंगा च्यारे गतिना अत्रंथना पामीये. मिश्रमन्ये तथा उपराममध्ये १६ भंगा, इहां पिण नवा आऊखानो वंद नयी तैमाटे बंधना भंगा १२ नयी. असंज्ञीमार्गणामन्ये १४ भंगा छे. तिहां तिर्यचना तो नव छे, मतुष्यना ५ छे. मर्ड-

ष्यअसंज्ञी भरी देवता नारकी थाय नहीं. तेमाटे बख्यमान तथा बंधी रह्या पर्छीना च्यार नयी. ॥ १८२ ॥ सासाणेछवीसं, नाण तिगवेयगेअवहिदंसे। वीसंपुणसेसाणं, अडवीसंआउभंगाणः ॥१८३॥

* पाटान्तरम (वीसंतेउतिवेष, तिवोसअडवीससेसासु)

टीका-सांसाधिछवीसं हत्यादि ॥ सारवादनेपदाविशंगाः, नरकायुर्वेयस्पीभंगीद्वानवाप्वेते, सास्तादनेनरकायुषः यंथाभावात्। तया ज्ञानविके मतिभूनावधिलक्षणेवेदकेक्षयोपरामेसम्परत्वेअव-धिदर्शनेक्षायिकसम्यक्तवेवीसंविद्यतिभंगाः, नरक्रगतीविर्यगापूर्वध-रूपाः देवेपतिकेगापुर्वचरूपः निर्वधुनारकतिकेगापुर्वचरूपे।मनुष्वे पुनारकानिर्यगापुर्वयर्त्पाद्वीद्वीएवभगाप्रकाहिनाविशानिभंगाभविते । वेडातिहाति तेजः पद्मसुद्धलक्षणासुनिसुपुष्टेश्यासु तिवेए बेद्रियके तप्रवासनहेदयापये पुरुषवेद खाँचेदलक्षणेवेदद्वयेषंचनस्कायः संभ-बान्भंगान् वर्जयिन्याशेपानिर्यमनस्येत्रसभवाः प्रपोविशातिभंगाभ-वनि । नपुंसकरेदेदेवायु सभवभगपंचकविनावयोविंशतिभंगाभ-वंति । दोपासुपेचेन्द्रियनसकाययोगनयकपायचतुष्टय अज्ञानिश्रिक अविरानिचशुरपशुर्दर्शनद्विकप्रशस्तनेश्यातये भव्यअभव्यतिथ्यात्वा-संज्ञि आहारकटक्षणासुत्रयोविञ्जतिमार्गणासु आयुःकर्मणः अद्य-विश्वतिभंगाः भवंति । एनासांमार्गणानांचतुर्गतिपुपाप्यमाणत्वात। ॥ इत्युक्ताआयुःकमे भंगकाः मार्गणासु ॥ १८३ ॥

द्यार्थ:—सारवादनने छनीस भांगा छै. तिर्पेच तथा मतु-प्यना नस्कायु बेचना २ भंग नयी. ज्ञान २ स्रुपोपशमसपिक्षत अत्रविद्दांनमच्चे समक्षित गुणटाणावाला नीस भंगा छै. होष मार्गणा ने रही तिहां जाजन्साना २८ भांगा छै. ए आयुभंग मार्गणाने च्छा. ॥ १८२॥

गोपसगनरपणतस, योगभविसमणहाररहीपसु । चरुतुरचरुसुस्का, हारमिछगकेवछेदुन्नि ॥१८४॥

दीका-गोप्सगनस्पणङ्त्यादि ॥ गोत्रकर्मणःसप्तभंगाः नस्-

काणां मा क्षां हर्क्य, अस्तानां त्रमासानं । अअन्तरमञ्जाल, अस्तानां समानां साम्यानां (ची

The second of the one of the order of the first of the second of the sec

उवसामगखवगेपुण, वीसंचोवीससत्तरभंगाय । वेयगिसोलसकेवल, दुगेअहस्खायगेनस्थि ॥१८६॥

द्रीका—उमतामगव्यवगेषुणहत्यादि ॥ अत्रवदामेहायिके सम्पाददीनेवीसंति विश्वातिश्वतिंदातवः सम्यक्तवगोहनीपउदपाहि-ताअविरातिसम्परूचेचतस्त्रोदेशविरतीचतसः प्रचिचतसः अपम-त्तेचतसः अर्दाकरणेचतसः प्रवीविश्वतिः सादशभगादिकेकोद्दर-संभवः प्राप्तेते । सक्षकाउदेण्युज्यतिः सादशभगादिकेकोद्दर-संभवः प्राप्तेते । सक्षकाउदेण्युज्यतिः सादशभगादिकेकोद्दर-देवस्त्रान्यस्य प्रचानम्बन्यस्य । स्मान्यस्य । सम्प्रक्तान्यस्य । दयस्य साद्यान्यस्य । स्वयं प्रचानस्य । स्वयं स्वयं । स्वयं स्वयं । दयस्य साद्यान्यस्य । स्वयं प्रचानस्य । स्वयं स्वयं । तस्य प्रचानस्य स्वयं । तथाकेवर्यक्षकेपणह्यावेसोहमापीदयाः - भावात् भंगानभवि । ययास्यावेउपशांतापेद्धया अग्राविशतिः - पर्दाविशतयः एकविशतिरूपासत्ताभवतिनक्षपक्रस्येतिस्वयम्ब्रम् १८६ - दवार्थः — स्वयं मोहनीकर्मना भागा कहे छे । उपशमसम-

व्यायं: —हुवे मोहुनांकर्मना भांगा कहे छे । उपशमसमकित तथा क्षायिकसमिति वीस चोवीस सत्तर भांगा छे २०।
२४।१०। तिहां समित्रतग्रणटाणेउद्देव १ चोवीसीमात उदय
२ चोवीसी आटमे उद्देवे एक चोवीसी ईम पांचमे गुणटाणे
पांचने उद्देवे एक चोवीसी ने २ चोवीसी ० उद्देवे एक
चोवीसी छ ग्रुणटाणे च्यार उद्देवे एक चोवीसी ५ उद्देवे २
चोवीसी ६ उद्देवे एक चोवीसी सातने पण च्यार चोवीसी
आटमे ४ चोवीबी इम चोवीसी थई ॥ क्षायोपशमसमिति
सीछ चोवीसी समित्रनगोहनीना उद्देशहिनची हेवी केवलडुग
प्याख्यातचारित्रते मोहनीनो अंगो नवी ॥ १८६॥

सुहमेगंसेसेसुअ, मग्गणठाणेसुग्रणभवाभंगा । चउनीसगायभंगा, पयसंखाउदयपचईया ॥१८७॥

डीका—ग्रहमैगंसेसेसुअइत्यादि॥ बृक्ष्मसंपरावेषुकलोभोदय-कर्पभंगकं सेसेसुइतिहोपेषुमागंणास्थानेषु, गृणभवापस्यांमार्गणायां-यादंत्यः चतुर्विद्यतयः तस्यांतावंत्यः चतुर्विद्यतयेद्रियाः तगर्यः स्यांभागांसिक्याभवति, भगसंक्याच्यद्रयस्यानसंख्यागितागर्यः संस्याभवति । तत्रनरकानोषित्यान्वेश्वशेशकृकायः नात्रकर्य-नापुंसक्वेदीद्रयात्नानुसंक्केद्रप्रत्यात्रश्चीभागभवति । तेननरकार्ताः अष्टकापृवत्यसप्तोदयेषुकः अष्टोदयेत्रयः नवीद्रयेत्यः दशोदयेषुकः पृदंभशिअकृकासतस्यभंगाश्चतःशिक्षः साह्यदनिसप्तेदवे पृकःअष्टो- कः अध्ययम् । नवीरवेषुकः प्रयन्यामे अध्कारनस्य गाँवार्यकार ा १००० वस्यभगान्तार्वस्य, मिधेसमीर्वे-ज्ञातिक्षम् । त्राचीक्ष्यं व्यक्तिक्षः न्योद्देशे पुरं अष्टो अष्टकाः ' नस्यभगाथतः पहिः सर्वसब्ययाभगा एकंशतः तत्त्विकं भगानाएतेचभगक्तः व्यवस्थानगुणिताः पर्वत्रसंख्याः नेमपद्दवेसम्भगाः पृङ्गुलिनाःभग्नेनत्वारिक्षत् पर्वेताः अध्यक्तारसम्भंगाः तेचनामगुणिताः प्रगनिसमिकानिसः विज्ञानिभगा वैचाह्यानिनाः चन्नास्त्राम्पिकंपर्साने अष्टुष्तन्वारिहान् भेगान्तेचननगुणिनाश्चतः सन्दर्शवस्थान भवान । द्वादिवेजागुरम्माः वेचस्वगृषिताअसीतः विनि, एवचसवसस्यचापचर्रस्यानीनपरविद्यार्षिकानि वंति ॥ एवसर्वनभावनाकार्या ॥ १८७ ॥ —ग्रमसंपरापमच्चे होभनो उदयनो एक भंगो छे. च रमंत्र मार्गणाचे गुणटाण प्रत्यवी चीवीसी. पार्गमा चरजी चोबीसी होवे वेहने चोबीस पारं भागानी सन्त्या आहे, अने जे भंगा जे होवे ते भांगा वे स्थानक गुणा करीवे वेवारे एडले दसने उन्ने चोनीसी १ वेहना भागा प्रणा करीचे वैजारे २४० वह संख्या छे इस गैस, दुगिसोलसपगिअडमंगाय । ी, भंगायुणहाणसंखसमा ॥१८८॥ इतिमोहोर्यमंगाः 190

- भावात् भंगानभवंति । यथाख्यातेउपशांतापेक्षया अप्राविंशतिः -चतुर्विंशतयः एकविंशतिरूपासत्ताभवतिनक्षपकस्येतिस्वयमुद्धप्र१८६

ट्यार्थ:—ह्ये मोहनीकर्मना भांगा कहे छे। उपशमसमकित तपा झायिकसमिति वीस चोवीस सत्तर भांगा छे २०।
२४।१०। तिहां समित्रतागुणटाणेउन्ये १ चोवीसीसात उद्दर्भ
र चोवीसी आटमे उद्दर्भ एक चोवीसी हूंम पांचमे ग्रुणटाणे
पांचने उद्दर्भ एक चोवीसी ने २ चोवीसी ० ने उद्दर्भ एक
चोवीसी छ गुणटाणे च्यार उद्दर्भ एक चोवीसी ४ उद्दर्भ एक
चोवीसी ह उद्दर्भ एक चोवीसी मातने पण च्यार चोवीसी
आटमे ४ चोवीबी इस चोवीसी थई ॥ क्ष्रयोग्दशससमिति
सोठ चोवीसी समित्रतानी ना उद्दर्शाहननी वेदी वेदछाग
प्रपाल्यातचारित्रते मोहनीनी अभी नवी ॥ १८६॥

सुहमेगंसेसेसुअ, मग्गणठाणेसुगुणभवाभंगा । चडवीसगायभंगा, पयसंखाउदयपचर्ड्या ॥१८७॥

दीका—सहस्रेगंसिस् अङ्ग्यादि॥ स्वश्मतंपार्यपृक्ष्टोभोदय-रूपंभगकं सेसेस्वद्वतिशेषुस्रागंणास्थानेषु गुणभवासस्यांमागंणायां-यावंत्यः चतुर्विशतयः नस्यांतावंत्यः चतुर्विशतयोज्ञेगाः तथा यस्यांमागंणायांयावन्त्यः चतुर्विशतपस्ताअतुर्विशतित्रांमार्गः रूपाभगानांसंस्याभवति, भेनसंस्थापवद्यवस्यामान्यात्यः संस्थाभवति । तमनस्करातीस्यात्यवश्चित्रकृष्याः नारुत्य-रूप्तंसक्वेदोद्यान्तुसस्केद्वप्रथयाक्ष्यंभगाभवति । तेमनस्कर्यात्यः अञ्चर्याय्वत्वसस्तित्येषुः अष्टोश्वेययः दशोदयेष्यः प्रविश्वेष्टकास्तरस्यभंगाश्चाःयाः सास्यादनस्तित्याद्यं प्रकारो

१९६

ट्यार्वः — मृश्यसंपराष्ट्रमध्ये टीभनी उत्थनी एक भंगी है. भीजी मार्गणा च स्वान मार्गणाये पूणटाण प्रत्यवी श्रीवीसी. जाणती. जे मार्गणाचे चेटली श्रीवीसी होये वेहने श्रीवीस गूणा क्रिये नेमारे भागानी मध्या आहे, अने जे भंगा जे उत्थरभाग क्रिये वे भागा ते स्वानक गुणा क्रिये वेहारे प्रत्य स्वाया आहे पुटले दसने उत्थे श्रीवीसी १ वेहना भांगा २५ वेहने दस गूणा क्रिये वेहारे २४० पर संख्या हो इस्स्तरं जोडी हेम्सी. ॥ १८७॥

वेयतिउदयन्यउपीस, दुगिसोल्सम्मिअहभंगाय । कोहाइसुरुगसंखा, भंगागुणहाणसंदसमा ॥१८८॥ इनिमोहोदयभंगाः

तानिपंचपष्टिअधिकानिपद्शन्दचत्।विश्तिकावीणिशतानिद्विपंचाश-दिषकानिचतुर्विशतिग्रणितचतुर्वातिशनान्यष्टचत्वारिशत्वेचएको-निवशत्मिख्ताश्चतुःवीतिशतसतस्तातिः पदश्दकाभवंतिग्रलपदि-वेद्रवयेद्विपंचाशत्अष्टकाश्चत्वारीभंगाः एकदिपद्वीदिपयीदिपवति द्विपपृथ्वीकापअपकापवनस्पतिकाप असंज्ञिमार्गेणासदादशाऽष्टकाः पण्णवतिभंगाअष्टशतानिपदृष्टंदकाभवंति। तेजीवायुकायस्थणासुमा-र्गणासुअष्टीअष्टकापुषुन्धंसक्तेदपुर्वोद्दयात् क्यायचतुष्ट्येद्दिपंचाशत्-पर्काः पर्विशातिरष्टविशातिरेकोनविशत्भंगालभ्यते । मत्यादिन ज्ञानत्रयेअवधिदर्शनेषदर्शिशन् चतुर्विद्यतिकाः सप्तदशभगाभवंति। मनःपर्यवज्ञानेसामायिकेच्छेदोपस्थापनीयेविंशनिचत्वविंशतिकाः स-प्रदशभगकास्तवप्रमन्ते अष्टी अपमत्ते अष्टी अपूर्वेचत्वारः पृवविशतिः चतुर्विशतिकाः नवमेदशमेसप्तदशभंगाभवंति ॥ अज्ञानप्रयेमि-ध्पात्वसास्वादनिश्वसंभवाः षोडशचतुर्विशनयः परिहारविद्यद्वी-प्रमत्ताप्रमत्तभवाः षोडशचत्रविशतयोगिष्यात्वेसास्यादनेमिश्चेदेश-विरत्ते।अष्ट्रीचतस्रधनस्रः अष्टीस्यस्वग्रणस्थानसंभवाधत्वविद्यातयः अविरतिमार्गणायां मिथ्यात्वादि अविरतसम्यगृदर्शनग्रुणारयानसंभवा-श्रतविशतिचत्रविशतयः कृष्णादिलेदयात्रयेचत्वारिशत्चत्रविशतिकाः तत्रमिष्यात्वे अष्टीसास्वादने चत्वारोमिश्रेचत्वारः अविरवे अष्टीदेशवि-रतेअष्टी प्रमनेअष्टी एवंचरवारिशत्, तेजः पद्मलेश्याद्वयेषस्वारि-शतपूर्वोक्ताअप्रमचसंभवाअशीप्रवेअष्टचरवारिशत्चत्रविशतयः अन भव्येचतस्रः चत्र तत्रअनंताञ्जंषिउद्यरहितामिष्यात्वसंभवाअ-भग्यस्पनभवंतिवेनअष्टोदयाएकानवोदयाद्वेदशोदयाएकाप्राप्यवे । अनाहारकमार्गणायांविंशतिश्वतिंशतयः तत्रमिध्यात्वेअष्टीसास्वा-दनेचतस्रः अविरतेअधीपूर्वभवंति सर्वामुमार्गणामुभंगाः पद्दंद-संख्याःस्वतः करणानुसारेणऊद्याः इत्युक्तामोहोदयभंगामार्गणास् ॥ १८८ ॥ साम्रतनामकमेत्रेयभंगकानुदर्शेयहाह ॥

टपार्थ:—वेद वीन जिहां उदय होवे वे मार्गणाये चोवीस भंगा होवे, जिहां २ वेद उदय होवे तिहां सोठ भंगा होदे 51 जिहां एक वेर उरप होने तिहां ८ भंगा होने, जिहां कपाय उरप होने तिहां छ भंगा होने, च्यार कपाय होने २४ भंगा होने. तया नरकगति पांच थानरे असंज्ञी भ मार्गणाये नपुंतकनेद १ उर्घ छे तेमाटे भंगाना अष्टक क क्रोधकपाये नेद तीनना ३ भंगा ते हास्परतियी वर्छ ३ अस्ती शोकया इम आणवा इम स्वन संभार्छ हेवा।।१६

तेवीसपन्नवीसा, छ्वीसाअङ्घवीसग्रुणतीसा । तीसेगतीसमेगं, वंघठाणाणिनामस्त ॥ १८९ ॥

वीका—वेवीसपन्नवीसा इत्यादि ॥ नाम्मः अर्थे।वंधस् नानि ॥ नव्यथा ॥ वयोविकातः पंचविक्षातः पद्दिव्यतिः अर्विव्यत्यः पक्षित्रम् पद्दिव्यतिः अर्विव्यत्यः पक्षित्रम् पक्षित्रम् पद्दिव्यतिः अर्विव्यत्यः पक्षित्रम् पक्षित्रम् प्रकृतिव्यतिः अर्विव्यत्याः अनेकमकाराणिततस्त्येवोयद्वय्यत्यतिः अर्योत्यायाः सामान्येनपंचस्थानानि ॥ तव्यथा ॥ वयोविक्षाः पंचविक्षातः सामान्येनपंचस्थानानि ॥ तव्यथा ॥ वयोविक्षाः पंचविक्षातः विक्षित्रतिः पद्दिव्यतिः एक्षेनविक्ष्यानानिक्योविक्षातः विक्षितिः पद्दिव्यतिः पद्दिव्यतिः पद्दिव्यतिः विक्षित्रम् स्वत्यतिः व्यव्यविक्षातिः वित्यत्यतिः विक्षित्रम् विक्षातिः विक्षित्रम् विक्षातिः विक्षित्रम् विक्षातिः अर्थे। विक्षित्रम् विक्षातिः अर्थे। विक्षातिः विक्षातिः

वनयोविंशतिः पराचातोच्छ्वाससहितापेचविंशतिः नवरंप्रकृति-ातिर्पगृद्धिकंएकेंद्रिपजातिः जीदारिक्तीजसकार्मणानिहंडकसं-नंवर्णोदिचतुष्टयं अगुरुह्युनाम उपचातनाम पराघातनाम द्वासनाम स्थावरनाम पर्याप्तकं बादरमध्मयोरेकतरक् मृत्येकसा-णयोरेकतरत् स्थिरास्थिरयोरेकतरत् शुभाशुभयोरेकतरत् यशःकीर्ति-शः कीरपोरेकतरम् दुर्भगनामअनादेपनामनिर्माणनामइतितासा-विश्वतिमक्रतीनांसमुदायः प्रकंषधम्यानंतद्यपर्याप्रकेकेन्द्रियमा-ग्यंबंधतीमिथ्यादृष्टेरेवगन्तव्यंअयभगाविद्यतिः तत्रवादरपर्याप्त-वेकेप्रस्थितस्थिरहाभागुभयशः कीत्यंपशः कीर्तिपरर्रहाभंगारत-बादरसाधारणतः मुक्ष्ममत्येकतः सक्षमसाधारणतः चत्वारक्षत्वा-भंगाः यतः अत्रयशः कीर्तिनाम्नः बद्याभावात्रपत्वारएवभंगाः वविदातिः पूर्वे।त्कत्रयोविदातिः यंत्रस्यानेरचात्रस्नामपुकेन्द्रिय-।तिरितिमकृतिद्वयंदिनानसनामसेवालेसंहननऔदारिकांगोपांगद्वी• द्वपादिपुरकाजातिः इतिचतुष्टयेक्षिमेपंचिवशतिः सायदीन्द्रियाः जातिचतुष्कान्यतरेणचस्वारोभंगाः एवंतियरगातिमायोग्याचतु-शातिः तत्रपादरम्ययेकप्रायोग्याष्टकभंगरूपापंचित्रशतिः देवितिः गमनुष्याः बंधेकुर्वतिशेषाभंगाः षोडदातिर्वगनसप्तवभंति देवानां त्रागुमनान्तिर्परपंचेन्द्रियमायोग्यपंचित्रिशतीतिर्पमद्वितंनिप्कास्यते नुष्पद्भिकंक्षिप्पतेद्वयेषापंचित्रिंदातिः मनुष्यापर्याप्तयायोग्यातिपर्ग-नुष्पास्तेजोत्रायुकायवर्जावदंति । इत्येत्रंपचित्रहातिः वंषेपंचित्रहा तेभंगाः बादरमत्येकपंचनिद्यतिमन्ये आतपयुक्तांषद्विद्यतिः बद्यति। अथवा उद्योतपुक्तापदविदातिः एकेन्द्रियप्रायोग्यात्रिगतिकामिण्या-ष्ट्यः मर्प्रतिपोदशभंगाः तथा धुनर्विननकं वसवादरपर्यास्रपत्रे-हरूपंचनुष्टयंपंचेन्द्रियजातिः परादातञ्ख्वासनामबद्धिपद्भिकं देत्र-द्वेकशुभविद्वापीगातिः । समचतुरस्रंसस्थानंस्थियास्थिरयोरन्यतस् जिहां एक वेद उदय होने तिहां ८ भंगा होने, जिहां एक कपाय उदय होने तिहां छ भंगा होने, ज्यार कपाय होने तिहां २४ भंगा होने. तथा नरकगति धांच थावरे असंती एउंगे मार्गणाये नपुंसकतेद १ उदय छे तेमाटे भंगाना अष्टक कहेंग, क्रोयकपाये नेद तीनना ३ भंगा ते हास्परतियां वर्छ ३ भंग अरती शोकयी इम जाणवा इम स्वंत्र संभार्छ छेवा।।१८८॥

तेवीसपन्नवीसा, छवीसाअहवीसगुणतीसा । तीसेगतीसमेगं, वंधठाणाणिनामस्स ॥ १८९ ॥

टीका—वैवीसपत्रवीसा इत्यादि ॥ नाम्नः अष्टीवंधस्याः नानि ॥ तद्यथा ॥ वयोर्विशतिः पंचर्विशतिः षद्दविशतिः अष्टी-विंशतिः एकोनिवंशन् विंशत् एकविंशत् एकंचेत्यशै, अमूनिधः गतिप्रायोग्यतया अनेकमकाराणिततस्तत्रेवोपद्दर्यवेतन्रतियेगगति - प्रायोग्यंत्रञ्जतः सामान्येनपंचस्थानानि ।। तद्यथा ।। त्रयोगिंशतिः पंचर्विशतिः षड्त्रिंशतिः एकोनत्रिंशत्त्रिशतः । तत्राऽप्येकेन्द्रियमाः योग्पंत्रप्रतः त्रीणित्रंघस्थानानित्रयोत्रिंशतिः पंचित्रिंशतिः पद्धिः र्शातिः तत्रप्रयोविंशतिः निरियंतिर्यम्द्रिकंएकेन्द्रियज्ञातिः औदा-रिकतेजसकार्मणानिहुंडकसंस्थानंवर्णगंधरसस्पर्शचतुष्ट्यं अगुरुल्छ-उपचातनामस्थावरनामम्बक्ष्मवादरयोरेकतरद् अपर्याप्तनाममृत्येकसाः धारणगोरेकतरद् अस्थिरअशुभद्रभगअनादेयअयशः कीर्तिनामनि॰ र्माणनामपुतासांत्रयोदिंशनिष्रऋतीनांसमुदायपुक्तंववस्थानपृतधाप र्याप्तप्रायोग्यंवस्तः मिथ्यादृष्टेरवसेयंअवभंगाश्चत्वारः तयाहिबादरः नाम्निबध्यमानेप्रत्येकेनसहुएकः तथाबादरसाधारणेनसहुएकः मू क्ष्ममत्येकेनसहुणुकः सक्ष्मसाधारणेनसहुणुकः सर्वसंख्यपाचतस्रः

वश्योविंशतिः पराधानोध्द्रशाससद्विनापेचर्विशतिः नवरंमऋति-मतिर्पम्द्रिकंएकेद्रियज्ञानिः औदारिक्तैजसकार्पणानिहंडकसं-ानंत्रणोदिचतुष्ट्यं अगुरुलघुनाम उपघाननाम पराघातनाम एवासनाम स्थावरनाम पर्योगकं वादरमध्मयोरेकतरक् प्रत्येकसा-णपोरेक्तरत् रियरास्थिरपोरेकतरत् द्यभाग्रभपोरेकतरत् पशःकीर्ति-शः क्रील्योरेकतरन् दुर्भगनामअनादेयनामनिर्भाणनामइतितासां-यत्रिशतिमक्तीनोसमुदायः एकंग्रेयस्थानतधपर्याप्रकेकेन्द्रियमा-र्यवंश्रतीमिष्यादृष्टेरेचगन्तव्यंअपभंगाविंशतिः तत्रवादरपर्याप्र-त्येकेषुश्यित्तरियरद्यभागुभयशः कीर्त्ययशः कीर्तिपेररष्टीभंगास्त-वादरसाधारणतः सूक्ष्मपत्वेकतः सृक्ष्मसाचारणतः चत्वारक्षत्वा-भंगाः यतः अत्रयशः कीर्तिनाम्नः वंशाभावातचत्वारएवभंगाः वंतिशतिः पूर्वोक्तत्रयोविशतिः वंत्रस्थानेस्थावरनामपूर्केन्द्रिय-वातिरितिमकृतिद्वयंविनानसनामसेवात्तसहननऔदारिकांगोपांगडी-न्द्रमादिपुएकाजातिः इतिचतुष्ट्वेक्षिप्तेपंचित्रशतिः साचद्वीन्द्रिया-देजातिचतुष्कान्यतरंणचस्वागेभंगाः एवेतिर्यम्गतिमायोग्पाचत-वेशतिः तत्रवादरम्ययेकमायोग्याष्टकभेगरूपापंचर्विशतिः देवति-वंत्रमनत्याः वंदेकवितिरोपाभंगाः पोडदातिपंगनराप्ययभंति देवानां and the second

अथवा उद्योतयुक्तापड्विंशतिः एकेन्द्रियपायोग्यात्रिगतिकामिथ्या-ष्ट्रधः बद्रांतिपोडदाभंगाः तथा वृवर्त्रधिनवर्क बसवादरपर्याप्तप्रत्ये-करूपेचनुष्टयंपेचेन्द्रियजातिः परायातउच्छवासनाभनाक्रियद्विकं देव-द्विकंशभविद्वायोगितः १ समचतुरस्रंसंस्थानंस्थितास्थिरयोरम्यतरत 208

.

na sata ini

शुभाशुभयोरन्यतरत्यञः कीर्त्ययशःकीर्त्योर्न्यतरतसुभगगुस्तरादेयन त्रिकं एवंअध्टार्विशतिः देवगतिप्रायोग्यातबाष्टभंगाः स्थिरास्थिर शुभाशुभयशः अयशः परययाअध्येभंगामिय्यात्वगुणस्यानकतः अपूर्वकरणपर्यतं द्विगतिकास्तवतिर्यचोबेशविसतियावत् मतुष्याअपूर र्षकरणयानन्मग्रेति । तया व्यननयकं पंचेन्द्रियजातित्रसचतुष्कंपरा-घातउच्छ्वासवैकियद्विकंनस्कद्विकं अग्रुभविहायोगविसेवार्त अन स्थिपद्कंडरयशार्विशाति । नरकगतिमायोग्यांतिर्यग्रंचेद्रियसंश्यसं-ज्ञिनः मनुष्यपंचेंद्रियासंज्ञिनः बदांति । विकर्रेद्रियप्रायोग्यपंच विंशतीकुखगतिः पर्याप्तपराचातोङ्वाससस्वरमक्षेपेअपर्याप्तनामभः पहारे एकोनत्रिंशतंतिर्यंग्पंचेंद्रियामन्त्रचाः बदाति विकलप्रायोग्याः मिथ्यादृष्ट्यस्तत्रद्वीदियादिषुप्रत्येकमष्टीभंगाः एगङ्कअङ्कदिगलाण-इगवणतिण्णंपि । तिर्यग्गतिपंचेंद्रियमायोग्यंबधतः नानि । तद्यथा । पंचर्विशतिः एकोनविशतविशत्तत्रपंचर्विशतिः पंचेंद्रियजातियुक्तातत्रैकोभंगः एकोन्निंशतपुनिर्यतिर्पग्पंचेंद्रिय-जातिः औदारिकद्विकंतैजसकार्मणेषण्णांसंस्थानानांपृकतरत्पण्णां-संहननानांपुकतमत्संहननंवर्णादिचतृष्ट्रपं अग्रुरुखपूपवातंपराघातं उछ्वासनामपशस्तापशस्तविहायोगत्योरेकतरात्रसनामबादरनामप-र्याप्तनामप्रत्येकंस्थिरास्थिरयोरेकतरत्शुभाशुभयोरेकतरत्सुभगदुर्भ-गयोरेकतात् सुस्वरदुःस्वरयोरेकतात् आदेयानादेययोरेकतात्पशः कीरर्ययशः कीर्त्योरेकतस्त्विनर्भाणमितिएकोनत्रिशत्मकृतीनामेकंत्रेधः स्थानंपृतचमिय्यादृष्टिपर्याप्ततिर्यग्पेचेद्रियप्रापोग्यंबप्रतः वेदितन्यं-यदिपुनः सास्यादनेबंधको भवतितर्हिपंचानांसंस्थानानांपंचानांसंह ननानां अन्यतमन्संहननसंस्थानसितिवक्तव्यं । अस्यांचैकोनविं शत्यांसामान्येनपड्भिः संस्थानैः पद्वेचसंहननैर्गुणितापड्रिशित् वेचविहायोगतिद्वयेगुणिताद्वासप्ततिः वेचस्थिरद्विकगुणिताक्षयारि

शन्छतंत्रेचगुभागुभद्रिकगुणितादिशती अष्टाशीत्यधिकाभवंतितेच सभगदर्भगद्विकगुणिताः पंचशतीपरसप्ततिर्भवंति वेचसुखादःस्वर-ग्रणिताः एकादशशतद्विपंचारानुभंगाः भनंति वेचआदेपानादेया भ्यांग्रणिताः प्रयोविंशतिशतानिचतुरिषकानि भवंतिवेचयशः अयशोभ्यांगुणिताभंगा अधिकंषद्चत्यारिशच्छतसंख्यावेदितग्याः एपेवएकोनिविशद्दवीतसहितानिशद्दभवंति अनापिमिध्यादधीनुसा-स्वादनानिधक्रत्यत्येवावगतन्यो अवापिअष्टाधिकपद्चारवारिशच्छ-तसंख्याभंगानांभवति ॥ उक्तंच ॥ युणतासतीसेवियभंगाअहा-हीयाउपाटसवापंचेदिवितियतिरिजीगापणवीसत्रंबेभंगिको ॥ १ ॥ सर्वसंख्यपाद्विनवतिशतानिसप्तदशाधिकानि सर्वस्यांतिर्यग्यतीसर्वसं-रूपपाभंगाः त्रिनत्रतिशतानि अष्टाधिकानि॥ मनुष्पगतिष्रापोग्पंपच-विश्वतिसत्कंभंगं एकंपूर्वे क्तंतिर्पंगाविष्यापोर्ग्यकोनविश्वतिविर्पेगृहिका-पसारेनरिकक्षेपेअग्राधिकपदचत्वारिसच्छतसंख्याभंगाः भवंति ॥ प्तांभिष्याद्यक्षः सास्वादनमिश्राविस्तसम्यग्द्यदेशंत्रधाति । तत्रसः स्परदृष्टिप्रस्यपाएकोनविंशत जिननामसहितानिंशत अत्रचस्पि-

विद्यास्तरभाग् वस्युवास्त्रवस्यायस्य नामशावित्यस्य क्रिया विद्या । स्विति ॥ स्यारेनाद्विकद्रेपे अधाधिकप्रदर्शनार्थस्य स्यारं । स्विति ॥ स्यारेनाद्विकद्रेपे अधाधिकप्रदर्शनार्थस्य स्यारं । स्वति ॥ स्यारेनाद्विकद्राम् व्यारेनाद्विकद्र्यास्य । स्वत्यं स्यारेनाद्विकद्र्यास्य । स्यारेन्द्विकद्व्यास्य । स्यारेन्द्विकद्व्यास्य । स्यारेन्द्विकद्व्यास्य । स्यारेन्द्विकद्व्यास्य । स्यारेन्द्विकद्व्यास्य स्यारेन्द्विकद्व्यास्य स्यारेन्द्विकद्व्यास्य स्थारेन्द्विकद्व्यास्य स्थायस्य स्थारेन्द्विकद्व्यास्य स्थारेन्द्विकद्व्यास्य स्थारेन्द्विकद्वयास्य स्थारेन्द्विकद्वयास्य स्थारेन्द्विकद्वयास्य स्थारेन्द्विकद्वयास्य स्थारेन्द्विकद्वयास्य स्थारेन्द्वयास्य स्थारेन्द्विकद्वयास्य स्थारेन्द्विकद्वयास्य स्थारेन्द्वयास्य स्थारेन्द्वयास्य स्यारेन्द्वयास्य स्थारेन्द्वयास्य स्थारेन्य स्थारेन्द्यस्य स्थारेन्द्यस्य स्थारेन्द्यस्य स्थारेन्द्यस्य स्यारेन्द्यस्य स्थारेन्द्यस्य स्यारेन्द्यस्य स्थारेन्द्यस्यस्य स्यारेन्द्यस्यस्य स्यारेन्द्

बंधकः सम्पर्वाष्टः मृत्रुष्योवंयकोभवति ॥ तयाचोक्तं ॥ अष्टर्वप् केकभंगा अद्यारदेवजोगगासु । तथानरकगतोअग्रुभाष्टाविवातिवरम् पंपुकं एवभंगकिमध्यादृष्टिरेववद्याति । नरकद्विकवंयस्तुमिध्याते प्रवप्कंतुषंयस्थानंयकाःकीर्तिच्छाणंतचदेवगतिप्रायोग्यवेवयविद्वाति प्रवप्कंतुषंयस्थानंयकाःकीर्तिच्छाणंतचदेवगतिप्रायोग्यवेवयविद्वाति मेअपूर्वकरणादीनांवयाणांअवगंतव्यं ॥ संवतिकरिमन्वेवस्थानकैः कतिभंगकारनमिक्षस्पणार्थगायामाह ॥ १८९ ॥

चउपणवीसासोलस, नववाणुईसयायवायाला । प्यालुत्तछायाल, सयाइकिकवंधविही ॥ १९० ॥

टीका—चउपण धमकारावेदिन्य्याः

यमकारावाद्वाच्याः
दियमायोग्याभेत्रव्यातिविज्ञेषाः नात्यप्रपंचविज्ञातित्यानेपंचविज्ञाति
भेगाअनेविद्यम्भायोग्यापंचाविज्ञातिव्यातः विज्ञातिः अपयोज्ञाति
भेगाअनेविद्यम्भायोग्यापंचाविज्ञातिव्यातः विज्ञातिः अपयोज्ञ्ञाति ।
विज्ञातिविज्ञ्यातिविज्ञ्यात्वाचिज्ञातिवेश्वायोग्यापे व्यातामेक्षेत्रद्विषम्भायोग्यापे व्याताभ्याव्याव्यात्वाच्यातिव्यायोग्यामेष्वे ।
वान्यव्यायाग्याम्याव्यायाग्यायं पृक्षपृक्षेनविज्ञात्व्यायानेभगानवत्यवर्षपातिभायोग्यामेष्वे ।
वान्यवायाग्यायायायाय्याय्यायायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्याय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्याय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्याय्यायाय्याय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्याय्यायाय्याय्याय्यायाय्याय्याय्यायाय्याय्याय्याय्याय्याय्यायायाय्याय्याय्याय्यायायाय्य

ग्रसर्वेत्रंयस्थानेषुभंगाः अयोदशसहस्राणिनवशनानिपंत्रयत्वारिशदः षेकानिभवेति, इत्युक्तानामकर्मणः वेद्यभंगाः, सांगतंनामकर्मणः इदयभगसंख्याप्रतिपादनार्थमाह ॥ १९० ॥

तिसग्वीसागचउवीसाय, एगाहीयाअङगतीसा । उदयठाणाणिभवे, नवअहपहुंतिनामस्त ॥ १९१ ॥

टीका-उदयस्थानानिद्वादश, तद्यथाविंशतिरेकविंशतिः चत-वैद्यातिः पंचविद्यातिः पद्मविद्यातिः सप्तविद्यातिः अध्याविद्यातिः पन होर्नाषदावृत्रिद्धाव तथा नवअप्दीचएनानिविकेदियाचपेक्षपानाना-रकाराणि, इतितानाश्चित्यसां प्रतमुपददर्भते इतिन न पुर्वेदिपाणा<u>मुद्रय</u>-पानानिपंचतद्यथापकविंगतिः चतुर्विंगतिः पंचविंशतिः पद्वविंशः

engage of the control of the state of the control o agaites to the control of the contro अपशः इतिवेनसङ्घन्यारः भारस्पर्पाप्तस्ययशसासङ्घेचमः सक्ष्म-पर्पाप्ताम्यांसहयशः कीर्ते रुदयोनभवति । वेननदाश्रिताविकल्यान-भवंति । एपाचिकविदातिरेकेन्द्रियस्यापानराष्ट्रगतीवर्त्तमानस्यवेदिः तव्याततः शरीरस्यस्य जीदातिकशरीरदृडकसंस्थानंउपवातंप्रत्येक-साधारणयोरेकतरदितिचरस्रः प्रक्षिप्यते । नियंगाउर्र्वीचापनीयते ततश्चतुर्विशतिभेवति । अनचभंगादश् ॥ तद्यया ॥ बादापयोप्तस्य पत्येकसाचारणयशः कीर्च्ययशः कीर्त्तिपदैश्चत्वारः अपर्यासवादरस्यप्र+

कसायारणपोर्षयाः क्रीट्यांसहयत्वारः इतिदश्च वाद्रश्चात्रक्षयं स्वित्रं वाद्रश्चीतं कर्षयं सित्रं पुरुषे जीदारिकस्थाने वैकियं कर्ण्यत्वव्यत्यारिष्णु विद्याति रुद्धे पाप्पते । केवटमिहवाद्रस्पर्धाप्तप्ये कार्यक्षयाः क्रीतं विद्याति रुद्धे पाप्पते । केवटमिहवाद्रस्पर्धाप्तप्यक्षयाः क्रीतं विद्यात्रस्य क्रियायः क्रीतं विद्यात्रस्य क्रीतं क्रियायः क्रीतं विद्यात्रस्य क्रियायः क्रीतं विद्यात्रस्य क्रियायः क्रियायः क्रियायः क्रियायः क्रियायः क्रियायः क्रियायः क्रीतं क्रियायः क्रियः क्रियायः क्रियायः क्रियायः क्रियायः क्रियायः क्रियायः क्रियायः क्रियः क्रियः क्रियायः क्रियायः क्रियायः क्रियायः क्रियायः क्रियः क्रियायः क्रियः क्

	वंचनाः	रइ र५ र६ र	२९	şo	31
٧,	पुकेन्द्रिय	४२०१६			
\$10	द्रीन्दिष	3	<	اع	
10	वीन्दिष	?	ا م	<	
30	भागुरिन्दिष	?	< !	6	: I
\$330	नियं इवंनेदिय	?	41-1	440	11
1115	मन्द्र प्यानंदिय	1 ,	410	6	1
3<	रेक्त	<	1	? . 1	
?	नार ह	?	1	;	:
	άÎ	¥44.35 \$\$	336 36	¥! }	

रयुर्वेषुकार्सभंगास्ततः शरीरपर्योपन्यापर्याप्तरस्यपराचातेक्षिमेपंची शतिः अत्रभंगाः पद् तद्यथानादरप्रत्येकसावारणपराः कीर्तिअपः कीर्तिपरेथत्वारः सुक्ष्मस्यप्रत्येकसाचारणाभ्यांअयशः कीर्पासहः तथा बादरवायुकायिकसर्यविक्रयंकुर्वतः शरीरपर्याप्यादस्य पर

षातेक्षिप्तेपंचविंशतिर्भवति अवषमान्वदेवेकपृवर्भगः सर्वमस्यया चर्विशतीसप्तभैगाः प्राणापानपर्याप्यापर्यासम्बद्धशासेशिक्षप्रहाः शतिः अत्रापिभेगाःषद् तद्यथाबादरस्योग्रीतेनसहितस्यप्रत्येकसाधा रणयशः कीर्त्तिपैदेश्वन्वारआनपसहिनस्पथप्रन्येकयशः अयशोग्यांही बादरवायुकायिकस्यवैक्रियंकुर्वनःप्राणापानपर्याप्रयापर्याप्रसस्य उर्दछं ।

से शिक्षेमा गुस्तापंच विदाति पह विदानि भैयनि तनापिमानवदे कण्य भैग वेजस्कायिकवायुकायिकयोरानपो द्योतयकः कीसीनां उदयाभारान तदाभिनाविकल्पानमाप्यवे सर्वसंख्यपापइविद्यानीवयोदशभंगाः । तथामाणापानपर्यातापर्योप्टयस्यउच्छ्वाससदिनापांपहर्विहानीआन्-पोद्योतान्यतस्सहितायांयदत्रयः आतपसंभगस्त्रयः उद्योतसंभगः

सप्तविंशत्यद्वयेषदसर्वसंख्ययाचिकेन्द्रियाणां भंगादिपत्वारिशन् ॥ उ-क्तंच ॥ पुगेन्द्रियउद्देसु पंचहुद्धारसन्तवेरसयउऊं । फ्रमहोभंगानां-पाटाहोंतिसंबेवि ॥ १ ॥ द्वीन्द्रियाणामुद्रयस्थानानिषद्तद्वथाए कर्विशातिः पद्वविशातिः अष्टाविशातिः एकोन्यिशतः विशाद एकः विश्वत् तप्रवृत्तोद्याद्राद्यांतिर्वगद्वितंद्वीन्द्रयज्ञातिः वसनामगादरः नामकुर्भगंअनादेवंपर्याप्तापर्याप्रयोदेकतरबुपदाः कीरपेशः कीरपेरिक-तावितिनत्रमङ्ख्यासद्वपुर्वानशतिः एपापापांतरारगतीयत्तंनातरः-

द्यान्द्रियस्यात्राच्यते अवभंगास्त्रयः, तद्यद्याअपर्यातस्त्रामोद्रयेवर्त्तन बीर्स्यासहपुतः पर्याप्तनामीदपेवर्तमानस्यपदाः रीर्विवशः क्रीनिभ्यादाविनितर्गववशरीरस्थरपञ्जादाते र श्रांराजी-दारिकांगोपांगंद्रहरूसंस्थानंसे वार्तसहननं उपधानं मृत्ये हं हतिषर्-100

प्रकृतयः प्रक्षिप्यतेतिर्यगानुपूर्वीचापनीयने जानापद्रविंशनिः अत्राः पिभंगास्त्रयः तेचपामित्रदृष्ट्याः ततः शरीरपर्योद्यापर्योतस्य अप्र-शस्तविहायोगतिपराचातयोः प्रक्षिपयोरष्टाविंशतिः अत्रयसः कीर्र्ययशः कीर्त्तिस्यांद्वीभंगीअपूर्याक्षकपशस्तविह।योगत्वोरगेद्याः भावात् । ततः प्राणापानपर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्वासेश्वितेषृकोनः त्रिवात्, अत्रापिनावेवद्वीभंगी अववा शरीरपर्याययापर्याप्तस्यउच्छः वासे अनुदिते उद्योतनाम्नि उदिवेषको नार्वेशत अत्रापिमागिवद्री मंगी-सर्वेष्येकोनार्वेशतिद्वान्द्रियस्यचत्वारोभंगाः ततोभाषापर्याप्स्यापर्यापः स्यउच्छवाससहितायामेकोनर्विञाति, सुस्वरदुःस्वर्योरेकतरस्मिन्म शिक्षेत्रिंशन्भवति । अत्रमुस्वरदःस्वरयशः श्रीर्वययशःश्रीतिपदेशः त्वारोभंगाः एवंसर्वसंख्ययाद्यीन्द्रयाणांद्राविशतिभंगाः एवं श्री-न्द्रियाणांद्वाविंशतिकान्द्रियजातिः प्रक्षेत्या एवं चतुरिन्द्रियाणाय-**पिद्वाविंशतिभंगाश्चतुविान्द्रयजात्यात्राच्याः** इतिसर्वसंख्ययाविकले॰ न्द्रियाणांष्द्षच्टिःभंगाः तहुक्तं तिगतिगहुचउछघउदिगहाणछसिहे-होइतिण्हंपि माइततिर्यग्पेचेन्द्रियाणां उद्यस्थानानिषद्न द्यथाएकः विंशतिः षड्विंशतिः अध्यविंशतिः एकोनविंशन्विंशन् एकप्रिः शरः तत्रतिर्यग्गतिस्तिर्यगातुपूर्वीपंचेन्द्रियजानिः त्रसनामगदरनामः, पर्पाप्तापर्याप्तयोरेकतरत् सुभगदुर्भगयोरेकतरत् अनादेवआदेवयोरे-कतरद्यशः कीर्स्ययशः कीर्स्योरेकतरदित्येतानवमकृतयोद्वादशसं ख्यामिर्द्वेवोदयासिः सहएकविंशतिः एषाचापांतरालगतीवर्तमानः स्पतिर्यग्पेचेन्द्रियस्यवेदितन्या, अत्रभंगानव, पर्याप्तकनामोदयेन. वर्त्तमानस्य सुभगदुर्भगाम्यां आदेयानादेयाम्यां यशः तीर्त्ति अयशः कीर्तिम्यांचाप्टीभंगाः अपर्याप्तकनामोद्येवर्त्तमानस्यदुर्भगाद्यप्रशः स्तमकृत्यासहएकएव, अन्येषुपुनः सुभगादेयंषुगपनदुर्भगानादेयं-**अगपत्** उदेतितदायदाः अयशोम्यांचत्वारोभंगाएकः अपर्याप्तस्यः

इत्येवंपंचभंगाभवंति । तद्भावनीयंततः शैरीरस्थस्यआवुपूर्वीमप्-नीयश्रीदारिकश्रीदारिकांगोपांगपणां संस्थानानांएकतमत्तर्सस्थानं-पण्णांसहनननामेकंसहननंउपवातंत्रत्येक्शमितिषद्कंपक्षिप्यवे तती-जातिपद्कंपश्चिप्यवेततोजातापद्विंशतिः अत्रभंगानांद्वेशवेएको-ननवति अधिकेतत्रपर्याप्तस्यपद्भिः संस्थानैः पद्तेचपद्भिः संह-नर्नेर्गुणिताः प्रजिश्वतेच सुभगदुर्भगाम्यांद्रासप्ततिः आदेयाना-देपाम्पांचत्रश्रत्वारिशच्छतंतदेवयशः अपशोम्पांद्विशवेअध्यशीस-अपर्याप्तकस्पडंडकसंस्थानसेवार्सद्वर्भगानादेयायशः **धिकेभवतः**, कीर्तिपदेरेकः इतिअस्यामेनपद्मविश्रतीशरीसपर्याप्यापर्याप्तरपरा-घातप्रशस्तामशस्त्रविद्वायोगतिमन्ये अन्यतरगर्ताचक्षिप्रायांअष्ट्राविं-शतिः तत्रयेमाकपर्याप्तानां द्विशते अष्टाशीत्यधिकेउसेतेअप्रवि-हायोगत्योरन्यतरमत्याइतिद्धिगुणिवेअत्रभंगानांपंचशतानिपदसप्तत्य-धिकानिभवंति । ततः माणापानपर्याप्स्यापर्याप्तस्य उच्छवासेक्षि-प्रेषकोनविशद अत्रापिभंगाः प्राविवपंचशतानिपद्सप्तरपि-कानि अयवाशरीरपर्याप्यापर्याप्रस्य उच्छवासेअनुदिवेउद्योतना-म्निउदिवेषकोनविशद्भवंतिअवापिभंगाः पंचशतानिपदसप्तरपि-कानिसर्वसंख्ययाभंगानामेकोनश्रिशद्विपंचाशद्विकानि एकादश-शतानि । ततीभाषापर्योप्यापर्याप्रसम्बर्यस्वस्वःस्वरयोरम्यतरारिमन् प्रक्षिप्तेनिशद्भवति, अनयेषागुच्छ्यासेनपंचशतानिपद्सप्तत्पिकानि उत्तानितान्ये पस्तरिद्वकेनगुण्येतेतनो जातानिद्विपंचाशरिकानिय-कादशशतानि, अथवाभागामानपर्याप्यापर्याप्रसस्यरवे अञ्चिते उद्यो-तनाम्निउदितेत्रिशद्भवति । अत्रापिभंगानांमापित्रपंथरातानिपद-सप्तरयधिकानिसर्वसंख्ययात्रिकातिभंगानांसप्तदशकाति अपार्विसत्य• धिकानि, ततः स्वरसदिवापांत्रिंदाविउद्योतनाम्निप्रदेशेषुकार्वेदा-

द्भवति । अत्रयेप्राक्त्यसाहितायांत्रिदातिभंगाद्विपंचाशद्विकएका-

दशशतसंख्याउक्तास्तपुत्रात्रापिद्रष्ट्याः सर्वसंख्ययाप्राकृततिर्वस् चेंद्रियाणांउदयभंगाएकोनपंचाशच्छतानिषडिकानि, इदानी वैकिय विरश्चांउदयस्थानानि पंचतद्ययापंचविंशतिः सप्तविंशतिः विंदातिः एकोनविंदात् विंदात्, तत्रवैक्रियांगोपांगसमचतुरस्रंउप धात्मरयेकसितिपंचमकृतयः प्रायुक्तायांतिर्यम्पंचेद्रिययोग्यायामेक विशतायक्षिप्यंते तियेगानुपूर्वीचापनीयवेततः पंचविशतिभेवति। अत्रसुभगदुर्भगाभ्यामादेयानादेयाम्यांयशः अयशोभ्यांचारीभंगाः। ततः ,शरीरपर्याप्याप्रयाप्रसम्पराचातेमशस्त्रविहायोगतीचमक्षिप्तायां सप्रविश्वतिः तत्रापिप्रामित्राष्ट्रीभंगाः ततः प्राणापानपर्यापर्या-सस्यउच्द्रतासनाम्निमाञ्चित्रे अष्टाविद्यातिभवति अत्रापिमाणिवाष्ट्री भंगाः अथवा उच्छवासेअनुदितेउयोतेउदितेपागिवाष्ट्रीभंगाः इतिपोडश-ततः भागापर्योपन्यापर्याप्तस्वउच्छ्वाससहितायां अष्टाविद्यतीसस्वरे-क्षिप्तेगुकोनविदात् अत्रापित्रागिवाद्येभंगाः तस्यांउच्ह्याससदितायां अशाविशतीस्तरेअनुदिवेअयोतनाम्निअदिवेषकोनविशत् सर्वसंस्य-यागुर्वोनिर्भेशतिपोडशनतः समुश्येस्यसाहिनायां एकोनिर्मशति उपी-वेशिंप्तनिवान् अत्रापिमागिवाशीभंगाः सर्वसंख्यपार्विकपतिरधांपर्पः' चारानुभंगाः सर्वेपांतिर्यक्पंचेदियाणांसर्वसंख्यया एकोनपंचाराच्यः तानिद्विषष्ट्यभिकानिभंगानाम्यसेयानि, सामान्येनमनुष्याणामुदयः. स्पानानिपंचत्रवयाणुकविद्यानिः पद्विक्षानिः अष्टाविद्यानिः प्रहेनः त्रिंशन् त्रिंशन्, एनानिसर्वाण्यपिययात्राकृतिर्यं क्षंचित्रियाणां उत्तानि-र्तभवानापियस्तव्यानिन गरेतियँगानितियँगानुपूर्वास्थाने मनुस्यगतिः मनुष्यानुपूर्विदिनव्येणुकोन्तिशन्ति।शब्दनीत्मदेना रक्तस्यां।(f-याद्वारकमंपनानमुक्त्वादीशमनुष्याणां उद्योगोदयाभागानननः एगोन-दिहातिभंगागांपंचकतानिषद्मभृत्यधिकानि विक्रयेका (शक्षानि दिन पंतासदिनकारवेवायगतस्यानिकामस्ययामा हत्ववतुः याणाप सी स्रीत

विश्वतानिद्धिकाणिकानिभंगानांभवंति, वैक्रियमनुष्याणामुद्दयरथा-नानिषेचतयः गणेपविश्वतिः सम्पित्रतिः अराप्तिसतिः एसोनिष्टि-राग्निशक, त्रमञ्ज्यमतिष्धिदियजातिर्वक्षिक्षेणेगीर्यागीर्यागसम्पत्-रस्रं उपयानंत्रसनामपर्याप्तनामप्रत्येकनामस्भगदुर्भगयोरेकतरदादे-यानादेययोरेकनस्ययः। क्रीत्येयसः क्रीत्येरिकतर दितित्रयोदशप्र-पृत्रयोद्वादशसंस्यामिक्योदयामिः सहपंपविशतिः अन्तरभगदर्भ-गानादेयानादेययसः कीर्र्ययसः कीर्तिपरेरशीभंगाः देशविरतानां-संयतानां चेत्रवित्रयं इत्येतां संविधासना प्रवर्भगाविदितः यास्ततः यक्रियदार्तरपर्याप्रयापर्याभरययस्य यात्रे गद्यस्यविद्यायोगती चप्रक्षित्रार्या सप्तरिशनिः अत्रापितपुराष्ट्रभेगाः ततः प्राणापानपर्याप्यापर्या• प्रस्पउच्यवासेक्षिप्रेअष्टान्शितिः अगापिमामिवाष्टीभंगाः सपनानामुत्तरंबित्रचंकुर्वनांवरीरपर्यापयाप्रयानांउच्छ्वासेअन्तरिते-उद्योतनास्निअदिवेऽष्टानिशतिः अवष्कप्रभंगः संपतानांद्रभंगा-मादेयायदाः सार्युद्याऽभावातः, सर्वसंस्ययाअष्टाविदातीविकिपवर्ताः नवभंगाः ततोभाषापूर्याप्तापर्याप्टयस्यउद्ध्वाससहितायां अप्रविश-नीतरवरंक्षिप्रकोनविदाज्ञवाति । अत्रापिषायिवादेशिंगाः अध्यवा सपनानांस्यरेअनुदिवेदःो ननाम्निउदिवेषुरोनत्रियान्भवति अगापि मार्गिवरातप्यभंगः सर्व । व्ययाविवियणुकोनविद्याति भंगानवसस्यर-सहितायांएकोनिवदानिवयतानांटद्योतनाम्निवदिवेत्रिशद्भवति. अ॰

त्रापिप्रामि वराष्ट्रसंगः सर्वसंख्ययाँचित्रयम्ब्रुष्याणाःभंगाः पंचत्रिं-शतः, आहारमधंयनानां उदयस्थानानिचन्त्रारिभवंति । तद्ययाः पर्यावदातिः सर्वावरातिः अप्राविद्यातिः एकोनविद्यन्तवआहारकः भावत् अतः एकएवावभेगस्ततः शरीरपर्यादयापर्याप्तस्यपापावे त्रसस्तविद्वाचोगनोचप्रजिप्तायांसप्तविद्यातिः अत्राप्ये रूपुर्भगः तक त्राणापानपर्योप्त्यापर्याप्तस्योजन्यतासे शिसेअशारिशनिर्भगति अगान ष्ये हण्डभंगः अथवाज्ञरीरपर्याष्ट्यापर्यातस्य उच्छवासे अनुदिवे उपी-

तनाम्निउवितेअष्टार्रश्रातिर्भगति । अत्राप्ये क्रप्यभंगः सर्वेतंहपपाः अग्रामित्रात्रीभेगाः तत्रीभाषाययोष्ट्यापर्याप्तरवउरव्याससद्वितार्य અગ્રાદિસની મુક્સરેલિકેપુકોના હશવાના અથવો કપૂત્રમાં અપા भागापानपर्यामस्यसुर परे अनुदिने उद्योतनारिमा उदितेष होनिमार्थन गाने हृत्यनंगः सर्गेळययात् होना स्त्राति शर्भगी ततीभाषाप्यीन षयाप्रयापम्यमुभागाहिनायां मुहोनां स्मिन्द्रयोतिनोविभागानि। अक्षा हे कपु इनेमः सहमग्रप्या नाहार कक्षशियां सप्तर्भगाः केपि ના પુરુષ પાનન ને દેશ, ન ચુવાનિંશતિ: વુ કર્દિશતિ: વર્ષો શતિ: માન દેશાંતિઃ નવાદેશાંતિઃ વૃક્ષીનાં સ્ત્રાનાં સ્ત્રાત વૃક્ષવિશ્વન વર્ષાં પ્રાત્ક મંજુ વર્ગા જેવામાં ત્રવે ના નિસ્તુ વનામ મારા ના મુખવામાં ના મારા નવામાં દેવે પ્રમા भारतकारणाद्वी स्पानः सन्धानस्याति, नगरिवातः औररोजनः देशा चारा वे हर है इंडिन: यन्द्र वाना इत्यापा हार्यण हारपी वे स्तेषा-નવ્ય 1'જન્યું વર્ષને શે ફર્સાનુકના વે હકનાપુરાજનાણ હો ફર્સાનું કર્નને 8મેઇન द्रवास मिन्द्रर है रोखनः अस्य प्रत्यानकार हानेण हायपोगे प्रतीपानः एक एडक्क-दक्तानक व स्व देशना । जेल्लास इत्यारक्षणा परपानानी દેશના લેખના કરિયાર શકાર છે. મહાના મામલા સામા છે છે. राजिकामांत्रकार प्रकृत है। भारत हो रहा है वह देश है की पाल होगी। र्व : कश्चन श्वचान श्रेनातम्य भिक् 经保管 电影一色 经债权 masses were store with grander the इंक्टर जन्महरूत्यभागात्म, जोशानाम शर्विभ

हितासप्तविंशतिर्भवति एपातिर्यक्तकेविष्टनः औदारिकमिधकाप-ोगैवर्तमानस्पावसेया ॥ अत्रसंस्यानंत्रमचतुरस्रमेवावसेयं । ततः कपुरात्रभंगः समपद्विशानिः पराचातोच्छनारापशस्ताऽपशस्तावि• ायोगत्यन्तरविद्वायोगातिसुस्वरदः स्वरान्यतरस्वरसाहितार्विदान् एपा-तीर्थेकरकेविछनः जीदारिक कायचीगेवर्त्तमानस्यावगंतःयाअ-भंगाभतुर्विद्यातिः जीवमेदानसंभवेति । तथापिनप्रधागुर्वीताः तुष्पोदयेगृहीतत्वात् पृषवाज्ञंशतुर्वार्थकरनायसहिताप्रताज्ञात्यभः ति साचसयोगिकेविकनस्तीर्थकरस्योदारिकयोगेवर्तमानरयावसेयाः पेत्रैकपिंशद्रवाग्योगेनिरुद्धेविशद्भवनि उच्छवासेऽपिचनिरुद्धे**एको**॰ विशत्अतीर्पकरस्य केवलिनः प्रामुक्ताविशत्यागयोगेनिरुद्धेसत्ये॰ निषिद्दरभवति । अवापिसंस्थानविहायोगस्याद्वाददाभंगाभः ति, तथानगण्यंते कर्ममकृत्यादीनगृहीनस्त्रात् । तथाउद्यशामे-रिद्वेअष्टाविंगतिः अत्रापिभंगाः प्रवेतत् । तथामत्रप्यगतिपेचे-द्रपजातिषसगदरपर्शतसुभगमादेययशः कीर्तिस्वीर्थकरमितिनवीर पः एपचर्तार्थकृतं ऽोमिकेः खिनः चरमसमयेवर्तमानस्यमाप्यते-एवतीर्वकरनामगहितः अर्ध्यादयः इहकेचखिनः उदयस्थानमध्ये-शरपेकविशतिसप्तविशत्येकोनियशन्त्रिशन् पृक्षिशतवास्यक्षेपुः रपस्यानेप्रमत्येकं एकेकोविशेषभंगः इत्यप्टीभंगाः नवविशरपण्ड-पोर्भगावतीर्थकरहर्तादीपेषुपदसद्भयस्थानेषुनीर्यहत्तः पदभंगाः । र्वेसंरूपपामतुष्याणां उदयस्थानेषुपद्दविशनिशनानिद्विषेपाशदः कानिदेवानां उदयस्थानानिपृश्तद्यथापुर्शावशीतः पंचावेशनिः प्रविद्यातिः अप्याविशतिः पृत्रोनात्रिश्चरियान तपदेवगनिदेवातुः वीपंचेन्द्रियज्ञातिस्वस्वादस्पर्यातंसुभगदुर्भगचोरंकतर दादेपाऽना-पपोरेकतचराः अपरासोरेकतर दितिनवमङ्गतपोद्धादससंख्यामिः रोदयामिः सहपुक्रविशनिः अवगुभगदुर्भगादेवानादेषयञः अवशः-

परेरच्टीभंगाद्दर्भगञ्जनादेयायशसासुद्रयः पिशाचादीनामरगंत तस्पशरीरस्यस्पनेकियनैकियांगोपांगं उपवातंम्रत्येकं समयतः संस्थानमितिपंचमकृतमः मशिप्यंते देवानुपूर्वीचापनीयते ततीन तापचर्विशतिः अत्रापितेणुवाष्टीभंगाः ततः शरीरपर्यापयोतर पराचातेमशस्तविद्वायोगतीचशिक्षायांसप्ततिशक्तिः अत्रापितेणुगर भंगाः देवानामप्रशस्त्रस्तरत्वेरुद्याभावानतद्यानिताविहरणानभवं सतः नाणापानपर्यासस्योच्द्रशासेक्षितेअष्टाविशतिः तमापत पाष्ट्रीभंगाः अथया असरमपाष्ट्रापर्यातस्यज्वस्यासेअनुदितेउये तनाम्निउदितेअष्टाविशनिः अत्रापित्राणियाश्चेभंगाः सर्वेतरुपप अन्दार्विशोडक्ष,तनोभाषापर्याच्यापर्याक्षस्यस्य देशियेणु होनवि राज्याति । जनात्पदरीभंगाः हुःस्योदयोदेवानानभवति । जपा माणापानपर्यारयापयां रस्यम्स (रेश्युक्ति । श्रीननार्वन अविनेप्रीन भित्राज्ञत्यति । उत्तरीर्हिकोतः हे दस्यो प्रानी स्पी ऋगो अपाधित एक्ट-रेनिमाः सर्वेष्ट्यायम् होन्विस्तितियो उत्तनमाः तनोभागायर्थाः ष्यापयांत्रस्यगुर्वसमहिलायां भू होर्लावशान प्रयोगेशिमेरियान कि અમાર્શનપુરાષ્ટ્રી નંમાઃ *સર્વમ*હ્યવા ∤ પ્રાનાવતુઃવૃદ્ધિ નમાઃ તર્યાનાચિ• धर्मा उत्तरम्यानानिवन, तद्यसम् हरिशनिः पर्योशतिः सर्गारे र्कतः वदाविद्यान्ः पुत्रीनविद्याः । न्यनारक्ष्यातिनारराष्ट्रारी वेनीद्वातातिस्त्रम् अद्यवयोगनाम् इभैग जनादेव अपक्षाः 👤 दुन्ते 🗥 स्पद्भारराष्ट्रकोदयाभिः सहस्रकानेशानिः एपननः रामेणशासम्बन व्यवस्थापस्य प्रमानकृतिक स्थापनाः व । स्थापनाः वापनाः १८५ र्यस्य प्रस्थिति । १६०० व न ११ । १३ व शानीवासा १४ મહિલ્લીન શાસ્ત્ર માત્રાપનાઓ છે. વહેલા નિનેશન નાટ દેશી रेक्ट कर शरूब रहत्व व असम अवस्था प्रदेश प्रदर्शने हेर्न

____ विचारसारप्रकरण. दयकपःपूर्वाचार्पर्रेहीतः ततः प्राणापानपर्याप्तस्यउच्छासेक्षितेः ४१७ अप्टविशतिस्ततः भाषापर्योपस्यापर्याप्तस्यदःस्वरश्चिप्कोनावेशन्। अनापिएकएवभंगः सर्वेतंस्ययानेरचिकाणांपचभंगाः । सक्टो-दरस्थानभंगाः पुनः सप्तसानिशनानिणुक्तनत्रःयधिकानि । संग तिक्तिमन्उदयस्यानेकातभंगाः पाच्यते इनिविनायांनिक्रपणार्थः गवयालिकारस, नित्तीसाइसयाणितित्तीसा । रससत्तरससयाणि, हिगाणिविषंचसीइहि॥१९२॥ उणचासिकारस, सयाणिहियसचरपंचसट्टीहिं । कर्गचवीसा, दर्छुदयंतेसुउत्यविही ॥१९२॥ टीका---एगथपालिकारस इस्यादि ॥ विशस्पादिजाट्पर्यतेपुः युजरपस्यानेषु प्रशासंस्थंएकादिसंस्याजरपविग्यजर्यप्रकारः गाहत्यर्थः तवविशतीपकोभंगः सचानीर्थकरकेविनः एकः द्रापत्वार्रहान्त्रवपुकेन्द्रियानधिहत्यपंच, विहरेन्द्रियानधि ्पेयेन्त्रियातिरश्चोऽधिकृत्यनव, यनुष्यानिवकृत्यनव, वीधन त्रयेकः गुरानिधरूत्याही, नायिकानिकृत्यएकः द्विश-त्रवार्वसनारेकादरातेचएकेन्द्रियानविस्त्यमाच्यते, पंत्र-क्तिसन्भगाः, नत्रकेश्यानिष्ट्रयसन् विश्वितस्थांअस प्पानिषद्भगर्थी, आहारकसंयनानाश्चिन्पप्कः, देशनः नरियकानिषक्रयकः इनिक्यास्त्रिशत्, प्रक्रिकाप्रदश-वएकेन्द्रियानाभित्यवचीद्रहाविकटानांनव्याकृतनिस्थां-नगरपिके, माहत्त्रगुरपाणीदेशतेपृत्रोननस्याविके, ो सप्तान्तराष्ट्रकात् नेगरेन्द्रियामाष्ट्रविक्त

तित्थांअष्टी वैक्रियमद्यस्याणांअष्टी आहारकप्रनीनामेकः केवित्रे मेकः देवानांअष्टी नेत्रिकाणांपुकः इतित्रपश्चित्रत् । अर्घात्रियम् । अर्घात्रे प्रकार्माक्ष्यस्य । अर्घात्रे प्रकार्माक्ष्यस्य । अर्घात्रे प्रकारम् । अर्घात्र्यस्य । अर्घात्र्यस्य । अर्घात्रप्रकारम् । विक्रयतित्थांपोउरा, प्राव्यस्य । विक्रयतित्थांपोउरा, प्राव्यस्य । विक्रयतित्थांपोउरा, प्राव्यस्य । विक्रयतियानां । विक्रयत्यक्षः । विक

पुकोनार्वशानिपंचाशीत्यधिकानि सप्तदशशतानि । तत्रविकरण द्वादम, प्राकृतनिषंगुपंचेन्द्रियाणांद्रिपंचाश्वधिकानिपृकादशतोतं विकियतिष्यंचेनिद्वयाणांपोउश, प्राकृतमनुष्याणांपंचशतानि ध् सप्तरपधिकानि, विकियमनुष्याणांनवश्राहरस्कृतीनांद्रीतीर्धस्यः पुकः देवानांषोडश नैरियकाणांपुकः द्विशिकातिपृकोनिशिकाण्यनिस्स्याधिकानि, तथ्यिकरणांपुकः द्विशिकातिपृकोनिशिकाण्य रसम्बद्धाः

दुष्पाणां पृकादशक्तानिद्विपंचाशत्विकानि, वैदियमनुष्पाण पृकः, आहारकाणांपृकः, केवलिनांपृक्षेद्रेयानांशशे इतिपृक्ष विश्वतिपृक्षदश्यकानि पंचपृष्ट्यपिकानि, तत्रविकलानोद्रास्य माह्यतित्रशादिषंचाशतियकानिष्कादशश्यानि, तीर्षकार्माधि विश्वतानि प्रकारविकानिक्यन्तिनाम क्षणाः उद्देशस्यानिति

॥ अपमार्गणानुबंबमंद्यानावनीवगमाइ॥ १९३॥ इमिनिम्ह्यावरेम्, अतिष्णवेदवाअक्षाणितरीयस् । मिच्छित्रसंक्षित्रभवे, अतिष्णवासम्बन्धियस्य ।१९

देश्य—द्वारमञ् कृताति ॥ मृहन्दि । विक्रोन्तिय ५ वि व्यक्तिस्पादरक्षक्रयसुत्रामु लक्षामेतानु अतिकानितीननावपुत्री

	विचारसारभकरण.				
		==			
	20 LULU 0 2 2 0 W 2 / 25 2 2 1 25 2 2 1 25 2 2 1 25 2 2 1 25 2 2 1 25 2 2 1 25 2 2 1 25 2 2 1 25 2 2 1 25 2 2 1 25 2 2 1 25 2 2 1 25 2 2 1 25 2 2 1 25 2 2 1 25 2 2 1 25 2 2 1 25 2 2 1 25 2 1 25 2 2 1 25 2	200			
0	•	~			
0	~	~			
gian (file	20 20 20 GF				
W.	2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2	3966			
or or	0 20 20 20 U. m. m. m. m. w. m. o.	व्यक्तिक राष्ट्र वर्ष			
3,	unummmenu me	398			
1	0 00000				
30	W W W 30 60 60	33,600			
35	9 000000	I			
2	2	9~			
ê	2 mm mm or or or or	20			
n	•	on.			
मापोग्पोद्य	1 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4	संबं संस्का			
5/19					

येवंथभंगाः - वृक्तियोपङ्खिताइत्यननदेवनास्कतायोग्यायेभंगास्ते प्राप्यते अतः मद्यप्रायोग्याजिननामयुक्ताःनयः, देवप्रायोग्या शदरा, नैरविकपायोग्यपुकः एवं अशविंशातिनभवंति शे १३९१७ माप्यंते, तथा अज्ञानत्रयतिर्यगानिमिय्यात्वअसंज्ञिस गेणासु अभव्यदक्षणमार्गणासु जिननामाहारकरहिता इत्यने मनुष्यप्रापोग्यानवदेवप्रायोग्यापुकोनावदात् प्रययाअशेविंशत् त्यपएकः एकत्रिशन् प्रत्यययोग्यएकः पूर्वपक्रीनिविद्याः शेष १३९२६ भेगाभवंति । अजये इत्यादि अविरतमार्गणायांसजिन जितनाम्युक्ता १३९३४ भंगाभवंति शेषादशनभवंति ॥१९४ ट्यार्थः हवे नामकर्मना भागा कहे छे। एकेंद्रिमार्गणा विकल ३ मार्गणाये जिननायना तथा वैकियना भागा नर्य बीजा सर्व छे.॥ १३९२७ भांगा छे ३ अज्ञानमार्गणां तियेंचनति मिय्यात्वे ? असंज्ञी ? अभव्ये जिननाम आहा रकर्नी भागा नवी १३९२६ भागा छे ॥ १९४॥ अविगल (इगतिरि) विउद्यितिरिया, समुच्छासम्म

नाण्वहिद्सी चरणतिर्देसेस्र्रजा, अहक्तायदुकेवळेणवा ॥१९५॥

-- टीका---अविगर्णविज्ञिव्यतिरिषाहरपादि ॥ विक्रस्यस्या-पुकर्ष्वाशतजण्डशम्बतः एकेंद्रिण्यायोग्याध्ववारिशत् वेतियकपुकः विष्णायोग्याद्विनवविज्ञतसप्तदश्याधिकान्भगात् वयिक्वाशेषान-इस्प्रमायोग्यादेवन्ययोग्याः पद्चलारिशस्त्रतंपविश्वशिक्षंभगात्। इस्प्रमायोग्यादेवन्ययोग्याः पद्चलारिशस्त्रतंपविक्तंसम्बन्तविकं इस्प्रमुख्यितसम्बन्धान्ययो । चारिपवर्षदेशविद्यतिद्वमायोगया-स्त्रवदेशविरतीअष्टार्विशतिमत्ययाअष्टीपुकोनविशन्प्रत्ययाअष्टीपुरं पोडराभंगाभवंति । परिहारिवश्वदीअद्यविश्वतिषेवे अद्योपकोनाः श्वदं पेचरी, विरादेषेपकः पुक्रिवश्च प्याप्तः पृवंअद्यादसामा विकक्षेत्रीयस्थापनं विषय्वश्चेत्का अद्यवतः, पृक्षविष्ठां प्रस्तु प्रमुख्याद्वा । प्रविष्ठां प्रस्तु प्रस्तु । स्थाप्तस्य प्रस्तु विश्वविष्ठां स्थापायस्य । स्थाप्तस्य । स्थाप्तस्य । स्थापायस्य । स्याप्तस्य । स्थापायस्य । स्थापायस्य । स्थापायस्य । स्थापायस्य । स्थापायस्य । । १९९॥

ट्यार्थः—-रिकडमस्थनीथंगा वैकियना भंगा तिर्पेचना भंग टार्डाचे समक्रितना उपन्या भंगा ३५ पामीये, समक्रित ३ हा ३ अवधिदशैनने विषे पामीये, चारित तीन देशविस्तीने वि देवतामायोग्य १९ पामीये । ययाख्यातपारित्रे केवल २ ने वि नर्या नामकर्मना वंधना अभावयी ॥ १९५ ॥

देवेपरित्तवायर, तिरिअनरासेसयासुठाणभवा । भंगामगणठाणे, नामवंधस्सणेयवा ॥ १९६ ॥

र्डाका—देवेपरित्तवायस्त्रयादि ॥ देवगती गहरमत्येक पूर्वे द्विप्रवायोग्याश्रत्विहातिद्विनवतिहात्योडस्तित्रेनम्दययाः पद्यत्या रिहात्त्सप्तर्वशायिकभगाः मार्ग्यवेषयो इससद्वसायस्यायस्यारम् प्राप्येते । देपस्तमार्गणाद्याणभवां यूणस्यानभवाद्दयनेष्यायस्यानित्रयामार्गणायां वार्वतित्रस्यामार्गणायां तार्वतपुत्रभंगावाच्याः। मानियस्यामार्गणायां वार्वतितस्यामार्गणायां तार्वतपुत्रभंगावाच्याः। त्रक्तात्तपुर्वेदियमायोग्याश्रन्वायस्याविकत्रस्यामार्गणायां एक्ष्ययाहा दिसंगमुद्याप्ययां प्राप्तिमार्गणायां द्विर्वसम्ययाप्यां हित्रमात्वस्याद्वित्रस्यान्यायाः।

संज्ञि आहारकटक्षणासुसर्वेनामवंधभंगाः माप्येतेहरणादिवेदपावपे

एकविययंवसंभवोद्वीभंगीनसवतः वेजःपद्मवेदयायांपुकविययंवसं भवोभंगः एकः नप्राप्यवेदोषाः प्राप्यते ॥ १९६॥

्ट्यार्थः — देवगतिने विषे प्रत्येक वादरएकेंद्रिय प्रापोग्ध भंगा तथा तिर्येच प्रापोग्य मनुष्य प्रापोग्य १३८५४ मांग पामीये । रोष मार्गणाये गुणटाणे जिणे भंगा होने जिणे मार्ग णाये जेटला गुणटाणा होने तेटला भांगा जाणवा ॥१९६॥

अणहोरेनिरयभवा, आहारगतणुभवायनोभंगा। मणनाणेसामईया, भंगाअहनामउदयस्स ॥१९७॥

टीका—अणाहारेनिस्यभवाह्रस्यादि ॥ अनाहारकपार्गणार्यां गरकभवः एकः आहारकवंधसंभवीद्वीएकविषयंधसंभवः पृक्दति-भंगच्युटपंवर्जयित्वाहोषा १३९४१ अंगाः प्राप्यते ॥ नारक-प्रायोग्याआहारकद्विकपायोग्यामगानभवति, मनःपर्यवज्ञानेसाम-एकचारितसंभवाएकोनविंहातिभंगाः इत्युक्तामार्गणासुनामवंघभंगाः अपनामकर्मणः उदयभंगामार्गणासः ॥ १९७॥

ट्यायै:—अनाहासकमार्गणायु नास्क्री प्रायोग्य अहारहरा-रीर प्रायोग्य भंगा नयी, यीजा १३९४१ भंगा छे । मनःपर्यः यहानमध्ये सामायिकचारित्रमध्ये जे भांगा छे । हुने नामक्ष-र्यना उद्दयना भंगा कहे छे ॥ १९० ॥

युणडाणगउदयाओ, उदयसामित्तओवनेपदा । गोपविमग्गणाप, भंगायुणठाणपद्यईषा ७ ॥१९८॥

पासन्तरमः

कम्मसंबेहगंथाओ, भंगागुणठाणमग्गणेनेवा।

दीका---ग्रुणडाणगउदगाजीहरवादि ॥ ग्रुणस्थानकेपुडद्या-इतिडदयस्थानानि तथा उदयस्वामित्वेयामृहृतिः यस्यांमार्गणायां-उदयेप्राप्यते तृप्पकृतिसंभवाभंगाः तस्यांमार्गणायांज्ञातस्यासते-चअस्महृतकसंमेवेयप्रयक्ताः ग्रुपस्थानकेपुर्याग्णायानकेपुत्रेयाः क्रयोक्तवातद्वहृतोक्ताः तथापि विचाससार्यक्रतोशियाः अस्य-पंप्रकंस्वीयज्ञामेवास्ति । विचाससस्य्क्रगाया तथा मंदावजीयहिष्य-जनीयकारायस्वायः तथा यंत्रकेमद्वास्यक्षकं तथान्वासीतिसर्वा-म्यासः स्वीयज्ञप्वज्ञानम्यहति ॥ १९८ ॥

डवार्थ:—गुणटाणाना उदययी तथा स्वामिस्त्रयी उदयना ९ भागा मार्गणाचे जाणवा। गोत्रकर्मना ७ भागा छे, तेपण मार्गणाच् गुणटाणानी रीते जाणवा चु भंगसत्रे चु धणीकृत सं-वेच मकरणयी जाणव्यो॥ १९८॥

वारसम्पणमहिसया, भंगामोहस्सतहयपयवन्ना । चुलसीसयसनुकरि, भेयापरिणामभेषणं ॥ १९९ ॥

टीका—वारसपणसाहिपाइत्पादि ॥

स्वारं:—वारसे पांसठ मोहनीना आंगा छे. ५२ घोवासी तेने घोवासग्रणा करतां थया १२४८ तेमच्ये सत्तर आंगा भेडांचे वेवारे वारसेने पांसठ धाप । तिमज पदवणे चोरासीसी सत्योतहार थापे, दसने उदये घोवीसा १ अंगा २४ तेहने दसगुणा करतां २४० पदवर्ज पत्ये । वतने उदये घोवासी ६ तेहना आंगा १४४ तेहरं करनां १२९६ पदवर्ण पारे ए रीते सर्वेत्र केन्सी. ए अगा एउटा ने कहा ते स्पासाटे जे परिणामने भेदे जे परिणामनो तस्तमयोगदंव तोतिण तस्तमदंव तोपण तस्तमता याये ॥ १९९ ॥

तेरसहस्सानवसय, पणयाळानामवंधभंगाय । सत्तसहस्सासगसय, इगनवईउदयभंगाय ॥२००॥

टीका-—तेरसहरसानवसयङ्ग्यादि गायान्यंयुगमंपनभंगाथि कारुपारुपायांव्यारुपानस्वान् इहनःयारुपातम् ॥ अयर्थपेष-संहारार्वे भव्यजीवानांययायांगमत्रतीनिवृहमानार्यवाह ॥२००॥

टवार्थ:—नामकर्मनी तेरहुजार नवने पीसनार्छस नामकः मनावंधना भंगा थाय छे २३ ने बंबे ४ भंगा २५ वंबे २५ भंगा २६ ने बंबे सोछ भंगा २८ ने वंबे नव भंगा २९ ने बंबे प्रदूष्त अडतीस भंगा छे. ३० बंबे ४६ सो इक्लार्छस मांगा छे. ३० बंबे ४६ सो इक्लार्छस मांगा छे. ३१ बंबे एक भंगो छे, एकने बंबे एक भंगो छे कि पिएसा तेरहुजार नवसीप्तार्छस भंगा छे, वंबना नामकर्मना उद्यना भंगा २०॥२० ने उदवे पूक भंगो छे, २९ ने उदवे ४५ भंगा छे, २५ ने उदवे व्यार भागा छे, २५ ने उदवे व्यार भागा छे, २० ने उदवे १०० भागा छे. १९ ने उदवे ३२ भागा छे, २८ ने उदवे १०० भागा छे. २९ ने उदवे १८०२ भागा छे, २९ ने उदवे १९०२ भागा छे, ३१ ने उदवे १९०४ भागा छे, ३१ ने उदवे १९०४ भागा छे, अटने उदवे १९ भागो छे, अटने उदवे १९६५ भंगा छे, नवने उदवे १ भागो छे, आउने उदवे १ भागो छे, सब मिल्यां सातहजार सातसीनेउ भागा उदयना छे, ॥ २०० ॥

े जंनाऊणंसुविहिआ, सर्चधम्मंपयासंति ॥२०१॥ २२२

एवंसुअउदहीओ, नेयबंसववत्थुविन्नाणं।

ई।४१--- एवंग्रअप्रद्धाओहत्यादि ॥ प्यममृनायकारेणप्याः गुम्रीरचार्वे ब्रिटिशानावदीधरेदिनगर्वे तस्यानावयनग्रमाणे नथुने आ-धारांगादिगणिष्टिकंलोकाहोकगनगर्वभावयपार्थापदेशकंपरमनध्य-भागेदर्शनपदीपख्यनिर्शक्तभाष्यपूर्णिटीशापरे त्यद्वभयांगयीधगस्य मर्चानक्षेत्रभंगगमानाचेत्रःशिख्यस्थिः धनभेवीदश्चिः तामानभनी-द्रधितः अबोपमाअबारानेकांत्रपर्णादेशान्त्रस्थयसंगर्णद्रपारितः कपर्यास्त्रको भयनटः अने योगमर्गापरादमार्गवदन्तियाज्ञानःयान-रार्जाच-स्थादात्रानंत्रगुणवर्धा यद्यन्यात्रयोगयस्य इत्यात् योगगणितात्र-योग्यर्मकृषानुयोगमहाकृतः। अनेकमृत्यादिशानभुनशाननपगमः परिपार्शसापेक्षनर्शमदृष्ट्रांबबद्धमानसङ्ग्रियः अनेबाटापकगापी-भिष्युक्तिहेतुः। विमहस्रक्षकः अभिनदानदद्यविगुद्वास्यवसायोग्कः पंतरत्वारोतः जीवाजीवादिनवपदार्वगुपरधानवस्तृतीमस्यन्यपाव-भासनादसंदर्भवद्यानाध्यवसायरपार्थावर्यसनसाझिस्थानसनः श्रनस-ग्रहरमस्मानकात्रप्रसर्वयन्ययमेथमविष्टागुद्धस्याविष्टन रपांवक्षानंविद्यिष्टंनिर्मतंत्रुनयनयाभासादिरोपर्रहतेशानंशातम्पेडवि-महाराः, परश्चकपनिरयानिर्धय हाने ब्राग्निनारिन भेदाऽभेदरयक्तरप्रकर्प-कारणकार्यकर्षादिकारकसाधनसाध्यसाधकताधकादिकं ज्ञारवाग्रदि-दिनाः राज्ञकार्यसाधनीयतासन्यथर्मग्रज्ञात्मस्त्रभावसर्वजीवसत्तारिय-तंसम्बर्ग्यद्रिवेशविरतप्राणिगणअद्धायहीतंसाधुसाधुसाव्येआचार्ये।पा॰ ध्याँयगीयमानं अर्हन् भिरास्त्रादितंसिद्धैः संपूर्णः प्राग्धतं धर्मप्रकाशयंति 11 303 11

टबार्थः—प्रकृषकिता ए रीवे भृतसमुद्रया जाणयो, सर्वे स्टानो विज्ञान विजिष्ट्यान वे विज्ञान, ने जाणीने सुविद्वित उत्तम बहुभृतसम्पर्यार्थ धर्म ने वस्तुनो सभाव ने प्रकारो उपरेग वरे ॥ २०१ ॥ करविषयानाने, कस्यविनिन्दियनानेषद्वाणयसे करविषयेनेसनी, कस्यवियोगनणंमुरहे ॥ २०२॥

हो हरू— बर्ट्यारे प्रसाननी हुम्मारे मा आवार प्रशासनी क्रमारे हुम्मारे प्रसान केराने हुम्मारे प्रसान क्रमारे हुम्मारे प्रसान क्रमारे हुम्मारे प्रसान क्रमारे हुम्मारे प्रसान क्रमारे हुम्मारे प्रसान हुम्मारे हुम्मारे प्रसान हुम्मारे हुमारे हुम्मारे हु

्रापं --राजामांनी पृत् तीर्व के संक्षित व्यक्त का कर्ता के एक कर्त है। क्षेत्रक क्रियानम् पृत्य तीर्व के राज्य कर्त है। क्षेत्रक क्रियानम् पृत्य कर्त है। क्षेत्रक क

૧૯૩૪ હામાળ, ભુગો (ફોર્સ ૧૫નુવ નવોલ) મહેલ લગાળ, ગોલગાળવાણના ((લગ્ફ ()

तव्ज्ञानं प्रधानतरंपतः आगमस्यैविद्यंपंचमांगे अतागमे आग्न तरागमे पंपरागमे अस्यओअरिहेताणं अनागमे नाणद्वराणं अग्यंतरागमे गणहरासासाण पंप्ररागमे सुत्तओगणहराणं अतागमे गणहरासाराणं अस्तागमे तस्सयीसाणं परंपरागमे तओसव्ये त्रिपंपरागमे एवं पन्परा आचार्षपंपरायाआगतं ज्ञानेप्रमाणं इतिज्ञेषद् ॥ २०३॥

ट्यापै:—इरवादिक क्युं जे सर्व प्रमाण छै. आम्नापर्व-तने आ भासनमध्ये छै, धुनने बिड्ड जे दक्ष तिणे जे सृत पंचागीमध्ये क्युं वे जे पंचागी विना आगमना अर्थ करे है अजाण छै, भगववी तथा नदीव्ये कर्युं छै अने आगमना ३ भेद छै आसागम, अनंतरागन, पंचायमवेमध्ये अस्त्रायादी वे एछ सुषे पंचायान क्युंगे छे हे साटे जे प्रंपराये ज्ञानवंत यदा तेष्ठनो ज्ञान प्रधानमर जाणवी, यीज्य सर्वना ज्ञान है

नाणिकरियाहिंमुक्खो, तत्थविनाणंपद्दाणतरांच । तम्हानाणभ्यासो, कायद्वोमुक्खअथ्यीहिं ॥२०४॥

दीका--नाणिकिरियाहियुक्को हृत्यादि ॥ ज्ञानिक्याम्यां-योझः हृत्यागभगभन माणण्याद्वानं एकविननमोदासायकं यद्द-द्वानं तर्रकारं यराध्वस्यागोधन नवा पावस्य क्रियुक्ताव-ह्वात्वीपंत्रभार वार्ध्व, भारसामानिद्वसुग्यंट्, एस व्लागीपराने-णृतीणो, नाणसामानिद्वसुग्यंद्ध्(1) हृत्यादि क्रियाह्वयवाकं वात्यादि भारशिकालिकस्य पर्यमाणताओरयापुत्रं यिद्दसन्त्रसंत्रचे अञ्चा-निक्तिकार्ति किंवा गढीउच्छेयमीनंगा॥ १॥ जीवीविविषाष्ट्

लादिशतशास्त्रस्चनापवणः श्रीजिनेश्वरम्हारः प्राप्तस्वरताविरुदः तत्पद्वानुक्रमायातः श्रीजिनचंद्रमृरिः तत्पट्रेनवांगीरृत्तिउपपातिः कोपांग पंचाशकादिवृत्तिकरणमाक्षभास्करावदतः ततः संवपट्टा-द्यनेककर्मग्रंथभाष्यादिरचनारचित्रयथार्थक्रियामार्गः श्रीमजिन वछभग्रीरस्तरपट्टपूर्वोचलभावकल्पः गणधरसार्द्वशतकादि धर्मन रहस्यादियंथविरचनारचितयथायंमार्गः श्रीमदक्षिनदत्तस्ररः तत्पट्टे मणिधरः श्रीजिनचंद्रमृरिः तत्पद्रेसाठिसोपकरणकारक श्रीनें-मिचंद्रभद्वारकपुत्र श्रीवीतरागमार्गपयार्थपरीक्षाकषोपलोपमानः पर्-विंशत् वादस्यटकारकश्रीजिनपतिस्तरः तत्पद्वेशीजिनेसरस्रिस्त-त्पट्टेश्रीजिनप्रबोधसरिः तत्पट्टेश्रीजिनचंद्रसरिः तत्पट्टेश्रीसिद्धाचरः खरतरवसहिनेमिमासादमतिष्टापकश्रीजिनकुश्रस्युरिः तत्पट्टेजिनप-द्मस्रारः तत्पट्टेजिनस्थ्यस्रारः तत्पट्टेश्रीजिनचंद्रस्रारः तत्पट्टेजि॰ नोदयस्ररः तत्पट्टेजिनराजम्हरः तत्पट्टेजिनभद्रसरः तत्पट्टेजिनः चंद्रस्ररिः तत्पट्टेजिनसमुद्रस्ररिः तत्पट्टेजिनहंसस्ररिः तत्पट्टेजिन नमाणिक्यसुरिः तत्पट्टेहत्यादिदर्शयति ॥ २०६ ॥

. ट्यार्थः—विचारि चोखा कर्या तेना अत्यहम् अत्ये गाया स्त्री विचारसारनी आगमनी रीते जे छद्ध वे ग्रहनी वाणी मुमाण छे. ॥ २०६-॥

सुविहियखरयरगच्छे, युगवरजिणचंदसूरिसाहाए । जिणवयणसारपवणा, उवजायाराजसारस्का॥१०७॥

टीका—सुनिहीयस्वरतसग्च्छे इत्यादि ॥ श्रीमत्वत्रस्वामि-परपराचुगतस्वातसुनिहिते श्रीमश्चन्द्रङ्गेनजस्वामिशास्वायांकोटि-गणान्वयेययार्चमांगमकाशनचित्यवासवरणात् संप्रासस्वरत्यविस्र- प्रसिद्धं श्रीस्तरसग्देशे जिनमाणित्रयक्षरिपट्टपत्री चलभावश्रीशार्युज्ञपा-द्यने क्रसीयचेत्रपत्रिष्टाप्रसमुग्रभ्यानासियानः तस्यशासायां श्रीसद्-युण्योपाच्यायहित्यश्रीक्षमित्रसारोपाणान्यहित्यवाचन्नेत्रससायुर्देग-वापकहित्य जिनन्यनसारे प्रवणाद्वामत्रणाज्यायाआत्रवयको-द्वस्तिदसद् संयक्तणअने कर्षेत्रयाविद्यस्यापितानेक्जिनविंबात्याः श्रीस्तक्सास्त्रमः ॥ २०७॥

टवार्यः — सुविद्वितययथार्ये जिनआणाअनुसारी सामाधारी जेष्ट्रनी एडवो रसरतस्याउ छे, विहां गुगप्रधान श्रीसद्गुरु श्री जिनचंद्रद्विदि थया, वेहना शीष्य परंपामच्ये श्रीजिनचंद्रसूरिना हिल्प महोपास्याय पुण्यप्रधानजी, वेहना क्षिप श्रीस्त्रतिसार्जी वेहना हिल्प वाधकपुरूष श्रीसाञ्जरंगर्जी वेहना शिष्प गुरूष श्रीजिनवस्त्रनो जे सामन्त्र वेहमे प्रवीण उपास्याय श्रीराज-सार्जी एहवे नामे थया ॥ १०७॥

तस्तीसनःव स्माः धारासिरिनाणधम्मनामेण । तेसिसीसाधीरा, डीपचदाउवज्झाया ॥ २०८ ॥

द्वीका—तस्त्रीत इत्यादि ॥ तत्त्वित्पाद्वानंतत्त्वावबोधः धर्मपादिमारूपत्पीराधाप्ताः श्रीमनुद्वानस्योपाध्यापाः ठेषां-क्विष्याः श्रीदार्युजयेशम्बसस्याण्येरुमध्यान्त्रेत्यत्यश्रीताजनगरेसद्वस्र रूणादिजनेकसर्तार्यणयिद्यकृतानसाष्ट्रस्याः श्रीद्यंष्यद्रीपाध्यापाः तेषांक्षित्येणद्रदेविसपितमितिसंत्रंवः ॥ १०८ ॥

टबायः—वेहना क्षिष्यज्ञानधर्मं जे चारित्र वेहना धरण-हार श्रांउपाच्यायज्ञानधर्मं पृहवे नामे चयाः वेहना क्षिप्य धार उपाच्याय श्रादेवचंद्रजी पृहवे नामे डीष्य थया. ॥ १०८ ॥ तेसिंसीसोअज्ञत्य, तत्तरसवायगोजिणाणरुई । गणिदेवचंदनामा, तेणविहीयंइमंसुत्तं ॥ १०९ ॥

टीका—वेर्सिसीतोअज्ञस्य इत्यादि ॥ वेर्षाक्षिणः अध्या-त्मतत्त्वरसारवादनतस्रिकजिनागमाम्याससंग्रप्तजिनाज्ञारुचिः गणि-देषचंद्रइतिनाम्नातेनचिहितंद्रदेसम् ॥ २०९ ॥

ट्यार्थः — अध्यारमतत्वनो रसिक जिनागम ममाणतत्व स्व-रूपनो कथक आगमसार १ ज्ञानसारतत्वावकोव ममुखनो प्र-धनो रचवो आरमाने दित करतो जिनाज्ञारुचि देवचंद्रगणि पृद्ववे नामे तिणे ए सुत्र रच्यो गाया बंधभय्यनी वने उपकार काजे ॥ २०९ ॥

रसनिहिसंजमवरिसे, सिरिगोयमकेवलस्तवरिवसे। आयरथंडद्धरीयो, समयसमुदाओहदाओ ॥ २१०॥

टीका--स्सनिद्धिसंजमनस्ये इत्यादि गृथापुगमा॥ अथान-मेर्ये मतिस्पामोद्वात्रक्रमस्योपेणार्क्तिः नावमतं तत्रपणकाः स्वयंसंग्रीध्यक्रययंतु इतिमार्थना ॥तद्यनार्थनाशास्ययति॥२१०

स्वार्थः स्ता ६ निषि ९ संयम १० इटके १०९६ सप्तासेठ हरे वर्स अंगीतम केवटसान पाम्या ते दिवसे पुरुषे कार्ति हसूरि पुरुष द्वस्तस्टारीयचे दिवसे आस्मानो कोच करवाने उपर्यो समय कहेनां सिद्धांत जे ग्रमुद तेहुची सिद्धांत समुद्रनो पार पामवा दुर्छभपरं ए अस्यानेज कल्याण छ ॥ २२ ॥

जिणसासणसमयन्त् , भ ंतिगुणगाहिणोपसैर्सि। नेअपदंतिमुणंतिअ, स्रुभंतिनाणस्त्रीओ ॥२११॥ दीका—जिणसासनसम्पष्ट्र इत्यादि ॥ जिनशासनसमयं आगमंतरपञ्चाः येदित्वेनाममहस्यास्वेगुणशादिणः एउ नदीषयद-प्रतिकाः इत्यनेनयनिकवित्तम्इत्याख्यापय्येतते न प्रेक्षेते इतिवेय-जनामन्त्रसात्त्रसार्थः पर्वदिशिस्ययंपरवित्तिग्रस्यादि भूण्यंतिचवे रूभन्तेनारुद्धाः इति वेनज्ञानार्थिनः विचारसाराख्यंमकाणंअस्या-देराकाश्ययंतुद्दिनाय्यंनापृत्र ॥ अपनमयेदेशचर्मापयाविलक्षितं-क्लिपुत्तांपर्यपरेप्तायंभाऽइत्याननङ्ग्यभावनिकजीवानांहिताय-संग्रहीनं इति दर्शेषसाद ॥ २११ ॥

टपार्थः—जे जिनशासनना समय आगम वेहना जे जाण छे तेह आपसमृहो जीपना गुण गरेषे, परिछिद्रप्रासी न दोने, गुणप्राहीपणो ते आन्भाने हिन, वे जीव जे मध्यी हा हुवे ज्ञान रसिया होस्से, पृ श्रंथ भणस्ये नथा ग्रणस्ये वे ज्ञानस्राध्य निरमस्र पामदो॥ २११॥

तिराम् पामरो ॥ २११ ॥

कम्मपपडीअसंगह, सिवसम्मयसुजिणवछहोसूरी ।
देविंदसूरिपमुहाण, वयणंदहृणहृयभणियं ॥२१॥

होका—कम्मपपछीअसंगह इत्यादि ॥ तवाबाहणंपपूर्वातृउद्दर्त शीमन्भन्द्रणहृदामिनाकम्मपस्यीत्रप्रे तत्र्याणिक्षकराभादेवदिवाणिक्षमाभ्रमणस्रहेंकाच्यक्ताभावन्यप्यविराम् तेत्रहिक्षमाभ्रमणस्रहेंकाच्यक्ताभावन्यप्यविराम् तत्रप्रकार्यः कम्मपस्यविष्यं तथाच्युनः संगहित्यंपस्य
सहास्यप्रकरणं अधिदमहत्त्रस्याचार्यकृतं तथा श्रीक्षित्रसम्यिरिकः
ताभ्रमहत्त्वभैस्तवादयोजीणकम्ययाः तथा श्रीक्षित्रसम्यरिकः
समययः तथा श्रीदेवन्द्रपरिक्तसम्यविष्यः सम्ययः क्षेत्रयः
इत्यदि सन्युनीनावानस्यवन्तंद्रसह्यह्यद्रनीददं विचारसाराहयेम55

णितंकथितंनस्वमत्याश्रीमत्भगवतीमज्ञापनादिसद्दागमपरिपाट्या-निवैदितसर्ववाप्यागमवाक्यममाणं, आगमातुसारिमतयः आराधकाः शेपाणांस्वमतिकल्पितकल्पनावृचिमतांनास्त्याराधकत्वम् ॥ अतः वीतरागागमरहस्यज्ञानतस्वशावनाम्यासतत्पराभवत् ॥ सामतं-जिनागमस्पविरकाळाऽवस्थायित्वं भवतुद्दत्याशीर्वाकयपूर्वकंजपदि-शताहः ॥ २१२ ॥

ट्यार्थः — कम्मपयडी, अबाहणीय पूर्वनी उद्धार छे. तथा पंचसंग्रह आंच्द्रमहत्तरम्भारिनो कीचो महाबंध छे. तथा क्षित्र सरिकृतभाष्य छे. तथा श्रीजिननश्चसरिकृत कर्ममंथ छे, तेहनी टीका मलयमिरिम्बरिकृत छे. तथा देवेन्द्रमूरिकृतकर्ममंथ छे, तेहनी टीका पण श्रीदेवेन्द्रमुरिकृत छे इरमादि पूर्वमूरिन जे ययन ते सर्व जोड्ने तेहने अनुसार पृ विचारसारमंथ रच्यो छे. ॥ २१२ ॥

जाजिणवाणीविजयङ्ग, तावधिरंचिठ्ठउइमंवयणं । नृतणपुरम्मिरङ्यं, देवचंदेणनाणद्वं ॥ २१३ ॥

इतिश्रीविचारसारप्रकरणंसमासम्

दी हो—जाजिणवाणीविजयः वृत्यावि ॥ याग्यानिस्य वीतरामस्यवणीवचनवृति चिजयितनायःदुदे । वर्गीयमः नेतिन शत् श्रीहरूकाश्चेतेवतनपुरत्यत्मसर्यवत् आक्षणभावः स्थापयः वनायुः कतापरिचर्चनायः है वान्तेवलयः गराव होने यन सीतर्वन स्वराष्ट्रकायस्य नृत्यस्णावनिकंत्यारणार्यनकंत्यः (व वार्योदन्तवः यथार्यानुकारुकाद्यविवानिः स्वरूपी आंग्याध्यनिकंत्रं ते नेत्रमः अभिनवकर्माऽग्रहणतापूर्वककर्मश्चयः ताम्यांचपरमसिद्धिः अध्यानाः धसुरवप्राप्तिः इति ।। सन्गेनाणेविज्ञाणेपधनस्ताणेसंयमे ।। अण-ण्हवेतवेचेव । बोहाणेअकिरीयासिद्धा ॥ १ ॥ इतिभगवतीसन-प्रमाणतयाश्रुताम्यासः करणीयः सर्वभन्येः, देवचंद्रेणज्ञानार्थः स्त्रपत्तवभासनार्यपंचमकाटांचकारमुग्धजनप्रबोधनभानुश्रीदीपचंद्र-सङ्गुरुचरणचेचरीकेणरचिनंगाधायचेनयंत्रकत्यासादिनाअश्वरदित्या॰ सीकृतं, इतिश्रीदेवचंद्रगणिविरवितास्त्रीपज्ञविषारसारदीकासमाप्ता ॥ २१३ ॥

द्यार्थः--जासीमजिनवाणीजयवेतीवर्रत, ता सीम थीररहो, ए ग्रेथना वचननी रचना, ए ग्रेथनी प्रणता नूननपुर नवानगर-मध्ये पंडीत देवचंद्रगणि पोताने तथा परने पण ज्ञान विशेष-वृद्धिने अरथे करी. ॥ २१३ ॥

> जयतात्सधिदानंद-महोदयसमाभितः । वर्द्धमानजिनाघीशो, भव्येप्सितमहामणिः ॥ १ ॥ थे.दोज्ज्वलयशः कीर्च-मोज्यळीङ्तविष्ट्रपा । कव्यसिवर्जगर्वयः पातुर्गातमसर्थरः ॥ २ ॥ भीमतसधर्मस्यामी, अद्गमभवादयोसुनियरिष्टाः । याधकवंद्रापभवा, भव्यानां भेयसेसंत् ॥ ३ ॥ क्रमात्स्वस्तरेगम्छे, धडेवांद्रेगुवाकसः। र्थाजिनपंदसरीशाः अमुक्तमनिनाय**ः ॥ ४** ॥ सदम्बयाध्यसञ्जाः, राजसासहवाचस्यः । शानपर्मादीवर्षशः षंद्रीवन्यडपशीधराः ॥ ५ ॥ 413

. जगञ्जनितवोधानां, वेषांसंवेगपक्षिणाम । विनेयाःसमजायंत, देवचंद्राः श्रुतान्यपः ॥ ६ ॥ रवान्यपोरूपकाराग, देवचंद्रणधीमता । विचारसारटीकेयं, गुस्त्वोपज्ञाविनिमेमे ॥ ७ ॥ मतिरन्तराज्ञलागद्याः, श्रुनाध्यासपरायणाः । ज्ञानान्युक्रसलसाज, प्रमोदिहाचाववोद्याय ॥ ६ ॥ पद्रवित्यस्तप्यतिना, सिद्धांतविरुद्धमिह्नमपिगाल्यु ॥ पद्रवित्यस्तप्यतिः, सार्वाद्यावद्यक्रीष्यप् ॥ ९ ॥ यत्प्रवित्यस्त्वाः, प्रसादमावायतद्वरोष्यप् ॥ ९ ॥ यत्प्रवित्यस्यां, हृद्येमांमयार्जितसुकृतस् ॥ वेनर्थाजिन्वप्, हृद्येसाः संतुभव्यजनाः ॥ १० ॥ अर्द्योभंगार्लेख्द्यः, सार्वोचमंगार्हृतस् ।

अहतामगंडासद्धाः, साधवाधममाहतम् । स्याद्वादेसंवरस्यानं, कल्याणंमुख्यमंगलम् ॥ ११ ॥

॥ इतिश्रीविचारसारप्रकरणटीकासमाप्ता ॥

अर्थः—इतिश्रांविचारसार पृक्त क्षेत्र त्या साथे संपूर्ण धयो. ॥ मुकाम पेथापुरमच्ये आचार्य माहाराज ॥ श्री. ५ ॥ बुद्धिसागर्श्वम माहाराजना हृस्तक हृजुरमां गृहीने ल्हच्ये छैं. बी० व्हीया जेटावाल चुनिवाल संवत् १९०३ प्रथम भादव मास कृष्णपञ्च ९ दीने चंदवासरे संपूर्ण लिख्यो छे. ॥ श्रीक संख्या ॥ ४५०० ॥

श्रीमड् देवचंद्र द्वितीय भाग अग्रुद्धि गुद्धि पत्रक.

-		10/11/11/11/11	નહાલ શાલ
Ą.	Ŷ.	अग्रहिः	 चुद्धिः
?	ş	बं ध्दय	बंधुदयु
23	8	जिय	न <u>ु</u> रु
**	??	₹€	Ø
ä	2.5	तिष्टत्य	तिष्ठन्त्य
19	\$8	गुद्धपकर्ष	ग्रह्म प्रकृष
ş	Ę	निभे	निःश्रे
19	<	सहस्वा	सहआस्वा
27	11	वर्त्तत	सहवर्त्तत
23	34	स्थाननं	स्थानं
33	33	सम्यग	सम्यग्
8	??	गंडि	गंठि
11	? ?	दवारन	दवानल
11	२२	देशं	देसं
11	39	मिङस्स	बि च्डस्स
4	3	मुहूर्त्तक्या	मुह तिंक्या
13	₹	विसिषे	विमीप •
33	35	समस्वी	समस्ति
Ę	3	इंदरो	इच्छंतो
- 11	8	दिवी	दिन्ती
11	११ १५	संच्छयति हृत्यअ	संयच्छवि
11	7.3	25491	27.0

7.00		(3)	
Ą.	ų,	अग्रद्धि-	शुद्धि,
13	38	विशुद्ध	विग्रद्धय
৩	8	पुनवि	पुनर्वि
11	Ę	तारिस्य	तारितस्य
13	२३	प्तगाः	पचूर्णा ^
6	\$	73	ii -
19	Ę	प् तानिप्तानि	एता नि
,1	१२	नि,वृत्ति	निश्ति
8	33	युगप	युगपद्
11	રષ્ટ	माया	मार्या
"	99	युगप	युगपद्
80	રેપ્ટ	दसतनः	दतः .
88	२०	त्तिस्र	तिस्रः
१२	8	सकासा	सकारा।
1)	१६	ध्यान	घ्यानं
11	રફ	ध्याययन्	ध्यायन् .
?3	3	री छेशः	शीलेश
37	ć	गुच्छद	गच्छन
93	33	चूर्णा	चूर्णी
รูซ์	3.5	हेतुद्रा	हेतुद्वार :.
ર્ લ	30	ततं	तमं:
15	17	चतुषष्टि	चतुःपष्टि
₹ €	₹ €	अपमत्तंत्तासत्तठ	अपमत्तंता सत्तर
11	35	चवेत्ति	चेवेति
**	37	मेदाः	भेद

		(7)	
ą.	Ų.	अगुद्धिः	ंशद्भि.
? 5	35	भेदाः	भैद
13	28	39	
32	२२	अमि	आनि
\$0	3	निवेद्यवे	निवेद्यन्त
22	23	कर्मण	कर्मणाम
11	ş	জী য	जीवः
13	6	म मतांताः	ममतान्त
13	१२	मति	यति
15	₹ ₹	सम्यस्न	सम्यक्तव
13	\$ Ę	बद्राचि	बन्यते
? 9	v	संस्या	संख्याः
२०	ર	द्यस्ती	हासी
***	ş	दिसी	दिद्दी
"	ą	इति	इति
11	¥	नराथुदे	मराप्रहें
13	\$8	विर्येष	तिर्थेष
23	२३	सगदिट	सगसङ्ख
33	79	वेवहि	वेसि
11	₹	वनां	वसा
31	v	नरायुष्टश्चर्ष	नरापुर्वज्ञयं
35	84	पृतावतेष	एतायतेर
२ २	₹	वेबिड	वेसाई
11	<	देवायुग्राम्	देशएएँउड
11	4₹	वेजस	नेअस
२₹	18	म्चरा	शिद्यानिहा

(8)

Ą.	ų,	अग्रद्धिः 🧦	- • ਹੁੜ੍ਹਿ• • "
२३	१७	वेजसः -	तैजस 🧬
२४	- ?	भवंति "	भवति ः
34	१५	उ चेगोत्रं	उद्येगीतं 👊
२६	8	संप्रराय	संपराय :
२७	?	नींचे	नीचे ः
२८	35	तिग	तिमे :
"	રફ	आयुकर्म	आयुःकर्भ "
₹?	38	ज्ञा	লা :
33	. २०	₹ €	88
३२	१२	बंध्यते	बच्यन्ते .
33	?	अरण्हं	अष्टुणं
23	Ę	संभाव्यवे	संभाष्यन्वे
\$8	₹₹	द्विक	द्विकम्
11	39	उदयोभवति	भवति
11	. २३	पद्यंते	पद्यते
₹4	33	पद्मवे	पद्यन्ते
₹4	y	यव्या	बद्धा
13	19	चतुर्	चतसुषु ,.
17	. \$0	मराजापूर्वा	मनुजाऽनुपूर्वी
11 -	१२	ष्ट्रयांतात्	दृष्ट्यन्तात्.
३७	?	तस्तु	नास्यु .
н -	3	इग	सम
11	\$8	सठि	सिडि
77	29	सङा	सङ्घी 🐣

		,	
Ā.	ψ̈́.	अগ্ৰৱি.	ਹਵਿ.
₹€	ą	नीयवे	नीयन्ते
1)	v	विर्यगिव	तिर्यमा ति
33	33	प्रमादायत्वान	ममादायतस्यात्
38	ę	भवति	वति
72	30	संस्वल	संस्वटन
80	? 9	19	
88	22	पंचर्चाति	- पंचार्शाति
४२	१५	नवय	नव
88	4	स्त्यानद्वयुद्ये	स्त्यानद्वर्णुद्रये
11	२१	अटार	अहार
88	२२	सहाय्पान्	साहाय्याम
22	२ ३	साहायात्	
४५	₹	नव च न	न एएन
11	₹ ?	ये <i>प</i> णीरस य	वेयणीपरस
٧¢	3	चतु प्वंषि	धनसुष्यपि
13	şo	सठी	राद्वी
33	39	33	39
1)	18	11	29
. 86	٤	देखि	रेसं
13	34	નામોરથો	नागुरपो
13	₹}	नीचे	નાર્પ
13	ર ર ર ફ	19	η
"	38 38	Ų ₹	Ž.
31	74	डीक् र्य	ीराप

(F) अग्रद्धिः 🕝

दीयते

ः ग्रद्धिः .

चत्वारिंश**ञ्ड**तं

चुत्यारिशच्छतं

क्षयोपशमसमिती

33

कूल

मान

वज्यो

. पद्कं

क्षपणा

पंचाशीति

बद्धायुः

ų ų

28

v

?? 11

१५

3,5 81 १७

28 ,,

ą

c

१२

. 24 ,,

,,

ŧν

99

21 99

46

५७

13

४९

५०	50	वेदनी	वेदनीय
199	१९	ओघन	ओवतो 👑
33	२१	थीणद्वी	यीणद्री
५२	30	उपशांत	उपशान्तः
"	17	अतुरया	अनुस्या ।
33	33	कपावत्	स्रावत् . '
. 33	80	चरिमद्विके	चरमद्विके
"	. १६	युःनाम	जुनीम '
43	8	शमनात	शमनात् ,
51	\$8	पुण	गुण
59	29	सत्ता आठ कर्मनी छे	9 .
99	8	इगचत्तससय	इगचत्तसयं 🦪

चत्वारिंशशतं

चत्वारिंशशतं

क्षयोपसमकित

99

නුම .

माउ

वज्या

पर्क

क्षयणा

पंचासीति

बवायुः

		(0)	r
Ą.	ų.	अ শুৱি.	्य श्रद्धिः
90	₹ €	पंचासीति	पञ्चाशीति
13	१७	सप्ति	सप्तर्ति
98	Ę	नवापि	नवानामपि
13	20	मेव	मेव
Ęο	6	उपसम	उपशम
Ęş	\$	टां णाणि	टाणाणि
1)	ર	सुदुर्गज्ञ	सुदुर्मजा
13	१२	संज्वलनोमा	सम्बद्धनोमानखपायेतेव
42	Ę	युत्रव	युरेव
75	v	मास्मिति	नामस्मित्ति नामस्मिति
77	??	सता	सत्ता
ξą	v	केदिय	केन्द्रिय
23	₹ 5	सार	सारस
11	१७	द्विधा	द्विधाः
ÉR	3	पर्याति	पर्यातिः
,,,	ş	वेच	याच
13	13	पुद्रसः	प्रहसान्
22	U	परिणामध्य	परिणमध्य
23	ş o	45	पद
,,	14	सर्वानि	सर्वागि
33	\$4	भवति	भवन्ति
11	33	वादरे	बाइरे
"	२५	टब्स्यय	टब्स्यप
ĘĘ	₹	विशेतर	विरोपनर ,
	~~~		

Ţ.

Şo 33

१३ ,,

12.

•		2. 4	-
11	*	±1°*1	seit !
19	\$ ×	निजग	terin
13	3	र्¦ने	214
187	4	[নীম্য	14153
19	15	क्षं र वर्ष	सम्बद्धाः
19	3.0	रीपी	
13	44	filti:	रिवर्ति स
35	3	gt ⁴	क्षेत्र ।
19	ą	भारत	-1-21
,,	3	<b>जन्</b> या	व्यादासन्।या
19	1	વર્ષો	वर्षे
13	\$10	हमैगोनेपेसं	क्रमणा <u>द</u> नवेश्
19	44	निश <b>न</b>	नियमि
48	3	पुसामाचि	<b>ुं</b> मामवि
21	\$3	निश	निरत
13	35	य <u>ता है है</u>	श् <b>र्वां</b> धी
V3	<b>?</b> 2	<b>दोगा</b>	योगाः
9	6	वचनान्	<b>यचनरा</b>
12	? =	विभग	विभंगाऽ
७२	₹	चशुअचशुअत्रिष	चतुरचशुरबधि
77	4	दृष्ट्याः	दृष्ट्याः
27	6	सम्य	सम्यग्

म्म

केइडी

ममताऽ

केविष

ą.	ų.	अग्रदि-	गृद्धिः
७२	39	केवडी	केवछि
27	84	मस्यादीनां	भत्यादीन
42	₹ ₹	मारभवे	भारभ्यन्ते
11	77	<u>योचस्यारः</u>	वश्चन्त्रारः
21	₹₹	गृहेण	ब्रहेण
48	ş	माध्यत्था	मान्यस्थ्य
11	¥	गोष्टा	गोश
17	2.5	पदानं	पादानं
"	\$8	कपः	कपस्य
80	२०	देतुन्	हेतून्
11	22	चतुसि	चतुर्भि
Sq.	v	देख	हेत्र
19	6	रञ्जं	<b>खक्षण</b>
35	8	द्वादशे	द्वादशकम्
S	88	विशतिषे	विशति वे
11	29	असत्या	असत्य
33	39	22	22
37	\$8	दशमे	दश
७९	3	मिच्छता	मिच्छत्ता
13	6	स्ताव	स्तावत्
"	8	यादद्याग	याद्योग
11	१५	जि रिव	अविराति
27	₹१	कपाया	कपायान्
وه 2	\$8	टोभारूयं	होभारूयः

		( %)	
ą.	ģ,	अग्रद्धिः	ंशुद्धिः
< ?	৩	दृष्टव्यः	द्रष्टव्यः
11	38	नियदि	नियट्टि
13	२०	किलाटा	किल्हा
63	१२	<b>नजति</b>	<b>ন</b> জন্নি
<8	१०	समुलिञ्चा	समुछिहा .
64	? Ę	कषाय	कसाय
13	35	संगृहीत	संगृहीत
"	२०	युंषि	यूं वि
22	29	त्हास्यादि	द्धास्यादि .
33	२३	पर्याप्तिनाम	पर्याप्तिनाम
6	?	सगृहीत	संगृहीत
33	२	छेरपा	<b>वेसा</b>
13	8	गृहणेन	ब्रहृणेन
66	ę o	सगठ	सगञ्ज
33	१५	<b>ব্</b> প্তব্যন	चशुर्दर्शन .
68	२२	भा	भाव
९४	२३	सम्यग	सम्पर्
९७	4	द्वदशमं	द्वादशं
80	80	<b>जजय</b>	अजय ू
37	१२		उपशांशान्तमो ह्यीणमो ह
९९	84	अंयवे	अपवे
n	39	सम्यम्	सम्पग्
300	30	तिग	विगविग
n	33	इग	इगर्ग

)

### (११) एडि.

100   18   प्र.   प्रद   108   18   18   18   18   18   18   18	ų.	Ý.	সমূত্রি.	ಲ್ರತ
रे वि से स्वार्थित स्वार्थिता के स्वर्थिता के स्वार्थिता	100	\$ \$	ą	작론
n है जीएरी जीए रे या  n है जा जा जा  है है जा जा जा  है है जा जा  है है जा जा जा  है है जा जा जा  है है जा जा  है जा जा  है जा जा  है जा जा  है  है जा  है	101	3/4		
ा है अप त्या व्या व्या विश्व के विश्व	"	15	नामन	
ा देश विद्या प्रदेश विद्या व	11	13	e17	
हिल्ले के मुद्दूर्ग उद्धान म के मिटलीया कि द्रांत्रा म के परिवर्धिया कर के म के परिवर्धिया कर के म के परिवर्धिया कर के म म कि परिवर्धिया कर के म म कि परिवर्धिया कर के म म कर्मा कर के म म कर्मा कर के म म कर्मा कर के म म कर्मा कर के म के दर्भाद्धा कर के म म कर्मा कर	१०२	?	144,5 12	\$4.0844
ा के विश्व किया कि देवा का किया किया किया किया किया किया किया	н	20	11311	15213
n witholitis or of the second	\$ = 2	8	मुद्रम	\$15 ME
	11	8	મિ.' તેશવ	\$1 . 5,00.24
Power of Publical Courts on the State of State o	<b>91</b>	ঙ	ulloffiel	+c = *\$
10		i i	41.78	1. 1
B B B VIII SEE  B W SEELS NE 5  B W SEELS NE 5	308	ų	Nubfer of	2005
the figure of the first of the	n	19	\$46 × 4.5 -\$	10-2-4
D W while the man of the first that			당는 4	584
p w castal const  n n savid sex s  total the chief chief  n ha father chief  n ha const  tow t to a con  n ha con  tow t to a con  tow t tow tow  tow t tow  tow  tow  to	400		4411	
the teach of the t	+2		46.64 88	meets at
to the control of the terms of the control of the c	,	u	વસ્થા	2 . 44.5
the terms to the t	-			
the to the top the top the top the top to the top	400			
The terms of the t				
10 14 216 21 A	•	-		
TM 18				
,				
	1.1	10	-3	, 1 (2

(33)

		. ,	
ą.	. , ģ.	<b>अ</b> शुद्धि∙ ∕	গুরি-
११०	Ę	अंतमुह	अन्तर्भ्रह
"	vo	गुक्ल (	मुक
31	٠,	मह -	मह्
"	22-	अद्दिम	अद्दारम
<b>११</b> १	₹	39	11
33	33	शासो	सासो
17	35	वैसम	वेरमा
११२	į	दोप	दोस ं
233	ં રુ	देश	देस
117	22	चउरझेओ	चउःमेओ
११४	٦?	<b>ब्युछिन</b>	<b>ন্যু</b> ল্ডিস
११५	१२	चतुर्विशरपि	चतुर्विशतिर
<b>११</b> ६	12	सामायेन	समायेन
"	१६	श्रद्यतः	श्रद्धतः
"	31	छेदा	छेदो
११७	ર્શ્વ	मोकृष्टं	मोत्कृष्टं
286	์จ	-	
११९	ą	ख्यातो	रूयात:
33	१५	दङक	दंडक
१२१	e	दीनां	दीनां
11	\$8	चतुर्शाति	चतुरशीति
17	કૃલ	वेजो	वेजः'
१२२	3	पंचेदि	पंचेंदि
11	ર	नराणां	नरार्णं '

# ( १३ )

á.	ģ,	সমূদ্ধি	द्यदि.
१२३	4	<b>ক্টু</b>	<b>3</b> 73
33	१२	হান	শূন
11	14	13	11
१२४	8	गृहुम्भ	गुरुम
11	२१	पंशासन्	पञ्चारान्
१२६	G	छत्रीस	छर्थाम
39	\$	गृहि	यूरी
१२७	१७	भावन्	भाषान्
146	v	दीयसय	<b>हियम</b> यं
11	10	<b>ખુ</b> યથાં વિદેશ પૈતિ	भूबबी <b>यसंस</b> ्रि
23	₹ ₹	हुमुजल	토기계의
१२९	¥	नांध	र्मार्च
1)	13	दार्थ	21 3
н	\$ 0	<b>ध</b> पो	# . 4:
660	7.7	નામવ.ર્થની	सामक्षेत्रा ६६
13	१२	A	t
19	19	8	4
444	· ·	\$114	21:-11
122	8	<b>z</b> ła	114
\$ \$ 8	v	दश	જ મેં
124	Ę	દુવ દ્વો	* 1
11	15	33	4.5
21	30	ત ધ	4.4
156	7	देशक	?: ₆

-	-		214.
१३६	२४	सिगं	तिगं
१३७	?	विषये	विषये
17	२१	अनि ति	अनिवृत्ति
१४३	5.8	रुकृष्टा	स्त्कृष्टी
१४४	१५	गृहणेन	ग्रहणेन
11	२०	योद्यवी	योर्धुवो

अग्रन्थ

ů.

٧.

11 22

₹?

.2

१५९

240

(88)

स्वगति खगति गृह ग्रह 11 १४९ मोऽहेपि 3 मोहेऽपि 86 विश्रग विश्व 11 अवैका १५१ अत्रेका ٠20

143 १५ युगपतर्म युगप्रम 143 **३**२ वयेक व्यक ર भंगकाम् भेगकानाम् n

148 भवति, वेषुसप्तदशमीछनेपवप-ष्ट्रचिका द्वादशशतीभवति, पि-ध्यात्वेद्विनवरयधिकं शतम् पर्तिशितः पण्यातिः 80 22 17 31 11 २४८ १२४८ ₹0 उनोरंच २० नगुनग्रनी उन् नक्सी

उद्येगी वै

उने

उधनां चे

77	±		
यृ.	ų,	<b>अ</b> শুদ্ধি	श्रद्धिः
१६०	80	गोवं	गोन
33	59	अय	अयं
n	१२	सता	सत्ता
१६२	58	माप्यते	माप्यन्ते
843	२५	ववार्यः	टबार्थ
१६७	₹	द्वादशः	द्वादश
१६९	3 ?	द्वितृत्यधि	धन्दरा धिकृत्यद्वि
300	23	भवात्	D
१७१	₹6	तद्विपयो	नद्विपप
23	₹.	अर्थातेष	अपर्या प्रेष
१७२	3.5	महर्न <u>े</u>	मुंहुर्त मुहुर्त
11	٩१	द्वादशानि हादशानि	श्रह्म द्वारशाधिकारि
"	12	प्राप्यतः	द्धारशाधकार भाष्येते
१७३	٩ ٢	तिम	मान्यव तियं
१७४	24	नती	ग्वय नेत्रः
944	۲,	सस्य	
তর্	Ę	प्रमु	सरयम्
१७७	ξŶ	गटाउ यन्थ ने	ds.A
	16	વિશાય વિશાય	बन्धस्याने विशय
19	14	वस्य	विश्य विश्य
१५९ १७१	11	यानःप सप्टा	
१८३	\$.R	मृपः मृपः	TEI TO
	10	महा <u>य</u>	स्पाश
ich.	1	गुणपर्यायम	बहारू गुणस्मोप

ų.	अग्रद्धिः	-
4	धन्य	

१२ ग्रहः गृह: 13 परायत्त 88 परायंत्त 21 चतुर्विशतिः

( १६ )

गृद्धिः

धन

द्रव्यतः

करणं

• संकल्पो

ईपी

उप

इंपों इंपों

सक्तपापी

मायोगि ही

समासादिन

अपध

स्रा

चतुरार्वेशतिः १६ 11 र्ड्या डयो 36. 31 निर्श्ता

१९ निश्ता 11 द्रध्यतो 20

11 कारगं 12 11 संकल्बयो 164 30

इयाँ 8

१८७ उम 99 11

इवी २९ 11 166 v सफ्टायी

٤ş 11 39

ų.

**

25 190 Ę

-38

30

11

33

23

75

181

183

183

183

3

¥

27

٩

53

आमूपते नेरे

विद्वाग वि रूप

भा 🚻

४**य**ःन₹

समाममादित

अपच

भा

प्रयोगि की

नेदे विहास वि १४ग

54341

आधूपते

भागादा

( १७ )			
Ą.	ġ,	সমূহি	शृद्धिः
11	13	ঘ্ৰ	घर्य
11	ર્વ	<b>া</b> য	314
184	\$	जनाइयी	जनाःपः
11	8	ų1	ហុ។
91	G.	महत्म्या	\$12,4 5
19	<	.121011	41.3
189	ą	ŢŸ	£' *
11	8	द्रथारपीन	Bertliffe Mil
11	8	यशं ३रः	£6.28
11	ને છ	<b>ન</b> થાને ધુ	44,444 4
160	10	11/2	: ,:
160	\$ 10	331%	£, < Y
н	Q a	451.3	42. 4
166	1	#f**[i]+#]	*, 191
11	19	3.15 4	~ * *
- 11	10	[] alif	1.10
200	₹	ध्य है।	化五烷二代基礎 母亲
14	4	100	F et 4
11	11	₽\$°₩ 8\$	**, #, #!
11	14	\$ 12 (nH	3 m - 14
10	12	4444	-*( ;
11	14	( ₁ 2 0%	L , L,
1+	50	6.3.632	1712
11 21	**	1, 4	

٠.

*	Ĭ,	45.1	1 €.
4 * *	3.2	₹11	海洋丰
.,	1 }	,Arm #	(\$7°4)
317	1	भा । ते " रोज	N-14:138
49	ě	1173 #1 -; ***	11年11年11
		्रास्थ र स	ाम 1
	7 .	r.71 17	F 6 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1
18	23	11	T.
19	714	Parts.	शिक्षामार
303	*	15 k E	11 % 1
is.	a	<b>[ 7</b> ]	141
**	<b>*</b> *	ं अने ∶	1444
15	3.4	11 1 = 1	स <i>दश</i>
39	3.4	* ·21 14	<b>শারে</b>
19	**	महत्रा	गर्या
39	7.4	वार विस	THE
15	3.2	4141	पर्याः
12	10	8418	8424
30%	3	इ.यमानिय्यः	<b>१.</b> .थपामीत्यथैः
21	3	<b>443</b>	दम
13	13	संसद्धा	रसिम्बः
13	13	सवि 1	सचित्रै
17	\$ 4	इंद्रनाशिदः	इन्द्रनादिन्दः
53	? 4	मार्गमा	मागणाः
11	33	द्रीन्दिष	द्रोन्दिष

Ą.	Ϋ,	अगुद्धिः	ਹੁਫ਼ਿ.
72	२२	कष्यते।हरयते	कष्पन्वेहिस्य
२०५	2	विशेष	विशेष
23	30	શુસોમના	सुशोभना
72	?3	<b>विरितः</b>	विरति
23	१५	सामान्यत्म हो	सामान्यात्म को
33	? =	इत्यर्थः	सित्पर्थः
13	<b>२</b> २	ठेइयानु	<b>बे</b> श्वातु
17	२३	धारिणोतत्तद	धारिणस्तत्तद्
33	22	णांमिति	ण मिति
12	२५	योगे	ये.ग्यो
33	39	सिद्ध	सिद्धि
२०६	3	अविरुद्धायो	अविरुद्धार्थः
17	8	विपाक्तो	विपाकत
17	90	सम्यक्त्वास्यदीनय	सम्यक्त्यस्योदीयमा
72	84	युक्ता	<b>उक्ताः</b>
13	35	अयोगी	अयोगि
२०७	10	स्थान हा	स्थानकाः
"	84	सिष्यात्व	<b>मिथ्यात्वं</b>
11	38	नस	यसा
२०८	\$ \$	कंदश	दशकं
17	१२	अभय	अजय
39	35	चधुदर्शन	चधुर्दर्शने
33	11	33	21
72	38	पद	पर्द

		,
Ą.	ġ.	अशुद्धि-
,	₹?	अचशुचशुदरीने
२०९	२	अयोमी
23	१७	सगति
२१०	?	दशम
233	₽	समि
22	₹₹	स्यानि
२१२	??	आसच्या
33	38	वेजो

11 कमित्याह

41

दस

दारे

दर्श

संज्ञा

त्रिणि

QЋ नींध

दुभग

हपभ

ŪЧ

4हाग

नाममतिः

अविरतिकः

१६ 23

१७ 12 २१३

Ę

৩

? 5

१७

٤

٤

33 19

?

વ

Ú

33

23 १२

11 १३

**

11

11 २१४

314

ø 15

215

२१७

33

( 20)

ग्रहि-

कथमित्पाइ

41 41

अविरति

आहारे

दर्शन

संज्ञी

त्रीणि

ए साड

નાંધે

दुर्भग

संगभ

एन१

77!

वांसप्तनि

दंस

अचश्चश्चर्श्वर्रशने अयोगि सगप्ति दश संनि स्थानानि आराध्य वेजः

## ( २१ )

_			
Ą.	Ý,	અગુદ્ધિ.	ਹੁੜ੍ਹਿ,
22	<b>?</b> २	साप	<b>ऽ</b> ऽतर
13	₹₹	वियनी	্বি <b>স</b> রি
219	¥	ए कोन	एकोना
11	3.5	तथा	स्तया
220	, s	पृष्टी	पृष्टी
228	3	नोघ	प्रा नं,घ
•			
13	39	<b>জন্</b> থনি	अञ्यनि
13	8	<b>प्र</b> यने	<b>म</b> श्त
73	88	ঘৰ	द्योत
11	₹ ₽	दिनं	द्विक
22	19	र्धिगमे	विगमे
23	₹0	कृद्वी	केंद्रयाचे सर
17	19	3	8
444	O	પદ્મદર્શન	વસુદેશન
11	8	4:17.4	युश्नाय,
17	₹ ₹	स्पादि	द्वादादि
२२३	Ŷ	स्याम	टक्षा.
11	\$	aşţ.	£13
"	*1	4.4)(1:	4 LŠ.
338	¥	41123	n k
.,	G,	₹qe Çēl	mar in the
17	3.5	કોરેવન∷હ	્રવ જેવા <u>નું</u> વર્જે અન્ત્રી <b>અ</b>
10	\$9	મોટ	478
n	4.0	મંદ્રેત ફ.	935 B
,		* '	3 *

(	43	}	
	-		

4.	4.	अगुवि,	मुन्द्र-
444	8	हमाप्	स्तराण्
<b>3</b> ‡	5.5	y•	29
224	\$	समया ओ	समग्रभी
11	9	रेपगने	देशमी
11	\$3	रेगस्याः	राज्याः
11	₹ 3	प्र हृति	म इति
२२७	१७	सन्देश	सदी
11	3=	খনুণুঁ	वनम् १
२२७	२४	यस्यते	बन्यन्ते
11	19	व्के	रंके
२२८	3.3	₹?	२२
२२८	13	मगाणा	मृत्गुण्!
11	₹.	<b>यं</b> धन्ति	बुद्धपते
12	D	मिच्छतंयियासु	<b>मिच्छत्ताठया</b> सु
२२९	G	स्याननीय	स्थापनीय
13	5	आहारकर	आहारक. द
19	\$ 8	इसाय	हक्साय
19	₹₹	प्राप्यते	<b>प्राप्य</b> न्वे
"	₹ Ę	केवलद्विक	केव <b>ट</b> दिकं
11	23	<b>मकृतिः</b>	प्रकृति अर्जपति
"	१७	अजयति	अजयति
77	33	तंधति	<b>बन्नाति</b>
२३०	v	संज्ञी	संज्ञि
२३१	₹ 5	पंचेन्द्रिय	पञ्चे न्द्रिय

## ( ३३ )

ų.	ų,	લગું ફિ.	ឬនៃ.
11	15	ঘ3	73
11	२०	ঘনু	প্র
२३३	ş	નામ	नाम
11	6	प्रश्नया	इपेक्षपा
91	13	मोद्दनी उ	मोहर्नायो
71	\$.8	समृति	शमृति
27	33	चनुस्र	च्याय
11	33	F+55+4	कि अंध
<b>353</b>	R	યુવીને.	ર્સા વ્યા⊀
11	37	पथना	वज्ञा
Ħ	19	19	94
11	**	相合	rit
11	41	ષકાં છુકરા	वस्त्रास
11	ξş	धनाक्ष	Efecto
33	48	564	દ હેવ
13	10	Richia	25年17時
B	i q	• यस्त्रे	2.8-4
484	8	कोश्च	418
11	10	81.124	عَ دِ رِيمَ فِهِ
H	10	\$148	€ <
. "	1.	4ાંપે∢.	6.5%
225	¥	423	WE \$
**	4	· = [ 1]	* *
**	11	214	11

ч-	अशाद-
१५	ईत्यादि

ų.

२३६

द्रयशीति द्वाशीति ? Ę 11 सर्वधि सर्यंगि २२ 17 २३७ Ę दस दश

( 38)

शुद्धिः

डत्पादि

१९ पदकं पदकं 11 दुस्वरं द:स्वरं " 99 गीरस्तु गीकारस्त २० 33

पुकोना २१ पुकाना ,, मेत्र मेच ¥

२३८ अप अप् 11 97 दुस्वरत्रिक v 12

दु:स्वरितकं चतुः ٩ चतु " रभुगा **ट**श्ग 23 22

सप्तति सप्ततिः 12 23 षर् ₹3 वह 19 टक्षण रश्चमा 11 23

चमा चग २० 13 નાવિ નવિ २३९ ?? योगिन योगवि ? ? 13

नारेपाड नेयो 38 ;; सराविः सन्रति 33 71 **ડવે** i लेवं 28. ş रवेषश्

वेदगुर ર :, પયું ¥ 931

11

# (२५)

á"	Ÿ.	अगुद्धिः	शुद्धिः
२४०	G	बंधी	बन्धि
33	₹₹	13	99
२४३	٩	पंच	पश्चव
23	39	पडिंक	पडिकं
77	\$8	नीक्षे	नीचै
п	??	र्षेूच्या	पूर्वी
२४३	२०	पुत्र	एवं ′
२४८	₹₹	आहार	$\mathcal Q$
11	18	मार्गणामे	मार्गणामे चार आनु-
			पूर्वीना ११८ नो उदय छे.
२५०	\$	सेपाछ	शेषासु
22	१२	नीधे	नीचै
33	१७	33	38
२५१	8	दयः	दयः माप्यवे
23	G	माप्पवे	$\mathcal{Q}$
. 22	२२	वेजी	तजो हैइया
२५४	२२	सम्प	सम्य
२५५	84	रगति	इगति
२५६	6	अंडार	अहार
31	۶	देस	देश
37.0	18	ĘĢʻ	४५
२५८	\$8	₹<	₹९
२६१ २७४	ş	सड	सग टशुणेषु
400	٧.	टक्षणासु	द्यम्

ď.	ч.	अशाद-	शुद्ध-
२७५	38	लम्यवे	सम्बते
२७६	35	• सम्स्व	सम्यस्य
п	२५	कर्प	कर्म
२७७	१२	अपञ्जअं	अपन्तर्वशं
२७८	Ę	पर्याप्ता	पर्याप्त "
29	8	<b>यदा</b> तुः	यदाह
२७९	?₹	मवि	<b>শ</b> িষ
२८०	? 5	चशुद	चधुर मीस
२८२	२०	मोस	मोस '
२८४	- ۾	मृत्या	मृत्वा
२८६	₹	आहरो	आहारो
२८८	?	पुत्र	एवं "
२८९	35	पर्याप्ता श्रह्मा	पर्याप्त सङ्ग
122	२३	भवोचरमः	भवश्चरमः -
२९०	२३	मनां	मनो "
२९२	??	व्विति	ष्विति "
२९२	२२	जिअस्ख	जिअहरूप
२९३	8	टरक	टक्स · ·
२९४	१५	<b>छे</b> दया <u>य</u>	<b>छे</b> श्यासु
२९६	?	अदखोए	अहक्साए
२९७	8	चखु	चऋखु ्
11	Ę	नाण	नाण .
२९९	\$	अहकार	अहक्खा -
23	٠ ६	करण	करणं ः

(२७;);				
ą,	ġ.	अग्रद्धिः	ग्रदि	
२९९	35	?	गति,	
11	. 39	गतितेंद्री	पर्धेदि जाति	
17	२०	2	१ अनाहास्क १	
13	२०	भव्य	भव्य १ अभव्य १	
300	?	हेनवोमूहोर		
31	₹	क्षया	कपायः	
३०५	33	मिश्रं	[मध्य	
11	\$\$	आंदारिकं	<b>सीदारिकं</b>	
39	१७	3	<b>?</b>	
13	50	छत्रीस	प छत्रोस	
"	38	विषे	विषे, ए छुरीस मांदेवी	
77	39	स्त्रीवेद	स्त्रीवेद, १ वैक्रिय, २ विना	
21	39	ঽঽ	≥ -0-mente meni	
33	₹.		छे. परिहारविश्वद्धि पारिषमें छे. मनःपर्षत्रज्ञानमध्ये छटा	
३०६	१२		गुणटाकारास इहां वपन	
			विरोध टाने हे.	
: í ,		ą	१३	
39	१६ २०	र योगा	योग	
" ₽o⊊	33	संपरा	सांपरा	
₹0€	18	भार्यणा	मार्गपा	
380	, ,	दीना	द्वान्तः	
३१२	33	म्यापारतो	<b>ध्यापारव</b> नी	
***	19	सन्दा	नसचाः ?	

		(२८)	
7-	4.	जगुद्धिः	युदि-
<b>₹</b> {₹	3.5	साहरूओ	साहत्वी
•	.,	िरीरमा	विद्याग
3:3	9	1114	411-11
353	13	पाउसी	पाउसी
414	1	भगति	
3+1	2.5	148,44	Jep 414
110	12	वर्धभर	uttur
	15	1/1	184
	1.5	folia	सिंह
	4.}	14	ત્રી એ
	,	211:	%'tl+[
ĝ€±	12	119	ti d
£ 1 2	4	1.41	tal
85.5	€ .	ef 5 <b>8.8</b>	tf.
155	*	er il	ન કો
	\$	Sta	12 km
	1 1	是 2. 李明,	्रहाइनो _् कन्यः धार्मात्र
***	£	-414	对的基准
* * :	15	w-1-, 4	克拉峰蕈
	- 5	V116	111 \$
44.0	* 4	î t	# f
1 . *	:	*.\$	-1 :#
***	Ť	र, वर्त है	-,491 i
	1.6	> #	+ 1



ą.	Ŷ.	अशुद्धिः
343 .	6.	अट्ट ` ^
399	२	केक
33	<	पंचेंद्रीय ?
395	9	रूप

९

٩

,, ?6

,, 33

१५

२३

35

\$

23

8

Q

" 36

83

Şυ

80

?

ς

१७

१७

**

अस

नस्गतो १९

विशतिः

भग्रति

भवन्ति

नरकाय

नसन्

तत्व

तदं

उप

पुण

अंतमु

77

**डतथा** 

वंचेदि

सर्व

उख्स

खाशीतिः

नरक

12

348

363

358

३६५

३६७

३७१

ŞUŞ

१८६

300

300

368

₹८%

366

₹90

(30%)

श्रदिः ं अद्दे ः कैको ः पंचेदिय २ ः स्प

वस

नरकगती

विंशतिः

भवन्ति

भवति

नस्क, १

नरकानु

तस्व

तद्वं

**उ**व

उरल

पण

अन्तर्म

17

तथा

सर्वे

प जेन्द्रिय

द्रघशीतिः

नरकायु, तिर्पगायुः

## ( ₹ )

ą.	ψ̈.	অগ্রব্ধি	গুন্ধি-
390	₹?	मंगाः	મંગા
₹68	3	मिधे	मिश्रे
290	ċ	सम्बन्ध	सम्यक्त्वा
22	? 6	उम	তৰ
395	90	घोर्वाची	चोवीसी
800	80	देवे	दये
808	12	गुणास्थान	गुणस्थान
808	, <	वंधतो	बधतो
77	२१	विश्वतिः	विंशतिं
804	Ę	भवन्ति	भवति
n	. ' &	गतन्यो	गन्तन्यो
33	20	एवं .	पुर्व
37	33	भंगा	भट्टाः ।
806	19	क्स	ऋमं
808	<b>\$</b> \$	पर्यात्प्यस्य	पर्याप्तस्य
11	16	सत	सं
72	38	तिर्पेग	तिर्येग्
855	\$	संहननना	संहननाना
"	Š	पर्कं	पर्क
55	800	विंश	विशह
883	१२	पर्याप्तस्व	पर्याप्तस्य
888	v	दुर्भगाना	दुर्भगाऽऽ
858	8	डच्यूगमे <b>.</b>	चासे .
23	<b>હ</b> ્	भंगा;	મફો .

## ( ३२ )

अशुद्धिः अशै

पर्याप

ų.

886

388

ġ.

₹

6

गृद्धिः

अशे

पर्धाप्त्य

दिय

दीप

014	•	વવાસ	44144
835	२०	संख्यानायनायाग	संख्यानायगाया
४२०	8	१७	হত
23	२०	प्रायोग्या ,	प्रायोग्यान्
४२१	8	भंगा	भड़ाः
19	8	88	२९
४२२	१५	अहारक	आहारक
४२३	१५	सर्डि	संद्विसया
४२४	??	अडतीस	अडताळीस
32	35	१८८५	१७८५
77	२०	नेउ	<b>एका</b> णुं
४२५	33	अमि	असि
33	\$\$	म्	मृतः
23	\$8	धर्म	घर्माऽ
32	२२	£	<b>मु</b> अ
13	3 4	व्यक्त	यक्त
४२७	8	पंचागी	पंचांगी
23	33	*** ***	भागी
४२८	35	•	विद्ध
33	२०		आत्मार्थी
830	v	ને	ने

हीय

देव

٦?

२३

